Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव पुराण

(प्रथम खण्ड)

(सरल हिन्दी भाष्य सहित जनोपयोगी संस्करण)

★

सम्पादक :
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ

पं० श्रीराम जी शर्मा आचार्य

चारों वेद, १०८ उपनिषद्, षट्दर्शन २० स्मृतियां, १८ पुराणों
के भाष्कार, गायत्री महाविद्या के विशेषज्ञ और
बहुसंख्यक हिन्दी ग्रन्थों के रचयिता।

★

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली-२४३००३ (उ०प्र०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
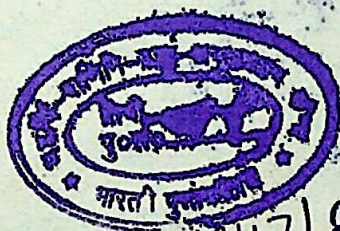
श्री शिवपुराण

[प्रथम खण्ड]

[सरल भाषानुवादसहित जनोपयोगी संस्करण]

भारती पुस्तकालय
पु०सं०
1247 | 8

सम्पादक :

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

चारों वेद १०८ उपनिषद् षट्दर्शन, योग वासिष्ठ, २० स्मृतियाँ और १८ पुराणों के प्रसिद्ध भाष्यकार ।

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब (वेदनगर), बरेली–२४३००३ (उ०प्र०)

फोन नं० ७४२४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :
डॉ० चमनलाल गौतम
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)
बरेली—२४३००३ (उ० प्र०)
फोन : ४७४२४२

●

सम्पादक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

●

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

●

संशोधित संस्करण
सन् १९९७

●

मुद्रक :
शैलेन्द्र बी० माहेश्वरी
सरस्वती संस्थान
सेठ भीकचन्द मार्ग, मथुरा
फोन : ४०३८९५

●

मूल्य :
पैंतीस रुपये मात्र ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारती पुस्तकालय

भूमिका

प्राचीन भारतीय साहित्य में पुराण का एक विशेष स्थान है। यद्यपि आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति इनको अधिक महत्व देना नहीं चाहते, पर उतना तो उनको भी स्वीकार करना पड़ता है कि पुराणों में भारतीय संस्कृति और धर्म के मूल तत्वों का लोकोपयोगी रूप से संकलन किया गया है और उनके कारण पिछले दिनों सर्वसाधारण को नीति, चरित्र सदाचार आदि की शिक्षा मिलती रही है। वास्तव में पुराणों की रचना का मूल उद्देश्य धर्म और अध्यात्म के गढ़ तत्वों को सामान्य जनता के लिए सरल भाषा और सुगम शैली में उपस्थित करना था। वेद और उपनिषदों का ज्ञान सदा से थोड़े विद्वानों तक सीमित रहा है और उसे प्राप्त करने के लिए वर्षों तक सुयोग्य आचार्यों के चरणों में बैठकर परिश्रम पूर्वक अध्ययन करना अनिवार्य था। फिर भी सभी विद्यार्थी उसके गुण धर्म को समझने में समर्थ नहीं होते थे। अनेक तो शास्त्रों को तोते की तरह रट लेने मात्र से ही अपनी गणना विद्वानों की श्रेणी में करने लग जाते थे।

इस दृष्टि से 'पुराण' कोई नवीन या अल्प समय पूर्व की रचना नहीं है। जन-समूह में सामान्य बुद्धि के लोगों की अधिकता सदा से रही है, और उनको समझाने के लिए अति प्राचीन काल से कथा, कहानी, दृष्टान्त रूपक, अलंकारों का प्रयोग होता आया है। इसी तथ्य को प्रकट करने के लिए 'पद्म पुराण' में कहा गया है—

पुराणं सर्वशास्त्रा प्रथमं ब्रह्मणा स्मृतम्।
उत्तमं सर्वलोकानां सर्वज्ञानोपपादकम्॥

"ब्रह्मा ने समस्त शास्त्रों से पहले पुराणों का स्मरण किया। ये संसार में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान के उत्पादक और प्रचारक हैं।"

ब्रह्माजी इस सृष्टि के रचयिता हैं, अतएव विश्व में जितने भी धन हैं, उनका उत्पन्न करने वाला भी उनको ही मानना होगा। यद्यपि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों को संसार का आदि-ज्ञान माना गया है और वे ही सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा के चारों मुखों से निकले, यह जनश्रुति प्रसिद्ध है, पर यह भी जानते हैं कि यह ज्ञान उस समय भी उच्चकोटि के अध्यात्म शक्ति सम्पन्न ऋषियों को ही महान् तपस्या करने पर प्राप्त हुआ था। यह कहना और समझना कि उस समय सभी लोग, ऋषि, महर्षि और वैदिक ज्ञान के अधिकारी थे, वस्तुस्थिति से आँखें मूँद लेना है। ज्ञानियों की अपेक्षा अज्ञानियों अथवा साधारण बुद्धि के लोगों की संख्या सदैव अधिक रही है, चाहे कोई इतिहास या लेखक उसमें कोई विशेषता न देखकर उनका उल्लेख करना आवश्यक न समझे। ऐसी अवस्था नें अपने सिद्धान्तों को जन-साधारण को समझाने के लिए उनको लोक-कथाओं का सरल रूप देना नितान्त आवश्यक है। यही एक तरीका है जिससे कम बुद्धि वाले उच्च तत्वों के आशय को न्यूनाधिक रूप में समझकर तदनुसार आचरण कर सकते हैं। इसलिए यदि पद्मपुराणकार' ने पुराणों का आविर्भाव वेदों से भी प्राचीन बतलाया तो उसकी बात तात्विक दृष्टि से सर्वथा निर्मूल नहीं है। चाहे लिखित ग्रन्थों का अस्तित्व दो-हजार वर्ष से पूर्व कहीं नहीं था, पर वेद उपनिषदों के साथ—'पुराण' का प्रचलन भी उस आदिकाल में था इससे इनकार नहीं किया जा सकता। 'अथर्व वेद' में कहा है—

ऋक् सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह।
उच्छिष्टाजज्ञिरे सर्वे दिवि देवा विपश्चितः॥

'ऋक् यजु, साम और अथर्व वेद के साथ उच्छिष्ट ब्रह्मा ने पुराणों का भी आविर्भाव किया।'

ये आसीद् भूमिः पूर्वा यामज्ञानइद्विदुः।
यो वै तां विद्यान्नामथा स मन्यते पुराणवित्॥ [११-७-२४]

'जैसी यह भूमि पहले थी, जैसे ज्ञानी ऋषि इसे जानते हैं, उसके उस स्वरूप को जो समझता है, वही पुराणवित् है।'

इसमें सन्देह नहीं कि आज हम पुराणों को जिस रूप में देख रहे हैं। उनमें और आदिकालीन पुराणों में बहुत अधिक अन्तर है, जैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
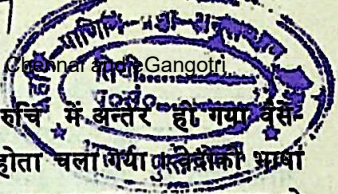
जैसे भाषा-शैली सभ्यता, संस्कृति, लोकरुचि में अन्तर हो गया वैसे-वैसे ही पुराणों के रूप में भी परिवर्तन होता चला गया। वेदों की भाषा को अपरिवर्तनीय माना गया है, इसलिए आज उसका प्रचार अवरुद्ध हो गया है और वेदों के अर्थ के विषय में विद्वानों में सर्वदा मतभेद होता रहता है। पुराण लौकिक भाषा या जनवाणी में रचे जाते हैं, इसलिए उसमें समयानुसार परिवर्तन होता चला जाता है और मूल तत्वों के ज्यों के त्यों रहने पर भी उसके ब्राह्यावरण में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाता है। खोज करने वाले विद्वानों के मतानुसार वर्तमान पुराण पिछले दो-डेढ़ हजार वर्ष के भीतर की रचनायें हैं, पर उनमें जिनसृष्टि रचना, प्रलय, आत्मा का निरूपण, अध्यात्म, नीति सम्बन्धी तत्वों का विवेचन किया गया है, वह प्राचीन स्रोतों से ही प्राप्त हुआ है।

पुराणों में वैदिक-तत्वों का प्रतिपादन—

जिन विद्वानों ने वैदिक और पौराणिक दोनों साहित्यों का गहरा अध्ययन किया है, उनकी सम्मति है कि वास्तव में पुराण वैदिक तत्वों की विस्तृत और लोकोपयोगी व्याख्या ही है। वेद की भाषा, शैली और निगूढ़ विवेचन सदा से विद्वानों के लिए भी कठिन रहा है तो सर्वसाधारण उससे किस प्रकार लाभान्वित हो सकते थे, पर साथ ही उन तत्वों का परिचय प्राप्त किए बिना उसको न्यूनाधिक परिणाम में अपने आचरण में लाये बिना कोई व्यक्ति भारतीय धर्म और संस्कृति का अनुयायी नहीं कहा जा सकता। बस, इस कठिन समस्या को हल करने के लिए पुराणकारों ने एक नवीन साहित्यिक शैली का अवलम्बन किया और रोचक कथाओं, प्रभावशाली दृष्टान्तों और कवित्वमय वर्णनों के रूप में वेदों के गहन सिद्धान्तों को उपस्थित करके उन्होंने उनको सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य बना दिया। इसी का यह परिणाम हुआ कि सामान्य बुद्धि और प्रतिभा के व्यक्ति भी धर्म के उच्च सिद्धान्तों को हृदयाङ्गत करके अपने जीवन में नीति, सदाचार, परोपकार, उदारता के देव दुर्लभ गुणों को चरितार्थ कर सके। पुराण और वेदों के इस सम्बन्ध का विवेचन करते हुए एक विद्वान् ने लिखा है—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बात बहुत आश्चर्यजनक प्रतीत होती है कि पुराण लेखकों के सामने वेदों की अध्यात्म विद्या की परम्परा अक्षुण्ण थी। कहीं तो वेद के पारिभाषिक शब्द में ही और कहीं नई परिभाषा द्वारा पुराणोंमें सृष्टि तत्व का वर्णन किया गया है। वेदों का 'संवत्सर-चक्र' ही पुराणों में 'विष्णु चक्र' बन गया। वेद की छन्द विद्या पुराणों का सौपर्ण-उपाख्यान है। पुराणों की हयग्रीव-विद्या वेद की दध्यङ् विद्या है। वेद की अग्नि सोम विद्या पुराणों की हरिहर मूर्ति है। वेद का 'पंचाचतिक' या 'पंक्ति यज्ञ पुराणों का पंचब्रह्म सिद्धान्त है। वेदों की त्रयी-विद्या पुराणों की सूर्योपासना में तत्वतः पाई जाती हैं। इस प्रकार वेद की हिरण्यगर्भ विद्या पुराणों में अण्डसृष्टि के रूप में मिलती है। वेदों की त्रिक विद्या पुराणों में भी ज्यों की त्यों मिलती है।" इस सम्बन्ध में निम्न श्लोक पुराणों के दृष्टिकोण की सबसे अधिक व्यापक और सरल कुंजी है—

एत एव त्रयो देवा एत एव त्रयोऽग्नयः।
एत एव त्रयो वेदा एत एव त्रयो गुणाः॥

"तीन देव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) यज्ञ की तीन अग्नियाँ (आवहनीय गार्हपत्य, क्रव्यादि) तीन वेद, तीन गुण (सत्त्, रज, तम) ये सब एक ही तत्व पर आधारित हैं।"

पुराणों में साम्प्रदायिकता की छाया–

पर एक बहुत वड़ा आक्षेप जो पुराणों पर किया जाता है, जिनमें साम्प्रदायिक विरोध के आधार पर परस्पर विरोधी वचनों को पाया जाता है। एक तरफ तो यह कहा जाता है कि समस्त पुराण मूल में ब्रह्मा द्वारा उत्पन्न किये गये हैं और व्यासजी ने उनकी ग्रन्थ के रूप में रचना की है और दूसरी ओर किसी देवता को सर्व प्रधान बताकर दूसरे देवों को हीन सिद्ध करने की चेष्टा है। इतना ही नहीं कई पुराणों में अन्य पुराणों को पढ़ना घोर पातक ही बतलाया गया है। उदाहरणार्थ एक वैष्णव सम्प्रदाय के पुराण में कहा गया है—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवार्चनाद् ब्राह्मणास्तु शूद्रेण समतामियात् ।
तिर्यक्पुण्ड्रधरं विप्र चाण्डालमिव संत्यजेत् ॥
वैष्णवः पुरुषो यस्तु, शिवब्रह्मादि देवताः ।
प्रणमेदर्चयेद्वापि विष्ठाया जायते कृमिः ॥

अर्थात् "शिव के पूजन करने से ब्राह्मण शूद्र के समान हो जाता है। त्रिपुण्डधारी ब्राह्मण को चाण्डाल के समान त्याग दे। जो वैष्णव शिव, ब्रह्मा आदि देवताओं को प्रणाम या उनका पूजन करता है, वह मरने पर विष्ठा का क्रीडा होता है।'

इन्हीं के जोड़-तोड़ के किसी शैव लेखक ने वैष्णव सम्प्रदाय पर आक्रमण करते हुए लिख मारा।

विष्णुदर्शन-मात्रेण शिव-द्रोह प्रजायते ।
शिवद्रोहान्न सन्देहो नरकं याति दारुणम् ॥
तस्माच्च विष्णु-नामापि न वक्तव्यं कदाचन ।
यस्तु सन्दप्त-शंखादि-लिंगाकिततनुर्नरः ॥
स सर्वयातना-भोगी चाण्डालः कोटि जन्मसु ।

अर्थात् 'विष्णु के दर्शन मात्र से शिव का द्रोह होता है और शिव के द्रोह से अवश्य दारुण नरक प्राप्त होता है। इसलिए विष्णु का नाम कभी न लेना चाहिए। जो व्यक्ति वैष्णव धर्म के तप्त शंखादि चिह्नों से अङ्कित होता है वह सम्पूर्ण नरक की यातना भोग कर कोटि जन्म तक चाण्डाल होता है।"

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार के द्वेषपूर्ण वचन कभी प्रामाणिक नहीं माने जा सकते। वे निश्चय ही अत्यन्त संकीर्ण मनोवृत्ति के सम्प्रदायवादियों के कलुषित हृदयोद्गार हैं, जो वैष्णवों और शैवों के संघर्ष काल में प्रक्षिप्त रूप से पुराणों में मिला दिए गये। अन्यथा एक तरफ तो गोस्वामी तुलसीदास जैसे सर्वोच्च वैष्णव सन्त की यह घोषणा कि "शिव द्रोही मम दास कहावा। ते नर मोहि सपनेहु नदि भावा।" और दूसरी ओर किसी वैष्णव नामधारी का यह कहना कि शिव का पूजन करने से विष्ठा-कीट' बनना पड़ता है, कैसे बुद्धिसंगत हो सकता है ? सम्प्रदायवादियों ने इस प्रकार केवल दो-चार श्लोक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही शामिल नहीं किये हैं वरन् उन्होंने कहीं-कहीं अन्य सम्प्रदायों के देवताओं की हीनता दिखलाने वाली बड़ी-बड़ी कथायें भी गढ़कर घुसेड़ दी हैं। इससे पुराण पाठकों के हृदय में यह भ्रम उत्पन्न होता है कि वे किसको सत्य मानें और किसको झूठ ? इतना ही नहीं, इस प्रकार के असंगत विवरणों को पढ़कर उनकी श्रद्धा समस्त ग्रन्थों पर से ही हट जाती है और वे सभी पुराणों का द्वेषयुक्त अथवा स्वार्थी मनुष्यों की निर्थक बकवास समझने लगते हैं।

पुराणों के निर्माणकर्त्ता—

इन बातों को स्वीकार करने में हमको कोई विशेष आपत्ति नहीं जान पड़ती कि पुराणों का आरम्भ व्यासजी द्वारा किया गया था और ये वे ही व्यासजी थे, जो वेदों के संकलनकर्त्ता तथा महाभारत के रचयिता माने जाते हैं। पर उस समय पुराण अपने वर्तमान स्वरूप में अठारह विभागों में बँटे हुए नहीं थे, वरन् 'वायु पुराण' के कथनानुसार उस समय समस्त विषय का एक ही ग्रन्थ में संग्रह किया गया था—वह 'पुराण संहिता' केवल चार सहस्र श्लोकों की थी। व्यासजी ने उसे अपने छः शिष्यों को पढ़ाया जिनके नाम—(१) अत्रि गोत्रीय सुमति, (२) कश्यप गोत्रीय अकृतव्रण, (३) भरद्वाज गोत्रीय अग्निवर्चः, (४) वसिष्ठ गोत्रीय मित्रयु, (५) सावर्णि सोमदत्ति और (६) सुशर्मा शांशपायन थे। इनमें से तीन शिष्यों, कश्यप, सावर्णि तथा शांशपायन ने मूल संहिता के आधार पर तीन संहिताओं की रचना कीं जो अर्थ की निगाह से समान थीं, किन्तु भाषा और शैली में विभिन्नता थी। इनमें लोमहर्षण की संहिता ही मुख्य है। इसके पश्चात् काश्यप, सावर्णि का स्थान था। इन्हीं संहिताओं को लेकर लोमहर्षण सूत ने कथावाचकों के योग्य नवीन संहिताओं का निर्माण किया। लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा द्योति द्वारा गृहपति शौनक के यज्ञ में उन पुराणों का आद्यन्त वाचन किया गया और तभी से कथा की परम्परा प्रचलित हो गई। इन पौराणिक कथावाचकों को गुजरात तथा महाराष्ट्र में 'पुराणी' तथा उत्तर भारत में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'व्यास' के नाम से पुकारते हैं। उनके द्वारा पुराण-साहित्य की कैसी वृद्धि हुई, इस विषय में प्राचीन साहित्य के एक महान ज्ञाता का कथन है।

"इन पौराणिकों में अधिकांश कथावाचक या वाचक होते थे। किन्तु उन्हीं में कुछ ऐसे मेधावी और प्रतिभाशाली भी होते थे, जो नवीन मौलिक काव्य-रचना करके पुराणों में नये विषय और रोचक उपाख्यान जोड़ते रहते थे। उन्हें हम 'उपवृंहण' कह सकते हैं। ये लोग नई रचना को अपनी पोथी में लिख लेते थे और उन पोथियों के आधार पर जो नई प्रतिलिपियाँ तैयार की जाती थीं उनमें वे नये परिवर्द्धित अंश भी सन्निविष्ट हो जाते थे। अन्य पुराणों के कथावाचक भी लाभदायक होने पर इन अंशों को प्रकरण तथा सन्दर्भ की संगति के 'अनुसार अपने-अपने पुराण में परिगृहीत कर लेते थे। उदाहरण के लिए तण्डिकृत 'शिव सहस्र नाम' 'लिंग पुराण' और महाभारत के अनुशासन पर्व में ज्यों का त्यों पाया जाता है। इसी प्रकार दक्ष कृत 'सहस्रनाम' 'वायु-पुराण' (अध्याय ३०) 'ब्रह्मपुराण' (अध्याय ४०) 'वामन पुराण' (अध्याय ४७) और 'शांति पर्व' (अध्याय ३८) में पाया जाता है और भी 'मथुरा माहात्म्य' 'काशी माहात्म्य' आदि प्रकरणों को एक से अधिक पुराणों में स्थान मिला है।

इसका कारण यही है कि किसी उपवृंहक आचार्य ने उसकी रचना की ओर वहीं से विभिन्न पुराणों में लिया गया। इससे यह भी अनुमान होता है कि व्यास या पौराणिकों के विभिन्न परिवारों में भिन्न-भिन्न पुराणों के बाँचने की परम्परा का पालन होता था। वे ही परिवार अपने-अपने पुराणों की आदर्श प्रतियों की रक्षा करते थे और नये-नये अंशों को जोड़कर उनको अद्यावधिक (अप्टू डेट) बनाये रहते थे। इस प्रकार लोक में पुराण-विद्या का बहुत प्रचार और वृद्धि हुई। महा पुराणों के बाद जो इसी परम्परा की रचनायें हुईं वह साहित्य उप पुराणों के नाम से अभिहित हुआ।"

एक अन्य विद्वान् लेखक ने पुराण में होने वाले परिवर्तनों और उपवृंहण परिवर्द्धन के सम्बन्ध में विचार करते हुए कहा है—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प ुराणों की कहानी स्वयं प ुराण कहते हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट है कि प ुराण वस्तुतः वैदिक कथाओं, जनश्रुतियों एवं सृष्टि, विसृष्टि प्रलय, मन्वन्तर आचार वर्णन, राजवंश वर्णन के प्रतीक हैं। पौराणिक सूत्रों के कथानुसार भगवान वेदव्यास ने आख्यान, उपाख्यान गाथा कल्प शुद्धि के साथ प ुराण संहिताओं की रचना की। प ुराणों के इस कथन से हम इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि वेदों की भाँति इधर-उधर बिखरी हुई पौराणिक सामग्री को संग्रह करके व्यास जी ने अपनी मान्यता के अनुसार उसका सम्पादन किया। वेद की भाँति आदिकाल में प ुराण भी एक ही था (प ुराणों एकमेव।तीते) कालान्तर में प ुराणों का विभाजन सूतों द्वारा हुआ। सूत, एक जाता या सम्प्रदाय थी, जो वंश परम्परा से घूम-घूम कर कथाओं द्वारा समाज का संशोधन एवं मनोरंजन करता था। विभिन्न, सूतों के मुख से उद्गी।र्ण पौराणिक कथाओं में काल क्रमानुसार पाठान्तर और प्रक्षेप का होना स्वतः सिद्ध है। कालान्तर में स्वार्थ निरत व्यासों और सूतों ने अपनी-अपनी मान्यता का समावेश करके धीरे-धीरे पुराणों को तिल का ताड़ बना दिया। उनकी शाखायें प्रशाखायें उत्पन्न हुई। साम्प्रदायिक घृणा और द्वेष की प्रवृत्तियाँ समाविष्ट हुई। पाठान्तर और प्रक्षेप उत्तरोत्तर बढ़ते ही गये। पर, फिर भी प ुराणों की मौलिकता और वास्तविकता समूल नष्ट नहीं हुई, हाँ उसके कारण विवेचना-शून्य पाठकों के लिए भ्रम और विवाद का हेतु उत्पन्न हो गया।"

पुराणों में वर्णित विषय—

प ुराण का सामान्य अर्थ प्राचीन काल की घटनाओं का वर्णन करना है। स्वयं प ुराणों में उनके वर्णन योग्य विषयों का परिचय इस प्रकार दिया है—

सर्गं प्रतिसर्गंश्च वंशौ मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं विप्रं पुराणं पञ्चलक्षणम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सृष्टि प्रलय, राजवंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित—ये ही पुराण के पाँच लक्षण हैं ।"

इसी पुराण में अन्य स्थान पर पुराणों के विषय की सूची इस प्रकार दी है—

सृष्टिश्चापि विसृष्टिश्चेति स्थितिस्तेषां च पालनम् ।
कर्मणा वासना वार्ता चामूनां च क्रमेण च ।।
वर्णनं प्रलयानां च मोक्षस्य च निरूपणम् ।
उत्कीर्तनं हरेरेव देवानां च पृथक्-पृथक् ।।

"भौतिक सृष्टि चेतन सृष्टि, पालन, कर्म और वासना का वर्णन, प्रलय और मोक्ष का निरूपण, भगवान और देवताओं का पृथक्-पृथक् कीर्तन—ये ही पुराणों के वर्ण्य विषय हैं ।"

'वायु पुराण' में ऋषियों ने व्यासजी से प्रश्न करते हुए पुराणों में आये हुए मुख्य-मुख्य विषयों की गणना इस प्रकार कराई—

पुराणेष्वेषु बहवो धर्मास्ते विनिरूपताः ।
रागिणां च विरागाणां यतीनां ब्रह्मचारिणां ।।
गृहस्थानां वानप्रस्थानां स्त्रीशूद्राणां विशेषत ।
ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्या ये च संकर जातयः ।।
गंगाद्या या महानद्यो यज्ञव्रततपांसि च ।
अनेकविधदानानि यमश्च नियमैः सह ।।
योगधर्मा बहुविधाः सांख्या भागवतास्तथा ।
भक्तिमार्गा ज्ञानमार्गा वैराग्यानिलत्यनीरजा ।।
उपासना विधिवच्चोक्ता कर्म संशुद्धिचेतसाम् ।
ब्राह्मं शैवं वैष्णवं च सौरं शक्ति तथाऽऽहतम् ।।
षड् दर्शनानि चोक्तानि स्वभाव-नियतानि च ।
एतदन्यच्च विविधं पुराणेषु निरूपितम् ।।

(१०४।१०।१७)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्—आपने पुराणों में बहुत से धर्मों का निरूपण किया है। रागी, विरागी, यत्ती, ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थ, स्त्री शूद्र विशेषतया ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अन्यान्य संकर जातियों द्वारा विधेय धर्मों का उनमें वर्णन हैं। गङ्गा आदि महान् नदियों एवं विविध प्रकार के यज्ञों, तपों एवं व्रतों के नियम उसमें वर्णित है। अनेक प्रकार के दान, यम, नियम, योग धर्म, सांख्य धर्म, भागवत धर्म-भक्तिमार्ग ज्ञानमार्ग, वैराग्य मार्ग, अनित्य, नीरज, विविध उपासनायें, चित्त की कर्म संशुद्धि आदि की विधि समेत वर्णन किया है। ब्राह्म, शैव, वैष्णव, सौर, शक्ति, आर्हत, षड्दर्शनादि विविध विषयों का उन पुराणों में पर्यालोचन किया गया है।

इसी से मिलती-जुलती विषय-सूची 'भागवत महापुराण' 'विष्णु-महापुराण' आदि में दी गई है जिनसे विदित होता है कि सृष्टि की आसक्ति, मन्वन्तर तथा अवतारों के चरित्रों के अतिरिक्त तरह-तरह की आध्यात्मिक तथा लौकिक विद्याओं का वर्णन करना भी पुराणों का एक उद्देश्य रहा है और इस दृष्टि से वे भारतीय जन-जीवन को सदा प्रभावित करते आये हैं।

पुराणों की उपयोगिता—

पुराणों में वर्णित विषयों पर विचार करने से यह निश्चय हो जाता है कि वास्तव में उनकी गणना वैसे हल्के अथवा निरर्थक श्रेणी के साहित्य में नहीं की जा सकती, जैसे-कुछ विरोधी अथवा अनजान व्यक्तियों के बिना उक्त अध्ययन, मनन किए ही मान रखा है। यह सत्य है कि किन्हीं नीच प्रकृति के सम्प्रदायवादियों द्वारा अन्य देवताओं पर किये गये घृणित आक्षेपों, अपने उपास्य देवता की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा, तीर्थों पर्वों आदि को बहुत ही बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया है। माहात्म्य और उसमें दान देने की अपार महिमा आदि बातों ने पुराणों का महत्व कुछ घटा दिया है, पर इससे उनकी उपयोगिता सर्वथा नष्ट नहीं हो सकती। स्वमताभिमानी अहंकारी पण्डितों अथवा दान-लोलुप भिक्षुक श्रेणी के ब्राह्मणों की इन करतूतों को कुछ विद्वानों ने रस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में 'विष' मिला देने की उपमा दी है जो अधिकांश में ठीक ही है। यदि इस आक्षेप योग्य मिलावटी सामग्री को पृथक् कर दिया जाय तो पुराणों के द्वारा आज भी जीवन के सभी क्षेत्रों में काम आने वाली जो अमूल्य शिक्षायें प्राप्त होती हैं, उनके कारण भारतीय धार्मिक साहित्य में उनको उच्च स्थान देने में आना-कानी नहीं की जा सकती। दया,क्षमा, उदारता परोपकार, सज्जनता, आपत्तियों का सहन करना, वीर्यता धैर्य, धर्म-निष्ठा सत्य का पालन आदि का जैसा संजीव और सहज में हृदयागम हो जाने वाला चित्रण पौराणिक उपाख्यानों में किया है, वैसा अन्यत्र मिल सकना दुर्लभ है। स्वार्थ को त्यागकर पारमार्थिक जीवन व्यतीत करने की, गृहस्थी और परिवार के उत्तरदायित्वों का पालन करते हुए भी उच्च से उच्च त्यागमय जीवन व्यतीत करने की, नीच से नीच अवस्था में पहुँच जाने पर भी आन्तरिक निष्ठा और साधन के वल पर पुनः सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित होने की जैसी प्रेरणायें पुराणों में मिलती हैं वे निस्सन्देह अनुपम हैं और इसमें सन्देह नही कि उनके द्वारा आज तक करोड़ों व्यक्ति अपने जीवन को ऊँचा उठाकर अपने को समाज के लिए सार्थक वना चुके हैं।

उदाहरण के लिए हरिश्चन्द्र के उपाख्यान को ही ले लीजिए। उसमें वास्तविकता का अंश चाहे जितना भी कम या ज्यादा क्यों न माना जाय और उसकी घटनाओं के सम्भव या असम्भव माने जाने के सम्बन्ध में जितना भी मतभेद क्यों न हो, पर इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि उनसे अनगिनती व्यक्ति सत्य की महिमा का उपदेश ग्रहण-कर चुके हैं और अनेक व्यवहार रूप में भी उसका पालन कर चुके हैं हमारे युग के सर्वश्रेष्ठ महामानव महात्मा गाँधी ने अपनी 'आत्मकथा' में बतलाया है कि बालकपन में हरिश्चन्द्र का नाटक देखकर उनके हृदय पर कितना अधिक प्रभाव पड़ा, किस प्रकार वे उनके सत्यव्रत पालन से अभिभूत हो गये और आगे चलकर किस प्रकार यह उदाहरण उनको सत्य का पालन करने के लिये प्रेरणा देता रहा। महात्माजी के समान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार 'श्रवण कुमार' के कथानक से कितने व्यक्ति माँ-बाप के भक्त बने रहने की शिक्षा प्राप्त कर चुके होंगे। भगवान् राम की शरणागत रक्षा, कृष्णजी का त्याग पक्ष का समर्थन, हनुमान की स्वामिभक्ति, भीष्म का ब्रह्मचर्य व्रत पालन, कर्ण की दानशीलता, दधीचि का आत्मत्याग आदि बहुसंख्यक पौराणिक प्रसङ्ग सामान्य व्यक्तियों का चरित्र निर्माण, नैतिकता का पालन, समाज-सेवा, स्वार्थ त्याग, परोपकारा आदि की शिक्षा देकर जन-जीवन को कितना उच्च बनाते रहे हैं, उसका अनुमान लगा सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि ये पौराणिक कथायें चाहें वे सत्य हों या कल्पित, हिन्दू जाति के सम्मुख ऐसे उच्च आदर्श उपस्थित करती रही हैं, जिनके प्रभाव से उसे सदैव श्रेष्ठ और पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा प्राप्त होती रही है और वह संसार में एक सम्माननीय स्थान प्राप्त कर सकी है। पु राणों के विशाल ज्ञान-भण्डार कर अवलोकन कर किसी लेखक ने ठीक ही कहा है—

"पुराण भारतीय सस्कृति के भाण्डागार हैं। इनमें भारत की सत्य और शाश्वत आत्मा निहित है। इन्हें पढ़े बिना भारत का यथार्थ चित्र सामने नहीं आ सकता, भारतीय-जीवन का दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं हो सकता, मनुष्य के गन्तव्य और पाथेय का ज्ञान नहीं हो सकता इसमें आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक, सभी विद्याओं का विशद् वर्णन है। लोक-जीवन के सभी पक्ष इनमें भली प्रकार प्रतिपादित हैं। संसार में ऐसा कोई ज्ञान-विज्ञान नहीं, मानव मस्तिष्क की कोई ऐसी कल्पना या योजना नहीं, मनुष्य-जीवन का ऐसा कोई अङ्ग नहीं जिसका निरूपण पुराणों में न हुआ हो। जिन विषयों को अन्य माध्यमों से सम-झाने में बहुत कठिनाई होती है, वे बड़े रोचक ढङ्ग से, सरल भाषा में, आख्यान आदि के रूप से इनमें वर्णित हुए हैं।"

वास्तव में द्वेषयुक्त साम्प्रदायिकता तथा अतिशयोक्तियों के होते हुए भी पुराणों में मानव-जीवन के उत्कर्ष योग्य बहुत-सी सामग्री मिलती है। विशेषतः सामान्य बुद्धि के पुरुष जिनकी संख्या सौमें नव्वे से अधिक होती हैं, वे जो वेद, उपनिषद् स्मृतियों के गूढ़ तत्वों के रहस्य को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझ सकने में असमर्थ होते हैं, वे पुराणों के द्वारा धर्म के मूल सिद्धान्तों और तदनुसार आचरण के नियमों को जानने में समर्थ हो सकते हैं। इस दृष्टि से यदि प्रक्षिप्त और पुनरावृत्ति के अंशों को हटाकर पुराणों की उपयोगी सामग्री का अध्ययन और मनन किया जाय तो निसन्देह पाठक उनसे वहुत लाभ उठा सकते हैं। 'शिव पुराण' के इस संस्करण में हमने इसी दृष्टिकोण से वर्णित विषयों का संकलन किया है। इसमें सम्पूर्ण शिव-कथा और उसके माहात्म्य का सुचारु रूप से सन्निवेश है, जिससे पाठकों को शिव-तत्व की वास्तविक अनुभूति हो सकेगी और वे दृष्टान्त उदाहरण, रूपक, अलंकार आदि के मध्य में निहित मूल तत्व को हृदयांगम कर सकेंगे। अप्रासंगिक और कम महत्व के विषयों को छोड़ दिया गया है।

शिव महापुराण के मुख्य विषय—

शिव पुराण का उद्देश्य शिव की भक्ति का प्रचार करके लोगों में परमार्थ की भावनायें जाग्रत करना है। सभी पुराणों और शास्त्रों में शिव का चरित्र परम त्याग, तपस्या, परोपकार, दीन-वत्सलता के गुणों से युक्त चित्रित किया गया है। जहाँ अन्य देवताओं को वैभवयुक्तअवस्था में दिखलाया है, वहाँ शिवाजी को सर्वत्यागी, श्मशानवासी, महाकाल होने पर भी लोक कल्याणकारी रूप में प्रस्तुत किया है। समुद्रमन्थनकी कथा में जब कि अन्य देवों ने बढ़िया-बढ़िया उपहार ग्रहण कियेशिवजी ने सर्वनाशक कालकूट को स्वीकार करके लोगों की रक्षा की। अन्य देवों के रेशम सुवर्णरत्नों के आभूषणों के मुकाबले में शिवजी बाघम्बर और रुद्राक्ष की माला से ही विभूषित होना पसन्द करते हैं। दूसरे देवताओं को जहाँ मिष्ठान्न, पकवान, व्यञ्जन आदि की आवश्यकता हुई, वहाँ शिवजी विल्वपत्र और धतूरा जैसे सामान पूजा उपकरणों से ही सन्तुष्ट हो गये। इस प्रकार शिवजी का चरित्र परमोदार, परमार्थ-परायण और अपरिग्रही प्रकट होता है। ऐसे आदर्श-चरित्र देव की यदि सर्वोच्च आसन देकर देव और दानव दोनों उपासना और भक्ति करें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्येश्वर संहिता–

इसमें सर्वप्रथम कलियुग में पापों की घोर वृद्धि तथा आचार विचार के नष्ट होने का वर्णन करके परित्राण पाने के लिए शिवभक्ति का उपदेश किया गया है। जब ऋषियों ने ब्रह्माजी से विश्व के आदि कारण को जानने तथा प्राप्त करने के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो उन्होंने यही कहा कि मनुष्य का साध्य शिव पद (मुक्ति) प्राप्त करना है और उसका साधन उनकी पूजा-अर्चना करना है। साधक का कर्त्तव्य है कि कर्म के फल कामना न करते हुए निस्पृह भाव से उस महेश्वर की आराधना करे। वेदोक्त कर्म करके उसका फल जब शिव को ही समर्पण कर दिया जाय तो सायुज्यादि मुक्ति की प्राप्ति होनी है। कानों से उनका गुण सुनना, वाणी से कीर्तन करना और मन से उसका मनन करना यही महासाधन कहलाता है। यह मार्ग सर्वथा वेदानुकूल है जैसा कि "आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य' श्रुति में कहा गया है।

आत्मा की उन्नति तथा साक्षात्कार के लिए शिव पुराण में भी वेद उपनिषद् आदि की तरह 'ॐ' अर्थात् प्रणव को सर्वश्रेष्ठ जप बतलाया है। इस सम्बन्ध में कहा है, 'प्रणव' का अर्थ है—(प्र) प्रगति से उत्पन्न हुए संसार सागर को (नवम्) नौका रूप है। इसी से पण्डित इसको प्रणव कहते हैं। अथवा (प्र) प्रपंच (न) नहीं है (व) तुम में अर्थात् आत्मा में कुछ प्रपंच नहीं है। तीसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि (प्र) प्रकृष्टता से जपने वाले को मोक्ष देता है। प्रणव का जप करने वालों से सब कर्मों का क्षय होकर दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है, सूक्ष्म एकाक्षर और स्थूल पंचाक्षर होता है (ओ३म्) इन तीन अक्षरों के संयोग को दीर्घ प्रणव कहते हैं और यह योगियों के हृदय में निवास करता है। दूसरा (ओ३म्) से ह्रस्व प्रणव बनता है जो अपने उपास्य-देव से जल के लिए उपयुक्त होता है। जिनकी संसार में प्रवृत्ति है, उनको ह्रस्व ॐ कार का और निवृत्ति की इच्छा वालों को दीर्घ का जप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिए। वेद के आदि ओ३म्कार का ही प्रयोग करना चाहिए। दोनों सन्ध्यावादन में भी ओ३मकार का ही प्रयोग किया जाता है।

तेरहवें अध्याय में सदाचार का जो वर्णन हुआ है वह भी अन्य शास्त्रों की तरह मानव चरित्र का उत्थान करने वाला और शुद्ध पवित्र बनाने वाला है। गायत्री की महिमा को 'शिव पुराण' ने अधिक माना है और उसके द्वारा सब प्रकार के कार्यों की सिद्धि बतलाई है—

"सब देवताओं को नमस्कार कर स्थिर बुद्धि और स्थित आसन से प्रथम ओंकार और फिर गायत्री का अभ्यास करें, जीव और ब्रह्मकी एकता देखकर ओंकार का जप करे। त्रिलोक के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा और स्थितिकर्ता नारायण और संहारकर्ता भगवन् रुद्र की हम उपासना करते हैं, हमारी ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों मन की वृत्ति और बुद्धि को वह परमात्मा भोग और मोक्ष देने वाले धर्म में सदा लगावे। ब्राह्मणत्व की पूर्ति के निमित्त श्रेष्ठ ब्राह्मण नित्य प्रति उठकर एक सहस्र गायत्री जप करे। क्षत्रिय और वैश्य मध्यान्ह में सौ बार गायत्री का जप करें। मूलाधार चक्र से आरम्भ करके ब्रह्मन्ध्र पर्यन्त स्थित चक्रों में विद्येश, ब्रह्मा, विष्णु, ईश जीवात्मा परमेश्वरों को ब्रह्म-बुद्धि से एक ही जान कर सोहं-भावना से जप करे। महतत्व प्रकृति से आरम्भ करके प्रारब्ध भोगवश से प्राप्त हुए सहस्रों शरीरों के समूह की प्राप्ति को एक जप से एक-एक शरीर को अतिक्रमण कर शनैः शनैः जीव को परब्रह्म में लगावें। यह जप दो हजार आठ की संख्या तक किया जाय।

(२) रुद्र संहिता—

इस पुराण की सबसे बड़ी और शिव-परिवार की कथा को प्रकट करने वाली रुद्र-संहिता ही है। उनके प्रथम 'सृष्टि खण्ड' में जगत के आदि कारण निर्गुण ब्रह्म का वर्णन, उससे आकार शिव तथा आद्या-शक्ति (माया) का आविर्भाव, फिर शिव के द्वारा विष्णु तथा विष्णु से ब्रह्मा की उत्पत्ति की गई है। यद्यपि जगह-जगह विष्णु और ब्रह्मा की प्रशंसा भी पाई जाती हैं और इन दोनों देवताओं के सम्बन्ध में जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथायें अन्य पुराणों में हैं वे भी मिलते-जुलते रूप में वर्णन की गई हैं, पर शिव की प्रधानता सर्वत्र बतलाई गई है। पूजा और उपासना का पात्र एक मात्र शिव को ही कहा गया है और उसका मुख्य रूप लिंगार्चन बतलाया है।

सृष्टि-रचना से पूर्व जब सर्वत्र एक अव्यक्त तत्व ही व्याप्त था उस का वर्णन करते हुए कहा है कि जब महाप्रलय-काल में स्थावर, जङ्गम सब नष्ट हो गये तब ग्रह, नक्षत्र, तारा, सूर्य कुछ भी न होने से सब अन्धकार रूप था। चन्द्रमा, दिन रात अग्नि, वायु, पृथ्वी जल कुछ भी नहीं था, तब प्रधान आकाश तथा किसी प्रकार का तत्व भी नहीं था। शब्द स्पर्श तथा दृष्ट पदार्थ कुछ नहीं था। गन्ध, रूप, रस आदि सब अव्यक्त (अप्रकट) था। उस प्रकार सूची भेद अन्धकार में केवल वह सद्ब्रह्म ही था। जिसको 'सत्' कहते हैं। उस समय सद् असदात्मक भी कुछ नहीं था जिसको योगी अपने हृत्याकाश में निरन्तर अवलोकन करते हैं, जो मन वाणी के अगोचर हैं, किसी इन्द्रिय का विषय नहीं है जो नाम रूप, वर्ण से रहित स्थूल और सूक्ष्म में नहीं है। जो ह्रस्व, दीर्घ लघु गुरुत्व से वर्जित है जिसके उपचय और अपचय नहीं है। श्रुति भी जिसको सत्य-स्वरूप, ज्ञान-स्वरूप अनन्त-स्वरूप, निर्विकल्प, निरारम्भ, माया रहित, उपद्रव रहित, विकार रहित कहते हैं।"

सृष्टि रचना के पूर्व की स्थिति ऐसी हैं जिसे हिन्दू धर्म शास्त्रों ने ही नहीं वरन् सभी विचारशील व्यक्तियों ने स्वीकार किया है और वर्तमान समय में विज्ञान भी खोज करते-करते वही जाकर पहुँच गया है। यह बात दूसरी है कि वैज्ञानिक उसका वर्णन भिन्न शब्दों में और भिन्न नाम से कहते हों। ऐसे निराकार ब्रह्म की कल्पना अविकसित मत मतान्तरों के अनुयाइयों के लिए असम्भव है और विद्वान् कहलाने वाले भी उसकी वास्तविकता रूप में अनुमान नहीं कर सकते। इसलिए भारतीय ऋषियों ने उसका बहुत कुछ वर्णन करके भी अन्त में 'नेति-नेति' कह दिया है कि उसका पूर्ण परिचय दिया जा सकेगा या उसे समझ सकना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव-मस्तिष्क के लिए किसी प्रकार सम्भव नहीं है क्योंकि वह हमसे भिन्न जातीय तत्व है।

पर जब निराकार से साकार होने का विषय उपस्थित होता है तब समस्त सम्प्रदाय और मजहब उसका वर्णन करने में अपनी प्रधानता स्थापित करने का प्रयत्न कहते हैं। वैष्णव उनको विष्णु कहते हैं, दर्शन शास्त्र वाले ब्रह्म पुकारते हैं, शैव उसे शिव अथबा रुद्र के नाम से अभिहित करते हैं। इसी प्रकार पारसी, आहरमज्द' यहूदी', यहोवा', ईसाई 'गौड' मुसलमान 'खुदा' के नाम से प्रकट करते हैं। इनमें तो सन्देह किया ही नहीं जा सकता कि निर्गुण से सगुण की उत्पत्ति किसी एक ही रूप में हुई, दुनियाँ के मनुष्य उसका वर्णन चाहे जिन शब्दों में और चाहे जिस नाम से करते रहें। इस सृष्टि से यदि 'शिवपुराण' के रचयिता ने उसे 'शिव' का नाम दिया है तो इसे किसी प्रकार असत्य अनुचित मानने की कोई बात नहीं हैं। निर्गुण से सगुण ब्रह्म की उत्पत्ति सम्बन्ध के में उसका कथन सर्वथा युक्तियुक्त है—

उस नाम रूप रहित निर्गुण ब्रह्म को कुछ काल में दूसरे की इच्छा हुई। तब उस अमूर्त ने इच्छा से ही अपनी मूर्ति कल्पित की जो सब ऐश्वर्य गुणों से युक्त, सर्वज्ञानमयी, शोभायमान है। जो सर्वगामिनी, सर्वरूपा, सबको देखने वाली, सबकी करने वाली है। सबकी वन्दनीया, सबकी आद्या, सबका संस्कार करने वाली है। इस ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध रूप वाली मूर्ति की कल्पना करके वे अद्वितीय, अनादि, अनन्य, सर्वाभास, चिदात्मा, सर्वगामी अविनाशी पराख्या ब्रह्म अन्तर्धान हो गये। जो अमूर्त परतत्व हैं उसी की मूर्ति 'सदाशिव' है जिसको पण्डितगण 'ईश्वर' कहते हैं। इस ईश्वर ने अपने शरीर से ही स्वच्छन्द शरीर वाली अनपायिनी शक्ति प्रकट की। जिसे 'प्रधान प्रकृति' या परामाया' कहते हैं। यही बुद्धि तत्व की जननी है। वही शक्ति अम्बिका प्रकृति सब लोकों की ईश्वरी, तीनों देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु रुद्र) की जननी, नित्या और मूल कारण कही जाती है।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में 'शिव पुराण' को अन्य मतावलम्बियों से कोई मतभेद नहीं है। एक परमेश्वर से ब्रह्मा विष्णु महेश तीन शक्तियों के प्रकट होने की कल्पना निराधार नहीं है क्योंकि उत्पत्ति, पालन और संहार का कार्य प्रत्येक पदार्थ और अवस्था के लिए अनिवार्य है। इसलिए ईसाई आदि धर्मों में भी 'त्रिनिटी' (त्रिमूर्ति) की कल्पना की गई है। यदि 'शिव पुराण' इनको 'परमशिव' अम्बिका' 'शिवलोक' आदि के नाम से पुकारता है तो वह भी अन्य सम्प्रदायों की तरह इसका अधिकारी है।

रुद्र-संहिता का दूसरा भाग 'सती खण्ड' है इसमें सती के जन्म, शिवजी के साथ विवाह और अन्त में दक्ष के यज्ञ में देह-त्याग करने की है और उसी से प्रजा की उत्पत्ति का क्रम आरम्भ हुआ। पुराण लेखक ने सती की कथा द्वारा बतलाया है कि जब दक्ष ने अभिमानवश किसी की अवज्ञा की तो उसका घोर पतन हो गया और जब अपनी भूल को समझ कर वह उनकी भक्ति करने लगा तो अपने यज्ञ को सफल करके उसका अधिपति बन गया। दक्ष के यज्ञ का वर्णन ध्यान पूर्वक पढ़ने से वह विष्णु और शिव के अनुयाइयों आ संघर्ष ही प्रतीत होता है जिसमें अन्त में शिव के पक्ष को विजय हुई।

तीसरे 'पार्वती-खण्ड' की कथा लोक में बहुत प्रसिद्ध है। पार्वती द्वारा शिव के साथ विवाह करने का दृढ़ निश्चय और उसके अभूतपूर्व तप की कथा अनेक ग्रन्थों में पाई जाती है। पार्वती ने ब्राह्म रूप के बजाय गुणों का महत्व समझ कर शिव को पति रूप में वरण करने का विचार किया था और एक बार निश्चय कर लेने पर वह बड़ी से बड़ी बाधा की परवाह न करके भी अपने लक्ष्य पर ही स्थिर रही। उसके माता-पिता तथा अन्य हितचिन्तकों ने उसे महादेव जैसे सर्वत्यागी और अकिंचन को छोड़कर अन्य ऐश्वर्य सम्पन्न व्यक्ति से विवाह कर लेने को बहुत, समझाया, पर वह अपने ग्रहण किये गये व्रत पर अडिग रहीं और अन्त में उसे संसार में 'नारी शिरोमणि' की पदवी प्राप्त हुई।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथे 'कुमार खण्ड' में स्कन्द के जन्म तथा पालन-पोषण की कथा है। शिव-पार्वती के विवाह का उद्देश्य' एक ऐसा पुत्र उत्पन्न करना ही था जो संसार को अपने कठोर शासन से त्रस्त करने वाले तारकासुर का वध कर सके। देवताओं की अभिलाषानुसार स्कन्दकुमार एक बहुत चतुर और साहसी सेनापति सिद्ध हुए और उन्होंने अपनी सैनिक योग्यता से तारकासुर के आतङ्क का अन्त कर दिया। इसी काण्ड में गणेश-जन्म की विचित्र कथा भी आ गई है जिससे पार्वती जी की शक्ति की वृद्धि और अतुलित प्रभाव का परिचय मिलता है। महादेश ने आरम्भ में गणेश का तिरस्कार किया पर अन्तमें उसको सर्वपूज्य स्थान देना पड़ा। गणेश जी यद्यपि स्कन्दकुमार के कनिष्ठ थे, पर अपनी बुद्धिमानी के स्वरूप उन्होंने शिव परिवार में सबसे प्रथम पूज्ज पदवी प्राप्त करली। इसकी परीक्षाके लिए महादेवजी ने दोनों पुत्रों को पृथ्वी-परिक्रमा करने की आज्ञा दी थी। स्कन्दकुमार तो अपनी शक्ति पर भरोसा करके यात्रा पर तुरन्त रवाना हो गये, पर गणेश ने बुद्धिमत्ता से काम लेकर महादेव और पार्वती की पूजा करके उनकी सात परिक्रमा की। उनका कहना था कि माता-पिता का दर्जा पृथ्वी से बढ़कर है और अब मैंने उनकी परिक्रमा करली तो मुझें पृथ्वी-परिक्रमा का फल स्वयंमेव प्राप्त हो गया। उन्होंने कहा—

"मैंने आप दोनों माता-पिता का पूजन किया है, इसलिए मैंने तो अपने विचारानुसार समस्त पृथ्वी की परिक्रमा कर ली। वेद शास्त्र भी इस मत का समर्थन करते हैं कि जो माता-पिता की परिक्रमा करता है वह समस्त पृथ्वी की परिक्रमा का पुण्य प्राप्त कर लेता है। जो माता-पिता को छोड़कर तीर्थ को जाता है उसे माता-पिता के मारने का पाप लगता है। पुत्र का सबसे बड़ा तीर्थ यही है कि माता-पिता के चरणों की सेवा करे। दूसरे तीर्थ तो दूर जाने से प्राप्त होते हैं, पर माता-पिता रूपी तीर्थ सदा निकट, सुलभ और धर्म का साधन हैं। पुत्र की स्त्री को भी घर में इसी तीर्थ की सेवा करनी चाहिए। यही बात वेद-शास्त्र निरन्तर कहते हैं और आपको भी इसी के अनुसार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य करना चाहिए, अन्यथा शास्त्र झूठे हो जायेंगे।" गणेशजी के तर्क-युक्त कथन को शिवजी ने ही नहीं वरन् सभी देवों ने सत्य बतलाया और उनको प्रत्येक कार्यमें प्रथम पूज्य स्थान देना स्वीकार कर लिया।

पाँचवें 'युद्ध-खण्ड' में शिवजी द्वारा अनेक दैत्यों के वध का वर्णन किया गया है। दैत्य-गण विशेष रूप से शिव के ही उपासक थे, पर अनीति पर चलने के कारण अथवा संसार की शान्ति की भङ्ग मरने के दोष के आधार पर वे उनके विरुद्ध युद्ध-क्षेत्र में उतरते थे। उन दैत्यों में शंखचूड़ सबसे बलशाली और बुद्धिमानी था। उसने त्रिलोकी का अधिपति होने की महत्वाकांक्षा से देवलोक पर चढ़ाई करके इन्द्रासन पर अधिकार कर लिया था और देवताओं को यज्ञ में मिलने वाले भाग को स्वयं ग्रहण करना आरम्भ कर दिया था। इस पर देवताओं ने ब्रह्मा और विष्णु से अपने कष्टों सो दूर करने की प्रार्थना की और वे शंखचूड़ का वध कठिन समझकर शिवजी की शरण में गये। शिवजी ने देव-पक्ष को त्याग युक्त समझ कर शंखचूड़ का दमन करने का आश्वासन दिया। पहले उन्होंने दूत भेजकर शंखचूड़ को देवताओं का राज्य उनको वापिस करने को समझाया और जब वह इसके लिए राजी न हुआ तो घोर संग्राम करके उसे मार दिया।

(३) शतरुद्र संहिता—

इसमें शिवजी द्वारा जगत में किये गये अनेक चरितों का वर्णन है जिनको पुराणकार ने शिव का अवतार कहा है। इसमें कहा है कि हनुमानजी शिव के अवतार थे। समुद्र मन्थन के समय देवताओं को अहङ्कार होने पर शिवजी ने यक्षेश्वर का रूप धारण कर उन सबका गर्व दूर किया? यह कथा ठीक वैसी ही है जैसी कि वेदों में यज्ञ द्वारा इन्द्रादि का गर्व दूर करने के विषय में कही गई हैं। इसमें प्रकट किया है कि संसार में जहाँ कहीं जिस प्रकार शक्ति अथवा महत्ता दिखलाई पड़ती है, उस सबका स्रोत एकमात्र परमात्मा ही है। उनके बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता और वह चाहे तो क्षणभर में पर्वतों की धूल के रूप में परिणित कर सकता है। यह जानकर मनुष्य को सदा निर-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हङ्कार रहकर न्याय और नम्रता का ही पालन करना चाहिए।

(९) कोटिरुद्र संहिता–

इसमें शिवके द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन है, देश के विभिन्न भागों में स्थापित हैं और जिनकी अर्चना से सदैव अनगिनती व्यक्ति सन्तुष्ट होते हैं। सौराष्ट्र में सोमनाथ श्रीशैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन, में महाकाल, ओंकार में अमरेश्वर, हिमालय में केदार, डाकिनी के भीम शङ्कर, काशी में विश्वनाथ, गोमती के तट पर त्र्यम्बक, चिताभूमि में वैद्यनाथ, दारुकवन में नागेश, सेतुबन्ध में रामेश्वर तथा शिवालय में घुश्मेश–ये बारह ज्योतिर्लिङ्ग प्रसिद्ध हैं शिवजी के बारह, अवतार माने जाते हैं। इन बारह ज्योतिर्लिङ्गों का इतना अधिक प्रभाव बतलाया गया है कि "जो मनुष्य हृदय में जिस-जिस मनोरथ के उद्देश्य से इस द्वादश शम्भु नामों का पाठ एवं स्मरण करेंगे वे उन मनोरथों को इस लोक और परलोक में अवश्य ही प्राप्त कर लेंगे। जो मानव निष्काम भावना से ही अपना कर्तव्य समझते हुए उपादय देव श्री महादेव के इन बारह नामों का स्मरण करते रहेंगे उनको फिर संसार में माता के गर्भ में आकर कष्ट नहीं भोगना पड़ेगा।"

इन द्वादश-ज्योतिर्लिङ्गों को माहात्म्य तो विशेष रूप से प्रसिद्ध ही है पर शैव सिद्धान्त के अनुसार 'भगवान् शिवके समस्त लिंगों की संख्या बतला सकना असम्भव है। संसार में कोई उसका पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकता क्योंकि समस्त भूण्डल तथा विश्व लिङ्गमय ही है। समस्त तीर्थ लिङ्गमय हैं और जो कुछ श्रेष्ठ हैं वह सब लिंग द्वारा ही प्रतिष्ठित हैं। इस जगतीतल में जो भी दर्शनीय तथा वर्णन करने योग्य हैं, जो कुछ स्मरण किया जाता है वह सब भगवान् शङ्कर का ही स्वरूप है। उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है। भगवान् शिव के लिंग पृथ्वी, स्वर्ग पाताल सर्वत्र विद्यमान है और वे देव, असुर तथा मनुष्यों के द्वारा सभी स्थानों में पूजित तथा वन्दित होते हैं। देव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैत्य और मानवों सहित यह त्रिभुवन महेश्वर से व्याप्त है और भगवान् शङ्कर संसार के कल्याण के लिए अनुग्रह करते हुए सर्वत्र लिंग रूप में विराजमान रहते हैं। सांसारिक प्राणियों का उपकार करने के लिए महेश्वर ने अपना लिंग स्वरूप प्रकट कर दिया है उसी लिंग-प्रतिमा का समार्चन करके संसार में मनुष्य अनेकानेक सिद्धियों की प्राप्ति किया करते हैं।"

शिव पुराण में दिये वर्णन को पढ़कर तथा देश के विभिन्न भागों में सर्वत्र पाये जाने वाले विशाल शिव मन्दिरों को देखकर स्वभावतः यह विश्ववास होने लगता है कि भगवान शङ्कर का प्रभाव सर्वव्यापी रहा है और उनमें मनीषियों ने बहुत बड़े आध्यात्मिक-तत्व को अनुभव किया है। दक्षिण भारत में तो शिव की महिमा अकथनीय है और वहाँ के शिव मन्दिरो का वर्णन हमारे लिए आश्चर्यजनक जान पड़ता है। पर दक्षिण के सम्बन्ध में उत्तर-भारतीय जनता की जानकारी अल्प है वहाँ के जन-जीवन में शिव पूजा कितनी अधिक व्याप्त है उसका अनुमान हम नहीं लगा सकते। पर उत्तर और मध्य भारत के सुप्रसिद्ध शिवालयों पर भी हम दृष्टिपात करते हैं तो शिव-पुराण में वर्णित शिव की सर्वव्यापकता का स्वयमेव आभास होने लगता है। बारह ज्योतिर्लिंगों में अतिरिक्त इस पुराण में जिन अन्य प्रसिद्ध शिवलिंगों का परिचय दिया है उनकी संक्षिप्त नामावली से ही शिव पूजा के असीम विस्तार का कुछ अनुमान किया जा सकता है।

"मल्लिकार्जुन" में रुद्रेश्वर नर्मदा तट पर महाकाल के निकट दुग्धेश्वर, ओंकारजी में कर्दमेश्वर, यमुनातट पर भूतेश्वर, सरस्वती तट पर नागेश्वर और रामेश्वर के निकट गुप्तेश्वर तथा घुश्मेश के समीप व्याघ्रेश्वर नाम के उपलिंग हैं जिनका महत्व ज्योतिर्लिंगों के समान ही माना जाता है और जिनकी बड़े समारोह से पूजा होती रहती है। इसके अतिरिक्त काशी के तिल भाण्डेश्वर, गङ्गासागर के सङ्गमेश्वर कौशिका नदी के तट पर नारीश्वर, गन्डकी तट पर वटुकेश्वर फल्गु नदी के किनारे सुरेश्वर उत्तर नगर में सिद्धनाथेश्वर तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर, परैद्दधीचि मुनि ने युद्ध स्थल में शृंगेश्वर तथा जप्येश्वर गोपेश्वर, रंगेश्वर, वामेश्वर, कामेश्वर, विमलेश्वर, व्यासेश्वर, सुकेश्वर, शाण्डेश्वर नाम की प्रतिमायें हैं। तप्तका नदी पर कुमारेश्वर तथा सिद्धेश्वर है। पूर्णा में कुम्भेश्वर, नन्दीश्वर, पुंजेश्वर हैं। प्रयाग में ब्रह्माजी द्वारा स्थापित ब्रह्मेश्वर, सोमेश्वर, भारद्वाजेश्वर शूलटङ्केश्वर माधवेवर विराजमान है। अयोध्या में नागेश्वर परम प्रसिद्ध हैं जो सूर्य-वंशियों को विशेष रूप से सुख सौभाग्य प्राप्त किया करते हैं। पुरुषोत्तम पुरी में भुवनेश्वर, लोकेश्वर, गंगेश्वर, शुक्रेश्वर हैं। बटेश्वर भगवान समस्त कामनाओं के सिद्ध करने वाले हैं। सिन्धु नदी पर कपालेश्वर, वक्रेश्वर, धोत पापेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर, मन्देश्वर, नाकेश्वर स्थित हैं। पूर्ण सागर के निकट कण्टकेश्वर धर्तकेश्वर, चन्द्रेश्वर है। जहाँ अन्धक दैत्य का वध किया गया था, उसके निकट अंधकेश्वर विल्वेश्वर झरणेश्वर की प्रतिमायें हैं। आवू पर्वत पर कर्दमेश्वर, कोटीश्वर और अचलेश्वर हैं। अन्तेश्वर, योगीश्वर, सप्तेश्वर, भद्रेश्वर-चण्डीश्वर भी बड़े विख्यात हैं।' इस प्रकार शिव के प्रसिद्ध लिंग प्रतिमाओं की नामावली निसन्देह इतनी विस्तृत है कि उसका उल्लेख कर सकना कठिन ही है।

(५) उमा संहिता—

इसमें विभिन्न पापों तथा उनके दण्डस्वरूप मिलने वाले नरकों की यातनाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। पापों का प्रतिकार कुछ अंशों में दान कहा गया है, पर उसका मुख्य उपाय 'तप' ही है। तप का अर्थ यह होता है कि मनुष्य से परिस्थितिवश जो पाप बन पड़ा उसका दण्ड उसने स्वेच्छा पूर्वक सहन कर लिया। इस सम्बन्ध में सनत्कुमार ने कहा—'तप को ही लड़ा कहा गया है, तप से ही अति-फल मिलता है। तप से स्वर्ग मिलता है, यश मिलता है, कामनायें पूर्ण होती हैं, अर्थ प्राप्त होता है और मोक्ष भी मिल जाती है। बिना तप के न ब्रह्मलोक मिलता है न शिव लोक में प्रवेश हो सकता है और तपी या सबके स्वामी शिव तथा सनातन विष्णु, ब्रह्म, अग्नि इन्द्र आदि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी तप के द्वारा अपने महान् कार्यों को पूरा करते हैं। सब लोगों का हित करने वाले सूर्य चन्द्रमा, नक्षत्र, ग्रह आदि भी तप से ही प्रकाशित होते हैं। ज्ञान, विज्ञान, आरोग्य सौन्दर्य सौभाग्य तप से ही निरन्तर प्राप्त होते हैं।" यदि हम तप का अर्थ निष्काम भावना से या कर्त्तव्य समझ कर किये गये वास्तविक श्रम को समझ लें तो संसार में उनकी महिमा प्रत्यक्ष ही दिखाई पड़ती है। हृदय से किया हुआ श्रम कभी निष्फल नहीं जाता और वही सब प्रकार के शुभ फल प्रदान करने वाला होता है।

तप का एक रूप ज्ञान-यज्ञ या ज्ञान-प्रचार भी है। आजकल हम स्थूल पदार्थों के मोह में पड़कर ज्ञान की महिमा को बहुत कुछ भूल गये हैं। इस समय अधिकांश मनुष्य ज्ञान या विद्या प्राप्ति का फल किसी प्रकार की जीविका मिल जाने धन कमा लेना समझने लगे हैं, और इसलिए तरह-तरह के कष्ट सहन कर रहे हैं। शिवपुराण के मतानुसार 'अज्ञान' के कारण ही लोक में विभिन्न प्रकार के कष्ट सहन करने पड़ते हैं और उसका निराकरण ग्रन्थों का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करने से ही हो सकता है। समस्त देवता भेट-पूजा और यज्ञों में हवि प्रदान से उतने सन्तुष्ट नहीं होते जिस प्रकार ग्रन्थों के पढ़ने से होते हैं। जो कोई शिव, विष्णु, सूर्य या किसी अन्य देवताओंके मन्दिरमें किसी शास्त्रपुराण को बचवाता है वह राजसूर्य और अश्वमेघ यज्ञों के फल को प्राप्त करता है। शिवजी के शुभ मन्दिर में इतिहास और पुराणों की गाथा के अतिरिक्त भगवान् को प्रसन्न करने का और कोई उपाय नहीं है। विशेष कर कलियुग में धर्म शास्त्रों का पठन-पाठन कल्पवृक्ष के समान सर्व फलदाता होता है। कलियुग में धर्म और आचार का त्याग करने वाले दुर्बुद्धि मनुष्यों के हित के लिए शिवजी ने पुराण (शास्त्र) नामक अमृत रस का विचार किया है। अमृत को पीकर तो एक ही मनुष्य अजर-अमर होता है किन्तु इस कथा रूपी अमृत का पान करने से समस्त फल ही नहीं, इष्ट मित्र भी अमर हो जाते हैं।"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निस्सन्देह संसार में ज्ञान की बड़ी महिमा है। पापताप का मूल प्राय: अज्ञान ही होता है उसके प्रभाव से मनुष्य बुराई में भलाई की कल्पना करने लगता है और कुमार्गपर चल पड़ता है। इसलिए विद्वानों ने कल्याण का सबसे बड़ा साधन सदा से ज्ञान को ही बतलाया है। इसी कारण गीता में बड़े स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी गई है—

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला अन्य कोई साधन नहीं है। ज्ञान सब प्रकार के कुविचारों और विचारों को उसी प्रकार जलाकर भस्मकर देता है जिसप्रकार यज्ञकुण्ड की अग्नि समिधा को भस्म कर डालती है। यद्यपि ज्ञान प्राप्तिके विभिन्न साधन बतलाये गये हैं पर सद्ग्रन्थोंके अध्ययन मननसे बढ़कर सर्व सुलभ और निश्चित साधन दूसरा नहीं मिल सकता। पुराणों में मनुष्यों के कल्याण करने वाले ज्ञान को कथाओं के रूप में और भी सरल तथा मनोरंजक रूप में उपस्थित किया गया है. इसीलिए शिवपुराणकार ने पुराण कथा को विशेष महत्व दिया है।

(६) कैलास-संहिता–

इसमें योगशास्त्र के शासन, प्राणायाम, जप ध्यान के द्वारा आत्म-ज्ञान प्राप्त करके सांसारिक बन्धनों से छुटकारा पानेका मार्ग-दर्शन है। इसमें पुराणकर्त्ता ने 'ओंकार' या प्रणव को ही समस्त जपों में श्रेष्ठ बतलाया है और उसीको पूर्ण विधान के साथ जमकर संसार-सागर से पार हो जाने को मनुष्य का सबसे बड़ा पुरुषार्थ माना है। इस सम्बन्ध में पार्वतीजी को समझाते हुए स्वयं शिवजी कहते हैं कि प्रणव के अर्थ का जानना ही मेरा ज्ञान है और वह प्रणवात्मक मन्त्रही सब विद्याओं का बीज है। यह वट वृक्ष और उसके बीज के समान बहुत सूक्ष्म और मेरा रूप है। यह तीनों गुणों से परे, सर्वज्ञ सबका कर्त्ता 'ॐ' के रूप में एकाक्षर मन्त्र है। यह एक अक्षर समस्त ब्रह्मज्ञान का साधक है। इसी 'ॐ' से शिव सर्व प्रथम जगतका निर्माण करते हैं। वैसे तो शिव स्वयं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणव स्वरूप है, अथवा प्रणव ही शिव हैं, क्योंकि वाच्य और वाचन में कोई अन्तर नहीं होता हे परमेश्वरि ! इस कारण प्रणव (ओंकार) को सबका कर्त्ता जानो। हे देवि ! सब मन्त्रों के शिरोमणि इस 'ओंकार' को ही मैं काशी में प्राण त्यागने वाले जीवों को देता हूँ ब्रह्मसे लेकर स्थावर सम्पूर्ण प्राणियों का यह प्राण है इसी से इसको 'प्रणव' कहते हैं।" प्रत्येक आश्रम तथा प्रत्येक स्थिति के व्यक्ति के लिए 'ओंकार' के तत्व को समझ कर उसका हृदय में ध्यान करते रहना निस्सन्देह आत्मोत्थान का बहुत प्रभावशाली उपाय है।

(७) वायु संहिता—

इन ऋषियों ने यह प्रश्न उठाया है कि निराकार शिव साकार रूप ग्रहण करके मनुष्यों के समान किसी से वैर किसी से प्रीत, किसी को दण्ड किसी को पुरस्कार आदि जो कार्य करते हैं उससे क्या उनके 'परब्रह्म' होने में कोई दोष उत्पन्न नहीं होता ? इस पर वासुदेव ने विस्तार के साथ निर्गुण और सगुण ब्रह्म का विवेचन करते हुए कहा कि भगवान् शिवका यदि कोई कर्तव्य है तो वह जीवोंपर दया करना ही है। पर यह कार्य किसी मूर्त शक्ति से ही हो सकता है, जिसमें स्वभाव पाया जाय स्वभाव से रहित कार्यकर ही नहीं सकता। इसलिए सच्चिदानन्द होते हुए भी जीवों पर अनुग्रह करने के निमित्त मूर्त रूप में भी आना पड़ता है पर वह मूर्ति भगवान् का उपलक्षण ही होती है। जिस प्रकार यदि यह कहा जाय कि 'अग्नि लाओ तो कोई व्यक्ति अग्नि तत्व को नहीं लायेगा वरन् जलती हुई लकड़ी का टुकड़ा ही लेकर उपस्थित होगा। इसलिए लिंगरूप या अन्य किसी मूर्ति के रूप में भगवान् की पूजा उपासना वास्तव में परब्रह्म का ही पूजन किया जाना समझना चाहिए।

परम-शिवको सर्वव्यापक और सबका कर्त्ता सिद्ध करके पुराणकार ने उसका जो व्यावहारिक निष्कर्ष निकाला है वह सब सिद्धान्तों और ज्ञान का रूप है। उसने कहा है कि जब, परम शिव ही अपनी आठ मूर्तियों द्वारा जगत में व्याप्त है और समस्त मनुष्य तथा अन्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणी उन्हीं के रूप हैं तो मनुष्य का सर्वप्रथम कर्तव्य यही है कि वह प्राणीमात्र को आत्म-स्वरूप समझे और उनके हित का ध्यान रखे। "सबको अभय देना, सब पर अनुग्रह करना सबका उपकार करना ही शिव की सबसे बड़ी आराधना-पूजा है। जिस प्रकार पुत्र और पौत्र आदि से प्रीति रखने के कारण पिता प्रसन्न होता है उसी प्रकार सब प्राणियों से प्रेम करने के कारण शिवभी प्रसन्न होते हैं। और जब कोई किसी देहधारी को कष्ट देता है तो वह शिव की नष्ट मूर्तियों को ही कष्ट देने वाला हो जाता है।

जैसा हम आरम्भ में बतला चुके हैं 'पुराण' साहित्यकी रचना बहुत प्राचीन काल में हुई और उसका उद्देश्य सृष्टि रचना, पृथ्वी प विभिन्न स्थावर और जङ्गम पदार्थों तथा प्राणियों की उत्पत्ति, मानव सभ्यता का आरम्भ और विस्तार तथा प्रलयकाल में सृष्टि-संहार आदिका ज्ञान सामान्य जनता में फेलाना था। यदि निष्पक्ष भावसे विचार किया जाय तो यह सृष्टि-विज्ञान एक उच्चकोटि की विद्याहै जिसमें आधुनिक विज्ञान को थोड़ी सफलता प्राप्त हो सकी है। पुराणकाल ने इस रूखे विषय को रोचक बनाने के लिए रूपक अलङ्कार, उपमा अतिशियोक्ति आदिका बहुत अधिक उपयोग किया है। इसके साथ ही उन्होंने स्थावर पदार्थों तथा जड़ तत्वों का वर्णन भी सजीव पदार्थों की भाँति किया है। पर इसका कारण यही है कि अल्प विद्या बुद्धि का मनुष्य अधिक गम्भीर ग्रन्थोंको न तो अच्छी तरह समझ सकता है और न उसमें उसकी रुचि हो सकती है। अद्भुत कथाओं, दृष्टान्त रूपक आदिके द्वारा ही वह इन तथ्यों को मोटे रूप में जान सकने में समर्थ हो सकता है।

पर शैली को अपनाने का परिणाम यह अवश्य हुआ कि पुराणों के लेखक और कथा-वाचक उसमें बराबर नवीन कथा दृष्टान्त और रूपक आदिका समावेश करते गये और पुराणों का विस्तार हजारों की संख्या से बढ़कर लाखों श्लोकों तक पहुँच गया। जैसा 'वायु 'पुराण' में लिखा है कि आरम्भ में व्यासजी ने चार सहस्र श्लोकों की 'पुराण-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संहिता' की रचना की, पर फिर उनके शिष्यों ने उसके आधार पर भिन्न शैली में तीन अलग-अलग संहितायें बनाईं। तत्पश्चात् इनका सबसे अधिक विस्तार लोमहर्षण (सूतजी) और उनके पुत्र उग्रश्रवा ने किया। अधिकांश पुराण इन्हीं सूतजी द्वारा कथित बतलाये गये हैं। इनके पश्चात् भी जो अधिक-विद्या-बुद्धि सम्पन्न कथा-वाचक होते गये वे अपने श्रोताओं की रुचि और समयानुकूल आवश्यकताओं के अनुसार उनकी भाषा, शैली और विस्तार में और परिवर्तन करते गये। इस दृष्टि से सम्बन्ध में एक सनातन धर्मी आलोचक का यह कहना युक्ति युक्त ही है—

"पुराण-विद्या वेद-विद्या के समान अनादि है पौराणिक वाङ्मय, वैदिक वाङ्मय के समान सर्वप्रथम ब्रह्मा से प्रादुर्भाव हुआ। अन्तर केवल यह है कि वैदिक वाङ्मय को प्रथम उपलब्धि जिस रूप में हुई बाद में भी उसकी ज्यों की त्यों रक्षा कीगई। उसकी पदावली में किसी प्रकार के परिवर्तन को आग्राह्य माना, वह जिस रूपमें पहली बार सुना गया, उसी रूप में भी बराबर, कहा-सुना जाता रहा। इसीलिए उसका दूसरा नाम 'अनाश्राव' या श्रुति पड़ा। पर पौराणिक वाङ्मय के सम्बन्ध में यह बात नहीं है, पुराणों की रक्षा शब्दों में नहीं अपितु अर्थ में की गई। उनकी भाषा बदलती रही पर अर्थ वही रहा। इस प्रकार वेद में जो कुछ उपलब्ध है, वह अपने आदिम शब्द और अर्थ दोनों रूपों में ज्यों का त्यों आज भी सुरक्षित है पर पुराण केवल अपने मूल में ही सुरक्षित है।

यही कारण है कि हजारों वर्षों में भाषा और सामाजिक परिस्थितियों में अन्तर पड़ते जाने से पुराणों के बाह्य कलेवर और शैली में भी अन्तर पड़ता गया। उनका परिणाम दिन पर दिन बढ़ता गया, उनमें नये-नये समयानुकूल विषयों का समावेश होता रहा और आज कई पुराण पचास हजार और अस्सी हजार श्लोकों के विशालकार्य महाग्रन्थ के रूप में पहुँच गये। पर इसका नतीजा यह भी हुआ है कि उनमें अनेक बातों को दुहरा दिया गया है और अनेक स्थानों पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनावश्यक अति विस्तार कर दिया है। उदाहरण के लिए इसी शिव-पुराण' की प्रथम 'विद्येश्वर संहिता' में ब्रह्मा-विष्णु का विवाद और उनके मध्य में ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव वर्णन किया गया है। 'वायुवीय संहिता' में भी जैसे का तैसा वर्णन मिलता है। इसी प्रकार 'शतरुद्र संहिता' के ज्योतिर्लिंगों का-सा वर्णन अधिक विस्तार के साथ 'कोटिरुद्र संहिता' में भी दिया गया है। विभिन्न पुराणों में तो सृष्टि-उत्पत्ति, प्रलय नरक आदि के वर्णन ज्यों के त्यों उन्हीं शब्दों में मिलते हैं। जब हम सब पुराणका अध्ययन करते हुए एकही विषय और एक जैसे श्लोकों को वार-वार वढ़ते हैं तो अनेक समय भ्रम होने लगता है कि अभी तो ये ही वाते पढ़ी थीं वे फिर से यहाँ कैसे आ गईं ?

दूसरा विचारणीय विषय है—दूसरे देवता की निन्दा करना। जो कि अनुचित जान पड़ता है। उदाहरण के लिए 'विद्येश्वर संहिता' में शिवजी के गण भैरव ब्रह्माको मारने के लिए तैयार होगये और उन्होंने उनका शिर काट भी डाला। तव विष्णु के अत्यन्त दीनभाव से प्रार्थना करने पर उनकी प्राण रक्षा हो सकी। यद्यपि यहाँ लेखक का उद्देश्य शिवजी की सर्वोच्च महिमा और प्रभाव दिखाता है, पर इससे दूसरी सम्प्रदाय वालां के चित्त की चोट लगती है और फिर वे भी वैसी ही अनर्गल बातें गढ़ कर शिव तथा शैव धर्म की निन्दा में प्रवृत्त हो जाते हैं।

इन बातों पर विचार करते हुए हमको पुराणोंके एक ऐसे संस्मरण की आवश्यकता जान पड़ी जिसमें उनके सारभूत विषयों को एकत्रित करके सुबोध और सरल शैलीमें उपस्थित किया जाय। इस समय जिन पुराणों का आकार अस्सी हजार, पचास हजार या तीस-पैंतीस हजार श्लोकों तक पहुंच गया है, उसकी उपलब्ध कर सकना या अध्ययन कर सकना एक समस्या की तरह हो गया है। यही कारण है कि पुराणों का प्रवचन इन दिनों निरन्तर कम होता जाता है और लोगों में उनके प्रति उदासीनता का भाव उत्पन्न होता है। हम बता चुके हैं कि पुराणों में स्थान-स्थान पर अनगिनती उपयोगी विषय भरे हैं जिन्हें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान विज्ञान का 'भाण्डागार' ही कहा जा सकता है। उनमें केवल धर्म, नीति, चरित्र की शिक्षा देने वाली कथायें और उपदेश ही नहीं, वरन् राजनिति, शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र, स्वर-शास्त्र, आयुर्वेद, वृक्ष विज्ञान गृह निर्माण-शास्त्र, मूर्तिकाल आदि सैकड़ों विषय भरे पड़े हैं।

इसलिए इस बात की बहुत अधिक आवश्यकता है कि पुराणों का एक सुलभ संस्करण' ऐसा प्रस्तुत किया जाय जिसमें उनकी समस्या उपयोगी सामग्री आ जाय और जिसको जन-साधारण खरीदने और पढ़ने में भी समर्थ हो सकें। ऐसे संस्करण में से बार-बार दुहराये जाने वाले विवरणों ओर साम्प्रदायिक द्वेषपूर्ण कटुक्तियों को पृथक् करने से उनकी एक ऐसी त्रुटिका भी, जिसके कारण अनेक सुशिक्षित व्यक्ति उन पर आक्षेप करते रहते हैं, निवारण हो जायगा। लोग अपने-अपने साप्रदाय का प्रचार करें, उसकी विशेषताओं, महत्व का दर्शन करें, इसमें कोइ एतराज की बात नहीं है पर धार्मिक क्षेत्र में द्वेषयुक्त वातावरण उत्पन्न करना सत्पुरुषों का लक्षण नहीं माना जा सकता।

वहुत बड़े और विस्तारयुक्त ग्रन्थों के संशोधित तथा सारांश रूपमें उपलब्ध हो सकने से उनके प्रचार और उपयोगितामें वृद्धि हो जाती है। 'महाभारत' का परिचय अधिकांश व्यक्तियोंको उसके संक्षिप्त संस्करणों से ही हुआ है। 'विष्णु पुराण' को सभी जगह २३ हजार श्लोकों का लिखा है, पर उसके वर्तमान संस्करण में सात हजार श्लोक हैं और उसी को पूर्ण माना जाता है। यही बात 'कूर्म पुराण' आदिके विषय में भी देखी जा रही है। इससे विदित होता है कि इन ग्रन्थों के वृहत और लघु संस्करण हमेशा से होते रहे हैं। स्मृतियोंमें भी हारीत, यम आदि स्मृतियों के छोटे-बड़े संस्करण प्राचीन-काल से चले आ रहे हैं। इसलिए हमको पूरा विश्वास है कि हमारी यह संशोधित 'पुराण माला' अपने ढङ्ग की अनुपम सिद्ध होगी और इस महत्वपूर्ण साहित्य को लोक-प्रिय और बहुचर्चित बनाने में सफल होगी।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका

श्री शिव पुराण माहात्म्य

विद्येश्वर संहिता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्र-संहिता सृष्टि खण्ड

रुद्र-संहिता सती खण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्र-संहिता पार्वती खण्ड

रुद्र-संहिता कुमार खण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध संहिता (युद्ध खण्ड)

शत रुद्र संहिता

—x—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री शिवपुराण

प्रथम खण्ड

शिवपुराण माहात्म्यम्

।। शिवपुराण महत्व ।।

हे हे सूत महाप्राज्ञ सर्व-सिद्धान्तवित्प्रभो ।
आख्याहि मे कथासारं पुराणानां विशेषतः ।।१
सपुत्रायाश्च सद्भक्तेर्विवेको वर्द्धते कथम् ।
स्वविकारनिरासञ्च सज्जनैः क्रियते कथम् ।।२
जीवाश्चासुरतां प्राप्ताः प्रायो घोरे कलाविह ।
तेषां संशोधनं किं हि विद्यते परमाऽयनम् ।।३
यदस्ति वस्तु परमं श्रेयसां श्रेय उत्तमम् ।
पावनं पावनानां च साधनं तद्वदाधुना ।।४
येन तत्साधनेनाशु शुद्धयात्मा विशेषतः ।
शिवप्राप्तिर्भवेत्तात सदानिम्नर्मलचेतसः ।।५

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी ! वे सर्वसिद्धान्तों के ज्ञाता महा-पंडित आप विशेषकर पुराणों की कथा का सार मेरे प्रति कहिये ।१। सदाचार भक्ति के द्वारा विवेक की वृद्धि किस प्रकार होती है और सज्जन अपने विकारों को किस प्रकार शान्त करते हैं सो कहिये ।२। इस घोर कलि-काल में जो प्राणी असुरत्व को प्राप्त हुए हैं, उनका शोधन किस प्रकार हो सो आप कहने की कृपा करें ।३। जो वस्तु अत्यन्त श्रेष्ठ और कल्याण देने वाली है तथा जो पवित्रों से भी पवित्र उत्तम साधन रूप है सो आप मुझसे कहें ।४। आत्मा जिस साधन के द्वारा शुद्ध हो जाता है और सदा निर्मल चित्त वाले व्यक्तियों को भगवान् शिव प्राप्त हो जाते हैं ।५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यस्त्वं मुनिशार्दूल श्रवणप्रीतिलालसः ।
अतो विचार्य्य सुधिया वच्मि शास्त्रं महोत्तमम् ॥६
सर्व्वसिद्धान्त-निष्पन्नं भक्त्यादिकविवर्द्धनम् ।
शिवतोषकरं दिव्यं शृणु वत्स रसायनम् ॥७
कालव्यालमहात्रास विध्वंसकरमुत्तमम् ।
शैवं पुराणं परमं शिवेनोक्तं पुरा मुने ॥७
जन्मान्तरे भवेत्पुण्यं महत्तस्य सुधीमतः ।
तस्य प्रीतिर्भवेत्तत्र महाभाग्यवतो मुने ॥९
एतत्शिवपुराणं हि परमं शास्त्रमुत्तमम् ।
शिवरूपं क्षितौ ज्ञेयं सेवनीयं च सर्व्वथा ॥१०
पठनाच्छ्रवणादस्य भक्तिमान्नरसत्तमः ।
सद्यः शिवपदप्राप्ति लभतेसर्व्वसाधनात् ॥११
तस्मात्सर्वंप्रयत्नेन कांक्षितं पठितं नृभिः ।
तथास्य श्रवणं प्रेम्णा सर्वकामफलप्रदम् ॥१२

सूत ने कहा—हे मुनिवरो ! तुम्हारी प्रीति कथा सुनने में है। इसलिए तुम धन्य हो। इसी कारण मैं बुद्धिपूर्वक विचार करके यह श्रेष्ठ शास्त्र कहता हूँ।६। यह सब सिद्धान्तो से सम्पन्न भक्ति आदि की वृद्धि करने वाला तथा शिवजी का सन्तोष करने वाला परम दिव्य रसायन स्वरूप है।७। कालरूपी महासर्प का विध्वंसक यह परमश्रेष्ठ शिवपुराण है। हे मुने ! यह भगवान् शिव के द्वारा कहा गया है।८। जिसने जन्म जन्मान्तर अत्यन्त श्रेष्ठ और पुण्यकर्म किये हों, उस मनुष्य की अत्यन्त प्रीति इस महापुराण के श्रवण में होती है।९। यह शिवपुराण परमश्रेष्ठ शास्त्र है। पृथिवी में इसे शिव स्वरूप ही जानकर श्रद्धापूर्वक इसका सेवन करे।१०। इसके पढ़ने और श्रवण करने से मनुष्य शीघ्र ही श्रेष्ठ शक्ति से सम्पन्न होता है और उसे शिव-साधन रूप परम पद की शीघ्र प्राप्ति होती है।११। इसलिए मनुष्यों को इसे सब प्रकार से पढ़ना ही उचित है। क्योंकि इसके प्रेमपूर्वक पढ़ने से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है।१२।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराणश्रवणाच्छम्भोर्निष्पापो जायते नरः ।
भुक्त्वा भोगान्सुविपुलाञ्छिवलोकमवाप्नुयात् ॥१३
राजसूयेन यत्पुण्यमग्निष्टोमशतेन च ।
तत्पुण्यं लभते शम्भोः कथाश्रवणमात्रतः ॥१४
ये शृण्वन्ति मुने शैवं पुराणं शास्त्रमुत्तमम् ।
ते मनुष्या न मन्तव्या रुद्रा एव न संशयः ॥१५
शृण्वतां तत्पुराणं हि तथा कीर्तयतां च तत् ।
पादाम्बुजरजांस्येव तीर्थानि मुनयो विदुः ॥१६
गन्तुं निःश्रेयसंस्थानं येऽभिवाञ्छन्ति देहिनः ।
शैवम्पुराणममलं भक्त्या शृण्वन्तु ते सदा ॥१७
सदा श्रोतुं यद्यशक्तो भवेत्स मुनिसत्तम ।
नियतात्मा प्रतिदिनं शृणुयाद्वा मुहूर्तकम् ॥१८
यदि प्रतिदिनं श्रोतुमशक्तो मानयो भवेत् ।
पुण्यमासादिषु मुने शृणुयाच्छिवपुराणकम् ॥१९

शिव पुराण का श्रवण करने से मनुष्य सभी पापों से छूट जाता और अनेक भोगों का उपभोग करने पर अन्त में उसे शिवलोक की प्राप्ति होती है ।१२। राजसूर्य यज्ञ या सौ अग्निष्टोम से जो पुण्य प्राप्त होता है वह पुण्य शिवजी की कथा सुनने मात्र से ही मिल जाता है ।१४। हे मुने ! श्रेष्ठ शिवपुराण का जो मनुष्य श्रवण करते हैं, वे मनुष्य नहीं वरन् साक्षात् रुद्र रूप ही है, इसमें सन्देह नहीं में ।१५। इसके सुनने वालों और कीर्तन करने वालों की चरणरज भी तीर्थ स्वरूप है, ऐसा मुनिजनों का कथन है ।१६। कल्याणप्रद स्थान की कामना वाले जीवों को नित्य शिवजी के निर्मल पुराण का श्रवण करना चाहिए ।१७। यदि सब काल सुनने में समर्थ न हों तो नियमपूर्वक दो घड़ी ही इसे सुने ।१८। वह प्रतिदिन सुनने में समर्थ न हो तो पवित्र महीनों में श्रवण करे ।१९।

मुहूर्त्तं वा तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा क्षणं च वा ।
ये शृण्वन्ति पुराणं तन्न तेषां दुर्गतिर्भवेत् ॥२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पुराणं च श्रृण्वान् पुरुषो यो मुनीश्वरः ।
स निस्तरति संसारं गग्ध्वा कर्ममहाटबीम् ॥२१
तत्पुण्यं सर्वदानेषु सर्वयज्ञेषु वा मुने ।
शम्भोः पुराणश्रवणात्तत्फलं निश्चलं भवेत् ॥२२
विशेषतः कलौ शैवपुराणश्रवणादृते ।
परोधर्मों न पुसां हि मुक्तिसाधनकृन्मुने ॥२३
पुराणश्रवण शम्भोर्नामसङ्कीर्तनं तथा ।
कल्पद्रुमफलं सम्यङ्मनुष्याणां न संशयः ॥२४
कलौ दुर्मेधसां पुसां धर्माचारोज्झितात्मनाम् ।
हिताय विदधेशम्भुः पुराणाख्यं सुधारसम् ॥२५
एकोऽजरामरः स्याद्वैपिवन्नेवामृतं पुमान् ।
शम्भोः कथामृतं कुर्यात्कुलमेवाजरामरम् ॥२६

जो व्यक्ति एक मुहूर्त, उससे आधा या क्षणमात्र को भी सुनते हैं, वे दुर्गति को प्राप्त नहीं होते ।२०। हे मुनीश्वर ! इस महापुराण को जो प्राणी सुनते हैं, वे कर्म रूपी विकराल वन को भस्म कर संसार सागर से पार हो जाते हैं ।२१। हे मुने ! सम्पूर्ण यज्ञों से जो फल प्राप्त होता है वह शिव पुराण के सुनने से अवश्य मिल जाता है ।२२। विशेषकर कलि-काल में मुक्ति का साधन रूप शिवपुराण के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म नहीं है ।२३। सुनना या उनका नाम सङ्कीर्तन करना मनुष्यों के लिए कल्प वृक्ष के समान फलदायी है, इसमें सन्देह नहीं ।२४। कलियुग के जिन दुर्मेधी पुरुषों ने अपने धर्म को छोड़ दिया है उनके लिए भी यह अमृत रूप हित करने वाला है ।२५। इस अमृत को जो पुरुष पीता है, वह अजर अमर हो जाता है और शिवजी के कथा-मृत से कुल को भी अजर अमर कर देता है ।२६।

सदासेव्या सदासेव्या सदासेव्या विशेषतः ।
एतच्छिवपुराणस्य कथापरमपावनी ॥२७
एतच्छिवपुराणस्य कथाश्रवणमात्रतः ।
किं ब्रवीमि फलं तस्य शिवञ्चित्तं समाश्रयेत् ॥२८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतच्छिवपुराणस्य कथा भवति यद्गृहे ।
तीर्थभूतं हि तद्गेहं वसतां पापनाशनम् ॥२९
अश्वमेघसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
कलां शिवपुराणस्य नार्हन्ति खलु षौडशीम् ॥३०
गङ्गाद्याः पुण्यनद्यश्च सप्त पुर्य्यो गया तथा ।
एतच्छिवपुराणस्य समतां यान्ति न क्वचित् ॥३१
नित्यं शिवपुराणस्य श्लोकार्द्ध मेव च ।
स्वमुखेन पठेद्भक्त्या यदीच्छेत्परमांगतिम् ॥३२
एतच्छिवपुराणं यो वाचयेदर्थतोऽनिशम् ।
पठेद्वा प्रीतितो नित्यं स पुण्यात्मा न संशयः ॥३३

विशेषकर इसका सर्वदा सेवन करे। इसकी कथा परम पवित्र करने वाली है ।२७। इस कथा के सुनने मात्र से ही जो फल प्राप्त होता है, उसे मैं क्या कहूँ ? शिवजी में अपने मन को समर्पण कर दें। ।२८। जिस गृह में शिवपुराण की कथा होती है, वह साक्षात् तीर्थ के समान है, उसमें निवास करने से पापों का नाश हो जाता है ।२९। हजार अश्वमेघ और सौ बाजपेय यज्ञ भी शिवपुराण की सोलहवीं कला के समान नहीं हैं ।३०। गङ्गा आदि पवित्र नदियाँ सप्तपुरी तथा गया भी इसकी समता नहीं कर सकती ।३१। परमगति की कामना वाले पुरुष को भक्तिपूर्वक नित्यप्रति शिवपुराण का एक या आधे श्लोक का पाठ करना चाहिए ।३२। इसका जो पुरुष भक्तिपूर्वक पाठ करता है ओर नित्य श्रवण करता है, उनके पुण्यात्मा होने में सन्देह नहीं है ।३३।

एतच्छिवपुराणं यः पूजयेन्नित्यमादरात् ।
स भुक्तेह्यखिलान्कामानन्तेशिवपदं लभेत् ॥३४
एतच्छिवपुराणस्य कुर्व्वन्नित्यमतन्द्रितः ।
पट्टवस्त्रादिना सम्यक् सत्कारं स सुखी सदा ॥३५
शैवपुराणममलं शैवसर्वस्वमादरात् ।
सेवनीयं प्रयत्नेन परत्रेह सुखेप्सुना ॥३६
चतुर्व्वर्गप्रदं शैवंपुराणममलं परम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोतव्यं सर्वदा प्रीत्या पठितव्यं विशेषतः ॥३७
वेदेतिहासशास्त्रेषु परं श्रेयस्करं महत् ।
शैवंपुराणं निज्ञेयं सर्व्वथा हि मुमुक्षिभिः ॥३८
शैवंपुराणमिदमात्मविदांवरिष्ठैः सेव्यंसदापरमवस्तुस तांसमर्च्यम्
तापत्रयाभिशमनं सुखदं सदैव प्राणप्रियं विधिहरीशमुखामराणाम् ॥३९
वन्दे शिवपुराणं हि सर्व्वदाहंप्रसन्नधीः ।
शिवः प्रसन्नतां यायाद्दद्यात्स्वपदयो रतिम् ॥४०

इसका आदरपूर्वक नित्य प्रति पूजन करने वाले मनुष्य सभी कामनाओं को भोगकर अन्त में शिवपद को प्राप्त होते हैं ।३४। नित्यप्रति निरालस्य होकर इसका पाठ करने से तथा नित्य पट्ट वस्त्रादि से सत्कार करने से सर्वदा सुख की प्राप्ति होती है ।३५। यह अत्यन्त स्वच्छ एवं सर्वस्व है। जिसे दोनों लोकों में सुख की प्राप्ति की इच्छा हो उसे आदर पूर्वक इसका पाठ करना चाहिए ।३६। यह शिवपुराण चतुर्वर्ग का दाता है। इसका पाठ एवं श्रवण सदा प्रीतिपूर्वक करना चाहिए ।३७। वेद, इतिहास तथा शास्त्रों में यह परम श्रेय प्रदायक है इसलिए मुमुक्षुजनों को सदा शिवपुराण का ज्ञान आवश्यक है ।३८। आत्म ज्ञानियों के लिए यह शिवपुराण अत्यन्त उत्तम है। परम वस्तु सदा सेवनीय और सत्पुरुषों को पूजनीय है। त्रिताप-नाशक, सुखदायक है तथा ब्रह्मा, विष्णु और देवताओं के लिए प्राणों के समान प्रिय है ।३९। मैं प्रसन्न होकर शिवपुराण को सदा प्रणाम करता हूँ। शिवजी इसके द्वारा प्रसन्न होकर अपने चरणों की प्रीति मुझे प्रदान करें ।४०।

॥ देवराज मुक्ति वर्णन ॥

ये मानवाः पापकृतो दुराचाररताः खलाः ।
कामादिनिरता नित्यं तेऽपि शुध्यन्त्नेन वै ॥१
ज्ञानयज्ञः परोऽयंवैऽभुक्तिमुक्तिप्रदस्तथा ।
शोधनस्सर्वपापानां शिवसन्तोषकारकः ॥२
तृष्णाकुलास्सत्यहीनाः पितृमातृविदूषकाः ।
दाम्भिकाहिंसका ये च तेऽपि शुध्यन्त्यनेन वै ॥३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्ववर्णाश्रमधर्मेभ्यो वर्जिता मत्सरान्विताः ।
ज्ञानयज्ञेनतेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।।४
छलच्छद्मकरा ये च ये च क्रूरास्सुनिर्दयाः ।
ज्ञानयज्ञेनतेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।।५
ब्रह्मस्वपुष्टास्सततं व्यभिचाररताश्च ये ।
ज्ञानयज्ञेनतेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।।६
सदा पापरता ये च ये शठातिदुराशयाः ।
ज्ञानयज्ञेनतेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।।७
मलिना दुर्धियोऽशान्ता देवताद्रव्यभोजिनः ।
ज्ञानयज्ञेनतेऽनेन सम्पुनन्ति कलावपि ।।८

सूतजी ने कहा—जो मनुष्य पाप, दुराचार, कामादिक से डूबे हुए हैं, वे भी इसके द्वारा शुद्ध हो जायेंगे ।१। यह परम भक्ति और मुक्तिका दाता ज्ञान-यज्ञ है । सब पापों का शोधनकर्त्ता और शिवजी को सन्तोष कराने में समर्थ है ।२। तृष्णा से व्याकुल और सत्य से हीन तथा माता पिता की हँसी उड़ाने वाले एवं हिंसक मनुष्य भी इसके द्वारा सुधर जाते हैं ।३। वर्णाश्रम धर्म से रहित तथा मत्सर युक्त प्राणी भी कलिकाल में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा संसार सागर से पार हो जायेंगे ।४। जो पुरुष छल करने वाले, क्रूर एवं निर्दय स्वभाव के हैं वे भी कलिकाल में इस ज्ञान यज्ञ के द्वारा पार हो जायेंगे ।५। जो व्यक्ति ब्राह्मणों के धन द्वारा पुष्ट हुए तथा निरन्तर व्यभिचार कर्म में लगे रहते हैं, वे भी इस ज्ञान-यज्ञ के प्रभाव से तर जायेंगे ।६। जो सदा पाप कर्म में रत, शठ एवं दुराशा से युक्त हैं वे भी कलियुग में इस ज्ञान के द्वारा पार हो जायेंगे ।७। मलींन एवं बुरी बुद्धि वाले अशान्त तथा देवताओं के द्रव्य को हड़पने वाले मनुष्य भी कलियुग में इस ज्ञान के द्वारा पार हो जायेंगे ।८।

।। चंचुला वैराग्य वर्णन

शृणु शौनक वक्ष्यामि त्वदग्रे गुह्यमप्युत ।
यतस्त्वं शिवभक्तानामग्रणीर्वेदवित्तमः ।।१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्रनिकटे देशे ग्रामो वाष्कलसंज्ञकः ।
वसन्ते यत्र पापिष्ठा वेदधर्मोज्झिता जनाः ।।२
दुष्टा दुर्विषतात्मानो निर्देवाजिह्मवृत्तयः ।
कृषीवलाः शस्त्रधराः परस्त्रीभोगिनः खलाः ।।३
ज्ञानवैराग्यसद्धर्मं न जानन्ति परं हि ते ।
कुकथाश्रवणाद्येषु निरताः पशुबुद्धयः ।।४
अन्ये वर्णाश्चकुधियस्स्वधर्मविमुखाः खलाः ।
कुकर्मनिरता नित्यं सदाविषयिणश्च ते ।।५
स्त्रियः सर्वाश्चकुटिलास्स्वैरिण्यः पापलालसाः ।
कुधियोव्यभिचारिण्यस्सद्व्रताचारवर्जिताः ।।६
एवं कुजनसंवासे ग्रामे वाष्कलसंज्ञिते ।
तत्रैको बिन्दुगोनाम विप्र आसीन्महाधमः ।।७

सूतजी ने कहा—हे शौनक ! मैं तुमसे अत्यन्त गुह्य कथा कहता हूँ, क्योंकि तुम शिवभक्तों में सर्व प्रथम हो ।१। समुद्र के निकट एक देश में वाष्कल नामक ग्राम था, उसमें वेद-धर्म से विमुख पापी जन रहते थे ।२। वे दुष्ट दुर्विषयी यथा कुटित वृत्ति वाले कृषि कर्म में लगे हुए, शस्त्रबल पर निर्भर रहने वाले और स्त्री-भोगी थे ।३। वे ज्ञान-वैराग्य स्वरूप अपने धर्म से अज्ञान पशुबुद्धि व्यक्ति बुरी वार्त्ता सुनने में ही रुचि रखते थे, क्योंकि उनकी बुद्धि पशु के समान थी ।४। अन्य वर्णं के लोग भी कुबुद्धि वाले थे । सदा अपने धर्म से विमुख रहते और विषय भोगों में बराबर कुकर्म करने वाले थे ।५। सभी स्त्रियाँ स्वैरिणी, कुटिल और पाप कर्म की इच्छा वाली थीं । सत् व्रत और आचार से रहित तथा व्यभिचारिणी थी ।६। बुरे व्यक्तियों वाले उसी ग्राम में बिंदुग नामक अत्यन्त अधर्मी ब्राह्मण भी निवास करता था ।७।

स दुरात्मा महापापी सदारोऽपिकुमार्गगः ।
वेश्यापतिर्बभूवाथ कामाकुलितमानसः ।।८
स्वपत्नीं चंचुलानाम हित्वा नित्यं सुधर्मिणीम् ।
रेमे स वेश्यया दुष्टः स्मरबाणप्रपीडितः ।।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं कालो व्यतीताय महास्तस्यकुकर्मिणः ।
सा स्मधर्मंभियात्क्लेशात्स्मरात्तापि च चंचुला ॥१०
अथ तस्याङ्गनासापि प्ररूढनवयौवना ।
अविषह्यस्मरावेशा स्वधर्माद्विरराम ह ॥११
जारेण सङ्गत रात्रौ रेमे पापेन गुप्ततः ।
पतिदृष्टि वञ्चयित्वा भ्रष्टसत्वा कुमार्गगा ॥१२
कदाचित्तां दुराचारां स्वपत्नीं चंचुलां मुने ।
जारेण सङ्गतां रात्रौ ददर्श स्मरविह्वलाम् ॥१३
दृष्टा तां दुष्टिनीं पत्नीं कुकर्मासक्तमानसाम् ।
जारेण सङ्गतां रात्रौ क्रोधाद्द्रु दाववेगतः ॥१४

वह अत्यन्त पापी, दुरात्मा और स्त्री सहित कुमार्ग पर चलने वाला काम से व्याकुल होकर वेश्या का पति बना ।८। वह चंचुला नामक अपनी पत्नी का त्याग कर काम-बाण से पीड़ित होकर वेश्या के साथ रहने लगा ।९। इस प्रकार उस कुकर्मी को बहुत समय व्यतीत हो गया । उसकी पत्नी चंचुला अपने धर्म और क्लेश का भय होते हुए भी काम से आक्रान्त हो गई ।१०। वह अत्यन्त तरुणाई को प्राप्त थी, उसने काम से महान् पीडित होकर अपने धर्म का त्याग कर दिया ।११। जार की सङ्गति में अपने पति की दृष्टि बचाकर रहने लगी। वह अपने सत् से भ्रष्ट तथा कुमार्ग-गामिनी हो गई ।१२। एक समय उनके पति ने उस दुराचारिणी को रात्रि के समय जार के साथ देख लिया ।१३। वह उस कुमार्ग-गामिनी दुष्टा को जार के साथ रमण करती देखकर अत्यन्त क्रोध पूर्वक उसकी ओर दौड़ा ।१४।

तमागतं गृहे दुष्टमाज्ञाय बिन्दुगं खलः ।
पलायितो द्रुतंजारो वेगतश्छद्मवान्सं वै ॥१५
अथ य बिन्दुगः पत्नीं गृहीत्वा सुदुराशयः ।
मुष्टिबन्धेन संतर्ज्य पुनः पुनरताडयत् ॥१६
सा नारी ताडिता भर्त्रा चंचुला स्वैरिणी खला ।
कुपिता निर्भया प्राह स्वपति बिन्दुगं खलम् ॥१७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवाप्रतिदिनं कामं रमते वेश्यया कुधीः ।
मां विहाय स्वपत्नीं च युवतीं पतिसेविनीम् ॥१८
रूपवत्या युवत्याञ्च कामाकुलितचेतसः ।
विना पतिविहारं यात्कागतिर्मे भवान्वदेत् ॥१६
अहं महारूपवती नवयौवनविह्वला ।
अथं सहे कामदुःखं तवसङ्गविनार्तधीः ॥२०
इत्युक्तस्स तयामूर्खो मूढधीर्ब्राह्मणोऽधमः ।
प्रोवाचबिन्दुगः पापी स्वधर्मविमुखः खल ॥२१

पति को रात्रि के समय घर में आया देखकर स्त्री ने जार को संकेत किया और वह छली वहाँ से भाग गया ।१५। तब बिन्दुग ने उसे पकड़ लिया और मुष्टिका से बारम्बार मारने लगा ।१६। अपने पति के द्वारा पिटी हुइ चंचुला क्रोध से भय-रहित होती हुई इस प्रकार कहने लगी ।१७। चंचुला बोली आप जो नित्यप्रति वेश्या के प्रेम में फँसे रहते हो और मैं नित्यप्रति तुम्हारी सेवा करती हूँ । तुम मेरा त्याग करते हो ।१८। बताओ जो सौन्दर्यमयी काम से व्याकुल है, उसकी पति से रमण करने के बिना क्या गति होगी ? ।१९। मैं अत्यन्त रूपवती, नवयौवन से युक्त तथा काम से व्याकुल हूँ । तुम्हारे साथ रमण किये बिना मैं काम का सन्ताप किस प्रकार सहन कर सकती हूँ ।२०। सूतजी ने कहा—चंचुला के ऐसा कहने पर ब्राह्मणों में नीच एवं अपने धर्म से हीन मति वाले बिन्दुग ने उससे कहा ।२१।

सत्यमेतत्त्वयोक्तंहि कामव्याकुलचेतसा ।
हितंवक्ष्यामितस्माते शृणु कान्ते भयन्त्यज ॥२२
जारैर्विहर नित्यं त्वं चेतसानिर्भयेन वै ।
धनमाकर्ष तेभ्यो हि दत्वा तेभ्यः परां रतिम् ॥२३
तद्धनं देहि सर्वं मे वेश्यासंशक्तचेतसः ।
महत्स्वार्थंभवेन्नूनं तवापि च ममापि च ॥२४
इतिभर्तृवचः श्रुत्वा चंचुला तद्वधूश्च सा ।
तथेति भर्तृ वचनं प्रतिजग्राहदुष्टधीः ॥२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृत्वैवं समयं तौवै दम्पती दुष्टमानसौ।
कुकर्मनिरतौ जातौ निर्भयेन कुचेतसा ॥२६
एवं तयोस्तु दम्पत्योर्दुराचारप्रवृत्तयोः।
महान्कालोव्यतीयाय निष्फलोमूढचेतसाः ॥२७

विन्दुग ने कहा—हे काम से व्याकुल चित्त वाली ! मैं हित की बात कहता हूँ, उसे भय छोड़कर सुन ।२२। तू निर्भय मन से जार के साथ समागम कर, परन्तु उसे प्रसन्न करके धन भी तो प्राप्त कर ।२३। और उस सम्पूर्ण धन को मुझ वेश्या के साथ गमन करने वाले अपने पति को दे दे। इस कार्य में मेरा और तेरा, दोनों का ही स्वार्थ निहित है ।२४। सूतजी ने कहा—अपने पति की बात सुनकर चचुला ने 'बहुत अच्छा', कहा और फिर अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक दोनों ही दुष्ट हृदय परस्पर निर्भय चित्त होकर अत्यन्त कुकर्म में संलग्न हो गये ।२५-२६। इस प्रकार दुराचार में लगे रहनेवाले उन दोनों स्त्री पुरुषों को बहुत-सा समय व्यतीत हो गया और वे मूढ़ मन वाले नितांत निष्फल रहे ।२७।

अथ विप्रस्सुकुमति विन्दुगोवृषलीपतिः।
कालेन निधनं प्राप्तो जगाम नरकं खलः ॥२८
भुक्त्वा नरकदुःखानि वह्वानि स मूढधीः।
विन्ध्येऽभवत्पिशाचोहि गिरौ पापीभयङ्करः ॥२९
मृतेभर्तृरि तस्मिन्वे दुराचारेऽथ विन्दुगे।
उवासस्वगृहेपुत्रैश्चिरकालं विमूढंधीः ॥३०
एवंविहरती जारैः सा नारी चंचुलाह्वया।
आसीत्कामरता प्रीता किञ्चदुत्क्रान्तयौवना ॥३१
एकदा देवयोगेन सम्प्राप्ते पुण्यपर्वंणि।
सा नारीबन्धुभिस्साद्धं गोकर्णक्षेत्रमाययौ ॥३२
प्रसङ्गात्सा तदागत्वा कस्मिश्चित्तीर्थंपाथसि।
सस्नौ सामान्यतो यत्र तत्र बभ्रामबन्धुभिः ॥३३

समय पाकर वह मूढ़ वृषलीपति मृत्यु को प्राप्त हो गया और उसे घोर नरक की प्राप्ति हुई ।२८। बहुत काल तक नरक दुःख भोग कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मूढ़ बड़ा भयङ्कर एवं महापापी पिशाच होकर विंध्य पर्वत में रहने लगा।२६। जब उस दुराचारी की मृत्यु हो गयी तब वह चंचुला पुत्रों के साथ बहुत समय तक अपने गृह में निवास करती रही। वह जारों के साथ निरन्तर-सम्पर्क बनाये रही। परन्तु काम से सुख मानने वाली उस स्त्री का यौवन कुछ-कुछ व्यतीत हो गया। दैवयोग से एक समय पुण्य पर्व के आने पर वह नारी अपने बान्धवों के साथ गोकर्ण क्षेत्र में जा पहुँची। प्रसङ्गवश उसने किसी एक तीर्थ के जल में स्नान किया और बन्धुजनों के साथ इस क्षेत्र में भ्रमण करने लगी।३०-३३।

देवालयेऽथकस्मिश्चिद्दैवज्ञमुखतः शुभाम्।
शुश्राव सत्कथांशम्भोः पुण्यां पौराणिकीं च सा ॥३४
योषितांजारसक्तानां नरके यमकिङ्कराः।
संतप्तलोहपरिघं क्षिपन्ति स्मरमन्दिरे ॥३५
इति पौराणिकेनोक्तां श्रुत्वा वैराग्यवर्द्धिनीम्।
कथामासीद्भयोद्विग्ना चकम्पे तत्र सा वै ॥३६
कथासमाप्तौ सा नारी निर्गतेषु जनेषु च।
भीता रहसि तं प्राह शैवं संवाचकं द्विजम् ॥३७
ब्रह्मन्स्वं शृणवद्वृत्तमजानन्त्वा स्वधर्मकम्।
श्रुत्वा मामुद्धरस्वामिन्कृपां कृत्वाऽतुलामपि ॥३८
चरितंसूल्बणं पापं मया मूढधिया प्रभो।
नीतं पौश्चल्यतस्सर्वं मदनान्धया मया ॥३९
श्रुत्वेदंवचनंतेऽद्य वैराग्यरसजृम्भितम्।
जातामहाभया साहं सकम्पाप्तवियोगिका ॥४०

वहाँ किसी देवालय में किसी पण्डित के मुख से उसने शिवपुराण की कथा श्रवण की।३४। कि जो नारी जार के साथ रमण करती है उसे यमदूत नरक में ले जाते और उसकी योनि स्थान में लोहे का बना तप्त मुसल प्रविष्ट करते हैं।३५। इस प्रकार वैराग्य की वृद्धि करने वाली पुराण-कथा को सुनकर चंचुला अत्यन्त भय से उद्विग्न होकर काँपने लगी।३६। जब कथा पूरी होगई और सभी श्रोता वहाँ से चले गये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव वह भवभीत उस कथा वाचक से एकान्त में प्रश्न करने लगी ।३७। चंचुला ने पूछा–हे ब्रह्मन् आप मुझे असत् बृत्ति वालीं स्त्री समझकर मेरा वृत्तान्त सुनें और अत्यन्त कृपा पूर्वक मेरा उद्धार करें ।३८। मेरा चरित्र अत्यन्त घृणित है । मुझ मूर्खा ने अपना यौवन अज्ञान के कारण व्यभिचार में व्यतीत कर डाला, मैं उस समय मदान्ध हो चुकी थी।३९। आपसे वैराग्य रस से परिपूर्ण वचन सुनकर मैं अत्यन्त भयभीत होउठी हूँ और मेरा हृदय कम्पायमान हो रहा है ।४०।

धिङ्मां मूढधियं पापा काममोहितचेतसम् ।
निन्द्यांदुर्विषयासक्तां विमुखीं हि स्वधर्मतः ।४१
यदल्पस्य सुखस्यार्थे स्वकार्यं स्याविनाशिनः ।
महापापकृतं घोरमजानन्त्यातिकष्टदम् ।४२
यास्यामि दुर्गतिं कां कां घोरां हा कष्टदायिनीम् ।
को ज्ञास्यति माँ तत्र कुमार्गरतमानसाम् ।४३
मरणे यमदूतांस्तान कथन्द्रक्ष्ये भयङ्करान् ।
कथं सहिष्ये नरके खण्डशोदेहकृन्तनम् ।४४
यातना तत्र महतीं दुःखदां च विशेषतः ।४५
दिवा चेष्टामिन्द्रियाणां कथं प्राप्स्यामि शोचती ।
रात्रौ कथं लभिष्येऽहं निन्द्रां दुःखपरिप्लुता ।४६
हा हतास्मि च दग्धास्मि विदीर्ण हृदयास्मि च ।
सर्वथाहं त्रिनष्टास्मि पापिनी सर्वथाप्यहम् ।४७

मैं कामसे भ्रमित चित्त हुई मूढ़बुद्धि वाली स्त्री हूँ । मुझे धिक्कार है जो मैंने अपने धर्म से विमुख होकर निदत कुधर्म को प्राप्त किया है । ।४१। ओर मैं स्वप्न सुख के आकर्षण में अपने कार्य को नष्ट कर देने वाले अत्यन्त कष्टकारी और दुष्कर्म में प्रवृत्त हो गयी ।४२। अब मैं किस घोर कष्ट देने वाली दुर्गति को पाऊँगी और कुमार्ग में मन रमाने वाली स्त्री की रक्षा वहाँ कौन करेगा ? ।४३। मृत्यु को प्राप्त करने पर मैं उन यमदूतों को किस प्रकार देखूँगी । जब वे यमदूम मुझे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोर पाशों में बाँधेंगे तब मुझे विश्राम कैसे प्राप्त होगा ? ।४४। जब नरक में देह के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे, तब मैं उसे किस प्रकार सहन करूँगी ? वहाँ तो अत्यन्त दुःसह्य यातना प्राप्त होती है ।४५। उन इन्द्रियों की चेष्टा का ध्यान करती हुई मैं किस प्रकार देख सकूँगी ? दुःख से युक्त मैं किस प्रकार सो सकूँगी ? ।४६। मैं विदीर्ण हृदय वाली सब प्रकार दग्ध और नष्ट हो चुकी हूँ, क्योंकि मैं अत्यन्त पाप कर्म वाली हूँ ।४७।

हा विधे मां महापापे दत्वादुश्शेमुषीहठात् ।
अपैषि यत्स्वधर्माद्वै सर्वसौख्यकरादहो ।४८
शूत्रप्रोतस्यशैलाग्रात्पततस्तुगतो द्विजः ।
यद्दुःखदेहिनघोरं तस्मात्कोटिगुणं मम ।४६
अश्वमेधशतंकृत्वा गंगास्नात्वा शतं समाः ।
न शुद्धिजायते प्रायो मत्पापस्य गरीयसः ।५०
किं करोमि क्व गच्छामि क्व वा शरणमाश्रये ।
कस्त्रायते मां लोकोस्मिन्यतन्ती नरकार्षणं ।५१
त्वमेव मे गुरुर्ब्रह्मंस्त्वं मातात्वंपितासि च ।
उद्धरोद्धर मां दीनां च मेवशरणं गताम् ।५२
इति संजातनिर्वेदां पतिताञ्च चरणद्वये ।
उत्थाप्य कृपया धीमान्वभाषे ब्राह्मणस्सहि ।५३

हे विधना! तुमने हठपूर्वक यह घोर पापमयी बुद्धि प्रदान कर क्या लिया, जो सब सुखोंको प्रदान करने वाले धर्म से ही विमुख बना दिया है ।४८। हे महात्मन् ! शूल से गोदने पर और पर्वत से गिरने पर जो पीड़ा होती है मुझे उसमें करोड़ गुनी हो रहीहै ।४६। सौ अश्वमेध यज्ञ कर लेने पर तथा सौ वर्ष तक निरन्तर गङ्गा स्नान करने पर भी मेरे घोर पाप का शोधन नहीं हो सकता ।५०। मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? किसकी शरण में पहुँचूँ ? मुझ नरक सागर में गिरी हुई स्त्री की रक्षा करने में इस लोक में समर्थ कौन है ? ।५१। हे ब्रह्मन् ! आप ही मेरे गुरु और माता-पिता हैं । कृपा कर आप मुझ दीन का उद्धार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कीजिए। मैं आपकी शरण को प्राप्त हुई हूँ ।५२। सूतजी ने कहा–जब चंचुला इस प्रकार निर्वेद को प्राप्त होकर ब्राह्मण के चरणों में गिर पड़ी तब कृपा पूर्वक उसे उठाकर ब्राह्मण ने कहा ।५३।

चंचुला की सद्गति

दिष्टया काले प्रबुद्धासि शिवानुग्रहतो वराम् ।
इमां शिवपुराणस्य श्रुत्वा वैराग्यवत्कथाम् ।१
मा भैषीर्द्विजपत्नि त्वं शिवस्य शरणं व्रज ।
शिवानुग्रहतस्सर्वः पाप सङ्घो विनश्यति ।२
सत्कथाश्रवणादेव जाता ते मतिरीदृशी ।
पश्चात्तापान्विता शुद्धा वैराग्यं विषयेषु च ।३
पश्चात्तापः पापकृतां पापानां निष्कृतिः परा ।
सर्वेषां वर्णितं सद्भिस्सर्वपापविशोधनम् ।४
पश्चात्तापे नैव शुद्धिः प्रायश्चित्तं करोति सः ।
यथोपदिष्टं सद्भिर्हि सर्वपापविशोधनम् ।५
प्रायश्चित्तमधिकृत्यं विधिवन्तिर्भयः पुमान् ।
न याति सुगतिप्रायः पश्चात्तापी न संशयः ।६
एतच्छिवपुराणस्य कथा श्रवणतो यथा ।
जायतेचित्तशुद्धिर्हि न तथान्यै रुपायतः ।७

ब्राह्मण ने कहा--तू भाग्यवश ही ज्ञान को प्राप्त हुई है। शिवजी का तेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह है जो तू शिव पुराण की वैराग्यमयी कथा सुनकर ही ज्ञान को प्राप्त कर सकी ।१। हे विप्रपत्नी ! भय मत करो और शिवजी की शरण में जा। शिवजी के अनुग्रह से सब पाप शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं ।२। उनकी सत्कथा सुनने से ही तेरी मति ऐसी हुई है, जिससे तू पश्चात्ताप करके शुद्ध और विषयों से विरक्त हो गई है ।३। पश्चात्ताप ही पापों की परम निष्कृति है ।विद्वज्जनों ने पश्चात्ताप करने से सब प्रकार के पापों की शुद्धि होना कथन कियाहै ।४।पश्चात्ताप करने से जिसके पापों का शोधन न हो उसे प्रायश्चित करना चाहिए ।विद्वानों ने इससे सब पापों का शोधन होना कहा है ।५। विधिपूर्वक अनेक प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रायश्चित करने पर भी मनुष्य भयभीत नहीं हो पाता। परन्तु पश्चात्ताप करने वाले को सुगति को प्राप्त होती है ।६। इसके सुनने से जैसी चित्त शुद्धि है, वैसी अन्य उपायों से नहीं होती ।७।

अतः सर्वस्य वर्गस्यैतत्कथासाधनं मतम् ।
एतदर्थं महादेवो निर्ममे त्वाग्रहादिमाम् ।८
कथया सिध्यति ध्यानं मन सा गिरिजापतेः ।
ध्यानाज्ज्ञानं परं तस्मात्कैवल्यं भवति ध्रुवम् ।९
असिद्धशंकरध्यानः कथामेव शृणोति यः ।
संप्राप्यान्यभवेध्यानं शंभोर्यातिपरां गतिम् ।१०
एतत्कथाश्रवणतः कृत्वा ध्यानमुमापतेः ।
ते पश्चात्तापिनः पापा वहवः सिद्धिमागताः ।११
सर्वेषां श्रेयसांबीजं सत्कथाश्रवणं नृणाम् ।
यथावत्मं समाराध्यं भवबन्धगदापहृम् १२
कथाश्रवणतः शम्भोर्मननाच्च ततोहृदा ।
निदिध्यासनतश्चैव चित्त शुद्धिर्भवत्यलम् ।१३
ध्यायतः शिवपादाब्ज चेतसा निर्मलेन वै ।
एकेन जन्मना मुक्तिस्सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।१४

इसलिए सभी को शिवपुराणकी कथा सुननी चाहिए । इसी उद्देश्य से शिवजी ने इसे बनाया है । क्योंकि यह सभी वर्ग का साधक है ।८। इस कथा के द्वारा शिव का ध्यान सिद्ध हो जाता है ध्यान से ज्ञान की सिद्धि होती है, और ज्ञान से कैवल्य प्राप्त होता है ।९। जिसे शंकर का ध्यान सिद्धि नहीं है, वह यदि इस कथा को सुने तो उसे शिवजीके ध्यान की सिद्धि होती है और वह परमगति को प्राप्त होता है ।१०। इस कथा को सुनकर भगवान् शिव का ध्यान करने से पश्चाताप करने वाले पुरुष सिद्धि को प्राप्त हो चुके हैं ।११। इस सत्य कथा को सुनने वाले पुरुष सभी प्रकार के मंगल को प्राप्त होते और शिवजी की आराधना करने से उनकी संसार-व्याधि छूट जाती है ।१२। शिव की कथा सुनकर मनन करने से तथा निदिध्यासन के द्वारा चित्त की पूर्ण शुद्धि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाती है ।१३। स्वच्छ चित्त से शिवजी के चरण कमल पर ध्यानकर एक जन्म में हो तो मुक्ति प्राप्त हो जायगी यह मैं सत्य कहता हूँ ।१४।

अथ विदुगपत्नी सा चंचुलाह्त्वा प्रसन्नधीः ।
इत्युक्ता तेन विप्रेण समासीद्वाष्पलोचना: ।१५
पपातारं द्विजेन्द्रस्य पादयोस्तस्य हृष्टधीः ।
चंचुलासाञ्जलिः सा च कृतार्थास्मीत्यभाषत ।१६
अथ सोत्थाय सा तं का साञ्जलिर्गद्गदाक्षरम् ।
तमुवाच महाशैवं द्विज वैराग्ययुक्सुधीः ।१७
ब्रह्मञ्छैववरस्वामिन्धन्यस्त्वं परमार्थदृक् ।
परोपकारनिरतो वर्णनीयः सुसाधुषु ।१८
उद्धरोद्धर मा साधो पतन्ती नरकार्णवम् ।
श्रुत्वोमां सुकथां शैवींपुराणार्थ विजृंभिताम् ।१९
विरक्तधीरहं जा तां विषयेभ्यश्च सर्वतः
सुश्रद्धामहती ह्येतत्पुराणश्रवणेऽधुना ।२०

तब चंचुला उसके वचनों से प्रसन्न हुई और उसके नेत्रोंमें आनन्दाश्रु आ गए ।१५। वह प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मण के चरणों में गिर गई और हाथ जोड़कर बोली, हे ब्रह्मन् ! मैं कृतार्थ हो गई हूँ ।१६। और अत्यन्त शाँति पूर्वक उठकर प्रसन्न होती हुई गद्गद् वाणी द्वारा वैराग्यमय वचन उस महाशैव से बोली ।१७। चंचुला ने कहा--हे ब्रह्मन् ! आप शिव-भक्तों में श्रेष्ठ हैं। परमार्थ के देखने वाले, परोपकार में निरत तथा साधुओं में उत्तम हैं ।१८। हे भगवान् ! मैं नरक सागर में गिरती जा रही हूँ आप मेरा उद्धार करिये। जिस पुराण के अर्थ वाली शिव कथा को सुनकर मैं पाप कर्मों से विरक्त हुई हूँ उस कल्याणकारी पुराण को श्रवण करने की मुझे अत्यन्त श्रद्धा उत्पन्न हुई है ।१९-२०।

इत्युक्तवासाञ्जलिः सा वै संप्राप्य तदनुग्रहम् ।
तत्पुराणं श्रोतुकामातिष्ठत्तत्सेवनेरता ।२१
अध शैववरो विप्रस्तस्मिन्नेवस्थले सुधीः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्कथांश्रावयामास तत्पुराणस्यतां स्त्रियम् ।२२
इत्थं तस्मिन्महाक्षेत्रे तस्मादेवद्विजोत्तमात् ।
कथाशिवपुराणस्य सा शुश्राव महोत्तमाम् ।२३
भक्तिज्ञानविरागाणां वर्द्धिनीं मुक्तिदायिनीम् ।
बभूव सुकृतार्थी सा श्रुत्वा तां सत्कथां पराम् ।२४

सूतजी ने कहा -चंचुला हाथ जोड़कर इस प्रकार कहती हुई ब्राह्मण की कृपाको प्राप्त हुई और शिवपुराण सुनने की कामना से उसके समीप जब बैठी। वह शैवों में श्रेष्ठ, विप्र, उस पवित्र स्थान में उस स्त्री को शिवपुराण की पवित्र कथा सुनाने लगे । उस विप्र-श्रेष्ठ के मुख से चंचुला उस महान् क्षेत्र में बैठकर परमोत्तम शिवपुराण की कथा सुनी । वह कथा भक्ति, ज्ञान और वैराग्य की वृद्धि करने वाली और मोक्षदायिनी थी । चंचुला उस कथा को सुनकर कृतार्थ हो गई।२१-२४।

विन्दुग की सद्गति

सा कदाचिदुमादेवी मुपगम्य प्रणम्य च ।
सुतुष्टाव करौ बद्ध्वा परमानन्दसंप्लुता ।१
गिरिजे स्कन्दमातस्त्वं सेविता सर्वदा नरैः ।
सर्वसौख्यप्रदे शम्भु प्रिये ब्रह्मस्वरूपिणि ।२
विष्णुब्रह्मादिभिस्सेव्या सगुणानिर्गुणापि च ।
त्वमाद्याप्रकृतिस्सूक्ष्मा सच्चिदानन्दरूपिणी ।३
सृष्टिस्थितिलयङ्करी त्रिगुणा त्रिसुरालया ।
ब्रह्माविष्णुमहेशानां सुप्रतिष्ठाकरा परा ।४
इति स्तुत्वामहेशीं तां चंचुला प्राप्तसद्गतिः ।
विरराम नतस्कन्धा प्रेमपूर्णाश्रुलोचना ।५
ततस्सा करुणाविष्टा पार्व्वतीशङ्करप्रिया ।
तामुवाच महाप्रीत्या चंचुलां भक्तवत्सला ।६
चंचुले सखि सुप्रीता तयास्तुत्यास्मिसुन्दरी ।
किं याचसे वरं ब्रूहि नादेयं विद्यते तव ।७

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतजी ने कहा--एक समय चंचुला भगवती उमा के पास पहुँची और उन्हें प्रणामकर परमानन्द-पूर्वक कर जोड़कर प्रसन्न करने लगी ।।१। चंचुला ने कहा--हे गिरजे ! हे स्कन्द माता ! आपकी मनुष्य सदा सेवा करते हैं। आप सदा सुख के देने वाली तथा साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हो ।२। ब्रह्मा, विष्णु आदि के द्वारा सेवनीय आप सगुण स्वरूप आद्या प्रकृति एवं सूक्ष्म सच्चिदानन्द स्वरूप वाली हो ।३। आप ही सृष्टि स्थिति और लय करने वाली त्रिगुण त्रिसुरालया एवं ब्रह्मा, विष्णु महेश की सुप्रतिष्ठा करने वाली हो। सूतजी ने कहा--सद्‌गति प्राप्त चंचुला ने भगवती उमा की इस प्रकार स्तुति की और नेत्रों में अश्रु लाती हुई शान्ति को प्राप्त हुई।४-५। तब करुणामयी गिरिजा ने उस भक्त-वत्सला चंचुला से कहा-हे चंचुला ! मैं तेरी स्तुति से अत्यन्त प्रसन्न हुई हूँ । तुझे जो कुछ वर माँगना हो तो माँग ले, तेरे लिए कोई भी वस्तु अदेय नहीं है ।६-७।

इत्युक्ता सा गिरिजया चंचुला सुप्रणम्यताम् ।
पर्यं पृच्छत सुप्रीत्या साञ्जलिर्नतमस्तका ।८
मम भर्ताधुनाक्वास्ते नैवजानामि तद्‌गतिम् ।
तेन युक्ता यथाहं वै भवामि गिरिजेऽनघे ।६
तथैव कुरु कल्याण कृपया दीनवत्सले ।
महादेवि महेशानि भर्ता मे वृषलीपतिः ।
मत्तः पूर्वमृतः पापी न जाने कां गतिं गतः ।१०
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याश्चंचुला याहि पार्वती ।
प्रत्युवाच सुसंप्रीत्या गिरिजानयवत्सला ।११
सुते भर्ता बिन्दुगाह्वो महापापी दुराशयः ।
वेश्याभोगी महामूढो मृत्वा स नरकं गतः ।१२
भुक्त्वा नरकदुःखानि विविधान्यमिताः समाः ।
पापशेषेण पापात्मा विन्ध्ये जातः पिशाचकः ।१३
इदानीऽसिपि शाचोस्त नानाक्लेशसमन्वितः ।
तत्रैव वातभुग्दुद्रस्सर्वकष्टवहस्सदा ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतजी ने कहा--पार्वतीजी की बात सुनकर चंचुला ने हाथ जोड़े और प्रणामपूर्वक सिर झुकाकर उनसे प्रश्न किया ।८। हे भगवती! मेरा स्वामी इस समय कहाँ है ? मैं उसके विषय में नहीं जानती । हे कल्याणी ! वह मुझे मिल सके, ऐसी कृपा करिये ।९। हे महादेवी ! मेरा स्वामी वृषलीपति था । वह पापी मुझसे पहले ही मर गया, न जाने उसे कौन-सी गति प्राप्त हुई ।१०। सूतजी ने कहा-चंचुला की यह बात सुनकर भगवती पार्वतीजी प्रसन्न होकर कहने लगीं ।११। हे पुत्री! तेरा पति बिन्दुग घोर पापी और वेश्यागामी था । वह महामूढ़ मरने के पश्चात् नरक में गिरा ।१२। उसने बहुत वर्षों तक नरक के दुःख भोगे और बचे हुए पाप के कारण वह विन्ध्याचल में जाकर पिशाच हुआ ।१३। इस समय वह अनेक क्लेशों में पड़ा हुआ पिशाच है और वायु भक्षण करता हुआ अनेक कष्टों को भोगता है ।१४।

इति गौर्य्या वचः श्रुत्वा चंचुला सा शुभव्रता ।
पतिदुःखेनमहता दुःखितासीत्तदाकिल ।१५
समाधाय ततश्चित्तं सुप्रणम्य महेश्वरीम् ।
पुनः पप्रच्छ सा नारी हृदयेन विदूयता ।१६
महेश्वरि महादेवि कृपां कुरु ममोपरि ।
समुद्धरपतिमेऽद्य दुष्टकर्मकरं खलम् ।१७
केनोपायेन मे भर्ता पापात्मा स कुबुद्धिमान् ।
सद्गतिं प्राप्नुयाद्देवि तद्वदाशु नमोऽस्तुते ।१८
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याः पार्वतीभक्तवत्सला ।
प्रत्युवाच प्रसन्नात्मा चंचुलां स्वसखीं च ताम् ।१९
शृणुयाद्यदितेभर्ता पुण्यां शिवकथां पराम् ।
निस्तीर्य दुर्गतिं सर्वां सद्गतिप्राप्नुयादिति ।२०
इतिगौर्य्या वचः श्रुत्वामृताक्षरमथादरात् ।
कृतांजलिर्नतस्कन्धा प्रणनाम पुनः पुनः ।२१
तत्कथाश्रवणं भर्तुस्सर्वपापविशुद्धये ।
सद्गतिप्राप्तयेचैव प्रार्थयामास तां सदा ।२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतजी ने कहा--पार्वतीजी की बात सुनकर उत्तम व्रत वाली चंचुला अपने पति के दुःख से अत्यन्त दुःखी हो गई।१५। अपने स्वामी में चित्त लगाकर पार्वतीजी को प्रणाम कर वह दुःखित हृदय से उनसे पुनः प्रश्न करने लगी।१६। हे महादेवी ! मुझ पर कृपा करिए। दुष्टकर्म के फल से कष्ट भोगते हुए मेरे स्वामी का उद्धार कीजिए ।१७। मेरा पापात्मा स्वामी किस प्रकार बुद्धिमान हो सद्गति को प्राप्त हो, मेरे प्रति वह कहिए। मैं आपको प्रणाम करती हूँ।१८। सूतजी ने कहा--उसकी बात सुनकर भक्त-वत्सल पार्वतीजी ने प्रसन्न होकर अपनी सखी चंचुला से कहा।१९। यदि तेरा पति पवित्र शिव कथा सुने तो दुर्गति से पार होकर श्रेष्ठ गति प्राप्त करेगा।२०। पार्वतीजी के अमृत समान शब्दों को श्रवण कर आदरपूर्वक हाथ जोड़ती हुई चंचुला अपने स्वामी के पाप की निवृत्ति के लिए शिव कथा की इच्छा करती हुई कथा का सुयोग प्राप्त करने के निमित्त भगवती से पुनः प्रार्थना करने लगी। ।२१-२२।

तया मुहुर्मुहुर्नार्य्या प्रार्थ्यमाना शिवप्रिया।
गौरी कृपान्वितासीत्सा महेशी भक्तवत्सला।२३
अथ तुंबुरू माहूय शिवसत्कीर्ति गायकम्।
प्रीत्या गन्धर्वराजं हि गिरिकन्येदमब्रवीत्।२४
हे तुंबुरो शिवप्रीत मम मानसकारक।
सहानया विन्ध्यशैलं भद्रं ते गच्छ सत्वरम्।२५
आस्तेतत्रमहाघोरः पिशाचोऽतिभयंकरः।
तद्वृत्तं शृणु सुप्रीत्या दितस्सर्वं ब्रवीमिते।२६
पराभवे पिशाचस्सबिन्दुगाह्वोऽभवद्द्विजः।
अस्यानार्य्याः पतिर्दुष्टो मत्सख्या वृषलीपतिः।२७
स्नानसंध्याक्रियाहीनो ऽशौचः क्रोधविमूढ धीः।
दुर्भक्षी सज्जनद्वेषी दुष्परिग्रहकारकः।२८
हिंसकः शस्त्रधारी च सव्यहस्तेन भोजनी।
दीनानांपीडकः क्रूरः परवेश्मप्रदीपकः।२९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाण्डालाभिरतोनित्यं वेश्याभोगी महाखलः ।
स्वपत्नीत्यागकृत्पापी दुष्टसंगरतस्सदा ।३०

सूतजीने कहा–जब उसने पार्वतीजी की बारम्बार प्रार्थना की तब भक्त वत्सला पार्वतीजी कृपा से युक्त हो गई उन्होंने शिव की सत्कीर्ति का गान करने के लिए तुम्बुरु गन्धर्व को बुलाया और उससे प्रीतिपूर्वक कहने लगीं। पार्वतीजी ने कहा–हे तुम्बुरु ! तुम शिवजीकी प्रीति करने वाले और मेरे वचन मानने वाले हो। इसके साथ विंध्याचल पर्वत को जाओ वहाँ एक अत्यन्त भयंकर पिशाच निवास करता है। मैं तुमसे उसकी बात कहती हूँ,तुम प्रसन्न होकर उसे श्रवणकरो पिशाचयोनि को प्राप्त होनेसे पूर्व वह विन्दुग नामक ब्राह्मण था। वह दुष्ट इसी स्त्रीका स्वामी था। वेश्यागामी, स्नान एवं संध्या की क्रिया से रहित, पवित्रता से हीन, क्रोध से मूर्ख बुद्धि वाला, दुर्भक्षी, सज्जनों से द्वेष रखने वाला और दुष्परिग्रह वाला था। वह शस्त्रधारी, हिंसक, वाँये हाथ से भोजन करने वाला, दीनों को पीड़ित करने वाला, क्रूर पीड़क तथा लोगों के घर में आग लगाने वाला था। चाण्डाल से प्रीति करने वाला, वेश्यागामी, अत्यन्तपापी, पत्नी का त्याग करने वाला और दुष्ट संग से प्रीति करने वाला था।२३-३०।

तेन वेश्या कुसंगेन सुकृतं नाशितं महत् ।
वित्तलोभेन महिषीं निर्भया जारिणी कृता ।३१
आमृत्योस्सदुराचारी कालेननिधनं गतः ।
ययौ यमपुरं घोरं भोगस्थानं हि पापिनाम् ।३२
तत्र भुक्त्वा स दुष्टात्मा नरकाणि बहूनि च ।
इदानीं स पिशाचोऽस्तिर्विध्यंऽद्रौपापभुक्खलः ।३३
तस्याग्रे परमां पुण्या सर्वपापविनाशिनीम् ।
दिव्यां शिवपुराणस्य कथां कथय यत्नतः ।३४
द्रुतं शिवपुराणस्य कथां श्रवणतः पुरात् ।
सर्वपापविशुद्धात्मा हास्यतिप्रेतां च सः ।३५
मुक्तं च दुर्गं तेस्तं वै बिन्दुगं त्वं पिशाचकम् ।
ममाज्ञया विमानेन समानय शिवान्तिकम् ।३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने वेश्या-संग से अपने सभी सुकृतों को नष्टकर डाला और धन के लोभ से अपनी पत्नी को भी व्यभिचारिणी बना दिया। मरने के समय तक वह दुराचार से लगा रहा और मृत्यु होने पर यमलोक को गया वहाँ से उसे पापियों के घोर स्थान की प्राप्ति हुई। वहाँ उस दुष्टात्माको अनेक नरक भोगने पड़े और अब विंध्याचल पर्वत में जाकर पिशाच हो गया है। तुम वहाँ जाकर परम पवित्र शिवपुराण की कथा जो सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने में समर्थ है, उस पिशाच को श्रवण कराओ। वह उस पवित्र कथाको सुनतेही पापरहित होकर अपनेप्रेतत्व का त्याग कर देगा तब वह दुर्गति से छूट कर अपने पिशाचत्व को छोड़ देगा। उस समय तुम विमान पर बैठाकर मेरी आज्ञा से उसे शिवजी के पास ले जाना।३१-३६।

इत्यादिष्टो महेशान्या गन्धर्वेन्द्रश्च तुम्बुरुः।
मुमुदेऽतीवमनसि भाग्यं निजमवर्णयत्।३७
आरुह्य सुविमानं स सत्यातत्प्रियया सह।
ययौ विन्ध्याचलेसौरं यत्रास्ते नारदप्रियः।३८
तत्रापश्यत्पिशाचं तं महाकायं महाहनुम्।
प्रहसन्तं रुद्रन्तं च वल्गं तं विकटाकृतिम्।३९
बलाज्जग्राह तं पाशैः पिशाचचातिभीकरम्।
तुम्बुरुश्शिवसत्कीर्ति गायकश्च महाबली।४०
अथोशिवपुराणस्य वाचनार्थं स तुम्बुरुः।
निश्चित्य रचनां चक्र महोत्सवसमन्विताम्।४१
पिशाचं तारितुं देव्याः शसनात्तुम्बुरुर्गतः।
विंध्यं शिवपुराणं सह्यद्रिश्रावयितुं परम्।४२
इति कोलाहलो जातस्सर्वलोकेषु वै महान्।
तत्र तच्छ्रवणार्थाय ययुर्देवर्षयोद्रुतम्।४३

सूतजी ने कहा—तुम्बुरु गन्धर्व से जब पार्वती जी ने इस प्रकार कहा तब वह अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने भाग्य को सराहने लगा।३७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचुला के साथ गन्धर्व विमान में बैठा और तउ उसने विंध्याचल पर्वत को प्रस्थान किया ।३८। वहाँ वह विकराल हनु वाला महाकाय पिशाच उन्हें दिखाई दियां । विकट आकार वाला कभी हँसता-रोता कभी कूदता और चाहे जो कुछ उकता था ।३९। तुम्बुरु ने उस पिशाच को बलपूर्वक पाशों के द्वारा पकड़ा और फिर उसके समक्ष शिवजी की कीर्ति कां गान प्रारम्भ किया ।४०। फिर तुम्बुरु ने शिवपुराण पढ़ने के लिए एक महोत्सव के वातावरण का आयोजन किया ।४१। पार्वती जी की आज्ञासे उस पिशाच को संकट मुक्त करने के लिए तुम्बुरु गया। वह शिवपुराण की कथा विंध्याचल में कहेगा ।४२। सब लोगों में यह विज्ञप्ति प्रसारित हो गई तब शिबपुराण का श्रवण करने के लिए वहाँ देवता और ऋषि भी आ गये ।४३।

समाजस्तत्रपरमोऽद्भुतश्चासीच्छुभावहः ।
तेषां शिवपुराणस्या गतानां श्रोतुमादरात् ।४४
पिशाचमथातः पाशौ बंद्धं समुपवेश्य च ।
तुंबुरुर्वल्लकीहस्तो जगौ गौरीपतेः कथाम् ।४५
आरभ्य संहितामाद्यां सप्तमीं संहितावधि ।
स्पष्टं शिवपुराणं हि स माहात्म्यं समावदत् ।४६
श्रुत्वा शिवपुराणं तं सप्तसंहितामादरात् ।
बभूवुः सुकृतर्थास्ते सर्वे श्रोतार एव हि ।४७
स पिशाचो महापुण्यं श्रुत्वा शिवपुराणकम् ।
विधूय कलुषं सर्वं जहौ पैशाचकं वपुः ।४८
दिव्यरूपो बभूवाशु गौरवर्णः सितांशुकः ।
सर्वालङ्कारदीप्ताङ्गस्त्रिनयनश्चन्द्रशेखरः ।४९

उस समय वहाँ श्रेष्ठ और अद्भुत समाज हुआ सभी आदरपूर्वक शिवपुराण सुनने को एकत्र हुए थे ।४४। पाशों से बँधा वह पिशाच भी वहाँ बैठा । उस समय तुम्बुरु ने वीणा लेकर पार्वती सहित शिवजी का कीर्तिगान प्रारम्भ किया ।४५। उसने प्रथम संहिता से आरम्भ करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सातवीं संहिता तक माहात्म्य सहित सम्पूर्ण शिवपुराणकी कथाका वर्णन किया। कथा श्रवण के फल से पिशाच ने भी पाप रहित होकर अपने शरीर का त्याग कर दिया। वह तत्काल गौर वर्ण का होकर श्वेत वस्त्रधारी दिखाई देने लगा। सम्पूर्ण अलंकारों से जगमगाता हुआ वह तीन नेत्र युक्त चन्द्रशेखर रूप हो गया।४६-४६।

शिवपुराण श्रवण विधि

श्रीमच्छिवपुराणस्य श्रवणस्य विधिंवद।
येन सर्वं लभेच्छ्रोता सम्पूर्ण फलमुत्तमम्।१
अथ ते सं प्रवक्ष्यामि सम्पूर्ण फल हेतवे।
विधि शिवपुराणस्य श्रवणे शौनक मुने।२
दैवज्ञं च समाहूय सन्तोष्य च जनान्वितः।
मुहूर्तं शोधयेच्छुद्धं निर्विघ्नेन समाप्तये।३
वार्ताप्रेष्या प्रयत्नेन देशे देशे च सा शुभा।
भविष्यति कथा शैवी आगन्तव्यं शुभार्थिभिः।४
दूरेहरिकथाः केचिद्दूरे शङ्करकीर्तनाः।
स्त्रियः शूद्रादयो ये च बोधस्तेषां भवेद्यतः।५
देशे देशे शांभवा ये कीर्तनश्रवणोत्सुकाः।
तेषामानयनं कार्यं तत्प्रकारार्थमादरात्।६
भविष्यत्ति समाजोऽत्र साधूनां परमोत्सवः।
पारायणं पुराणस्य शैवस्यपरमाद्भुतः।७

शौनकजी ने कहा—हे सूतजी! आप शिवपरायण के सुनने की विधि मेरे प्रति कहिए जिससे श्रोताओं को श्रेष्ठ फल की प्राप्ति हो सके।१। सूतजी ने कहा—मैं फल के लिए शिवपुराण की विधि तुमसे कहता हूँ हे शौनक तुम इसे ध्यान से श्रवण करो।२। शिव पुराण की कथा सुनने के लिए ज्योतिषी को बुलावें और कुटुम्ब सहित सन्तुष्ट कर पुराण के निर्विघ्न पूर्ण होने के लिए मुहूर्त निकाले।३। फिर देश-देश में समाचार भेजें कि अमुक स्थान पर शिवपुराण की कथा होगी उसे सुनने के लिए सबको सम्मिलित होना चाहिए।४। जो शिवजीकी कथा अथवा उनके कीर्तन से रहित हो ऐसे स्त्री,शूद्र आदि अज्ञानियों को भी बोधहो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हों, उनको आदरपूर्वक आमन्त्रित करना चाहिए ।५। इस स्थान पर साधुओं का परम मंगल प्रदान करने वाला समाज होगा तथा अत्यन्त अद्‌भुत शिवपुराण का पारायण होगा ।७।

नावकाशो यदि प्रेम्णा गन्तव्यं दिनमेककम् ।
सर्वथा गमनं कार्यं दुर्लभा चक्षणास्थितिः ।८
तेषामाह्वानमेवं हि कार्यं सविनयं मुदा ।
आगतानां च तेषां हि सर्वथा कार्य्यं आदरः ।९
शिवालये च तीर्थे वा वने वापि गृहेऽथवा ।
कार्यं शिवपुराणस्य श्रवणस्थलमुत्तमम् ।१०
कार्य्यं संशोधनं मूले लेपनं धातुमण्डनम् ।
विचित्रा रचनादिव्य महोत्सवपुरस्सरम् ।११
कर्तव्योमण्डपोऽत्युच्चैः कदलीस्तम्भमण्डितः ।
फलपुष्पादिभिस्सम्यग्विष्वगवैतान राजितः ।१२
चतुर्द्दिक्षुध्वजारोपस्सपातकः सुशोभनः ।
सुभक्तिस्सर्वथाकार्या सर्वानं दविधायिनी ।१३
संकल्प्यमासनं दिव्यं शंकरस्य परात्मनः ।
वक्तुश्चापि तथा दिव्यमासनं सुखसाधनम् ।१४

यदि अवकाश न हो तो एक दिन के लिए ही प्रेम पूर्वक आइये । यहाँ अवश्य आना चाहिए। क्योंकि ऐसे कार्य क्षणमात्रके लिए भी दुर्लभ है ।८। इस प्रकार विनयपूर्वक लोगों को आमन्त्रित करना चाहिए और आगत व्यक्तियों का आदर एवं सम्मान करना चाहिए ।९। यदि शिवालय रूप तीर्थ की स्थापना कराये और वहाँ शिव पुराण की कथा करावें तो वह स्थान इसीलिए सर्वश्रेष्ठ है ।१०। जहाँ शिवपुराण की कथा हो, वहाँ पहिले पृथ्वी को लीपें और धातुओं से आच्छादित करे । इस प्रकार विचित्र रचना पूर्वक महोत्सव करे ।११। कुछ ऊँचा मण्डप निर्मित करे और फल पुष्पादि का अर्पण करते हुए भले प्रकार पूजन करना चाहिए ।१२। चारों ओर ध्वज पताका फहराये और सब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रकार से आनन्द प्रदान करने वाली श्रेष्ठ भक्ति का आश्रय ग्रहण करे ।१३। संकल्प कर भगवान शंकर को दिव्य आसन पर प्रतिष्ठापित करे और भक्त को बैठने के लिए भी श्रेष्ठ आसन दें ।१४।

श्रोतॄणां कल्पनीयानि सुस्थलानि यथार्हतः ।
अन्येषां च स्थलान्येव साधारणं तथा मुने ।१५
विवाहे यादृशं चित्तं तादृशं कार्यमेवहि ।
अन्या चिन्ताविनिर्वार्य्या सर्वा शौनक लौकिकी ।१६
उदङ्मुखोभवेद्वक्ता श्रोताप्राग्वदनस्तथा ।
व्युत्क्रमः पादयोर्ज्ञेयो विरोधो नास्ति कश्चन ।१७
अथवा पूर्वऽदिग्ज्ञेया पूज्यपूजकमध्यतः ।
अथवा संमुखेवक्तुः श्रोतॄणामाननं स्मृतम् ।१८
नीचबुद्धिं न कुर्वीत पुराणयज्ञे कदाचन ।
यस्य वक्त्रोद्गता वाणी कामधेनुश्शरीरिणाम् ।१९
गुरुवत्सन्ति बहवो जन्मतोगुणतश्च वै ।
परोगुरु पुराणज्ञस्तेषां मध्ये विशेषतः ।२०
पुराणज्ञः शुचिर्दक्षः शान्तो विजितमत्सरः ।
साधुः कारुण्यवान्वाग्मी वदेत्पुण्यं कथामिमाम् ।२१
असूर्योदयमारभ्य सार्द्धं त्रिप्रहरान्तकम् ।
कथाशिवपुराणस्य वाच्या सम्यक् स धीमता ।२२

श्रोताओं के बैठने के लिए भी योग्य एवं सुन्दर स्थान रखे तथा सभी स्थान साधारण रूप से निश्चित करे ।१५। शिवपुराण की कथा में वैसा ही उत्साह रखे जैसा विवाह आदि अन्य मंगल कार्यों के करने में होता है । हे शौनक ! सभी लौकिक चिन्ताओं को उस समय त्यागदे ।१६। वक्ता का मुख उत्तर दिशा में रहे और श्रोता पूर्वाभिमुख होकर पालथी मारकर बैठे । कथा के सम्मुख पात्र न रखे और किसी प्रकार का भी विरोध न हो ।१७। अथवा पूज्य के बीच में पूर्व दिशा होनी चाहिए अथवा श्रोताओं के मुख कथा वाचक के सम्मुख होने चाहिए ।१८। पुराण के जानने वाले के प्रति शंका युक्त बुद्धि न करे क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके मुखके निकलने वाले वचन देहधारियोंके लिए कामधेनु के समान हैं ।१६। जन्म से और गुण से अनेक गुरु होते हैं, परन्तु उन सभी में शिवपुराण का ज्ञाता विशिष्ट प्रकारका गुरु होता है । पुराण का जानने वाला पवित्र, चतुर शान्त, मद-रहित, साधु, दयावान और वाग्मी हो जो इस पुराण कथा को कहता है । शिवपुराण की कथा का आरम्भ सूर्योदय से पूर्व कर दें और बुद्धिमान कथावाचक उसे ढाई प्रहर तक बाचे ।२०-२२।

कथां शिवपुराणस्य शृणुयादादरात्सुधीः ।
श्रोता सुविधिना शुद्धचित्तः प्रसन्नधीः ।२३
अनेककर्मविभ्रान्तः कामादिषडविकारवान् ।
स्त्रैणः पाखण्डवादी च वक्ता श्रोता न पुण्यभाक् ।२४
लोकचिन्ताधनागार पुत्रचिंता व्युदस्य च ।
कथाचित्तः शुद्धमतिस्सलभेत्फल मुत्तमम् ।२५
श्रद्धा भक्तिसमायुक्ता नान्यकार्येषु लालसाः ।
वाग्यताः शुचयोऽव्यग्राः श्रोतारः पुण्यभागिनः ।२६
कथायां कथ्यमानायां गच्छन्त्यन्तत्र ये नराः ।
भोगान्तरे प्रणश्यन्ति तेषां दारादिसम्पदः ।२७
असम्प्रणम्य वक्तारं कथा शृण्वन्ति ये नराः ।
भुक्त्वा ते नरकान्सर्वान्भवंत्यर्जुनपादपाः ।२८
अनातुराश्शयाना शृण्वन्तो मां कथां चराः ।
भुक्त्वा ते नरकान्सर्वान्भवन्त्यंजगरददयः ।२९

शिवपुराण की कथा बुद्धिमान श्रोता आदर पूर्वक सुनें और शुद्ध तथा प्रसन्नचित रहे ।२३। अनेक कर्मों से भ्रान्ति को प्राप्त तथाकामादि छः विकारों से युक्त, चोर, पाखन्डी वक्ता या श्रोता पुण्य के भागी नहीं होते ।२४। उत्तम फल की प्राप्ति उसी को होती है, जो लोक चिन्ता, धन, ग्रह या पुत्र की चिन्ता त्यागकर केवल शिवकथा में चित्त लगाता है ।२५। श्रद्धा, भक्तिसे युक्त तथा अन्य कार्योंकी लालसासे मुक्तजो पुरुष मौन रहकर और व्यग्रता को छोड़कर कथा सुनते हैं, वही पुण्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भागी होते हैं। कथा होते हुए जो मनुष्य उसे बीच में छोड़कर अन्य स्थान को चले जाते हैं उनके भोगान्तर में स्त्री, धन आदि का नाश हो जाता है। जो मनुष्य कथा वाचक को प्रणाम किये बिना कथा श्रवण करते हैं जो मनुष्य निरोग होते हुए भी लेटकर कथा श्रवण करते हैं, वे नरकों के दुःख भोगने के पश्चात् अजगर आदि होते हैं।२६-२६।

वक्तुस्समासनारूढा ये शृण्वन्ति कथामिमाम् ।
गुरुतल्पसमं पापं प्राप्यते नारकैस्सदा ।३०
ये निन्दन्ति च वक्तारं कथा चेमां सुपावनीम् ।
भवन्ति शुनका भुक्त्वा दुःखं जन्मशतं हि ते ।३१
कथायां वर्तमानायां दुर्वादं वदन्ति हि ।३२
भुक्त्वा ते नरकान्घोरान्भवन्ति गर्दभास्ततः ।३३
कदाच्चिन्नापि शृण्वंन्ति कथामेतां सुपावनीम् ।
भुक्त्वा ते नरकान्घोरान्भवन्ति वनशूकराः ।३४
एवं विचार्य शुद्धात्मा श्रोता वक्तुसु भक्तिमान् ।
कथा श्रवणहेतोर्हि भवेत्त्रीत्योद्यतः सुधीः ।३५
कथां विघ्नविनाशार्थं गणेशं पूजयेत्पुरा ।
नित्यं संपाद्य संक्षेपात्यप्रायश्चित्त समाचरेत् ।३६

जो किसी अहं भावना वश वक्ता के बराबर, ऊँचे आसन पर बैठ कर कथा श्रवण करते हैं, उनको गुरु शय्या पर चढ़ने का पाप होता है।३०। जो वक्ता और इस पवित्र कथाकी निन्दा करते हैं वे दुःख भोगते हुए सौ जन्म तक श्वान योनि को प्राप्त होते हैं। जो कथा होने के समय मुख से दुर्वचन निकालते हैं, वे घोर नरक के दुःखों को भोगकर गधे की योनि में जाते हैं। इस पवित्र कथा को जो कभी भी श्रवण नहीं करते, वे घोर नरक में जाकर दुःख भोगते और फिर बन शूकर होते हैं। कथा होते समय जो दुष्ट मनुष्य विघ्न उपस्थित करते हैं वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ वर्षों तक नरक भोगने के उपरान्त ग्राम सूकर बनते हैं। इस लिए श्रोता और वक्ता दोनों ही विचार-पूर्वक शुद्धात्मा होकर भक्ति भाव सहित कथा सुनने के लिए बुद्धिपूर्वक तत्पर हों। कथा में विघ्न उपस्थित न हों, इसके लिए प्रथम गणेशजी का पूजन करे, फिर संक्षेप में नित्य कर्म करके प्रायश्चित करे।३१-३६।

नवग्रहाश्च संम्पूज्य सर्वतोभद्रदैवतम् ।
शिवपूजोक्तविधिना पुस्तकं तत्समर्चयेत् ।३७
पूजनांते महाभक्त्या करौ बद्ध्वा विनीतकः ।
साक्षाच्छिवस्वरूपस्य पुस्तकस्य स्तुतिं चरेत् ।३८
श्रीमच्छिवपुराणाख्यः प्रत्यक्षस्त्वं महेश्वरः ।
श्रवणार्थं स्वीकृतोऽसि सन्तुष्टो भव वै मयि ।३९
मनोरथो मदीर्योयं कर्तव्यस्फलस्त्वया ।
निर्विघ्नेनसुसंपूर्णकथाश्रवणमस्तु मे ।४०
भवाब्धिमग्नं दीनं मां समुद्धर भवार्णवात् ।
कर्मग्राहगृहीताङ्गं दासोऽहं तव शंकर ।४१
एवं शिवपुराणं हि साक्षाच्छिवस्वरूपकम् ।
स्तुत्वा दीनवचः प्रोच्य वक्तुः पूजां समारभेत् ।४२
शिवपूजोक्तविधिना वक्तारं च समर्चयेत् ।
सपुष्पवस्त्रभूषाभिधूपदीपादिनार्चयेत् ।४३
तदग्रे शुद्धचित्तेन कर्तव्यों नियमस्तदा ।
आसमाप्ति यथाशक्त्याधारणीयस्सुयत्नतः ।४४
व्यासरूपप्रबोधाग्र शिवशास्त्रविशारद ।
एतत्कथा प्रकाशेन मदज्ञानं विनाशय ।४५

नवग्रह और सर्वतोभद्र के देवताओं को पूजकर शिवजी का पूजन विधि के अनुसार पुराण-पुस्तक का पूजन करना चाहिए।३७। पूजन के अन्त में भक्ति पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर साक्षात् शिवजी स्वरूप पुराण-पुस्तक की स्तुति करें।३८। यह श्री शिवपुराण प्रत्यक्ष शिवजीका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप है सुनने के लिए यह सत्कार करने से मेरे ऊपर प्रसन्न हो।३९। मेरे इन मनोरथों को आप पूर्ण कीजिए। मेरी यह कथा निर्विघ्न सम्पूर्ण हो जाय, ऐसी कृपा करिए।४०। हे शङ्कर! मैं आपका दास हूँ। कर्म रूपी ग्राह के द्वारा पकड़ा हुआ संसार-सागर में पड़ा हूँ। इस सागर से आप मुझे पार लगाइये।४१। इस प्रकार इस साक्षात् शिव स्वरूप शिव पुराण का स्तवन करता हुआ नम्रतायुक्त वाणी से व्यास पूजन से वक्ता का पूजन करे वस्त्राभूषण, पुष्प और धूप दीप से पूजन करे।४२-३३। उसके सम्मुख शुद्ध चित्तसे नियम ले और जब तक कथा सम्पूर्ण हो तब तक अपने सामर्थ्यानुसार नियमों का पालन करें।४४। हे व्यास स्वरूप! हे ज्ञान के देने वाले! हे सम्पूर्ण शास्त्र विशारद! आप इस कथा को कहकर मेरे अज्ञान का हरण कीजिए।४५।

शिवपुराण के श्रोताओं के लिए विधि-निषेध और पूजा विधि

पुंसां शिवपुराणस्य श्रवणव्रतिनां मुने।
सर्वलोकहितार्थाय दयया नियमं वद।१
नियमं शृणु सद्भक्त्या पुसां तेषां च शौनक।
नियमात्सत्कथां श्रुत्वानिर्विघ्नफलमुत्तमम्।२
पुसां दीक्षाविहीनानां नाधिकारा कथाश्रुवे।
श्रोतुकामैरतोवक्तुर्दीक्षा ग्राह्या च तै मुंने।३
ब्रह्मचर्य्यं मधस्सुप्तिः पत्रावल्ल्यां च भोजनम्।
कथा समाप्तौ भुक्ति च कुर्यान्नित्यं कथाव्रती।४
आसमाप्तपुराणं हि समुपोष्य सुशक्तिमान्।
शृणुयाद्भक्तिः युद्धः पुराणं शैवमुत्तमम्।५
घृतपानं पयः पानं कृत्वा वा शृणुयात्सुखम्।
फलाहारेण वा श्राव्यमेकभुक्तेन वाहि तत्।६
एकवारं हविष्यान्नं भुज्यादेतत्कथाव्रती।
सुखसाध्यं यथा स्यात्तच्छ्रवणं कार्यमेव च।७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शौनकजी ने कहा–हे सूतजी ! शिवपुराण का व्रत करने वालों के और सम्पूर्णलोक हितके लिए नियम कहिए।१। सूतजीने कहा-हेशौनक! भक्तिपूर्वक उनके नियमों को सुनो । नियम से सत्कथा को सुने जिससे निर्विघ्नता पूर्वक श्रेष्ठ फल प्राप्त हो ।२। कथा सुनने में दीक्षारहित का अधिकारी नहीं है । इसलिए वक्ता से दीक्षा लेनी चाहिए ।३। ब्रह्मचर्य पूर्वक पृथिवी में शयन, पत्तल में भोजन तथा कथा समाप्त होने पर आहार ग्रहण करे ।४। श्रोता को उचित है कि पुराण-कथा के सम्पूर्ण होने-पर्यन्त सामर्थ्यानुसार व्रत पालन करते हुए श्रद्धासहित शिवपुराण की कथा श्रवण करे ।५। घृत या दुग्धका पान करके या फलाहार करके अथवा एक समय भोजन करके कथा सुने ।६। इस कथा के सुनने वाले को एक बार हविष्यान्न का भोजन करना चाहिए जिस प्रकार कथा श्रवण सुखसाध्य हो सके वैसा ही करे ।७।

भोजनं सुकरं मन्ये कथासु श्रवणप्रदम् ।
नोपवासो वरश्चेत्स्यात्कथाश्रवणविघ्नकृत् ।८
गरिष्ठं द्विदलं दग्धं निष्पापांश्चमसूरिकाम् ।
भावदुष्टं पर्युषितं जग्ध्वा नित्यं कथाव्रती ।९
वार्ताकं च कलिंदं च पिचण्डं मूलकं तथा ।
कूष्माण्डं नालिकेलं च मूलं जग्ध्वा कथाव्रती ।१०
पलाण्डं लशुनं हिंगु गृञ्जन मादकं हि तत् ।
वस्तुन्यामिषसंज्ञानि वर्जयेद्यः कथाव्रती ।११
कामादिषड्विकारं च द्विजानां च विनिन्दनम् ।
पतिव्रता-सतां निन्दां वर्जयेद्यः कथाव्रती ।१२
सत्यं शौचं दयां मौनमार्जवं विनयं तथा ।
औदार्यं मनसश्चैव कुर्यान्नित्यं कथाव्रती ।१३
निष्कामश्च सकामश्च नियमाच्छृणुयात्कथाम् ।
सकामः काममाप्नोति निष्कामो मोक्षमाप्नुयात् ।१४

भले प्रकार कथामें मन लग सके,इसलिए थोड़ा बहुत भोजन अवश्य कर ले । उपवास करने से कथा में मन न लगने के कारण विघ्न होता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ।८। गरिष्ठ दालें दग्ध निष्पाप मसूरिका अथवा वासी और दोषयुक्त भोजन को कथाव्रती ग्रहण न करे ।९। बैंगन, कलिन्द, चिकौड़ा, मूली पेठा आदि शाक मूल का सेवन भी कथाव्रती को नित्यप्रति नहीं करना चाहिए ।१०। प्याज, लहसुन, गाजर तथा मादक द्रव्य और आमिष वस्तुओं का भोजन भी कथाव्रती के लिए त्याज्य कहा गया है ।११। कामादि षट्विकारोंका त्याग करे । सत्पुरुषों और ब्राह्मणों की कभी निन्दा न करे तथा पतिव्रता की भी निन्दा न करे ।१२। सत्य, शौच, दया, मौन, आर्जव, विनय, उदारता आदि का पालन कथाव्रती पुरुष को नित्य प्रति करना चाहिए ।१३। निष्काम या सकाम किसी भी भाव से कथा नियमपूर्वक सुननी चाहिए । सकाम पुरुष कामना को और निष्काम श्रवण वाला पुरुष मोक्ष को प्राप्त होता है ।१४।

दरिद्रश्च (क्षयीरोगी) पापी निर्भाग एव च ।
अनपत्योऽपि पुरुषश्श्रृणुयात्सकथामिमाम् ।१५
काकवन्ध्यादयस्सप्त विधा अपि खलस्त्रियः ।
स्रवद्गर्भा च या नारी ताभ्यां श्राव्या कथा परा ।१६
शिवपूजनवत्सम्यक्पुस्तकस्य पुरो मुने ।
पूजाकार्यासुविधिना वक्तुश्च तदन्तरम् ।१७
पुस्तकाच्छादनार्थं हि नवोनं चासनं शुभम् ।
समर्चयेद्दृढंदिव्यं बन्धनार्थं च सूत्रकम् ।१८
पुराणार्थं प्रयच्छन्ति ये सूत्रं वसनं नवम् ।
भोगिनोज्ञानसम्पन्नास्ते भरन्तिभवेभवे ।१९
स्वर्गलोकं समासाद्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ।
स्थित्वा ब्रह्मपदेकल्पं यान्तिशैवस्पदन्ततः ।२०

दरिद्री, क्षयी, रोगी पापी भाग्यहीन एवं सन्तानहीन पुरुष भी अपने दुःखोंके निवारणार्थ इस कथा को श्रवण करे ।१५। सातों प्रकार की वन्ध्या स्त्रियों अथवा जिन स्त्रियों को गर्भ-स्राव हो जाता है उन्हें निरन्तर शिव-कथा को श्रवण करना चाहिए ।१६। हे मुने ! शिवजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पूजन करने के समान पुस्तक के सम्मुख विधिवत् पूजन करे और फिर वक्ता का पूजन करे ।१७। पुस्तक के आच्छादनार्थं नवीन वस्त्र प्रदान करते और बाँधने के निमित्त नवीन वस्त्र सूत्र प्रदान करते हैं, वे सभी युगों में योगी और ज्ञान-सम्पन्न होते हैं ।१८-१९। वे स्वर्ग लोक में जाकर वहाँ के अनेक भोगों का उपभोग कर ब्रह्मलोक को प्राप्त होने और कल्प के अन्त में शिवलोक में जाते हैं ।२०।

विरक्तश्चा भवेच्छोता परेहनि विशेषतः ।
गीता वाच्या शिवेनोक्ता रामचन्द्राय या मुने ।२१
गृहस्थश्चेद्भवेच्छ्रोता नर्तव्यस्तेन धीमता ।
होमः शुद्धेन हविषा कर्मणस्तस्य शान्तये ।२२
रुद्रसंहिताया होमः प्रतिश्लोके वा मुने ।
गायत्र्यास्तन्मयत्वाच्च पुराणस्य तत्वतः ।२३
दोषयोः प्रशमार्थं च न्यूनताधिकताख्ययोः ।
पठेच्च श्रृणुयाद्भक्त्या शिवनामसहस्रकम् ।२४
एवं कृते विधाने च श्रीमच्छिवपुराणकम् ।
संपूर्णफलदं स्याद्वै भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ।२५

यदि श्रोता विरक्त हो तो द्वितीय शिव गीता का विशेष करके पाठ करे। उसका उपदेश शिवजी ने श्री रामचन्द्रजी को दिया था ।२१। यदि श्रोता गृहस्थ हो तो उसे शुद्ध हवि के द्वारा उस कर्म की शान्ति के निमित्त हवन करना चाहिए। रुद्र संहिता के प्रत्येक श्लोक से हवन करे या तन्मय गायत्री से अथवा पुराण के तत्व से हवन करे। न्यूनाधिक दोषों की शान्ति के लिए भक्तिपूर्वक शिव-सहस्र नाम का पाठ करना चाहिए। इस प्रकार विधान पूर्वक श्रवण करने से शिवपुराण पूर्ण फलदाता होता है तथा भुक्ति और मुक्ति दोनों फलों की प्राप्ति होती है ।२२-२५।

--०--

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री शिव पुराण

विद्येश्वर संहिता

सूतजी से मुनियों का प्रश्न

आद्यन्तमंगलमजातसमानभावमार्यंतमीशमजरामरमात्मदेवम् ।
पंचाननंप्रबलपंचविनोदशीलं संभावये मनसिशंकरमम्बिकेशम् ॥

धर्मक्षेत्रे महाक्षेत्रे गङ्गाकालिन्दिसंगमे ।
प्रयागे परमे पुण्ये ब्रह्मलोकस्य वर्त्मनि ।१
मुनयः संसितात्मानस्सव्रतपरायणाः ।
महौजसो महाभागा महासत्रं वितेनिरे ।२
तत्र सत्रं समाकर्ण्य व्यासशिष्यो महामुनिः ।
आजगाममुनीन्द्रष्टुं सूतः पौराणिकोत्तमः ।३
तं दृष्ट्वा सूतमायांतं हर्षितामुनयस्तदा ।
चेतसा सुप्रसन्नेन पूजां चक्रुर्यथाविधि ।४
ततो विनयसंयुक्ताः प्रोचुस्सांजलयश्चते ।
सुप्रसन्ना महात्मानः स्तुतिं कृत्वा यथाविधि ।५
रोमहर्षण सर्वज्ञ भवान्यै भाग्यगौरवात् ।
पुराणविद्यामखिलां व्यासात्प्रत्यर्थमीयिवात् ।६
तस्मादाश्चर्यभूतानां कथानां त्वं हि भाजनम् ।
रत्नानामुरुसाराणां रत्नाकर इवार्णवः ।७

व्यासजी ने शिवजी को ब्रह्मत्व प्राप्ति के लिए उपायभूत विद्येश्वर संहिता का वर्णन करने हेतु मङ्गल विधान किया। सृष्टि के आदि-अन्त में जो मङ्गलस्वरूप हैं, जिनके समान सम भाव किसी में नहीं है जिनमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व स्थित है, जो जरा मृत्यु से रहित स्वप्रकाश स्वरूप, पञ्चमुख प्रवल पञ्च महापापों के हरने वाले भक्तों के मोक्ष में साधक शब्दादि पञ्च विषयोंको शान्त करनेवाले एवं भक्तोंके लिए कल्याणकारी पार्वती पति-शिवजी का मैं ध्यान करता हूँ। व्यासजीने कहा--धर्म के उस महान् क्षेत्र में जहां गङ्गा और कालिन्दी मिली है उस ब्रह्मलोक के मार्ग भूत परम पवित्र प्रयाग नाम प्रदेश में ।१। सत्यव्रत में रत, ज्ञानी एवं महान् व्रती अत्यन्त पराक्रमी और महान् भाग्यवान्, ऋषि दीर्घ यज्ञ का अनुष्ठान करने लगे ।२। व्यासजी के शिष्य महामुनि उस यज्ञ को सुन करके ज्ञाताओं में सर्वश्रेष्ठ सूतजी उस स्थान में आये ।३। सूत जी का उन्होंने विधिवत् पूजन किया ।४। तब विनय युक्त होकर सर्व मुनिजन हाथ जोड़कर उन पर प्रसन्न हुए, तथा महात्मा विधिवत् उनका स्तवन करने लगे ।५। हे सर्वज्ञ! आपने भाग्य से गौरव पूर्वक व्यासजीसे सम्पूर्ण पुराण विद्या का अर्थ सहित ज्ञान प्राप्त किया है ।६। इसलिए आप आश्चर्य भूत कथाओं के उसी प्रकार पात्र हैं, जिस प्रकार श्रेष्ठ रत्नों का स्थान समुद्र है ।७।

यच्च भूतं च भव्यं च यच्चान्यद्वस्तु वर्तते ।
न त्वयाऽविदितं किंचित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ।८

त्वं मद्दिष्टवशादस्य दर्शनार्थमिहागतः ।
कुर्वन्किमपिनः श्रेयो न वृथा गंतुमर्हसि ।९
तत्वं श्रुतंस्मः नः सर्वं पूर्वमेव शुभाशुभम् ।
न तृप्तिमधिगच्छामः श्रवणेच्छामुहुर्मुहुः ।१०
इदानीमेवास्ति त्रोतव्यं महर्षे सूत सन्मते ।
तद्रहस्यमपि ब्रूहि यदितेऽनुग्रहो भवेत् ।११
प्राप्ते कलियुगे घोरे नराः पुण्यविवर्जिताः ।
दुराचाररताः सर्वे सत्य वार्तापराङ्मुखाः ।१२
परापवादनिरताः परद्रव्याभिलाषिणः ।
परस्त्रीसक्तमनसः परहिंसापरायणाः ।१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहात्मदृष्टयो मूढा नास्तिकाः पशुबुद्धयः ।
मातृपितृकृतद्वेषाः स्त्रीदेवाः कामकिंकराः ।१४

भूत, भविष्य, वर्तमान जो कुछ त्रैलोक्य में है, उसमें ऐसा कुछ भी नहीं हैं जो आपसे छिपा हुआ हो।८। हमारे सौभाग्य से ही आप इस स्थान में पधारे हैं। आप हमारे मंगल किये विना, यहाँसे नहीं जायेंगे ।९। पहले भी हमने आपसे अनेकानेक कथायें सुनी हैं, फिर भी उनसे हमारी तृप्ति नहीं हुई। हमें उनके बारम्बार श्रवण करने की इच्छा होती हैं ।१०। हे अत्यन्त मेधावी मुने ! इस समय जो रहस्यमय वार्ता सुनने के योग्य हो उसे आप कृपा पूर्वक हमारे प्रति कहिए ।११। इस घोर कलिकाल के उपस्थित होने पर पुण्यहीन मनुष्य ही प्रकट हुए हैं। सबकी प्रीति दुराचार में है तथा सत्य और पुण्य कर्मों से रहित हैं ।१२ परनिन्दा करने में रत रहते हैं। पराये द्रव्य की अभिलाषा और पर-नारियों में चित्त लगाने वाले लोग दूसरों की हिंसा को सदा तत्पर रहते हैं ।१३। देह में आत्मा का भ्रम रखने वाले नास्तिक बुद्धि वाले, मूर्ख माता-पिता से द्वेष रखने वाले, काम के किंकर और स्त्री के वशी भूत रहने वाले हैं ।१४।

विप्रा लोभग्रहग्रस्ता वेदविक्रयजीविनः ।
धनार्जनार्थमभ्यस्तविद्यामदविमोहिताः ।१५
त्यक्तस्वजातिकर्माणः प्रायशः परवंचकाः ।
त्रिकालसन्ध्ययाहीना ब्रह्मबोधविवर्जिताः ।१६
अदयाः पंडितंमन्यास्स्वाचारव्रतलोपकाः ।
कृष्युद्यमरताः क्रूरस्वभावा मलिनाशयाः ।१७
क्षत्रियाश्च तथा सर्वे स्वधर्मत्यागशीलिनः ।
असत्संगाः पापरता व्यभिचारपरायणाः ।१८
अशूरा अरणप्रीताः पलायनपरायणाः ।
कुचोरवृत्तयः शूद्राः कामकिंकरचेतसः ।१९
शस्त्रास्त्रविद्यया हीना धेनुविप्रा वनोज्झिताः ।
शरण्या वनहीनाश्च कामिन्युतिमृगास्सदा ।२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजापालनसद्धर्म विहीना भोगतत्पराः ।
प्रजासंहारकादुष्टा जीवहिंसाकरामुदा ।२१

ब्राह्मण लोभ में फँस रहे हैं, वेदों के विकल्प में आजीविका चलाते हैं, धन के लिए विद्या का अध्ययन करते हैं और विद्याके मद से मोहित हैं ।१५। अपने स्वाभाविक कर्म का त्याग करने वाचे दूसरों को ठगने वाले, त्रिकाल सन्ध्या से रहित तथा ब्रह्मज्ञान से शून्य है ।१६। स्वयं पण्डित समझने वाले, दया-रहित आचार और व्रत से हीन, कृषि कर्म में लगे हुए, क्रूर स्वभावके तथा मलीन चित्त वाले हैं।१७। इसी प्रकार क्षत्रियों ने भी अपना धर्म छोड़ रखा है। वे कुसङ्गति में पड़े हुए हैं और पाप कर्म तथा अभिचारी परायण हैं ।१८। शूद्रों से प्रीति रखने वाले, कायर, युद्ध में पीठ दिखाने वाले चोरों की वृत्तिमें लगे हुए तथा कामदेव के दास है ।१९। शस्त्रास्त्र की विद्या से अनजान, गौ ब्राह्मणों का पालन न करने बाले, शरणागतों को दुत्कारने वाले, कामिनी के लीला हरिण तथा धन से हीन हैं ।२०। प्रजा के पालन रूप श्रेष्ठ धर्म से विमुख, भोगों से संलग्न, प्रजा की हिंसा करने वाले जीव हिंसा में प्रसन्न रहने वाले हैं ।२१।

वैश्याः संस्कारहीनास्ते स्वधर्मत्यामशीलिनाः ।
कुपथाः स्वार्जनरतास्तुलाकर्मकुवृत्तयः ।२२
गुरुदेवद्विजातीनां भक्तिहीनाः कुबुद्धयः ।
अभोजितद्विजाः प्रायः कृपणाबुद्धदुष्टयः ।२३
कामिनीजारभावेषु सुरतामलिनाशयाः ।
लोभमोहविचेतस्काः पूर्वादिशुवृषोज्झिताः ।२४
तद्वच्छुद्राश्च ये केचिद् ब्राह्मणाचारतत्पराः ।
उज्ज्वलाकृतयो मूढा स्वधर्मत्यागशीलिनाः ।२५
कर्तारस्तपसां भूयो द्विजतेजोऽपहारकाः ।
शिश्वल्पमृत्युकाराश्च मन्त्रोच्चारपरायणाः ।२६
शालिग्रामशिलादीनां पूजकोहोमतत्पराः ।
प्रतिकूलविचाराश्च कुटिला द्विजदूषकाः ।२७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनवतः कुकर्म्मणो विद्यावन्तो विवादिनः ।
आख्यायोपासनाधर्मवक्तारो धर्मलोपकाः ।२८

वैश्य संस्कारहीन, धर्मविमुख कुमार्ग से द्रव्योंपार्जन में तत्पर, तुला कर्म और कुत्सित आजीविका वाले गुरु ब्राह्मण की भक्ति से विमुख ब्राह्मणों को भोजन न कराने वाले बुद्धिहीन,लोभी एवं कंजूस हैं ।२२। ।२३। नारियों से जार भाव से रमण करने वाले, अस्वच्छ मन वाले, लोभ मोह से भ्रमित पूर्वादि में धर्म का त्याग कर देनें वाले हैं ।२४। शूद्र भी अपने धर्म से विमुख है। ब्राह्मणों जैसा आचार करने वाले उज्ज्वल आकृति वाल धर्म से हीन एवं मूढ़ हैं ।२५। तप में संलग्न, ब्राह्मणोंके तेज हरनेकी इच्छामें रत, बालक की अल्प मृत्युमें मरिणादि मन्त्रों में चतुर है ।२६। शालिग्राम आदि की पूजा करके हवन करने वाले,प्रतिकूल विचार करनेवाले कुटिल तथा ब्राह्मण द्वेषीहैं।२७।धनवान् विद्यवान्, कुकर्मी विवादी, कथा धर्म तथा उपासना का उपदेश करने वाले और धर्म को नष्ट करने वाले हैं ।२८।

सुभूपाकृतयो दंभाः सुदातारो महामदाः ।
विप्रादीन्सेवकान्मत्वा मन्यमाना निजं प्रभुम् ।२९
स्वधर्मरहिता मूढाः संकराः क्रूरबुद्धयः ।
महाभिमानिनो नित्यं चतुर्वर्णविलोपकाः ।३०
सुकुलीनान्निजान्मत्वा चतुर्वर्णैर्विवर्तिनाः ।
सर्ववर्ण भ्रष्टकरा मूढास्सत्कर्मकारिणः ।३१
स्त्रियश्च प्रायशो भ्रष्टा सर्वत्रज्ञानकारिकाः ।
श्वसुरद्रोहकारिण्यो निर्णया मलिनाशयाः ।३२
कुभावभावनिरताः कुशीलास्स्मरविह्वलाः ।
जारसंगरतानित्यं स्वस्वामिविमुखास्तथा ।३३
तनया मातृपित्रोश्च भक्तिहीना दुराशयाः ।
अविद्यापाठका नित्यं रोगग्रसितदेहकाः ।३४
एतेषां नष्टबुद्धिनां स्वधर्मत्यागशीलिनाम् ।
परलोकेऽपीहलो च कथं सूत गतिर्भवेत् ।३५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजाओं जैसी चेष्टा वाले, पाखण्डी, दाता के समान आडम्बर करने वाले, महामदसे युक्त, ब्राह्मणों को सेवक और स्वयं को स्वामी समझने वाले हैं ।२९। अपने धर्म से शून्य, मूढ़, वर्णसंकर क्रूर बुद्धि वाले घोर अभिमानी तथा चारों वर्णों का लोप करने में निरत है ।३०। अपने को कुलीन समझते हुए चारों वर्णों की वृत्ति वाले, सभी वर्णों को भ्रष्ट करने वाले ।३१। स्त्रियाँ भी अपने स्वामी आज्ञा पालन करने से विमुख तथा सास श्वसुर से द्रोह करने वाली हैं ।३२। बुरे हाव-भाव वाली' कुत्सित स्वभाव वाली, कामविह्वला,जार का सङ्ग काम चाहने वाली तथा पति द्रोहिणी हैं ।३३। कन्या भी माता-पिता को न चाहने वाली, बुरे आशय वाली, अविद्या-से घिरी हुई तथा रोग से ग्रसित देह वाली हैं ।३४। हे सूतजी ! इन बुद्धिहीन, धर्मसे विमुख मनुष्यों को इहलोक और पर-लोक में कौन सी गति प्राप्त होगी ? ।३५।

इति चिंताकुलं चित्तं जायते सततं हि नः ।
परोपकारसदृशो नास्तिकोऽपि धर्मोपरः खलु ।३६
लघुपायेन केनैषां भवेत्संघौघनाशनम् ।
सर्व्वंसिद्धान्तवित्त्वं हि कृपया तद्वदाधुना ।३७
इत्याकर्ण्य वचस्तेषां मुनीनां भावितात्मनाम् ।
मनसा शंकरं स्मृत्वा सूतः प्रोवाच तान्मुनीन् ।३८

हमारा मन चिन्ताओंसे सदा व्याकुल रहता है परोपकारसे समान विश्व में अन्य कोई धर्म नहीं है ।३६। जिन न्यून उपायों से इनका पाप शीघ्र ही मिट जाय उसे कृपा कर कहिए । आप सम्पूर्ण सिद्धान्तों के जानने वाले हैं ।३७। व्यासजी ने कहा कि ज्ञानमय आत्मा वाले उन मुनियों के ऐसे वचन सुनकर सूतजी ने मनमें शिवजी का स्मरण किया और उन मुनियों से कहने लगे ।३८।

शिवपुराण द्वारा कलि-कल्मष विध्वंस वर्णन

साधु पृष्टं साधवोवस्त्रैलोक्यहितकारकम् ।
गुरुं स्मृत्वा भवत्स्नेहाद्वक्ष्ये तच्छृणुतादरात् ।१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदांतसारसर्वस्वं पुराणं शैवमुत्तमम् ।
सर्वाघौघोद्धारकरं परत्र परमार्थदम् ।२
कलिकल्मषविध्वंसि यस्मिञ्छिवयशः परम् ।
विजृम्भते सदा विप्राश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ।३
तस्याध्ययनमात्रेण पुराणस्य द्विजोत्तमाः ।
सर्वोत्तमस्य शैवस्य यास्यंति ते सुसद्गतिम् ।४
तावद्विजृम्भते पापं ब्रह्महत्यापुरस्सरम् ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।५
तावत्कलिमहोत्पाताः संचरिष्यंति निर्भयाः ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।६
तावत्सर्वाणि शास्त्राणि विवदंति परस्परम् ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।७

सूतजी ने कहा-हे महात्माओं ! आपने उत्तम प्रश्न किया है। इसके द्वारा विश्व का कल्याण होगा । मैं गुरुदेव का स्मरण कर स्नेह पूर्वक कहता हूँ तुम आदर सहित श्रवण करो -१। वेदान्त का सार रूप शिव पुराण सभी पापों को नष्ट करने वाला तथा परलोक में परमार्थ को प्रदान करने वाला है ।२। उसमें शिवजीका यश, यह कलियुग के पापों को दूर कर देता है । हे विप्रो ! यह पुराण सदा चारों वर्ग का फल प्राप्त कराने वाला है ।३। हे विप्रगण ! इस पुराण का अध्ययन करने मात्र से हो प्राणी को सर्वोत्तम सद्गति की प्राप्ति हो जाती है ।४। ब्रह्महत्या आदि के पाप भी तभी तक विद्यमान रहते हैं, जब तक संसार में आश्चर्य रूप शिवपुराण का प्राकट्य नही होता ।५। कलि-युग के चोर उत्पात भी तभी तक टिक पाते हैं, जब तक कि संसार में शिवपुराण का प्राकट्य नहीं हो जाता ।६। सभी तब तक पर परस्पर में विवाद करते प्रतीत होते हैं जब तक कि विश्व में शिवपुराण का उदय नही हो जाता ।७।

तावत्स्वरूपं दुर्बोधं शिवस्य महतामपि ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तावद्यमभटाः क्रूराः संचरिष्यंति निर्भयाः ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।९
तावत्सर्वाणि तीर्थानि विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।१०
तावत्सर्वाणि मंत्राणि विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति जगत्यहो ।११
तावत्सर्वाणि क्षेत्राणि विवदंतिमहीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१२
तावत्सर्वाणि पीठानि विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१३
तावत्सर्वाणि दानानि विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१४

शिवजी का स्वरूप महान् पुरुषों को भी तभी तक दुर्बोध दिखाई देता हैं, जब तक संसार में शिवपुराण का प्राकट्य नहीं हो जाता ।८। यमराज के क्रूर दूत भी तभी तक निर्भव विचरण करते हैं, जब तक कि यह आश्चर्य स्वरूप सूर्यरूपी पुराण उदय नहीं हो जाता ।९। सम्पूर्ण तीर्थ भी पृथिवीमें तभी तक विवाद करते हैं, जब तक कि विश्वमें शिव पुराण प्रकट नहीं हो जाता ।१०। सब मन्त्र तभी तक इस लोक में विवादास्पद प्रतीत होते हैं, जब तक कि शिव पुराण का उदय नहीं हो जाता । सब क्षेत्र पृथिवी में तभी तक विवादग्रस्त रहते हैं, जब तक विश्व में शिव पुराण का प्राकट्य नहीं हो जाता । सम्पूर्ण पीठ भी पृथिवी पर तभी तक बिबाद करते हैं जब तक कि संसार में शिवपुराण का उदय नहीं हो जाता । सब दान तभी तक पृथिवी पर विवादास्पदहैं जब तक कि शिवपुराणका प्राकट्य संसार में नही हो जाता ।११-१४।

तावत्सर्वे च ते देवा विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१५
तावत्सर्वे च सिद्धान्ता विवदंति महीतले ।
यावच्छिवपुराणं हि नोदेष्यति महीतले ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्य शिवपुराणस्य कीर्तनश्रवणाद्द्विजाः ।
फलं वक्तुं न शक्नोमि कात्स्न्येंनं मुनिसत्तमाः ।१७
तथापि तस्य माहात्म्यं वक्ष्ये किंचित्तु वोनघाः ।
चित्तमाधाय श्रृणुत व्यासेनोक्तं पुरा मम ।१८
एतच्छिवपुराणं हि श्लोकं श्लोकार्द्धमेव च ।
यः पठेद्भक्तिसंयुक्तस्सपापान्मुच्यते क्षणात् ।१६
एतच्छिवपुराणं हि यः प्रत्यहमतंद्रितः ।
यथाशक्ति पठेद्भक्त्या स जीवन्मुक्त उच्यते ।२०
एतच्छिवपुराणं हि यो भक्त्यार्चयते सदा ।
दिने दिनेऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम् ।२१

पृथिवी में यह देवता भी तभी तक विवाद करते हैं, जब तक कि शिवपुराण का उदय इस विश्व में नहीं हो जाता। सभी सिद्धान्त पृथिवी में तभी तक विवादास्पद रहते हैं, जब तक कि शिव पुराण का उदय इस विश्व में नहीं हो जाता। है विप्रगण ! इस शिव पुराण के सुनने या कीर्तन करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, उसका पूरी तरह वर्णन मैं नहीं कर सकता। हे पापरहित ! मैं तुम्हारे प्रति उसका कुछ माहात्म्य कहता हूँ। इसे मुझसे व्यासजी ने कहा था, तुम उसे सावधान-चित्त से श्रवण करो। इस शिब पुराणका एक या आधाश्लोक भी जो भक्ति पूर्वक श्रवण करते हैं, वे उसी समय पापों से मुक्त हो जाते है। इस नुराण का जो आलस्य त्यागकर प्रतिदिन भक्ति सहित यथाशक्ति पाठ करते हैं, वे जीवन्मुक्त हो जाते हैं।१५-२०। भक्ति सहित जो पुरुष इस शिवपुराण का पूजन करते हैं, वे दिनों दिन अश्व-मेध के फल को प्राप्त करते हैं, इसमें सन्देह नहीं है।२१।

एतच्छिवपुराणं यस्साधारणपदेच्छया ।
अन्यतः श्रृणुयात्सोऽपि मत्तो मुच्येत पातकात् ।२२
एतच्छिवपुराणंयो नमस्कुर्याददूरतः ।
सर्वदेवार्चनफलं स प्राप्नोति न संशयः ।२३
एतच्छिवपुराणं हि चतुर्दश्यामुपोषितः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवभक्तसभायां यो व्याकरोति स उत्तमः ।२४
उपोषितश्चतुर्दश्यां रात्रिजागरणान्वितः ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि तस्य पुण्यं वदाम्यहम् ।२५
कुरुक्षेत्रादिनिखिल-पुण्यतीर्थेष्वनेकशः ।
आत्मतुल्यधनं सूर्य्यग्रहणे सर्वतोमुखे ।२६
विप्रेभ्यो व्यासमुख्येभ्यो दत्वा यत्फलमश्नुते
तत्फलं स भवेत्तस्य सत्यं सत्यं न संशयः ।२७
एतच्छिवपुराणं हि गायते योऽप्यहर्निशम् ।
आज्ञां तस्य प्रतीक्षेरन्देवा इन्द्रपुरोगमाः ।२८

1247

जो इस शिवपुराण के साधारण पदके अक्षरों को भी दूर से सुनता है, वह मत्त व्यक्ति भी पाप-दोष से मुक्त हो जाता है ।२२। इस शिव पुराण के समीप जाकर जो इसे नमस्कार करते हैं, देवार्चन के फल को प्राप्त होते हैं, इसमें संशय नहीं है ।२३। चतुर्दशी के दिन व्रत रखकर सभा में जो पुरुष शिवपुराण का व्याख्यान करते हैं, वे पुरुष अत्यन्त श्रेष्ठ हैं ।२४। चतुर्दशी के दिन व्रत-पूर्वक रात्रि में जो पुरुष इसे पढ़ते या सुनते हैं, उनके पुण्य स्थानों से जाकर सूर्य ग्रहण के अवसर पर अपने समान धन कथा-वाचक ब्राह्मणों को देने पर जो फल प्राप्त होता है, वह फल कथा श्रवण करने वालों को अवश्य प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं है ।२५-२७। जो मनुष्य इस पुराण को दिन रात निरन्तर पढ़ते हैं उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा इन्द्रादि देवता गण भी सदा करते रहते हैं ।२८।

एतच्छिवपुराणं यः पठेच्छृण्वन्हिनित्यशः ।
यद्यत्करोति सत्कर्म कोटिगुणितं भवेत् ।२९
समाहितः पठेद्यस्तु तत्र श्रीरुद्रसंहिताम् ।
स ब्रह्मघ्नोपि पूतात्मा त्रिभिरेवदिनैर्भवेत् ।३०
तां रुद्रसंहितां यास्तु भैरवप्रतिमांतिके ।
त्रिः पठेत्प्रत्यहं मौनी स कामानखिलाँल्लभेत् ।३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तां रुद्रसंहिता यास्तु संपठेद्वटबिल्वयोः ।
प्रदक्षिणां प्रकुर्वाणो ब्रह्महत्यां निवर्तते ।३२
कैलाशसंहिता तत्र ततोऽपि परमास्मृताः ।
ब्रह्मस्वरूपिणी साक्षात्प्रणवार्थप्रकाशिका ।३३
कैलाशसंहितायास्तु माहात्म्यं वेत्ति शंकरः ।
कृत्स्नं तदर्द्धं व्यासश्च तदर्द्धं वेद्यहं द्विजाः ।३४
तत्र किंचित्प्रवक्ष्यामि कृत्स्नं वक्तुं न शक्यते ।
यज्ज्ञात्वा तत्क्षणाल्लोकश्चित्त शुद्धिमवाप्नुयात् ।३५

जो पुरुष इस शिवपुराण का नित्य पाठ एवं श्रवण करते हैं, उनके द्वारा किये सत्कर्मों का फल कोटि गुणा होताहै ।२९ इसकी रुद्रसंहिता को सावधानी पूर्वक पढ़ने वाला मनुष्य तीन दिनके भीतर ही ब्रह्महत्या से छुटकारा प्राप्त कर लेता है ।३०। जो पुरुष इसकी रुद्र संहिता का भैंरव जी की मूर्ति के समक्ष प्रतिदिन तीन बार मौन होकर पाठ करता है, वह अपने-मनोरथो को प्राप्त होता है ।३१। वट और विल्व की प्रदक्षिणा करके जो कोई इसकी रुद्र संहिता का पाठ करता है, उसको ब्रह्म हत्या से छुटकारा मिल जाता है ।३२। इसके अतिरिक्त कैलाश संहिता का इससे भी अधिक माहात्म्य है, वह संहिता साक्षात् ब्रह्म-स्वरूपिणी है तथा ओंकार के अर्थ को प्रकाशित करने वाली है ।३३। हे विप्रो ! कैलाश संहिता का सम्पूर्ण माहात्म्य स्वयं शिवजी जानते हैं । उनसे आधा व्यासजी और व्यासजी से आधा मैं जानता हूँ ।३४। मैं सम्पूर्णतो नहीं कह सकता, उसमें से कुछ अंश कहता हूँ, उसका ज्ञान होने से तत्काल ही चित्त शुद्ध हो जाता है ।३५।

न नाशयति यत्पापं सा रौद्री संहिता द्विजाः ।
तन्नपश्याम्यहलोके मार्गमाणोऽपि सर्वदा ।३६
शिवेनोपनिषत्सिंधुमन्थनोत्पादितां मुदा ।
कुमारायार्पितां तां वै सुधां पीत्वाऽमरोभवेत् ।३७
ब्रह्महत्यादिपापानां निष्कृतिं कर्तुमुद्यतः ।
माससमात्रं संहितां तां पठित्वा मुच्यते ततः ।३८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्प्रतिग्रहः दुर्भोज्य-दुरालापादि-संभवम् ।
पापं सकृत्कीर्तनेन संहिता सा विनाशयेत् ।३६
शिवालये बिल्ववने संहितां तां पठेत्तु यः ।
स तत्फलमवाप्नोति यद्वाचोऽपि न गोचरे ।४०
संहितां तां पठेन्भक्त्या यः श्राद्धे भोजयेद्द्विजान् ।
तस्य ते पितरः सर्वे यांति शंभोः परं पदम् ।४१
चतुर्दश्यां निराहारो यः पठेत्संहितां च ताम् ।
बिल्वमूले शिवः साक्षात्सदेवैश्च प्रपूयेत ।४२

हे मुनिवरो ! जिस पाप का नाश रुद्र संहिता नहीं करती वह तो ढूँढ़ने से भी उपलब्ध नहीं हो पाता ।३६। वह संहिता शिवजी ने उपनिषद् रूपी समुद्र से मथकर निकाली और कुमार को दे दी । उसके ज्ञानामृतका पान करने पर जीव अमरत्व को प्राप्त होता है ।३७। ब्रह्म-हत्या आदि पापों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए एक महीने तक पाठ करके प्राणी अपने पापों से छूट जाता है ।३८। दुष्प्रतिग्रह, दुर्भोजन और दुर्वचन आदि के द्वारा उत्पन्न पाप इस 'संहिता' के पाठ करने के फल-स्वरूप नाश को प्राप्त होता है ।३९। किसी शिवालय में अथवा बिल्व वृक्षों के वन में इस संहिताका भक्तिभाव पूर्वक पाठ करने वालेको अक-थनीय फलकी प्राप्ति होती है।४०। इस संहिताका भक्तिपूर्वक पाठ करते हुए श्राद्ध में ब्राह्मणों को भोजन कराने वाले के सभी पितर शिवजी के लोक को गमन करते हैं ।४१। चतुर्दशी के दिन निराहार व्रत पूर्वक जो इस संहिता का पाठ करता है तथा जो बिल्व-मूल में पढ़ता है, वह साक्षात् शिव से पूजित होता है । देवता भी उसे पूजते हैं ।४२।

अन्यापि संहिता तत्र सर्वकामफलप्रदा ।
उभे विशिष्टे विज्ञेये लीला विज्ञानपूरिते ।४३
तदिदं शैवमाख्यातं पुराणं वेदसंमितम् ।
निर्मितं तच्छिवेनैव प्रथमं ब्रह्मसंमितम् ।४४
स सप्तसंहितां दिव्यं पुराणं शिवसंज्ञकम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरीवर्ति ब्रह्मतुल्यं सर्वोपरि गतिप्रदम् ।४५

एतच्छिवपुराणं हि सप्तसंहितामादरात् ।

परिपूर्णपठेद्यस्तु स जीवन्मुक्त उच्यते ।४६

शैवंपुराणमलशिवकीर्तितंतद्व्यासेनशैवप्रवणेन च संगृहीतम् ।
संक्षेपतस्सकलजीवगुणोपकारं तापत्रयघ्नमतुलंशिवदंसतां हि।४७

विकैतवो धर्म इह प्रगीतो वेदान्तविज्ञानमयः प्रधानः ।
अमत्सरांतबुंधवेद्यवस्तु संक्लृप्तमात्रैव त्रिवर्गयुक्तम् ।४८

शैवंपुराणतिलकंखलुसत्पुराणं वेदांतदविलसत्परवस्तुगीतम् ।
यो वैपठेच्छृणुयात्परमादरेणशंभुप्रियस्सहि लभेत्परमांगतिंवै।४९

और दूसरी संहिता भी सम्पूर्ण कामनाओं और फलोंको देने वाली है। इन दोनों में ही शिवजी की श्रेष्ठ लीला का वर्णन है, इसलिए दोनों ही श्रेष्ठ हैं ।४३। इस शिवपुराण को वेद सम्मत माना है। इस पुराण का निर्माण पूर्वकाल में भगवान् शिवजी ने स्वयं किया था।४४।यह दिव्य शिव पुराण सात संहिताओंसे युक्त सर्वोपरि प्रतिष्ठित है। यह सर्वश्रेष्ठ गति देने वाला और ब्रह्मा के समान है।४५। इस शिवपुराण की सातों संहिताओं को पूर्ण रूप से आदरपूर्वक पढ़ने वाला मनुष्य जीवन्मुक्त हों जाता है।४६। इस निर्मल पुराण को शिवजी ने कथन किया है तथा सब धर्मों में कुशल व्यासजी नें इसका संग्रह किया तथा सम्पूर्ण जीवों के हितार्थ संक्षिप्त किया। यह तीनों पापों को नष्ट करने वाला तथा सत्पुरुषों के लिए मङ्गलदायक है।४७। इसमें छलरहित धर्म का वर्णन है। यह वेदान्तके विज्ञान से युक्त एवं प्रमुख है। यह मत्सरता से रहित विज्ञों के लिए ज्ञातव्य है। सत्पुरुषों के कृत्यों से सम्पन्न तथा त्रिवर्ग का दाता है।४८। यह शिवपुराण सत्पुराणों में तिलक के समान है। इसमें वेद वेदान्त में वर्णित सद् वस्तु का वर्णन किया गया है। इस पुराण का आदरपूर्वक पठन और श्रवण करने वाला मनुष्य शिवजी का प्रीति पात्र होकर परम गति को प्राप्त होता है।४९।

साध्य साधन विचार

इत्याकर्ण्यं वचस्सौतं प्रौचुस्ते परमर्षयः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वेदान्तसारसर्वस्वं पुराणं श्रवणाद्भुतम् ।१
इति श्रुत्वा मुनीनां स वचनं सुप्रहर्षितः ।
संस्मरञ्छंकरं सूतः प्रोवाच मुनिसत्तमान् ।२
शृण्वंतु ऋषयः सर्वे स्मृत्वा शिवमनामयम् ।
पुराणप्रवणं शैवं पुराणं वेदसारजम् ।३
यत्र गीतं त्रिकं प्रीत्या भक्तिज्ञानविरागकम् ।४
वेदान्तवेद्यं सद्वस्तु विशेषेणप्रवर्णितम् ।५
शृण्वंतु ऋषयः सर्वे पुराणं वेदसारजम् ।
पुरा कालेन महता कल्पेऽतीते पुनः पुनः ।६
अस्मिन्नुपस्थिते कल्पे प्रवृत्ते सृष्टिकर्मणि ।
मुनीनां षट्कुलीनानां ब्रुवतामितरेतरम् ।७

व्यासजी ने कहा--सूतजी के इस प्रकार वचन सुनकर वे परम ऋषि बोलेकि आप वेदान्त सारका सर्वस्वरूप पुराण हमारे प्रति कहिये ।१। उन श्रेष्ठ मुनियों की बात सुनकर सूतजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और भगवान् शङ्कर का स्मरण करते हुए बोले ।२। सूतजी ने कहा-मुनियों में अनामय भगवान् शिव जो प्रणाम कर वेदों के सार रूप एवं पुराणों में सर्वश्रेष्ठ शिवपुराण तुम्हारे प्रति कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो ।३। उस शिवपुराण में प्रीति सहित भक्ति ज्ञान और वैराग्यका वर्णन किया गया है और विशेष करके वेदान्त के द्वारा ज्ञातव्य सद् वस्तु का वर्णन इसमें हुआ है ।४-५। सूतजी ने कहा--हे ऋषियों ! वेद के सार रूप शिवपुराण का श्रवण करो । प्राचीन काल में इस महान् कल्प के बार-बार व्यतीत होने पर श्वेत वाराह कल्प के होने तथा सृष्टि की उत्पत्ति होने के विषय में त्रिवेणी के समीप षट्कुल में उत्पन्न हुए मुनियों में पारस्परिक विवाद चला ।६-७।

इदं परमिदन्नेति विवादः सुमहानभूत् ।
तेऽभिजग्मुर्विधातारं ब्रह्माणंप्रष्टुतव्ययम् ।८
वाग्भिर्विनयगर्भाभिः सर्वे प्रांजलयोऽब्रुवन्तनु ।
त्वंहि सर्वजगद्धाता सर्वकारणकारणम् ।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कः पुमान्सर्वतत्वेभ्यः पुराणः परतः परः ।
यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।१०
यस्मात्सर्वमिदं ब्रह्मविष्णुरुद्रैकपूर्वकम् ।
सहभूतेन्द्रियैः सर्वैः प्रथम प्रसूयते ।११
एष देवो महादेवः सर्वज्ञो जगदीश्वरः ।
अयं तु परया भक्त्या दृश्यते नान्यथा क्वचित् ।१२
रुद्रो हरिर्हरश्चैव तथान्ये च सुरेश्वराः ।
भक्त्या परमया तस्य नित्यदर्शनकांक्षिणः ।१३
बहुनात्र किमुक्तेन शिवे भक्त्या विमुच्यते ।
प्रसादाद्देवताभक्तिः प्रसादो भक्तिसंभवः ।
यथेहांकुरतो बीजं बीजतो वा यथाकुरः ।१४

यहीं पर 'ब्रह्म' है, ऐसा नहीं है, इत्यादि प्रकार से अत्यन्त विवाद होने लगा, तब वे सब अविनाशी ब्रह्माजी के पास यह प्रश्न लेकर उनके समीप गये ।८। वहाँ जाकर सबने विनय युक्त वाणी में हाथ जोड़कर कहा कि तुम ही सम्पूर्ण विश्व के विधाता तथा कारण के भी कारण हो ।९। वह कौन है जो पुराण पुरुष तथा प्रकृति और महत्व से उत्पन्न हुए तत्वों से परे हैं, जिसके निकट मन वाणी की पहुँच नही है। इस पर ब्रह्माजी ने कहा कि जिसके प्राप्त न होनेपर मन सहित वाणी भी किवृत्त हो जाती है ।१०। जिससे ब्रह्मा, बिष्णु रुद्र भूतेन्द्रियों सहित प्रणम प्रकट होते हैं, वही देव महादेव सम्पूर्ण विश्व के अधिपति और सर्वज्ञ हैं। यह शिवजी परम भक्तिसे दिखाई देते हैं, अन्यथा नहीं ।११-१२। रुद्र, हरि, हर तथा अन्य देवेश्वर भी उनके दर्शन की परम भक्ति-पूर्वक ही इच्छा करते हैं। उन शिवजी की भक्ति करने वाला प्राणी मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। उनकी कृपा से ही भक्ति होती है और भक्ति से कृपा मिलती है जैसे अंकुर से बीज उत्पन्न होता और वीज से अंकुर की उत्पत्ति होती है ।१३-१४।

तस्मादीशप्रसादार्थयूयं गत्वा भुवं द्विजाः ।
दीर्घसत्रं समाकृत्य यूयं वर्षसहस्रकम् ।१५

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमुष्यैवाध्वरेशस्य शिवस्यैव प्रसादतः ।
वेदोक्तविद्यासारं तु ज्ञायते साध्यसाधनम् ।१६
अथ किं परमं साध्यं किं वा तत्साधनं परम् ।
साधकः कीदृशस्तत्र तदिदं ब्रूहि तत्वतः ।१७
साध्यं शिवपदप्राप्ति साधनं तस्य सेवनम् ।
साधकस्तत्प्रसादाद्योऽनित्यादिफलनिःस्पृहः ।१८
कर्म कृत्वा तु वेदोक्तं तदर्पितमहाफलम् ।
परमेशपदप्राप्ति सालोक्यादिक्रमात्ततः ।१९
तत्तद्भक्त्यानुसारेण सर्वेषां परमं फलम् ।
सत्साधनं बहुविधं साक्षादीशेनबोधितम् ।२०
संक्षिप्य तत्र वः सारं साधनं प्रब्रवीम्यहम् ।
श्रोत्रेण श्रवणं तस्य वचसा कीर्तनं तथा ।२१

हे ब्राह्मणो ! इस कारण शिवजी को प्रसन्न करने के लिए हजार वर्ष वाले दीर्घ सत्र यज्ञ का अनुष्ठान करो ।१५। इसी यज्ञ में भगवान् शङ्कर की प्रसन्नता प्राप्त होने पर वेदोक्त विद्या का सार एवं साध्य के साधक का ज्ञान हो जायगा ।१६। मुनियों ने कहा परम साध्य क्या हैं ? उसका साधन क्या है ? साधक के लक्षण क्या है ? इन प्रश्नों का तत्व रूप से समाधान कीजिए ।१७। ब्रह्माजी ने कहा—शिवपद की प्राप्ति साध्य और उनकी सेवा ही साधन है । नित्य नैमित्तिक कर्मों के फल स्वरूप स्वर्ण आदि की स्पृहा न करने वाला उनके प्रसाद से ही साधन हो पाता हैं ।१८। वेदोक्त कर्म का फल परमपद की प्राप्तिके लिए शिव जी को समर्पित किया जाताहै, उसके क्रम से ही सायुज्य आदि पद की प्राप्ति होती है ।१९। भक्ति के अनुसार ही सबको परम फल की प्राप्ति होती है । अनेक प्रकार के साधक स्वयं भगवान् शङ्कर ने कहे हैं ।२०। उनको संक्षिप्त रूप से सारमात्र ही तुम्हारे प्रति कहता हूँ । उनका गुण कानों द्वारा श्रवण करे तथा वाणी से कीर्तन करे ।२१।

मनसा मननं तस्य महासाधनमुच्यते ।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च मन्तव्यश्च महेश्वरः ।२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुतिप्रमाणं नः साधनेनाऽमुनापरम् ।
साध्यंव्रजत सर्वार्थसाधनैकपरायणाः ।२३
प्रत्यक्षं चक्षुषा दृष्ट्वा तत्र लोकः प्रवर्तते ।
अप्रत्यक्षं हि सर्वत्र ज्ञात्वा श्रोत्रेण चेष्टते ।२४
तस्माच्छ्रवणमेवादौ श्रुत्वा गुरुमुखाद् बुधः ।
ततः संसाधयेदन्यत्कीर्तनं मननं सुधीः ।२५
क्रमान्मननं पर्यन्तं साधनेऽस्मिन्सुसाधिते ।
शिवयोगो भवेत्तेन सालोक्यादिक्रमाच्छनैः ।२६
सर्वाङ्गव्याधयः पश्चात्सर्वानन्दश्चलीयते ।
अभ्यासात्क्लेशमेतद्वै पश्चादाद्यंतमंगलम् ।२७

मन द्वारा मनन करे, यही महान् साधन कहा गया है। भगवान् शङ्कर के गुणों का श्रवण कीर्तन और मनन करे ।२२। श्रुति ही इसमें प्रमाण है उससे परे अन्य कोई साधन नहीं है। इसलिए सभी प्रकार से शिव के परायण साध्य की प्राप्ति करे ।२३। वेदमें आत्मा को देखने सुनने तथा प्रथम देखकर फिर सुनने को कहा है, तो पहले देखे बिना किस प्रकार सुने ? इसका समाधन है कि नेत्रों द्वारा देखकर ही पदार्थ में प्रवृत्ति होती हैं परन्तु उसके सर्वत्र अप्रत्यक्ष होने से श्रवण से ही आरम्भ करना उचितहै ।२४। बुद्धिमान मनुष्य पहले गुरु-मुखसे उसको सुने, फिर कीर्तन और मनन रूप साधन करे ।२५। क्रमपूर्वक जब मनन का साधन हो जायगा तब शिव-योग की प्राप्ति होगी और शिवजी की सालोक्य आदि मुक्ति की प्राप्ति होगी ।२६। पहिले सम्पूर्ण अङ्ग की व्यधि और फिर सर्व आनन्द भी ब्रह्म में लीन हो जाता है। फिर आदि और अन्त में मङ्गल होता है ।२७।

शिवरात्रि व्रत का महाफल

तत्रांतरे तौ च नाथं प्रणम्य विधिमाधवौ ।
बद्धांजलिपुटौ तूष्णीं तस्थतुर्दक्षवामगौ ।१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र संस्थाप्य तौ देवं स कुटुंबं वरासने ।
पूजयामासतुः पूज्यं पुण्यैः पुरुषवस्तुभिः ।२
तुष्टोऽहमद्य वां वत्सौ पूजयास्मिन्महादिने ।३
दिनमेतत्ततः पुण्यं भविष्यति महत्तरम् ।
शिवरात्रिविख्याता तिथिरेषा मम प्रिया ।४
एतत्काले तु यः कुर्यात्पूजां मल्लिगबेरयोः ।
कुर्यात्तु जगतः कृत्यं स्थितिसर्गादिकंपुमान् ।५
शिवरात्रावहोरात्रं निराहारो जितेन्द्रियः ।
अर्चयेद्वायथान्यायं यथाबलमवंचकः ।६
यत्फलं मम पूजायां वर्षमेकं निरन्तरम् ।
तत्फलं लभते सद्यः शिवरात्रौ मदर्चनात् ।७

इस समय ब्रह्मा, विष्णुने शङ्करको प्रणाम कर, हाथ जोड़कर तथा मौन रहते हुए उनके दाँये और बाँये भाग में स्थित हो, उन दोनों ने सकुटुम्ब देव को श्रेष्ट आसन पर प्रतिष्टित कराकर पुरुषों को योग्य पवित्र पदार्थ से उनकी पूजा की ।१-२। भक्ति की वृद्धि करने वाले शिवजी ने विनम्र ब्रह्मा और विष्णु से प्रसन्न होकर कहा। वे बोले-- हे वत्स ! आज मैं इस महा दिवसमें तुम्हारे पूजन और उत्सव से प्रसन्न हुआ हूँ यह दिवस महा पवित्र होगा और यह तिथि हमारी परम प्रिय शिवरात्रि होगी ।३-४। इस समय जो हमारे लिंग का पूजन करेगा, वह पुरुष जगत् में स्थित सर्गादि कर्मों को करने में समर्थ होगा ।५। जो पुरुष जितेन्द्रिय रहकर एक दिनरात्रि निराहार रहकर यथा शक्ति प्रपञ्च त्याग कर पूजा करेगा ।६। निरन्तर एक वर्ष तक मेरा पूजन करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, वह फल केवल शिव रात्रि के पूजन से मिल जायगा ।७।

मद्धर्मवृद्धिकालोऽयं चन्द्रकाल इवांबुधेः ।
प्रतिष्ठाद्युत्सवो यत्र मामको मङ्गलायनः ।८
यत्पुनः स्तंभरूपेण स्वाविरासमहंपुरा ।
सकालो मार्गशीर्षे तु स्यादार्द्राऋक्षमर्भकौ ।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्द्रायां मार्गशीर्षे तु यः पश्येन्मामुमासखम् ।
मद्बैरमपि वा लिङ्गं स गुहांदपि मे प्रियः ।१०
अलं दर्शनमात्रेण फलं तस्मिन्दिने शुभे ।
अभ्यर्चनंचेदधिकं फलं वा वागगोचरम् ।११
रणरङ्गतलेऽमष्मिन्यदहंलिंगवर्ष्मणा ।
जंभितो लिङ्गत्तस्माल्लिगस्थानमिदं भवेत् ।१२

जैसे चन्द्रमा को देखकर समुद्र बढ़ता है, वैसे ही मेरी वृद्धि का यही समय है । जहाँ-जहाँ मंगल को देने वाले प्रतिष्ठा आदि उत्सव होते हैं ।८। और जो स्तम्भ रूप से मेरा आविर्भाव हुआ है, यह समय मार्ग शीर्ष में आर्द्रा नक्षत्र से युक्त है ।९। मार्गशीर्ष में आद्रा नक्षत्र में पार्वती सहित जो मेरे लिंग का दर्शन करता है, वह पुरुष मुझे कार्तिकेय से भी अधिक प्रिय है ।१०। उस श्रेष्ठ दिवस में दर्शन से ही अधिक फल की प्राप्ति होती है । उस दिन पूजन करने से होने वाले महाफल का वर्णन वाणी से नहीं हो सकता ।११। इस रणभूमि में लिंग देह सहित हुआ हूँ, इसलिए यह लिंग स्थान कहा जायगा ।१२।

रथोत्सवादिकल्याणं जनावासं तु सर्वतः ।
अत्र दत्तं हुतं सप्तं सर्वं कोटिगुणं भवेत् ।१३
मत्क्षेत्रादपि सर्वस्मात्क्षेत्रमेतन्महत्तरम् ।
अत्र सं स्मृतिमात्रेण मुक्तिर्भवति देहिनाम् ।१४
तस्मान्महत्तरमिदं क्षेत्रंमत्यंतशोभनम् ।
सर्वकल्याणसंपूर्णं सर्वमुक्तिकरं शुभम् ।१५
अर्चयित्वाऽत्रमामेव लिंगे लिंगिनमीश्वरम् ।
सालोक्यं चैव सामीप्यं सारूप्यं सार्ष्टिरेव च ।१६
सायुज्यमिति पंचैते क्रियादीनां फलं मतम् ।
सर्वेऽपि यूयं सकलं प्राप्स्यथ शुभमनोरथम् ।१७

यह स्थान रथ यात्रा के उत्सव और निवास स्थान योग्य होगा । यहाँ किया हुआ जप, तप, हवन साधारण से कोटि गुणा होगा ।१३।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञ स्थान हमारे सब क्षेत्रों में श्रेष्ठ होगा । यहाँ मेरा स्मरण करने मात्र से प्राणी को मोक्ष की प्राप्ति होगी ।१४। इसलिए यह क्षेत्र महान् और अत्यन्त शोभा युक्त होगा । सब प्रकार के कल्याण देने वाला तथा मोक्ष प्रदायक होगा ।१५। यहाँ जो व्यक्ति लिंग में मुझ लिंगेश्वर की भावना से पूजन करेंगे, उन्हें सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सार्ष्टि तथा सायुज्य यह पाँचों प्रकार की मुक्ति का फल प्राप्त हो जायगा और यहाँ पूजन करने से तुम्हें भी सब मनोरथों की प्राप्ति होगी ।१६-१७।

ब्रह्मा-विष्णु को पंचकृत्य तथा ओंकार का उपदेश

सर्गादिपञ्चत्यस्य लक्षणं ब्रूहि नां प्रभो ।
मत्क्रियबोधनं गुह्यं कृपया प्रब्रवीमिवाम् ।१
सृष्टिः स्थितिश्चसंहारन्तिरोभावोऽप्यनुग्रहः ।
पञ्चैव मे जगत्कृत्यं नित्यसिद्धमजाच्युतो ।२
सर्गः संसारसंरम्भस्तत्प्रतिष्ठास्थितिर्मता ।
संसारो मर्दनं तस्य तिरोभावस्तदुत्क्रयः ।३
तन्मोक्षोऽनुग्रहस्तन्मे कृत्यमेवं हि पञ्चकम् ।
कृत्यमेतद्वहत्यन्यस्तूष्णीं गोपुर विम्बवत् ।४
सर्गादि यच्चतुष्कृत्यं संसारपरिजृंभणम् ।
पञ्चमं मुक्तिहेतुत्वं नित्यं मयि च सुस्थिरम् ।५
तदिदंपञ्चभूतेषु दृश्यते मामकैर्जनैः ।
सृष्टिर्भूमौस्थितिस्तोये संहारः पावके तथा ।६
तिरोभावेऽनिलेतद्वदनुग्रह इहाम्बरे ।
सृज्यते धरया सर्वमद्भिः सर्वंप्रवर्द्धते ।७

ब्रह्मा और विष्णुने कहा--हे प्रभो ! सर्वादि पञ्च कृत्य का लक्षण हम से कहें । शिवजी ने कहा--हमारा कृत्य और ज्ञान दुर्लभ है तो भी कृपा करके उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ ।१। ब्रह्मा-विष्णो ! सृष्टि स्थिति, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह यह पाँच जगत के कृत्य हैं उन्हें नित्य सिद्ध समझो ।२। सृष्टि के आरम्भ को सर्ग कहते हैं, उसकी वृद्धि को स्थिति, नष्ट होने को संहार तथा उद्धार को उत्कृत कहा है ।३।उस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार से मोक्ष होने को अनुग्रह कहा है। यही मेरे पञ्चकृत्य हैं। पृथिवी आदि मेरे इस कृत्य को गोपुर के विम्व के समान मौन हुए धारण करते हैं ।४। यह सर्गादि चार कृत्य सृष्टि कर्म में प्रविष्ट होते हैं तथा पाँचवा जो कृत्य मुक्ति का कारण है, वह सदा मुझ में ही स्थित रहता है ।५। इसलिए यह पञ्च भूतोंमें मेरे जनों को दिखाई देता है। पृथिवीसे सृष्टि जल में स्थिति तथा अग्नि में संहार है ।६। वायु में तिरोभाव और आकाश में अनुग्रह है। सबकी उत्पत्ति पृथिवी से होती है और जल से वृद्धि होती है ।७।

अद्यते तेजसा सर्वं वायुना चापनीयते।
व्योम्नानुगृह्यते सर्वं ज्ञेयमेवं हि सुरर्व्यभिः ।८
पञ्चकृत्यमिदंवोढुं ममास्ति मुखपञ्चकम्।
चतुर्दिक्षु चतुर्वक्त्रं तन्मध्ये पञ्चमं मुखम् ।९
युवाभ्यां तपसा लब्धमेतत्कृत्यद्वयं सुतौ।
सृष्टिस्थित्यभिधंभाग्यं मत्तः प्रीतादतिप्रियम् ।१०
तथा रुद्रमहेशाभ्यामन्यकृत्यद्वयं परम्।
अनुग्रहाख्यं केनापि लब्धुं नैव हि शक्यते ।११
तत्सर्वंपौर्विकं कर्म युवाभ्यां कालविस्मृतम्।
न तद्रुद्रमहेशाभ्यां विस्मृतं कर्म तादृशम् ।१२
रूपे वेशे च कृत्ये च वाहने चासने तथा।
आयुधादौ च मत्साम्यमस्माभिस्तत्कृतेकृतम् ।१३
मद्ध्यानविरहाद्वत्सौ मौढ्यं वामेवमागतम्।
मज्ज्ञाने सतिनैवं स्यान्यात्यान्मानंरूपेमहेशवत् ।१४

तेज से सब नाश को प्राप्त होते और वायुमें लीन हो जाते हैं तथा आकाश के द्वारा सब पर अनुग्रह होता है। इस प्रकार जानना चाहिए ।८। इन्हीं पञ्च कृत्यों को धारण करने से मेरे पञ्च मुख हैं। चारों दिशाओं में चार मुख हैं तथा पाँचवाँ मुख मध्य में है ।९। हे पुत्रो ! आपने यह कृत्य तप के द्वारा प्राप्त किया है। इसी को सृष्टि की उत्पत्ति और पालन कहा गया है। यह कृत्य मैंने प्रसन्न होकर तुम्हें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदान किया है ।१०। इसी प्रकार अन्य दो कृत्य मैंने रुद्र और महेश को दिये हैं। परन्तु अनुग्रह कृत्य को प्राप्त करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है ।११। पूर्व कर्मों को तुमने समय पाकर भुला दिया है, परन्तु रुद्र और महेश उन कर्मों का विस्मरण नहीं कर सके हैं ।१२। स्वरूप, वश, कृत्य, आसन, वादन और आयुध आदिमें हम सबकी नितान्त साम्यता थी ।१३। हे सौम्य ! मेरे ज्ञान से तुम विमुख हो गये थे इसलिए अज्ञान छा गया। मेरा ज्ञान रहने पर ऐसा नहीं होगा। इससे ज्ञान और रूप महेश के समान हो जाता है ।१४।

तस्मान्मज्ज्ञानसिद्ध्यर्थं मन्त्रमोंकारनामकम् ।
इत परं प्रजपतः मामकं मानभञ्जनम् ।१५
उपादिशं निजं मन्त्रमोंकारमुरुमङ्गलम् ।
ओंकारो मन्मुखाज्जाज्ञे प्रथमं मत्प्रबोधकम् ।१६
वाचकोऽयमहवाच्यो मन्त्रोऽयं हि मदात्मकः ।
तदनुस्मरणं नित्य ममानुस्मरणं भवेत् ।१७
अकार उत्तरात्पूर्वमुकार पश्चिमाननात् ।
मकारो दक्षिणमुखाद्बिद्वदुः प्राङ्मुखतस्तथा ।१८
नादोमध्यमुखादेवं पञ्चसाऽसौ विजृंभितः ।
एकीभूतः पुनस्तद्वदोमित्येकाक्षरो भवेत् ।१९
नामरूपात्मकं सर्वंवेदभूतं कुलद्वयम् ।
व्याप्तमेतेनमन्त्रेण शिवशक्त्योश्च बोधकः ।२०
अस्मात्पंचाक्षरं जज्ञे बोधकं सकलस्य तत् ।
अकारादिक्रमेणैव कारादि यथाक्रमम् ।२१
अस्मात्पञ्चाक्षराज्जाता मातृकाः पञ्चभेदतः ।
तस्माच्छिरश्चतुर्वक्त्रं त्रिपाद्गायत्रिरेव हि ।२२

इसलिए तुम उस ज्ञान की प्राप्ति के लिए 'ओंकार' नामक मन्त्रको जपो। क्योंकि यह मन्त्र अभिमान को नष्ट करने में समर्थ है ।१५। यह जिस मन्त्र उपदेश किया है। यह ओंकार, मेरे ही मुख से उत्पन्न होने के कारण मेरे रूप का बोधक और महा मङ्गलकारी है।१६। यह वाचक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है मैं वाच्य हूँ। यह मन्त्र मेरी ही आत्मा है इसके स्मरण करने से मेरा ही स्मरण होता है।१७। उत्तर दिशा वाले मुखसे 'अकार' पश्चिम वाले मुख से 'उकार' दक्षिण के मुख से 'मकार' और पूर्व के मुख से बिन्दु की उत्पत्ति हुई।१८। मध्य मुख से नाद उत्पन्न हुआ। इस प्रकार पाँच प्रकार से निकलता हुआ यह सब एक होकर, ओंकार' रूप एकाक्षर बन गया।१९। यह सब नाम रूप वाला वेदंभूत तथा स्त्री पुरुष भेद से भौतिक शरीर से दो भेद वाला है, इसी मन्त्रसे व्याप्त तथा शिव भक्ति का बोध करने वाला है।२०। इस 'ओंकार' से ही पूर्ण विश्व के बोधक प्रणव की उत्पत्ति हुई। आकारादि क्रम से आकार से नकार, उकार से मकार, मकार से 'शि' बिन्दु से 'वा' और नाद से 'य' की उत्पत्ति हुई है।२१। इसी पञ्चाक्षर से पाँच भेद द्वारा मातृ का आकर से लृकारकी उत्पत्ति हुई, उससे शिवोम् एवं चार मुखों से त्रिपदा गायत्री प्रकट हुई।२२।

शिवलिंग पूजन-दान वर्णन

कथं लिंग प्रतिष्ठाप्यं कथं वा तस्य लक्षणम्।
कथं व तत्समभ्यर्च्यंदेशे काले च केन हि।१
युष्मदर्थं प्रवक्ष्यासि बुद्ध्यंतामवधानतः।
अनुकूले शुभे काले पुण्ये तीर्थे तटे तथा।२
यथेष्टं लिंगमारोप्यं यत्र स्यान्नित्यमर्चनम्।
पार्थिवेन तथाप्येन तैजसेन यथारुचि।३
कल्पलक्षणसंयुक्तं लिंग पूजाफलं लभेत्।
सर्वलक्षणसंयुक्तं सद्यः पूजाफलप्रदम्।४
चरे विशिष्यते सूक्ष्मं स्थावरे स्थूलमेव हि।
स लक्षणं स पीठं च स्थापयेत्शिवनिर्मितम्।५
मंडलं चतुरस्रं वा त्रिकोणमथवा तथा।
खट्वांगवन्मध्यसूक्ष्मं लिंगपीठं महाफलम्।६
प्रथमं मृच्छिलादिभ्यो लिंगं लौहादिभिः कृतम्।
येन लिंगस्तेन पीठं स्थावरे हि विशिष्यते।७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

ऋषियों ने पूछा--लिंग की प्रतिष्ठा किस प्रकार करें, उसका लक्षण क्या है ? किस देशकाल में उसका किस प्रकार से पूजन करना चाहिए ।१। सूतजी ने कहा--यह सब तुम्हें बताता हूँ। तुम सावधान होकर श्रवण करो सुन्दर समय हो, पुण्य तीर्थ अथवा नदीका तट हो।२। जहाँ नित्य पूजन हो सके उस स्थान में पूजन करना चाहिए। पार्थिव द्रव्य, जल युक्त अथवा किसी धातु से लिंग निर्मित करावे।३। शैव शास्त्रों में वर्णित विधानानुसार विधि से लिंग-पूजन का फल प्राप्त करे। क्योंकि सब लक्षणों के सामान्य होने से पूजन फलदायक है। चल मूर्ति छोटी बनानी चाहिए, अचल मूर्ति स्थूल बनावें, फिर सब लक्षण और सिंहासन बनावें और खट्वांग के समान बीचमें सूक्ष्म लिंग चौकी रखे। यह महाफल के देने वाली है। पहले लिंग मिट्टी, शिला या लौह आदि से बनावे। जिस धातु का लिंग हो, उसी का पीठ होना चाहिए ।४-७।

लिंगं पीठे चरेत्वेकं लिंगं बाणकृतं विना ।
लिङ्ग प्रमाणं कर्तॄणां द्वादशांगुलमुत्तमम् ।८
न्यूनं चेत्फलमल्पं स्या दधिकं नैव दूष्यते ।
कर्तुरेकांगुलन्यूनं चरेऽपि च तथैव हि ।९
आदौ विमानं शिल्पेन कार्यदेवगणैर्युतम् ।
तत्र गर्भगृहे रम्ये दृढ़े दर्पणसंनिभे ।१०
संपूज्य लिंगं सद्याद्यैः पञ्चस्थाने यथाक्रमम् ।
अग्नौ च हुत्वा बहुधा हविषं सकलं च माम् ।११
अभ्यर्च्य गुरुमाचार्यमर्थे कामैश्च बांधवम् ।
दद्यादैश्वर्यमर्थिभ्यो जडमप्यजडं तथा ।१२
स्थावरं जङ्गमं जीवं सर्वं संतोष्य यत्नतः ।
सुवर्णपूरिते शुभ्रे नवरत्नैश्चपूरिते ।१३
सद्यादि ब्रह्मचोच्चार्य ध्यात्वा देवं परं शुभम् ।
उदीर्य महामन्त्रमोकारं नादघोषितम् ।१४

केवल बाण लिंग को छोड़ लिंग पीठ एक ही बनावे तथा लिंग का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम द्वादश अंगुल का रखे ।८। कम रहेगा तो फल भी थोड़ा होगा। अधिक रहे तो भी कोई दोष नहीं। ग्यारह अंगुल रहे तो भी बाहरके समान है ।९। पहिले शिल्प विद्या के द्वारा देवताओं के गण सहित कार्य करावे और भीतर के दृढ़ तथा दर्पण के समान प्रकाशित सुन्दर स्थान रखे ।१०। फिर सद्योजातादि मन्त्रों द्वारा लिंग पूजन करे और पूर्वादि दिशाओं के बीच में पूजन कर अग्नि में अनेक प्रकार की आहुति दे ।११। मेरा पूजन परिवार सहित गुर और आचार्य का पूजन करे। अर्थ तथा काम से बन्धुजनों का सत्कार कर गृह, बगीचा तथा गौ का दान करे ।१२। फिर यत्न पूर्वक स्थावर जंगम सब प्राणियों को सन्तुष्ट कर स्वर्ण और नवरत्न से पूरी हुई उस गत में सद्योजातादि पाँच मन्त्रों का उच्चारण करे और परम सुभग देव का ध्यान कर ओंकार नाद से शोधन कर महामन्त्रों का उच्चारण करे ।१३-१४।

लिङ्गं तत्र प्रतिष्ठाप्य लिङ्गं पीठेन योजनेत् ।
लिङ्गं सपीठं निक्षिप्य नित्यंलेपेन बंधयेद् ।१५
एवं वेरं च संस्थाप्यं तत्रैव परमं शुभम् ।
पञ्चाक्षरेण बेरं तु उत्सवार्थंबहिस्तथा ।१६
बेरं गुरुभ्यो गृह्णीयात्साधुभिः पूजितं तु वा ।
एवं लिंगे च वेरे च पूजा शिवपदप्रदा ।१७
पुनश्च द्विविधं प्रोक्तं स्थावरं जङ्गमं तथा ।
स्थावरं लिङ्गमित्याहु स्तरुगुल्मादिकं तथा ।१८
जङ्गम लिङ्गमित्याहु क्रमिकोटादिकं तथा ।
स्थावरस्य च शुश्रुषां जङ्गमस्य च तर्पणम् ।१९
तत्तत्सुखानुरागेण शिवपूजां विदुर्बुधाः ।
पीठमंबामयं सर्वंशिवलिंग च चिन्मयम् ।२०
यथादेवीमुमामंके धृत्वा तिष्ठति शंकरः ।
तथालिङ्गमिदं पीठं धृत्वा तिष्ठति संततम् ।२१

फिर उसमें लिंगकी स्थापना करे तथा लिंग और पीठ को जोड़कर दृढ़ जोड़ने वाले द्रव्यों को लगा दे। इसी प्रकार वहाँ वेर लिंग की भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना करे। पञ्चाक्षर मन्त्रके द्वारा उत्सवादि के समय वेरको बाहर निकाले।१५-१६। वेर लिंग को किसी महात्मा या साधु से ग्रहण करे अथवा गुरु से ले। इस प्रकार लिंग और वेर में शिवजी का पूजन शिव पद का देने वाला है।१७। स्थावर जङ्गमके भेद से इनके दो प्रकार हैं-तरु या गुल्म आदि के लिंग को स्थावर करते हैं और कृमि कीटादि को जङ्गम लिंग कहा गया है। स्थावर की शुश्रूषा जलादि सेचन से और तर्पण जल और अन्न आदि से सन्तुष्ट करना कहा है। विभिन्न सुख के अनुसार पण्डितों ने शिव पूजा विधि कहा है। पीठ प्रकृतिमयी तथा शिव लिंग ज्ञान स्वरूप माना गया है। जैसे भगवान् शिव पार्वती जी को अङ्क में धारण किये रहते हैं वैसे ही लिंग भी इस पीठ को धारण किये रहता है।१८-२१।

एवं स्थाप्य महालिङ्गं पूजयेदुपचारकैः।
नित्यं पूजा यथाशक्ति ध्वजादिकरणं तथा।२२
इति संस्थापयेल्लिङ्गं साक्षाद्‌शिवपदप्रदम्।
अथवा चरलिङ्गं तु षोडशैरुपचारकैः।२३
पूजयेच्च यथान्यायं क्रमाच्छिवपदप्रदम्।
आवाहनं चासनं च अर्घ्यं पाद्यं तथैव च।२४
तदङ्गाचमनं चैव स्नानमभ्यङ्गपूर्वकम्।
वस्त्रं गन्धं तथा पुष्पं धूपं दीपं निवेदनम्।२५
नीराजनं च ताम्बूलं नमस्कारो विसर्जनम्।
अथवाऽर्घ्यादिकं कृत्वा नैवेद्यं यथाविधि।२६
अथाभिषेकं नैवेद्यं नमस्काराश्च तर्पणम्।
यथाशक्ति सदाकुर्यात्क्रमाच्छिवपद-प्रदम्।२७
अथवा मानुषे लिंगेऽप्यार्षे दैवस्य वां भुवि।
स्थापितेऽपूर्वकेलिंगे सोपचारं यथा तथा।२८
पूजोपकरणे दत्ते यत्किंचित्फलमश्नुते।
प्रदक्षिणानमस्कारैः क्रमाच्छिवपदप्रदम्।२९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार लिंग को स्थापित कर उपचार पूर्वक पूजन करे। यथा शक्ति नित्य पूजन और ध्वजा आदि का उत्सव करना चाहिए ।२२। शिव पद को प्राप्त कराने वाले लिंग का नित्य पूजन करे तथा चरलिंग को षोडश उपचार द्वारा पूजे ।२३। यथा विधि पूजन करने से शिवजी का पद प्राप्त होता है। आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, अंग आचमन, तैल का अभ्यंग युक्त वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप सहित अर्पण करे।२४-२५। नीराजन ताम्बूल भेंट कर नमस्कार, विसर्जन अथवा नैवेद्यके अन्त तक विधिवत् अर्घ्य देकर नैवेद्य, नमस्कार तर्पण आदि करे तो क्रम पूर्वक शिव पद की प्राप्ति होती है ।२६-२७। मनुष्यों या ऋषियों द्वारा स्थापित किये अथवा स्वयं प्रादुर्भूत हुए या नव स्थापित लिंग में उपचार एवं पूजन सामग्री निवेदन करने से जो कुछ फल प्राप्त होता है, वह वहाँ प्रदक्षिणा और नमस्कार करने से ही शिव पद प्राप्त हो जाता है ।२८-२९।

लिंगदर्शनमात्रं वा नितमेन शिवप्रदम् ।
मृत्पिष्टै गोशकृत्पुष्पैः करवीरेण वा फलैः ।३०
गुडेन नवनीतेन भस्मनान्यैर्यथारुचिः ।
लिंगं यत्नने कत्वां ते यजेत्तदनुहारतः ।३१
अंगुष्ठादावपि तथापूजामिच्छन्ति केचन ।
लिंगकर्मणि पूर्वंत्र. निषेधोऽस्ति न कर्हिचित् ।३२
सर्वत्र फलदाता हि प्रयासानुगुणं शिवः ।
अथवा लिंगदानं वा लिंगमौल्समथापि वा ।३३
श्रद्धया शिवभक्त्य दत्तं शिवपदप्रदम् ।
अथवा प्रणवं नित्यं जपेद्दशं सहस्रकम् ।३४
संध्ययोश्चसहस्रं वा ज्ञेयं शिवपदप्रदम् ।
जपकाले मकारांतं मन शुद्धिकरं भजेत् ।३५

नियम पूर्वक शिवजी का दर्शन करने से भी शिवजी का लोक मिलता है। पिसी हुई मिट्टी में गोबर मिलाकर या कनेर के पुष्प अथवा अनेक प्रकार फल गुड़, मक्खन, भस्म, अन्न अथवा रुचि के अनु-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार लिंग को यत्नपूर्वक बनाकर उसी के अनुसार भजन करना चाहिए ।३०-३१। इस प्रकार कोई अंगुष्ठ में ही शिवजी का पूजन करतेहैं, लिंग का पूजन जहाँ चाहें वहाँ करें, इसका कहीं निषेध नहीं है ।३२।भगवान् शिवजी श्रम के अनुसार ही सर्वत्र फल प्रदान करते हैं अथवा लिंग दान या लिंग का मूल्य शिव के भक्त को श्रद्धा पूर्वक देने से भी महाफल प्राप्त होता है । शिव के पद की प्राप्ति होती है अथवा नित्य प्रति 'ओंकार' का दस हजार बार जप करें ।३३-३४।अथवा दोनों सन्ध्याओं में हजार बार जप करने से शिवपद प्राप्त होता है जप के समय में मकारान्त् अर्थात् ॐ ही मन को शुद्ध कर देता है ।३५।

समाधौ मानसं प्रोक्तमुपांशु सर्वकालिकम् ।
समानप्रणवं चेमं बिदुं नादयुतं विदुः ।३६
अथ पञ्चाक्षरं नित्यं जपेदयुतमादरात् ।
संध्ययोश्च सहस्रं वा ज्ञेयं शिवपदप्रदम् ।३७
प्रणवेनादिसंयुक्तं ब्राह्मणानां विशिष्यते ।
दीक्षायुक्तं गुरोर्ग्राह्यं मन्त्रंह्यथ फलाप्तये ।३८
कुंभस्नानं मन्त्रदीक्षां मातृकान्यासमेव च ।
ब्राह्मणः सत्यपूतात्मा गुरुर्ज्ञानी विशिष्यते ।३९
द्विजानां च मनः पूर्वमन्येषां च नमोऽन्तकम् ।
स्त्रीणां च क्वचिदिच्छन्ति नमोतं च यथाविधि ।४०
विप्रस्त्रीणां नमः पूर्वमिदमिच्छन्ति केचन ।
पञ्चकोटि जपं कृत्वा सदाशिवसमो भवेत् ।४१
एक द्वित्रि चतुः कोट्या ब्रह्मादीनां पदं व्रजेत् ।
जपेदाक्षरलक्षं वा अक्षराणां पृथक्पृथक् ।४२

समाधिमें उपांशु अर्थात् मानसिक जप सर्वकाल करे तथा बिन्दुनाद युक्त प्रणव सभी कार्यों में एक ही है।३६। अथवा पञ्चाक्षर मन्त्र नित्य दस हजार बार जप करें । दोनों सन्ध्याओं में हजार बार जपे तो शिवपद प्राप्त होता है ।३७। पञ्चाक्षरी मन्त्र में ब्राह्मण को ॐ लगाना चाहिए । फल की प्राप्ति के हेतु गुरु से दीक्षा लेते हुए मन्त्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहण करना चाहिए ।३८। घट स्नान, मन्त्र दीक्षा, मातृकान्यास तथा सत्य भाषण करनेवाला आत्मज्ञानी गुरुही योग्य समझना चाहिए ।३९। ब्राह्मण नमः को पहिले लगावें तथा अन्य बर्ण 'नमः' को पीछे लगावे तथा स्त्रियों के लिए भी अन्तमें 'नमः' लगानेका विधान है ।४०। किसी के मत में ब्राह्मणों की स्त्रियोंको भी प्रथमही उच्चारंण करना चाहिए। ॐ 'नमः शिवाव' इस पंचाक्षर का पाँच कोटि जप करने से शिवजी के समान हो जाता है ।४१। एक करोड़ जप से ब्रह्मा दो करोड़ से विष्णु 'तीन करोड़से रुद्र और चार करोड़ जप करनेसे महेश को प्राप्त होता है अथवा मन्त्राक्षरों में से प्रत्येक अक्षर का एक-एक लाख जप करना चाहिए ।४२।

अथवाक्षरलक्षं वा ज्ञेयं शिवपदप्रदम् ।
सहस्रं तु सहस्राणां सहस्रेणदिनेन हि ।४३
जपेन्मन्त्रादिष्टसिद्धि नित्यं ब्राह्मणभोजनात् ।
अष्टोत्तरसहस्रं वै गायत्रींप्रातरेव हि ।४४
ब्राह्मणस्तु जपेन्नित्यं क्रमाद्शिवपदप्रदान् ।
वेदमन्त्रांस्तु सूक्तानि जपेन्नियममास्थितः ।४५
एकदशार्णमन्त्रं च शतोन च तदूर्ध्वकम् ।
अयुतं च सहस्रं च शतमेकं विना भवेत् ।४६
वेदपारायणं चैव ज्ञेयं शिवपदप्रदम् ।
अन्यान्बहुतरान्मन्त्राञ्जपेदक्षरलक्षतः ।४७
एकाक्षरांस्तथामंत्राञ्जपेदक्षरकोटितः ।
ततः परं जपेच्चैव सहस्रं भक्तिपूर्वकम् ।४८
एवं कुर्याद्यथाशक्ति क्रमाद्शिवपदं लभेत् ।
नित्यं रुचिकरं त्वेकं मन्त्रमामरणांतिकम् ।४९

अथवा मन्त्र के जितने अक्षर हो उतने ही लाख जप करे तो शिव पद की प्राप्ति होती है । अथवा हजार दिनमें दस लाख जप करे ।४३। नित्य प्रति ब्राह्मण भोजन करावे, मन्त्र जप करे, इससे इष्ट-पूर्ति होगी। एक हजार आठ गायत्री का नित्य प्रातःकाल जप करे ।४४। इस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जप करने से ब्राह्मण क्रम से शिवप्रद को प्राप्त होता है। वेद के मन्त्रों और सूक्तों का नियमपूर्वक जप करना चाहिए।४५। मन्त्र का दशार्ण जप अर्थात् दश अक्षर का मन्त्र सौ बार या उससे अधिक हजार, दस हजार के साथ सौबार जपे।४६। वेदके पारायण से भी शिवपद मिलता है। अन्य अनेक मन्त्र हैं, जिनके जितने अक्षर हों उतने ही लक्ष जप करना चाहिए।४७। एकाक्षर मन्त्र का एक करोड़ बार जप करे, फिर भक्ति पूर्वक 'ओंकार' का एक हजार बार जप करना उचित है।४८। इस प्रकार यथा शक्ति जप करने से शिवपद की प्राप्ति होती है। नित्य प्रति जीवन पर्यन्त एक मन्त्र का जप करे।४९।

जपेत्सहस्रमोमिति सवाभीष्टं शिवाज्ञया।
पुष्पारामानिकं वापि तथा संमार्जनादिकम्।५०
शिवाय शिवकार्यार्थे कृत्वा शिवप्रदं लभेत्।
शिवक्षेत्रे तथा वासं नित्यं कुर्याच्च भक्तितः।५१
जडानामजडानां च सर्वेषां भुक्तिमुक्तिदम्।
तस्माद्वासं शिवक्षेत्रे कुर्यादामरणं बुधः।५२
लिङ्गाद्धस्तशतं पुण्यं क्षेत्रे मानुषुके विदुः।
सहस्रारत्निमात्रं तु पुण्यक्षेत्रे तथार्षके।५३
दैवलिङ्गे तथाज्ञेयं सहस्रारत्निमानतः।
धनुष्प्रमाणसाहस्रं पुण्यं क्षेत्रे स्वयं भुवि।५४
पुण्यक्षेत्रेस्थितावापीकूपाद्यपुष्कराणि च।
शिवगंगेति विज्ञेयं शिवस्य वचनं यथा।५५

'ॐ' को हजार बार जपे तो शिवजी की आज्ञासे सभी कामनाओं की प्राप्ति होती है।५०। शिवजी के निमित्त पुष्पः उद्यान आदि करे तो शिवपद मिलता है। भक्ति पूर्वक नित्य शिव क्षेत्र में निवास करे।५१। इससे जड़, चैतन्य सभी को मोक्ष मिलता है। इसलिए बुद्धिमान मृत्यु पर्यन्त शिव क्षेत्र में ही निवास करे।५२। मनुष्यों ने जहाँ लिंग की स्थापना की है, वहाँ सो हाथ तक पुण्यमय स्थान है और ऋषियों द्वारा स्थापित लिंग पुण्य क्षेत्र है, वहाँ हजार हाथ तक स्थान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र कहा गया है ।५३। देवताओं द्वारा स्थापित लिंग का प्रादुर्भाव स्वयं हुआ हो, वहाँ, चार हजार हाथ तक का स्थान पवित्रस्थल माना गया है ।५४। पुण्य क्षेत्र के कूप बावड़ी सरोवर सभी शिव गंगा के स्वरूप हैं, ऐसा स्वयं भगवान् शंकर का कथन है ।५५।

तत्र स्नानत्वा तथा दत्वाज पित्वा हि शिवं ब्रजेत् ।
शिवक्षेत्रं समाश्रित्य वसेदामरणं तथा ।५६
दाहं दशाहं मास्यं वा सपिंडीकरणं तु वा ।
आब्दिकं वा क्षैत्रिकंत्रिपिंडमथापि वा ।५७
सर्वपापादिनिर्मुक्तः सद्यः शिबपदं लभेत् ।
अथवा सप्तरात्रं वसेद्वा पञ्चरात्रकम् ।५८
त्रिरात्रमेकरात्रं वा क्रमाच्छिवपदं लभेत् ।
स्वबर्णानुगुणं लोके स्वचारात्प्राप्यते वरः ।५९
वर्णोद्धारेण भक्त्या च तत्फलातिशयं नरः ।
सर्वं कृतं कामनया सद्यः फलमवाप्नुयात् ।६०
सर्वं कृतमकामेन साक्षाच्छिवपदप्रदम् ।
प्रातर्मध्याह्नसायाह्न महस्त्रिष्वेकतः क्रमात् ।६१
प्रातर्विधिकरं ज्ञेयं मध्याह्नं कामिकं तथा ।
सायाह्नं शांतिकं ज्ञेयं रात्रावपि तथैव हि ।६२

उस स्थान पर स्नान, दान और जप करनेसे शिवलोक मिलताहै । शिव-क्षेत्र में निवास कर मृत्यु पर्यन्त वहाँ निवास करना चाहिए ।५६। दाह, दशाह, मासिक-कर्म पपिण्डी-कर्म श्राद्ध, साँवत्सरिक कर्म क्षेत्र पिण्ड आदि कर्म शिव क्षेत्रमें करे ।५७। उससे सभी पाप नष्ट होकर शिवपद की प्राप्त होती है । सप्त रात्रि या पाँच रात्रि तक शिव-क्षेत्र में निवास करना चाहिए ।५८। अथवा तीन रात्रि निवास करना चाहिए या केवल एक रात्रि ही निवास करें तो क्रम से शिव पद प्राप्ति होती है । ब्राह्मणादि सभी वर्ण अपने वर्ण के अनुरूपानुसार सुन्दर आचरण द्वारा उसके फल की अधिकता को पाते हैं ।५९। भक्ति पूर्वक कर्म करने से महाफल मिलता है । इससे उसका वर्णोद्धार होताहै तथा अभीष्टपूर्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collectioh.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्र ही होती है ।६०। सब प्रकार की कामनाओं का त्याग कर पूजन करे तो साक्षात् शिवपद मिलता है । प्रातः मध्याह्न और सायं काल: प्रत्येक समय में शिवजी की आराधना करे ।६। प्रातः काल के जप से विधि सम्पादन, मध्याह्नके जपसे कामना और संध्या के जप से शान्ति मिलती है तथा रात्रि के जप का फल भी वेसा ही है ।६२।

कालो निशीथो वै प्रोक्तो मध्ययामद्वय निशि ।
शिवपूजा विशेषेण तत्कालेऽभीष्टसिद्धिदा ।६३
एवं ज्ञात्वा नरः कुर्वन्यथोक्तफलभाग्भवेत् ।
कलौयुगे विशेषेंण फलसिद्धिस्तुकर्मणा ।६४
उक्तेन केनचिद्वापि अधिकारविभेदतः ।
सद्वृत्तिः पापभीरुश्चेत्तत्तत्फलवाप्नुयात् ।६५

दो प्रहर रात्रि व्यतीत होनेपर अर्ध रात्रि होतीहै उस समय किया गया शिव-पूजन विशेष फलदायक है । उससे सब सिद्धियाँ प्राप्त होतीहै ।६३। इस प्रकार जानकर जो करे उसे यथोक्त फल की प्राप्ति होतीहै । विशेष कर कलि-काल में कर्म से ही फलकी सिद्धि होती है ।६४। वर्णन किये गये किसी अधिकार के भेद से श्रेष्ठ आचरण वाले और पाप से डरने वाले को उपरोक्त सम्पूर्ण फल की प्राप्ति होती है ।६५।

सदाचार वर्णन

सदाचारं श्रावयाशु येन लोकाञ्जयेद्बुधः ।
धर्माधर्ममयान्ब्रूहि स्वर्गनरकदांस्तथा ।१
सदाचारयुतो विद्वान्ब्राह्मणो नामनामतः ।
वेदाचारयुतोविप्रो ह्येतैरेकैकवान्द्विजः ।२
अल्पाचारोल्पवेदश्च क्षत्रियो राजसेवकः ।
किंचिदाचारवान्वैश्यः कृषिवाणिज्यकृत्तत्तथा ।३
शूद्रब्राह्मण इत्युक्तः स्वयमेव हि कर्षकः ।
असूयालुः परद्रोही चाण्डाल द्विज उच्यते ।४
पृथिवीपालको राजा इतरे क्षत्रिया मताः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धान्यादि क्रयवान्वैश्य इतरो व गणि उच्यते ।५
ब्रह्मक्षत्रियवैश्यानां शुश्रूष: शूद्र उच्यते ।
कृषको वृषलो ज्ञेय इतरे चैव दस्यवः ।६
सर्वोह्त्युषः प्राचीमुखश्चिन्तयेद्‌देवपूर्वकान् ।
धर्मानर्थाश्चतत्क्लेशानायं च व्ययमेव च ।७

ऋषियों ने कहा-हे सूतजी ! अब आप हमारे प्रति सदाचार कहें जिससे प्राणी लोकों को जीतता है। धर्म और अधर्म किन आचरणोंसे होता है ? कौन से स्वर्ग के देने वाले हैं और कौन से आचरण नरक । ।१। सूतजीने कहा-सदाचार से युक्त विज्ञ ब्राह्मण वेदाचार वाला होकर आगे कहे हुए एक-एक गुणों से द्विज संज्ञक होता है ।२। थोड़ा-सा वेद जानने वाला अत्याचारी राजसेवक ब्राह्मण क्षत्रिय-ब्राह्मण और कृषि वाणिज्य करने वाला वैश्य-ब्राह्मण है ।३। जो स्वयं हल जोते उसे शुद्ध-ब्राह्मण समझो। पर द्रोही अथवा पर-निंदक प्रिय को चाण्डाल-ब्राह्मण समझना चाहिए ।४। अब राजा और क्षत्रिय का भेद सुनो ! पृथिवीका पालक राजा और अन्य क्षत्रितहै। धान्यादि विक्रेता वैश्य और इत्यादि बेचने वाले अधिक हैं ।५। ब्राह्मण, क्षत्रिय और बैश्य तीनों वर्णों की सेवा करने वाला शूद्र है। उनमें कृषि कर्म वाले कृषक और अन्य शूद्र दस्यु करते हैं ।६। सभी वर्णों का उषाकाल में उठकर सूर्य मे मुखकर देवताओं का ध्यान करना चाहिए तथा धर्म, अर्थ उनकी प्राप्तिमें क्लेश और आय-व्यय पर विचार करें ।७।

आयुर्द्वेषश्च मरणं पापं भाग्यं तथैव च ।
व्याधिः पुष्टिस्तथा शक्तिः प्रातरुत्थानदिक्फलम् ।८
निशांत्ययामोषा ज्ञेया यामार्धसंधिरुच्यते ।
तत्काले तु समुत्थाय विण्मूत्रे विसृजेद्द्विजः ।९
गृहाद् दूरं ततो गत्वा वाह्यतः प्रावृतस्तथा ।
उदङ्मुख्, समाविश्य प्रतिबंधेऽन्यदिङ्मुखः ।१०
जलाग्निब्राह्मणादीनां देवानां ताभिमुख्यतः ।
लिङ्गं पिधायवामेव मुखमन्येन पाणिना ।११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलमुत्सृज्यचोत्थाय न पश्येच्चैव तन्मलम् ।
उद्धतेन जलनैव शौकं कुर्याज्जलाद्बहिः ।१२
अथवा देवपित्रार्षतीर्थावतरणं विना ।
सप्तवारं च वात्रीन्वारं गुदं संशोधयेन्मृदा ।१३
लिंगे कर्कोटमात्रं तु गुदे प्रसृतिरिष्यते ।
तत उत्थाय पद्धस्तं शौचं गण्डूषमष्टकम् ।१४

पूर्वादि दिशाओं की ओर मुख के उठने का फल कहते हैं ! आयु, द्वेष, मृत्यु पाप, शुभ-अशुभ कर्म, व्याधि,पुष्टि, शक्ति यह आठ दिशाओं की ओर मुख से उठने पर होती है ।८। रात्रि का अन्त उषाकाल है उसमें आधे प्रहर की सन्धि कही जाती हैं । ब्राह्मण को उसी समय उठ कर शौचादि कर्म करने चाहिए ।९। घर से दूर चला जाय शिर से कपड़ा लपेट ले और उत्तर की ओर मुख करके बैठे तथा अन्य दिशाओं की ओर न देखे ।१०। जल, अग्नि, ब्राह्मण और देवताओं में सामनेकी ओर न बैठे । बाँए हाथसे लिंग और दाँये हाथ से मुखको ढकले ।११। तब मल त्याग करें, परन्तु त्याग के पश्चात् मल को न देखे, फिर जल के स्थान से अलग ही पात्रके जलसे शौच ले ।१२। अथवा देवता पितर ऋषियों के तीर्थों को छोड़कर पोखर आदि के जल से सात बार, पाँच बार या तीन बार पहिले मिट्टी से उन स्थानों को स्वच्छ करे ।१३। लिंग की शुद्धता के लिए कर्कोटक के फल के बरावर मिट्टी ले । मल स्थान की शुद्धि के लिए आधी अंजुली मिट्टी ले । फिर हाथ पाँव धोकर आठ बार कुल्ले करे ।१४।

येन केन च पत्रेण काष्ठेन जलाद्बहिः ।
कार्यंसंतज्र्जंनीत्यज्यं दंतधावनमीरितम् ।१५
जलदेवान्नमस्कृत्य मन्त्रेण स्नानमाचरेत् ।
अशक्तः कण्ठदघ्नं वा कटिदघ्नमथापि वा ।१६
आजानुजलमाविश्य मन्त्रस्नानं समाचरेत् ।
देवादींस्तर्नपेद्विदांस्तत्र तीर्थे जलेन च ।१७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धौतवस्त्रं समादाय पञ्चकच्छेन धारयेत् ।
उत्तरीयं च किं चैव धार्यं सर्वेषु कर्मसु ।१८
आपोहिष्ठेति शिरसि प्रोक्षयेत्पापशांतये ।१९
यस्येति मन्त्रं पादे तु संधिप्रोक्षणमुच्यते ।२०
पादे मूर्ध्नि हृदि चैव हृत्पाद एव च ।
हृंत्पादमूर्ध्नि संप्रोक्ष्य मन्त्रस्नानं विदुर्बुधाः ।२१

किसी वृक्षके पत्ते या काष्ठ की डंडीसे तर्जनी उंगुली को छोड़कर, जल से बाहर बैठकर दातुन करनी चाहिए ।१५। फिर जल देवता को नमस्कार कर मन्त्रोच्चार पूर्वक स्नान करे । फिर कंठ तक या कमर तक जल में उतर कर मन्त्र सहित स्नान करे । उस तीर्थ जलसे विद्वान् पुरुष को देवादि का तर्पण करना चाहिए ।१६-१७। फिर धोती लेकर पञ्च कच्छ अर्थात् दांए-बाँऐ दो-दो और पीठ में एक इस प्रकार पाँच लपेटा दे तथा सर्वकर्म में उत्तरीय धारण करे ।१८। 'आपोहिष्ठेति' इस मन्त्र से पाप शान्ति के लिए सिर पर जल छिड़के तथा इस मन्त्रके एक-एक चरण से चरण आदि नौ स्थानों में क्रम पूर्वक प्रोक्षण करें। 'यस्येति' यही उसका मन्त्र है इसे ही सन्धि प्रोक्षण कहा गया है ।१९-२०। चरण शिर, हृदय शिर-हृदय, चरण शिर इस क्रम से प्रोक्षण कर, मन्त्र-स्नान करना चाहिए ।२१।

ईषत्स्पर्शे च दौ स्वास्थ्ये राजरांष्ट्रभयेपि च ।
अगत्या गतिकाले च मन्त्रस्नानमाचरेत् ।२२
प्रातः सूर्यानुवाकेन सायमरत्यनुवाकतः ।
अपः पीत्वा तथा मध्ये पुनःप्रोक्षणमाचरेत् ।२३
गायत्र्या जपमन्त्रांते त्रिरूर्ध्वं प्राग्विनिक्षिपेत् ।
मन्त्रेण सह चैकं वैं मध्येऽर्घ्यंतु रवेर्द्विजाः ।२४
अथ जाते च सायाह्ने भुवि पश्चिमदिङ्मुखः ।
उद्धृत्य दद्याद्वारि मध्याह्नेऽगुलिभिस्तथा ।२५
अंगुलीनां च रंध्रेण लंबं पश्येद्दिवाकरम् ।
आत्मप्रदक्षिणं कृत्वा शुद्धाचमनमाचरेत् ।२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंमुहूर्तादृर्वाक्तु कृता संध्य वृथा भवेत् ।
अकाकात्काल इत्युक्तो दिनेऽतीते यथाक्रमम् ।२७
दिवाऽतीते च गायत्रीं शतं नित्यं क्रमाज्जपेत् ।
आदशाहात्पराऽतीते गायत्रीं लक्षमभ्यसेत् ।२८

शरीर रोग ग्रस्तहो, राजा तथा राष्ट्रका भय उपस्थित हो या मार्ग गमन अथवा अपवित्र वस्तु का स्पर्श होने पर मन्त्र स्नान ही करे ।२२। प्रातः काल 'सूर्य्यश्चमामन्युश्चेति इस सूर्य अनुवाक् से तथा सन्ध्याकाल में 'अग्निश्चमयुश्चेति' इस अग्नि अनुवाक् से मध्य में जल पीकर फिर पूर्ववत् मार्जन करना चाहिए ।२३। गायत्री मन्त्र का जप करके तीन बार ऊपर को जल फेंके । मध्यान्ह सन्ध्या की विधि–मन्त्र सहित मध्य में सूर्य को अर्घ्यदान करे ।२४। सन्ध्या होने पर पश्चिम की ओर मुख करके बैठे । प्रातः एवं मध्यान्ह में देव तीर्थ से लेकर अंगुलियों से जल दे ।२५। फिर अंगुलियों के छेद से अस्त होते हुए सूर्य के दर्शन करे और अपनी प्रदक्षिणा करके शुद्ध आचमन करे ।२६। सन्ध्या के मुहूर्त से पहले की जाने वाली सन्ध्या व्यर्थ होती है, इसलिए सन्ध्या असमय में न करे । दिन के व्यतीत होने पर सन्ध्या न करने का निम्न प्रायश्चित्त कहा गया है ।२७। नित्य के जप से भी गायत्री का अधिक जप करें । यदि सन्ध्या किये हुए दस दिन व्यतीत हो जावें तो एक लाख गायत्री का जप करे ।२८।

मासातीते तु नित्ये हि पुनश्चोपनयं चरेत् ।
ईशोगौरीगुहोविष्णुर्ब्रह्मा चेन्द्रश्चवैयमः ।२९
एवं रूपांश्च वै दिवांस्तर्पयेदर्थसिद्धिये ।
ब्रह्मार्पणं ततः कृत्वा शुद्धाचमनमाचरेत् ।३०
तीर्थदक्षिणतः शस्ते मठे मन्त्रालये बुधः ।
तत्र देवालये वापि गुहे वा नियतस्थले ।३१
सर्वान्देवान्नमस्कृत्य स्थिरबुद्धिः स्थिरासनः ।
प्रणवपूर्वमभ्यस्य गायत्रीमभ्यसेत्ततः ।३२
जीव ब्रह्मैक्यविषयं बुद्धः प्रणवमभ्यसेत् ।
त्रैलोक्यसृष्टिकर्तारं स्थितिकर्तारमच्युतम् ।३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संहर्तारं तथा रुद्रं स्वप्रकाशमुपास्महे ।
ज्ञानकर्मेन्द्रियाणां च मनोवृत्तीर्धियस्तथा ।३४
भोगमोक्षप्रदे धर्मे ज्ञाने च प्रेरयेत्सदा ।
इत्थंमर्थं धियाध्यायन्ब्रह्म प्राप्नोति निश्चयम् ।३५

यदि एक मास, तक सन्ध्या न की तो पुनः उपनयन करे । ईश गौरी, स्कन्द विष्णु ब्रह्मा, इन्द्र और यम इन सब देवताओं को एक ही जानकर अर्घ्य सिद्धि-हेतु तृप्ति करे और ब्रह्मार्पण कर शुद्ध आचमन करे २६-३०। तीर्थ के दक्षिण ओर अथवा मठ में, मन्त्रालय या देवालय में अथवा अपने गृह के नियत स्थान में सब देवताओं को नमस्कार कर स्थिर बुद्धि तथा स्थित आचमन से पहले ओंकार और फिर गायत्री का अभ्यास करना चाहिए ।३१-३२। जीव और ब्रह्मकी एकता देख ओंकार को जपे त्रिलोकी के रचयिता ब्रह्मा, स्थितिकर्त्ता नारायण और संहार कर्त्ता रुद्र की हम उपासना करते हैं । ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय मनकी वृत्ति और वृद्धि करे ।३३-३४। वह परमात्मा मुक्ति भुक्तिदायक धर्म में प्रवृत्ति करे । इस प्रकार अर्घ्य विधि से ध्यान करने पर अवश्य ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है ।३५।

केवलं वा जपेन्नित्यं ब्राह्मण्यस्य च पूर्तये ।
सहस्रमभ्यसेन्नित्यं प्रातर्ब्राह्मणपुंगवः ।३६
अन्येषां यथाशक्ति मध्याह्ने च शतं जपेत् ।
सायं द्विदशकं ज्ञेयं शिखाष्टकसमन्वितम् ।३७
मूलाधारं समारभ्य द्वादशां तस्थितांस्तथा ।
विद्येशब्रह्मविष्णुशिवजीवात्मपरमेश्वरान् ।३८
ब्रह्मबुद्ध्या तदैक्यं च सोऽहं भाव नया जपेत् ।
तानेव ब्रह्मरन्ध्रादौ कायादबाह्ये च भावयेत् ।३९
महत्तत्वं समारभ्य शरीरं तु सहस्रकम् ।
एकेकस्माज्जापादेकमतिक्रम्य शनैः शनैः ।४०
परस्मिन्य जपेज्जीवं जपतत्व मुदाहृतम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतद्विदशकं देहं शिखाष्टकसमन्वितम् ।४१
मन्त्राणां जप एवं हि जपमादि क्रमाद्विदुः ।
सहस्रं ब्राह्मद विद्याच्छतमैन्द्रप्रदं विदुः ।४२

अर्थ ज्ञान के अभाव वालें ब्राह्मतत्व की पूर्ति के लिए भी श्रेष्ठ ब्राह्मण को नित्य प्रातःकाल उठकर हजार जप करना चाहिए ।३६। अन्य वर्ण वाले क्षत्रिय या वैश्य को मध्याह्न में सौ बार और सन्ध्या काल में एक हजार आठ बार अथवा बीस बार जप करना चाहिए।३७। मूलाधार चक्रसे प्रारम्भ कर ब्रह्मरन्ध्र तक स्थित चक्रों में विघ्नेश, ब्रह्म, विष्णु, शिव, जीवात्मा परमेश्वर को ब्रह्म बुद्धि द्वारा एक ही जानकर सोऽहं भावसे जपे तथा उन्हीं विघ्नेश आदि का ब्रह्मरन्ध्रआदि में शरीर से बाहर ध्यान करे।३८-३९। महत्तत्व से प्रारम्भ करके प्रारब्ध के फल से उत्पन्न सहस्रों शरीरों के समूह की उपलब्धि को ब्रह्म में लगादे यही जप तत्व है । इस जप को दो हजार आठ संख्या तक जपना चाहिए ।४०-४१। मन्त्रों के जपने का प्रथम क्रम यही कहा गया है । हजार बार जपने से ब्रह्म पद की ओर सौ बार जप करने से इन्द्र पद की प्राप्ति होती है ।४२।

इतरत्वात्मरक्षार्थं ब्रह्मयोनिषु जायते ।
दिवाकरमुपस्थाय नित्यमित्थं समाचरेत् ।४३
लक्षद्वादशयुक्तस्तु पूर्ण ब्राह्मण ईरितः ।
गायत्र्या लक्षहीनस्तु वेदकार्ये योजयेत् ।४४
आसप्ततेस्तु नियमं पश्चात्प्रव्राजां चरेत् ।
प्रातर्द्वादशसाहस्रं प्रव्राजी प्रणवं जपेत् ।४५
दिने दिने त्वतिक्रांते नित्यमेवं क्रमाज्जपेत् ।
मासादौ क्रमशोऽतीते सार्धलक्षजपेन हि ।४६
अतऊर्ध्वमतिक्रांते पुनः प्रैषंसमाचरेत् ।
एवं कृत्वा दोषशांतिरन्यथा रौरवं व्रजेत् ।४७
धर्मार्थयोस्ततो यत्नं कुर्यात्कमोनचेतरः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणो मुक्तिकाम स्याद्ब्रह्मज्ञानं सदाभ्यसेत् ।४८
धर्मादर्थोऽर्थतोभोगो भोगाद्वै राग्यसंभवः ।
धर्मार्जितार्थभोगेन वैराग्यमुपजायते ।४६

यदि इससे न्यून करे तो ब्राह्मण के यहाँ जन्म होता है । सूर्य के सामने स्थित होकर नित्य प्रति इसी प्रकार करना चाहिए ।४३। बारह लाख जप करने से पूर्ण ब्राह्मणत्व को प्राप्त होता है जिसने एक लाख गायत्री मन्त्र न जपे हों, उसे वेद कार्य में लगाना उचित नहीं है ।४४। सत्तरवर्ष तक नियम पूर्वक रहे फिर संन्यास ग्रहण करले । संन्यासी को नित्य प्रातःकाल बारह हजार ओंकार का जप करना चाहिए ।४४। इस प्रकार नित्य पूर्वक नित्य प्रति जप करे । जब ऐसा करते हुए एकमास व्यतीत हो जाता है, तब उसका डेढ़ लाख जप पूर्ण होता है ।४६। इस से दोषों की शान्ति होती है । इससे अधिक संख्या में जप होने पर संन्यासी मन्त्र को ग्रहण करे । अन्यथा रौरव नरक प्राप्त होता है ।४७। संन्यासी से इतर जप धर्म, अर्थ, आदि में यत्नपूर्वक कर्म करे । मुक्ति की इच्छा वाले ब्राह्मण को सदा ब्रह्मज्ञान का अभ्यास करना चाहिए ।४८।धर्मसे अर्थका उपार्जन होताहै और उससे भोग तथा भोगसे वैराग्य की उत्पत्ति होती है । इस प्रकार धर्म से उत्पन्न भोग से वैराग्य ही होता है ।४६।

विपरीतार्थं भोगेन रोग एव प्रजायते ।
धर्मश्च द्विविधः प्रोक्तो द्रव्यदेह द्वयेन च ।५०
द्रव्यमिज्यादिरूपस्यात्तीर्थस्नादि दैहिकम् ।
धनेन धनमाप्नोति तपसा दिव्यंरूपताम् ।५१
निष्कामः शुद्धिमाप्नोति शुद्ध्या ज्ञान न संशयः ।
कृतादौ हि तपः श्लाघ्यं द्रव्यधर्मः कलौ युगे ।५२
कृते ध्याताज्ज्ञानसिद्धिस्त्रेतायां तपसा तथा ।
द्वापरे यजनाज्ज्ञानप्रतिमापूजया कलौ ।५३
यादृशं पुण्यं पापं वा तादृशं फलमेव हि ।
द्रव्यदेहांगभेदेन न्यून वृद्धिक्षयादिकम् ।५४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्याद्दुर्वृत्तितीदुःखं सुखं विद्यात्सुवृत्तितः ।
धर्मार्जनमत्तः कुर्याद्भोगमोक्षप्रसिद्धये ।५५
सकुटुंवस्य विप्रस्य चतुर्जनयुतस्य च ।
शतवर्षस्य वृत्तिस्तु दद्यात्तद्ब्रह्मलोकदम् ।५६

अर्थ के विपरीत भोग से रोग की उत्पत्ति होतीहै । धर्म दो प्रकार का कहा है-एक देह के द्वारा और दूसरा द्रव्य के द्वारा ।५०। द्रव्य के द्वारा यज्ञादि रूपधर्म और देहके द्वारा तीर्थ स्नानादि रूप धर्म होता है धन से धर्म और तप से दिव्यता प्राप्त होती है ।५१। निष्काम कर्म से शुद्धि और शुद्धि से ज्ञान मिलता है । सतयुग आदि में तप ही साध्य था परन्तु कलियुगमें तो द्रव्यही धर्म समझना चाहिए ।५२। सतयुगमें ध्यान द्वारा ही ज्ञान की सिद्धि होती थी, त्रेता में तप के द्वारा और द्वापर में यज्ञ के द्वारा परन्तु कलियुग में प्रतिमा पूजन से ही ज्ञान की उपलब्धि हो जाती है ।५३। जैसा पुण्य पाप रूप कर्म किया जाता है, वैसे ही फल की प्राप्ति होती है । द्रव्य और देहके भेदसे पुण्य-पाप की न्यूनता, अधिकता तथा समाप्ति होती है ।५४। कुवृत्ति से दुःख और सुवृत्ति से सुख की प्राप्ति होती है, इसलिए भोग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए धर्म की अर्चना करना उचित है ।५५। ब्राह्मण-कुल परिवार-सहित सौ वर्ष तक श्रेष्ठ आचार का पालन करे, इतनी जीविका उसको देनेसे ब्रह्म लोक की प्राप्ति होती है ।५६।

चान्द्रायणसहस्रं तु ब्रह्मलोकप्रदं विदुः ।
सहस्रस्य कुटुंवस्य प्रतिष्ठां क्षत्रियश्चरेत् ।५७
इन्द्रलोक प्रदंविद्यादयुतं ब्रह्मलोकम् ।
यां देवतां पुरस्कृत्य दानमाचरते नरः ।५८
तत्तल्लोकमवाप्नोति इति वेदविदो विदुः ।
अर्थहीनः सदा कुर्यात्तपसा मार्जनं तथा ।५९
तीर्थाच्च तपसा प्राप्यं सुखमक्षय्यमश्नुते ।
अर्थार्जनमथोवक्ष्ये न्यायतः सुसमाहितः ।६०
कृतात्प्रतिग्रहाच्चैव याजनाच्च विशुद्धितः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदैन्यादनतिक्लेशाद्ब्राह्मणो धनमर्जयेत् ।६१
क्षत्रियो बाहुवीर्येण कृषिगोरक्षणाद्विशः ।
न्यायार्जित्तस्य वित्तस्य दानात्सिद्धिं समश्नुते ।६२
ज्ञानसिद्ध्या मोक्षसिद्धिः सर्वेषां गुर्वनुग्रहात् ।
मोक्षात्स्वरूपसिद्धिः स्यात्परानन्दं समश्नुते ।६३
सत्सङ्गात्सर्वमेतद्वै नराणां जायते द्विजाः ।
धनधान्यादिकं सर्वं देयं वै गृहमेधिना ।६४

हजार चान्द्रायण व्रत करने से भी ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। जो क्षत्रिय सहस्र कुटुम्बकी आजीविका करे उसे इन्द्रलोक का तथा दस सहस्र की आजीविका करे तो ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है मनुष्य जिस देवता के उद्देश्य से दान करता है, उस देवता के लोक को प्राप्त होता है, ऐसा वेदज्ञों का कथन है। निर्धनों को सदा तप रूपी धन का संचय करना चाहिए ।५७-५६। जो धर्म, तीर्थ और तप के द्वारा प्राप्त होता है, उससे भी अक्षय सुख की प्राप्ति होती है तथा धन को भी अन्यायपूर्वक संग्रह करने से सावधान रहे ।६०। यज्ञ, प्रतिग्रह, स्वच्छता अदीनता तथा क्लेश रहित वृत्ति के द्वारा ही ब्राह्मण को धन का संग्रह करना चाहिए ।६१। क्षत्रिय भुज बल से, वैश्य कृषि और वाणिज्य से धन का संग्रह करे। जो दान न्याय से उपाजत होता है उससे सिद्धि प्राप्त होती है ।६२। ज्ञान की सिद्धि से मोक्ष की प्राप्ति होती है और गुरु की कृपा से मोक्ष होने पर स्वरूप की सिद्धि और उससे परमानन्द की प्राप्ति होती ।६३। हे विप्रो ! यह सभी कुछ सत्संग द्वारा प्राप्त हो सकता है। गृहस्थ को धन-धान्य आदि अनेक पदार्थ दान करना कर्त्तव्य है ।६४।

गृहीता हि गृहीतस्य दानाद्वै तपस्तथा ।
पापसंशोधनं कुर्यादन्यथा रौरवं व्रजेत् ।६५
आत्मवित्तं त्रिधाकुर्याद्ध्यात्मवृद्धिभोगतः ।
नित्यं नैमित्तकं काम्यं कर्म कुर्यातु धर्मतः ।६६
वित्तस्य वर्द्धनं कुर्याद्वृद्ध्यंशे नहि साधनः ।
हितेन मितमेध्येन भोगं भोगांशतश्चरेत् ।६७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्यर्जिते दशांशं हि दे देयं पापस्य शुद्धये ।
शेषेण कुर्याद्धर्मादि अन्यथा रौरवं व्रजेत् ।६८
अथवा पापबुद्धिः स्यात्क्षयं वा सस्य मेष्यति ।
वृद्धिवाणिज्यकेदेयष्षडंशो हि विचक्षणैः ।६९

दान ग्रहण करने वाला ग्रहण किये दान से या तप से उसके पाप का मार्जन करे अन्यथा रौरव नरक की प्राप्ति होती है ।६५। अपने धन के तीन भाग करे-एक धर्म के लिए दूसरा वृद्धि के लिए और तीसरा भोग के लिए । नित्य नैमित्तिक काम्य कर्म धर्म पूर्वक करे ।६६। साधक वृद्धि के अंश ब्याजसे धन की वृद्धि करे और किसी को पीड़ित न करे, निषिद्ध व्यापार से धन-वृद्धि न कर तथा भोगांश से स्वरूपके भोग को भोगे ।६७। कृषि द्वारा उपार्जित धन से दशम अंश को पाप की शुद्धिके लिए दान कर दे, शेष द्रव्य से धर्मादि कार्य करे, अन्यथा रौरव नरक मिलता है ।६८। पाप से धन की वृद्धि करने से खेती क्षीण होती है । बुद्धिमान को छठा अंश वाणिज्य की वृद्धि में लगाना चाहिए ।६९।

पृष्टं सर्वं सदादेयमात्मशक्त्यानुसारतः ।
जन्मांतरे ऋणी हि स्याददत्तं पृष्टवस्तुनि ।७०
परेषां च तथा दोषं न प्रशंसेद्विचक्षणः ।
विशेषेण तथा ब्रह्मञ्छुतं दृष्टं च नो वदेत् ।७१
न वदेत्सर्वजंतूनां हृदि रोषकरं बुधः ।
संध्ययोरग्निकार्यं च कुर्यादैश्वर्यसिद्धये ।७२
अशक्तस्त्वेककाले वा सूर्याग्नी च यथाविधि ।
तंडुलं धानमाज्यं वा फलं कंदं हविस्तथा ।७३
स्थालीपाकं तथाकुर्याद्यथान्यायं यथाविधि ।
प्रधानं होम मात्रं वा हव्याभावे समाचरेत् ।७४
नित्यं संधाननित्युक्तं तमजस्रं विदुर्बुधाः ।
अथवा जपमात्रं वा सूर्यवंदनमेव च ।७५
एवमात्मार्थिनः कुर्युं मारर्थी च यथाविधि ।
ब्रह्मयज्ञरता नित्यं देवपूजारतास्तथा ।७६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नि पूजापरा नित्यं गुरुपूजारतास्तथा।
ब्राह्मणानां तृप्तिकराः सर्वे स्वर्गस्य भागिनः ।७७

याचक को अपनी शक्ति के अनुसार दान करना चाहिए। कहकर न देने पर जन्मान्तर में ऋणी होना पड़ता है ।७०। बुद्धिमान मनुष्योंको दूसरे के दोष नहीं कहने चाहिए। विशेष कर सुने हुए अथवा देखे हुए दोषों का कथन भी न करे ।७१। प्राणियों के हृदय में क्रोध उत्पन्न कर देने वाली बात भी कभी न कहे तथा ऐश्वर्य की सिद्धि के लिए दोनों सन्ध्या कालों में अग्निहोत्र करना चाहिए ।७२। दोनों काल न कर सके तो विधिवत् एक समय ही सूर्य अग्नि की उपासना और तर्पण करे यदि हो हव्य न तो हवन मात्र ही करना चाहिए ।७३-७४। पण्डितों ने नित्य स्थावित अग्निको अजस्र कहा है। अथवा केवल जप करे या सूर्य की वन्दना ही करे ।७५। इस प्रकार आत्म प्राप्ति के इच्छुक, सर्वदा विधि पूर्वक ब्रह्मयज्ञ में प्रीति करने वाले तथा देवताओं का पूजन करने वाले या प्रेम-पूर्वक नित्यप्रति अग्नि और गुरुकी पूजा करने वाले तथा ब्राह्मणों को तृप्त करने वाले सत्पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होते हैं ।७६-७७।

अग्नियज्ञादि वर्णन

अग्नियज्ञं देवयज्ञं ब्रह्मयज्ञं तथैव च ।
गुरुपूजां ब्रह्मतृप्तिं क्रमेण ब्रूहि नः प्रभो ।१
अग्नौ जुहोति यद्द्रव्यमग्नियज्ञः स उच्यते ।
ब्रह्मचर्याश्रमस्थानः समिदाधानमेव हि ।२
समिदग्नौ व्रताद्यं च विशेषं यजनादिकम् ।
प्रथमा श्रमिणामेवं यावदौपासनं द्विजाः ।३
आत्मन्यारोपिताग्नीनां वनिनां यतिनां द्विजाः ।
हितं च मितमेध्यान्नं स्वकाले भोजनंहुतिः ।४
औपाशनाग्निसंधानं समारभ्य सुरक्षितम् ।
कुण्डे वाप्यर्थं भांडे वा तदजस्रं समीरितम् ।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निमात्मन्यरण्यां वा राजदैव वशाद्ध्रुवम् ।
अग्नित्यागभयादुक्तं समारोपितमुच्यते ।६
संपत्करी तथा ज्ञेया सायंमग्न्याहुतिर्द्विजाः ।
आयुष्करोति विज्ञेया प्रातः सूर्याहुतिस्तथा ।७

ऋषियों ने कहा—अग्नियज्ञ, देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, गुरुपूजन तथा ब्रह्म तृप्ति क्रमशः यह सभी आप हमारे प्रति कहिए ।१। सूतजी ने कहा—अग्निमें द्रव्यका हवन होना द्रव्य-यज्ञ है । ब्रह्मचर्यआश्रममें स्थित पुरुषों को समिधाधान पूर्वक अग्निहोत्र करना उचित है ।२। हे विप्रो ! अग्नि में समिधा का हवन भी ब्रह्मचर्य व्रत आदिमें होता है । जब तक विवाह न हो तब तक यह विशेष यज्ञ ब्रह्मचारियों को करना चाहिए ।३। विवाह होने पर दो समग अग्निहोत्र करे जिन्होंने-आत्मा में अग्नि का आरोपण किया है, ऐसे वनवासी यतियों को थोड़ा-सा पवित्र अन्न का भोजन करना ही अग्निहोत्र है ।४। उपासना, अग्नि-संधान का पालन सम्यक् प्रकार करे । उसे अग्नि को वेदी में या वर्तन में रखना चाहिए ।५। अग्नि को आत्मा में धारण करें । राज-भय या दैव-भय हो तो समिधा में धारण करे, अग्नि का त्याग भय से ही कहा है ।६। ब्राह्मणोंद्वारा सायङ्कालमें दी जाने वाली आहुति सम्पत्तिको प्राप्तकराने वाली है तथा प्रातःकाल दी हुई सूर्याहुति से आयुकी वृद्धि होती है ।७।

अग्नियज्ञो ह्ययं प्रोक्तो दिवासूर्यनिवेशनात् ।
इन्द्रान्दीन्सकलान्देवानुद्दिश्याग्नौ जुहोति यत् ।८
देवयज्ञं हितं विद्यात्सस्थालीपाकादिकान्क्रतून् ।
चौलादिकं तथा ज्ञेयं लौकिकाग्नौ प्रतिष्ठितम् ।९
ब्रह्मयज्ञं द्विजः कुर्याद्देवानां तृप्तये सकृत् ।
ब्रह्मयज्ञ इति प्रोक्तोवेदस्याऽध्ययनं भवेत् ।१०
आदौ त्रैलोक्यवृद्ध्यर्थं पुण्यपापे प्रकल्पिते ।
तयोः कर्त्रोस्ततोवारमिद्रस्य च यमस्य च ।११
भोगप्रदं मृत्युहरं लोकानां च प्रकल्पितम् ।
आदित्यादीन्स्वरूपान्सुखदुःखस्य सूचकान् ।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारेशान्कल्पयित्वादौ ज्योतिश्चक्रे प्रतिष्ठितान् ।
स्वस्ववारे तु तेषां तु पूजा स्वस्वफलप्रदा ।१३
आरोग्य संपदश्चैव व्याधीनां शांतिरेव च ।
पुष्टिरायुस्तथा भोगो मूर्तेर्हानियथाक्रमम् ।१४

दिन में सूर्य के अग्नि में प्रविष्ट होने से इसे अग्नि यज्ञ कहा है । इन्द्रादि देवताओं के लिए अग्नि में हवन किया जाता है ।८। दर्शपूर्ण मास्य, स्थालीपाक आदि सांसारिक यज्ञ देवयज्ञ अथवा गर्भाधान आदि उपासना लौंकिक अग्नि की प्रतिष्ठा है ।६। ब्राह्मणों को देवताओं की प्रीति के लिए सदा ब्रह्म-यज्ञ करना चाहिए । जिस यज्ञमें वेद-पाठ होता है । वह ब्रह्मयज्ञ है ।१०। त्रैलोक्य-वृद्धि के निमित्त ईश्वर ने प्रथम पुण्य पाप के उत्पन्न करने वाले इन्द्र और यम के वार कल्पित किये ।११। इस प्रकार सुख-दुःख की सूचना देने वाले रविवार आदि भोग प्रदायक और लोकों की मृत्यु शमन करने वाले कल्पित किए गए । रविवार के स्वामी शिव चन्द्रवार की दुर्गाः मंगल के स्कन्द बुध के विष्णु बृहस्पति के यम शुक्र के ब्रह्मा और शनिवार के इन्द्र हैं ।१२। नक्षत्र में व चक्रमें प्रतिष्ठित कर इन वारों के स्वामियों की कल्पना कर उन-उन वारों में पूजन करे तो उसके अनुसार ही फल प्राप्त होता है ।१३। आरोग्य सम्पत्ति, व्याधियों का शमन, पुष्टि, आयु, भोग तथा मृत्यु की हानि यह सब क्रमानुसार ही मनुष्य को प्राप्त होते हैं ।१४।

वारक्रमफलं प्राहुर्देवप्रीतिपुरःसरम् ।
अन्येषामपि देवानां पूजायाः फलदः शिवः ।१५
उत्तरोत्तरवैशिष्ट्यात्पूर्वाभावेत्तथोत्तरम् ।
नेत्रयोः शिरसा रोगे तथा कुष्ठस्य शांतये ।१६
आदित्यं पूजयित्वा तु ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः ।
दिनं मासं यथा वर्षंवर्षत्रयमथापि वा ।१७
प्रारब्धं प्रबलं चेत्स्यान्नश्येद्रोगजरादिकम् ।
जपाद्यमिष्टदेवस्य वारादीनां फलं विदुः ।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पापशांतिर्विशेषेण ह्यादिवारे निवेदयेत् ।
आदित्यस्यैव देवानां ब्राह्मणानां विशिष्टदम् ।१९
स्त्रीणां च तृप्तये तद्वद्देयं वस्त्रादिकं शुभम् ।
अपमृत्युहरं वंदे रुद्रादींश्चयजेद्बुधः ।२०
तिलहोमेन दानेन तिलान्नेंन च भोजयेत् ।
इत्थं यजेच्च विबुधानारोग्यदिफलं लभेत् ।२१

जिन देवताओं के जो वार हैं वे उन-उन देवताओं की प्रीति के देने वाले हैं । परन्तु देवताओं की पूजा का फल शिवजी ही देते हैं ।१५।सब में पूजन श्रेष्ठ है । नेत्र रोग, शिर तथा कुष्ठ रोग के निवारणार्थं आदित्य का पूजन कर ब्राह्मण-भोजन करावे । इस प्रकार दिवस, मास वर्ष और तीन वर्ष तक करता रहे ।१६-१७। प्रारब्ध के प्रबल होने पर ज्वरादि रोग शान्त होंगे । इष्ट देवता के लिए तप, होम, दान आदि करने से देवता वारके अनुसार फल देतेहैं ।१८। रविवार के दिन पाप-शान्ति के लिए पूजन और देवता को प्रसन्न करने वाले द्रव्य निवेदन करे । यह वार देवता व ब्राह्मणों के लिये विशेष फल देने वाला हैं ।१९ स्त्रियों की तृप्ति के निमित्त वस्त्रादि तथा अपमृत्यु का गमन करने के लिये शनिवार को रुद्रादि का यजन करे ।२०। तिलक का होम, दान या तिल मिश्रित भोजन करावे । इस प्रकार से देवताओं का यजन करने वाले को आरोग्यादि की प्राप्ति होती हैं ।२१।

देवानां नित्ययजने विशेषयजनेऽपि च ।
स्नाने दाने जपे होमे ब्राह्मणानां च तर्पणे ।२२
तिथिनक्षत्रयोगे च तत्तद्देवप्रपूजने ।
आदिवारादिवारेषु सर्वज्ञो जगदीश्वरः ।२३
तत्तद्रूपेण सर्वेषामारोग्यादिफलप्रदः ।
देशकालानुसारेण तथा पात्रानुसारतः ।२४
द्रव्यश्रद्धानुसारेण तथा लोकानुसारतः ।
तारतम्यक्रमाद्देवस्त्वारोग्यादिन्प्रयच्छति ।२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभादावशुभांते च जन्मक्षेत्रे स गृही ।
आरोग्यादि समृद्ध्यर्थमादित्यादीन्ग्रहान्यजेत् ।२६
दरिद्रस्तपसा देवान्यजेदाढ्यो धनेन हि ।
पुनश्चैवंविधं धर्मंकुरुते श्रद्धया सह ।२७
पुनश्च भोगान्विविधान्मुक्त्वा भूमौ प्रजायते ।
छायां जलाशयं ब्रह्म प्रतिष्ठां धर्मसंचयम् ।२८
सर्वं च वित्तवान्कुर्यात्सदाभोगप्रसिद्धये ।
कालाच्च पुण्यपाकेन ज्ञानसिद्धिः प्रजायते ।२६
य इमं शृणुतेऽध्यायं पठते वा नरो द्विजाः ।
श्रवणस्योपकर्ता च देवयज्ञफलं लभेत् ।३०

देवताओं का नित्य यजन, विशेष यजन में भी स्नान, दान, जप होम और ब्राह्मणों का तर्पण करने से सब वारोंके पहिले दिन ही सर्वज्ञ परमेश्वर ही उन-उन देवताओं के रूप में आरोग्य आदि देते हैं। तथा देश, काल, पात्र और द्रव्य की श्रद्धा के अनुसार एवं लोकानुसार ताप-तम्य के क्रम से सभी को भगवान् शिवजी फल देते हैं। मङ्गल कार्य के आदि अन्त में एवं जन्म नक्षत्र में गृहस्थों को आरोग्यादि की प्राप्ति के लिए आदित्यादि ग्रहोंकी शान्ति करनी चाहिए ।२२-२६। दरिद्री व्यक्तियोंको तपके द्वारा देवयजन करना चाहिए और धनिक को पूजन करना चाहिए। इस प्रकार जो मनुष्य श्रद्धा से धर्म करता है ।२७। वह स्वर्ग में अनेक सुखों को भोगकर पृथिवी पर आता है। वृक्षारोपण, सरोवर का निर्माण पाठशाला चलाना तथा धर्म-साधन ग्रन्थों का सग्रह ।२८। यह सब कर्म धनी पुरुष को भोगकी प्राप्तिके लिए सदा करने चाहिए। इस प्रकार पुण्य का परिपाक होने पर ही ज्ञान की सिद्धि होती है ।२६ इस अध्याय को जो ब्राह्मण पढ़ते श्रवण करते या सुनाते हैं वे वेद यज्ञ के फल को प्राप्त करते हैं ।३०।

देवयज्ञादि में देश काल पात्र वर्णन

देशादीन्क्रमशो ब्रूहि सूत सर्वार्थवित्तम ।
शुद्धं गृहं समफलं देवयज्ञादि-कर्मसु ।१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो दशगुणं गोष्ठ जलतीरं ततो दश ।
ततो दशगुणं बिल्वतुलसीअश्वत्थमूलकम् ।२
ततो देवालयं विद्यातीर्थतीरं ततो दश ।
ततो दशगुणं नद्यास्तीर्थं नद्यास्ततो दश ।३
सप्तगङ्गानदीतीरं तस्यादशगुणं भवेत् ।
गङ्गा गोदावरी चैव काबेरी ताम्रपर्णिका ।४
सिन्धुश्च सरयू रेवा सप्त गङ्गा प्रकीर्तिताः ।
ततोऽब्धितीरं दश च पर्वताग्रे ततो दश ।५
शुद्धआत्मनः शुद्धदिनंपुण्यं समफलं विदुः ।
तस्माद्दशगुणं ज्ञेयं रविसंक्रमणे वुधैः ।६
विषुवे तद्दशगुणमयने तद्दशस्मृतम् ।
तद्दशमृगसंक्रांतौ तच्चंद्रग्रहणे दश ।७

ऋषि बोले-हे सूतजी ! पूजा के योग्य देशकाल कहिए। आप ज्ञातां है । सूतजी ने कहा-देव यज्ञादि कर्ममें शुद्ध गृह फलदायक है । ।१। इससे दशगुणा गौओं के स्थान में उससे भी दशगुणा जल के स्थान में और उससे भी दशगुणा बेल, तुलसी और पीपल के वृक्ष नीचे हैं । उससे दशगुणा देवालय में, उससे दशगुणा तीर्थ के तट पर, उससे दश-गुणा नदी तथा उससे भी दशगुणा फल तीर्थ नदी के तट पर है ।२-३। उससे दशगुणा फल सप्त गङ्गा के किनारे होता है । गङ्गा, गोदावरी कावेरी, ताम्रपर्णी, सिधु, सरयू, रेवा आदि सप्तगंगा कही जाती हैं,उस से दशगुणा फल सागर और उससे भी दशगुणा फल पर्वताग्र में पूजन करने से होता है । शुद्धात्मा होकर पवित्र दिनमें पूजन करने से होता है ।४-६। तुला मेष की संक्रान्ति में उससे दशगुणा, अयन में उससे दश-गुणा तथा चन्द्र-ग्रहण में उससे दशगुणा फल होता है ।७।

ततश्च सूर्यग्रहणे पूर्णं कालोत्तमं विदुः ।
जगद्रूपस्य सूर्यस्य विषयोगाच्च रोगदम् ।८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतस्तद्विषशांत्यर्थं स्नानदानजपाश्चरेत् ।
विघ्नशांत्यर्थं कालत्वात्सकाल: पुण्यद: स्मृत: ।९
जन्मनक्षत्रे च व्रतांते च सूर्यरागोपमं विदु: ।
महतां सङ्गकालश्च कोट्यर्कग्रहणं विदु: ।१०
तपोनिष्ठा ज्ञाननिष्ठा योगिनो यतयस्तथा ।
पूजाया: पात्रमेते हि पापसंक्षयकारणम् ।११
चतुर्विंशति लक्षं वा गायत्र्या जपसंयुत: ।
ब्राह्मणस्तु भवेत्पात्रं सम्पूर्णफलभोगदम् ।१२
पतनात्त्रायत इति पात्रं शास्त्रे च प्रयुज्यते ।
दातुश्च पातकात्त्राणात्पात्रमित्यभिधीयते ।१३
गायकं त्रायते पाताद्गायत्रीत्युच्यते हि सा ।
यथाऽर्थहीनो लोकेऽस्मिन्परस्यार्थं न यच्छति ।१४

इससे दशगुणा फल सूर्य-ग्रहण में होता है, यह श्रेष्ठ समय है। विश्वरूप सूर्य के अन्धकारामय हो जानेसे यह समय रोग प्रदायक हैं।८ इसलिए उसका विष शान्त करने के लिए स्नान, दान करे। विष को शान्त करने वाला होने से इस समय को पुण्यप्रद कहा है।९। जन्म नक्षत्र और व्रत के अन्त में दान का फल सूर्यग्रहण के समान हैं और संगतिका फल करोड़ चन्द्रग्रहणोंके तुल्य समझना चाहिए ।१०।तपोनिष्ठ एवं ज्ञानमें निष्ठावाले योगी और यती पूजनीय है इनका संस्कार करने से पापोंका नाश होताहै ।११। अथवा जिस ब्राह्मणने २४ लाख गायत्री का जप कियाहो वह ब्राह्मणउसका उपयुक्त पात्र होने से पूर्ण फलप्रदान करने वाला है ।१२। शास्त्र के पतन से रक्षा करने वाले को पात्र कहा है। दान दाता को पापों से रक्षा करने वाला होनेसे वह पात्र है ।१३। गायत्री इसलिए कही गयी है कि वह गान करने वाले को उसी प्रकार रक्षा करती है जिस प्रकार धनहीन किसी को धन नहीं देता ।१४।

अथवानिहलोके तु परस्यार्थं प्रयच्छति ।
स्वयं शुद्धो हि पूतात्मा नरान्सत्रातुमर्हति ।१५
गायत्रीजपशुद्धो हि शुद्धब्राह्मण उच्यते ।
तस्माद्दाने जपे हांमे पूजयां सर्वकर्मणि ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानं कर्तुं तथा त्रातुं पात्रं तु ब्राह्मणोऽर्हति ।
अन्नस्य क्षुधितं पात्रं नारीनरमयात्मकम् ।१७

तथा जो धनवान है वह धन देनेमें समर्थ है । इसीप्रकार जो स्वयं पवित्र है, वही अपवित्रता से दूसरे की रक्षा कर सकता है ।१५।गायत्री के जपसे शुद्ध हुआ ब्राह्मण ही पवित्रहै, इसलिये दान, जप, हवन पूजन आदि सभी कार्यों में ।१६। दान लेने और रक्षा करने का पात्र ब्राह्मण ही है तथा अन्न दान का पात्र जो भूखा हो, वह स्त्री या पुरुष कोई भीं हो, वही है ।१७।

प्रणव पंचाक्षर मन्त्र का माहात्म्य

प्रो हि प्रकृतिजातस्य संसारस्य महोदधेः ।
नवं नावांतरमिति प्रणवं वै विदुर्बुधाः ।१
प्रः प्रपञ्चो न नास्ति वो युष्माकं प्रणवं विदुः ।
प्रकर्षेणनयेद्यस्मान्मोक्षं वा प्रणवं विदुः ।२
स्वजापकानां योगिना स्वमन्त्रपूजकस्य च ।
सर्वकर्मक्षयं कृत्वा दिव्यज्ञानं तु नूतनम् ।३
त्वमेव मायारहितं नूतनं परिचक्षते ।
प्रकर्षेण महात्मानं नवं शुद्धस्वरूपकम् ।४
नूतनं वै करोतीति प्रणवं तं विदुर्बुधाः ।
प्रणवं द्विविधं प्रोक्तं सूक्ष्मस्थूलविभेदतः ।५
सूक्ष्ममेकाक्षरं विद्यात्स्थूलं पञ्चाक्षरं विदुः ।
सूक्ष्ममव्यक्तपञ्चार्णं सुव्यक्ताणे तथेतरान् ।६
जीवन्मुक्तस्य सूक्ष्मं हि सर्वसारं हि तस्य हि ।
मन्त्रेणार्थानुसंधानं स्वदेहविलयावधि ।७

सूतजी बोले–प्रणव का अर्थ कहता हूँ । प्रकृति द्वारा प्रकट इस संसार से तारने के लिये नौका रूप होने के कारण वह प्रणव है ।१। 'प्र' से प्रपञ्च 'न' से नहीं और 'व' से तुम में अर्थात् प्रात्मा में प्रपञ्च नहीं है, यह अर्थ समझो । अथवा प्रकृष्टता से जप करने वाले को मोक्ष दाता होने से प्रणव कहा गया है ।२। अपने जप करने वाले आपको

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा मन्त्र पूजकों के कर्मों को क्षीण करके दिव्य ज्ञान देने वाला होनेसे प्रणव कहा गया ।३। माया रहित होने से प्रणव नूतन भी कहलाता हैं। प्रकृष्टतासे यह महात्मा को नवीन स्वरूप वाला बना देता है ।४। तथा नवीन कर देने वाला होने से पण्डित-जन इसे प्रणव कपव कहते हैं। इस के स्थूल एवं सूक्ष्म भेदवाले दो प्रकार कहे गये हैं ।५। एकाक्षर प्रणव सूक्ष्म और पञ्चाक्षर स्थूल। सूक्ष्म-स्वरूप अव्यक्त और पञ्चाक्षर वाला व्यक्त माना है ।६। जीवन्मुक्त के लिए सबका सार सूक्ष्म स्वरूप ही है यही उसके लिए हितकारी है। मन्त्र के अनुसन्धान और देहान्त में देह में लीन करना सूक्ष्म उपासना है ।७।

षट्त्रिंशत्कोटिजापी तु निश्चयं योगमाप्नुयात् ।
सूक्ष्मं च द्विविध ज्ञेयं ह्रस्वदीर्घविभेदतः ।८
अकारश्च उकारश्च मकारश्च ततः परम् ।
बिंदुनादयुतं तद्धि शब्दकालकलान्वितम् ।९
दीर्घप्रणवमेवं हि योगिनामेवहृद्गतम् ।
मकारं तं त्रितत्वं हि ह्रस्वप्रणव उच्यते ।१०
शिवः शक्तिस्तयोरैक्यं मकारं तु त्रिकात्मकम् ।
ह्रस्वमेवं हि जाप्यस्स्यात्सर्वपापक्षयैषिणाम् ।११
भवायुकनकार्णाद्याः शब्दाद्याश्च तथादश ।
आशान्वये दशपुनः प्रवृत्ता इति कथ्यते ।१२
ह्रस्वमेव प्रवृत्तानां निवृत्तानां तु दीर्घकम् ।
व्याहृत्यादौ च मन्त्रादौ कामं शब्दकलायुतम् ।१३
वेदादौ च प्रयोज्यंस्याद्वंदनें संध्ययोरपि ।
नवकोटिकाञ्जप्त्वा च संशुद्धःपुरुषो भवेत् ।१४

छत्तीस कोटि मन्त्र जप वाला पुरुष योगी बन जाता है । सूक्ष्म के भी दो भेद कहे हैं ह्रस्व और दीर्घ ।८। अकार, उकार, मकार तथा बिन्दु नाद सहित, जिसमें अर्द्ध चन्द्र बिन्दु होती है, वर्ण और मात्रा नहीं होते तथा शब्द, काल और कला से युक्त होता है ।९। 'अउम्' केवल इन तीन अक्षरों को दीर्घ प्रणव कहते हैं । यह योगियों के हृदयमें बसता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तथा 'अउम्' इन अक्षरों को ह्रस्व प्रणव कहा गया है।१०। शिव और शक्ति का एकाकार होनेसे 'मकार' तीनों तत्वों का स्वरूप है। जो मनुष्य सब पापों को दूर करने की कामना करते हैं उन्हें ह्रस्व प्रणव का जप करना चाहिए।११। पृथिवी, वायु, तेज, जल, आकाश और शब्द आदि दश दिशाओं का सम्बन्ध होने से दश पुरुष प्रवृत्ति मार्ग में प्रवृत्त कहे जाते हैं। शब्दादि विषयों से युक्त जीव संसार चक्रमें पड़े रहते हैं और इससे भिन्न निवृत्त कहे जाते हैं।१२। जो संसारमें प्रवृत्त है उनको ह्रस्व प्रणव का जप तथा निवृत्त की कामना वालों को दीर्घ प्रणव का जप करना चाहिए।१३। वेद के प्रारम्भमें ओंकार का ही प्रथम प्रयोग करे दोनों सन्ध्या कालों की वन्दना में भी ओंकार का प्रयोग कहा है। नौ करोड़ जप से पुरुष शुद्ध हो जाता है।१४।

पुनश्च वनकोट्या तु पृथिवीजयमाप्नुयात्।
पुनश्च नवकोट्या तु जलस्य जयमवाप्नुयात्।१५
पुनश्च नवकोट्या तु तेजसां जयमवाप्नुयात्।
पुनश्च नवकोट्या तु वायो जयमवाप्नुयात्।
आकाशजयमाप्नोति नवकोटिजपेन वै।१६
गन्धादीनां क्रमेणैव नवकोटिजपेन वैं।
अहंकारस्य च पुनर्नवकोटिजपेन वै।१७
सहस्रमन्त्रजप्तेन नित्यशुद्धो भवेत्पुमान्।
ततः परं स्वसिद्ध्यर्थं जपो भवति हि द्विजाः।१८
एवमष्टोत्तरशतकोटिजप्तेन वै पुनः।
प्रणवेन प्रबुद्धस्तु शुद्धयोगमवाप्नुयात्।१९
शुद्धयोगेन संयुक्तो जीवन्मुक्तो न संशयः।
सदा जपन्सदा ध्यायञ्छिवं प्रणवरूपिणम्।२०
समाधिस्थो महायोगी शिवएव न संशयः।
ऋषिच्छन्दोदिवतादिन्यस्य देहे पुनर्जपेत्।२१

तत्पश्चात् नौ करोड़ प्रणव का पुनः जप करने से पृथिवीपर विजय प्राप्त होती है उसके पश्चात् नौ करोड़ और जप करनेसे जल पर अधि-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार होता है ।१५। उसके उपरान्त नौ करोड़ जप से तेज और पुनः नौ करोड़ जप से वायु को जीता जाता है। फिर नौ करोड़ जप करने से आकाश मण्डल पर विजय होती है ।१६। फिर क्रम पूर्वक नौ करोड़ प्रणव-जप करने से गन्धादि पर तथा अहङ्कार पर जीत होती है ।१७। नित्यप्रति एक हजार जप करने से मनुष्य शुद्ध रहता है। हे विप्रो ! आत्म-ज्ञान की सिद्धि के लिए भी प्रणव का जप किया जाता है ।१८। इस प्रकार एक सौ साठ करोड़ जप करने से मनुष्य ओंकार से प्रबुद्ध हो जाता है और उसे शुद्ध योग की प्राप्ति होती है ।१९। शुद्ध योग की प्राप्ति होने पर जीवन्मुक्त हो जाता है इसमें सशय नहीं है। प्रणव-रूप शङ्कर का सदा जप तथा ध्यान करना चाहिए ।२०। समाधि-स्थित होकर महा शिव स्वरूप हो जाता है इसमें संशय नहीं । ऋषि छन्द देवता आदि का न्यास करके ही जप का आरम्भ करे ।२१।

प्रणवं मातृकायुक्तं देहेन्यस्य ऋषिर्भवेत् ।
दशमातृषडध्वादि सर्वन्यासफलं भवेत् ।२२
प्रवृत्तानां च मिश्राणां स्थूलप्रणवमिष्यते ।
क्रियातपो जपैयुक्तास्त्रिविधाः शिवयोगिनः ।२३
धनादिविभवैश्चैव कराद्यैर्गैर्नमादिभिः ।
क्रियया पूजया युक्तः क्रियायोगिति कथ्यते ।२४
पूजनायुक्तश्च मितभुग्वाह्ये द्रियजयान्वितः ।
परद्रोहादिरहितस्तपोयोगीति कथ्यते ।२५
एतैयुक्तः सदाशुद्धः सर्वकामादिवर्जितः ।
सदा जपपरः शांतो जपयोगीति तं विदुः ।२६
जपयोगमथो वक्ष्ये गदतः श्रृणुतद्विजाः ।
तपः क्रतुर्जपः प्रोक्तो यज्जपन्परिमार्जते ।२७
शिवनाम नमः पूर्वं चतुर्थ्यंतपञ्चतत्वकम् ।
स्थूलप्रणवरूपं हि शिवपञ्चाक्षरं द्विजाः ।२८

'अइउ' अक्षर एवं मात्रा प्रणवका अङ्गन्यास करने पर ऋषि होता है, 'अइउ' आदि दश मात्रा और छै ऊर्ध्व मार्ग आदि स सम्पूर्ण न्यास

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का फल होता है ।२२। संसार में प्रवृत्त या मिश्रित दोनों को ही स्थूल प्रणव का करे । क्रिया तप और जप करने वाले शिव के योगी तीन प्रकार कहे हैं ।२३। धनादि ऐश्वर्य और कर आदि अङ्गों के द्वारा सेवा तथा नमस्कार आदि क्रियाओं से युक्त पूजन करने वाले क्रिया योगी कहे जाते हैं ।२४। पूजायुक्त भोजन वाले तथा बाह्य इन्द्रियों पर विजय प्राप्तकर लेने वाले तथा द्रोह आदि विकारों से परे रहने वाले तपयोगी कहे गये हैं ।२५। उपरोक्त लक्षणों से युक्त, सर्वदा शुद्ध, कामनाओं से रहे निरन्तर जपशील तथा शान्त चित्त वालों को जप-योगी कहा जाता है ।२६। हे विप्रो ! अब जप-योग के लक्षण सुनो--तप करने वालों के लिए जप करने का विधान है । उस जप के कारण उसके पाप क्षीणहो जाते हैं ।२७। 'नमः शिवाय' इस चतुर्थान्त पद वाले पञ्चमत्वात्मक मन्त्र का जप करना चाहिए । स्थूल प्रणव स्वरूप ही शिवजीका पंचाक्षर रूप कहा गया है ।२८।

पञ्चाक्षर जपेनैव सर्वसिद्धि लभेन्नरः ।
प्रणवेनादिसंयुक्तं सदा पञ्चाक्षरं जपेत् ।२९
गुरूपदेशं सङ्गम्य सुखवासे सुभूतले ।
पूर्वपक्षे समारभ्य कृष्णभूतावधि द्विजा ।३०
माघं भाद्रं विशिष्टं तु सर्वकालोत्तमोत्तमम् ।
एकवारं मिताशी तु वाग्यतो नियतेन्द्रियः ।३१
स्वस्यराजपितॄणां च शुश्रूषणं च नित्यशः ।
सहस्रजपमात्रेण भवेच्छुद्धोऽन्यथा ऋणी ।३२
पञ्चाक्षरं पञ्चलक्षं जपेच्छिवमनुस्मरन् ।
पद्मासनस्थं शिवदं गंगाचन्द्रकलान्वितम् ।३३
वामोरुस्थितं शक्त्या च विराजं तं महागणैः ।
मृगटंकधरं देवं वरदाभयपाणिकम् ।३४
सदानुग्रहकर्त्तारं सदाशिवमनुस्मरन् ।
संपूज्य मनसा पूर्वं हृदि वा सूर्यमंडले ।३५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चाक्षर जप से सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है इसके आदि गुरु से आदेश लेकर उत्तम वस्त्र धारण कर पृथिवी में बैठकर शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रारम्भ कर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तक जप करना चाहिए ।२९-३०। हे विप्रो ! माघ और भादों यह दो महीने इसके लिए श्रेष्ठ है। एक बार भोजन करे, जितेन्द्रिय रहे और मौन का अवलम्बन करे ।३१। अपने पालनकर्त्ता और पितरों की नित्यप्रति सुश्रूषा करे। एक हजार जप करने से शुद्धि होती है अन्यथा उऋण नहीं हो पाता। ।३२।शिवजी के स्मरण पूर्वक पाँचलाख पञ्चाक्षर मन्त्र जपना चाहिए। पद्मासन पर स्थित तथा कल्याण दायिनी गङ्गा और चन्द्रकला से युक्त हो ।३३। वाम उरु पर स्थित, शक्ति और गुणोंसे युक्त मृगावचर्म धारण किये, देवताओं को वर देने में समर्थ तथा अभय दान देने, वाले वरद-हस्तसे संयुक्त ।३४। सदैव अनुग्रह करने वाले सदाशिव का स्मरणकरे। प्रथम शिवजी का मानसिक पूजन हृदय अथवा सूर्यमण्डल में करना चाहिए ।३५।

जपेत्पंचाक्षरीं विद्यां प्राङ्मुखः शुद्धकर्मकृत् ।
प्रातः कृष्णचतुर्दश्यां नित्यकर्म समाप्य च ।३६
मनोरमे शुचौ देशे नियतः शुद्धमानसः ।
पञ्चाक्षरस्य मन्त्रस्य सहस्रं द्वादशं जपेत् ।३७
मुखान्तं च स्वसूत्रेण कृत्वा होमं समारभेत् ।
दशैकं वा शतैकं वा सहस्रैकमथापि वा ।३८
कापिलेन घृतेनैव जुहुयात्स्वयमेव हि ।
कारयेच्छिवभक्त्यैर्वाप्यष्टोत्तरशतं बुधः ।३९
पुरश्चरणमेवं तु कृत्वा मन्त्री भवेन्नरः ।
पुनश्च पंचलक्षेण सर्वपापक्षयोभवेत् ।४०
पुनश्च पंचलक्षेण सारूपैश्वर्यमाप्नुयात् ।
आहृत्य शतलक्षेण साक्षाद्ब्रह्म समो भवेत् ।४१

पूर्व दिशा की ओर मुख करके शुद्ध कर्म की इच्छा से पञ्चाक्षरी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या का जप करना चाहिए। कृष्णपक्ष की चतुर्दशीके प्रातःकाल नित्ये कर्म समाप्त करे।३६। फिर मनोरम पवित्र देश में नियमपूर्वक शुद्धमन करके पञ्चाक्षर मन्त्र का बारह हजारकी संख्यामें जप करना चाहिए। ।३७। अग्निमुख पर्यन्त अपने सूत्रों के अनुसार हवन करे तथा दश या एक सौ अथवा एक हजार आहुति अग्नि में स्वयं दे। आहुति के लिए घृत कपिला गऊ का लेना चाहिए अथवा शिवभक्तों से एक सौ आठ आहुति दिलवानी चाहिए।३८-३९। पुरश्चरण करके मनुष्य को मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध होने पर पाँच लाख जप करने से सभी पाप क्षीण हो जाते हैं।४०। फिर पाँच लाख जप करने से सारूप्य का ऐश्वर्य प्राप्त होता है तथा एक करोड़ मन्त्र जपने से मनुष्य साक्षात् ब्रह्म के समान हो जाता है।४१

तस्य संदर्शनं साध्यं कर्मध्यानादिभिः क्रमात्।
नित्यादिकर्म यजनाच्छिवकर्ममतिर्भवेत् ।४२
क्रियादिशिवकर्मभ्यः शिवज्ञानं प्रसाधयेत्।
तद्दर्शनगताः सर्वे मुक्ता एव न संशयः।४३
मुक्तिरात्मस्वरूपेण स्वात्मारामत्वमेव हि।
क्रियातपोजपज्ञानध्यानधर्मेषु सुस्थितः।४४
शिवस्य दर्शनं लब्ध्वा स्वात्मारामत्वमेव हि।
यथारविः स्वकिरणादशुद्धिमपनेष्यति।४५
कृपाविचक्षणः शंभुरज्ञानमपनेष्यति।
अज्ञानविनिवृत्तौ तु शिवज्ञानं प्रवर्तते।४६
शिवज्ञानात्स्वरूपमात्मारामत्वमेष्यति।
आत्मारामत्वसंसिद्धौ कृतकृत्योभवेन्नरः।४७
पुनश्च शतलक्षेण ब्रह्मणः पदमाप्नुयात्।
पुनश्च शतलक्षेण विष्णोः पदमवाप्नुयात्।४८
पुनश्च शतलक्षेण रुद्रस्य पदमाप्नुयात्।
पुनश्च शतलक्षेण ऐश्वर्यपदमाप्नुयात्।४९

परमेश्वर का दर्शन कर्म और ध्यान आदि क्रमपूर्वक होता है नित्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म के साथ यजन करने से शङ्कर के कर्ममें प्रीति होती है ।४२। क्रिया आदि शिव-कर्मों के द्वारा शिव के ज्ञान की सिद्धि करे। उनके दर्शन करते ही सबको मोक्ष की प्राप्ति होती है ।४३। आत्म स्वरूप के अतिशय आनन्द को ही मोक्ष कहते हैं। क्रिया, तप, ज्ञान, ध्यान तथा धर्मों में उसकी स्थिति कही है ।४४। शिवजी के दर्शन मात्रसे स्वात्मारामत्व की प्राप्ति उसी प्रकार हो जाती है, जैसे सूर्य अपनी रश्मियों के द्वारा अपवित्रता को नष्ट कर देते हैं ।४५। उस प्रकार कृपा करने में विलक्षण भगवान शङ्कर अज्ञान का क्षय करते हैं। अज्ञान नष्ट होने पर ही शिव ज्ञान की प्राप्ति सम्भव है ।४६। शिवज्ञान की प्राप्ति से आत्म-स्वरूप की प्राप्ति और आत्मस्वरूप की प्राप्ति होते ही मनुष्य सब प्रकार कृतकृत्य हो जाता है ।४७। सौ लाख मन्त्र-जपने से ब्रह्मपद और पुनः सौ लाख जपने से विष्णुपद की प्राप्ति हो जाती है ।४८। फिर सौ लाख जप करने से रुद्रपद और इसके पश्चात् सौ लाख पुन: जप करने से ऐश्वर्य-पद की प्राप्ति होती है ।४९।

पुनश्च दशकोट्या हि कारणब्रह्मण: पदम् ।
पुनश्च दशकोट्या हि तत्पदैश्वर्यमाप्नुयात् ।५०
एवं क्रमण विष्णुपादे: पदं लब्ध्वा महौजस: ।
क्रमेण तत्पदैश्वर्यं लब्ध्वा चैव महात्मन: ।५१
शतकोटि मनुं जप्त्वा पञ्चोत्तरमतंद्रित: ।
शिवलोकमवाप्नोति पञ्चमावरणाद्बहि: ।५२
गुरूपदेशाज्जाप्यं वै ब्राह्मणानां नमोऽन्तकम् ।
पञ्चाक्षरं पञ्चलक्षमायुष्यं प्रजपेद्विधि: ।५३
स्त्रीत्वापनयनार्थंतु पञ्चलक्षं जपेत्पुन: ।
मन्त्रेण पुरुषो भूत्वा क्रमान्मुक्तो भवेद्बुध: ।५४
क्षत्रिय: पञ्चलक्षेण क्षत्रत्वमपनेष्यति ।
पुनश्च पञ्चलक्षेण क्षत्रियो ब्राह्मणो भवेत् ।५५
मन्त्रसिद्धिर्जपाच्चैव क्रमान्मुक्त भवेन्नर: ।
वैश्यस्तु पञ्चलक्षेण वैश्यत्वमपनेष्यति ।५६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दश करोड़ जप के कारण ब्रह्म की प्राप्ति होती है। तदुपरान्त दश करोड़ पुनः जप करने से तत्पद ऐश्वर्य की उपलब्धि हो जाती है।५०। इस प्रकार क्रम पूर्वक विष्णु आदि के पद की प्राप्ति होने के बाद क्रम पूर्वक ही उन महात्मा के ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।५१। फिर जितेन्द्रिय रहते हुए ही एक सौ पाँच करोड़ जप करने पर पाँच आवरण से बाहर शिवलोक की प्राप्ति हो जाती है।५२। ब्राह्मण गुरु के आदेश से पाँच लाख जप करे। मन्त्र से अन्तमें नमः लगावे। इस प्रकार करने से मनुष्य की आयु वृद्धि होती है।५३। स्त्री इसके पाँच लाख जप करनेसे ही पुरुष रूप को प्राप्त होकर क्रम से मोक्ष को प्राप्त होती हैं। उसका स्त्री-भाव मिट जाता है।५४। पाँच लाख मन्त्र जपने से क्षत्रिय को ब्राह्मणत्व की प्राप्ति होती हैं।५५। पुनः जप करने से मन्त्र की सिद्धि होकर मोक्ष की क्रमसे प्राप्ति होती है। पाँच लाख जप करने से वैश्य, वैश्यत्व से मुक्त हो जाता है।५६।

पुनश्च पञ्चयक्षेण मन्त्र क्षत्रिय उच्यते
पुनश्च पञ्चलक्षेण क्षत्रत्वमपनेष्यति।५७
पुनश्च पंचलक्षेण मन्त्र ब्राह्मण उच्यते।
शूद्रश्चैवं नमोऽन्तेन पंचविंशति लक्षतः।५८
मन्त्रविप्रत्वमापद्य पश्चाच्छुद्धोभवेद्विजः।
नारीवाथ नरोवाथ ब्राह्मणो वान्यएव वा।५९
पूजया शिवभक्तस्य शिवः प्रीतितरो भवेत्।
शिवस्य शिवभक्तस्य भेदोनास्ति शिवो हि सः।६०
शिवस्वरूपमन्त्रस्य धारणाच्छिव एव हि।
शिवभक्तशरीरे हि शिवे तत्परमो भवेत्।६१
शिवभक्ताः क्रियाः सर्वा वेदसर्वक्रिया विदः।
यावद्यांतच्छिवमन्त्रं येन जप्यं भवेत्क्रमात्।६२
तावद् वै शिवसान्निध्यं तस्मिन्देहे न संशयः।
देवीलिंगं भवेद्रूपं शिवभक्तस्त्रियास्तथा।६३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथक हैं उसे पवित्र समझो ।१२। लिंग मूल में लिंग रूपी अविनाशी महादेव का पूजन जो पुण्यात्मा पुरुष करता है उसे ध्रुव कल्याण की प्राप्ति होती है ।१३। जो शिवजी पर बिल्वमूल में जल चढ़ाता है, उसे सब तीर्थों में स्नान का फल एवं पवित्ररूपता मिलती है ।१४।

एतस्य बिल्वमूलस्यालवालमनुत्तमम् ।
जलाकुलं महादेवो दृष्टवा तुष्टो भवत्यलम् ॥१५
पूजयेद्बिल्वमूलं यो गन्धपुष्पादिभिर्नरः ।
शिवलोकमवाप्नोति संततिर्वर्द्धते सुखम् ॥१६
बिल्वमूले दीपमालां यः कल्पयति सादरम् ।
स तत्वज्ञानसम्पन्नो महेशांतर्गतो भवेत् ॥१७
बिल्वशाखां समादाय हस्तेन नवपल्लवम् ।
गृहीत्वा पूजयेद्बिल्वं स च पापैः प्रमुच्यते ॥१८
बिल्वमूले शिवरतं भोजयेद्यस्तु भक्तितः ।
एकं वा कोटिगुणितं तस्य पुण्यं प्रजायते ॥१९

इस बिल्वमूल के सब ओर जल से परिपूर्ण आलबाल को देखकर भगवान शंकर प्रसन्न हो जाते हैं ।१५। जो भक्त बिल्वमूल में गन्ध पुष्पादि के द्वारा पूजन करता है. उसे शिवलोक की प्राप्ति होती है तथा सन्तान और सुख बढ़ता है ।१६। जो मनुष्य बिल्वमूल में आदर पूर्वक दीपमाला की कल्पना करता है वह तत्वज्ञान से परिपूर्ण हो शिवजी के अन्तर्गत होता है ।१७। बिल्व की शाखा को लेकर उससे नवीन पत्र ग्रहण कर पूजन करता है, वह सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है ।१८। जो शिव भक्त को बिल्वमूल में भक्तिपूर्वक भोजन कराता है, उसे एक व्यक्ति को भोजन कराने में ही करोड़ को भोजन कराने का फल मिलता है ।१९।

॥ शिवनाम माहात्म्य ॥

सूत सूतमहाभाग व्यास शिष्य नमोऽस्तु ते ।
तदेव व्यासतो ब्रूहि भस्ममाहात्म्यमुत्तमम् ॥२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा रुद्राक्षमाहात्म्यं नाममाहात्म्यमुत्तमम् ।
त्रितयं ब्रूहि सुप्रीत्या ममानन्दय चेतसम् ।।२
साधु पृष्टं भवद्भिश्च लोकानां हितकारकम् ।
भवतो वे महाधन्याः पवित्राः कुलभूषणाः ।।३
येषां चैवः साक्षाद्दैवतं परमं शुभम् ।
सदाशिवकथा लोके वल्लभा भवतां सदा ।।४
ते धन्याश्च कृतार्थश्च सफलं देहधारणम् ।
उद्धृ तञ्च कुलतेषां ये शिवं समुपासते ।।५
मुखे यस्य शिवनामं सदाशिवशिवेति च ।
पापानि न स्पृशत्येव खदिरां गारकं यथा ।।६
श्री शिवाय नमस्तुभ्यं मुखं व्याहरते यदा ।
तन्मुखं पावनं तीर्थं सर्वपापविनाशनम् ।।७

ऋषियों ने कहा—हे व्यास–शिष्य सूतजी ! आपको नमस्कार है । आप हमारे प्रति भस्म का माहात्म्य कहिए ।१। रुद्राक्ष महात्म्य भी कहिए। यह तीनों वार्तायें हमारे मन की प्रसन्नता हेतु कहने की कृपा कीजिए आपने लोक हितकारक अच्छी बात पूछी है । आप धन्य है तथा पवित्र कुल के भूषण हैं ।२-३। जिसके लिए विश्व में शिवजी ही परम-देव है उसकी सदैव ही शिव कथा अत्यन्त प्रिय लगती है ।४। वे भक्त धन्य एवं कृतार्थ है उनका देह धारण करना फलयुक्त है जिन्होंने शिवजी की उपासना की, उन्होंने अपने कुल का उद्धार कर दिया ।५। जिसके मुख में सदैव 'शिव' नाम रहता है उसे पाप उसी प्रकार स्पर्श नहीं करते जिस प्रकार खदिर अंगार को स्पर्श नहीं कर सकता ।६। भगवान् शंकर को नमस्कार है जो मनुष्य इस प्रकार कहता है, उसका मुख सब पापों के नष्ट करने वाला है ।७।

तन्मुखश्च तथा यो वै पश्यति प्रीतिमान्नरः ।
तीर्थजन्यं फलं तस्य भवतीति सुनिश्चितम् ।।८
यत्र त्रयं सदा तिष्ठेदेतच्छुभतरं द्विजाः ।
तस्यदर्शनमात्रेण वेणीस्नानफलं लभेत् ।।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवनामविभूतिश्च तथा रुद्राक्ष एव च ।
एतत्त्रयं महापुण्यं त्रिवेणी-सदृशं स्मृतम् ॥१०
एतस्त्रयं शरीरे च यस्य तिष्ठति नित्यशः ।
तस्यैव दर्शनं लोके दुर्लभं पापहारकम् ॥११
तद्दर्शनं यथा वेणी नोभयोरंतरंमानक् ।
एवं यो न विजानाति स पापिष्ठो न संशयः ॥१२
विभूतिर्यस्य नो भाले नांगेरुद्राक्षधारणम् ।
नास्य शिवमयी वाणी त त्यजेदधर्मं यथा ॥१३
शैवं नाम यथा गङ्गा विभूतिर्यमुना मता ।
रुद्राक्षविधिजा प्रोक्ता सर्वपापविनाशनी ॥१४

जो प्रतियुक्त मनुष्य उसके मुख का दर्शन करे उसको तीर्थ के फल की प्राप्ति होती हैं ।८। विप्रो ! यह मंगलमय प्राणी जहाँ स्थित होता है, उस स्थान के दर्शन मात्र से ही त्रिवेणी के स्नान का फल उपलब्ध होता है ।९। भगवान शिव का नाम स्मरण, विभूति लगाना एवं रुद्राक्ष धारण करना, अत्यन्त पावन त्रिवेणी फल के समान है ।१०। इन तीनों को नित्य ही देह में स्थित देखने वाले उस पाप नाशक महात्मा का दर्शन लोक में दुर्लभ है ।११। उसका दर्शन त्रिवेणी के समान है । इस प्रकार न मानने वाला व्यक्ति पापाचारी समझना चाहिए ।१२। जिस मनुष्य के मस्तक पर विभूति नहीं, शरीर में रुद्राक्ष नहीं तथा मुख में भगवान शिव से युक्त वाणी नहीं उसे अधर्म के समान त्याग देना चाहिए ।१३। शिवजी का नाम गंगा, यमुना, विभूति और रुद्राक्ष यह सब पाप का नाश करने वाली सरस्वती कही गयी है ।१४।

शरीरे च त्रयं यस्य तत्फल चैकतः स्थिमम् ।
एकतो वेणिकायाश्च स्नानजं तुफलंबुधैः ॥१५
तदेवं तुलितं पूर्वं ब्रह्मणा हितकारिणा ।
समानं चैव तज्जातं तस्माद्धार्यं सदा बुधैः ॥१६
तद्दिनं हि समासुभ्य ब्रह्मविष्णवादिभिः सुरैः ।
धार्यंते त्रितयं तच्च दर्शनात्पापहारकम् ॥१७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईदृशं फलं प्रोक्तं नामादि त्रितयोद्भवम् ।
तन्माहात्म्यं विशेषेण वस्तुमर्हसि सुव्रत ॥१८
ऋषयः हि महाप्राज्ञाः मच्छैवा ज्ञानिनां वनाः ।
तन्माहात्म्यं हि सद्भक्त्या श्रृणुतादरतो द्विजाः ॥१९
सुगूढमपि शास्त्रेषु पुराणेषु श्रुतिष्वपि ।
भवत्स्नेहान्मया विप्राः प्रकाशः क्रियतेऽधुना ॥२०
कस्तत्त्रितयमाहात्म्यं संजानाति द्विजोत्तमाः ।
महेश्वरं विना सर्वे ब्रह्माण्डे सदसत्परम् ॥२१

जिस मनुष्य के देह में तीनों स्थित हैं उसका फल भी इसमें स्थित है । त्रिवेणी के स्नान के समान ज्ञानियों ने इसका फल बताया है ।१५। संसार के हितार्थ ब्रह्माजी ने इसे तोला था उस समय यह बराबर ही बैठा । इसलिए विद्वानों को सदा ही विभूति धारण करनी चाहिए ।१६। उसी दिन से ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं ने इन तीनों को धारण करने का नियम बनाया है । यह दर्शन मात्र से पाप नाशिनी है ।१७। ऋषियों ने पूछा जब तीनों के नाम या ऐसा फल कहा गया है तो आप कृपा करके उनका माहात्म्य हमारे प्रति विशेष रूप से कहें ।१८। सूतजी ने कहा—हे ऋषियों ! तुम ज्ञानियों में श्रेष्ठ महा पण्डित एवं शिवजी के भक्त हो, अतः आदर सहित इनका माहात्म्य सुनो ।१९। यह शास्त्र पुराण और श्रुतियों में भी गूढ़ है, ऋषियों तुम्हारे स्नेह के कारण उसे मैं अब प्रकट कर रहा हूँ ।२०। हे विप्रो ! इन तीनों का माहात्म्य पूर्ण रूप से कौन जान सकता है ? उसे इस ब्रह्माण्ड में सत् और असत् से परे शिवजी ही जानते हैं ।२१।

वच्म्यहं नाममाहात्म्यं यथाशक्ति समासतः ।
श्रृणुत प्रीतियो विप्राः सर्वपापहरं परम् ॥२२
शिवेति नामदावाग्नेर्महापातकपर्वताः ।
भस्मीभवत्यनायासात्सत्यं सत्यं न संशयः ।२३।
पापमूलानि दुःखानि विविधान्यापि शौनक ।
शिवनामैकनश्यानि नान्यनश्यानि सर्वथा ॥२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स वैदिकस्यपुण्यात्मा स धन्यस्य बुधोमतः ।
शिवनाम जपासक्तो यो नित्यं भुवि मानवः ॥२५
भवन्ति विविधा धर्मास्तेषां सद्यः फलेन्मुखाः ।
येषां भवति विश्वासः शिवनामजपे मुने ॥२६
पातकानि विनश्यन्ति यावन्ति शिवनामतः ।
भुवि तावंति पापानि क्रियन्ते न नरैर्मुने ॥२७
ब्रह्महत्यादि पापानां राशीन्प्रमितान्मुने ।
शिवनाम द्रुतप्रोक्तं नाशयत्यखिलान्नरैः ॥२८

मैं संक्षेप से नाम माहात्म्य यथाशक्ति कहता हूँ। हे विप्रो ! उस सम्पूर्ण पाप का नाश करने वाले नाम की महिमा प्रीति सहित सुनो। ।२२। 'शिव' नाम ही पाप स्वरूप महापापी को भस्म करने वाला दावाग्नि है। इसके उच्चारण से ही पाप भस्म हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है ।२३। हे शौनक ! पाप से उत्पन्न होने वाले अनेक प्रकार के दुःख है वे सब केवल एक 'शिव' नामोच्चारण से ही नष्ट हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है ।२४। जो मनुष्य इस पृथिवी पर शिव नाम का जाप करता है, वही वैदिक, पुण्यात्मा एवं पण्डित है वही धन्य है ।२५। जिस मनुष्य को 'शिव' नाम में विश्वास होता है, उसे शीघ्र फल प्रदान वाले अनेक धर्म प्रकट हो जाते हैं ।२६। 'शिव' नाम से मनुष्य पवित्र होता है, और पाप भी नष्ट हो जाते हैं। पृथिवी पर इतने तो पाप भी नहीं हैं, न मनुष्य करते हैं, जितने 'शिव' के नाम से नष्ट हो जाते हैं ।२७। हे विप्रो ! 'शिव' नाम का उच्चारण करते ही ब्रह्महत्या आदि पापों के बड़े ढेर भी समूल नष्ट हो जाते हैं ।२८।

शिवनामतरीं प्राप्य संसाराब्धि तरंति ये ।
संसारमूलपापानि तानि नश्यन्त्यसंशयम् ॥२९
संसारमूलभूतानां पातकानां महामुने ।
शिवनामकुठारेण विनाशो जायते ध्रुवम् ॥३०
शिवनामामृतं पेयं पापदावानलार्दितैः ।
पापदावाग्नि तप्तानां शांतिस्तेन विना नहि ॥३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवेति नामपीयूषवर्षधारा परिप्लुताः ।
संसाराग्नि मध्येपि न शोचंति कदाचन ।।३२
शिवनाम्नि महद्भक्तिर्जाता येषां महात्मनाम् ।
तद्विधानां तु सहसा मुक्तिर्भवति सर्वथा ।।३३
अनेकजन्मर्मार्येन तपस्तप्तं मुनीश्वर ।
शिवनाम्नि भवेद्भक्तिः सर्वपापापहारिणी ।।३४
यस्य सा धारणं शंभु नामभक्तिरखंडिता ।
तस्यैव मोक्ष सुलभो नान्यस्येति मतिर्मम ।।३५

जो मनुष्य शिव नाम की नौका को पाकर इस संसार-सागर से पार हो जाते हैं, उनको सभी सांसारिक पाप नष्ट होते हैं इसमें संशय नहीं ।२६। हे महामुनि ! संसार के मूल रूप समस्त पापों का 'शिव' नाम रूपी कुठार से समूल नाश हो जाता है ।३०। पाप स्वरूप दावाग्नि से दग्ध हुए मनुष्यों को शिव नाम रूप अमृत पीना चाहिए, इसके बिना उन मनुष्यों को शान्ति लाभ नहीं होता ।३१। जो मनुष्य शिव नाम रूप अमृत की धार से लुप्त हो चुके हैं वे संसार रूप अग्नि में स्थित होकर भी कभी सोच नहीं करते ।३२। जिन महात्माओं को शिव नाम की महाशक्ति प्राप्त हो चुकी है, उनकी मुक्ति तत्काल ही हो जाती है ।३३। हे मुनिवरों ! अनेक जन्म तक करने वालों के सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली भी शिव शक्ति ही है ।३४। जिसकी शिवजी से साधारण नाम की भी अखण्डाभक्ति प्राप्ति है उसको मोक्ष नितान्त सुलभ है अन्य को नहीं यह मेरा मत है ।३५।

कृत्वाप्यनेकपापानि शिवनामजपादर ।
सर्वपापाविनिर्मुक्तो भवत्येव न संशयः ।।३६
भवन्ति भस्मसाद्वृक्षा दवदग्धा यथा बने ।
तथा तावंति दग्धानि पापानि शिवनामतः ।।३७
यो नित्यं भस्मपूतांग शिवनामजपादरः ।
सन्तरेत्येव संसारं स घोरमपि शौनक ।।३८
ब्रह्मस्वहरणं कृत्वा हत्वापि ब्राह्मणान्बहून् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न लिप्यते नरः पापै. शिवनामजपादरः ॥३९
विलोक्य वेदान्खिलाञ्छिवनामजपः परम् ।
संसारतारणोपाय इति पूर्वविनिश्चितः ॥४०
किं बहूक्त्या मुनिश्रेष्ठाः श्लोकेनैकेन वच्म्यहम् ।
शिवनाम्नो महिमानं सर्वपापापहारिणम् ॥४१
पापानां हरणं शंभोर्नामशक्तिर्हि पावनी ।
शक्नोति पातकं तावत्कर्तुं नापि नरः क्वचित् ॥४२

अनेक पाप कर लेने पर भी जो मनुष्य शिव नाम का जप आदर-पूर्वक करता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं है ।३६। जैसे वन में प्रकट दावानल में वृक्ष भस्म हो जाता है वैसे ही शिव नाम के प्रभाव से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं ।३७। जो मनुष्य अपने देह में नित्य प्रति भस्म लगाता और आदर सहित शिव-नाम को जपता है वह इस संसार से पार हो जाता है ।३८। हे ब्राह्मणों का द्रव्य हरने वाला ब्राह्मणों का वध करने वाला भी भक्ति पूर्वक शिव नाम का जप करने से पाप लिप्त नहीं होता है ।३९। शिव नाम ही परम जप है तथा यही संसार-सागर से तरने का उपाय है पूर्वजों ने ऐसा निष्कर्ष सम्पूर्ण वेदों को देखकर किया था ।४०। हे मुनियों ! अधिक क्या कहूँ मैं एक श्लोक से ही यह बताये देता हूँ कि शिव नाम की महिमा सम्पूर्ण पापों को नष्ट करती है ।४१। पापों का हरण करने में शिवजी की शक्ति महा पावनी कही है जितना इसका प्रभाव है उतना तो पाप भी मनुष्य नहीं कर सकता ।४२।

शिवनामप्रभावेण लेभे सद्गतिमुत्तमाम् ।
इन्द्रद्युम्न नृप पूर्वमहापापः पुराः मुने ॥४३
तथा काचिद्द्विजा योषा सौमुने बहुपापिनी ।
शिवनामप्रभावेण लेभे सत्गतिमुत्तमम् ॥४४
इत्युक्तं वो द्विजश्रेष्ठा नाममाहात्म्यमुत्तमम् ।
शृणुध्वं भस्ममाहात्म्यं सर्वपावनपावनम् ॥४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन काल में इन्द्रद्युम्न नाम का एक अत्यन्त पापी राजा हुआ था ।४३। तथा एक ब्राह्मण की महापापिनी स्त्री थी, शिव नाम के प्रताप से उनको भी पवित्र गति की प्राप्ति हो गई थी ।४४। हे ब्राह्मणों ! इस प्रकार तुम्हारे प्रति नाम का श्रेष्ठ माहात्म्य कहा है । अव सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला, भस्म-माहात्म्य श्रवण करो ।४५।

।। भस्म का माहात्म्य ।।

द्विविधं भस्मसंप्रोक्तं सर्वमङ्गलदं परम् ।
तत्प्रकारमहं वक्ष्ये सावधानतया शृणु ।।१
एकं ज्ञेयं महाभस्म द्वितीयं स्वल्पसंज्ञकम् ।
महाभस्म इति प्रोक्तं भस्म नानाविधं परम् ।।२
तद्भस्म त्रिविधं प्रोक्तं श्रौतं स्मार्तं च लौकिकम् ।
भस्मैव स्वल्पसंज्ञं हि बहुधा परिकीर्तितम् ।।३
श्रौतं भस्म तथा स्मार्तं द्विजानामेव कीर्तितम् ।
अन्येषामपि सर्वेषां परं भस्म लौकिकम् ।।४
धारणं मन्त्रतः प्रोक्तं द्विजानां मुनिपुङ्गवैः ।
केवलं धारणं ज्ञेयमन्येषां मन्त्र वर्जितम् ।।५
आग्नेयमुच्यते भस्म दग्धं गोमयसंभवम् ।
तदपि द्रव्यमित्युक्तं त्रिपुण्ड्रस्य महामुने ।।६
अग्निहोत्रोत्थितं भस्म संग्राह्यं वा मनीषिभिः ।
अन्य यज्ञोत्पितं वापि त्रिपुण्ड्रस्य च धारणे ।।७

सूतजी ने कहा—सम्पूर्ण मंगलों को प्रदान करने वाली भस्म के दो प्रकार कहे गये हैं, उनका वर्णन करता हूँ । सावधानी से सुनो ।१। एक प्रकार की महाभस्म कही गई है, दूसरी स्वल्प बतायी गई है । महाभस्म के अनेक प्रकार बताये गये हैं । उसके तीन प्रकार कहे हैं—श्रोत, स्मार्त, और लौकिक तथा स्वल्प संज्ञक भस्म अनेक प्रकार कही गई है ।३। ब्राह्मणों के लिये श्रौत और स्मार्त भस्म का विधान है तथा अन्य व्यक्तियों के निमित्त लौकिक भस्म कही गयी है ।४। ब्राह्मणों को भस्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण करना मन्त्रों से कहा गया है, परन्तु अन्यों के लिये भस्म धारण में मन्त्र वर्जित बताये गए हैं ।५। हे महानुने ! गोबर से निर्मित भस्म आग्नेय कही गयी है । त्रिपुण्ड का द्रव्य यही माना गया है ।६। अथवा विद्वानों के लिए अग्निहोत्र की भस्म धारण करना कहा है तथा अन्य यज्ञ से उपलब्ध भस्म त्रिपुण्ड धारण में उचित हैं ।७।

अग्निरित्यादिभिर्मंत्रैर्जाबलोपनिषद्गतेः ।
सप्तभिधू लनं कार्यं भस्मना सजलेन च ।।८
वर्णानामाश्रमाणां च मन्त्रतोऽमन्त्रतोऽपि च ।
त्रिपुण्ड्रोद्धूलेन प्रोक्तं जाबालैरादरेण च ।।९
भस्मनोद्धूलेनं चैव यथा तिर्यक्त्रिपुण्ड्रकम् ।
प्रमादादपि मोक्षार्थीनत्यजेदति विश्रुति ।।१०
शिवे विष्णुना चैव तथा तिर्यक्त्रिपुण्ड्रकम् ।
उमादेवी च लक्ष्मीश्च वाचान्याभिश्च नित्यशः ।।११
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरपि च संकरैः ।
अपभ्रंशै धृतभस्म त्रिपुण्ड्रोद लमात्मना ।।१२
उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रं च श्रद्धया नाचरंति ये ।
तेषां नास्ति समाचारो वर्णाश्रयसमन्वितः ।।१३
उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रं च श्रद्धया नाचरंति ये ।
तेषां नास्ति विनिर्मुक्तिस्संसाराज्जन्मकोटिभि ।।१४

जाबलि उपनिषद में कहे हुए अग्निरित्यादि मन्त्रों से भस्म को जल योग से सात बार शरीर में धारण करे ।८। जाबालि ने वर्णों तथा आश्रमों को आदर सहित मन्त्रों से त्रिपुण्ड का धारण करना कहा है।९। श्रुति के अनुसार शरीर में भस्म धारण करना और तिरछा त्रिपुण्ड लगाना इस कार्य का कभी त्याग न करे ।१०। शिव विष्णु से तिरछा त्रिपुण्ड धारण किया जाने पर भगवती उमा और लक्ष्मीजी से नित्य प्रशंसा को प्राप्त होता है ।११। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्व, शूद्र, वर्ण संकर तथा अपभ्रंशों वाली जातियों द्वारा भी त्रिपुण्ड और भस्म को धारण किया गया है ।१२। जो लोग वर्णाश्रमी श्रद्धापूर्वक भस्मलेप और त्रिपुण्ड

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण नहीं करते, उनका वर्णाश्रम युक्त समाचार नहीं माना जाता।१३। जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक त्रिपुण्ड और शरीर पर भस्म धारण नहीं करते वह करोड़ों जन्मों में भी संसार से मुक्त नहीं हो पाते।१४।

उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रं च श्रद्धया नाचरन्ति ये।
तेषां नास्ति शिवज्ञानं कल्पकोटिशतैरपि ॥१५
उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रं च श्रद्धया नाचरन्ति ये।
ते महापातकैर्युक्ता इति शास्त्रीयनिर्णयः ॥१६
उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रं च श्रद्धया नाचरन्ति ये।
तेषामाचरित्तं सर्वं विपरीतं फलाव हि ॥१७
महापातकमुक्तानां जन्तूनां सर्व विद्विषाम्।
त्रिपुण्ड्रोद्धूलनं द्वेषो जायते सुहृढं मुने ॥१८
शिवाग्निकार्यं यः कृत्वा कुर्यात्त्रियायुषात्मवित्।
मुच्यते सर्वपापैस्तु स्पृष्ठेन भस्मना नरः ॥१९
सितेत भस्मना कुर्य्यात्त्रिसन्ध्यं यस्त्रिपुण्ड्रकम्।
सर्वं पापाविनिमुक्तः शिवेन सह मोदते ॥२०
सितेन भस्मना कुर्याल्ललाटे तु त्रिपुण्ड्रकम्।
यो सा वनादि भूतान्हि लोकानाप्तोऽमृतो भवेत् ॥२१

श्रद्धापूर्वक शरीर पर भस्म लेपन और त्रिपुण्ड धारण न करने वाले मनुष्यों को सौ करोड़ कल्प में भी शिव ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती।१५। शास्त्र का निर्णय है कि श्रद्धा सहित शरीर पर भस्म लेपन और त्रिपुण्ड धारण जो मनुष्य नहीं करते वे अत्यन्त पापी हैं।१६। श्रद्धापूर्वक भस्म लेपन और त्रिपुण्ड धारण न करने वाले मनुष्यों के सभी आचरण विपरीत फल को उत्पन्न करने वाले होते हैं।१७। हे मुने! त्रिपुण्ड और भस्म से द्वेष उन्हीं का है, जो प्राणी सब जीवों से द्वेष करने वाले महापापों से युक्त हैं।१८। जो ज्ञानी पुरुष 'शिवग्नि' से 'त्र्यायुषेति' मन्त्र से भस्म धारण करता हैं, वह भस्म का स्पर्श होते ही सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।१९। जो मनुष्य तीनों सन्ध्याओं में श्वेत भस्म से त्रिपुण्ड धारण करता है, वह सम्पूर्ण पापों से छूटकर शिवसंग प्राप्त कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्न होता है।२०। जो मनुष्य श्वेत भस्म से ललाट में त्रिपुण्ड्र धारण करता है, वह अनादि भूत लोकों में अमृत हो जाता है।२१।

अकृत्वा भस्मना स्नानं न जपेद्वै षडक्षरम्।
त्रिपुण्ड्रं च रचयित्वा तु विधिना भस्मनाजपेत् ॥२२
अदयो वाधर्मोवापि सर्वपापान्वितोऽपि वा।
उग्रः पापान्वितो वापि मूर्खो वा पतितोऽपि वा ॥२३
यस्मिन्देशे वशेन्नित्यं भूतिशासनसंयुतः।
सर्वतीर्थैश्च क्रतुभिः संनिध्यं क्रियते सदा ॥२४
त्रिपुण्ड्र सहितो जीवः पूज्यः सर्वैः सुरासरैः।
पापान्वितोऽपि शुद्धात्मा किं पुनः श्रद्धयायुतः ॥२५
यस्मिन्देशे शिवज्ञानी भूतिशासनसंयुतः।
गतो यदृच्छयाद्यापि तस्तिमस्तीर्थाः समागताः ॥२६
वहुनात्र किमुक्तेन धार्यं भस्म सदाबुधैः।
लिंगार्चन सदाकार्यं जप्यो मन्त्रः षडक्षरः ॥२७
ब्रह्मणा विष्णुना वापि रुद्रेण मुनिभिः सुरैः।
भस्मधारणमाहात्म्यं न शक्यं परिभाषितुम् ॥२८

भस्म से स्नान किये विना षडक्षर का जप नहीं करना चाहिए। भस्म का त्रिपुण्ड्र लगाकर ही विधि पूर्वक जप करना उचित है।२२। दया से रहित अधर्म सम्पूर्ण पापों से युक्त हत्या के पाप वाला, अथवा मूर्ख या पतित कैसा भी ममुष्य क्यों न हो।२३। जिस देश में भस्म धारण पूर्वक निवास करता है, वही सम्पूर्ण तीर्थों और यज्ञों का निवास समझना चाहिये।२४। त्रिपुण्ड युक्त मनुष्य देवता और दैत्यों से भी पूजित होता है। यदि वह पापी भी हो तो शुद्धात्मा हो जाता है, फिर अन्य की तो वात ही क्या है।२५। शिवज्ञानी पुरुष जिस देश में भूति शासन से युक्त निवास करता है, वह सभी तीर्थों का स्थल रूप समझना चाहिए।४६। अधिक कथन से क्या? विद्वानों सदा ही भस्म धारण लिंग पूजन और षडक्षर मन्त्र का जप करना श्रेयस्कर है।२७। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र मुनि तथा देवता भी भस्म धारण करने के माहात्म्य को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहने से समर्थ नहीं है ।२८।

इति वर्णाश्रमांचारो लुप्तववर्णक्रियोऽपि च ।
पापात्सकृत्त्रिपुंड्रस्य धारणात्सोऽपि मुच्यते ।।२९
ये भस्मधारिणं त्यक्त्वा कर्म कुर्वन्ति मानवा ।
तेषां नास्ति विनिर्मोक्षः संसाराज्जन्मकोटिभिः ।।३०
तेनाधीतं गुरोः सर्वंतेन सर्वमनुष्ठितम् ।
येन विप्रेण शिरसि त्रिपुण्ड्रं भस्मना कृतम् ।।३१
ये भस्मधारिणं दृष्टवा नराः कुर्वन्ति ताडनम् ।
तेषां चांडालतो जन्म ब्रह्मनूहनं विपश्चिता ।।३२
मानस्तोकेन मन्त्रेण मन्त्रितं भस्म धारयेत् ।
ब्राह्मणः क्षत्रियश्चैव प्रोक्तेष्वंगेषु भक्तिमान् ।।३३
वैश्यस्त्र्यंवकेनैव शूद्रः पञ्चाक्षरेण तु ।
अन्येषां विधवास्त्रीणां विधिः प्रोक्तश्च शूद्रवत् ।।३४
पञ्चब्रह्मादि मनुभिर्गृहस्थस्य विधीयते ।
त्र्यंबकेनमनुना विधिर्वै ब्रह्मचारिणः ।।३५

इस प्रकार जिसने वर्णाचार और वर्ण की क्रिया को लुप्तकर दिया है, वह एक बार त्रिपुण्ड्र धारण करने से ही पाप मुक्त हो जाता है। भस्म धारण करने वाले का त्याग जो मनुष्य करते हैं उनकी करोड़ जन्म धारण करने परभी संसार से मोक्ष नहीं होती । जिस ब्राह्मण ने त्रिपुण्ड्र धारण किया उसने गुरु के समीप सब कुछ पढ़ लिया और अनुष्ठान कर लिया समझो । जो मनुष्य भस्मधारी को देखकर उसे फटकार देते हैं, उन मनुष्यों को चांडाल योनि से उत्पन्न समझना चाहिए ।२९-३२।मन-स्तोक मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म को धारण करे और ब्राह्मण, क्षत्रिय इसे भक्ति पूर्वक देह पर लगावें वैश्य को 'त्र्यम्बक' मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म धारण करनी चाहिए तथा शूद्र और विधवा स्त्रीको पञ्चाक्षर मंत्र से भस्म लगानी चाहिये । मनुने गृहस्थ के लिए पञ्चब्रह्म के मन्त्र कहे हैं और ब्रह्मचारी के लिए 'त्र्यम्बक' मन्त्र से लेप कराना कहा है ।३३-३५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यतिस्तु प्रणवैव त्रिपुण्ड्रादीनि कारयेत् ।।३६
अतिवर्णाश्रमी नित्य शिवोऽहं भावनात्परात् ।
शिवयोगीतिनियतमीशानेनापि धारयेत् ।।३७
न त्याज्यं सर्ववर्णेश्च भस्मधारण मुत्तमम् ।
अन्यैरपि यथा जीवैस्सदेति शिवशासनम् ।।३८
भस्मस्नानेन यावंत: कणा: स्वांगे प्रतिष्ठिता: ।
तावन्ति शिव लिंगानि तनौ धत्ते हि धारक: ।।३९
ब्राह्मणा: क्षत्रिया वैश्या: शूद्राश्चापि च सङ्करा: ।
स्त्रियोऽथ विधवा बाला: सन्यासी वा व्रती तथा ।।४०
ब्रह्मचारी गृही वान्य: सन्यासी व्रती तथा ।
नार्यो भस्म त्रिपुण्ड्रां का मुक्ता एव न संशय: ।।४१
ज्ञानाज्ञानधृतो वापि वह्निदाह समो यथा ।
ज्ञानाज्ञानधृतं भस्म पावयेत्सकलं नरम् ।।४२

वन में रहने वालों को अघोर मन्त्र की विधि कही हैं तथा यति के लिए प्रणव से ही त्रिपुण्ड्र लगाना कहा है ।३६। अतिवर्णाश्रमी को 'शिवोहं' की भावना करके धारण करना और शिवयोगी को ईशान मंत्र से धारण करने की विधि कही है ।३७। किसी भी वर्ण को भस्म धारण के त्याग का निर्देश नहीं है तथा अन्य जीव भी इसी को धारण करे ऐसी शिवजी की आज्ञा है ।३८। अपने शरीर में जितने कण भस्म स्नान के द्वारा प्रविष्ट होते हैं, उतने ही शिवलिंग वे अपने देह में धारण करते हैं ।३९। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वर्णसंकर, स्त्री विधवा, बालक अथवा पाखण्डी आदि कोई भी क्यों न हो ।४०। ब्रह्मचारी, गृहस्थी, बनवासी सन्यासी, व्रती तथा स्त्री यह सभी भस्म धारण करने से मुक्त हो जाते हैं, इसमें संशय नहीं है ।४१। ज्ञान या अज्ञान से धारण की हुई अग्नि दाह के तुल्य है, वैसे ही ज्ञान या अज्ञान धारण से की हुए भस्म मनुष्य को सदा पवित्र कर देती है ।४२।

नाश्नीयाज्जलमन्नमल्पमपि वा भस्माक्ष धृत्या विना-
भक्त् वाथ गृही वनीवनेचरोति यतिर्वर्णो तथा संकर: ।।४३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एनो भुङ्नरकं प्रयाति सतदा गायत्री-जापेन तद्वर्णिनां ।
तु यतेस्तु मुख्य प्रणवा जापेन मुक्तं भवेत् ।।४४
त्रिपुण्ड्रं ये विनिन्दन्ति निन्दन्ति शिवमेव ते ।
धारयन्ति च ये भक्त्या धारयन्ति तमेव ते ।।४५
धिग्भस्मरहित भालं धिग्ग्राममशिवालयम् ।
धिगनीशार्चनं जन्म धिग्विद्यामशिवाश्रयाम् ।।४६
ते निन्दति महेश्वरं त्रिजगतामाधारभूतं हरं ।
येनिन्दन्तित्रिपुण्ड्र धारण करं दोषस्तु तद्दर्शने ।
ते वे संकर सूकरामुर खरश्वक्रोष्टु कीटोपमा ।
जाता एवभवन्तिपाप परमास्ते नारकाः केवलम् ।।४७
ते दृष्ट्वा शशि भास्करोनिशिदिने स्वप्नेपिको केवल-
पश्यन्तु श्रुति रुद्रसूक्त जपतो मुच्यते तेनादृताः ।
तत्संभाषणतो भवेद्धि नरकं निस्तार वानास्ति ये भस्मा
दित्रि धारणं हि पुरुषं निन्दति मन्दा हि ते ।।४८
तत्रैते बहवो लोका वृहज्जा लचोदिताः ।
ते विचार्याः प्रयत्नेन ततो भस्मरतो भवेत् ।।४९

जो मनुष्य भस्म और रुद्राक्ष धारण नहीं करते उनका अन्न-जल किंचित् भी ग्रहण न करे। गृहस्थी, वनवासी, यती या शंकर जाति के यहाँ भोजनं, पाप भक्षण समझे प्रायश्चित्त में तीन वर्ण गायत्री का जप करे। सन्यासी केवल प्रणव का जप करने से ही पवित्र हो जाता है।४३-४४। जो लोग त्रिपुण्ड्र की निन्दा करते हैं वे शिव ही की निन्दा करते हैं और जो त्रिपुण्डधारण करते हैं, वह शिव को ही धारण करते हैं।४५। भस्म हीन मस्तक, शिवालय हीन ग्राम ईश्वर-पूजा रहित जन्म तथा शिवाश्रय हीन विद्या इन सभी को धिक्कार है ।४६। त्रैलोक्याधार शिव के निन्दक और त्रिपुण्ड्र के निन्दक के दर्शन में दोष वर्णशंकर, शूकर, असुर खर कुत्ता, गीदड़ या कीड़े के समान हैं वे पाप स्वरूप केवल नरक में जानेके लिए ही उत्पन्न हुए हैं ।४७।वे सूर्य चन्द्र को भी नहीं देख पाते परन्तु आदर सहित रुद्र जपने से मुक्त हो सकते हैं भस्मधारी पुरुष की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निन्दा करने वाले भी महामूढ़ हैं ।४८। बृहज्जाबाल द्वारा प्रेरित अनेक लोक हैं, उनका विचार करता हुआ प्रयत्नपूर्वक भस्म धारण करे ।४६।

यच्चंदनैश्चंदन केऽपि मित्रं धार्यं हि भस्मैव त्रिपुण्ड्रं भस्मना ।
विभूतिभालोपरि किंचनापि धार्यं सदा नो यदि सति बुद्धयः ।।५०

स्त्रीभिस्त्रिपुण्ड्रमलकावधि धारणीयं भस्म द्विजादिभि ।
रथो विधवाभिरेवम् ।
तद्वत्सदाश्रमवतां विशदा विभूतिर्धार्यापवर्गफलदा
सकलाघहन्त्री ।।५१
त्रिपुण्ड्रं कुरुते यस्तु भस्मना विधिपूर्वकम् ।
महापातकसंगातैर्मुच्यते चोपपातकैः ।।५२
ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थोऽथ वा यतिः ।
ब्रह्मक्षत्राश्च विट्शूद्रास्तथान्ये पतिताधमाः ।।५३
उद्धूलनं त्रिपुण्ड्र च धृत्वा शुद्धा भवन्ति च ।
भस्मनोर्विधिना सम्यक्पापराशि विहाय च ।।५४
श्राद्धे यज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने ।
धृतत्रिपुण्ड्रः पूतात्मा मृत्यु जायति मानवः ।।५५
जलस्नानं मलत्यागे भस्मस्नानं सदा शुचि ।
मन्त्रस्नानं हरेत्पापं ज्ञानस्नाने परं पदम् ।।५६

चन्दन में मिलाकर विभूति धारण करने वालों की विधि भी ठीक है किसी प्रकार सही—मस्तक पर विभूति अवश्य धारण करे ।५०। स्त्री विधवा तथा ब्राह्मणोंको त्रिपुण्ड्र धारण करना चाहिए, यह सभीआश्रमों को मोक्षदायक हैं । पाप नाशिकी विभूति को अवश्य धारण करे ।५१। जो मनुष्य विधिपूर्वक भस्म से त्रिपुण्ड्र लगाता है वह महापापों तथा उप-पातकों से भी मुक्त हो जाता है ।५२। ब्रह्मचारी, गृहस्थी यती ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र तथा अन्य पतित एवं अधम मनुष्य के ढेर से छुटकारा हो जाता है ।५३-५४। श्राद्ध, यज्ञ, जप हवन, वैश्वदेव तथा देवार्चन में त्रिपुण्ड्र को जो धारण करता है वह मृत्यु पर भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय प्राप्त कर लेता है ।५५। मल त्याग में जल-स्नान पुनीत है, भस्म स्नान सदा पवित्र हैं मन्त्र-स्नान पाप हल करने वाला है तथा ज्ञान-स्नान से परमपद प्राप्त होता है ।५६।

सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति भस्मस्नानकरो नरः ॥५७
भस्मस्नानं परं तीर्थं गङ्गास्नानं दिने दिने ।
भस्मरूपी शिवः साक्षाद्भस्मत्रैलोक्यपायनम् ॥५८
न तत्स्नानं न तद्ध्यानं न तद्दानं जपो न सः ।
त्रिपुण्ड्रेण विना येन विप्रेण यदनुष्ठितम् ॥५६
वानप्रस्थस्य कन्यानां दीक्षाहीननृणां तथा ।
मध्याह्नात्प्राग्जलैर्युक्तं परतो जलर्जितम् ॥६०
एवं त्रिपुण्ड्रं य कुर्य्यान्नित्यं नियतमानसः ।
शिवभक्तः स विज्ञे यो भुक्ति मुक्ति च विंदति ॥६१
यस्यांगे नैव रुद्राक्ष एकोऽपि बहुपुण्यदः ।
तस्य जन्म निरर्थंस्यात्त्रिपुण्ड्र रहितो यदि ॥६२
तिस्रो रेखा भवन्त्येव स्थानेषु मुनिपुगंवाः ।
ललाटादिषु सर्वेषु यथोक्तेषु बुधैर्मुने ॥६३

जो पुण्य फल सब तीर्थों में स्नान कहा गया है, वह फल भस्म से स्नान को परम तीर्थ समझो । भस्म रूप में साक्षात् शिव ही है । भस्म द्वारा तीनों लोक पवित्र हो जाते हैं ।५८। जो विप्र त्रिपुण्ड्र पुराण किये बिना अनुष्ठान करता है, उसका स्नान, दान ध्यान जप सभी कर्म निष्फल समझो ।५६। वानप्रस्थ कन्या तथा दीक्षाहीन मनुष्यों को मध्यान्ह से पहिले ही स्नान कर लेना चाहिए इसके पश्चात इसके लिये जल स्नान वर्जित है ।६०। जो मनुष्य नित्य नियमित रूप से त्रिपुण्ड्र धारण करता है वह शिव भक्त है भुक्ति और मुक्ति दोनों ही उसके लिए सुलभ हैं ।६१। अनेक पुण्यों को देने वाला एक भी रुद्राक्ष जिसके शरीर में नहीं है तथा जिसने त्रिपुण्ड्र भी धारण नहीं किया है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर पाँच लाख जपने से क्षत्रियत्व प्राप्त होता और पुनः पाँच लाख जपने पर क्षत्रियत्व से भी मुक्त हो जाता है ।५७। फिर पांच लाख पर ब्राह्मण बन जाता है। इसी प्रकार शूद्र भी अन्त नमः लगाकर पच्चीस लाख मन्त्र जपे ।५८। तो उसको ब्राह्मणत्व की प्राप्ति होती है। इस मन्त्रके जपनेसे स्त्री, पुरुष, ब्राह्मण अथवा कोई भी हो, सब शुद्धहो जाते हैं ।५९। शिव भक्त का पूजन करने से शिवजी प्रसन्न होते हैं शिवजी में और उनके भक्त में कुछ भेद नहीं है, वह शिव-स्वरूप ही है ।६०। शिव-स्वरूप मन्त्र की धारणा करनेसे शिवरूपकी प्राप्ति होती है। देह में शिव भक्ति होने से शिवजी का भक्त प्रधान शिव रूप ही होता है ।६१। वेदोक्त सभी क्रियाओं से युक्त शिव भक्त सब क्रियाओं के जानने वाले हैं जो जितना अधिक मन्त्र जप करे उसे उतना ही अधिक सामीप्य प्राप्त होता है। शिव की भक्ति करने वाली स्त्रियाँ देवी स्वरूप को प्राप्त हो जाती है ।६२-६३।

यावन्मन्त्रं जपेद्देव्यास्तावत्सान्निध्यमस्तिहि ।
शिवं संपूजयेद्धीमान्स्वयं वै शब्दरूपभाक् ॥६४
शिवलिंग शिवं मत्वा स्वात्मानं शक्तिरूपकम् ।
शिवलिंगं च देवीं च मत्वा स्वं शिवरूपकम् ॥६५
शिवलिंगं नादरूपं बिंदुरूपं तु शक्तिकम् ।
उपप्रधानभावेन मन्योन्यासक्तलिंगकम् ॥६६

जो जितना अधिक तप करती हैं, भगवतीकी उतनी अधिक निकटता उन्हें प्राप्त होती है। जो मेधावी-जन शिव पूजा करते हैं, वे शब्द के स्वयं भागी होते हैं ।६४। शिवलिंग को शिवरूप और आत्मा को शक्ति रूप मानें, शक्ति लिंग को देवी और अपने को शिव-स्वरूप समझे ।६५। शिवलिंग को नाम रूप और शक्तिको बिन्दु रूप आकारादि युक्त स्थान भूत ओंकार के निकट भाव से परस्पर लिंग शक्ति समझें ।६६।

बन्ध मोक्षस्वरूप शिवलिंग माहात्म्य

बन्धमोक्षस्वरूपं हि ब्रूहि सर्वार्थवित्तम ।
बन्धमोक्षं तथोपायं वक्ष्येऽहं श्रृणुतादरात् ॥१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृत्याद्यष्टबंधेन बद्धोजीव: स उच्यते ।
प्रकृत्याद्यष्टबन्धेन निर्मुक्तो मुक्त उच्यते ॥२
प्रकृत्यादिवशीकारा मोक्ष इत्युच्यते मोक्ष इत्युच्यते ।
बद्धजीवस्तु निर्मुक्तो मुक्तजीव: स: कथ्यते ॥३
प्रकत्यग्रे ततो बुद्धिरहंकारो गुणात्मक: ।
पञ्चतन्मात्रमित्येते प्रकृत्या अष्टकं विदु: ॥४
प्रकृत्याद्यष्टजोदेहो देहजं कर्म उच्यते ।
पुनश्चकर्मजो देहो जन्मकर्म पुन: पुन: ॥५
मरीरं त्रिविधं ज्ञेयं स्थूलं सूक्ष्मं च कारणम् ।
स्थूलं व्यापारदं प्रोक्तं सूक्ष्ममिंद्रियभोगदम् ॥६
कारणं त्वात्मभोगार्थं जीवकर्मानुरूपत:
सुखं दु:खं पुण्यपापै: कर्मभि: फलमश्नुते ॥७

ऋषियों ने कहा-हे सूतजी आप सर्वार्थ ज्ञाता हैं। हमको प्रतिबन्ध और मोक्ष का स्वरूप कहें। सूतजी ने कहा—मैं बन्ध और मोक्षके उपाय कहता हूँ, आदर पूर्वक सुनिए।१। प्रकृति आदि आठ बन्धनोंसे बन्धन के कारण रूप आत्मा को जीव कहते हैं तथा आठ बन्धनों से छुटकारे को ही मोक्ष कहा है।२। प्रकृति आदि को वश में कर लेना ही मोक्ष है। बन्धन में पड़ा 'जीव' तथा उनसे मुक्त हुए को ही मुक्त कहते हैं।३। प्रकृति के आगे बुद्धि और बुद्धि के आगे गुणात्मक अहंकार और उनके साथ ही पंचतन्मात्र, यह सब मिलकर आठ प्रकृति हैं।४। इन्हीं प्रकृति आदि आठ बन्धनों से युक्त देह से किया जाता है, वह कर्म है। कर्म से पुन: देह है, इसी प्रकार जन्म और कर्म का चक्र निरन्तर चलता रहता है।५। स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीन प्रकार के देह हैं 'थूल' व्यापार वाला और सूक्ष्म इन्द्रिय के भोग वाला है।६। तीसरा कारण देह है जो जीव के कर्मानुसार आत्मा को भोग करने के निमित्त है, पाप पुण्य रूप कर्मों से ही सुख दु.ख की प्राप्ति है।७।

तस्माद्धि कर्मरज्ज्वा हि बद्धो जीव: पुन: पुन: ।
शरीरत्रयकर्मभ्यां चक्रवद्भ्राम्यते सदा ॥८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्रभ्रमनिवृत्यर्थं चक्रकर्तारमीडयेत ।
प्रकृत्यादि महाचक्रं प्रकृतेः परतः शिवः ॥९
चक्रकर्ता महेशो हि प्रकृतेः परतो यतः ।
पिवति त्वथ वमति जीवो वाली जलं यथा ॥१०
शिवस्तथा प्रकृत्यादि वशीकृत्याधितिष्ठति ।
सर्वं वशीकृतं यस्मात्तस्माच्छिव इति स्मृतः ।
शिव एव हि सर्वज्ञः परिपूर्णश्च निस्पृहः ॥११
सर्वज्ञता तृप्तिरनादिबोधः स्वतंत्रता नित्यमलुप्तशक्तिः ।
अनन्तशक्तिश्च महेश्वरस्य यन्मानसैस्वर्यमवंति वेदः ॥१२
अतः शिवप्रसादेन प्रकृत्यदि वशं भवेत् ।
शिवप्रसादलाभार्थं शिवमेव प्रपूजयेत् ॥१३

इस प्रकार यह जीव कर्म रूप रस्सी से बारम्बार बंधकर तीन प्रकार के शरीरों से युक्त होता हुआ चक्र के समान घूमता रहता है ।८। चक्र के घूमने को शान्त करने के लिए चक्रकर्ता की पूजा करे । प्रकृति आदि आठ महाचक्रों से भगवान् शंकर परे हैं ।९। प्रकृति से परे वे महेश ही चक्रकर्त्ता है जैसे कि वृक्षों के थामले जल को पीकर उसे वृक्षों में गमनकर देते हैं ।१०। इसी प्रकार प्रकृति आदि को वशमें करके शिवजी स्थित हैं । सबको वशीभूत करने के कारण उन्हें 'शिव' कहते हैं । वही सर्वज्ञ, परिपूर्ण तथा निस्पृह हैं ।११। अपनी सर्वज्ञता के कारण वे तृप्त एवं आदि बोध हैं तथा स्वतन्त्रता से जाग्रत शक्ति हैं । वे अनन्त शक्ति वाले हैं । वेद उनके मनके षड्गुणैश्वर्य का पूर्ण ज्ञाता है ।१२। इसलिए शिवजी के प्रसादसे ही प्रकृति आदिको वशमें किया जाता है । उनकी प्रसन्नता के लिए उनका पूजन करना ही श्रेयस्कर है ।१३।

त्रिपुण्ड्रं सजलं भस्म धृत्वा पूजां करोति यः ।
शिवपूजाफलं सांगं तस्यैव हि सुनिश्चितम् ॥१४
भस्म वै शिवशंत्रेण धृत्वा ह्यत्याश्रमी भवेत् ।
शिवाश्रमीति संप्रोक्तः शिवैकपरमो यतः ॥१५
शिवव्रतैकनिष्ठस्य नाशौचं न च सूतकम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललाटेऽग्रे सितभस्म तिलकं धारयेन्मृदा ॥१६

स्वहस्ताद्गुरुहस्ताद्वा शिवभक्तस्य लक्षणम् ।
गुणान्रुध इति प्रोक्तो गुरुशब्दस्य विग्रहः ॥१७

सविकारान्राजसादीन्गुणान्गुरुर्धे व्यपोहति ।
गुणातीतः परशिवो गुरुरूपं समाश्रितः ॥१८

गुणत्रयं व्यपोह्याग्रे शिवं बोधयतीतति सः ।
विश्वस्तानां तु शिष्याणां गुरुरित्थमभिधीयते ॥१९

तस्माद्गुरुशरीरं तु गुरुलिंगं भवेद् बुधः ।
गुरुलिंगस्य पूजा तु गुरुशुश्रूषणं भवेत् ॥२०

श्रुतं करोति शुश्रूषां कायेन मनसा गिरा ।
उक्तं यद्गुरुणा पूर्वं शक्यं वाऽशक्यमेव वा ॥२१

जल युक्त भस्म से त्रिपुण्ड धारणकर शिवजी का पूजन करने वाले को निःसन्देह सम्पूर्ण फल मिलता है ।१४। शिवमन्त्र से पूरित भस्म को धारण करने वाला श्रेष्ठ आश्रमी होता है और शिव परायण होने के कारण शिवाश्रमी रहा जाता है ।१५। शिवव्रत में जिसकी निष्ठा है, उसे किसी प्रकार का अशौच या सूतक नहीं लगता । ललाट के अग्रभाग में श्वेतभस्म एवं मृतिका का तिलक लगाना चाहिए ।१६। तिलक अपने हाथ से या गुरु के हाथ से लगवायें, यह शिवभक्त का लक्षण है । शिष्य में अपने गुणों को अर्पित करने वाले को ही गुरु कहा गया है ।१७। अथवा विकार रहित राजस गुणों को दूर करने वाले गुणतीत पर विद्या ही गुरुरूप है । क्योंकि गुरु को शिव रूप ही कहा गया है ।१८। अथवा विश्वास पात्र शिष्य के तीनों गुणों को क्षीण करके जो शिवजी का बोध करायें, उसी का नाम गुरु है ।१९। इसलिए विद्वान् गुरु का देह पूज्य लिंग है तथा गुरु लिंगका पूजन ही सच्ची गुरु सेवा है ।२०। मन वचन और कर्म से गुरु सेवा करने से शास्त्र की प्राप्ति होती है । गुरु का जो कुछ उपदेश शक्य तथा अशक्य कैसा भी हो, उसे माने ।२१।

करोत्येव हि पूतात्मा प्राणैरपि धनैरपि ।
तस्माद्वै शासने योग्यः शिव इत्यभिधीयते ॥२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीराद्यर्थकं सर्वं गुरोर्दत्वा सुशिष्यकः ।
अग्रपाकं निवेद्यान्ते भुंजीयाद्गुर्वनुज्ञया ।।२३
शिष्यः पुत्रः इति प्रोक्तः सदा शिष्यत्वयोगतः ।
जिह्वालिंगान्मंत्रशुक्रं कर्णयोनौ निषिच्य वै ।।२४
जातः पुत्रो मंत्रपुत्रः पितरं पूजयेद्गुरुम् ।
निमज्जयति पुत्रं वै संसारे जनकः पिता ।।२५
संतारयति संसाराद्गुरुर्वैबोधकः पिता ।
उभयोरं तरं ज्ञात्वा पितरं गुरुमर्चयेत् ।।२६
अंगशुश्रूषया चापि धनाद्यैः स्वार्जितैर्गुरुम् ।
पादादि केशपर्यंतं लिंगान्यंगानि यद्गुरोः ।।२७
धनरूपैः पादुकाद्यैः पादसंग्रहणादिभिः ।
स्नानाभिषेकनैवेद्यै र्भोजनैश्च प्रपूरयेत् ।।२८

प्राण या धन द्वारा गुरु का आदेश सम्पादन करनेवाला शिष्य पूतात्मा हो जाताहै, इसलिए शासनके योग्यको ही शिष्य कहा गया है ।२२। श्रेष्ठ शिष्य शरीर आदि सब कुछ गुरु के समीप प्रदान करके भोजनकी सामग्री प्रथम गुरु को निवेदन करे और फिर उनकी आज्ञा से स्वयं भोजन करे ।२३। शिष्य सर्दव शिष्यत्व के योग्य होने से पुत्र ही है। जैसे जिह्वा रूपी इन्द्रिय से मन्त्र रूप बीज कर्ण मुद्रा में प्रविष्ट होने से इसकी उत्पत्ति होती है। इसी कारण इसे मन्त्र पुत्र कहा गया है। इसलिये शिष्य गुरु रूप पिता की सदा पूजा करे। उत्पन्न करने वाला पिता पुत्र को संसार में प्रत्यक्ष करता है ।२४-२५। परन्तु ज्ञान देनेवाला संसार से पार लगा देता है। इस प्रकार दोनोंका भेद जानकर गुरुरूप पिता का विशेष पूजन करे ।२६। अपने उपार्जित धनों से गुरु सेवा करे। चरण से शिर के केश पर्यन्त गुरु का सम्पूर्ण शरीर शिवलिंग के समान है ।२७। उनकी धन रूप से पादुकादि से चरण दबाने से अभिषेक और नैवेद्य से तथा भोजनादि से सत्कार करे ।२८।

गुरुपूजैव पूजास्याच्छिवस्य परमात्मनः ।
गुरुशेषं तु यत्सर्वमात्मशुद्धिकरं भवेत् ।।२९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरोः शेषः शिवोच्छिष्टंजलमन्नादिनिर्मितम् ।
शिष्याणां शिवभक्तानां ग्राह्यं भोज्यं भवेद्द्विजा ॥३०
गुर्वनुज्ञाविरहितं चोरवत्सकलं भवेत् ।
गुरोरपि विशेषज्ञं यत्नादगृह्णीत वै गुरुम् ॥३१
अज्ञानमोचतं साध्यं विशेषज्ञो हि मोचकः ।
आदौ च विघ्नशमनं कर्तव्यं कर्मपूर्तये ॥३२
निर्विघ्नेन कृतं सांगं कर्म वै सफलं भवेत् ।
तस्मात्सकलकर्मादौ विघ्नेशं पूजयेद् बुधः ॥३३
सर्ववाधानिवृत्यर्थं सर्वान्देवान्यजेद्बुधः ।
ज्वरादिग्रन्थिरोगाश्च बाधाह्याध्यात्मिक मता ॥३४
पिशाचजंबुकादीनां वल्मीकाद्युद्भवेत्तथा ।
अकस्मादेव गोधादि जंतूनां पतनेऽपि च ॥३५
गृहे-कच्छप-सर्प-स्त्री-दुर्जनादर्शनेपि च ।
वृक्षनारीगवादीनां प्रसूतिविषयेपि च ॥३६

गुरु के पूजन से ही भगवान् शिव का पूजन हो जाता है। गुरु के पूजन से शेष रहा द्रव्य आत्मा की शुद्धि करने वाला होता है।२९। जल तथा अन्नादि से निर्मित पदार्थ गुरु की पूजा से अवशिष्ट रहने पर शिवजी के उच्छिष्ट के तुल्य है, वह शिष्यों एवं भक्तों को ग्रहण करना चाहिए।३०। तथा गुरु की आज्ञा के बिना जो वस्तु ग्रहण की जाती है, वह चुरायी हुई वस्तु के समान है। गुरु भी विशेष विद्वान् हो, उसी को वरण करना उचित है।३१। अज्ञान भी दूर करना ही गुरु का कार्य है, और विशेष ज्ञानी गुरु ही अज्ञान को दूर करने में समर्थ है। पहिले कर्म पूर्ति के लिए विघ्नों की शान्ति होनी चाहिए।३२। विघ्न रहित तथा पूर्ण अङ्ग से किया गया कर्म ही सफल होता है, इसलिए सब कर्म के आदि में गणेशजी की पूजा करनी उचित है।३३। सब बाधाओं की शान्ति के हेतु ज्ञानी जन को सब देवताओं का यजन करना चाहिए। यह ज्वर, ग्रन्थि आदि सभी रोगों को दूर करने वाला है।३४। पिशाच जम्बुक आदि वाल्मीक आदि का उपद्रव तथा अक-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मात् गोधादि जन्तुओं का गिरना तथा घर में कच्छप, सर्प, स्त्री अथवा दुर्जनों का दिखाई देना अथवा वृक्ष, नारी और गो आदि का प्रसव दिखाई देना ।३५-३६।

भाविदुःखं समायाति तस्माते भौतिका मताः ।
अमेध्योशनिपातश्च महामारी तथैव च ॥३७
ज्वरमारी विषूचिश्च गोमारी च मसूरिका ।
जन्मर्क्षग्रहसंक्रांति ग्रहयोगाः स्वराशिके ॥३८
एतादृशे समुत्पन्ने भाविदुःखस्य सूचके ।
शांतियज्ञं तु मतिमान्कुर्यात्तद्दोषशांतये ॥३९
देवालयेऽथगोष्ठे वा चैत्ये वापि गृहांगणे ।
प्रादेशोन्नतधिष्ण्ये वै द्विहस्ते च स्वलंकृते ॥४०
भारमात्रं व्रीहिधान्यं प्रस्थाप्य परिसत्य च ।
मध्ये विलिख्य कमलं तथादिक्षु विलिख्य वै ॥४१
तंतुना वेष्टितं कुंभं नवगुरगुलधूपितम् ।
मध्ये स्थाप्य महाकुंभं तथा दिक्ष्वपि विन्यसेत् ॥४२

इनके दिखाई देने से भविष्य में दुःख की सम्भावना की जाती है। इससे यह भौतिक पाप होते हैं। अपवित्र वस्तु, वज्र का गिरना तथा महामारी ज्वरमारी विषूचिका, गौमारी, वसन्त रोग जन्म नक्षत्र पर ग्रहों का हो जाना, संक्रान्ति अथवा अपनी राशि पर ग्रहयोग का होना भौतिक पाप ही है ।३७-३८। यह सब अनिष्ट भविष्य में दुःख होने के सूचक हैं। बुद्धिमान को इस दोष की शान्ति के लिए, शान्ति-यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए ।३९। देवालय, गोष्ठ, यज्ञ स्थान, ग्रह अथवा आँगन में उच्च स्थान पर दो हाथ की वेदी बनाकर उसे अलंकृत करे ।४०। आठ सहस्र तोले जौ, धान्य स्थापित कर फैलावे और मध्य में कमल लिखकर दिशाओं में कमल लिखना चाहिए ।४१। सूत से लपेटे गए नवीन घट को धूप देकर मध्य में उस महाकुम्भ की स्थापना करे तथा दिशाओं के स्थान में भी कुम्भ स्थापित करे ।४२।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनालाम्रक-कर्चादीन्कलशांश्च तथाष्टसु ।
पूरयेन्मन्त्रपूतेन पंचद्रव्ययुतेन हि ॥४३
प्रक्षिपेन्वरत्नानि नीलादीन्क्रमशस्तथा ।
कर्मज्ञं च सपत्नीकमाचार्यं वरयेद् बुधः ॥४४
सुवर्ण प्रतिमां विष्णोरिंद्रादीनां च निक्षिपेत् ।
सशिरस्कं मध्यकुंभे विष्णुमावाह्य पूजयेत् ॥४५
प्रागादिषु यथामंत्रमिंद्रादीन्क्रमशो यजेत् ।
तत्तन्नाम्ना चतुर्थ्या च मनोऽन्तेन यथाक्रमम् ॥४६
आवाहनादिकं सर्वमाचार्येणैव कारयेत् ।
आचार्यऋत्विजासार्धं तन्मन्त्रान्प्रजपेच्छतम् ॥४७
कुम्भस्य पश्चिमे भागे जपान्ते होममाचरेत् ।
कोटिं लक्षं सहस्रं शतमष्टोत्तरं बुधाः ॥४८
एकाहं वा नवाहं वा तथा मंडलमेव वा ।
यथायोग्यं प्रकुर्वीत कालदेशानुसारतः ॥४९

नाल सहित आम की कर्चा आदि वस्तुओं को आठ कलशों पंच द्रव्य अर्थात् लौंग, कंकोल, और जावित्री जायफल कपूर सहित डालें तथा मंत्र पढ़कर उसे जल से भरदें ।४३। क्रम पूर्वक नील आदि नव-रत्नों को उसमें डाल दें तथा कर्म के ज्ञाता आचार्यकी भार्या सहित श्रवण करे । उस घड़े में विष्णु और इन्द्रादि की स्वर्ण प्रतिमा डालदें तथा पूर्ण-पात्र युक्त उस मध्य कुम्भ में भगवान् विष्णु का आह्वान तथा पूजन करें ।४४-४५। इन्द्रादि देवताओं को पूर्वादि दिशाओं में मन्त्र पूर्वक क्रम से पूजा करे तथा उन-उन देवताओं के नाम चतुर्थी विभक्ति युक्त लें और अन्त में नमः लगावें ।४६। आह्वानादि कृत्य आचार्य से करावें । उन विष्णु आदि देवताओं के मन्त्रोंको आचार्य भी ऋत्विजों सहित सौबार जपें ।४७। जप के अन्त में कुम्भ के पश्चिम भाग में आहुति दें । एक करोड़, एक लाख, एक सहस्र या एकसौ आठ आहुतियाँ देनी चाहिए ।४८। एक दिन, नौ दिन या चालीस दिन विचार पूर्वक यथायोग्य जप और हवन करना उचित है ।४९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमीहोमश्च शांत्यर्थे वृद्ध्यर्थे च पलाशकम् ।
समिदन्नाज्यकैर्द्रव्यैर्नाम्ना मन्त्रेण वा हुनेत् ॥५०
प्रारम्भे यत्कृतं द्रव्यं तत्क्रियांतं समाचरेत् ।
पुण्याहं वाचयित्वांते दिने संप्रोक्षयेज्जलैः ॥५१
आदित्यादीन्ग्रहानिष्टवा सर्वंसोमांत एव हि ।
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यान्नवरत्नं यथाक्रमम् ॥५२
एवं कृतेन यज्ञेन दोषशांतिमवाप्नुयात् ।
शांतियज्ञमिमं कुर्याद्वर्षेवर्षे तु फाल्गुने ॥५३
शिवप्रदक्षिणात्सर्वं पातकं नश्यति क्षणात् ।
दुःखस्य मूलं व्याधिर्हि व्याधेर्मूलं हि पातकम् ॥५४
धर्मेणैव हि पापानामपनोदनमीरितम् ।
शिवोद्देशे कृत्तोधर्मः क्षमः पापविनोदने ॥५५
अध्यक्षः शिवधर्मेषु प्रदक्षिणामितीरितम् ।
क्रियया जपरूपं हि प्रणवं तु प्रदक्षिणम् ॥५६

शान्ति के लिए शमी का हवन, वृद्धि के लिए पलाश हवन तथा समिधान्न घृत के पदार्थ और नाम मन्त्र उच्चारण पूर्वक हवन करना चाहिए ।५०। प्रारम्भ में जो द्रव्य किया जाता है, वही क्रिया के अन्त तक करना चाहिए पुण्याहवाचन कराने के पश्चात अन्त में कलशों के जल से प्रोक्षण करे ।५१। होम के अन्त में आदित्य आदि सब देवताओं का पूजन करे तथा ऋत्विजों को भी यथाक्रम नवरत्न आदि की दक्षिणा प्रदान करे ।५२। इस प्रकार यज्ञ करने से दोषों की शान्ति हो जाती है । यह शान्ति यज्ञ प्रतिवर्ष फाल्गुन मास में किया जाना उचित कहा है ।५३। शिवजी की प्रदक्षिणा करने से क्षण भर में सभी पापों का नाश होता है । दुःख का मूल व्याधि और व्याधि का मूल पातक कहा है ।५४। धर्म से ही पाप नष्ट होते हैं, शास्त्र का ऐसा ही कथन है। शिवजी के निमित्त जो धर्म किया जाता है, वही पाप को नष्ट करने में समर्थ है ।५५। शिव धर्मों में प्रदक्षिणा का सर्वाधिक महत्व है तथा क्रिया युक्त जप स्वरूप ओंकार को ही प्रदक्षिणा माना गया हैं ।५६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जननं मरणं द्वन्दं माया च क्रमितीरितम् ।
शिमस्य मायाचक्रं हि बलिपीठं तदुच्यते ।।५७
बलिपीठं समारभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण वै ।
पदेनांतरं गत्वा बलिपीठं समाविशत् ।।५८
नमस्कारं ततः कुर्यात्प्रदक्षिणामितिरितम् ।
निर्गमाज्जननं प्राप्तं नमस्त्वात्मसमर्पणम् ।।५९

जन्म और मरण को माया चक्र कहते तथा शिवजी का मायाचक्र बलि पीठ कहा जाता है ।५७। बलि पीठ से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणा के क्रम से दो चरण चलकर बलि पीठ के समीप पहुँचे ।५८। नमस्कार और प्रदक्षिणा कहते हैं । प्रदक्षिणा करने को जन्म तथा नमस्कार करने को आत्म-समर्पण कहा है ।५९।

।। वैदिक पार्थिव पूजन ।।

अथ वैदिकभक्तानां पार्थिवार्चानिगद्यते ।
वैदिकेनैव मार्गेण भुक्तिमुक्ति प्रदायनी ।।१
सूत्रोक्तविधिना स्नात्वा संध्यां कृत्वा यथाविधि ।
ब्रह्मयज्ञं विधायादौ ततस्तर्पणमाचरेत् ।।२
नित्येकं सकलं कर्म विधायानंतरं पुमान् ।
शिवस्मरणपूर्वं हि भस्मरुद्राक्षधारकः ।।३
वेदोक्तविधिना सम्यक्संपूर्णफलसिद्धये ।
पूजयेत्परया भक्तया पार्थिवं लिंगमुत्तमम् ।।४
नदीतीरे तडागे च पर्वते काननेऽपि च ।
शिवालये शुचौदेशे पार्थिवार्चा विधीयते ।।५
शुद्धप्रदेशसंभूतां मृदमाहृत्य यत्नतः ।
शिवलिंगं प्रकल्पेत सावधानतया द्विजः ।।६
विप्रे गौरास्मता शोणा बाहुजे पीतवर्णका ।
वैश्ये कृष्णा पादजाते ह्यथवा यत्र या भवेत् ।।७

सूतजी ने कहा—वेद ज्ञाता भक्तों को पार्थिव पूजा कही है । नाम वाली पूजा भुक्ति-मुक्ति की दाता ।१। अपने सूत्रोक्त विधान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से स्नान करके विधिवत् संध्या करे फिर ब्रह्म-यज्ञ करके तर्पण करना चाहिए ।२। फिर पुरुष को सम्पूर्ण नित्य कर्म करना चाहिए। पश्चात् शिवजी का स्मरण करके भस्म और रुद्राक्ष को धारण करे ।३। फिर वेदोक्त विधि के द्वारा सम्पूर्ण जल की सिद्धि के लिए परम भक्ति पूर्वक पार्थिव लिंग का पूजन करना चाहिए ।४। नदी के किनारे सरोवर के किनारे, पर्वत के ऊपर, वन में, शिवालय में, अथवा पवित्र देश में पार्थिव पूजा करने का विधान है। विप्रो ! पवित्र प्रदेश की मृत्तिका प्रयत्नपूर्वक लावे तथा सावधान होकर शिवलिंग का पूजन करे ।६। ब्राह्मण में गौर, क्षत्रिय में रक्त, वैश्य में पीत तथा शूद्र में कृष्ण रङ्ग की अथवा जैसी उपलब्ध हो सके वैसी मृत्तिका ले ।७।

संगृह्य मृत्तिकां लिंगं निर्माणार्थं प्रयत्नतः ।
अतीव शुभदेशे च स्थापयेत्तां मृदं शुभाम् ॥८
संशोध्य च जलेनापि पिंडीकृत्य शनैः शनैः ।
विधीयेत शुभं लिंगं पार्थिवं वेदमार्गतः ॥६
ततः संपूजयेद्भक्त्या भुक्तिमुक्तिफलाप्तये ।
तत्प्रकारमहं वच्मि शृणुध्वं संविधा नतः ॥१०
नमः शिवाय मन्त्रेणार्चन द्रव्यं प्रोक्षयेत् ।
भूरसीति च मन्त्रेण क्षेत्रसिद्धि प्रकारयेत् ॥११
आपोस्मानिति मन्त्रेण जलसंस्कारमाचरेत् ।
नमस्ते रुद्रमन्त्रेणस्फाटिका बन्धमुच्यते ॥१२
शंभवायति मन्त्रेण क्षेत्रशुद्धि प्रकारयेत् ।
नमः पूर्वेण कुर्यात्पञ्चामृतस्यापि प्रोक्षणम् ॥१३
नीलग्रीवाय मन्त्रेण नमः पूर्वेण भक्तिमान् ।
चरेच्छंकरलिंगस्य प्रतिष्ठापनमुत्तमम् ॥१४

उस मृत्तिका से यत्नपूर्वक लिंग का निर्माण करे और उस मृत्तिका को ही अत्यन्त पवित्र स्थल में स्थापित करे ।८। उसको जल योग से स्वच्छ कर धीरे-धीरे पिंडाकार कर वेद विधि के द्वारा सुन्दर शिवलिंग का निर्माण करे ।६। फिर भुक्ति-मुक्ति प्राप्त करने के निमित्त उस लिंग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का यथाविधि पूजन करे, अब तुम्हारे प्रति मैं उस पूजन का विधान कहता हूँ, तुम ध्यानपूर्वक श्रवण करो ।१०। 'नमः शिवाय' मन्त्र के द्वारा पूजन सामग्री का प्रोक्षण करे और 'भूरसि' मन्त्र के द्वारा क्षेत्र की सिद्धि करनी चाहिए ।११। 'आपोस्मान्' मन्त्र द्वारा जल का संस्कार करना चाहिए तथा 'नमस्ते रुद्र' इस मन्त्र के द्वारा स्फटिक बन्ध करना उचित है ।१२। 'नमः शम्भवाय' मन्त्र से क्षेत्र शुद्धि करना चाहिए तथा 'नमः' पूर्वक पञ्चामृतका प्रोक्षण करना चाहिए ।१३। भक्तिमान पुरुष को 'नमो-नीलग्रीवाय' मन्त्र के द्वारा शिवलिंग की प्रतिष्ठा करनी चाहिए ।१४।

भक्तितस्तत एतते रुद्रायेति च मन्त्रतः ।
आसनं रमणीयं वै दद्याद्वै दिकमार्गकृत् ।।१५
मानो महान्तमिति च मन्त्रेणावाहनं चरेत् ।
'याते रुद्रेण' तन्त्रेण संचरेदुपवेशनम् ।।१६
मन्त्रेण यामिषुमिति न्यासं कुर्य्याच्छिवस्य च ।
अध्यवोचदितिप्रेम्णा ऽधिवासंमनुना चरेत् ।।१७
मनुनासौ जीव इति देवता न्यासमाचरेत् ।
असौ यो ऽपसर्पतीति चाचरेदुपसर्पणम् ।।१८
नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति पाद्यं मनुनाहरेत् ।
अर्घ्यं च रुद्रगायत्र्याचमनं त्र्यंबकेण च ।।१९
पयः पृथिव्यामिति च पयसा स्नानमाचरेत् ।
दधिक्राव्णेति मत्रेण दधिस्नानं च कारयेत् ।।२०
घृतस्नाने खलु घृतं घृतं यावेति मन्त्रतः ।
मधुवाता मधुनक्तं मधुपान्न इतिऋचा ।।२१
मधुखण्ड स्नापनंप्रोक्तमितिपञ्चामृतं स्मृतम् ।
अथवा पाद्यमन्त्रेण स्नानं पञ्चामृतेन च ।।२२

'एतते' मन्त्र के द्वारा भक्तिभाव पूर्वक तथा वेद विधि से सुन्दर एवं रमणीय आसन प्रदान करना चाहिए ।१५। 'मानो महान्त' इस मन्त्र के द्वारा आह्वान करे और 'यातेरुद्र' मन्त्रके द्वारा उपवेशन करना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए ।१६। 'यामिषु' इस मन्त्र से शिवजी का न्यास करके 'अध्यवोचदिति' मन्त्र के द्वारा प्रेम-पूर्वक अधिवासन करना चाहिए ।१७। 'असौ जीव' इस मन्त्र के द्वारा वेद न्यास करना तथा 'असौयोऽवसर्पतीति' मन्त्र से उपसर्पण करना चाहिए ।१८। 'नमोस्तु नीलग्रीवाय' मंत्र से पाद्य स्नान करके रुद्र गायत्री से अर्घ्य देनां और 'त्र्यम्बक्' मन्त्र से आचमन कराना चाहिए ।१९। 'दधिक्राव्ण' मन्त्र से दधि स्नान करावे तथा 'घृतयाव' मन्त्र से घृत-स्नान और 'पयः पृथिव्याम्' से दुग्ध स्नान कराना चाहिए ।२०। 'मधुवाता' मधुमान्, इन मन्त्रों के द्वारा मधु और खांड से स्नान करावे। यह पञ्चामृत है, अथवा पाद्य मन्त्रों के द्वारा पञ्चामृत से स्नान कराना चाहिए ।२१-२२।

मानस्तोके इति प्रेम्णा मन्त्रेण कटिबन्धनम् ।
नमो धृष्णवे इति वा उत्तरीयं च धारयेत् ॥२३
याते हेतिरिति प्रेम्णा ऋक्चतुष्केण वैदिकः ।
शिवाय विधिना भक्तश्चरेद्वस्त्रसमर्पणम् ॥२४
नमः श्वभ्य इति प्रेम्णा गन्धं दद्याहृष्टा सुधीः ।
नमस्यक्षम्य इति चाक्षतान्मत्रेण चार्पयेत् ॥२५
नमः पार्याय इति वा पुष्प मन्त्रेण चार्पयेत् ।
नमः पर्ण्याय इति वा विल्वपत्रसमर्पणम् ॥२५
नमः कपर्दिने धूपं दद्यात्यथाविधि ।
दीपं दद्यात्यथोक्तं तु नमः आशवे इत्यृचा ॥२७
नमो ज्येष्ठायदद्यान्नैवेद्यमुत्तमम् ।
मनुना त्र्यम्वकंमिति पुनराचमनं स्मृतम् ॥२८

'मानस्तोके' मन्त्र से कटि बन्धन करे तथा 'नमो धृष्णवे' इससे उत्तरीय धारण करवे 'याते-हेति' इन चार मन्त्रों से प्रेमपूर्वक वस्त्र समर्पित करे ।२३-२४। 'नमःश्वभ्य' मन्त्र से प्रेम-पूर्वक गन्ध समर्पित करे और 'नमस्यक्षम्य' मन्त्र से अक्षत चढ़ावे ।२५। 'नमः पार्याय मन्त्र से पुष्प भेंट करें तथा 'नमः पर्ण्याय' मन्त्र से विल्वपत्र का समर्पण करना चाहिए .२६। 'नमः कपर्दिने' इस मन्त्र से धूप दान करे तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नमः आशवे' मन्त्र से दीप दिखावे ।२७। 'नथो ज्येष्ठाय' मन्त्रसे नैवेद्य देकर, त्र्यम्बकम्' मन्त्र के द्वारा आचमन कराना चाहिए ।२८।

इमारुद्रायेति ऋचा कुर्य्यात्फलसमर्पणम् ।
नमो व्रज्यायेति ऋचा सकलं शंभवेऽर्पयेत् ।।२९
मानो महांतमिति च मानस्तोके इति ततः ।
मन्त्रद्वये नैकदशाक्षतै रुद्रान्प्रपूजयेत् ।।३०
हिरण्यगर्भ इति ऋचा दक्षिणां हिसमर्पयेत् ।
देवस्थंत्वेति मन्त्रेण ह्यभिषेकंचरेद्बुधः ।।३१
दीपमन्त्रेण वा शंभो र्नीराजनविधिं चरेत् ।
पुष्पांजलिं चरेद्भक्त् याइमारुद्राय च ऋचा ।।३२
मानो महान्तमिति च चरेत्प्राद्यः प्रदक्षिणाम् ।
मानस्तोकेति मन्त्रेण साष्टागं प्रणमेत्सुधीः ।।३३
एष ते इति मन्त्रेण शिवमुद्रां प्रदर्शयेत् ।
यतो यत इत्यभयां ज्ञानाख्यां त्र्यम्बकेण च ।।३४
मनः सेनान्ये मन्त्रेण महामुद्रां प्रदर्शयेत् ।
दर्शयेद्धनु मुद्रां च नमो गाम्य ऋचानया ।।३५
पंचमुद्राः प्रदर्श्याथ शिवमन्त्रजपं चरेत् ।
शतरुद्रिय मन्त्रेण जपेदेवृ ह्विचक्षणः ।।३६
ततः पञ्चांगपाठं च कुर्य्याद्वेदविचक्षणः ।
देवागात्विति मन्त्रेण कुर्याच्छंभोर्विसर्जनम् ।।३७

'इमा रुद्रायेति' मन्त्र से फल समर्पित करे और 'नमो व्रज्यायेति' मन्त्र से कलश अर्पित करे ।२९। 'मानो महान्त' और मानस्तोके इन मन्त्रों से रुद्रों को अक्षत भेंट करे ।२०। 'हिण्य गर्भ' मन्त्र से दक्षिणा दे तथा 'देवस्थंत्वेति' मन्त्र से अभिषेक करे ।२१। दीपमन्त्र से शिवजी का नीराजन करय याइमारुद्राय' मन्त्र से पुष्पांजलि समर्पित करे ।३२। 'मानो महान्त' मन्त्र से प्रदक्षिणा करे और 'तानस्तोके' मन्त्रसे साष्टांग प्रणाम करना चाहिए ।३३। 'एषते' मन्त्र से शिवजी को मुद्रा दर्शन करावे; 'यतोयत' मन्त्र से त्र्यम्बकम् मन्त्र से, 'नमः सेनान्ये' मन्त्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से महामुद्रा दिखावे एवं नमोगोम्य मन्त्र से धेनु मुद्रा का दर्शन करावे ।३४-३५। फिर पाँच मुद्रा को दिखाकर शिव मन्त्र का जप करे। वेद ज्ञाता को शत रुद्रिय मन्त्र का जप करना चाहिए ।३६। फिर वेद विज्ञ को पंचाङ्ग का पाठ करना चाहिए तथा 'देवागात्' मन्त्र से शिवजी का विसर्जन करना श्रेयस्कर है ।३७।

शिवनैवेद्यभक्षणनिर्णय और विल्वमाहात्म्य

अग्राह्यं शिवनैवेद्यमिति पूर्वं श्रुतं वचः ।
ब्रूहि तन्निर्णयं विल्व माहात्म्यमपि सन्मुने ॥१
शृणुध्वं मुनयः सर्वे सावधानतयाधुना ।
सर्वं वदामि संप्रीत्या धन्या यूयं शिवव्रताः ॥२
शिवभक्तः शुचिः शुद्धः सद्व्रतीदृढनिश्चयः ।
भक्षयेच्छिवनैवेद्यं त्यजेदग्राह्यभावनाम् ॥३
दृष्ट्वापि शिवनैवेद्यं यांति पापानि दूरतः ।
भुक्ते तु शिवनैवेद्यं पुण्यान्यायांति कोटिशः ॥४
अलं यागसहस्रेणाप्यलंयागार्बुदैरपि ।
भक्षिते शिवनैवेद्ये शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥५
यद्गृहे शिवनैवेद्यं प्रचारोऽपि प्रजायते ।
तद्गृहं पावनं सर्वमन्यपावनकारणम् ॥६
आगतं शिवनैवेद्यं गृहीत्वा शिरसा मुदा ।
भक्षणीयं प्रयत्नेन शिवस्मरण पूर्वकम् ॥७

ऋषियों ने कहा—शिवजी का नैवेद्य अग्राह्य सुना जाता है, इस लिए आप उसके विषय में कहें और विल्व का माहात्म्य भी सुनावें ।१। सूतजी बोले मुनिवरो ! तुम शिवजी के भक्त होने से धन्य हो। मैं सब वार्त्ता प्रीतिपूर्वक कहता हूँ, ध्यान से श्रवण करो ।२। शिवजी का भक्त पवित्र शुद्ध, सद्व्रती दृढ़ निश्चयी होता है। वह शिवजी का नैवेद्य भक्षण करले तथा अग्राह्य भावना का त्याग कर दे। ।३। शिवजी के नैवेद्य को दूर से देखकर भी पाप पलायमान कर जाते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तथा उसके भक्षण करने से अनेक पुण्यों की प्राप्ति होती है। सहस्र और अरब यज्ञ करने से उतना क्या पुण्य है ? शिवजी का नेवैद्य भक्षण करने से उनको सायुज्य पद की प्राप्ति होती है। जिस गृह में शिवजी के नेवैद्य का प्रचलन है वह गृह अत्यन्त पवित्र है तथा निकट के अन्य गृहों को भी पवित्र कर देता है।४-६। शिवजी का नैवेद्य आता हुआ देखकर उसे शिर से ग्रह से ग्रहण करें और शिवजी का स्मरण करते हुए, प्रयत्न पूर्वक भक्षण करे।७।

आगतं शिवनैवेद्यमन्यदाग्राह्यमित्यपि ।
बिलंबे पापसंबंधों भवत्येव हि मानवे ॥८
न यस्य शिवनैवेद्यग्रहणेच्छा प्रजायते ।
स पापिष्ठो गरिष्ठः स्यान्नरकं यात्यपि ध्रुवम् ॥९
स्नापयित्वा विधानेन यो लिङ्गस्नापनोदकम् ।
त्रिः पिवेत्त्रिविधं पापं तस्येहाशु विनश्यति ॥१०
अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं जलम् ।
शालिग्रामशिला सङ्गात्सर्वं याति पवित्रताम् ॥११
लिङ्गोपरि च यद्द्रव्यं तदग्राह्यं मुनीश्वराः ।
सुपवित्रं च तज्ज्ञेयं यल्लिगस्पर्शबाह्यतः ॥१२
विल्वमूले महादेवं लिंग रूपिणमव्ययम् ।
यः पूजयति पुण्यात्मा स शिवं प्राप्नुयाद् ध्रुवम् ॥१३
बिल्वमूले जलैर्यस्तु मूर्द्धानमभिषिंचति ।
स सर्वतीर्थस्नातः स्यात्स एव भुवि पावनः ॥१४

जो शिव के आये हुए नैवेद्य को अग्राह्य मानकर उसके भक्षण में विलम्ब करता है।८। शिव का नैवेद्य ग्रहण करने की जिसे इच्छा नहीं होती, वह महापापी है, उसे नरक मिलता है।९। विधि सहित स्नान कराये हुए लिंग के जल को तीन बार पीने से तीनों पाप नष्ट होते हैं।१०। शिव का अग्राह्य नैवेद्य पत्र, पुष्प, जल सब कुछ शालि-ग्राम शिला के स्पर्श से पवित्र हो जाती है।११। हे मुनियों ! शिवलिंग के ऊपर का द्रव्य अग्राह्य है, परन्तु जो पदार्थ लिंग स्पर्श से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका जन्म निष्फलही है ।६२। हे मुने ! पण्डित जन कहते हैं कि ललाट आदि में त्रिपुण्ड की तीन रेखाएँ होती हैं ।६३।

भ्रुवोर्मध्यं समारभ्य यावदन्तो भवेद्भ्रुवोः ।
तावत्प्रमाणं संधार्यं ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम् ।।६४
मध्यमानामिकांगुल्या मध्ये तु प्रतिलोमतः ।
अगुष्ठेन कृता रेखा त्रिपुण्ड्राख्याभिधीयते ।।६५
मध्येअंगुलिभिरादाय तिसृभिर्भस्मयलतः ।
त्रिपुण्ड्रं धारयेद् भक्त्या भुक्तिमुक्तिप्रदं परम् ।।६६
तिसृणामपि रेखानां प्रत्येकं नवदेवताः ।
सर्वत्रांगेषु ता वक्ष्ये सावधानतया शृणु ।।६७
अकारो गार्हपत्याग्निभूर्धमश्च रजोगुणः ।
ऋग्वेदश्च क्रियाशक्ति प्रातः सवनमेव च ।।६८
महादेवश्च रेखायाः प्रथमायाश्च देवता ।
विज्ञेया मुनिशार्दूला शिवदीक्षापरायणैः ।।६९
उकारौ दक्षिणाग्निश्च नभस्तत्वं यजुस्तथा ।
मध्यदिनं च सवनमिच्छाशक्त्यंतरात्मकौ ।।७०

भौं के मध्य से भौंके अन्त तक प्रमाण का त्रिपुण्ड मस्तक में लगाने ।६४। मध्यमा और अनामिका से मध्यम में प्रतिलोम से अंगूठे द्वारा की हुई रेखा त्रिपुण्ड है ।६५। तीन अंगुलियों के भाग से भस्म को ग्रहणकर भक्तिपूर्वक त्रिपुण्ड का धारण करे । यह भोग एवं मोक्षका देने वाला है ।६६। तीनों रेखाओं के क्रम से नौ देवता सब शरीर में हैं, उसे कहता हूँ ।६७। आकार गार्हपत्य अग्नि है, भूर रजोगुण हैं, क्रिया शक्ति ऋग्वेद और प्रातः सवन है ।६८। प्रथम रेखा के देवता महादेव हैं । हे मुने ! शिव दीक्षा परायण पुरुषों को यह बात अवश्य जाननी चाहिये ।६९। उकार दक्षिणाग्नि है, आकाश सत्वगुण, यजुर्वेद, मध्य दिन का सवन इच्छा शक्ति अन्तरात्मा हैं ।७०।

महेश्वरश्च रेखाया द्वितीयायाश्च देवता ।
विज्ञेया मुनिशार्दूल शिवदीक्षापरायणैः ।।७१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकाराहवनीयौ च परमात्मा तमोदिवो ।
ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीयं सवनं तथा ।।७२
शिवश्चैव च रेखायास्तृतीयायाश्च देवता ।
विज्ञेया मुनिशार्दूल शिवदीक्षापरायणैः ।।७३
एवं नित्यं नमस्कृत्य सद्भक्त्या स्थानदेवताः ।
त्रिपुण्ड्रं धारयेच्छुद्धो भुक्ति मुक्ति च विंदति ।।७४
एतेषां नाममात्रेण त्रिपुण्ड्रं धारयेदबुधाः ।
कुर्याद्वा षोडशस्थाने त्रिपुण्ड्रं तु समाहितः ।।७५
शीर्षके च ललाटे च कंठे चांसद्वये भुजे ।
कर्पूरे मणिबन्धे च हृदये नाभिपार्श्वके ।।७६
पृष्ठे चैवं प्रतिष्ठाय यजेत्तत्राश्विदैवते ।
शिवं शक्ति तथा रुद्रमीशंनारदमेव च ।।७७

दूसरी रेखा के देवता महेश्वर है । दीक्षा वाले पुरुषों को इसका जानना आवश्यक है ।७१। मकार आह्वनीय परमात्मा स्वरूप, तमोगुण स्वर्ग रूप, ज्ञान शक्ति सामवेद तृतीय सवन है ।७२। तृतीय रेखा के देवता शिव हैं । हे मुनिवरो ! शिव दीक्षा परायण मनुष्यों को इनका ज्ञान आवश्यक है ।७३। इस प्रकार सद्भक्ति—पूर्वक स्थान के देवताओं को नमस्कार करे तथा शुद्ध होकर त्रिपुण्ड धारण करे तो भुक्ति-मुक्ति की प्राप्ति होती है ।७४। शिव के केवल नाम से पंडितों को त्रिपुण्ड धारण करना चाहिए अथवा सोलह स्थानों में त्रिपुण्ड धारण करे ।७५। शिर, ललाट, कंठ, कन्धे, भुजायें, कर्पूर, मणिवन्ध, हृदय, नाभि दोनों पार्श्व ।७६। एवं पीठ में स्थापित कर अश्विनीकुमार तथा शिव शक्ति, रुद्र, ईश, नारद का यजन करें ।७७।

वामादि नवशक्तीश्च एताः षोडश देवताः ।
नासत्यो दस्रकश्चैव अश्विनौ द्वौ प्रकीर्तितौ ।।७८
अथवा मूर्द्धिकेशे च कर्णयोर्वदने तथा ।
वाहुद्वये च हृदये नाभ्यामुरुयुगे तथा ।।७९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानुद्वये च पदयोः पृष्ठभागे ज षोडश ।
शिवश्चन्द्रश्चरुद्रः को विघ्नेशो विष्णुरेव वा ॥८०
श्रीश्चैव हृदये शम्भुस्तथा नाभौ प्रजापतिः ।
नागश्च नागकन्याश्च उभयोऋषिकन्यकाः ॥८१
पादयोश्च समुद्राश्च तीर्थाः पृष्ठे विशालतः ।
इत्येव षोडश स्थानमष्टस्थानमथोच्यते ॥८२
गुह्यस्थानं ललाटञ्च कर्णद्वयमनुत्तमम् ।
स्कन्दयुग्मं च हृदयं नाभिरित्येवमष्टकम् ॥८३

वामादि नव शक्ति यह षोडश देवता तथा नासत्य एवं दस्र, यह दो अश्विनीकुमार, शिखा, केश, कान मुख, बाहु, हृदय, नाभि और दोनों उरु, दोनों जानु, दोनों चरण, पृष्ठभाग इन षोडश स्थानों में धारण करे, शिव, चन्द्र, ब्रह्मा, विघ्नेश और विष्णु, हृदय में श्री, नाभि में शिव तथा प्रजापति, नाग, नागकन्या दोनों ऋषि कन्या चरणों में समुद्र, पृष्ठ में तीर्थ यह षोडश स्थान है । अब आठ स्थान कहते हैं गुह्य स्थान, ललाट, कर्ण द्वय, स्कन्द द्वय हृदय और नाभि आठ स्थान हैं, ब्रह्मा और सप्तर्षि इनके देवता हैं ।७८-८३।

ब्रह्मा च ऋषयः सप्त देवताश्च प्रकीर्तिताः ॥८४
अथवा मस्तकं बाहु हृदयं नाभिरेव च ।
पञ्चस्थानान्यमून्याहुर्धारणे भस्मविज्जनाः ॥८५
त्रिनेत्रं त्रिगुणाधारं त्रिदेवं जनकं शिवम् ।
स्मरन्नमः शिवाये ललाटे तु त्रिपुण्ड्रकम् ॥८६
ईशाभ्यां नमः इत्युक्त्वा पार्श्वयोश्च त्रिपुण्ड्रकम् ।
बीजाभ्यां नमः इत्युक्त्वा धारयेत्तु प्रकोष्ठयोः ॥८७
कुर्य्यादधः पितृभ्यां च उमेशाभ्यां तथोपरि ।
भीमायेति ततः पृष्ठे शिरसः पश्चिमे तथा ॥८८

अथवा मस्तक, हृदय, भुजायें, नाभि इन ५ स्थानों में भस्म धारण करे । तीन नेत्र, तीन गुणों के आधार, तीनों वेदों को प्रकट करने वाले शिवजी के स्मरण पूर्वक 'नमः शिवाय' मन्त्र से त्रिपुण्ड धारण करे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ईशाभ्यां नमः कहकर दोनों पार्श्वों में त्रिपुण्ड धारण करे। बीजाभ्यां नमः मन्त्र कहकर प्रकोष्ठ से धारण करे, कूर्पराय नमः कहकर इससे नीचे और पितृभ्यां नमः कहकर दोनों ओर ईशाभ्यां नमः' कहकर इससे ऊपर तथा 'भीमाय नमः' कहकर पीठ और शिर के पश्चिम में भी धारण करे।८४-८८।

रुद्राक्ष माहात्म्य वर्णन

शौनकर्षे महाप्राज्ञ शिवरूप महामते।
श्रृणु रुद्राक्षमाहात्म्यं समात्कथयाम्यहम् ॥१
शिवप्रियवमो ज्ञेयो रुद्राक्षः परपावनः।
दर्शनात्स्पर्शनाज्जाप्यात्सर्वपापहरः स्मृतः ॥२
पुरा रुद्राक्षमहिमा देव्यग्रे कथितो मुने।
लोकोपकरणार्थाय शिवेन परमात्मना ॥३
श्रृणु देवि महेशानि रुद्राक्षमहिमा शिवे।
कथयामि तव प्रीत्या भक्तानां हितकाम्यता ॥४
श्वेतरक्ताः पीतकृष्णा वर्णाज्ञेयाः क्रमाद् बुधैः।
स्वजातीयं नृभिर्धार्यं रुद्राक्षं वर्णतः क्रमात् ॥५
वर्णैस्तु तत्फलं धार्यं भुक्तिमुक्तिफलेप्सुभिः।
शिवभक्तैर्विशेषेण शिवयोः प्रीतये सदा ॥६
धात्रीफलप्रमाणंयच्छ्रेष्टमेतदुदाहृतम्।
बदरीफलमात्रं तु मध्यमं सप्रकीर्त्तितम् ॥७

सूतजी ने कहा....हे शौनक! अब साक्षात् शिव स्वरूप रुद्राक्ष का माहात्म्य कहता हूँ, तुम ध्यान से सुनो।१। अत्यन्त पवित्र, रुद्राक्ष, शिवजी का अत्यन्त प्रिय हैं, दर्शन, स्पर्श तथा जप से सम्पूर्ण पापों का नाशक है।२। प्रथम भगवान् शिव ने लोकोपकार के लिए भगवती के समक्ष रुद्राक्ष की महिमा वर्णन की थी।३। शिवजी ने कहा था—हे महेशानि! रुद्राक्ष की महिमा श्रवण करो। तुम्हारी प्रीति के कारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा भक्तों के हित की इच्छा से कहता हूँ ।४। विद्वानों को इनके क्रमशः श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण भेदों का ज्ञान आवश्यक है। अपनी जाति के अनुसार वर्णों के ही रुद्राक्ष धारण करे ।५। भुक्ति-मुक्ति का इच्छुक पुरुष उसके फल को अवश्य धारण करे, शिव-भक्तों को तो शिवा और शिव की प्रीति के लिए इसका धारण करना अनिवार्य है श्रेष्ठ रुद्राक्ष आँवले के फल के समान है, बदरीफल के समान मध्यम है ।६-७।

अधमं चणक मात्रस्यात्प्रक्रियैता परोच्यते ।
शृणु पार्वति सुप्रीत्या भक्तानां हितकाम्यया ॥८
बदरीफलमात्रं च यत्स्यात्किल महेश्वरि ।
तथापि फलदं लोके सुखं सौभाग्यवर्द्धनम् ॥९
धात्रीफलसमं यत्स्यात्सर्वारिष्टविनाशनम् ।
गुञ्जया सदृशं यत्स्यात्सर्वार्थफलसाधनम् ॥१०
यथा यथा लघु स्याद्वै तथाधिकफलप्रदम् ।
एकैकतः फलं प्रोक्तं दशांशैरधिकं बुधैः ॥११
रुद्राक्षाधारणं प्रोक्तं पापनाशनहेतवे ।
तस्माच्च धारणीयो वै सर्वार्थसाधनो ध्रुवम् ॥१२
यथा च दृश्यते लोके रुद्राक्षः फलदः शुभः ।
न तथा दृश्यतेऽन्या च मालिका परमेश्वरि ॥१३
समा स्निग्धा दृढाः स्थूलाः कंटकैः संयुताः शुभाः ।
रुद्राक्षाः कामदा देवि भुक्तिमुक्तिप्रदाः सदाः ॥१४

चणक प्रमाण को अधम समझो। हे पार्वती! इनकी प्रक्रिया को ध्यान से सुनो, भक्तों के हितार्थ कथन करता हूँ ।८। हे महेश्वरी! बेर प्रमाण का रुद्राक्ष भी लोक में सुख सौभाग्य की बृद्धि करने वाला है ।९। धात्री फल के बराबर का रुद्राक्ष सम्पूर्ण अरिष्ट गमन करता है तथा चौंटली के प्रमाण का रुद्राक्ष सर्वार्थ साधक है ।१०। जितना छोटा होगा उतना ही अधिक फलदायक होगा। परस्पर एक दूसरे से एक—एक दशांश अधिक फल प्रदान करता है ।११। रुद्राक्ष को पाप-नाश के निमित्त धारण किया जाता है। इसलिए सम्पूर्ण अर्थों की सिद्धि चाहने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वालों को इसे धारण करना चाहिए।१२। संसार में रुद्राक्ष की माला जितनी फलदायक है उतनी अन्य कोई माला नहीं।१३। सम, 'स्निग्ध, दृढ़ स्थूल, काँटों वाले शुभ रुद्राक्ष कामनाप्रद है तथा यह सदा भुक्ति-मुक्ति प्रदायक हैं।१४।

क्रृमिदुष्ट छिन्नभिन्नं कंटकैर्हीनमेव च।
व्रणयुक्तमवृत्तं रुद्राक्षान्षडविसर्जयेत ॥१४
स्वयमेव कृतद्वारं रुद्राक्ष स्यादिहोत्तमम्।
यतु पौरुषयत्नेन कृतं तन्मध्यमं भवेत् ॥१६
रुद्राक्षधारणं प्राप्तं महापातकनाशनम्।
रुद्रसंख्या शतं धृत्वा रुद्ररूपो भवेन्नरः ॥१६
एकादशशतानीह धृत्वा यत्फलमाप्यते।
तत्फलं शक्यते नैव वक्तुं वर्षशतैरपि ॥१८
शतार्द्धेन युतैः पञ्च शतैर्वै मुकुटं मतम्।
रुद्राक्षै विरचेतसम्यग्भक्तिमान्पुरुषो वरः ॥१६
त्रिभिः शतैः षष्टियुक्तैस्त्रिरावृत्या तथा पुनः।
रुद्राक्षै रुपवीतं च निर्मीयादमक्तितत्परः ॥२६
शिखायां च त्रयं प्रोक्तं रुद्राक्षाणां महेश्वरि।
कर्णयोः षट् च षट् चैव वामदक्षिणयोस्तथा ॥२१

क्रृमियों से खाये हुए, छिन्न-भिन्न काँटे रहित, गोलाई से रहित तथा व्रणयुक्त, यह छः प्रकार से रुद्राक्ष त्याज्य हैं।१५। जिस रुद्राक्ष में स्वयं छेद हो वही उत्तम है, मनुष्य के द्वारा जिसमें छेद किया गया हो उसे मध्यम समझो।१६। रुद्राक्ष धारण से महा पाप भी दूर हो जाते हैं, ११ सौ रुद्राक्ष धारण करने वाली मनुष्य रुद्र स्वरूप हो जाता है।१७-११। सौ रुद्राक्षो के धारण का जो फल होता है वह सौ वर्षों में भी वर्णन नहीं हो सकता।१८। साढ़े पाँच सौ रुद्राक्षों को जो धारण करता है, वह पुरुष कहा गया है।१९। तीन सौ आठ रुद्राक्षों की तीन लड़ बनाकर यज्ञोपवीत धारण पूर्वक भक्ति करने वाला।२०। शिखा में तीन, कानों में ६ दोनों ओर पहिनें।२१।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतमेकोत्तरं कंठे बाह्वो वै रुद्रसंख्यया ।
कूर्पद्वारयोस्तत्र मणिबन्धे तथा पुनः ॥२२
उपवीते त्रयं धार्यं शिवभक्तिरतैर्नरैः ।
शेषानुर्वरितान्पंच सम्मितान्धारयेत्कटौ ॥२३
एतत्संख्या धृता येन रुद्राक्षाः परमेश्वरि ।
तद्रूपंतु प्रणम्यं हि स्तुत्यं सर्वैर्महेशवत् ॥२४
एवंभूतं स्थितं ध्याने यदा कृत्वा शनैर्जनम् ।
शिवेते व्याहरंश्चैव दृष्ट्वा पापैः प्रमुच्यते ॥२५
शताधिकसहस्रस्य विधिरेषः प्रकीर्त्तितः ।
तदभावे प्रकारोऽन्यः शुभः स प्रोच्यते मयाः ॥२६
शिखायामेकरुद्राक्षः शिरसा त्रिशतं वहेत् ।
पञ्चाशच्च गलें दध्याद्बाह्वोः षोडश षोडश ॥२७
मणिबन्धे द्वादश द्वि स्कन्धे पञ्चशतं वहेत् ।
अष्टोत्तर शतैर्मव्यमुपवीतं प्रकल्पयेत् ॥२८

कंठ में एक सौ एक, बाँहों में ग्यारह और इसी प्रकार कपूर और मणिबन्ध में करें ।२२। यज्ञोपवीत में तीन और कटि में पाँच इस प्रकार रुद्राक्ष धारण करने वाले का स्वरूप शिवजी के समान होता है और यह स्तुति योग्य हो जाता है ।२३-२४। इस प्रकार ध्यान में स्थित आसन पर बैठकर शिव नाम का उच्चारण करते हुए मनुष्य का दर्शन कर प्राणी पाप-मुक्त हो जाता है ।२५। यह १७ सौ की विधि कही गई है, ऐसा न कर सकने वालों के लिए जो विधि है, वह कहता हूँ ।२६। शिखा में एक, शिर में तीस, कंठ में पचास और दोनों भुजाओं में सोलह २ धारण करे ।२७। मणिबन्ध में बारह, स्कन्ध में पाँच सौ तथा यज्ञोपवीत एक सौ आठ का बनावें ।२८।

एवं सहस्ररुद्राक्षन्धारयेद्यो दृढव्रतः ।
तं नमंति सुरासर्वे यथा रुद्रस्तथैव सः ॥२९
एकं शिखायां रुद्राक्ष चत्वारिंशत्तु मस्तकें ।
द्वात्रिंशत्कण्ठदेशे तु वक्षस्यष्टोत्तर शतम् ॥३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकैकं कर्णयो: षट् बाह्वो: षोडश ।
करयोरविमानेन द्विगुणेन मुनीश्वर ।।३१
संख्या प्रीतिर्धृतायेन सोऽपि शैवजन: पर: ।
शिववत्पूजनीयो हि वंचस्सर्वैरभीक्षणश: ।।३२
शिरसीशान मन्त्रेण कर्णे तत्पुरुषेण च ।
अघोरेण गले वार्यं तेनैव हृदयेऽपि च ।।३३
अघोर बीजमन्त्रेण करयोर्धारयेत्सुधी: ।
पञ्चदशाक्षग्रथितां वामदेवेन चोदरे ।।३४
पञ्चब्रह्मभिरंगैश्च त्रिमालां पंच सप्त च ।
अथवा मूलमन्त्रेण सर्वानिक्षांस्तु धारयेत ।।३५

इस प्रकार दृढ़वती होकर जो हजार रुद्राक्ष धारण करता हैं, वह रुद्र के समान होता है और सब देवता नमस्कार करते हैं ।२६। शिखा में एक, मस्तक में चालीस, कंठ में बत्तीस और हृदय में एक सौ आठ ।३०। दोनों कानों में ६-६ भुजाओं में सोलह-२ हाथ में बारह या चौबीस ।३१। जिसने प्रीति-सहित धारण किये हैं वह भी शिव-भक्त हैं तथा सभी के द्वारा वन्दनीय और पूजनीय है ।३२। ईशान मन्त्र से शिर में तत्पुरुष मन्त्र से कानों में अघोर मन्त्र से कंठ और हृदय में रुद्राक्ष धारण करे ।३३। हाथों में अघोर और बीज मन्त्र से तथा पन्द्रह रुद्राक्ष उदर में वामदेव मन्त्र से धारण करे ।३४। सद्योजातादि पञ्च ब्रह्मा मन्त्रों द्वारा अन्य अङ्गों में तीन, पाँच या सात माला धारण करे अथवा मूल मन्त्र से सभी रुद्राक्षों की धारणा करे ।३५।

मद्यं मासं तु लशुन पलाण्डुं शिग्रुमेव च ।
श्लेष्मांतकं विढवराहं भक्षणे वर्जयेत्तत: ।।३६
वलक्षं रुद्रद्राक्षां द्विज तनुभिरेवेहविहित सुरक्तं क्षत्राणां
प्रमुदितमुमेपीममसकृत् ।
तो वैश्यैर्धार्यं प्रतिदिन समावश्यकमहो तथा कृष्णं
शूद्रै: श्रुतिगदितमार्गीयमगजे ।।३७
वर्णीवनीं गृहयतीति नियमेन दध्तादेतद्रहस्यं परमोनहि
जातु तिष्ठेत् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्राक्षधारणमिदं सुकृतैश्च लभ्यं त्यक्त् वेदमेतदखिलान्न-
रुकान्प्रयांति ॥३८
आदावामलकात्स्वतो लघुतरा रुग्णास्ततः कंटकैः संवष्टाः
कृमिभिस्तनूपकरणच्छिद्रेणहीनास्तथा ।
धार्योनैव शुभेप्सुभिश्चणकवद्रु द्राक्षमप्यंततो रुद्राक्षो-
मम लिंग मङ्गलमुमे सूक्ष्मं प्रशस्तं सदा ॥३९
सर्वाश्रमाणां वर्णानां स्त्रीशूद्राणां शिवाज्ञया ।
धार्याः सदैव रुद्राक्षा यतीनां प्रणवेन हि ॥४०
दिवा विभ्रद्रात्रिकृतै रात्रौ विभ्रद्दिवाकृतैः ।
प्रातर्मध्याह्न सायाह्नं मुंच्यते सर्वपातकैः ॥४१
ये त्रिपुण्ड्रधरालोके जटाधारिण एव ये ।
ये रुद्राक्षमद्यधरास्ते वै यमलोकं प्रयांति न ॥४२

रुद्र, माँस, लशुन, प्याज सेजना, श्लेष्मान्तक आदि का सेवन न करे ।३६। ब्राह्मणों के लिए श्वेत, क्षत्रियों को रक्त, वैश्योंको पीत तथा शूद्र को काले रंग का रुद्राक्ष धारण करना हितकर है, ।३७। सभी वर्ण यथा विधि इसे धारण करें । यह रुद्राक्ष बड़े पुण्यसे प्राप्त होता है इसके त्याग से नरक की प्राप्ति होती है ।३८। आमले से छोटे, खंडित, काँटे रहित, छिद्र रहित, क्रीड़ों से खाये हुए रुद्राक्ष का धारण मंगल कामना वाला न करे । चने के समान छोटे रुद्राक्ष की प्रशंसा की गई है । शिवजी का कथन है कि यह हमारा चिन्ह स्वरूप हैं, इसे सदा धारण करे ।३९। सभी आश्रमों, वर्णों, स्त्रियों और शूद्रों को भी रुद्राक्ष धारण करना उचित है । यतियों के लिए प्रणव पूर्वक धारण उपदेश है ।४०। दिन में धारण करने से रात्रि के रात्रि में धारण करने से दिन के तथा प्रातः मध्यान्ह और सायंकाल के सभी पाप नष्ट होते हैं ।४१। त्रिपुण्ड्रधारी जटाधारी रुद्राक्षधारी भी यमलोक को कभी प्राप्त नहीं होते ।४२।

रुद्राक्षमेकं शिरसा विभर्ति तथा त्रिपुण्ड्रं च ललाटमध्ये ।
पञ्चाक्षरं ये हि जपन्ति मन्त्रं पूज्या भवद्भिः खलु तेहि साधवः।४३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्याङ्गे नास्ति रुद्राक्षस्त्रिपुण्ड्रं भालपट्टके ।
मुखे पञ्च नक्षरांस्ति तमानय यमालयम् ॥४४
ज्ञात्वा ज्ञात्वा तत्प्रभावं भस्म रुद्राक्षधारिणः ।
ते पूज्याः सर्वदास्माकं नो नेतव्याः कदाचन ॥४५
एवमाज्ञापयामास कालोऽपि निज किङ्करान् ।
तथेति मत्वा ते सर्वे तूष्णीमासन्सुविस्मिताः ॥४६
अतएव महादेवि रुद्राक्षो त्वघनाशनः ।
तद्धरो मत्प्रियः शुद्धोऽत्यधवानपि पार्वति ॥४७
सुरासुराणां सर्वेषां वंदनीयः सदा स वै ।
पूजनीयो हि दृष्टस्य पापहा च यथा शिवः ॥४८
ध्यानज्ञानावमुक्तोपि रुद्राक्षं धारयेत्तु यः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति परमां गतिम् ॥४६

जो महात्मा शिर में एक रुद्राक्ष और मस्तक पर त्रिपुण्ड धारण करता है, तथा पञ्चाक्षर मन्त्र को जपता है वह पूजनीय है ।४३। जिसके देह में रुद्राक्ष माथे पर त्रिपुण्ड तथा मुख में पञ्चाक्षर मन्त्र नहीं है, उसे मेरे यमलोक को प्राप्त कराओ ।४४। भस्म और रुद्राक्ष धारण करने वालों के कर्म प्रभाव को जानकर उन्हें पूजनीय जान हमारे लोक में मत लाओ ।४५। यमराज ने ऐसा अपने सेवकों को आदेश दिया, जिसे सुनकर वे विस्मय को प्राप्त होकर मौन हो गये ।४६। हे महादेवीजी इस प्रकार रुद्राक्ष महापातक को नष्ट करने में समर्थ है । यदि उसका धारण करने वाला महापापी हो तो भी ।४७। यह देवता दैत्य सभी के लिए वन्दनीय है । वह शिवजी के समान पापों का नाशक है ।४८। ध्यान और ज्ञान से अवयुक्त होकर भी जो रुद्राक्ष धारण करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर परम गति प्राप्त करता है ।४६।

रुद्राक्षेण जपन्मन्त्र पुण्यं कोटिगुणं भवेत् ।
दशकोटिगुणं पुण्यं धारणाल्लभते नरः ॥५०
यावत्कालं हि जीवस्य शरीरं भवेत्स वै ।
तावत्कालं स्वल्पमृत्युर्न तंदेवि विबाध्यते ॥५१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिपुण्ड्रेण च संयुक्तं रुद्राक्ष विलसाङ्गकम् ।
मृत्युञ्जयं जपंतं च दृष्ट्वा रुद्रफलं लभेत् ॥५२
पञ्चदेवप्रियश्चैव सर्वदेव प्रियस्तथा ।
सर्वमन्त्राञ्जतेभ्दक्तो रुद्राक्षमालया प्रिये ॥५३
बिष्णवादि देवभक्ताश्च धारयेयुर्न संशयः ।
रुद्रभक्तो विशेषेण रुद्राक्षान्धारसेत्सदा ॥५४
रुद्राक्षमालिनं दृष्ट्वा भूतप्रेतपिशाचकाः ।
डाकिनी शाकिनी चैव ये चान्ये द्रोहकारकाः ॥५५
कृत्रिमं चैव यत्किंचिदभिचारादिकं च यत् ।
तत्सर्वं दूरतो याति दृष्ट्वा शंकितविग्रहम् ॥५६

रुद्राक्ष से मन्त्र जपने से कोटि गुण पुण्य मिलता है और उसके धारण से दश कोटि गुण पुण्य प्राप्त होता है।५०। जीवन में स्वस्थ रहता है उसे अकाल मृत्यु कभी नहीं होती है।५१। जिसके शरीर में त्रिपुण्ड्र सहित रुद्राक्ष शोभित है तथा जो मृत्युञ्जय का जप करता है। उसके दर्शन से रुद्र के दर्शन का फल प्राप्त होता है।५२। पाँच देवताओं की उपासना करने वाले को सब देवताओं के प्रिय रुद्राक्ष की माला से जप करना चाहिए।५३। विष्णु आदि देवताओं के भक्त भी इसे धारण करें।५४। रुद्राक्ष की माला धारण किये हुए को देखकर भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी अथवा अन्य द्रोही जीव तथा कुछ कृत्रिम अभिचारादि भी दूर से ही भाग जाते हैं।५५-५६।

रुद्राक्षमालिनं दृष्टवा शिवो विष्णुः प्रसीदति ।
देवीगणपतिस्सूर्यः सुराश्चान्येऽपि पार्वति ॥५७
शिवस्यातिप्रियौ ज्ञेयौ भस्मरुद्राक्षधारिणौ ।
तद्धारणप्रभावाद्धि भुक्तिमुक्तिर्न संशयः ॥५८
भस्मरुद्राक्षधारी यः शिवभक्तश्च उच्यते ।
पञ्चाक्षर ज़पासक्तः परिपूर्णश्च सन्मुखे ॥५९
विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया ।
पूजितोऽपि महादेवो नाभीष्टफलदायकः ॥६०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्सर्वं च समाख्यातं यत्पृष्टं हि मुनीश्वर ।
भस्मरुद्राक्षमाहात्म्यं सर्वकामसमृद्धिदम् ॥६१
एतद्यः शृणुयान्नित्यं माहात्म्यं परमं शुभम् ।
रुद्राक्षभस्मयोर्भक्त्या सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥६२
इह सर्वसुखं भुक्त्वा पुत्रपौत्रादिसंयुतः ।
लभेत्परत्र सन्मोक्षं शिवस्यातिप्रियो भवेत् ॥६३
विद्येश्वरसंहितेय कथिता वो मुनीश्वराः ।
सर्वसिद्धिप्रदा नित्यं मुक्तिदा शिवशासनात् ॥६४

रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले को देखकर शिव, विष्णु, गणपति, सूर्य तथा अन्य देवगण प्रसन्न होते हैं ।५७। भस्म रुद्राक्षधारी को शिवका अति प्रिय जानो । इनके धारण से भुक्ति मुक्ति प्राप्त होती है । ।५८। भस्म रुद्राक्षधारी मनुष्य शिव भक्त कहा है । पञ्चाक्षर मन्त्र में प्रीति करने वाला पुरुष परिपूर्ण है ।५९। भस्म, त्रिपुण्ड्र तथा रुद्राक्ष माला के बिना पूजन करने से महादेव अभीष्टफल प्रदान नहीं करते।६० हे मुनीश्वरो ! तुम्हारे प्रश्न का पूर्ण समाधान कर दिया । भस्म और रुद्राक्ष का माहात्म्य सभी कामनाओं और समृद्धि को देता है ।६१। इस अत्यन्त शुभ माहात्म्य को जो मनुष्य नित्यप्रति सुनते तथा रुद्राक्ष और भस्म में प्रीति करते हैं, वे सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त होते हैं ।६२। इस लोक में वे भी सभी सुख जो भोगते हुए पुत्र-पौत्रादि से युक्त होते हैं और अन्त में शिवजी से सायुज्य को प्राप्त होते हैं ।६३। हे मुनियों ! यह विद्येश्वर संहिता तुम्हारे प्रति कही गई हैं । शिवजी की आज्ञा से यह सम्पूर्ण सिद्धि और मुक्ति देने वाली हैं ।६४।

—×—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्र संहिता—सृष्टि खण्ड

नारद का काम विजय से अहंकार करना

एकस्मिन्समये विप्रा नारदो मुनिसत्तमः ।
ब्रह्मपुत्रो विनीतात्मा तपोऽर्थं मन आदधे ॥१
हिमशैलगुहा काचिदेका परमशोभना ।
यत्समीपे सुरनदी सदा वहति वेगतः ॥२
तत्राश्रमो महादिव्यो नानाशोभासमन्वितः ।
तपोऽर्थं स ययौ तत्र नारदो दिव्यदर्शनः ॥३
तां दृष्ट्वा मुनिशार्दूलस्तेपे स सुचिरं तपः ।
बध्वासनं दृढं मौनी प्राणानायाम्य शुद्धधीः ॥४
चक्रे मुनिस्समाधिं तमहम्ब्रह्मेति यत्र ह ।
विज्ञानं भवति ब्रह्मसाक्षात्कारकरं द्विजाः ॥५
इत्थं तपति तस्मिन्वै नारदे मुनिसत्तमे ।
चंकपेऽथ शुनासीरो मनस्संतापविह्वलः ॥६
मनसीति विचिंत्यासौ मुनिर्मे राज्यमिच्छति ।
तद्विघ्नकरणार्थं हि हरिर्यत्नमियेष सः ॥७

सूतजी ने कहा—हे ब्राह्मणों ! एक समय की बात है, ब्रह्माजी के पुत्र नारदजी ने तप करने की इच्छा की ।१। हिमालय पर्वत की एक अत्यन्त सुशोभित गुफा के किनारे श्री गङ्गाजी अत्यन्त वेग से वह रही थीं ।२। वहां अनेक प्रकार से सुशोभित एक दिव्य आश्रम है, नारदजी उसी स्थान पर तप करने के लिए गये ।३। उस स्थान पर मुनि शार्दूल ने बहुत समय तक तप किया तथा मौन रहकर आसन लगाया और प्राणायाम कर पवित्र मन से ।४। समाधि लगाई, जिसमें 'अहं ब्रह्म' रूप विज्ञान ब्रह्म से साक्षात्कार करने वाला है ।५। इसी प्रकार मुनिवर नारदजीने तपका आरम्भ किया, जिससे कम्पित हुआ इन्द्र मनके संताप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से अत्यन्त विकल हुआ ।६। और सोचने लगा कि कदाचित् यह मेरे राज्य की कामना करते हैं, इसलिए वह उनके तप में विघ्न उपस्थित करने को उद्यत हुए ।७।

सस्मार स स्मरं शक्रश्चेतसा देवनायकः ।
आजगाम द्रुतं कामस्समधीर्महिषीसुतः ॥८
अथागतं स्मरं दृष्टवा संबोध्य सुरराट् प्रभुः ।
उवाच तं प्रपश्याशु स्वार्थे कुटिलशेमुषिः ॥९
मित्रवर्य्यं महावीर सर्वदा हितकारक ।
शृणु प्रीत्या वचो मे त्वं साहाय्यमात्मना ॥१०
त्वद्बलान्मे बहूनाञ्च तपोगर्वो विनाशितः ।
मद्राज्यं स्थिरं मित्र त्वदनुग्रहतस्सदा ॥११
हिमशैलगुहायां हि मुनिस्तपति नारदः ।
मनसोद्दिश्य विश्वेश महासंयमवान्दृढः ॥१२
याचेन्न विधितो राज्यं स ममेति विशंकित ।
अद्यैव गच्छ तत्र त्वं तत्तपोविघ्नमाचर ॥१३
इत्याज्ञाप्तो महेन्द्रेण स कामस्समधुप्रियः ।
जगाम तत्स्थलं गर्वादुपायं स्वञ्चकार ह ॥१४
रचयामास तत्राशु स्वकलास्सकला अपि ।
वसन्तोपि स्वप्रभावं चकार विविधं मदात् ॥१५

उस समय उन्होंने कामदेव का स्मरण किया और तभी वह समान बुद्धि वाला कामदेव आ पहुँचा ।८। उसे वहाँ आया हुआ देखकर कुटिल बुद्धि इन्द्र ने उससे शीघ्रता से कहा ।९। इन्द्र ने कहा—हे मित्र ! मेरा हित करने की इच्छा से तुम मेरी बात सुनकर सहायता करो ।१०। तुम्हारी सहायता से मैंने अब तक बहुत से तपोधनों का गर्व नष्ट कर डाला । तुम्हारी कृपा से ही मेरा राज्य स्थिर है ।११। हिमालय की गुफा में मुनिवर नारदजी तपस्या कर रहे हैं । शिव की आराधना करते हुए महान् संयम में दृढ़ है ।१२। मुझे शंका है कि ब्रह्माजी से मेरा राज्य न माँग ले इसलिए तुम तत्काल वहाँ जाकर उसके तप को भंग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दो ।१३। इन्द्र की बात सुनकर कामदेव अत्यन्त गर्व पूर्वक चल पड़ा और वहाँ जाकर तप भङ्ग करने का उपाय सोचने लगा ।१४। वहाँ उसने प्रभाव दिखाया ।१५।

न बभूव मुनेश्चेतो विकृतं मुनिसत्तमाः ।
भ्रष्टो बभूव तद्गर्वो महेशानुग्रहेण ह ॥१६
शृणुतादरतस्तत्र कारणं शौनकादयः ।
ईश्वरानुग्रहेणात्र न प्रभावः स्मरस्य हि ॥१७
अत्रैव शम्भुनाऽकारि सुतपश्च स्मरारिणा ।
अत्रैव दग्धस्ते नाशु कामो मुनितपोपहः ॥१८
कामजीवनहेतोर्हि रत्या संप्रार्थितै स्सुरैः ।
सम्प्रार्थित उवाचेदं शंकरो लोकशंकरः ॥१९
कञ्चित्समयमासाद्य जीविष्यति सुराः स्मरः ।
परं त्विह स्मरोपायश्चरिष्यति न कश्चन ॥२०
इह यावदृश्यते भूर्जनैः स्थित्वाऽमरास्सदा ।
कामबाणप्रभावोऽत्र न चलिष्यत्यसंशयम् ॥२१

मुनिवरों ! इतना करने पर भी नारदजी के मन में कोई विकार नहीं आ सका और शिवजी के अनुग्रह से इन्द्र का अभिमान चूर्ण हो गया ।१६। मुनियों ! इसका कारण भी आदर पूर्वक श्रवण करो । यह कामदेव का प्रभाव नहीं, ईश्वर का ही अनुग्रह है ।१७। इस स्थान पर कामदेव के शत्रु शंकर ने घोर तप किया था और मुनि के तप में विघ्नार्थ उपस्थित कामदेव यहीं भस्म हुआ था ।१८। उस समय देवताओं ने कामदेव के पुनर्जीवन की याचना शंकर से की । उस पर लोकों के कल्याण करने वाले शिवजी ने उनसे कहा ।१९। हे देवगण ! कामदेव कुछ समय पश्चात् जीवित हो जायगा, परन्तु इस स्थान पर उसका कोई प्रभाव कभी भी न होगा ।२०। हे देवगण ! तुम्हें यहाँ की जो पृथिवी दिखाई दे रही इसमें स्थित होने पर कभी कामदेव का प्रभाव नहीं होगा, इसमें संशय नहीं ।२१।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति शंभूक्तितः काममिथ्यात्मगति कस्सदा ।
नारदे स जगामाशु दिवमिन्द्रसमीपतः ॥२२
आचख्यौ सर्ववृत्तांतं प्रभावं च मुनेः स्मरः ।
तदाज्ञया ययौ स्थानं स्वकीयं स मधुप्रियः ॥२३
विस्मितोभूत्सुराधीशः प्रशशंसाथ नारदम् ।
तद्वृत्तान्तानभिज्ञो हि मोहितश्शिवमायया ॥२४
दुर्ज्ञेया शांभवी माया सर्वेषां प्राणिनामिह ।
भक्तं बिनार्पितात्मानं तया संमोह्यते जगत् ॥२५
नारदोऽपि चिरं तस्थौ तंत्रेशानुग्रहेण ह ।
पूर्णं मत्वा तरस्तत्स्वं विरराम ततो मुनिः ॥२६
कामाज्जयं निजं मत्वा गर्वितोऽभून्मुनीश्वरः ।
वृथैव विगतज्ञानश्शिवमायाविमोहितः ॥२७

इस शिवोक्ति से कामदेव, को अपनी मिथ्या गति का ध्यान हुआ और वह नारदजी के पास से पलायन कर इन्द्र के पास पहुँचा ।२२। उन्हें सब वृत्तान्त सुनाया और आज्ञा लेकर वसन्त के सहित अपने स्थान को गया ।२३। इन्द्र अत्यन्त विस्मित हुए और नारदजी प्रशंसा करने लगे, क्योंकि पहले वह शिवमाया से मोहित थे और उस रहस्य को न जानते थे ।२४। सभी प्राणियों के लिये शिवमाया का ज्ञान अत्यन्त कठिन है । भक्त के सिवाय वह सम्पूर्ण विश्व को मोहित किये हुए हैं ।२५। शिव कृपा से नारदजी उस स्थान पर बहुत काल तक रहे, उन्होंने अपनी तपस्या को पूर्ण समझा, तभी उससे विराम किया ।२६। मुनि को अहंकार हुआ कि हमने कामदेव जीत लिया, वे शिव माया से मोहित होने के कारण ज्ञान-विहीन हो गये ।२७।

धन्या धन्या महामा या शांभवी मुनिसत्तमाः ।
तद्गतिं न हि पश्यन्ति विष्णुब्रह्मादयोपि हि ॥२८
तया संमोहितोऽतीव मुनिसत्तमः ।
कैलाशं प्रययो शीघ्रं स्ववृत्तं गदितुं मदी ॥२९
रुद्रं नत्वाब्रवीत्सर्वं स्ववृत्तङ्गर्ववान्मुनिः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत्वात्मानं महात्मानं स्वप्रभुञ्च स्मरञ्जयम् ॥३०
तच्छ्रुत्वा शंकरः प्राह नारदं भक्तवत्सलः ।
स्वमायाविमोहितं हेत्वनभिज्ञं भ्रष्टचेतसम् ॥३१
हे तात नारद प्राज्ञ धन्यस्त्वं शृणु मद्वचः ।
वाच्छ्यमेवं न कुत्रापि हरेरग्रे विशेषतः ॥३२
पृच्छ्यमानोऽपि न ब्रूयाः स्ववृत्तं मे यदुक्तवान् ।
गोप्यंगोप्यं सर्वथा हि नव वाच्यं कदाचन ॥३३
शास्म्यहं त्वां विशेषेण मम प्रियतमो भवान् ।
विष्णुभक्तो यस्त्वं हि तद्भक्तोतीव मेऽनुगः ।३४
शास्ति स्मेत्यञ्च बहुशो रुद्रस्सूतिकरः प्रभुः ।
नारदो न हितं मेने शिवमायाविमोहितः ॥३५

हे मुनियो ! शङ्कर की महिमा को धन्य है उसकी गति को ब्रह्मा विष्णु आदि कोई भी जानने में समर्थ नहीं हैं ।२८। उस माया ने नारद जी को अत्यन्त मोहित कर लिया, इसलिए वे कामदेव पर विजय प्राप्त करने वाले अपने वृत्तान्त को कहने के लिए कैलाश पहुँचे ।२९। वहाँ शिवजी को प्रणामकर अहङ्कार पूर्वक सब वृतान्त सुनाया तथा अपने को महान् काम विजेता समझ कर गर्व में चूर हो गये ।३०। नारदजी शिव-माया से मोहित होकर भ्रष्ट चित्त हो रहे थे, उनकी बात सुनकर भक्त-वत्सल भगवान् शिवजी ने कहा ।३१। शिवजी बोले—हे नारदजी ! तुम धन्य हो। मेरी बात सुनो, तुमने जो बात मुझसे कही है उसे विष्णु के समक्ष न कहना।३२। वे तुमसे पूछें तो भी यह बात उनसे न कहना, इसे नितान्त गोपनीय रखना, किसी प्रकार भी प्रकट न करना ।३३। तुम मेरे लिए प्रिय हो, इसलिए तुमसे कहता हूं । तुम विष्णु-भक्त हो तथा विष्णु-भक्त मेरे अनुगामी होते हैं ।३४। इस प्रकार शिवजी ने उन्हें बहुत समझाया, परन्तु शिवमाया से मोहित होने के कारण नारदजी ने इसे अपने लिए हितकारी नहीं समझा ।३५।

प्रबला भाविनो कर्मगतिर्ज्ञेयाविचक्षणैः ।
न निवार्या जनैः कैश्चिदपीच्छा शैवशांकरी ॥३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततस्य मुनिवर्यो हि ब्रह्मलोकं जगाम ह ।
विधिं नत्वाऽब्रवीत्कामजयं स्वस्य तपोबलात् ॥३७
तदाकर्ण्य विधिस्सोथ स्मृत्वाशम्भुपदाम्बुजम् ।
ज्ञात्वा सर्वे कारणं तन्नियेध सुतं तदा ॥३८
मेने हितन्न विध्युक्तं नारदौ ज्ञानिसत्तमः ।
शिवमायामोहितश्च रूढचित्तसदांकुरः ॥३९
शिवेच्छा यादृशी भवयेव हि सा तदा ।
तदाधीनं जगत्सर्वं वचस्यस्यां स्थितं यतः ।४०
नारदोऽथ ययौ शीघ्रं विष्णुलोकं बिनष्टधीः ।
मदांकुरमना वृत्तं गदितुं स्वं तदग्रतः ॥४१
आगच्छन्तं मुनिन्दृष्ट्वा नारदं विष्णुरादरात् ।
उत्थित्वाग्रे गतोऽरं तं शिश्लेष ज्ञातहेतुकः ॥४२
स्वासने समुपावेश्य स्मृत्वा शिवपदाम्बुजम् ।
हरिः प्राह वचस्तस्यं नारदं मदनाशनम् ॥४३

कर्म की गति का ज्ञान चतुर पुरुषों को ही होता है। शिवजी की इच्छा की निवारण करने को सामर्थ्य किसी में नहीं है ।३६। नारदजी ब्रह्मलोक को गये और ब्रह्माजी को प्रणाम कर अपने तपोबल के प्रभाव से कामदेव को जीतनेका वृत्तान्त उन्हें सुनाया ।३७। यह सुनकर ब्रह्माजी शिवजी के चरण कमलों को प्रणाम कर, सब कुछ जानकर अपने पुत्र से निषेधात्मक स्वर में बोले ।३८। नारदजी ने इसे अपने हित में नहीं समझा, क्योंकि वे शिवमाला से मोहित थे और उनके चित्त में मद का अंकुर लग गया था ।३९। शिवजी की जैसी इच्छा होती है वैसा ही संसार में होता है, सम्पूर्ण विश्व उनके वचन में स्थित होने से पूर्णतया उनके आधीन है ।४०। बुद्धि नष्ट होने के कारण नारदजी के हृदय में काम विषय का अहङ्कार भरा था, उसे कहने के लिए वे विष्णुलोक के लिए चल पड़े ।४१। भगवान् विष्णु ने नारदजी को आया हुआ देखा तो शीघ्रतापूर्वक उठकर उनका सत्कार किया। वे भी नारदजी के आगमन का कारण जानते थे ।४२। उन्होंने नारदजी को अपने आसन पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठाया और शिवजी के चरण-कमल का ध्यानकर नारद का मद नष्ट करने के लिए बोले।४३।

कुत आगम्यते तात किमर्थमिह चागतः ।
धन्यस्त्वं मुनिशार्दूल तीर्थोऽहं तु तवागमात् ।।४४
विष्णुवाक्यमिति श्रुत्वा नारदो गर्वितो मुनिः ।
स्ववृत्तं सर्वमाचष्ट समदं मदमोहितः ।।४५
श्रुत्वा मुनिवचो विष्णुस्समदं कारणं ततः ।
ज्ञातवानखिलं स्मृत्वा शिवपादाम्बुजं हृदि ।।४६
तुष्टाव गिरिशं भक्त्या शिवात्मा शैवराड्हरिः ।
सांजलिर्विंसधीनम्रमस्तकः परमेश्वरम् ।।४७
देवदेव महादेव प्रसीद परमेश्वर ।
धन्यस्त्वं शिव धन्या माया ते सर्वविमोहिनी ।।४८
इत्यादि स स्तुतिं कृत्वा शिवस्य परमात्मनः ।
निर्मील्य नयने ध्यात्वा विरराम पदाम्बुजम् ।।४९
यत्कर्तव्यं शङ्करस्य स ज्ञात्वा विश्वपालकः ।
शिवशासनतः प्राह हृदाथ मुनिसत्तमम् ।।५०

विष्णु ने कहा--हे नारदजी आप इस समय कहाँ से और किस कारण पधारे हैं ? आप धन्य हैं आपके आगमन से मैं पवित्र हो गया हूँ।४४। विष्णु की बात सुनकर नारदजी और भी अहं में भर गये और मद-मोह से पूर्ण अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया।४५। नारदजी के अभिमान युक्त वचन सुनकर विष्णु सब कारण को जानते हुए, शिव का हृदय में ध्यान कर।४६। अत्यन्त भक्ति पूर्वक शिवात्मा विष्णु शिवजी की स्तुति करने लगे तथा श्रद्धांजलि पूर्वक मस्तक झुकाते हुए बोले।४७ विष्णु ने कहा--हे देव-देव महादेव ! आप धन्य हैं सबको मोह लेने वाली आपकी माया भी धन्य है। आप हमारे ऊपर प्रसन्न हों।४८। इस प्रकार स्तुति कर, नेत्र बन्द किये, शिवजी के चरण-कमलों का ध्यान करते हुए मौन हो गये।४९। शिवजी की जो इच्छा है, उसे पूर्ण-तथा जानते हुए विश्वपालक विष्णु नारदजी के प्रति कहने लगे।५०।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्यस्त्वं मुनिशार्दूल तपोनिधिरुदारधीः ।
भक्तित्रिकं न यस्यास्ति काममोहादयो मुने ॥५१
विकारास्तस्य सद्यौ वै भवंत्यखिलदुःखदा ।
नैष्ठिको ब्रह्मचारी त्वं ज्ञानवैराग्यवान्सदाः ॥५२
कथंकामविकारी स्याज्जन्मनाविकृतस्सुधीः ।
इत्याद्युक्तं वचो भूरिः श्रुत्वा स मुनिसत्तमः ॥५३
विजहाय हृदा नत्वं प्रत्युवाच वचो हरिम् ।
किं प्रभावः स्मरः स्वामिन्कृपा यद्यस्ति ते मयि ॥५४
इत्युक्त्वा हरिमानम्य ययौयादृच्छिको मुनिः ॥५५

विष्णुजी ने कहा--हे मुने ! हे उदार बुद्धि वाले ! हे तपोनिधे ! जिसके हृदय में त्रिदेवों की भक्ति नहीं, उसी पर काम मोहादिक अपना अधिकार करते हैं ।५१। यह विकार उन्हीं को दुःख देने वाले हैं आप तो सदा विज्ञान से सम्पन्न एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं ।५२। काम का विकार आपको किस प्रकार सता सकता है ? आपतो जन्मसे ही विकार रहित हैं, आपकी बुद्धि श्रेष्ठ है । भगवान् विष्णु के यह वचन नारदजी ने सुने ।५३। तो हृदय में नमस्कार कर हँसते हुए भगवान् से बोले -- प्रभो ! जब तक मेरे पर आपकी कृपा है, तब तक कामदेव मेरा क्या बिगाड़ सकता है ? ।५४। यह कहकर भगवान् विष्णु को प्रणाम कर नारदजी अपने इच्छित स्थान के लिए प्रस्थान कर गये ।५५।

नारद का मोह और शिवगणों को शाप

सूत सूत महाभाग व्यासशिष्य नमोऽस्तु ते ।
अद्भुतेयं कथा तात वर्णिता कृपया हि नः ॥१
मुनौ गते हरिस्तात किं चकार ततः परम् ।
नारदोऽपि गतः कुत्र तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥२
इत्याकर्ण्य वचस्तेषां सूत पौराणिकोत्तमः ।
प्रत्युवाच शिवं स्मृत्वा नानासूतिकरं बुधः ॥३
मुनौ यदृच्छया विष्णुर्गते यस्मिन्हि नारदे ।
शिवेच्छया चकार शुभायां मायाविशारदः ॥४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनिमार्गस्य मध्ये तु विपेछे नगरं महत् ।
शतयोजनविस्तारमद्भुतं सुतं सुमनोहरम् ॥५
स्वंलोकदधिकं रम्यं नानावस्तुविराजितम् ।
नरनारीविहाराढ्यं चतुर्वर्णाकुलं परम् ॥६
तत्र राजा शीलनिधिर्नैश्वर्यसमन्वितः ।
सुतास्वयम्वरोद्युक्तो महोत्सवसमन्वितः ॥७

ऋषि बोले--सूतजी ! आपको प्रणाम है । आपने कृपापूर्वक यह अद्भुत कथा कही है ।१। हे तात ! नारदजी चले गये तब विष्णु ने क्या किया ? नारदजी कहाँ गये ? यह सब हमको सुनाइये ।२। व्यास जी ने कहा--पौराणिकों में श्रेष्ठ सूतजी उनकी बात सुनकर शिवजीकी स्तुति कर प्रणाम पूर्वक कहने लगे ।३। जब नारदजी वहाँ से चले गये तब शिव इच्छा जानकर विष्णुजी ने अपनी माया को प्रेरित किया ।४। माया ने मुनि के मार्ग में एक नगर बनाया जो अत्यन्त मनोहर और सौ योजन विस्तार वाला था ।५। अपने लोक में भी अधिक मनोहर, अनेक वस्तुओं से सुशोभित नर-नारियों के विहार से युक्त तथा चारों वर्णों से युक्त ।६। वहाँ का राजा शीलनिधि था, वह अनेक ऐश्वर्यों से सम्पन्न एवं अपनी पुत्री के स्वयंवर महोत्सव से युक्त था ।७।

चतुर्दिग्भ्यः समायातैस्संयुतं नृपनन्दनैः ।
नानावेशैस्सुशोभैश्च तत्कन्यावरणोत्सुकैः ॥८
एतादृशम्पुरं दृष्ट्वा मोहम्प्राप्तोऽथ नारदः ।
कौतुकी तन्नृपद्वारं जगाम मदनैधितः ॥९
आगतं मुनिवर्यं तं दृष्ट्वा शीलनिधिर्नृपः ।
उपवेश्यार्थयाँ चक्रे रत्नसिंहासने वरे ॥१०
अथ राजा स्वतनयां नामश्रीमतीं वराम् ।
समानीय नारदस्य पादयोस्समपातयत् ॥११
तत्कन्यां प्रेक्ष्य स मुनिर्नारदः प्राह विस्मितः ।
केयं राजन्महाभागा कन्या सुरसुतोपमा ॥१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजा प्राह कृतांजलिः ।
दुहितेयं मम मुने श्रीमती नाम नामतः ॥१३
प्रदानसमयं प्राप्ता वरमवेषती शुभम् ।
सा स्वयंवरसंप्राप्ता सर्वलक्षणक्षिता ॥१४
अस्या भाग्यं वद मुने सर्वजातकमादरात् ।
कीदृशं तनयेयं मे वरमाप्स्यति तद्वद ॥१५

सब ओर से राजागण आये हुए थे, वे कन्या को वरण करने की इच्छा से अनेक साज सज्जा-सहित विराजमान थे ।८। ऐसे नगर को देखकर नारदजी का मन मोहित हो गया और कौतुक जानने की उत्कंठा से तथा काम मद से युक्त हुए वहाँ गये ।९। मुनिश्रेष्ठ को आया हुआ देखकर शीलनिधिने उन्हें रत्न जटित सिंहासन पर बैठाकर उनका पूजन किया ।१०। तब राजा ने अपनी कन्या श्रीमती को नारदजी के चरणों में डाल दिया ।११। उस कन्या को देखकर नारदजी कहने लगे--राजन् देवकन्या के समान यह महाभाग कन्या कौन है ? ।१२। राजा ने कहा--मुनिवर ! यह मेरी कन्या श्रीमती हैं ।१३। यह वर खोज में सम्पूर्ण लक्षणों वाले स्वयंवर प्राप्त हुई है ।१४। इनका जातक और भाग्य-कथन कीजिये, यह कन्या कैसे वर को प्राप्त करेगी ? ।१५।

इत्युक्तो मुनिशार्दूलस्तामिच्छुः कामविह्वलः ।
समाभाष्य स राजानं नारदो वाक्यमब्रवीत् ॥१६
सुतेयं तव भूपाल सर्वलक्षणलक्षिता ।
महाभाग्यवती धन्या लक्ष्मीरिव गुणालया ॥१७
सर्वेश्वरोऽजितो वीरो गिरीशसदृशो विभुः ।
अस्याः पतिर्ध्रुवं भावी कामजित्सुरसत्तमः ॥१८
इत्युक्त्वा नृपमामन्त्र्य ययौ यादृच्छिको मुनिः ।
वभूव कामविवशश्शिवमायाविमोहितः ॥१९
चित्ते विचिन्त्य स मुनिराप्नुयां कथमेनकाम् ।
स्वयंवरे नृपालानामेकं वृणुयात्कथाम् ॥२०
सौन्दर्यं सर्वनारीणां प्रियं भवति सर्वथा ।
तद्दृष्टैव प्रसन्ना सा स्ववशा नात्र संशयः ॥२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुनकर नारदजी काम से व्याकुल होकर उसकी प्राप्ति की कामना कर, राजा से कहने लगे ।१६। हे राजन् तुम्हारी यह कन्या सभी शुभ लक्षणों से सम्पन्न है। यह अत्यन्त भाग्यवती तथा धन्यजीवन है ।१७। इसका पति सर्वेश्वर, अजेय शिवजी के समान विभु कामदेव का विजेता तथा देवताओं मे सर्वश्रेष्ठ होगा ।१८। यह कहकर नारदजी स्वेच्छापूर्वक वहाँसे चल दिये तथा शिवजी की माया में पड़कर काम के वशीभूत हो गये ।१९। वे मन में विचार करने लगे कि इस कन्या को किस प्रकार प्राप्त करूं ? स्वयंवर में आये हुए इतने राजाओं को छोड़ कर मुझे यह किस प्रकार वरण कर लेगी ? ।२०। स्त्रियाँ सुन्दरता को बहुत चाहती हैं । मेरे रूप को देखकर तो वह प्रसन्न होंगी ही नहीं इसमें सन्देह नहीं है ।२१।

विधायेत्थं विष्णुरूपं ग्रहीतुं मुनिसत्तमः ।
विष्णुलोक जगामाशु नारदः स्मरविह्वलः ।।२२
प्राणिपत्य हृषीकेशं वाक्यमेतदुवाच ह ।
रहसि त्वां प्रवक्ष्यामि स्ववृत्तातमशेषतः ।।२३
तथेत्युक्ते तथा भूते शिवेच्छाकार्यकर्तरि ।
ब्रूहीत्युक्तवति श्रीशे मुनिराह च केशवम् ।।२४
त्वदीयो भूपतिः शीलनिधि व्रततत्परः ।
तस्य कन्या विशालाक्षी श्रीमती वरवर्णिनी ।।२५
जगन्मोहिन्यभिख्याता त्रैलोक्येप्यतिसुन्दरी ।
परिणेतुमहं विष्णो तामिच्छाम्यद्य मा चिरम् ।।२६
स्वयंवरं चकरासौ भूपतिस्तनयेच्छया ।
चतुर्दिग्भ्यस्समायाता राजपुत्रास्सहस्रशः ।।२७
यदि दास्यसि रूपं मे तदा तां प्राप्नुयां ध्रुवम् ।
त्वद्रूपं सा विना कण्ठे जयमालां न धारयति ।।२८

इस प्रकार विचार कर काम से व्याकुल हुए नारदजी विष्णुका रूप ग्रहण करने के निमित्त विष्णु लोक पहुँचे ।२२। वहाँ उन्हें प्रणाम कर बोले कि मैं आपसे एकान्त में कुछ कहना चाहता हूं ।२३। इस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवजी की इच्छा होने के कारण भगवान् ने नारदजी से बात पूछी तब उन्होंने विष्णुजी से कहा।२४। नारदजी ने कहा--राजा शीलनिधि आपके ही धर्ममें तत्पर हैं। उसकी पद्मलोचनी कन्या श्रीमती वर ग्रहण करने की कामना कर रही है।२५। वह विश्व मोहनी और त्रैलोक्य में सर्वाधिक सुन्दरी है। हे विष्णो! हे प्रभो! मैं उसे अवश्य ही वरण करने की कामना करता हूँ।२६। शीलनिधि अपनी उस कन्या का स्वयंवर कर रहा है, उसके निमित्त हजारों राजपुत्र सब ओर से वहाँ आ रहे हैं।२७। यदि आप मुझे अपना रूप प्रदान करदें तो वह कन्या मुझे अवश्य ही मिल जायगी। आपका रूप प्राप्त किये बिना उसकी जय-माला मेरे कण्ठ में नहीं पड़ सकेगी।२८।

स्वरूपं देहि मे नाथ सेवकोऽहं प्रियस्तव।
वृणुयान्मां यथा सा वै श्रीमती क्षितिमात्मजा ॥२६
वच: श्रुत्वा मुनेरित्थं विहस्य मधुसूदनः।
शांकरी प्रभुतां बुद्ध्वा प्रत्युवाच दयापरः ॥३०
स्वेष्टदेशं मुने गच्छ करिष्यामि हित तव।
भिषग्वरो यथार्त्तस्य यतः प्रियतरोऽसि मे ॥३१
इत्युक्त्वा मुनये तस्मै ददौ विष्णुर्मुखं हरेः।
स्वरूपमनुह्यास्य तिरोधानं जगाम सः ॥३२
एवमुक्तो मुनिर्हृष्टः स्वरूपं प्राप्य वै हरेः।
मेने कृतार्थमात्मानं तद्यत्नं न बुबोध सः ॥३३
अथ तत्र गतः शीघ्रन्नारदो मुनिसत्तमः।
चक्रे स्वयंवरं यत्र राजपुत्रैस्समाकुलम् ॥३४
स्वयम्वरसभा दिव्या राजपुत्रसमावृता।
शुशुभेऽतीव विप्रेन्द्रा यथा शक्रसभापरा ॥३५

हे प्रभो! आप मुझे अपना रूप दीजिये मैं आपका परम प्रिय दास हूँ। आप वही कीजिए जिससे वह राजकन्या मुझे प्राप्त हो जाय।२६। सूतजी ने कहा नारदजी की बात सुनकर विष्णु हँसे और भगवान् शिव के प्रभुत्व का ध्यान कर नारदजी से दयापूर्वक कहने लगे।३०। विष्णु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी ने कहा–हे मुनिवर ! आप अपने इच्छित देश को गमन करिये। आप मेरे लिए अत्यन्त प्रिय हैं, जैसे सद्वैद्य रोगी को उचित औषधि देता है वैसे ही मैं आपका प्रिय कार्य करूँगा।३१। इतना कहकर विष्णु ने नारदजी को बन्दरका स्वरूप प्रदान किया और उनका हित करने के लिए अन्तर्धान हो गये।३२। मुनि ने समझा कि हरि स्वरूप मिल गया जो बड़े प्रसन्न हुए और अपने को सत्य समझने लगे।३३। फिर वे शीघ्र ही वहाँ पहुँचे जहाँ राजपुत्रों के मध्य में राजकन्या का स्वयंवर हो रहा था।३४। वह स्वयंवर की सभा इन्द्र सभा के समान सुशोभित एवं राजपुत्रों से व्याप्त थी।३५।

तस्यां नृपसभायां वै नारदः समुपाविशन्।
स्थित्वा तत्र विचिन्त्येति प्रीतियुक्तेन चेतसा ॥३६
मां वरिष्यति नान्यं सा विष्णुरूपधरन्ध्रुवम्।
आननस्य कुरूपत्वं न वेद मुनिसत्तमः ॥३७
पूर्वरूपं मुनिं सर्वे ददृशुस्तत्र मानवाः।
तद्भेदं बुबधुस्ते न राजपुत्रादयो द्विजाः ॥३८
तत्र रुद्रगणौ द्वौ तद्रक्षणार्थं समागतौ।
विप्ररूपधरौ गूढौः तद्भेदं जज्ञतुः परम् ॥३९
मूढं मत्वा मुनिं तौ सन्निकटं जग्मतुर्गणौ।
कुरुं तस्तत्प्रहासं वै भाषमाणौ परस्परम् ॥४०
पश्य नारदरूपं हि विष्णोरिव महोत्तमम्।
मुखं तु वानरस्येवं विकटं च भयंकरम् ॥४१
इच्छदंत्ययं नृपसुतां वृथैव स्मरमोहितः।
इत्युक्त्वा सच्छलं वाक्यमुपहासं प्रचक्रतुः ॥४२

नारदजी इस सभा में जा पहुँचे और प्रीतियुक्त चित्त से विचार करने लगे।३६। मुझ विष्णु रूपधारी को यह अवश्य ही वरण कर लेगी क्योंकि वे अपने कुरूपत्व के रहस्यसे अनजान थे।३७। सब मनुष्यों को नारदजी का पूर्व रूपही दिखाई दिया उनके कुरूप होने की बात किसी भी राजपुत्रादि को ज्ञात न हुई।३८। परन्तु वहाँ दो रुद्रगण ब्राह्मण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप धारण किये उपस्थित थे, वे इस गूढ़ रहस्य को जानते थे। नारद जी की रक्षा के लिये यह दोनों गण आये थे।३९। नारदजी को मूढ़हुआ देखकर वे शिवगण उनके पासही जा पहुँचे और परस्पर बातचीत करते हुए नारदजीकी हंसी उड़ाने लगे।४०। देखो नारदजी का स्वरूप साक्षात् विष्णु के समान हो गया है। परन्तु मुख बानर के समान भयंकर हैं।४१। यह काम से मोहित होकर राजकन्या की व्यर्थ ही कामना करते हैं। इस प्रकार के छलपूर्ण वाक्यों से वे उनकी हँसी उड़ाने लगे।४२।

न शुश्राव यथार्थंतु तद्वाक्यं स्मरविह्वलः ।
पर्यैच्छ्रीमतीं तां वै तल्लिप्सुर्मोहितो मुनिः ॥४३
एतस्मिन्नंन्तरे भूपकन्या चांतः पुरात्तु सा ।
स्त्रीभिस्समावृता तत्राजगाम वरवर्णिनी ॥४४
मालां हिरण्मयीं रम्यामादाय शुभलक्षणा ।
तत्र स्वयंम्वरे रेजे स्थिता मध्ये रमेव सा ॥४५
बभ्राम सा सभां सर्वां मालामादाय सुव्रता ।
वरमन्वेषती तत्र स्वात्माभीष्टं नृपात्मजा ॥४६
वानरास्यं विष्णुतनुं मुनिं दृष्ट्वा चुकोप सा ।
दृष्टिं निवार्यं च ततः प्रस्थिता प्रीतिमानसा ।
न दृष्ट्वा स्ववरं तत्र त्रस्तासीन्मनसेप्सितम् ॥४७
अन्तस्सभास्थिता कस्मिन्नर्पयामास न स्रजम् ॥४८
एतस्मिन्नन्तरे विष्णुराजगाम नृपाकृतिः ।
न दृष्टः कैश्चिदपरैः केवलं सा ददर्श हि ॥४९
अथ सा तं समालोक्य प्रसन्नवदनाम्बुजा ।
अर्पयामास तत्कण्ठे तां मालां वरवर्णिनी ॥५०

काम से भ्रमित नारदजी उनके वचनों को यथार्थ रूप से न सुन सके राजकन्या को देखते ही उसके रूप पर व्याकुल हो उठे।४३। इसी बीच राजकन्या अनेक स्त्रियों के साथ अन्तःपुर से चल पड़ी।४४। वह सुलक्षणा हाथ में स्वर्णमाल धारण किये स्वयंवर-स्थल में साक्षात् लक्ष्मी के समान खड़ी हुई।४५। वह श्रेष्ठ व्रत वाली कन्या माला हाथ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लिये, सभा में फिरती हुई अपने अनुरूप वर की खोज करने लगी ।४६। वह नारदजी के सम्पूर्ण देह को विष्णु के समान और मुख वानर जैसा देखकर अत्यन्त क्रोधित हुई और वहाँ से दृष्टि हटाकर प्रसन्न मन से आगे बढ़ी ।४७। स्वयंवर में कोई वर अपनी इच्छा के अनुकूल न पाकर, व्याकुलता पूर्वक सभा के मध्यमें खड़ी हो गई, उसने किसी के कंठ में माला नहीं डाली ।४८। तभी मनुष्य वेश में भगवान् विष्णु वहाँ आये, इनको केवल राजकन्या ने ही देखा, और कोई भी न देख सका ।४९। विष्णु को देखते ही उसका मुख कमल खिल उठा और उसने वरमाला उनके कण्ठ में डाल दी ।५०।

तमादाय ततो विष्णु राजरूपधरः प्रभुः ।
अन्तर्धानमगात्सद्यः स्स्वस्थानं प्रययौ किल ।।५१
सर्वे राजकुमाराश्च निराशाः श्रीमतीम्प्रति ।
मुनिस्तु विह्वलोऽतीव बभूव मदनातुरः ।।५२
तदा तावूचतुस्सद्यो नारदं स्मरविह्वलम् ।
विप्ररूपधरौ रुद्रगणौ ज्ञानविशारदौ ।।५३
हे नारद मुनै त्वं हि वृथा मदनमोहितः ।
तल्लिप्सुस्स्वमुखं पश्य वानरस्येव गर्हितम् ।।५४
इत्याकर्ण्य तयोर्वाक्यं नारदो विस्मितोऽभवत् ।
मुखं ददर्श मुकुरे शिवमायाविमोहितः ।।५५

राजपुत्र का रूप धारण किये हुए भगवान् उस कन्या को ग्रहणकर, अन्तर्धान हो, अपने स्थान को गये ।५१। तब उस राजकन्या की ओर से सब निराश हो गये और नारदजी कामातुर होने से अत्यन्त व्याकुल हुए ।५२। उन नारदजी से विप्र रूपधारी ज्ञान विशारद दोनों रुद्रगण कहने लगे ।५३। हे मुनिवर ! आप तो व्यर्थ ही काम से विह्वल हैं । राजकन्या को प्राप्त करने की इच्छा से पहिले अपने मुख को तो देखा होता, वह बन्दर के समान भयङ्कर है ।५४। सूतजी ने कहा दोनों गणों के वचन सुनकर नारदजी आश्चर्य चकित हुए और शिवमाया में मोहित हुए उन्होंने दर्पण में अपना मुख देखा ।५५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वमुखं वानरस्येव दृष्ट्वा चुक्रोध सत्वरम् ।
शापान्ददौ तयोस्तत्र गणयोर्मोहितो मुनिः ॥५६
युवां ममोहासं वै चक्रतुर्ब्राह्मणस्य हि ।
भवेतां राक्षसत्रो विप्रवीर्यजौ वै तदाकृती ॥५७
श्रुत्वा हरगणावित्थं स्वशापं ज्ञानिसत्तमौ ।
न किंचिदूचतुस्तौ हि मुनिमाज्ञायमोहितम् ॥५८
स्वस्थानं जग्मतुर्विप्रा उदासीनौ शिवस्तुतिम् ।
चक्रतुर्मन्यमानौ वे शिवेच्छां सकलां सदा ॥५९

अपना मुख बन्दर जैसा देखकर नारदजी को बड़ा क्रोध हुआ और माया से मोहित रहते हुए उन्होंने रुद्रगणों को शाप दे डाला ।५६। तुमने जिस प्रकार मुझ ब्राह्मण का उपहास किया है, उसी प्रकार तुम ब्राह्मण योनि को प्राप्त होकर भी राक्षस बनोगे ।५७। मुनि को मोह में पड़ा देखकर ज्ञानियों में श्रेष्ठ शिवगण मौन ही रहे ।५८। और उदासीन होकर भगवान् शिवजी की इच्छा समझकर उनकी स्तुति करते हुए अपने स्थान को चले गये ।५९।

महाप्रलय का स्वरूप और विष्णु की उत्पत्ति

भो ब्रह्मन्साधु पृष्टोऽहं त्वया विबुधसत्तम ।
लोकोपकारिणा नित्यं लोकानां हितकाम्यया ॥१
यच्छ्रुत्वा सर्वलोकानां सर्वपापक्षयो भवेत् ।
तं दहं ते प्रवक्ष्यामि शिवतत्वमनामयम् ॥२
शिवतत्वं मया नैव विष्णुनापि यथार्ततः ।
ज्ञातञ्च परमं रूपमद्भुत्तं च परेण च ॥३
महाप्रलयकाले च नष्टे स्थावरजंगमे ।
आसीत्तमोमयं सर्वमनर्कग्रहतारकम् ॥४
चन्द्रसमहोरात्रमनग्यनिलभूर्जलम् ।
अप्रधानं वियच्छून्यमन्यतेजोविवर्जितम् ॥५
अदृष्ट्वादिरहितं शब्दस्पर्शसमुज्झितम् ।
अव्यक्तगंधरूपं च रसत्यक्तमनिङ्मुखम् ॥६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्थं सत्यघतमसे सूचीभेद्ये निरन्तरे ।
तत्सद्ब्रह्मेति यच्छ्रुत्वा सदेकं प्रतिपद्यते ॥७

ब्रह्माजी ने कहा—हे ब्रह्मन् ! हे विज्ञवर ! तुमने अच्छा प्रश्न किया है । तुम लोगों की उपकार में रति है इसलिए लोक हितार्थ यह बात पूछी है ।१। जिस अनायम शिवतत्व के श्रवण करने से लोकों के सभी पाप क्षीण हो जाते हैं, उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ ।२। मैं शिवतत्व को यथार्थ रूपसे नहीं जानता, परन्तु विष्णुजी उस परम अद्भुतस्वरूप को जानते हैं ।३। महाप्रलय में जब स्थावर जंगम विश्व पूर्णरूपेण नष्ट हो गया था उस समय ग्रह तारागण, सूर्य आदि के न होने से सर्वत्र अन्धकार था।४। चन्द्रमा, अग्नि, वायु, पृथिवी, जल, निगम, रात्रिप्रधान साकार तथा अन्य तेज भी नहीं था ।५। शब्द, स्पर्श गन्ध रूप रस तथा सभी दृष्ट पदार्थ अदृष्ट थे।६। इस प्रकार के सूची भेद्य सन्नाटे और निरन्तर अन्धकार में केवल सद्ब्रह्म ही था उसी को 'सत्' कहा गया है।७।

इतीदृशं यना नासीद्यत्तत्सदसदात्मकम् ।
योगिनोऽन्तर्हिताकाशे यत्पश्यन्ति निरन्तरम् ॥८
अमनोगोचरम्वाचां विषयन्न कदाचन ।
अनामरूपवर्णं च न च स्थूलं न यत्कृशम् ॥९
अह्रस्वदीर्घमलघु गुरुत्वपरिवर्जितम् ।
न यत्रोपचयः कश्चित्तथा नापचयोऽपि च ॥१०
अभिधत्ते स चकितं यदस्तीति श्रुतिः पुनः ।
सत्यंज्ञानमनन्तं च परानंदम्परम्महः ॥११
अप्रमेयमनाधारमविकारमनाकृति ।
निर्गुणं योगिगम्यञ्च सर्वस्याप्येककारकम् ॥१२
निर्विकल्पं निरारम्भं निर्मायं निरुपद्रवम् ।
अद्वितीयमनाद्यन्तमविकाशं चिदात्मकम् ॥१३
यस्येत्थं सविकल्पं ते संज्ञासंज्ञोक्तितः स्म वै ।
क्रियता चैव कालेन द्वितीयेच्छाऽभवत्किल ॥१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सद् असद् आत्मक कोई वस्तु शेष नहीं थी जिसे योगीजन अपने हृदयाकाश में सदा देखते हैं।८। जो मन और वाणी द्वारा अगोचर तथा इन्द्रियों से परे है, जो नाम रूप वर्ण से परे तथा स्थूल और सूक्ष्म भी नहीं है।६। जो न ह्रस्व है न दीर्घ, छोटा है, न बड़ा, जिसमें उपचय और अपचय भी नहीं हैं, ।१०। श्रुति भी आश्चर्य से जिनके विषय में कहती है कि वह सत्य स्वरूप, परानन्द स्वरूप एवं साक्षात् परम पुरुष है ।११।प्रभा आभा और विकार से रहित तथा आकृति से शून्य निर्गुण सर्वव्यापक एक कारक तथा योगमय है।१२। निर्विकल्प निरारम्भ माया और उपद्रव से परे, आदि-अन्त से रहित चिदात्मक और अद्वितीय हैं। ।१३। विकल्प से ही जिसके संज्ञा और संज्ञोक्ति होते हैं, उसने कितने काल में दूसरे की इच्छा की ।१४।

अमूर्तेन स्वमूर्तिश्च तेनाकल्पि स्वलीलया ।
सर्वैश्वर्यगुणोपेता सर्वज्ञानमयी शुभा ॥१५
सर्वगा सर्वरूपा च सर्वदृक्सर्वकारिणी ।
सर्वैश्वर्यगुणोपेता सर्वज्ञानमयी शुभा ॥१६
सर्वगा सर्वरूपा च सर्वदृक्सर्वकारिणी ।
सर्वैशवंद्या सर्वाद्या सर्वदा सर्वसंस्कृतिः ॥१७
परिकल्प्येति तां मूर्तिमैश्वरीं शुद्धरूपिणीम् ।
अद्वितीयमनाद्यतं सर्वाभसं चिदात्मकम् ॥१८
अमूर्तं यत्पराख्यं वै तस्य मूर्तिस्सदाशिवः ।
अर्वाचीनाः पराचीना ईश्वरं तं जगुर्बुधाः ॥१९
शक्तिस्तदैकलेनापि स्वैरं विहरता तनुः ।
स्वविग्रहात्स्वयं सृष्टा स्वशरीरानपायिनी ॥२०
प्रधानं प्रकृतिं तां च मायां गुणवतीं पराम् ।
बुद्धितत्वस्य जननीमाहुर्विकृतिवर्जिताम् ॥२१

उस निराकार ने इच्छा से ही अपनी मूर्ति की कल्पना की वह सम्पूर्ण ऐश्वर्य और सर्वज्ञान से सम्पन्न एवं शोभावान् है ।१५। वह मूर्ति सर्वत्र गमन करने वाली, सर्वरूप सम्पन्न सर्ववशिनी, सबको वन्दनीया, सबकी संस्कारकर्त्री सबकी आद्या है ।१६-१७। इस ऐश्वर्यात्मक शुद्ध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूपा मूर्तिकी कल्पना करके बस अद्वितीय आदि अन्तरहित, चिदात्मा सर्वगामी, अविनाशी परब्रह्म अन्तर्हित हो गये ।१८। उस अमूर्त ब्रह्म की मूर्ति ही सदाशिव है । इसी अर्वाचीन मूर्ति को ज्ञानिजनों ने ईश्वर कहा ।१९। इसे अपने देह से स्वच्छन्द देह वाली शक्ति को प्रकट किया है ।२०। वही शक्ति प्रधान प्रकृति एवं गुणमयी परा माया है, वही बुद्धि तत्व की जन्मदात्री है, उसी को विकार से परे कहा गया ।२१।

सा शक्तिरम्बिका प्रोक्ता प्रकृतिस्सर्वलोकेश्वरी ।
त्रिदेवजननी नित्या मूलकारणमित्युत ।।२२
अस्या अष्टौ भुजाश्चासन्विचित्रवदता शुभा ।
राका चन्द्रसहस्रस्य वदनेभाश्च नित्यशः ।।२३
नानाभरणसंयुक्ता नानागति समन्विताः ।
नानायुधधरादेवी फुल्लपङ्कजलोचना ।।२४
अचिंत्यतेजसा युक्ता सर्वयोनिस्समुद्यता ।
एकाकिनी यदा माया संयोगाच्चाप्यनेकिका ।।२५
प्रकृतेश्च महानासीन्महतश्चगुणास्त्रयः ।
अहङ्कारस्ततो जातस्त्रिविधो गुणभेदतः ।।२६
तन्मात्राश्च ततो जाताः पञ्चभूतानि वै ततः ।
तदैव तानीन्द्रियाणि ज्ञानकर्मीयानि च ।।२७
तत्वानामिति संख्यानमुक्तं ते ऋषिसत्तम ।
जडात्मकञ्च तत्सर्वं प्रकृतेः पुरुषं विना ।।२८
तत्तदैकीकृतं तत्वं चतुर्विंशतिसंख्यकम् ।
शिवेच्छया गृहीत्वा स सुष्वाप ब्रह्मरूपके ।।२९

उसी को शक्ति, अम्बिका, प्रकृति, सर्वलोकेश्वरी, त्रिदेव-जननी नित्या एवं मूल-कारण कहते हैं ।२२। इसकी आठ भुजायें, विचित्र तथा पूर्णमासी के हजार चन्द्रमाओं के समान कान्ति है ।२३। यह अनेकों आभरण और अनेकों गतियों से सम्पन्न हैं । इसके नेत्र प्रफुल्लित कमल के समान हैं, यह अनेक प्रकार के आयुधों के धारण करने वाली है ।२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचिन्त्य तेज वाली सबकी जन्मदात्री तथा एकाकिनी माया होते हुएभी संयोग से अनेक रूप वाली हो जाती है ।२५। इस प्रकृति से महान् और महान् से तीन गुणों की उत्पत्ति हुई, उससे अहङ्कार और उससे गुण भेद से तीन गुण होना कहा है ।२६। उससे तन्मात्रा और तन्मात्रा से पञ्चभूत हुए उससे ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय की उत्पत्ति हुई ।२७। ऋषियो ! आपसे तत्वों का वर्णन किया गया है । प्रकृति का सब तत्व जडात्मक है, उसे पुरुष से समझना चाहिए।२८। वह चौबीस तत्व शिवेच्छा से ग्रहण होने पर ब्रह्मस्वरूप जल में सो गये ।२९।

ओंकार से ब्रह्मांड की उत्पत्ति और शब्द-ब्रह्म वर्णन

तदा समभवत्तत्र नादो वै शब्दलक्षणः ।
ओमोमिति सुरश्रेष्ठाःसुव्यक्तः प्लुतलक्षणः ॥१
किमिदं त्विति संचित्य मया तिष्ठन्महास्वनः ।
विष्णुस्सर्वसुराराध्यो निर्वैरस्तुष्टचेतसा ॥२
लिंगस्य दक्षिणे भागे तथा पश्यत्सनातनम् ।
आद्यं वर्णमकाराख्यमुकारं चोत्तरे ततः ॥३
मकारं मध्यतश्चैव नादभंतेऽस्य चौमिति ।
सूर्यमण्डलवद्दृष्ट्वा वर्णमाद्यं तु दक्षिणे ॥४
उत्तरे पावकप्रख्यमुकारमृषिसत्तम ।
शीतांशुमण्डलप्रख्यं मकारं तस्य मध्यतः ॥५
तस्योपरि तदाऽपश्यच्छुद्धस्फटिकसुप्रभम् ।
तुरीयातीतममलं निष्फलं निरुपद्रवम् ॥६
निर्द्वन्द्वं केवलं शून्यं बाह्याभ्यंतरवर्जितम् ।
स बाह्याभ्यन्तरे चैव बाह्याभ्यंतरसंस्थितम् ॥७
आदिमध्यान्तरहितमानंदस्यापिकारणम् ।
सत्यमानन्दममृतं परं ब्रह्मपरायणम् ॥८

तब वहां शब्द गुण वाला नाद उत्पन्न हुआ । हे देवगण ! यह ओंकार युक्त प्रकट जो कि प्लुत लक्षण वाला था ।१। यह क्या है ? इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार घोर शब्द हुआ, सब देवताओं द्वारा पूछे जाने वाले विष्णु वैर रहित होने से सन्तुष्ट हुए ।२। फिर उन्होंने लिंग के दक्षिण और सनातन आद्य आकार और उसके उत्तर की ओर उकार को देखा ।३। मध्य में मकार और अन्त में आ को देखा । इस सम्पूर्ण प्रणव के दर्शन हुए आदि वर्ण सूर्य मंडल के समान दक्षिण में दिखाई दिया ।४। हे ऋषियो! अग्नि के समान उकार को उत्तर में देखा और चन्द्र मण्डल के समान मकार को मध्य स्थान से देखा ।५। उसके ऊपर स्फटिक मणि के समान स्वच्छ निर्मल, निष्फल निरुपद्रव तथा तुरीयातीत ।६। निर्द्वन्द केवल शून्य, भीतर वाहर से रहित तथा वाह्याभ्यन्तरा में संस्थित ।७। आदि मध्य और अन्त से शून्य आनन्द की उत्पत्ति कर्त्ता, सत्य आनन्द, अविनाशी, परब्रह्म के दर्शन हुए ।८।

चिंतया रहितो रुद्रो-वाचो यन्मनसा-सह ।
अप्राप्य-तन्निवर्तते-वाच्यस्त्वेकाक्षरेण सः ।।९
एकाक्षरेण तद्वाक्यममृतं परमकारणम् ।
सत्यमानन्दममृतं परं ब्रह्म परात्परम ।।१०
एकाक्षरादकाराख्याद्भगवान्बीजकोण्डजः ।
एकाक्षरादुकाराख्याद्धरिः परमकारणम् ।।११
एकाक्षरान्मकाराख्याद्भगवान्नीललोहितः ।
सर्गकर्त्ता त्वकाराख्यो ह्यकाराख्यस्तु मोहकः ।।१२
मकाराख्यस्तु यो नित्यमनुग्रहकरोऽभवत् ।
मकाराख्यो विभुर्बीजी ह्यकारोबीज उच्यते ।।१३
उकाराख्यो हरिर्योनिः प्रधानपुरुषेश्वरः ।
बीजी च बीजं तद्योनिर्नादाख्यश्च महेश्वरः ।।१४
बीजी विभज्य चात्मानं स्वेच्छयातु व्यवस्थितः ।
अस्य लिंगादभूद्बीजमकारो बीजिनः प्रभोः ।।१५

वहाँ रुद्र चिन्तन गम्य नहीं है । इनका विचार करने में मन और वाणी की निवृत्ति हो जाती है उनका ज्ञान एकाक्षर ॐ से ही सम्भव है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।६। उनका एकाक्षर रूप वाक्य अमृत और कारण का भी कारण है। सत्य स्वरूप आनन्द स्वरूप परामृत, ब्रह्मा और परात्पर है।१०। एकाक्षर 'अकार' में बीज स्वरूप तथा अण्डज ब्रह्माजी हैं और एकाक्षर इकार से परम कारण विष्णु हैं।११। एकाक्षर मकार से नील लोहित भगवान हैं। अकार सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है तथा मकार को विभुबीजी और अकार को बीज कहा गया है।१२-१३। उकार विष्णु की योनी तथा प्रधान पुरुष रूप ईश्वर है। बीज ही आत्मा का विभाग कर स्वेच्छा--पूर्वक स्थित हुआ है। इस लिंग के बीज ही से अकार की उत्पत्ति हुई।१४-१५।

उकारयोनौ निःक्षिप्तमवर्द्धत समंततः।
सौवर्णममवच्चांडमवेद्यं तदलक्षणम् ॥१६
अनेकाब्दं तथा चाप्सु दिव्यमंडं व्यवस्थितम्।
ततो वर्षसहस्रांते द्विधाकृतमजोद्भवम् ॥१७
अण्डमप्सु स्थितं साक्षाद्याघातेनचरेणतु।
तथाऽस्य सुशुभहैमं कपालं चोर्द्धसं स्थितम् ॥१८
जज्ञे सा द्यौस्तदपरं पृथिवी पंचलक्षणा।
तस्मादंडाद्भो जज्ञे ककाराख्यश्चतुर्मुखः ॥१६
स स्रष्टा सर्वलोकानां स एव त्रिविधः प्रभुः।
एवमोमोमिति प्रोक्तमित्याहुर्यजुषांवरा ॥२०
यजुषा वचनं श्रुत्वा ऋचः सामानि सादरम्।
एवमेव हरे ब्रह्मन्नित्याहुश्चवयोस्तदा ॥२१

यह उकार रूप में जाकर सब ओर से वृद्धि को प्राप्त, उससे यह स्वर्ण अण्ड हुआ, उस समय वह अण्ड जानने योग्य नहीं था तथा लक्षण रहित था।१६। अनेक वर्ष तक वह अण्ड जल में स्थित रहा, हजार वर्ष व्यतीत होने पर ब्रह्माजी ने इसके दो भाग किये।१७। जल में स्थित इस अण्ड का परमेश्वर द्वारा व्याघात होने पर इसका एक कपाल ऊर्ध्व स्थित होकर शोभा पाने लगा।१८। उससे द्यु लोक प्रकट हुआ और नीचे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले कपाल से पंचलक्षण पृथ्वी का प्राकट्य हुआ उस अण्ड से भव और ककार नामक चार मुख प्रकट हुए ।१६। वही सब लोकों के रचने वाले तथा तीनों लोकों को धारण करने वाले हैं, इसलिए यजुर्वेद इसे ओं ओं कहते हैं ।२०। यजुर्वेद के वाक्य को सुनकर ऋक् और साम हम दोनों के प्रति हे हरे ! हे ब्रह्मन् हैं ।२१।

ततो विज्ञाय देवेशं यथावच्छक्तिसंभवैः ।
मंत्रं महेश्वरं देवं तुष्टाव सुमहोदयम् ॥२२
एतस्मिन्नंतरेऽन्यच्च रूपमद्भुतसुन्दरम् ।
ददर्श च मया सार्द्धं भगवान्विश्वपालकः ॥२३
पंचवक्त्रं दशभुजं गौरकर्पूरवान्मुने ।
नानाकान्ति समायुक्तं नानाभूषणभूषितम् ॥२४
महोदारं महावीरं महापुरुषलक्षणम् ।
तं दृष्ट्वा परमं रूपं कृतार्थोऽभून्मया हरिः ॥२५
अथ प्रसन्नो भगवान्महेशः परमेश्वरः ।
दिव्यं शब्दमयं रूपमाख्याय प्रहसन्स्थितः ॥२६
अकारस्तस्य मूर्द्धा हि ललाटो दीर्घ उच्यते ।
इकारो दक्षिणं नेत्रमीकारो वामलोचनम् ॥२७
उकारो दक्षिणं श्रोत्रमूकारो वाम उच्यते ।
ऋकारो दक्षिणं तस्य कपोलं परमेष्ठिनः ॥२८
वामं कपोलं लकारो लृ नासापुटे उभे ।
एकारश्चौष्ठ ऊर्द्धश्च ह्यैकारस्त्वधरो विभोः ॥२६
ओंकारश्च तथौकारो दन्तपंक्तिद्वयं क्रमात् ।
अमस्तु तालुनी तस्य देवदेवस्य शूलिनः ॥३०

उन देवेशको जानकर अपने सामर्थ्यानुसार उचित मन्त्रों से महादेव को प्रसन्न करने लगे ।२२। इस समय विश्व के पालन कर्त्ता भगवान विष्णु मेरे एक अत्यन्त सुन्दर तथा अद्भुत स्वरूप का दर्शन करने लगे ।२३। हे मुने ! वह कर्पूर के समान सुन्दर गौर वर्ण पाँच मुख, दस भुजा, अनेक भूषणों से भूषित तथा अनेक कान्तियों से युक्त था ।२४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् उदर एवं वीर्य वाले, महापुरुष के लक्षणों से सम्पन्न उस स्वरूप के दर्शन कर गुरु सहित विष्णु कृतार्थ हो गये ।२५। उस समय भगवान् महेश्वर अत्यन्त प्रसन्न होकर दिव्य शब्द युक्त स्वरूप में स्थित हुए ।२६ उनका शिर अकार ओर मस्तक दीर्घ आकार था, दक्षिण, नेत्र इकार और बाँया नेत्र ईकार था ।२७। उकार दक्षिण कपोल था और ऊकार बाँया था ।२८। ऋकार वाम कपोल, लृकार नासापुट, लॄकार दूसरा, उकार ऊर्ध्व होठ तथा ऐकार निम्न होठ था ।२९। ओ औ क्रमशः ऊपर नीचे की दन्त पंक्ति थी, अं उनका तालु था ।३०।

कादिपंचाक्षराण्यस्य पंचहस्ताश्च दक्षिणे ।
चादिपंचाक्षराण्येवं पंचहस्तास्तु वामतः ।।३१
टादिपंचाक्षरं पादास्तादिपंचाक्षरं तथा ।
पकार उदरं तस्य फकारः पार्श्वं उच्यते ।।३२
बकारो वामपार्श्वस्तु भकारः स्कन्ध उच्यते ।
मकारो हृदयं शंभोर्महादेवस्य योगिनः ।।३३
यकारादिसकारान्ता विभोर्वैसप्तधातवः ।
हकारो नाभिरूपोहि क्षकारो घ्राण उच्यते ।।३४
एवं शब्दमयं रूपमगुणस्य गुणात्मनः ।
दृष्ट्वा तमुभया सार्द्धं कृतार्थोऽभून्मया हरिः ।।३५

क वर्ग के पाँचों अक्षर दक्षिण हाथ थे, च वर्ग के पाँचों अक्षर वाम हाथ थे ।३१। ट वर्ग के पञ्चाक्षर दक्षिण चरण तथा त वर्ग के पञ्चाक्षर वाम चरण थे, पकार उदर, और फकार पार्श्व भाग था ।३२। बकार वाम पार्श्व भकार स्कन्ध और मकार हृदय था ।३३। यकार से सकार तक सप्त धातुयें हकार नाभि और चकार घ्राण था इस प्रकार उन सगुण गुणात्मा के शब्दमय स्वरूप के दर्शन करके मैं और विष्णु जी दोनों कृतार्थ हो गये ।३४-३५।

एवं दृष्ट्वा महेशानं शब्दब्रह्मतनुं शिवम् ।
प्रणम्य च मया विष्णुः पुनश्चापश्यदूर्द्धतः ।।३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐकारप्रभवं मन्त्रं कलापंचकसंयुतम् ।
शुद्धस्फटिकसङ्काशं शुभाष्टत्रिंशदक्षरम् ॥३७
मेधाकार मभूद्भूयस्सर्वधर्मार्थसाधकम् ।
गायत्रीप्रभवं मन्त्रं सहितंवश्यकारकम् ॥३८
चतुर्विंशतिवर्णाढ्यं चतुष्कालमनुत्तमम् ।
अथ पंचसितं मन्त्रं कलाष्कसमायुतम् ॥३९
आभिचारिकमत्यर्थं प्रायस्त्रिंशच्छुभाक्षरम् ।
यजुर्वेदसमायुक्तं पंचविंशच्छुभाक्षरम् ॥४०
कलाष्टकसमायुक्तं सुश्वेतं शांतिकं तथा ।
त्रयोदशकलायुक्तां वालाद्यैस्सह लोहितम् ॥४१
बभूवुरस्य चोत्पत्तिवृंद्धिसंहारकारणम् ।
वर्णा एकाधिकाः षष्टिरस्य मन्त्रवरस्यतु ॥४२

इस प्रकार भगवानके शब्द ब्रह्मदेह के दर्शनकर मेरे सहित विष्णु जी ने प्रणाम किया और ऊपर की ओर देखने लगे ।३६। वहाँ देखा कि ओंकार से अवतीर्ण पञ्चकलात्व का मन्त्र शुद्ध स्फटिक के समान स्वच्छ सुन्दर एवं अड़तीस अक्षरों से युक्त है ।३७। बुद्धि को प्रेरित करने वाला अर्थ का साधन स्वरूप वह मन्त्र गायत्री से प्रकट चौबीस वर्ण वाला मन्त्र चारों कालों में उत्तम कहा है और 'ॐ' नमः शिवायः' अक्षरों वाला तथा यजुर्वेद युक्त पच्चीस अक्षरों वाला ।३८-४०। यह पञ्चसित मन्त्र आठ कलाओं से सम्पन्न है। अभिचारक मन्त्र सात कलाओं से सुश्वेत एवं शान्तिपूर्वक मन्त्र तेरह कलाओं वाला ।४१। यह सृष्टि का पालन और संहार करने वाला तथा इकसठ वर्ण वाला मंत्र है ।४२।

पुनर्मृत्युञ्जयं मन्त्रं पञ्चाक्षरः परम् ।
चिंतामणिं तथा मन्त्रं दक्षिणामूर्तिसञ्ज्ञकम् ॥४३
ततस्तत्वमसीत्युक्तां महावाक्यंहरस्य च ।
पञ्चमन्त्रास्तथा लब्ध्वा जजापभगवान्हरिः ॥४४
अथ दृष्ट्वा कलावर्णं ऋग्यजुस्सामरूपिणम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईशानमीशमुकुटं पुरुषाख्यं पुरातनम् ।।४५
अघोरहृदयं हृद्यं सर्वगुह्यं सदाशिवम् ।
वामपादं महादेवं महाभागीन्द्र भूषणम् ।।४६
विश्वत: पादवन्तं विश्वतोक्षिकर शिवम् ।
ब्रह्मणोऽधिपतिं सर्गस्थितसंहारकारणम् ।।४७
तुष्टाव वाग्भिरिष्टाभिस्साम्बं वरदमीश्वरम् ।
मया च सहितो विष्णुर्भवांस्तुष्ट चेतसा ।।४८

फिर मृत्युञ्जय मन्त्र अथवा त्र्यम्बक मन्त्र और इसके उपरांत पञ्चाक्षर मन्त्र (नमः शिवाय) व चिन्तामणि मन्त्र और दक्षिणामूर्ति मन्त्रको ग्रहण करे ।४३। 'तत्वमसि' शिवजी का महावाक्य है इन पाँचों मन्त्रों को ग्रहण कर भगवान ने जप किया ।४४। फिर ऋक् यजु और सामरूपी कला वर्ण, जो ईशान ईश मुकुट, पुरातन, पुरुष हैं, उन्हें देख कर ।४५। अघोर हृदय, सवमें गुह्य, सदाशिव वामपाद महाभोगीन्द्र एवं महादेव के भूषण को धारण करे ।४६। जिनके सभी ओर नेत्र हैं, जो ब्रह्माजी के अधीश्वर, सर्ग स्थित तथा संहार कर्त्ता है ।४७। साम्बशिव वर देने वाले हैं उनको वाणियों से सन्तुष्ट करने लगे । इस प्रकार मैंने विष्णु के सहित अत्यन्त प्रीतिपूर्वक उनकी स्तुति की ।४८।

हरि हर की अभेदता और परमशिवतत्व वर्णन

अन्यच्छृणु हरे विष्णोः शासनं मम सुव्रत ।
सदा सर्वेषु लोकेषु मान्यः पूज्यो भविष्यसि ।।१
ब्रह्मणानिर्मिते लोके यदा दुःखं प्रजायते ।
तदात्वं सर्वदुःखानां नाशाय तत्परो भव ।।२
रुद्र ध्येयो भवांञ्चैव भवेद्ध्येयो हरस्तथा ।
युवयोरन्तरन्नैव तव रुद्रस्य किंचन ।।३
वस्तुतश्चापि चैकत्वांवरतोऽपि तथैव च ।
लीलयापि महाविष्णो सत्यं सत्यं न संशयः ।।४
रुद्रभक्तो नरो यस्तु तव निंदां करिष्यति ।
तस्य पुण्यं च निखिलं द्रुतं भस्म भविष्यति ।।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरके पतनं तस्य त्वद्द्वेषात्पुरुषोत्तम ।
मदाज्ञया भवेद्विष्णो सत्यं सत्यं न संशयः ॥६
त्वां यस्साश्रितो नूनं मामेव स समाश्रितः ।
अन्तरं यश्च जानाति निरये पतति ध्रुवम् ॥७
आयुर्बलं श्रृणुष्वाद्य त्रिदेवानां विशेषतः ।
संदेहोऽत्र न कर्त्तव्यो ब्रह्मविष्णुहरात्मनाम् ॥८
त्वद्भक्तोयो भवेत्स्वामिन्ममप्रियतरो हि सः ।
एवं वै यो न विजानाति तस्य मुक्तिर्न दुर्लभा ॥९

परमेश्वर शिवजी ने कहा--हे विष्णो! हे सुव्रत ! तुम मेरी आज्ञा श्रवण करो । सदैव सभी लोकों में मान्य एवं पूजनीय होंगे।१। ब्रह्माजी द्वारा रचे गये लोक में जब दुःख पड़ेगा तब तुम उस दुःख से लोकों को उबारने में तत्पर रहोगे ।२। तुम दोनों को रुद्र का ध्यान करना उचित है । हे ब्रह्मा तुम्हारे ध्यान के योग्य विष्णु हैं, तुम दोनों में और रुद्रमें कोई भेद नहीं है ।२। यथार्थ में तुम तीनों एक तत्व-रूप ही हो । हे विष्णो ! यह सब अन्त लीला मात्रका है, यथार्थ में नहीं है ।४। जो रुद्रभक्त तुम्हारा निन्दक हो, उसका सम्पूर्ण पुण्य नष्ट हो जाता है ।५। हे पुरुषोत्तम ! हे विष्णु ! जो कोई तुममें द्वेष करेगा, वह नरकगामी होगा, इसमें संशय नहीं हैं ।६। जो तुम्हारा आश्रय लेता है वही मेरा आश्रित है हममें तुममें अन्तर समझने वाला अवश्य ही नरक को प्राप्त होगा ।७। तुम देवताओं के आयुर्बल को श्रवण करो । ब्रह्मा, विष्णु और शिव के एकत्व में सन्देह नहीं करना चाहिये ।८। ब्रह्मा, विष्णु ने कहा-हे स्वामिन् ! आपका कथन यथार्थ है । जो आपका भक्त होगा, वही मेरे लिये प्रिय होगा जो इस प्रकार जानेगा उसके लिए मोक्ष दुर्लभ नहीं है ।९।

शिव पूजन की विधि और उसका फल

सूत सूत महाभाग व्यासशिष्य नमोऽस्तुते ।
श्राविताद्याद्भुता शैवकथा परमपावनी ॥१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्राद्भुता सहादिव्या लिंगोत्पत्तिः श्रुता शुभा ।
श्रुत्वा यस्याः प्रभाव च दुःखनाशो भवेदिह ॥२
ब्रह्मनारदसंवादमनुसृत्यदयानिधे ।
शिवार्चन विधि ब्रूहि येन तुष्टो भवेच्छिवः ॥३
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैर्वा पूज्यते शिवः ।
कथं कार्यं च तद् ब्रूहि यथा व्यासमुखाच्छ्रुतम् ॥४
यच्छ्रुत्वा वचनं तेषां शर्मदं श्रुतिसंमतम् ।
उवाच सकलं प्रीत्या मुनि प्रश्नानुसारतः ॥५
साधु पृष्टं भवद्भिश्च तद्रहस्यं मुनीश्वरा ।
तदहं कथयाम्यद्य यथाबुद्धि यथा श्रुतम् ॥६
भवद्भिः पृच्छ्यते यद्वत्तथा व्यासेन वै पुरा ।
पृष्टं सनत्कुमाराय तच्छ्रुतं ह्युपमन्युना ॥७
ततोव्यासेन वै श्रुत्वा शिवपूजादिकं च यत् ।
मह्यं च पाठितं तेन लोकानां हितकाम्यया ॥८

ऋषियों ने कहा—हे सूतजी ! आपको नमस्कार हैं, आपने परम पावनी शिव कथा कही है ।१। उसमें अद्भुत दिव्य लिंग की उत्पत्ति सुनाई, जिसके प्रभाव से इस लोक में दुःखों का क्षय होता है ।२। ब्रह्मा और नारद के सम्वाद को स्मरण कर आप शिव की पूजा विधि कहिये, जिसमें शिवजी सन्तुष्ट हो सकें ।३। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, यह सभी शिवजी की पूजा करते हैं, व्यासजी उसे किस प्रकार करने का उपदेश करते हैं सो कहने की कृपा करे ।४। उनके ऐसे कल्याणप्रद तथा श्रुतिसम्मत वाक्य सुनकर सूतजी कहने लगे ।५। हे मुनियो ! आपने बड़ा उत्तम प्रश्न किया है मैंने जैसा सुना है, वैसा ही कहता हूँ ।६। जो प्रश्न आपने किया था वही व्यासजी ने सनत्कुमार से किया था । उन्होंने कहा और उपमन्यु ने सुना था ।७। फिर शिवार्चन की सम्पूर्ण विधि को लोकों के हितार्थ व्यासजी ने मुझे पढ़ाया ।८।

तच्छ्रुत चैव कृष्णेन ह्युपमन्योर्महात्मनः ।
तदहं कथयिष्यामि यथा ब्रह्मावदत्पुरा ॥९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रृणु नारद प्रवक्ष्यामि संक्षेपाल्लिङ्ग पूजनम् ।
वक्तुं वर्षशतेनापि न शक्यं विस्तरान्मुने ॥१०
एवं तु शांकरं रूपं सुखं स्वच्छं सनातनम् ।
पूजयेत्परया भक्त्या सर्वकामफलाप्तये ॥११
दारिद्र्यं रोगदुःखं च पीडनं शत्रुसंभवम् ।
पापं चतुर्विधं तावद्यन्वन्नार्चयते शिवम् ॥१२
सम्पूजिते शिवेदेवे सर्वदुःखं विलीयते ।
संपद्यते सुखं सर्वं पश्चान्मुक्तिरवाप्यते ॥१३
ये वै मानुष्यमाश्रित्य मुख्य सन्तानतस्सुखम् ।
तेन पूज्यो महादेवः सर्वकार्यार्थसाधकः ॥१४
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याश्शूद्राश्च विधिवत्क्रमात् ।
शङ्करार्चा प्रकुर्वन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥१५

उपमन्यु ने वह सब श्रीकृष्ण को सुनाया था, जैसे ब्रह्माजी ने कहा था, वैसे ही मैं तुमसे कहता हूँ ।९। ब्रह्माजी ने कहा--हे नारदजी ! मैं संक्षेप में लिंग-पूजा की विधि कहता हूँ इसे विस्तार पूर्वक तो सौवर्ष में भी नहीं कहा जा सकता ।१०। इस प्रकार शिवजी का स्वरूप सुखदायक एवं सनातन है । सम्पूर्ण कामनाओं की प्राप्तिके लिए उनका परमभक्ति पूर्वक पूजन करे ।११। दारिद्रय, रोग दुःख तथा शत्रु की पीड़ा यह चार प्रकार के संकट तभी रहते हैं, जब तक कि शंकर की पूजा नहीं की जाती ।१२। भगवान का पूजन करने से सभी दुःखों का लोप हो जाता है और सर्वसुख की प्राप्ति होकर अन्त में मोक्ष मिलती है।१३ मनुष्य जन्म में सन्तान का ही मुख्य सुख है, इसकी प्राप्ति के हेतु सर्वार्थ साधक भगवान शिवजी का पूजन करे ।१४। सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिए चारों वर्णों का क्रमशः शिवार्चन करना चाहिए ।१५।

प्रातःकाले समुत्थाय मुहूर्ते ब्रह्मसंज्ञके ।
गुरोश्च स्मरणं कृत्वा शंभोश्चैव तथा पुनः ॥१६
तीर्थानां स्मरणं कृत्वा ध्यानं चैव हरेरपि ।
ममापि निर्जराणां वै मुन्यादीनां तथा मुने ॥१७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः स्तोत्रं शंभुनाम गृह्णीयाद्विधिपूर्वकम् ।
अथोत्थाय मलोत्सर्गं दक्षिणास्यां चरेद्दिशि ॥१८
एकान्ते तु विधिं कुर्यान्मलोत्सर्गस्य यच्छ्रुतम् ।
तदेव कथयाम्यद्यश्शृणुष्वाधाय मनो मुने ॥१९
शुद्धां मृदं द्विजो लिप्यात्पंचवारं विशुद्धये ।
क्षत्रियश्च चतुर्वारं वैश्यो वारत्रयं तथा ॥२०
शूद्रो द्विवारं च मृदं गृह्णीयाद्विधिशुद्धये ।
गुदे वाथ सकृल्लिंगे वारमेकं प्रयत्नतः ॥२१

प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठे और गुरु तथा शिवजी को स्मरण करे ।१६। फिर तीर्थों का स्मरण और शंकर का ध्यान करे ।१७। शिवनामके स्तोत्र का विधिवत् जप करे और फिर उठकर दक्षिण दिशा में जाकर मल त्याग करे ।१८। शास्त्रानुसार मलोत्सर्ग एकान्त में करे । हे मुने ! उसकी विधि आपसे कहता हूँ, ध्यान से सुनो।१९। शुद्धि के लिए ब्राह्मण को मृत्तिका से पाँच बार हाथ धोने चाहिए, क्षत्रिय चार बार तथा वैश्य तीन बार हाथ धोवे ।२०। शूद्र दो बार मिट्टी से हाथ धोवे, गुदा और लिंग में भी एक बार मिट्टी लगावे ।२१।

दशवारं वामहस्ते सप्त वारं द्वयोस्तथा ।
प्रत्येकम्पादयोस्तात त्रिवारं करयोः पुनः ॥२२
स्त्रीभिश्च शूद्रवत्कार्यं मृदाग्रहणमुत्तमम् ।
हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य पूर्ववन्मृदमाहरेत् ॥२३
दन्तकाष्ठं ततः कुर्यात्स्ववर्णक्रमतो नरः ॥२४
विप्रः कुर्याद्दत्तकाष्ठं द्वादशांगुलमानतः ।
एकादशांगुलं राजा वैश्यः कुर्याद्दशांगुलम् ॥२५
शूद्रो नवांगुलं कुर्यादिति मानमिदं स्मृतम् ।
कालदोषं विचार्य्यैव मनुदृष्टविवर्जयेत् ॥२६
षष्ठ्याद्यामाश्च नवमी व्रतमस्तं रवेर्दिनम् ।
तथा श्राद्धदिनं तात निषिद्धं रदधावने ॥२७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नानं तु विधिवत्कार्यं तीर्थादिषुक्रमेण तु ।
देशकालविशेषेण स्नानं कार्यं समन्त्रकम् ॥२८

बायें हाथ से दस बार, फिर दोनों हाथों से सात-सात बार मृत्तिका लगावे पाँव के तले में तीन बार लगाकर फिर तीन बार हाथ धोवे ।२२। स्त्रियों को शूद्र के समान मिट्टी से हाथ धोने चाहिए । हाथ-पांव धोकर पूर्ववत् मिट्टी ग्रहण करे फिर अपने वर्ण क्रम के अनुरूप दांतुन करें ।२३-२४। ब्राह्मण को बारह अंगुल की दांतुन करने का विधान है, क्षत्रिय को ११ अंगुल की और वैश्य को दस अंगुल की ।२५। शूद्र भी नौ अंगुल की दाँतुन करे । इस प्रकार प्रमाण कहा गया है । काल-दोष का विचार करके क्रिया करे तो दृष्ट को भी वर्जित किया जा सकता है ।२६। छट अमावस, नवमी व्रत का दिन, सूर्यास्त के समय रविवार अथवा श्राद्ध के दिन दाँतुन करने का निषेध है । तीर्थादि में क्रम पूर्वक तथा विधि सहित स्नान करे । विशेषकर देशकाल के अनुसार और मन्त्र सहित स्नान करना चाहिए ।२७-२८।

आचम्यं प्रथमं तत्र धौत वस्त्रेण चाधरेत् ।
एकान्ते सुस्थले स्थित्वा संध्याविधिमथाचरेत् ॥२९
यथायोग्यं विधिं कृत्वा पूजाविधिमथारभेत् ।
मनस्तु सुस्थिरं कृत्वा पूजागारं प्रविश्य च ॥३०
पूजाविधिं समादाय स्वासने ह्युपविश्य वै ।
न्यासादिकं विधायादौ पूजयेत्क्रमशोहरम् ॥३१
प्रथमं च गणाधीशं द्वारपालास्तथैव च ।
दिक्पालाश्च सुसंपूज्य पश्चात्पीठं प्रकल्पयेत् ॥३२
अथवाऽष्टदलं कृत्वा पूजाद्रव्यं समीपतः ।
उपविश्य ततस्तत्र उपवेश्य शिवं प्रभुम् ॥३३
आचमनत्रयं कृत्वा प्रक्षाल्य च पुनः करौ ।
प्राणायामत्रयं कृत्वा मध्ये ध्यायेच्च त्र्यम्बकम् ॥३४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचवक्त्रं दशभुजं शुद्धस्फटिकसन्निभम् ।
सर्वाभरणसंयुक्तं व्याघ्रचर्मोत्तरीयकम् ॥३५

स्नान करने के पश्चात् धुले हुए वस्त्र धारण करे फिर स्वच्छ स्थान में एकान्त में बैठकर संध्या करे ।२८-२९। यथाविधि करके, पूजन आरम्भ करे । मन को स्थिर करके पूजा स्थान में प्रवेश करे ।३०।विधि सहित आसन ग्रहण कर न्यासादि करे और फिर क्रम से शिवजी का पूजन करे ।३१। प्रथम गणेशजी को पूजे, फिर द्वारपाल और दिक्पालों का पूजन करे और सिंहासन की कल्पना करे ।३२। अथवा पूजा द्रव्य के निकट अष्टदल कमल बनाकर स्वयं बैठे और वहाँ भगवान शिवजी की स्थापना करे ।३३। फिर तीन आचमन कर हाथ धोवे और तीन प्राणा-याम कर मध्य में त्र्यम्बक देव का ध्यान करे ।३४। पाँच मुख दस भुजा स्फटिक मणि के समान स्वच्छ सम्पूर्ण आभरण, व्याघ्र चर्म उत्तरीय सहित सुशोभित करे ।३५।

तस्य सारूप्यतां स्मृत्वा नहेत्पाप नरस्सदा ।
शिवं ततः समुत्थाप्य पूजयेत्परमेश्वरम् ॥३६
देहशुद्धि ततः कृत्वा मूलमन्त्रं न्यसेत्क्रमात् ।
सर्वत्र प्रणवेनैव षडङ्गन्यासमाचरेत् ॥३७
कृत्वा हृदि प्रयोगं च ततः पूजा समारभेत् ।
पाद्यार्घाचमनार्थं च पात्राणि च प्रकल्पयेत् ॥३८
स्थापयेद्विविधान्कुंभवान्नव धीमान्यथाविधि ।
दर्भैराच्छाद्य तैरेव संस्थाप्याभ्युक्ष्यवारिणा ॥३९
तेषु तेषु च सर्वेषु क्षिपेत्तोयं सुशीतलम् ।
प्रणवेन क्षिपेत्तेषु द्रव्याण्यालोक बुद्धिमान् ॥४०
उशीर चन्दनं चैव पाद्ये तु परिकल्पयेत् ।
जातीकं कोलकर्पूरखट्मूल तमालकम् ॥४१
चूर्णयित्वा यथान्यायं क्षिपेदाचमनीयके ।
एतत्सर्वेषु पात्रेषु दापयेच्चन्दनान्वितम् ॥४२

भगवान शिवजी की सहायता को प्राप्त होकर प्राणी अपने पापोंको

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदैव क्षीण करे, फिर भगवान शिव को उठाकर उनकी पूजा करे ।३६। फिर देह की शुद्धि कर क्रम पूर्वक मूलमन्त्र का न्यास करे, ओंकार के सहित षडंग न्यास करना चाहिए ।३७। हृदय में प्रयोग करके पूजन प्रारम्भ करे और पाद्य, अर्घ्य, आचमन, के लिए पात्रों की कल्पना करे ।३८। यथाविधि नवीन घट स्थापित करे, फिर कुशों से आच्छादित करके जल से छिड़के ।३९। उन सब पात्रों में शीतल जल भरे और द्रव्यों को ग्रहण कर प्रणवोच्चार सहित उसमें डाले ।४०। पाद्य में उशीर और चन्दन का प्रयोग करे । जायफल, कंकोल, कपूर, वटमूल और तमाल ।४१। सबको चूर्ण कर आचमन में डाले तथा चन्दन आदि भी इन पदार्थों में मिलाये ।४२।

पार्श्वयोर्देवदेवस्य नन्दीश तु समर्चयेत् ।
गन्धैर्धूपैस्तथादीपैर्विविधैः पूजयेच्छिवम् ।।४३
लिंगशुद्धि ततः कृत्वा मुदा युक्तो नरस्सदा ।
यथोचित तु मन्त्रौघैः प्रणवादिर्नमोतकैः ।।४४
कल्पयेदासनं स्वस्तिपद्मादि प्रणवेनतु ।
तस्मात्पूर्व दिश साक्षाद्अणिमामयक्षरम् ।।४५
लधिमा दक्षिणं चैव महिम पश्चिमं तथा ।
प्राप्तिश्चैवोत्तर पत्रं प्राकाम्यं पावकस्य च ।।४६
ईशत्वं नैऋत पत्रं वशित्वं वायुगोचरे ।
सर्वज्ञत्वं तथैशान्यं कर्णिका सोम इच्यते ।।४७
सोमस्याधस्तथा सूर्यस्तस्याधः पावकस्त्वयम् ।
धर्मादीनपि तस्याधो भवतः कल्पतेत क्रमात् ।।४८
अव्यक्तादिचतुर्दिक्षुसोमस्याते गुणात्रयम् ।
सद्योजात प्रवक्ष्यामीत्यावाह्य परमेश्वरम् ।।४९

महादेवजी के पार्श्व में नन्दीगण का पूजन करे और विविध गन्ध, धूप, दीप से शिव का पूजन करे ।४३। फिर लिंग की शुद्धि कर मन से ओंकार सहित नमस्कार करें ।४४। ओंकार सहित स्वस्ति कमल आदि युक्त आसनकी कल्पना करे और पूर्वजों और साक्षात्अणिमायुक्त अक्षर,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को।४५। लघिमा सिद्धि दक्षिणकी ओर, महिमा, पश्चिम की ओर प्राप्ति उत्तर की ओर तथा प्राकाम्य अग्नि दिशा में।४६। ईशत्व नैऋत्य दिशा में वशित्व को वायुकोण के दल में सर्वज्ञ सिद्धि को ईशान में कल्पित करे तथा कर्णिका सोम कही जाती है।४७। सोम के नीचे सूर्य उसके नीचे धर्मादि की कल्पना क्रमपूर्वककरे।४८। अव्यक्तादिको चारों दिशाओं में सोम के अन्त में तीनों गुणोंको कल्पित करे तथा सद्योजात प्रवक्ष्यामि आदि मन्त्र से ईश्वर का आह्वान करना चाहिए।४६।

वामदेवेन मन्त्रेण तिष्ठेच्चैवासनोपरि ।
सान्निध्यं रुद्रगायत्र्या अघोरेण निरोधयेत् ।।५०
ईशानं सर्वविद्यानामिति मन्त्रेण पूजयेत् ।
पाद्यमाचमनीयं च विधायार्घ्यं प्रदापयेत् ।।५१
स्थापयेद्विधिना रुद्रं गन्धचन्दनवारिणा ।
पञ्चगव्यं विधानेन गृह्यपात्रेऽभिमन्त्र्य च ।।५२
प्रणवेनैवगव्येन स्नापयेत्पयसा च तम् ।
दध्ना च मधुना चैव तथा चेक्षुरसेन तु ।।५३
घृतेन तु तथा पूज्य सर्वकामहितावहम् ।
पुण्यैर्द्रव्यैर्महादेवं प्रणवेनाभिषेचयेत् ।।५४
पवित्रजलभाण्डेषु मन्त्रैस्तोयं क्षिपेत्ततः ।
शुद्धीकृत्य यथान्यायं सितवस्त्रेण साधकः ।।५५
तावद्दूरं न कर्तव्य न यावच्चन्दनं क्षिपेत् ।
तन्दुलैस्सुन्दरैस्तत्र पूजयेच्छङ्करम्मुदा ।।५६

वामदेव मन्त्र से आसन पर स्थित, रुद्र गायत्री से उनका सन्निध्य तथा 'अघोरेभ्यो अघोरेभ्यो' मन्त्र से निरोध करे।५०। 'ईशानः सर्व-विद्यानाम, आदि मन्त्रसे पूजा करे और पाद्य आचमन के पश्चात् अर्घ्य दे।५१। गंध चन्दन के जल से विधिवत् रुद्र की स्थापना करे फिर पंच गव्य से ओंकार पूर्वक शिवजी को स्नान करावे। दही मधु और ईखके रससे।५२-५३।तथा घृतसे सम्पूर्ण कामना और हितके देनेवाले शिवजी का पूजन करे तथा पवित्र द्रव्यों से प्रणव पूर्वक शिवजी का पूजन करे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।५४। पवित्र जलों को मन्त्र सहित पात्रों में ग्रहण करे तथा योग्य श्वेत वस्त्र से जल को छाने ।५५। जब तक चन्दन न डाले, तब तक दूर न करे तथा श्रेष्ठ चावलों से शिवजी का पूजन करे ।५६।

कुशापामार्गकर्पूरजातिचंपकपाटलैः ।
करवीरैस्सितैश्चैव मल्लिकाकमलोत्पलैः ॥५७
अपूर्वपुष्पैर्विविधैश्चन्दनाद्यैस्तथैव च ।
जलेन जलधाराञ्च कल्पयेत्परमेश्वरे ॥५८
पात्रैश्च विविधैर्देवं स्नापयेच्च महेश्वरम् ।
मन्त्रपूर्वं प्रकर्तव्या पूजा सर्वफलप्रदा ॥५९
मन्त्राश्च तुभ्यं तांस्तात सर्वकामार्थसिद्धये ।
प्रवक्ष्यामि समासेन सावधानतया शृणु ॥६०
पाठ्यमानेन मन्त्रेण तथा वाङ्मयकेन च ।
रुद्रेणनीलरुद्रेण सुशुल्केन शुभेन च ॥६१
होतारेण तथाशीर्षणशुभेनार्थवणेन च ।
शान्त्या वाथ पुनश्शांत्या मांरुणेनारुणेन च ॥६२
अर्थाभीष्टेन साम्ना च तथा देवव्रतेन च ॥६३
रथांतरेणपुष्पेणसूक्तेन युक्तेन च ।
मृत्युञ्जयेन मन्त्रेण तथा पञ्चाक्षरेण च ॥६४

कुशा, चिरचिटा, कर्पूर, जातिफल, चम्पक, पाटल, कनेर, पुण्य, मल्लिका और कमल ।५७। तथा अन्य अनेक पूर्व पुष्प चन्दनादि से पूजन कर शिवजी पर जल की धारा छोड़े ।५८। अनेक प्रकार के पात्र में जल भरकर पूजन मँत्र पूर्वक की हुई पूजा सम्पूर्ण कामनाओं और उन मन्त्रों को संक्षेप में कहता हूँ, ध्यान पूर्वक श्रवण करो ।५९-६०। पढ़ाये गये मन्त्र, वाङ्मय कण्ठस्थ मन्त्र, रुद्र सूक्त मन्त्र,नील सूक्तके मत्र तथा शुकल यजुर्वेद के श्रेष्ठ मन्त्रों से ।६१। होतारम् यजुर्मन्त्र, अथर्व-शीर्ष के मन्त्र, फिर शांति, आरुणि मन्त्र से ।६२। जो अपने को अनुकूल हो ऐसे अथर्व और साम मन्त्र तथा देव व्रत मन्त्र से ।६३। रथान्तर मत्र पुष्पसूक्त के मन्त्र मृत्युञ्जय मन्त्र तथा पञ्चाक्षर मन्त्र से ।६४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

जलधरा: सहस्त्रेणशतेनैकोत्तरेण वा ।
कर्तव्या वेदमार्गेण नामभिर्वाथ वा पुन: ।।६५
ततश्चन्दनपुष्पादि रोपणीय शिवोपरि ।
ढापयेत्प्रणवेनैव मुखवासादिक तथा ।।६६
तत: स्फटिक संकाश देवं निष्फलमक्षयम् ।
कारणं सर्वलोकानां सर्वलोकमयं परम् ।।६७
ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रविष्णवाद्यै रपि देवैरगोचरम् ।
वेदविद्भिर्हि वेदांते त्वंगोचरमिति स्मृतम् ।।६८
आदिमध्यान्तरहितं भेषज सर्वरोगिणाम् ।
शिवतत्वमिति ख्यात शिवलिंगं व्यवस्थितम् ।।६९
प्रणवेनैवे मन्त्रेण पूजयेल्लिंगमूर्द्धनि ।
धूपैदीपैश्च नैवेद्यै स्ताम्बूलै: सुन्दरैस्तथा ।।७०

एक हजार जलधारा से अथवा एक सौ एक जलधारा से वेद मंत्रों से अथवा नाम मन्त्रों से भगवान शिवजी के ऊपर अभिषेक करे ।६५। फिर चन्दन, पुष्प आदि अर्पित करे तथा मुखवासादि के लिए सामग्री प्रणव से अर्पण करनी चाहिए ।६६। फिर स्फटिक मणि के समान देव-फल रहित, क्षय रहित, सब लोकों के कारण एवं सर्वलोकमय परम स्वरूप ।६७। ब्रह्मा, इन्द्र उपेन्द्र विष्णु आदि को भी अगोचर तथा वेदान्तियों के वेदान्त में भी अगम्य ।६८। आदि, मध्य, अन्त से रहित सब रोगों के लिए औषधि रूप, विख्यात शिवतत्व रूप शिवलिंग प्रतिष्ठित हैं ।६९।धूप दीप, नैवेद्य, ताम्बूल शिवलिंग पर चढ़ाना चाहिए और चढ़ाते समय प्रत्येक बार प्रणव का उच्चारण करना चाहिए ।७०।

नीराजनेनं रम्योण यथोक्तविधिना तत: ।
नमस्कारै: स्तवैश्चयान्यैर्मन्त्रैर्नानाविधैरपि ।।७१
अर्घ्यंदत्वा तु पुष्पाणि पादयोस्सुविकीर्य च ।
प्राणिपत्य च देवैशुभात्मनाऽऽराधयेच्छिवम् ।।७२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्ते गृहीत्वा पुष्पाणि समुत्थाय कृतांजलिः ।
प्रार्थयेत्पुनरीशानं मन्त्रेणानेन शङ्करम् ॥७३

अज्ञानादि वा ज्ञानाज्जपपूजादिकं मया ।
कृतं तदस्तु सफलं कृपया तव शंकर ॥७४

पठित्वैव च पुष्पाणि शिवोपरि मुदा न्यसेत् ।
स्वस्त्ययं ततः कृत्वा ह्यशिषो विविधास्तथा ॥७५

मार्जनं तु ततः कार्यं शिवस्योपरि वै पुनः ।
नमस्कारं ततः क्षांति पुनराचमनाय च ॥७६

अधोच्चारणमुच्चार्य नमस्कारं प्रकल्पयेत् ।
प्रार्थयेच्च पुनस्तत्र सर्वभावसमन्वितः ॥७७

फिर यथाविधि नीराजन, नमस्कार और स्तुति करते हुए अनेक प्रकार के मन्त्रों का उच्चारण करें ।७१। अर्घ्य देकर शिवजी के चरणों में पुष्प अर्पण करें और प्रणाम पूर्वक उनकी आराधना करें ।७२। फिर हाथ में पुष्प ग्रहण कर उठे और अगले मन्त्र से ईशान देवता की आराधना करें ।७३। हे शंकर ! मैंने जो ज्ञान या अज्ञान से आपका पूजन किया है, वह सब आपकी कृपा से फलयुक्त हो।७४। यह कहकर शिवजी के ऊपर पुष्प चढ़ावे, फिर स्वस्तिवाचन करके आशीर्वाद ग्रहण करे । ।७५। फिर शिवजी के ऊपर मार्जन करे फिर नमस्कार कर अपराध क्षमा करावे और आचमन करावे ।७६। फिर अघोर मन्त्र का उच्चारण कर नमस्कार की कल्पना करे और सभी भावों से शिवजी की स्तुति प्रार्थना करे ।७७।

शिवे भक्ति शिवे भक्तिर्भवेभवे ।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥७८

इति संप्रार्थ्यं देवेशं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
पूजयेत्परया भक्त्या गलनादैर्विशेषतः ॥७९

नमस्कारं ततः कृत्वा परिवारगणैस्सह ।
प्रहर्षमतुलं लब्ध्वा कार्यं कुर्याद्यथासुखम् ॥८०

एवं यः पूजयेन्नित्यं शिवभक्तिपरायणः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्य वै सकला सिद्धिर्जायते तु पदे ।८१
वाग्मी संजायते तस्य मनोऽभीष्टंफलं ध्रुवम् ।
रोगं दुःखं च शोकं च ह्युद्वेगं कृत्रिमं तथा ।८२
कौटिल्यं च गरं चैव यद्यद्दुःखमुपस्थितम् ।
तद्दुःखं नाशयत्येव शिवः शिवकरः परः ।८३
कल्याणं जायते तस्य शुक्लपक्षे यथा शशी ।
वर्द्धते सद्गुणतस्त ध्रुवं शंकरपूजनात् ।८४

मेरी शिवजी में भक्ति हो, निरन्तर शिवजी में भक्ति रहे। हे शिव! तुम ही मुझे शरण देने वाले हो, कोई दूसरा नहीं है ।७८। इस प्रकार सर्वसिद्धि प्रदायक देवों के भी ईश्वर शिवजीकी प्रार्थना कर परम भक्ति पूर्वक कण्ठनाद के शब्दों द्वारा उन्हें प्रसन्न करे ।७९। फिर परिवारी जनों के सहित नमस्कार करता हुआ अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त हो सुखदायक कार्य करे ।८०। जो मनुष्य शिव-भक्ति-परायण होकर नित्यप्रति इस प्रकार पूजा करते हैं, उनको पद-पद पर सिद्धि प्राप्त होती है ।८१। वह मनुष्य वाग्मी होता है और उसकी सभी इच्छायें फलदायक होती हैं, रोग, दुःख शोक, उद्वेग बनावट।८२। कुटिलता तथा विष के प्रयोग से उत्पन्न दुःखों को कल्याणकारी शिवजी नष्ट करते हैं । ।८३। शुक्लपक्ष चन्द्रमा के समान उनका कल्याण होता है और शिवजी की पूजा करने से सद्गुणों की वृद्धि होती है ।८४।

लिंग-पूजा-विधान और स्तोत्र-पाठ

अतः परं प्रवक्ष्यामि पूजाविधिमनुत्तमम् ।
श्रूयतामृषयो देवास्सर्वकामसुरखावहम् ।१
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय संस्मरेत्सांबकं शिवम् ।
कुर्यात्तत्प्रार्थनां भक्त्या सांजलिर्नतमस्तकः ।२
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश उत्तिष्ठ हृदयेशय ।
उत्तिष्ठ त्वमुमास्वामिन्ब्रह्मांडे मंगलं कुरु ।३
जानामि धर्मंन च मे प्रवृत्ति र्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
त्वया महादेवहृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ।४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्त्वा वचनं भक्त्या स्मृत्वा च गुरुपादुके ।
बहिर्गच्छेददक्षिणाशां त्यागार्थं मलमूत्रयोः ।५
देहशुद्धि ततः कृत्वा समृज्जलविशोधनैः ।
हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य दंतधावनमाचरेत् ।६
दिवानाथे त्वनुदिते कृत्वा वै दंतधावनम् ।
मुखं षोडशवारं तु प्रक्षाल्याजलिभिस्तथा ।७

ब्रह्माजी ने कहा--अब मैं श्रेष्ठ पूजन की विधि कहता हूँ हे देवताओं ! वह सब सुख और कामनाओं को देने वाली है ।१। ब्राह्म मुहूर्त में उठकर शिव-पार्वती का स्मरण करे और हाथ जोड़कर नत-मस्तक हो भक्ति पूर्वक उनकी प्रशंसा करे ।२। हे देवेश ! हे हृदयेशय ! आप उठिए और ब्रह्माण्ड का कल्याण कीजिये ।३। मैं धर्मका ज्ञाता हूँ किन्तु उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं है । प्रभो ! आप मेरे हृदय में स्थित होकर जैसी प्रेरणा करते हो, मैं उसी के अनुसार करता हूँ ।४। इस प्रकार भक्ति-भाव पूर्ण वचन कहे और गुरु पादुकाओं का स्मरण कर, मल-मूत्र त्यागर्थं ग्राम से बाहर दक्षिण दिशा को गमन करे।५। फिर मिट्टी और जल से देह शुद्धि कर हाथ पाँव धोवे और दाँतुन करे ।६। सूर्योदय से पूर्व दाँतुन करके सोलह कुल्ला करे ।७।

यथावकाशं सस्नायान्नद्यादिष्वथवा गृहे ।
देशकालविरुद्धं न स्नानं कार्यं नरेण च ।८
तैलाभ्यंगं च कुर्वीत वारान्दृष्ट्वा क्रमेण च ।
नित्यमभ्यंगके चैव वासितं वा न दूषितम् ।९
श्राद्धे च ग्रहणे चैवोपवासे प्रतिपद्दिने ।
अथवा सार्षपं तैलं न दुष्येद् ग्रहणं विना ।१०
देश कालं विचार्य्यैवं स्नानं कुर्याद्यथाविधि ।
उत्तराभिमुखच्चैव प्राङ्मुखोप्यथवा पुनः ।११
उच्छिष्टेनैव वस्त्रेण न स्नायात्स कदाचन ।
शुद्धवस्त्रेण स स्नायाद् देवस्मरणपूर्वकम् ।१२
परधाय्य च नोच्छिष्टं रात्रौ च विद्युतं च यत् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेन स्नानं तथा कार्यं क्षालितं च परित्यजेत ।१३
तर्पणं च ततः कार्यं देवर्षिपितृतृप्तिदम् ।
धौतवस्त्रं ततो धार्यं पुनराचमनं चरेत् ।१४

यथा सुविधा नदी अथवा गृह में स्नान करे । स्नान देश काल को देखकर करना उचित है । वारों को देखकर क्रमानुसार तेल लगावें, नित्य तेल लगाने वाले को वार दूषित नहीं है ।७-१०। देश-काल को विचार कर, उत्तर या पूर्व की ओर मुख करके स्नान करे।११। उच्छिष्ट से स्नान न करे और अपने देवता का स्मरण करता हुआ शुद्ध वस्त्र से स्नान करे ।१२। दूसरे का धारण किया हुआ वस्त्र उच्छिष्ट कहा है । परन्तु एक रात्रि का धारण किया हुआ वस्त्र उच्छिष्ट नहीं है, उसमें स्नान करे और धोये हुए वस्त्र को छोड़ दे ।१३। फिर देवताओं और ऋषियों की तृप्ति के लिए तर्पण करें और धुला हुआ वस्त्र धारण कर आचमन करे ।१४।

शुचौ देशे ततो गत्वा गोमयाद्युपमार्जिते ।
आसनं च शुभं तत्रः रचनीयं द्विजोत्तमा ।१५
शुद्धकाष्ठासमुत्पन्नं पूर्णंस्तरितमेव वा ।
चित्रासनं तथा कुर्यंष्सर्वकामफलप्रदम् ।१६
यथायोग्यं पुनर्ग्राह्य मृगचर्मादिक च यत् ।
तत्रोपविश्य कुर्वीत त्रिपुण्ड्रं भस्मना सुधीः ।१७
जपस्तपस्तथा दानं त्रिपुण्ड्रात्सफलं लभेत् ।
अभावे भस्मनस्तत्र जलस्यादि प्रकीर्तितम् ।१८
एवं कृत्वा त्रिपुण्ड्रं च रुद्राक्षान्धारयेन्नरः ।
संपाद्य च स्वकं कर्म पुनराराधयेच्छिवम् ।१९
पुनराचमनं कृत्वा त्रिवारं मंत्रपूर्वकम् ।
एकं वाथ कुर्याच्च गङ्गाविष्णुरितिब्रुवन् ।२०
अन्नोदकं तथा तत्र शिवपूजार्थमाचरेत् ।
अन्यद्वस्तु च यत्किंचिद्यथाशक्ति समापगम् ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर गोबर से लिपे हुए पवित्र स्थान में सुन्दर आसन कल्पित करें ।१५। वह शुद्ध काष्ठ का और चिकना हो, ऐसा चित्रासन सर्व कामना और फल देने वाला बनावे ।१६। फिर मृग चर्म आदि को ग्रहण कर उस पर बैठे और भस्म से त्रिपुण्ड धारण करे ।१७। त्रिपुण्ड धारण से जप तप, दान सब सफल होता है, यदि भस्म न हो तो जल से ही त्रिपुण्ड लगाना चाहिए ।१८। इस प्रकार त्रि पुण्ड धारण के पश्चात् रुद्राक्ष धारण करे और सम्पादन करता हुआ, शिवजीकी आराधना करें ।१६। फिर मन्त्र पूर्वक तीन आचमन करके गङ्गा विष्णु का उच्चारण करता हुआ एक बार तिलक लगावे ।२०। फिर शिवजी का पूजन करने के लिए यथाशक्ति अन्न, जल अथवा अन्य जो वस्तु हो निकट लावें।२१

कृत्वा स्थैर्यं च तत्रैव धैर्यमास्थाय वै पुनः ।
अर्घ्यपात्रं तथा चैकं जलगंधाक्षतैर्युतम् ।२२
दक्षिणां से तथा स्थाप्यमुपचारस्य कुलाप्तये ।
गुरोश्च स्मरणं कृत्वा तदनुज्ञामवाप्य च ।२३
सङ्कल्पं विधिवत्कृत्वा कामनां च नियुज्य वै ।
पूजयेत्परया भक्त्या शिवं सपरिवारकम् ।२४
मुद्रामेकां प्रदर्श्यैव पूजयेद्विघ्नहारकम् ।
सिंदुरादिपदार्थैश्च सिद्धिवृद्धिसमन्वितम् ।२५
लक्षलाभयुतं तत्र पूजयित्वा नमेत्पुनः ।
चतुर्थ्यै तैर्नामपदैर्नमोऽन्तैः प्रणवादिभिः ।२६
क्षमाप्यैन तदा देवं भ्रात्रा चैव समन्वितम् ।
पूजयेत्परया भक्त्या नमस्कुर्यात्पुनः पुनः ।२७
द्वारपालं सदा द्वारि तिष्ठं तं च महोदरम् ।
पूजयित्वा ततः पश्चात्पूजयेद्गिरिजां सतीम् ।२८

यह करता हुआ धैर्य पूर्वक वहाँ बैठे और फिर गन्ध, जल, अक्षत से युक्त अर्घ्य पात्र ग्रहण करे ।२२। फिर उपचार की पूर्ति के हेतु अपने दक्षिण ओर उसे स्थापित कर गुरु का स्मरण करे और उनकी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञा प्राप्त करके।२३। विधिवत् संकल्प करे और उसमें अपनी कामना व्यक्त करता हुआ परम भक्तिभाव से सपरिवार शिवजी की पूजा करे। इनकी फिर एक मुद्रा भेंट को उपस्थित कर विघ्नेश्वर की पूजा करे। इनकी पूजा सिद्धि से करता हुआ सिन्दूर आदि पदार्थ अर्पण करे।२४-२५। लक्ष लाभ युक्त पूजन करके नमस्कार कर और प्रणाम करें तो प्रणव सहित चतुर्थी विभक्ति नाम में लगाकर अन्त में नमः लगावे।२६ फिर उनसे क्षमा कराकर स्कन्द भ्राता सहित परम भक्ति पूर्वक पूजा कर बारम्बार प्रणाम करें।२७। शिवजी के द्वार पर सदा स्थित रहने वाले महोदर नामक द्वारपाल की पूजा कर फिर सती पार्वतीजी का पूजन करे।२८।

चन्दनैः कुंकमैश्चैव धूपैर्दीपैरनेकशः।
नैवेद्यैर्विविधैश्चैव पूजयित्वा ततश्शिवम्।२९
नमस्कृत्य पुनस्तत्र गच्छेच्च शिवसन्निधौ।
यदि गेहे पार्थिवीं वाहैमीं वा राजतीं तथा।३०
धातुजन्यां तथैवान्यां पारदां वा प्रकल्पयेत।
नमस्कृत्य पुनस्तां च पूजयेद्भक्तितपरः।३१
तस्यां तु पूजितायां वै सर्वं स्युः पूजितास्तदा।
स्थापयेच्च मृदां लिंगं विधाय विधिपूर्वकम्।३२
कर्तव्यं सर्वथा तत्र नियमास्स्वगृहे स्थितैः।
प्राणप्रतिष्ठां कुर्वीत भूतशुद्धिं शिवालये।३३
दिक्पालान्पूजयेत्तत्र स्थापयित्वा शिवालये।
गृहेशिवस्सदा पूज्यो मूलमन्त्राभियोगतः।३४
तत्र तु द्वारपालानां नियमो नास्ति सर्वथा।
गृहे लिंगं च यत्पूज्यं तस्मिन्सर्वंप्रतिष्ठितम्।३५

चन्दन केसर, धूप, दीपक और नैवेद्य के द्वारा शिवजी का पूजन करे।२९। फिर नमस्कार कर उनके निकट जाकर घरमें स्वर्ण या रजत जो कुछ पार्थिव धातु हो।३०। अथवा अन्य धातु या पारे की मूर्ति को नमस्कार कर भक्ति-भाव से तन्मयता पूर्वक पूजन करे।३१। उसको

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजने से सभी का पूजन हो जाता है। मृत्तिका का लिंग विधि पूर्वक स्थापित करे।३२। अपने घर में रहकर नियम पालन करे और शुद्धि करके भगवान की प्राण प्रतिष्ठा करे।३३। शिवालय में प्रतिष्ठित कर दिक्पालों को पूजे तथा घरों में भी मूल मन्त्र से शिवजी की अर्चना करे।३४। घर में द्वारपाल के पूजन का नियम नहीं है, वहीं जो लिंग पूजा जाता है उसी में सब प्रतिष्ठित हैं।३५।

पूजाकाले च सांगं वै परिवारेण संयुतम् ।
आवाह्यपूजयेद्देवं नियमोऽत्र न विद्यते ।३६
शिवस्य सन्निधिं कृत्वा स्वासनं परिकल्पयेत् ।
उद्मुखस्तदा स्थित्वा पुनराचमनं चरेत् ।३७
प्रक्षाल्य हस्तौ पश्चाद्वै प्राणायामं प्रकल्पयेत् ।
मूलमन्त्रेण तत्रैव दशावर्तनयेन्नरः ।३८
पञ्च मुद्राः प्रकर्तव्याः पूजावश्यं करेप्सिताः ।
एता मुद्राः प्रदर्श्यैव चरेत्पूजाविधिं नरः ।३९
दीपैः कृत्वा तदा तत्र नमस्कारं गुरोरथ ।
वध्वा पद्मासनं तत्रभद्रासनमथापि वा ।४०
उत्तानासाग्नकं कृत्वा पर्यंकासनकं तथा ।
यथासुखं तथा स्थित्वा प्रयोगं पुनरेव च ।४१
कृत्वा पूजां पुराजातां वह्वचेनैव तारयेत् ।
यदि वा स्वयमेवेह गृहे न नियमोऽस्ति च ।४२

पूजन के समय पूरे परिवार सहित आवाहन और देव-पूजन करे।३६।शिवजीके निकट ही अपना आसन कल्पित करे और उत्तराभिमुख होकर आचमन करे।३७। फिर हाथ धोकर प्राणायाम मूल-मन्त्र से दश बार करे।३८। फिर पाँचों मुद्रा दिखावे,क्योंकि पूजन कार्य सम्पन्न करने का विधान है।३९। फिर दीपक करके गुरु को नमस्कार करे और पद्मासन या भद्रासन के स्थित होकर।४०।उत्तानासन अथवा पर्यंकासन करके सुख पूर्वक बैठे।४१। पहिले के समान पूजन करके टंक के तारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे और घर में ही पूजन ही तो इसका नियम नहीं है ।४२।

पश्चाश्चैवार्घपात्रेण क्षालयेल्लिङ्गमुत्तमम् ।
अनन्यमानसो भूत्वा पूजाद्रव्यं निधाय च ।४३
पश्चाच्चावाहयेद्देवं मन्त्रेणानेन वैं नरः ।
कैलाशशिखरस्थं च पार्वतीपतिमुत्तमम् ।४४
यथोक्तरूपिणं शंभुं निर्गुणं गुणरूपिणम् ।
पञ्चवक्त्रं दशभुजं त्रिनेत्रं वृषभध्वजम् ।४५
वासुक्यादिपरीताङ्ग पिनाकाद्यायुधान्वितम् ।
सिद्ध्योऽष्टौ च तस्याग्रे नृत्यंतींह निरन्तरम् ।४६
कर्पूगौरं दिव्यांगं चन्द्रमौलिं कपर्द्दिनम् ।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च गजचर्माम्बरं शुभम् ।४७
जय जयेति शब्दैश्च सेवितं भक्तपुञ्जकैः ।
तेजसा दुःसहेनैव दुर्लक्ष्यं देवसेवितम् ।४८
शरण्यं सर्वसत्वानां प्रसन्नमुखपंकजम् ।
वेदैः शास्त्रैर्यथा गीतं विष्णुब्रह्मनुतं सदा ।४९

फिर पुरुषोत्तम शिवलिंग को अर्घ्यपात्र से स्नान करावे और किसी दूसरी ओर मन न रखकर पूजन द्रव्य का विधान करे ।३३। फिर मंत्र से आह्वान करे । कैलाश शिविर पर स्थित उमापति ।४४। निर्गुण-सगुण यथोक्त रूप शिव-पाँच मुख, दश भुजा, तीन नेत्र, वृषभध्वज।४५। कर्पूर जैसे गौरांग मस्तक पर चन्द्रमा तथा जटाजूट से शोभायमान, व्याघ्र चर्म का उत्तरीय धारण एवं श्रेष्ठ गजचर्म धारण किये ।४६। वासुकी आदि सर्पों को कण्ठ में लपेटे, हाथ ये पिनाक आदि आयुध धारण किये हैं, उनके आगे अष्टसिद्धि निरन्तर नृत्य करती हैं ।४७। जिनके चारों ओर भक्त समूह जय जयकार कर रहे हैं जो अपने दुःसह तेज के शरणदाता, प्रसन्न मुखकमल से युक्त वेद शास्त्रों के गान तथा ब्रह्मा विष्णु द्वारा भी स्तुत्य है ।४९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तवत्सलमानंदं शिवमावाह्याम्यहम् ।
एवं ध्यात्वा शिवं साम्बमासनं परिकल्पयेत् ।५०
चतुर्थ्यन्तपदेनैव सर्वंकुर्याद्यथाक्रमम् ।
ततः पाद्यं प्रदद्याद्वै ततोर्घ्यं शङ्कराय च ।५१
ततश्चाचनं कृत्वा शंभवे परमात्मने ।
पश्चाच पञ्चभिर्द्रव्यैः स्नापयेच्छङ्करं मुदा ५२
वेद्मन्त्रैर्यथायोग्यं नामभिर्वा समन्त्रकैः ।
चतुर्थ्यंतपदैर्भक्त्वया द्रव्याण्येवर्पियेत्तदा ।५३
यथाभिलषितं द्रव्यमर्पयेच्छङ्करोपरि ।
ततश्च वारुणंस्नानं कारणीयं शिवाय वै ।५४
सुगन्धं चन्दनं दद्यादन्यलेपानि यत्नतः ।
ससुगन्धजलेनैवजलधारां प्रकल्पयेत् ।५५
वेदमन्त्रैः षडंगैर्वा नामभी रुद्रसंख्या ।
यथावकाशं तां दत्वा वस्त्रेणमार्जयेत्ततः ।५६

उन भक्त वत्सल, आनन्द स्वरूप भगवान सदाशिव को मैं आह्वान करता हूँ। इस प्रकार ध्यान करने के पश्चात आसन की कल्पना करनी चाहिए ।५०। चतुर्थ्यन्त पदसे सब वस्तुओंका समर्पण कर फिर शिवजी के लिए पाद्य अर्घ्य दे ।५१। फिर आचमन करके पंचद्रव्य, घृत, शर्करा जल आदि से शिवजी को स्नान करावे ।५२। वेद मन्त्रों से चतुर्थ्यन्त पद के द्वारा भक्ति-भाव सहित सभी वस्तुयें अर्पण करें ।५३। सभी अभिलाषित पदार्थों को शिवजी पर चढ़ाकर फिर पार्वतीजी को जल-स्नान करावे ।५४। फिर सुगन्धित चन्दन अथवा अन्य अनुलेपन पदार्थ लगाकर सुगन्धित जल की धारा चढ़ावे ।५५। फिर वेद मन्त्र षडंग अथवा एकादश से स्नान कराके, वस्त्र से मार्जन करे ।५६।

पश्चादाचमनं दद्यात्ततो वस्त्रं समर्पयेत् ।
तिलाश्चैव यवा वापि गोधूमा मुद्गमाषकाः ।५७
अर्पणीयाः शिवायंवै मन्त्रैर्नानाविधैरपिः ।
तयः पुष्पाणि देयानि पञ्चास्याय महात्मने ।५८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिवक्त्रं यथाध्यानं यथायोग्याभिलाषितः ।
कमलैश्शतपत्रैश्च शङ्खपुष्पैः परैस्तथा ।५६
कुशपुष्पैंश्च धत्तूरैर्मंदारैर्द्रोणस्म्भवै ।
तथा च तुलसीपत्रैर्विल्वपत्रैर्विशेषतः ।६०
पूजयेत्परया भक्त्या शङ्करं भक्तवत्सलम् ।
सर्वाभावे विल्बपत्रमर्पणीयंशिवाय वै ।६१
विल्वपत्रार्पणेनैव सर्वपूजा प्रसिध्यति ।
ततस्सुगन्धचूर्णवै वासितं तैलमुत्तमम् ।६२
अर्पणीयं च विविधं शिवाय परयामुद ।
ततो धूपा प्रकर्तव्यो गुग्गुला सुरुभिर्मुदा ।६३

फिर आचमन कराकर वस्त्र भेंट करे और तिल, जौ, गेहूँ, मूँग ।४७। यह सब अनाज मन्त्रोच्चारण पूर्वक शिवजी की भेंट करे और पाँचों मुखों पर पाँच पुष्प समर्पित करे ।५८। प्रत्येक मुख का अपनी अभिलाषा के अनुरूप ध्यान करे, कमल, शतपत्र शङ्खपुष्पीके पुष्प।५६। कुश पुष्प, धतूरा, मन्दार, द्रोण, तुलसी पत्र तथा विल्व पत्रों से ।६०। भक्त वत्सल भगवान शिवजी का परम भक्ति पूर्वक पूजन करे। यदि अन्य कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो विल्व पत्र ही समर्पित करे ।६१। विल्वपत्र के समर्पण से ही सब पूजन सिद्ध हो जाताहै । फिर सुगन्धित चूर्ण द्वारा सुवासित किया हुआ उत्तम तेल ।६२। प्रसन्नतापूर्वक शिवजी को समर्पित करे, फिर प्रेमपूर्वक गूगल और अगर की धूप दे ।६३।

दीपो देयंस्ततस्तस्मै शंकराय घृतप्लुतः ।
अर्घ्यं दद्यात्पुनस्तग शैणा नेन भक्तितः ।६४
कारयेद्भावतो भक्त्या वस्त्रेण मुखमार्जनम् ।
रूपं देहि यशो देहि भोगं देहि च शङ्कर ।६५
भुक्तिमुक्तिफलं देहि गृहीत्वादर्यं नमोऽस्तु ।
ततो देयं शिवायैव नैवेद्यं बिविधं शुभम् ।६६
ततः आचमनं प्रीत्या कारयेद्वा विलम्बतः ।
ततश्शिवाय तांबूलं सांङ्ग संविधाय च ।६७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुर्यादारार्तिकं पञ्चवर्तिकामनुसंख्यया ।
पादयोश्च चतुर्वारं द्विःकृत्वो नाभिमण्डले ।६८
एककृत्वे मुखे सप्तकृत्वः सर्वाङ्ग एवहि ।
ततोध्यानं यथोक्तं वै कृत्वा मन्त्रमुदीरयेत् ।६९
यथासंख्यं यथाज्ञातं कुर्यान्मन्त्रविधिन्नरः ।
गुरूपदिष्टमार्गेण कृत्वा मन्त्रजपं सुधीः ।७०

फिर घी से भरा हुआ दीपक आगे रखे अगले मन्त्र से भक्तिसहित अर्घ्यं प्रदान करे ।६४। फिर भक्ति सहित वस्त्र से मुख मार्जन करे और प्रार्थना करे कि हे देव ! मुझे रूप यश और भोग प्रदान कीजिये ।६५। हे प्रभो ! आपको प्रणाम, आप अर्घ्य को ग्रहण कर मुझे भक्ति मुक्ति का फल प्रदान करिये । फिर शिवजी के लिए श्रेष्ठ नैवेद्य भेंट करें।६६। फिर कुछ देर बाद, प्रीति पूर्वक आचमन करावे और सांगोपांग विधान द्वारा ताम्बूल अर्पण करे ।६७। फिर पाँच बत्ती की आरती करे और चार बार चरणों में तथा नाभि मण्डल में ।६८। एक बार मुख पर तथा सात बार सम्पूर्ण अङ्ग में आरती करे और जैसा कहा गया है उस प्रकार ध्यान और मन्त्रोच्चारण करें ।६९। यथा संख्या और यथा ज्ञान मनुष्य को मन्त्र विधि करनी उचित है । गुरु द्वारा उपदेशित मार्ग मन्त्र का जप करता हुआ ।७०।

गुरूपदिष्टमार्गेण कृत्वा मन्त्रमुदीरयेत् ।
यथासंख्यं वथाज्ञानं कुर्यान्मंत्रविधिन्नरः ।७१
स्तोत्रैर्नानाविधैः प्रीत्या स्तुवीत वृषभध्वजम् ।
तत प्रदक्षिणां कुर्याच्छिवस्य च शनैश्शनैः ।७१
नमस्कारांस्ततः कुर्यात्साष्टङ्ग विधिवत्पुमान् ।
ततः पुष्पांजलिर्देयो मन्त्रेणानेन भक्तितः ।७३
शङ्कराय परेशाय शिवसन्तोषहेतवे ।
अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानाद्यद्यत्पूजादिकं मया ।७४
कृतं तदस्तु सफलं कृपया तव शङ्कर ।
तांवक्रुस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चितोहंसदा मृड ।७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति विज्ञाय गौरीश भूतनाथ प्रसीद मे ।
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवाबलंबनम् ।७६
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं प्रभो ।
इत्यादि वहु विज्ञप्ति कृत्वा सम्यग्विधानतः ।७७

गुरु के वताये मार्ग के अनुसार ही मन्त्रोच्चारण करे । यथा संख्या और यथा ज्ञान मन्त्र की विधि का उपयोग करे ।७१। तथा प्रसन्नता-पूर्वक अनेक प्रकार के स्तोत्रों से शिवजी की स्तुति करे, धीरे २ प्रद-क्षिणा करे ।७२। फिर विधिवत् साष्टांग नमस्कार कर अगले मन्त्र से भक्ति भाव पूर्वक पुष्पाञ्जलि समर्पित करे ।७३। 'भगवान शंकर की सन्तुष्टि के निमित्त ज्ञान अथवा अज्ञान से मैंने जो पूजनादि किया है ।७४। हे शंकर ! आपकी कृपा से यह सब सफल हो । मेरे प्राण आप में ही है । शिव ! आप सुख देने वाले हैं, आप ही मेरे चित्त हैं ।७५। हे गौरीपते ! हे भूतनाथ ! इस प्रकार आप मुझ पर प्रसन्न हों जिनका पृथ्वी से चरण फिसलता है, उनका अवलम्ब पृथ्वी ही है ।७६। आपमें जो मेरा अपराध हुआ है उसमें आप ही शरण रूप हैं । इस प्रकार विधिवत् बहुत सी विक्षप्ति करें ।७७।

पुष्पाञ्जलिं समर्प्यैव पुनः कुर्यान्नतिं मुहुः ।
स्वास्थानं गच्छ देवेश परिवारयुतः प्रभोः ।७८
पूजाकाले पुनर्नाथ त्वया गंतव्यमादरात् ।
इति संप्रार्थ्य बहुशश्शङ्करं भक्तवत्सलम् ।७९
विसर्जयेत्स्वहृदये तदपोमूर्ध्नि विन्यसेत् ।
इति प्रोक्तमशेषेण मुनयः शिवपूजनम् ।
भुक्तिमुक्तिप्रदं चैव किमन्यच्छ्रोतुमहर्थं ।८०

और पुष्पाञ्जलि भेंट कर बारम्बार प्रणाम करें और निवेदन करें कि हे प्रभो ! आप सपरिवार अपने स्थान को गमन करें ।७८। हे प्रभो ! पूजन के समय यहाँ पुनः पधारने की कृपा करना । इस प्रकार भक्तवत्सल भगवान शिवजी की अनेक प्रकार से प्रार्थना करें ।७९। और विसर्जन करके उनकी जलमय मूर्ति को अपने हृदय में धारण करें ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे मुनीश्वर ! शिवजी का पूजन इस प्रकार तुमसे कहा है, वह भुक्ति-मुक्ति का दाता है। और क्या सुनने की इच्छा है।८०।

--०--

विशेष पुष्पों से शिव-पूजन का फल

व्यासशिष्य महाभाग कथय त्वं प्रमाणतः ।
कैः पुष्पैः पूजितश्शंभुः किंकि यच्छति वै फलम् ।१
शौनकाद्याश्च ऋषयः श्रृणुताव्दतोऽखिलम् ।
कथयाम्यद्य सुप्रीत्या पुष्पार्पणविनिर्णयम् ।२
एष एव विधिः पृष्टो नारदेन महर्षिणा ।
प्रोवाच परमप्रीत्या पुष्पार्पणविनिर्णयम् ।३
कमलैर्विल्वपत्रैश्च शतपत्रैस्तथा पुनः ।
शंखपुष्पैस्तथा देवं लक्ष्मीकामोऽर्चयेच्छिवम् ।४
एतैश्च लक्षसंख्याकैः पूजितश्चेद्भवेच्छिवः ।
पापहानिस्तथा विप्र लक्ष्मीस्स्यान्नात्र संशयः ।५
विंशति कमलानां तु प्रस्थमेकमुदाहृतम् ।
विल्वोत्पलसहस्रेण प्रस्थार्द्धं परिभाषितम् ।६
शतपत्रसहस्रेण प्रस्थार्द्धं परिभाषितम् ।
पलैःषोडशभिः प्रस्थं पलंटङ्क दशस्मृतः ।७

ऋषियों ने कहा--हे व्यास शिष्य सूतजी ! अब आप यह बताइये कि किस २ पुरुष के द्वारा पूजन करने से शिवजी क्या २ फल प्रदान करते हैं ।१। सूतजी ने कहा--हे ऋषियों ! मैं अब पुरुषों के अर्पण का क्रम पूर्वक विवरण करता हूँ तुम आदर पूर्वक श्रवण करो ।२। यह विधि महर्षि नारद ने भी पूछी थी और ब्रह्माजी ने प्रसन्न होकर उनके प्रति कही थी ।३। ब्रह्माजी ने कहा था कि कमल, वेलपत्र, शतपत्र या शंखपुष्पी से शिवजी की पूजा करें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।४। यदि इन एक लक्ष पुष्पों से शिवजी का पूजन करें तो निःसन्देह पाप नष्ट हो और लक्ष्मी की प्राप्ति हो ।५। बीस कमल पुष्पों का एक प्रस्थ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है और हजार वेल पत्रों का आधा प्रस्थ होता है ।६। तथा हजार शत पत्र का भी आधा प्रस्थ होता है । सोलह पल का एक प्रस्थ तथा दश टंक का एक पल होता है ।७।

अनेनैव तु मानेन तुलामारोपयेद्यदा ।
सर्वान्कामानवाप्नोति निष्कामश्चेच्छिवो भवेत् ।८
राज्यस्यकामुको यो वै पार्थिवानां च पूजया ।
तोषयेच्छङ्करं देवं दशकोट्या मुनीश्वराः ।९
लिङ्गं शिवं तथा पुष्पमखण्डं तन्दुलं तथा ।
र्चचितं चन्दनेनैव जलधारां तथा पुनः ।१०
प्रतिरूपं तथा मन्त्रं विल्वीदलमनुत्तमम् ।
अथवा शतपत्रं च कमलं वा तथा पुनः ।११
शङ्कपुष्पैस्तथा प्रोक्तं विशेषेण पुरातनैः ।
सर्वकामफलं दिव्यं परत्रेहापि सर्वथा ।१२
धूपंदीपं च नैवेद्यमर्घं चारार्तिकं तथा ।
प्रदक्षिणां नमस्कारं क्षमापनविसर्जने ।१३
कृत्वा सांगं तथा भोज्यं प्रतं येन भवेदिह ।
तस्य वै सर्वथा राज्यं शङ्करः प्रददाति च ।१४

इस परिमाण में तराजू पर चढ़ाने से कामना रहित होकर पूजन करें तो सब कामनायें प्राप्त होकर शिव रूपं हो जाता है । जो राज्य चाहता हो वह दश करोड़ पार्थिव पूजा से शिव को प्रसन्न करे । जो मनुष्य शिव लिंग पर पुष्प तथा चावल चढ़ाकर चन्दन और जल धारा अर्पण करे । प्राचीन जलों ने शङ्ख पुष्पों से विशेष रूप से पूजन करने को कहा है । यह इस लोक और परलोक में भी दिव्य कामनाओं का देने वाला है ।८-१२। धूप, दीप, नैवेद्य, अर्घ्य, आरती प्रदक्षिणा, नमस्कार, क्षमापन और विसर्जन यह सभी विधिवत् करके जिसने शिवजी को भोग लगाया उसे भगवान शिव राज्य प्रदान करते हैं ।१३-१४।

प्राणान्य् कामुको यो वै तदर्द्धेनार्चयेत्पुमान् ।
कारागृहगतो यो वैलक्षेवार्चयेद्धरम् ।१५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगग्रस्तो यदा स्याद्वै तदर्द्धेनार्चयेच्छिवम् ।
कन्याकामो भवेद्यो वै तदर्द्धेन शिवं पुनः ।१६
विद्याकामस्तथा यः स्यात्तदर्द्धेनार्चयेच्छिवम् ।
वाणीकामो भवेद्यो वै घृतेनैवार्चयेच्छिवम् ।१७
उच्चाटनार्थंशत्रूणां तन्मितेनैव पूजनम् ।
मारणे वै तु लक्षेण मोहने तु तदर्द्धतः ।१८
सामंताना जये चैव कोटिपूजा प्रशयस्यते ।
रामामयुतसंख्यं च वशीकरणकर्मणि ।१९
यशसे च तथा संख्यावाहनाद्यैः सहस्रिका ।
मुक्तकामोऽर्चयेच्छंमुं पञ्चकोट्या सुभक्तितः ।२०
ज्ञानार्थी पूजयेत्कोट्या शङ्करं लोकशङ्करम् ।
शिवदर्शनकामो वै तदर्द्धेन प्रपूजयेत् ।२१

तथा जो व्यक्ति अपनी प्रधानता चाहता हो, वह शिवजी का इससे आधा पूजन करे । यदि कारागृह से मुक्त होना चाहे तो एक लाख कमलों से शिवजी की पूजा करनी चाहिए । रोगी मनुष्य पचास हजार कमलों से और कन्या की कामना वाला मनुष्य पच्चीस हजार कमलों से पूजन करे । विद्या प्राप्ति की इच्छा वाला इससे आधा और वाणी की कामना वाले को घृतसे पूजन करना चाहिए । शत्रुओंके उच्चाटनार्थ भी उतनी ही पूजा करें, मारण कर्म में एक लाख और मोहन कर्म में पचास हजार पुष्पों का विधान है ।१५-१८। सामन्तों को जीतने में एक करोड़ और राजा के वशीकरण में दस लाख पूजन कहा गया है यश की कामना वाले को भी इतनी पूजा कही है । वाहनादि की प्राप्ति के लिए एक हजार तथा मोक्ष की कामना वाले को पाँच करोड़ पूजन का विधान है ज्ञान की अभिलाषा वाला मनुष्य कल्याणकारी शिवजी को एक करोड़ पुष्पों से पूजे, तथा शिवजी के साक्षात्कार की कामना वाला इससे आधा पूजन करे ।१९-२१।

तथा मृत्युञ्जयोजाप्यः कामनाफलरूपतः ।
वञ्चलक्षा जपा यहि प्रत्यक्षं तु भवेच्छिवः ।२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

लक्षेण भजते कश्चिद्द्वितीयो जातिसंभवः ।
तृतीये कामनालभश्चतुर्वें तं प्रपश्यति ।२३
पंचमं च यदा लक्षं फलं यच्छत्यसंशयम् ।
अतेनैव तु मंत्रेण दशलक्षे फलंलभेत् ।२४
मुक्तिकामो भवेद्यो वै दर्भैश्च पूजनं चरेत् ।
लक्षसंख्या तु सर्वत्र ज्ञातव्या ऋषिसत्तमम् ।२५
आयुःकामो भवेद्यो वै दूर्वाभिः पूजनञ्चरेत् ।
पुत्रकामो भवेद्यो वै धत्तूरकुसुमैश्चरेत् ।२६
रक्तदण्डश्च धत्तूरः पूजने शुभदः स्मृतः ।
अगस्त्यकुसुमैश्चैव पुञ्जकस्य महद्यशः ।२७
भुक्तिमुक्तिफलं तस्य तुलस्या पूजयेद्यदि ।
अर्कपुष्पै प्रतापश्च कुब्जकल्हारकैस्तथा ।२८

अन्य कामना प्राप्ति के लिए मृत्युञ्जय का जप कर इसको पाँच लाख विधिवत् जप से शिवजी से साक्षात्कार होता है । कोई एक लाख पूजते हैं, दो लाख से जाति का तीसरे लाख में कामना का और चौथे लाख में शिवजी के दर्शन का लाभ मिलता है, पाँच लाख में पूर्ण फल की प्राप्ति होती है इसी मन्त्र से दस लाख में सर्वार्थ फल प्राप्त होता है । मोक्ष कामना वाली को कुशोंसे पूजन करना चाहिए ।२२-२५।आयु की कामना वाले को एक लाख दूर्वा से पूजन करना कहा है । पुत्र की कामना वाले को एक लाख धतूरों से पूजन का विधान है । लाल डण्डी वाला धतूरा ही पूजन में करे, अगस्त्य के पुष्पों से पूजा करने वाले की अत्यन्त यश की प्राप्ति होती है । तुलसी के पूजन से भक्ति-मुक्ति दोनों उपलब्ध होती है । कुब्ज कल्हार या आक के पुष्पों से पूजने से प्रताप की वृद्धि होती है ।२६-२८।

जपाकुसुमपूजा तु शत्रूणां मृत्युदा स्मृता ।
रोगोच्चाटनकानीह करवीराणि वै क्रमात् ।२९
बन्धुकै भूंषथावाप्तिर्जात्या वाहान्न संशयः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असतीपुष्पकैर्देवं विष्णुवल्लभतामियात् ।३०
शमीपात्रैस्तथा मुक्तिः प्राप्यते पुरुषेण च ।
मल्लिकाकुसुमैर्दत्तैः स्त्रियं शुभतरां शिवः ।३१

यूथिकाकुसुमैश्शस्यै गृंहं नैव विमुच्यते ।
कर्णिकारैस्तथा वस्त्रैसंपत्तिर्जायते नृणाम् ।३२

निर्गुण्डीकुसुमैर्लोके मनो निर्मलतां व्रजेत् ।
विल्वपत्रैस्तथा लक्षैः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।३३
श्रृंगारहारपुष्पैस्तु वर्द्धते सुखसम्पदा ।
ऋतुजातानि पुष्पाणि मुक्तिदानि न संशयः ।३४

राजिकाकुसुमानीह शत्रूणां मृत्युदानि च ।
एषां लेभे शिवे दद्याद्दद्याच्च विपुलं फलम् ।३५
विद्यते कुसुमं तन्न यन्नैव शिववल्लभम् ।
चंपक केतकं हि त्दा त्वन्यत्सर्वं समर्पयेत् ।३६

जपा के पुष्पों से पूजे तो शत्रु नाश और कनेर के पुष्पों से पूजे तो रोग नष्ट होते हैं। उच्चाटन कर्ममें भी कनेर पुष्प लें। भूषणों की प्राप्ति के लिए वन्धूक के पुष्प और वाह प्राप्ति के लिए चमेली के पुष्प तथा विष्णु की प्राप्ति के लिए झलसी के पुष्पों से पूजन करे। मोक्ष प्राप्ति के लिए शमीपत्र से तथा सुन्दर स्त्रियों की कामना वाला मल्लिका के पुष्पों से शिवजी का पूजन करें। यूथिका के पुष्पों के पूजें तो घर में धान्य का अभाव नहीं होता। कर्णिकार के पुत्पों से पूजे तो वस्त्र और सम्पत्ति की उपलब्धि होती है।२९-३२। निर्गुण्डी के पुष्पों से पूजन मन को स्वच्छ करता है तथा एक लाख बेलपत्रों से पूजें तो सब कामनायें पूर्ण होती हैं। हार सिंगार के पुष्पों से पूजा करे तो सुख-सम्पत्ति की वृद्धि होती हैं तथा ऋतुके उत्पन्न किये पुष्पोंसे पूजन करें तो मोक्ष मिलती है। राई के पुष्पों से पूजन करे तो शत्रुओं की मृत्यु होती हैं और एक लाख पुष्पों के चढ़ाने से अत्यन्त फल की प्राप्ति होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवजी को सभी पुष्प प्रिय हैं, चम्पा और केतकी न चढ़ावें अन्य सर्व पुष्प अर्पण करें ।३३-३६।

हिमालय पर शिव और सती विहार

कदाचिदथ दक्षस्य तनया जलदागमे ।
कैलासक्ष्माभृतः प्राह प्रस्थस्थं वृषभध्वजम् ।१
देवदेव महादेव शम्भो मत्प्राणवल्लभ ।
श्रृणु मे वचनं नाथ श्रुत्वा तत्कुरु मानद ।२
घनागमोऽयं संप्राप्तः कालः परमदुस्सहः ।
अनेकवर्णमेघोघास्संगीतांबरदिक्चयाः ।३
विवांति वाता हृदयं हारयंतीति वेगिनः ।
कदंबरजसा धौताः पाथोविन्दुविकर्षिणाः ।४
मेघानां गर्जितै रुच्चैर्धारासार विमुच्यताम् ।
विद्युत्पताकिनां तीव्रैः क्षुब्धं स्यात्कस्य नो मनः ।५
न सूर्यो दृश्यते नापि मेघच्छन्नो निशापतिः ।
दिवापि रात्रिवद्भाति विरहिव्यसनाकरः ।६
मेघा नैकत्र त्रिष्ठन्तो ध्वनन्तः पवनेरिताः ।
पतंत इव लोकानां दृश्यते मूर्ध्नि शंकर ।७

ब्रह्माजी ने कहा-एक समय वर्षा ऋतु में शिवजी कैलाश के शिखर पर विराजमान थे, उस समय सत्ती ने उससे कहा ।१। सती ने कहा--हे देवाधिदेव ! हे प्राणवल्लभ ! नाथ आप मेरी बात सुनिये और उसके अनुसार कीजिए ।२। हे प्रभो ! यह अत्यन्त दुःसह वर्षा काल आ गया है, अनेक वर्णों के मेघ दशों दिशाओं में आ घिरे हैं ।३। हृदय का हरण करने वाली वायु प्रवाहित हो रही है, कदम्पके मकरन्द से युक्त जल के छींटे आ रहे हैं ।४। जल धाराओं की वर्षा करते,गर्जते क्था बिजली चमकाते हुए मेघों को देखकर किसका मन क्षुब्ध नहीं हो जायगा ! ।५। यह विरही जनों को दुःख-दायक है। इसमें दिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सूर्य और रात्रि में चन्द्रमा भी प्रकाशित नहीं होता। यह दिवस को रात्रि जैसा रखता हुआ सुशोभित है ।६। हे शिव ! वायु वेग से प्रेरित हुए मेघ शब्द करते है परन्तु एकत्र नहीं ठहरते और लोगों के सिर पर गिरते हुए से लगते है ।७।

वाताहृता महावृक्षा नतंत इव चांबरे ।
दृश्यं ते करभोरूणां त्रासताः कासुकेप्सिता ।८
स्निग्धनीलांजनस्याशु सदिवौघस्य पृष्ठतः ।
बलाकराजी वात्युच्चैर्यमुनापृष्ठफेनवन् ।९
क्षपाक्षयेषवलयं दृश्यते कालिकागता ।
अंबुधाविव संदीप्तपावको बड्वामुखः ।१०
प्रारोहंतीह सस्यानि प्राङ्गणेष्वपि ।
किमन्यत्र विरूपाक्ष सस्योद्‌मूर्ति वदाम्यहम् ।११
श्यामलै राजतै रक्तै विशदोऽयं हिमाचलः ।
मन्दराश्रयमेघौघैः पत्रौ दुंग्धांबुधिर्यथा ।१२
असमश्रीञ्च कुटिलं भेजे यस्याथ किंशुकान् ।
उच्चावचान् कलौ लक्ष्मीर्गन्ता सं त्यज्य सज्जनान् ।१३
मन्दारस्तनपीलूनां शब्देन हृषिता मुहुः ।
के कार्यंते प्रितवने सततं पृष्ठसूचकाः ।१४

हे शिव ! वायु प्रेरित बड़े-बड़े वृक्ष भी अन्तरिक्ष में नृत्य करने से प्रतीत होते हैं, जो भयभीतों को भयानक और कामियों को सुखदायकहै ।८। चिकने और श्याम वर्ण जैसे मेघों पर उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति यमुना नदी को पीठ पर बहते हुए फेन के समान शोभा दे रहीहै ।९। रात्रि कीं उपस्थिति में कालापन बढ़ जाने से बिजली वलयाकार दिखाई देती है जिस प्रकार कि समुद्र प्रदीप्त बड़वामुख अनल होती है ।१०। हे विरूपाक्ष ! इस अवस्था मे मन्दराचल के छोटे वृक्ष जम गये हैं, अन्य स्थान की वात ही क्या है ।११। जैसे पक्षियों से घिरा हुआ दुग्ध का समुद्र शोभा देता है, वैसे ही काले, सफेद तथा लाल मेघों से घिरा हुआ वह पर्वत शोभा दे रहा है।१२। विभिन्न प्रकार से सुशोभित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृक्षों के पल्लव अत्यन्त शोभायमान है, उसी प्रकार जैसे कि कलि में लक्ष्मी सज्जनों को त्यागकर असज्जनों को प्राप्त होती है ।१३। मन्दराचल के मेघों की ध्वनि से प्रसन्न होकर मोर भी अपनी पीठ दिखाकर नृत्य कर रहे हैं ।१४।

मेघोत्सुकानां मधुरश्चातकानां मनोहरः ।
धारासारशतैस्तापं पेतुः प्रतिपथोगतम् ।१५
मेघानां पश्य मद्देहे दुर्नयं करकोत्करैः ।
ये छादयं त्यनुगते मयूरांश्चातकांस्तथा ।१६
शिखिसारंगयोर्दृष्ट्वा मित्रादपि पराभवम् ।
हर्षं गच्छन्ति गिरिशं विदूरमपि मानसम् ।१७
एतस्मिन्विषये काले नीडं काकश्चकोरकाः ।
कुर्वंति त्वां विना गेहान् कथं शांतिमवाप्स्यसि ।१८
महतीवाद्यनो भीतिर्मा मेघोत्था पिनाकधृक् ।
यतस्व यस्माद्वासाय माचिरं वचनान्मम ।१९
कैलासे वा हिमाद्रौ वा माहाकोष्यामथ क्षितौ ।
तत्रोपयोग्यं सं वासं कुरु त्वं वृषभध्वजम् ।२०

मेघों की कामना वाले चातकों की मधुर ध्वनि भी सुनाई पड़ रही है ।१५। मेघों की इस दुर्नीति का अवलोकन कीजिए कि यह अपने अनुगामी मोरों और चातकों को ओलों से आच्छादित कर देता है ।१६। मोर और सारंग को मित्र से भी हारना देखकर इनका मन हर्षित हो रहा है ।१७। इस विषय में कौए और मोर भी अपना घोंसला बनाते हैं तो आप ही बिना घर के किस प्रकार शान्ति प्राप्त करेंगे ।१८। हे पिनाकी ! हे शंकर ! मुझे मेघों से अत्यन्त भय लग रहा है, इसलिए आप मेरी बात मानकर घर का प्रबन्ध कीजिए ।१९। हे वृषभध्वज ! कैलाश, में हिमालय में काशी में अथवा पृथिवी पर जहाँ कहीं भी उचित हो घर का प्रबन्ध आवश्यक है ।२०।

एवमुक्तस्तथा शंभुर्दाक्षायण्या तथाऽसकृत् ।
सं जहास च शीर्यस्थ चन्द्ररश्मिस्मितालयम् ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथोवाच सतीं देवीं स्मितभिन्नोष्ठसंपुटः ।
महात्मा सर्वतत्वज्ञस्तोषयन्परमेश्वरः ।२२
यत्र प्रीत्यै मया कार्यो वासस्तव मनोहरे ।
मेघास्तत्र न गंतारः कदाचिदपि मत्प्रिये ।२३
मेघा नित्तंवपर्यं तं संचरंति महीभृतः ।
सदा प्रालेयसा नोस्तु वर्षास्वपि मनोहरे ।२४
कैलासस्य तथा देवि पादगाः प्रायशो घनाः ।
संचरन्ति न गच्छन्ति तत ऊर्द्ध्वं कदाचन ।२५
सुमेरोर्वा गिरेरूर्द्ध्वं न गच्छन्ति बलाहकाः ।
जम्बूमूलं समासाद्य पुष्करावर्तकादयः ।२६
इत्युक्तेषु गिरीन्द्रेषु यस्योपरिभवेद्धि ते ।
मनोरुचिर्निवासाय तमाचक्ष्व द्रुतं हि मे ।२७
स्वेच्छाविहारैस्तव कौतुकानि सुवर्णपक्षानिलवृन्दबृन्दैः ।
शब्दोत्तरङ्गैर्मधुरस्वनैस्तैर्मुदोपगेयानि गिरौ हिमोत्थे ।२८

ब्रह्माजी ने कहा–दाक्षायणी की प्रार्थना सुनकर शिवजी को हँसी आई और उनके मस्तक पर स्थित अर्द्धचन्द्र के प्रकाश से वह स्थान प्रकाशवान हो गया ।२१। फिर सब सब तत्वों के ज्ञाता शिवजी सतीको प्रसन्न करते हुए हँस कर कहने लगे ।२२। हे प्रिये ! तुम्हारी प्रसन्नता के लिए जो स्थान में निश्चित करूँगा वहाँ मेघ न पहुँच सकेंगे ।२३। वर्षाकाल में भी हिमालय के शिखर के नीचे ही मेघ घूमते रहेंगे ।२४। और कैलाश के ऊपर तो कभी मेघ आते ही नहीं, नीचे ही रह जाते हैं ।२५। पुष्कर सांवर्त्तक आदि मेघ जम्बू के मूल तक पहूँचते हैं, सुमेरु के शिखर पर नहीं चढ़ते ।२६। इतने पर्वतों में जिस पर तुम रहना चाहो उसे मुझे शीघ्र बताओ । हिमालय पर्वत में सोने के पंख वाले अनिल वृन्द नामक पक्षी अपने मधुर शब्दों के द्वारा तुम्हारे इच्छित बिहार की लीलाओं को गावेंगे ।२७-२८।

सिद्धाङ्गनास्ते रचितासना भुवमिच्छन्ति चैवोपहृतं स कौतुकम्।
स्वेच्छाविहारे मणिकुट्टिमे गिरौ कुर्वन्ति चेष्यन्ति ।
फलादिग्दानकैः ।२९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फणीन्द्रकन्या गिरिकन्यकाश्च या नागकन्याश्च तुरंगमुख्याः ।
पश्यन्तु तास्ते सततं सहायता समाचरिष्यन्त्यनुमोदविभ्रमैः ।३०
रूपंतदेवमतुलं वदनंसुचारु दृष्ट्वांगना निजवपुर्निजकांति सद्मम्।
हेलानिजेवपुषिरूपगणेषुनित्यंकर्तारइत्यनिमिषेक्षणचारुरूपाः।३१
या मेनका पर्वतराजजाया रूपैर्गुणैर्ख्यातवती त्रिलोके ।
सा चापिते तत्र मनोनुमोदं नित्यं करिष्यत्यनुनाथनाद्यैः।३२
पुर हि वर्गैर्गिरिराजवद्यैः प्रीतिं विचिन्वद्भिरुदाररूपा ।
शिक्षा सदा तेखलु शोचितापि कार्याऽन्वहं प्रीतियुतागुणाद्यैः।३३
विचित्रैः कोकिलालापमोदैः कुञ्जगणावृतम् ।
सदा वसन्तप्रभव गंतुमिच्छसि किं प्रिये ।३४
नानाबहुजलापूर्णसटश्शीतसमावृतम् ।
पद्मिनीशतशोयुक्तमचलेन्द्रं हिमालयम् ।३५

वहाँ तुम्हारे इच्छित विहार के समय सिद्धोकी नारियाँ मणिजटित वेद रूप आसन की भूमि को कौतुक सहित भेंट करेगी तथा विभिन्न प्रकार के फल आदि लाकर तुम्हें अर्पण करेगी ।२९। नाग कन्या पर्वत कन्या तुरंग मुखी किन्नरों यह भी लीला-विहार के समय श्रेष्ठ वचनों का कहकर तुम्हें प्रसन्न करेंगी। वहाँ की अत्यन्त सुन्दर सुरनारियाँ तुम्हारे इस अनुपम सौन्दर्य और मनोहर मुख को देखकर अपने रूपगुण की निन्दा करेगी और तुम्हारी ओर एक टक देखती रहेंगी ।३०-३१। पर्वत राज की पत्नी मेनका भी तुम्हारे मन को अनेक प्रकार से प्रसन्न करेंगी और तुम्हारे अनुकूल रहेंगी ।३२। हिमालय की वन्दना करने वाले सब परिवारीजन और पुरजन तुम्हारे प्रति उदार और प्रीतिमय रहेंगे । तुम्हें कुछ सोच होगा तो समझा देंगे । तुम कोकिलों के अद्भुत आलाप और मादक कुञ्जों से युक्त तथा वसन्तोंत्पत्ति वाले स्थान में जाओगी ।३३-३४। अनेक जलोंसे सम्पन्न, सरल शीतयुक्त और सैकड़ों कमलनियों से सुशोभित अचल हिमालय है ।

सर्वकामप्रदैर्वृक्षैश्शाद्वलः कल्पसंज्ञकैः ।
सक्षणं पश्य कुसुमान्यथाश्वकरिगोव्रजैः ।३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांतश्वापदगणं मुनिभिर्यतिभिर्वृतम् ।
देवालयं महामाये नानामृगणैर्युतम् ।३७
स्फटिकस्वर्णवप्राद्यं राजतैश्च विराजितम् ।
मानसादिशरीरङ्गैरभितः परिशोभितम् ।३८
हिरण्मयैः रत्ननालैः पंकजैर्मुकुलैर्वृतम् ।
शिशुमारैस्तथासंख्यैः कच्छपैर्मकरैः ।३९
निषेवितं मंजुलैश्च तथा नीलोत्पलादिभिः ।
देवेशि तस्मान्मुक्तक्तैश्च सर्वगंधैश्च कुंकुमैः ।४०
लसद्गंधजलैः शुभ्रैरापूर्णैः स्वच्छकांतिभिः ।
शाद्वलैस्तरुणैस्तुरं रंगैस्तीरस्थै स्पशोभितम् ।४१
नृत्यद्भिरिव शाखौटैर्वर्जयन्तं स्वसम्भवम् ।
कामदेवैस्सारसैश्च मत्तचक्रांगशोभितैः ।४२

सम्पूर्ण कामनाओं के दाता शाद्वल तथा कल्प वृक्षोंसे युक्त पुष्पोंको गोव्रज के समान क्षण भर के लिए देखो ।३६। यह मुनियों और यतियों से युक्त देवालय है यहाँ के सभी हिंसक जीव शान्त स्वभाव के हैं तथा यह विभिन्न मृगों से सम्पन्न है ।३७। स्फटिक मणि और स्वर्ण आदि से रचित तथा रजत स्थानों से युक्त मान सरोवर आदि जलाशयों के रंगों से सब प्रकार सुशोभित है ।३८। सुवर्ण और रत्नों की डंडी वाले कमल मुकुलों के समूह, शिशुमार तथा असख्य कच्छप और मकरों से व्याप्त है ।३९। वहाँ अत्यन्त उज्ज्वल नील कमल सुशोभित है, सब ओर कुंकुम आदि की सुगन्ध फैल रही है ।४०। स्वच्छ कान्ति वाले सरोवर परिपूर्ण है, उनके जलों से सुगन्ध आ रही है, विशाल तरुण तरु तथा शाद्वलों से मेरुराज सुशोभित हैं ।४१। यहाँ अखरोटों के वृक्षों की शाखायें इस प्रकार हिल रही हैं, जैसे वे नृत्य कर रहे हों सारस तथा मदमत्त चकवा चकवी भी यहाँ स्थित हैं ।४२।

मधुराराविभिर्मोदकारिभिर्भ्रमरादिभिः ।
शब्दायमानं च सुदाकामोद्दीपनकारकम् ।४३
वासवस्य कुवेरस्य यमस्य वरुणस्य च ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्ने: कोणपतिस्य मारुतस्य परस्य च ।४४
पुरीभिश्शोभिशिखरं मेरोरुच्चैस्सुरालयम् ।
रंभाशचीमेनकादिरंभोरुगणसेवितम् ।४५
किं त्वमिच्छसि सर्वेषां पर्वतानां हि भूभृताम् ।
सारभूते महारम्ये सविहर्तुं महागिरौ ।४६
तत्र देवी सखियुता साप्सरोगणमण्डिता ।
नित्यं करिष्यति शची तव योग्यां सहायताम् ।४७
अथवा मम कैलासे पर्वतेन्द्रे सदाश्रये ।
स्थानमिच्छति वित्तेशपुरीपरिविराजते ।४८
यत्र जलौघप्रयते पूर्णचन्द्रसमप्रभे ।
दरीषु सानुषु सदा ब्रह्मकन्याभ्युदीरिते ।४९

भौंरे मधुर ध्वनि से गुंजार रहे हैं तथा कामोद्दीपन करने वाले सुन्दर शब्द सब ओर से हो रहे हैं ।४३। इन्द्र, यम, वरुण, अग्नि, कुबेर कोणपति, पवन आदि की नगरी ।४४। उस मेरु-शिखर पर सुशोभित है वहाँ सम्पूर्ण देवताओं का निवास है यथा रँभा, शची, मेनका आदि अप्सराओं से यह स्थान सुशोभित है ।४५। हे देवि ! इन सब भूमियों के सारभूत अत्यन्त मनोहर महान् पर्वतोमें बिहार करनेकी तुम्हें इच्छा है ।४६। वहाँ जाने पर सखियों और अप्सराओं सहित शुची तुम्हारी सहायिका होंगी ।४७। अथवा तुम्हारी इच्छा सब पर्वतों से ऊँचे तथा कुबेरपुरी के भी ऊपर स्थितपर्वतराज कैलाश में निवास करने की है । जहाँ पूर्ण चन्द्रकान्ति के समान नित्य जल प्रवाहित है, कन्दराओं में ब्रह्म कन्यायें सुन्दर गान करती ।४८-४९।

नानामृगगणैर्युक्ते पद्माकरगतावृते ।
सर्वगुणैश्च सद्वस्तुसुमेरोरपि सुन्दरि ।५०
स्थानेष्वेतेषु यत्रापि तवांतः करणे स्पृहा ।
तं द्रुतं मे समाचक्ष्व वासकर्तास्मि तत्र ते ।५१
इतीरिते शंकरेण तदा दाक्षायणी शनैः ।
इदमाह महादेवं लक्षणं स्वप्रकाशनम् ।५२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमाद्रावेव वसितुमहमिच्छेत्वया सह ।
नचिरात्कुरु संवासं तस्मिन्नेव महागिरौ ।५३
अथ तद्वाक्यमाकर्ण्य हरः परममोहितः ।
हिमाद्रिशिखरं तुङ्ग दाक्षायण्या समं ययौ ५४
सिद्धाङ्गनागणयुतमगम्यं चैव पक्षिभिः ।
अगमज्छिखरं रम्यं सरसीवनराजितम् ।५५
विचित्ररूपैः कमलैः शिखरं रत्नकुर्बुरम् ।
वालार्कसदृशं शंभुराससाद सतीसमः ।५६

जो अनेक मृग समूहों और सैकड़ों कमलों से व्याप्त, सर्वगुण श्रेष्ठ सुमेरु हैं, वह भी सुन्दर स्थान है ।५०। देवि ! इनमें से जिस स्थान को कहो, वही वृक्षादि से सुरम्य स्थान देखकर निवास करें ।५१। ब्रह्माजी बोले कि शिवजी ने जब इस प्रकार तब कहा सती शिवजी के समक्ष धीरे-धीरे अपने निवास स्थान का लक्षण कहने लगी ।५२। सती ने कहा हे शिवजी मैं आपके साथ हिमालय में निवास करना चाहती हूँ, आप उसी महापर्वत में शीघ्र चलकर निवास कीजिये ।५३। ब्रह्माजी ने कहा–सती की बात सुनकर मोहित हुए शिवजी सती के सहित हिमालय के उच्च शिखर पर पहुँचे ।५४। जो वन सिद्धों की नारियों से सेवित है, जहाँ पक्षियों की भी पहुँच नहीं है, उस कमलों से सुशोभित पर्वत के मनोहर शिखर पर पहुँच गये ।५५। वह शिखर विचित्र रूप वाले कमलों से चित्रित था । प्रातःकालीन सूर्य के समान दीप्तिमय उस शिखर पर शिवजी सती सहित पहुँचे ।५६।

स्फटिकाभ्रमये तस्मिन् शाद्वलद्रुमराजिते ।
विचित्रपुष्पावलिभिस्सरसीभिश्च संयुते ।५७
प्रफुल्लतरुशाखाग्रं गुञ्जद्भ्रमरसेवितम् ।
पंकेरुहैः प्रफुलैश्च नीलोत्पलचयैस्तथा ।५८
शोभितं चक्रवाकाद्यैः कादंबैर्हंसशंकुभिः ।
प्रमत्तसारसैः क्रौंचैर्नीलस्कन्धैश्च शब्दितौ ।५९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुंस्कोकिलानां निनदैर्मधुरंसेवितैः ।
तुरंगवदनैस्सिद्धैरप्सरोभिश्च गुह्यकैः ।६०
विद्याधरीभिर्देवीभिः किन्नरीभिर्विहारितम् ।
पुरन्ध्रीभिः पार्वतीभिः कन्याभिरभिसगंतम् ।६१
विपेञ्चीतांत्रिकामत्तमृदंगपटहस्वनैः ।
नृत्यद्भिरप्सरोभिश्च कौतुकोत्थैश्च शोभितम् ।६२
देविकाभिर्दीर्घिकाभिर्गंधिभिस्सुसमावृतम् ।
प्रफुल्लकुसुमैर्नित्यं सुकुञ्जैरूपशोभितम् ।६३

वह स्फटिक मणि और अभ्रमय शाद्वल वृक्षों से सुशोभित विचित्र पुष्प-राजी और कमलनियों से सम्पन्न था ।५७। प्रफुल्लित वृक्षों को अगलीं शाखा पर गुंजारते हुए भ्रमरोंसे सेवित तथा पङ्करुह और नील कमल के समूह से सम्पन्न ।५८। चक्रवाक, कादम्ब, हंस, शंकु मदमत्त सारस तथा नीले कण्ठ वाले क्रौंच पक्षियों से युक्त एवं शब्दायमान ।५९। कोयलों के मधुर आलाप तथा तुरङ्ग वदन वाले सिद्ध और अप्सराओंसे युक्त था ।६०। विद्याधरी देवी और किन्नरियों के विहार से युक्त तथा पहाड़िन स्त्रियों और कन्याओं से सम्पन्न ।६१। मृदंग, पटह, बीणा और सितार के स्वरों पर नृत्य करती हुईं अप्सराओं के कौतुकों से युक्त ! ।६२। देवताओं द्वारा निमित बावड़ी और उनसे आती हुई कमल की गन्ध से युक्त तथा प्रफुल्लित पुरुषों वाले वृक्षों की कुञ्जों से सुशोभित ।६३।

शैलराजपुराभ्यर्णे शिखरे वृषभध्वजः ।
सह सत्या चिरं रेमे एवं भूतेषु शोभनम् ।६४
तस्मिन् स्व समे स्थाने दिव्यमानेन शंकरः ।
दशवर्षसहस्राणि रेमे सत्या समं मुदा ।६५
स कदाचित्ततस्थ नारन्यद्याति स्थलं हरः ।
कदाचिन्मेरुशिखरं देवीदेववृतं सदा ।६६
द्वीपान्नाना तथोद्यानवनानि वेसुधातलम् ।
गत्वा गत्वा पुनस्तत्राभेत्य रेमे सतीमुखम् ।६७
न जज्ञे स दिवारात्रौ न ब्रह्माणि तपस्समम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यां हि मनसा शम्भुः प्रीतिमेव चकार ह ।६८
एवं महादेवमुखं सत्यपश्यत्स्मसर्वदा ।
महादेवोपि सर्वत्र सदाद्राक्षीत्सतीमुखम् ।६९
एवमन्योन्यसंससर्गादनुरागमहीरुहम् ।
वर्द्धयामासतुः कालीशिवौ भावांबुसेचनैः ।७०

सब प्राणियों से सुशोभित शैलराज के उस श्रेष्ठ शिखर पर सती के सहित शिवजी बहुत समय तक विहार करते रहे ।६४। उस स्वर्ग जैसे स्थान में सती, शङ्कर अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक दस हजार देव वर्ष तक बिहार रत रहे ।६५। वे कभी उस स्थान से अन्य स्थान पर जाते और कभी देवी-देवताओं से युक्त मेरु शिखर पर भ्रमण करते ।६६। कभी पृथ्वी के अनेक द्वीप और दिव्य उद्यानों में विचरण करते हुए आदि का त्याग कर शिवजी ने सती में ही मन को रमा लिया ।६७। इस प्रकार सती सदा शिवजी का मुख देखती और शिवजी सदा सतीका मुख देखते रहते थे ।६८-६९। ऐसे पारस्परिक अनुराग में रत शिव और सती ने भाव रूपी जल का सिंचन कर प्रेम रूपी वृक्ष की वृद्धि की ।७०।

शिव का सती के प्रति मोक्ष-शास्त्र-कथन

सुप्रसन्न प्रभुं नत्वा सा दक्षतनया सती ।
उवाच सांजलिर्भक्त्या विनयावनता ततः ।१
ज्ञातुमिच्छामि देवेश परं तत्वं सुखावहम् ।
यं न संसारदुःखाद्वै व तरेज्जीवोजसा हरं ।२
यत्कृत्वा विषयी जीवस्स लभेत्परमं पदम् ।
संसारी न भवेन्नाथ तत्वं वद कृपां कुरु ।३
इत्यपृच्छत्स्म सद्भक्त्या शंकर सा सतीमुने ।
आदिशक्तिर्महेशानी जीवोद्धाराय केवलम् ।४
आकर्ण्य तच्छिवः स्वामी स्वेच्छयोपात्तविग्रहः ।
अवोचत्परमप्रीतस्सतीं योगविरक्तधीः ।५
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि दाक्षायणि महेश्वरि ।
परं तत्वं तदेवानुशयी मुक्तो भवेद्यता ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परं तत्वं विजानीहि विज्ञानं परमेश्वरी ।
द्वितीयं स्मरणं यत्र नाहं ब्रह्मेति शुद्धधीः ।७

एक समय दक्षसुता सती अपने प्रसन्न हुए स्वामी को प्रणाम कर भक्ति-सहित नम्र होकर बोली ।१। हे देवेश ! मैं अब सुखदायक परम-तत्व को जानना चाहती हूँ । हे शंकर ! जिससे यह जीव भव-बन्धन मुक्त हो जाता है ।२। विषयी मनुष्य जिसे पाकर परम पद प्राप्त कर लेता है, और पुनः संसारी नहीं होता । आप कृपा करके उसी तत्व को मेरे प्रति कहिए ।३। ब्रह्माजी ने कहा-सती ने भक्ति-पूर्वक शिवजी से इस प्रकार कहा और प्राणियों के उद्धार की इच्छा व्यक्त की ।४। तब स्वेच्छा से शरीर धारण करने वाले शंकरने यह सुनकर, योग से विरक्त बुद्धि होते हुए सती से कहा ।५। शिवजी बोले--हे दक्षसुते ! जिस परमतत्व का ज्ञान प्राप्त कर यह अनुशयी जीव मोक्ष को प्राप्त होता है, उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ तुम श्रवण करो ।६। हे महेशानि तुम विज्ञान को ही परमतत्व समझो । उसमें बुद्धि पूर्वक ब्रह्म का ही स्मरण किया जाता है, किसी अन्य का नहीं ।७।

तद्दुर्लभं त्रिलोके स्मिस्तज्ज्ञाता विरलः प्रिये ।
यादृशी यस्सदासोहं ब्रह्मा साक्षात्परात्परः ।८
तन्माता मम भक्तिश्च भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
सुलभा मत्प्रसादाद्धि नवधा सा प्रकीर्तिता ।९
भक्तौ ज्ञाने न भेदो हि तत्कर्तुस्सर्वदा सुखम् ।
विज्ञानेन भवत्येव सति भक्तिविरोधिनः ।१०
भक्त्या हीनस्सदाहं वै तत्प्रभावाद्गृहेष्वपि ।
नीचानां जातिहीनानां यामि देवि न संशयः ।११
सा भक्तिर्द्विविधा देवी सगुणा निर्गुणा मता ।
वैधी स्वाभाविको या वरा सा त्ववरा स्मृता ।१२
नैष्ठिक्यनैष्ठकी भेदादिष्टविधे द्विविधेहि ते ।
षड्विधा नैष्ठिकी ज्ञेया द्वितीयैकविधा स्मृता ।१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहिताविहिताभेदात्तामनेकां विदुर्बुधाः ।
तयोर्बहुविधत्वाच्च तत्वं त्वन्यतवर्णितम् ।१४

हे प्रिये ! इस तत्वज्ञान का ज्ञाता कोई विरला ही होता है, यह अत्यन्त दुर्लभ है, क्योंकि वह ब्रह्म पर से भी हैं, मैं उसका दास हूँ ।८। उस विज्ञान की माता, भक्ति मुक्ति की दात्री मेरी भक्ति है। परन्तु मेरी भक्ति भी मेरी कृपा से सुलभ होती है उसके नौ प्रकार हैं भक्ति और ज्ञान में कोई भेद नहीं है । भक्ति करने वाला मनुष्य सदा सुखी होता है । जो मनुष्य भक्ति से विरोध करता है, उसे विज्ञान की प्राप्ति भी सम्भव नहीं ।९-१०। मैं अपने भक्त के सदा आधीन रहता हूँ, भक्ति के अभाव से निम्न जाति वालों के घरों में भी जाता हूँ ।११। वह भक्ति के भी सगुण-निर्गुण के भेद से दो प्रकार की है । इसमें प्रथम श्रेष्ठ और दूसरी निम्न है ।१२। दोनों प्रकार की भक्ति भी नैष्ठकी के और अनैष्ठिकी के भेद से दो-दो प्रकार की है, इनमें भी नैष्ठिकी के छः प्रकार और अनैष्ठिकी का एक ही प्रकार है ।१३। इसको विहित और अविहित भेद से ज्ञानी जन अनेक प्रकार की मानते हैं । अनेक प्रकार की होने से उसका तत्व अन्यत्र कहा गया ।१४।

ते नवांगे उभेज्ञेये वर्णिते मुनिभिः प्रिये ।
वर्णयामि नवांगानि प्रेमतः श्रृणु दक्षजे ।१५
श्रवणं कीर्तनं चैव स्मरणं सेवनं तथा ।
दास्यं तथार्चनं देवि वंदनं मम सर्वदा ।१६
सख्यमात्मार्पणं चेति नवांगानि विदुर्बुधाः ।
उपांगानि शिवे तस्या बहूनि कथितानि वै ।१७
श्रृणु देवि नवांगानां लक्षणानि पृथक् पृथक् ।
मम भक्तैर्मनो दत्वा भुक्तिमुक्तिप्रदानि हि ।१८
कथादेर्नित्यसम्मानं कुर्वन्देहादिभिर्मदा ।
स्थिरासनेन तत्पानं यत्तच्छ्रवणमुच्यते ।१९
हृदाकाशेन संपश्यञ्जन्मकर्माणि वै मम ।
प्रीत्याचोच्चारणं तेषामेतत्कीर्तनमुच्यते ।२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापकं देवि मां दृष्ट्वा नित्यं सर्वत्र सर्वदा ।
निर्भयत्वं सदा लोके स्मरणं तदुदाहृतम् ।२१

मुनियों ने उन दोनों के अङ्ग नौ प्रकार के बताये हैं, उन नौ अङ्गों के लक्षण पृथक-पृथक कहता हूँ तुम उन्हें ध्यान से श्रवण करो ।१५। श्रवण, कीर्तन, स्मरण सेवन दास्य, अर्चन और वन्दना ।१६। संख्य तथा आत्म समर्पण--यह नौ अङ्ग विज्ञजन बताते हैं, और उपांग तो असंख्य हैं ।१७। अब नौ अङ्गों का लक्षण पृथक्-पृथक् कहता हूँ, मेरा जो भक्त इससे मन को लगायेगा, उसे भुक्ति-मुक्ति की प्राप्ति होगी ।१८। कथा आदि में देह आदि से सम्मान करना चाहिए स्थिर आसन पर स्थित होकर उसका पान करे, इसे सुनना कहते हैं ।१९। हृदयाकाश में मेरे जन्म-कर्म को देखता हुआ प्रीतिपूर्वक उनका उच्चारण करे, यह कीर्तन कहा जाता है ।२०। मुझको नित्य, सर्वत्र सदा व्यापक मानकर भय--रहित रहकर लोक में सदैव विचरण करे ।२१।

अरुणोदयमारभ्य सेवाकालेचिता हृदा ।
निर्भयत्वं सदा लोके स्मरणं तदुदाहृतम् ।२२
सदा सेव्यानुकूल्येन सेवनं तदि गोगणैः ।
हृदयामृतभोगेन प्रियं दास्यमुदाहृतम् ।२३
सदा सत्यानुकूल्येन विधिना मे परात्मने ।
अर्पणं षोडशानां वै पाद्यादीनां तदर्चनम् ।२४
मन्त्रोच्चारणध्यानाभ्यां मनसा वचसा क्रमात् ।
यदष्टागेन भूस्पर्शं तद्वै वन्दनमुच्यते ।२५
मंगलामंगलं यद्यत्करोती तीश्वरो हि मे ।
सर्वं तन्मंगलायेति विश्वासः संख्यलक्षणम् ।२६
कृत्वा देहादिकं तस्य प्रीत्यै सर्वं तदर्पणम् ।
निर्वाहाय च शून्यत्वं यत्तदात्मसमर्पणम् ।२७
नवांगानीतिः मद्भक्ते र्भुक्तिमुक्तिप्रदानि च ।
मम प्रियाणि चातीव ज्ञानोत्पत्तिकराणि च ।२८

अरुणोदय से आरम्भ कर, सेवा काल में सदा हृदय से निर्भय रहता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ स्मरण करे इसे नाम स्मरण कहते हैं ।२२। सेवा परायण होकर अपनी इन्द्रियों को प्रभु सेवा में लगावे और हृदय से उसके अमृत का भोग करे और उनका चिंतन करे, इसे दास्य कहते हैं ।२३। सत्य के समान सदैव मेरी अनुकूलता करे और षोडश प्रकार से मेरी पूजा करे तथा माद्य अर्घ्यं दे, इसे अर्चन कहा गया है ।२४। मन वचन कर्म के द्वारा तन्त्रोच्चारण तथा ध्यान करे और आठों अङ्गों से पृथ्वी का स्पर्श करे, इसे वन्दना कहते हैं ।२५। मङ्गल या अमङ्गल जो कुछ भी ईश्वरेच्छा से होता है, वह सब मेरे लिए मङ्गल ही हैं इस प्रकार का विश्वास-संख्य कहा गया है ।२६। देहादि को प्रीतिपूर्वक अर्पण कर देना और स्वयं शुन्यत्वका भाव मानना इसे आत्म-समर्पण कहा गया है ।२७ मेरी भक्ति के यह नवांग भुक्ति-मुक्ति प्रदायक तथा ज्ञानोत्पादक है और मेरे लिए अत्यन्त प्रिय हैं ।२८।

इत्थं सांगोपांगभक्ति र्मम सर्वोत्तमा प्रिये ।
ज्ञानवैराग्यजननी मुक्तिदासी विराजते ।२९
सर्वकर्मफलोत्पत्तिस्सर्वदा त्वत्समप्रिया ।
यच्चित्ते सा स्थिता नित्यं सर्वदा सोऽतिमत्प्रियः ।३०
त्रैलोक्ये भक्तिसदृशः पंथा नास्ति सुखावहः ।
चतुर्युगेषु देवेशि कलौ तु सुविशेषतः ।३१
कलौ प्रत्यक्षफलदा भक्तिस्सर्व युगेष्वपि ।
तत्प्रभावादहं नित्यं तद्वशो नात्र संशयः ।३२
यो भक्तमान्पुमांल्लोके सदाहं तत्सहायकृत् ।
विघ्नहर्ता रिपुस्तस्य दंड्यो नात्र च संशयः ।३३
भक्तहेतोरहं देवि कालक्रोधपरिप्लुतः ।
अदहं वह्निना नेत्रभवेन निजरक्षकः ।३४
किं वहूक्तेन देवेश भक्ताधीनस्सदा ह्यहम् ।
तत्कर्तुः पुरुषस्यातिवशगो नात्र संशयः ।३५
इत्थमाकर्ण्य महत्वं भक्त्या दक्षत सुता सती ।
जहर्षातीव मनसि प्रणनाम शिवे मुदा ।३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार की सांगोपांग भक्ति ज्ञान वैराग्यको उत्पन्न करने वाली एवं परमश्रेष्ठ है। मुक्ति सदा इसकी दासी है ।२९। इसी के द्वारा सम्पूर्ण कर्म और फल उत्पन्न होते है। मेरे लिए यह सदैव तुम्हारे समानही प्रिय है, जिसके चित्त में इसका वास है, वह मेरा प्रीति भाजन है ।३०। भक्ति के समान अन्य कोई मार्ग त्रैलोक्य में सुख देने वाला नहीं है। वह चारों युगों में प्रधान मानी गई है परन्तु कलियुग में विशेष रूप से हितकारिणी है ।३१। सभी युगों में विशेष कर कलियुग में भक्ति विशेष फल के देने वाली है। इसका प्रत्यक्ष फल होता देखकर मैं सदा इसके वश में रहता हूँ ।३२। लोक में जो पुरुष भक्ति-युक्त होता है। मैं सदा उसकी सहायता करता हूँ। उसके यहां जो कोई विघ्न उपस्थित करता है, मैं उसके लिए शत्रु हो जाता हूँ ।३३। भक्तों के निमित्त मैं ही काल रूप क्रोध से व्याप्त हूँ। भक्तों के हितार्थ ही मैंने अपने नेत्रों को अग्नि से उसे भस्म कर डाला था ।३४। मैं सदा भक्ति के अधीन हूँ, जो पुरुष भक्ति करता है मैं उसके वश में रहता हूँ ।३५। ब्रह्माजी ने कहा कि शिवजी से इस प्रकार भक्ति का माहात्म्य श्रवण कर सती अत्यन्त प्रसन्न हुई और प्रीति सहित अपने स्वामी को प्रणाम किया ।३६।

दक्ष और शिव के विरोध का कारण

पुराभवच्च सर्वेषामध्वरोऽतिशयो महान् ।
प्रयागे समवेतानां मुनीनां च महात्मनाम् ।१
तत्र सिद्धास्समायातास्सनकाद्यास्सुरर्षयः ।
सप्रजासतयो देवा ज्ञानिनो ब्रह्मदर्शिनः ।२
अहं समागतस्तत्र परिवारसमन्वितः ।
निगमैरागमैर्युक्तो मूर्तिमद्भिर्महाप्रभैः ।३
भूसमाजोऽद्विचित्रो हि तेषामुत्सवसंयुतः ।
ज्ञानवादोऽभवत्तत्र नानाशास्त्रसमुद्भवः ।४
तस्मिन्नवसरे रुद्रस्सभवानीगणः प्रभुः ।
त्रिलोकहितकृत्स्वामी तत्रागात्सूक्तिकृन्मुने ।५
दृष्ट्वा शिवं सुरास्सर्वे सिद्धाश्च मुनयस्तथा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्थुश्शिवाज्ञया सर्वे यथास्थानं मुदान्विताः ।
प्रभुदर्शनसंतुष्टा वर्णयन्तो निजं विधिम् ।७

ब्रह्माजी ने कहा-प्राचीन काल में प्रयागराज में एकत्र हुए मुनियों द्वारा एक महान यज्ञ हुआ ।१। उसमें सिद्ध परमर्षि, देवर्षि सनकादि, प्रजापति, ब्रह्मज्ञानी तथा देवगण एकत्र हुए।२।मैं सपरिवार वहाँ गया, मेरे साथ निगमागम साकार रूप में वहाँ पहुँचे ।३। वहाँ उत्सव के सहित वह विचित्र समाज हुआ और अनेक शास्त्रों का ज्ञान तथा वाद उपस्थित हुआ ।४। उसी अवसर पर पार्वतीपति भी अपने गणों सहित त्रैलोक्य के हित-साधनार्थ वहाँ आये ।५। शिवजी को देखते ही सब सिद्धों, देवताओं, ऋषियों और मुनियों ने उन्हें अपना प्रभु मानते हुए प्रणाम किया और मैं भक्ति पूर्वक उनकी स्तुति करने लगा ।६। उस समय शिवजी की आज्ञा से सभी अपने-अपने स्थान पर बैठ गये और उनके दर्शन करके अपने भाग्य की सराहना करने लगे ।७।

तस्मिन्नेवावसरे दक्षः प्रजापति प्रभुः ।
आगमत्तत्र सुप्रीतस्सुवर्चस्वी यदृच्छया ।८
मां प्रणम्य स दक्षो हि न्युष्टस्तत्र मदाज्ञया ।
ब्रह्माण्डाधिपतिर्मान्यो मानो तत्वबहिर्मुखः ।९
स्तुतिभिः प्रतिपातैश्च दक्षस्सर्वैः स्सुरर्षिभिः ।
पूजितो वरतेजस्वी करौ वध्वा विनम्रकैः ।१०
नागाविहारकन्नाथस्स्वतंत्रं परमोतिकृत् ।
नानामत्तं तदा दक्षं स्वासनस्थो महेश्वरः ।११
दृष्ट्वाऽनतं हरं तत्र स मे पुत्रोऽप्रसन्नधीः ।
अकुपत्सहसा पद्रे तथा दक्षः प्रजापतिः ।१२
क्रूरदृष्ट्या महागर्वो दृष्ट्वा रुद्रं महाप्रभुम् ।
सर्वान्संश्रावयन्नुच्चैरवोचज्ज्ञानवर्जितः ।१३
एते हि सर्वे च सुरासुरा भृशं नमंति मां विप्रवरास्तथर्षयः ।
कथंह्यसौ दुर्जनवन्महामनास्त्वभूत्तु यः प्रेतपिशाचसंवृत्तः ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी समय सब पतियों के भी पति अत्यन्त तेजस्वी दक्ष वहाँ प्रसन्नता पूर्वक आये ।८। ब्रह्मांडके अधिपति होने के अभिमानसे भरे हुए दक्षने केवल मुझे प्रणाम किया और मेरी आज्ञासे वहाँ बैठ गये ।९। उस समय सभी देव देवताओं और ऋषियों ने उन अत्यन्त तेजस्वी दक्ष का स्तुति और प्रणाम से सत्कार किया तथा विनम्रतापूर्वक करबद्ध प्रार्थना की ।१०। परन्तु अनेक प्रकार की लीलाओं से युक्त परम स्वतन्त्र शंकर अपने आसन पर बैठे रहे, उन्होंने दक्ष को प्रणाम नहीं किया ।११। शिव जीको प्रणाम न करता देखकर मेरा पुत्र दक्ष अत्यन्त रुष्ट हुआ और शिवजी पर क्रोध करने लगा ।१२। अत्यन्त अहंकार पूर्वक उसने क्रूर दृष्टि से शिवजी को देखा । उसको सुनाते हुए ज्ञान रहित वाक्य कहे । ।१३। दक्ष ने कहा–यह सुर, असुर विप्र, ऋषि सब मुझे देखकर प्रणाम करते हैं । परन्तु प्रेत पिशाचों से घिरा हुआ, अत्यन्त अभिमानी यह दुर्जन के समान कैसे बैठा रहा ? ।१४।

श्मशानवासी निरपत्रयो ह्यं कथं प्रणामं न करोति मेधुना ।
लुप्तक्रियो भूतपिशाचसेवितो मत्तोऽविधो नीतिविदूषकस्सदा।१५
पाखण्डिन दुर्जनपापशील दृष्ट्वा प्रोद्धर्तनिंदकञ्च ।
वध्वां सदासक्तरतिप्रवीणस्तस्मादमुं शप्तुमहं प्रवृत्तः ।१६
इत्येवमुक्त्वा स महाखलस्तदा रुषान्वितो रुद्रमिदं ह्यवोचत्।
शृण्वंत्वमीविप्रवरास्तथासुरा वध्यंहिमे चार्हथकर्तुमेतम्।१७
रुद्रोह्यं यज्ञवहिष्कृतो मे वर्णेष्वतोथ विवर्णरूपः ।
देवैर्न भागं लभतां सहैव श्मशानावासी कुलजन्महीन ।१८
इति दक्षोक्तमाकर्ण्य भृग्वाद्या बहवो जनाः ।
अगर्हयन् दुष्टसत्वं रुद्रं मत्वामरैस्समम् ।१९
नन्दी निगम्य तद्वाक्यं लोलाक्षोतिरुषान्वितः ।
अब्रवीत्त्वरिते दक्ष शापं दातुमना गणः ।२०

इस श्मशान देवी, निर्लज क्रियाहीन, भूत पिशाचोंसे सेवित, नीति की हँसी उड़ाने वाले ने मुझे प्रणाम क्यों नहीं किया ।१५। इस पाखण्डी दुर्जन, विप्र निन्दकको सदैव पत्नी में आसक्त रहने के कारण मैं शापदेने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उद्यत हुआ हूँ।१६। ब्रह्माजीने कहा कि इतना कहकर दुष्ट प्रजापति ने क्रोधपूर्वक रुद्र के प्रति कहा हे विप्रो, देवताओं ! सब सुनो, यह बध के योग्य है ।१७। मैं इसे यज्ञसे बाहर करता हूँ वर्णोंसे भी बाहर, विवर्ण रूप यह आज से देवताओं में यज्ञभाग प्राप्त न करेगा,क्योंकियहश्मशान में रहने वाला और कुल जन्म से हीन है ।१८। ब्रह्माजी बोले कि भृगु आदि अनेक ऋषि दक्ष के वचन सुनकर रुद्रको देवताओं के समान जान-कर निन्दा करने लगे ।१९। परन्तु नन्दी के नेत्र लाल हो गये और उसने दक्ष को शाप देते हुए कहा ।२०।

रे रे शठ महामूढ दक्ष दुष्टमते त्वया ।
यज्ञ बाह्यो हि मे स्वामी महेशो हि कृतः कथम् ।२१
यस्य स्मरमात्रेण भवन्ति सफला मखाः ।
तीर्थानि च पवित्राणि सोऽयं शप्तो हरः कथम् ।२२
वृथा ते ब्रह्मचापल्याच्छप्तोयं दक्षदुर्मते ।
वृथोपहस्तिश्चैवादुष्टो रुद्रो महाप्रभुः ।२३
येनेदं पाल्यते विश्वं सृष्टिमन्ते विनाशितम् ।
शप्तोयं कथं रुद्रो महेशो ब्राह्मणाधम ।२४
एवं निर्भर्त्सितस्तेन नन्दिना हि प्रजापतिः ।
नन्दिनं शशापाथ दक्षो रोषसमन्वितः ।२५
यूयं सर्वे रुद्रगणा देवबाह्या भवन्तु वै ।
वेदमार्गपरित्यक्तास्तथा त्यक्ता महर्षिभिः ।२६
पाखण्डवादनिरताः शिष्टाचारवहिष्कृताः ।
मदिरापाननिरता जटाभस्मास्थिधारिणः ।२७
इति शप्तास्तथा तेन दक्षेण शिवकिंकराः ।
तच्छ्रुत्वातिरुषाविष्टोभवन्नन्दी शिवप्रियः ।२८

नन्दीश्वर ने कहा अरे महामूढ़ दक्ष ! तूने मेरे स्वामी महेश्वर को यज्ञ से किस कारण निकाल दिया है ? ।२१। जिनके स्मरण करने से ही यज्ञ सफल होते हैं और तीर्थ भी पवित्र हो जाते हैं, उन भगवान् शंकर को तूने शाप कैसे दिया ? ।२२। हे कुबुद्धि वाले दक्ष ! तूने चपलता से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शङ्कर को व्यर्थही शाप दिया है। तूने इन सरल हृदय वाले महाप्रभु की व्यर्थही हंसी उड़ाई है।२३। जो इस संसार को पालन करते और अन्त में विनाश करते हैं, उस रुद्र को तूने कैसे शाप दिया है। इस प्रकार नन्दीश्वर द्वारा प्रजापति की भर्त्सना किये जाने पर दक्ष क्रोध में भर गया और उसने नन्दी को भी शाप दिया।२४-२५। दक्षने कहा तुम सभी रुद्रगण वेद से बाहर होंगे तथा मनीपियों द्वारा भी तुम्हारा त्याग किया जायेगा।२६। तुम पाखण्डी अशिष्ट मदिरा पीने वाले तथा जटा, भस्म और अस्थियों के धारण करने वाले होंगे।२७। ब्रह्माजी ने कहा कि दक्ष ने जब इस प्रकार शिवगणोंको शाप दिया तब उसे सुनकर नन्दी अत्यन्त क्रोधित हुए।२८।

प्रत्युक्त्वा च द्रुतं दक्षं गर्वितं तं महाखलम्।
शिलादतनयो नन्दी तेजस्वी शिववल्लभः।२९
रे दक्ष शठ दुर्बुद्धे वृथैव शिवर्किकराः।
शप्तास्ते ब्रह्मचापल्याच्छिवतत्वमजानता।३०
भृग्वाद्यैर्दुष्टचित्तैश्च मूढैस्स उपहासितः।
महाप्रभुर्महेशानो ! ब्राह्मणत्वादहंमते।३१
ये रुद्र विमुखाश्चात्र ब्राह्मणास्त्वादृशाः खलाः।
रुद्रतेजः प्रभावत्वात्तेषां शापं ददाम्यहम्।३२
वेदवादरताः यूयं वेदतत्ववहिर्मुखाः।
भवन्तु सततं विप्रा नान्यदस्तीति वादिनः।३३
कामात्मानस्स्वर्ग पराः क्रोधलोभमदान्विताः।
भवन्तु सततं विप्रा भिक्षुका निरपत्रपाः।३४
वेदमार्गं पुरस्कृत्य ब्राह्मणाश्शूद्रयाजिनः।
दरिद्रा वै भविष्यन्ति प्रतिग्रहरतास्सदा।३५

उस अहङ्कारी दुष्ट दक्षसे उस शिलादसुत नन्दी ने शीघ्रता से कहा कि अरे दुर्बुद्धि वाले दक्ष ! तू शिव-तत्व से अज्ञान है। तूने ब्रह्म चपलता से शिवगणोंको व्यर्थही शाप दिया।२९-३०। तूने दुष्ट मन वाले भृगु आदिसे उपहास कराया और ब्राह्मणत्वके अहंकारमें भरकर महाप्रभुशंकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का निरादर किया ।३१। तेरे समान रुद्र विमुख दुष्ट ब्राह्मणों को मैं रुद्र के तेज प्रकाश से शाप देता हूँ ।३२। तुम वेद-वाद परायण होकर भी वेद तत्त्व का ज्ञान न पा सकोगे । कुछ नहीं है ऐसा ही निरन्तर कहने वाले होंगे ।३३। तुम कामनासे ही अनुष्ठान करोगे स्वर्ग की इच्छा वाले लोभ, मद, क्रोध से युक्त, निर्लज्ज तथा भिक्षा मांगने वाले होंगे ।३४। वेद-मार्ग ही दुहाई देकर कुयज्ञ कराओगे और कुदान लेने वाले दरिद्री होंगे ।३५।

असत्प्रतिग्रहाश्चैवं सर्वे निरयगामिनः ।
भविष्यन्ति सदा दक्ष केचिद्वै ब्रह्मराक्षसाः ।३६
यश्शिवं सुरसामान्यमुद्दिश्य परमेश्वरम् ।
द्रुह्यत्यजो दुष्टमतिस्तत्त्वतो विमुखो भवेत् ।३७
कूटधर्मेषु गेहेषु सदा ग्राम्यसुखेच्छया ।
कर्मतन्त्रं वितनुता वेदवादं च शाश्वतम् ।३८
विनष्टानन्दकमुखो विस्मृतात्मगतिः पशुः ।
भ्रष्टकर्मानयसदा दक्षो बस्तमुखोऽचिरात् ।३९
शप्तास्ते कोपिना तत्र नन्दिना ब्राह्मणा यदा ।
हाहाकारो महानासीच्छप्तो दक्षेण चेश्वरः ।४०
तदाकर्ण्याहमत्यत्यमनिदंतं मुहुर्मुहुः ।
भृग्वादीनपि विप्रांश्च वेदसृट् शिवतत्त्ववित् ।४१
ईश्वरोऽपि वचः श्रुत्वा नन्दिनः प्रहसन्निव ।
उवाच मधुरं वाक्यं बोधयंस्तं सदाशिवः ।४२

तुम सत्य रहित प्रतिग्रह ग्रहण करने के कारण नरकगामी होगे और इनमें भी कोई-कोई तो ब्रह्म राक्षस बनेगा ।३६। जिन भगवान शङ्करको तुम सामान्य देवता समझते हो, उनसे द्रोह करने वाला दुष्ट बुद्धि तथा तत्त्व से विमुख होगा ।३७। शङ्कर द्रोही कूट धर्म रत रहकर घर में पड़े रहेंगे और ग्राम्य सुख की कामना करेंगे तथा कर्म-तन्त्र में लगाकर वेद पर विवाद करते रहेंगे ।३८। इनके आनन्द का नाश होगा, अपनी गति का ज्ञान विस्मृत हो जाने से पशु रूप होंगे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मनीति से विमुख होने वाले इस दक्ष का मुख बकरे के समान हो जायेगा ।३९। जिस समय क्रोधपूर्वक नन्दीश्वर ने ब्राह्मणों को और दक्ष को शाप दिया, उस समय सर्वत्र महान् हाहाकार मच गया ।४०। यह सुनकर मैंने दक्ष तथा भृगु आदि ब्राह्मणों की इसलिए निन्दा की कि उन्होंने वेद और शिवतत्व का ज्ञान होते हुए भी ऐसा किया ।४१। नन्दी के इन वचनों को सुनकर शंकर हंसे और उसे समझाते हुए कहने लगे ।४२।

शृणु नन्दिन् महाप्राज्ञ न कर्तुं क्रोधमर्हसि ।
वृथा शप्तो ब्रह्मकुलों मत्वा शप्तं च मां भ्रमात् ।४३
वेदो मन्त्राक्षरमय स्साक्षात्सूक्तमयोभृशम् ।
सूक्ते प्रतिष्ठितो ह्यात्मा सर्वेषामपि देहिनाम् ।४४
तस्मादात्मविदो नित्यं त्वं मा शप रुषान्वितः ।
शप्या न वेदाः केनापि दुर्द्धियापि कदाचन ।४५
अहं शप्तो न चेदानी तत्वतो वोद्धुमर्हसि ।
शान्तोभव महाधीमन् सनकादिविबोधकः ।४६
यज्ञोऽहं यज्ञकर्माहं यज्ञांगानि च सर्वशः ।
यज्ञात्मा यज्ञनिरतो यज्ञबाह्योहमेव वै ।४७
कोयं कस्त्वमिमे के हि सर्वोहमपि तत्वतः ।
इति बुद्ध्यां हि विमृश वृथा शप्तास्त्वया द्विजाः ।४८
तत्वज्ञानेन निहृत्य प्रपञ्चरचनोभव ।
वुधस्स्वस्थो महाबुद्धे नन्दिन् क्रोधादिवर्जितः ।४९

शङ्कर ने कहा—हे नन्दी ! हे महाप्राज्ञ ! तुमको क्रोध करना उचित नहीं है । तुमने भ्रम से मुझे शाप देता हुआ देखकर ब्रह्म कुल को व्यर्थ ही शाप दे डाला ।४३। वेद मन्त्राक्षर युक्त हैं तथा सूक्त के भी देहधारियों की आत्मा प्रतिष्ठित है ।४४। इसलिए आत्म ज्ञानी होकर तुम क्रोध वश शाप मत दो, वेद कभी किसी दुर्बुद्धि से भी शाप के योग्य नहीं हैं ।४५। तुम तत्वज्ञान से यह समझ सकते हो कि मैं कभी शापित नहीं हो सकता । हे बुद्धिवन्त ! तुमने सनकादिक को ज्ञान दिया था, तुम शान्त होओ ।४६। यज्ञ के कर्म, यज्ञ के अङ्ग, यज्ञ की आत्मा यज्ञ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रत यज्ञ से बाहर सभी में मैं व्याप्त हूँ ।४७। तुम सब कौन हो ? सब से विचार कर देखो तो मैं ही हूँ और ऐसा विचार करने से ज्ञात होगा कि ब्राह्मणों को शाप व्यर्थ ही दिया गया ।४८। इस प्रपंच को तत्वज्ञान से जानकर शान्त होओ । क्रोध को त्याग कर स्वस्थ होओ और सम्पूर्ण रहस्य को समझो ।४९।

एवं प्रवोधितस्तेन शम्भुना नन्दिकेश्वरः ।
विवेकपरमो भूत्वा शांतोऽभूत्क्रोधवर्जितः ।५०
शिवोऽपि तं प्रबोध्याशु स्वगणैः प्राणवल्लभम् ।
सगणस्संययौ तस्मात्स्वस्थानं प्रमुदान्वितः ।५१
दक्षोऽपि स रुषाविष्टस्तैर्द्विजैः परिवारितः ।
स्वस्थानं च ययौ चित्ते शिवद्रोहपरायणः ।५२
रुद्रं तदानीं परिशप्यमानं संस्मृत्य दक्ष परया रुषान्वितः ।
श्रद्धां विहायैव स मूढबुद्धिर्निन्दापरोभूच्छिवपूजकानाम् ।५३
इत्युक्तो दक्षदुर्बुद्धिश्शंभुना परमात्मना ।
परां दुर्धिषणां तस्य शृणु तात वदाम्यहम् ।५४

ब्रह्माजी ने कहा--जब भगवान् शंकर ने इस प्रकार नन्दीश्वर को समझाया तब उन्हें परम वोध हुआ और क्रोध को छोड़कर वे शांत हो गये ।५०। इस प्रकार अपने प्रियगण को समझा कर शिवजी गणों सहित उस स्थान में चले गये ।५१। तथा दक्षभी मन में शिवके प्रति द्रोहधारण किये ब्राह्मणों सहित क्रोध पूर्वक अपने स्थान को गये ।५२। इस प्रकार शंकर को शाप देकर अत्यन्त क्रोध से भरे हुए दक्ष ने मूर्खता वश शिव पूजकों को निन्दा करना प्रारम्भ किया ।५३। दुर्बुद्धि दक्ष ने शंकर के प्रति भ्रष्टता का वर्णन किया, अब शंकर के द्वारा जो प्रतिकूल किया उसे ध्यान पूर्वक सुनो ।५४।

दक्ष यज्ञ में शिव भाग न होने पर दधीचि का विरोध

एकदा तु मुने तेन यज्ञः प्रारम्भितो महान् ।
तत्राहूतास्तदा सर्वे दीक्षितेन सुरर्षयः ।१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षयोऽखिलास्तत्र निर्जराश्च समागताः ।
यद्यज्ञकरणार्थं हि शिवमायाविमोहिताः ।२
अगस्त्यः कश्यपोत्रिश्च वामदेवस्तथा भृगुः ।
दधीचिर्भगवान् व्यासो भारद्वाजोऽथ गौतमः ।३
पैलः पराशरो गर्गो भार्गवः ककुपत्सितः ।
सुमन्तुत्रिककंकाश्च वैशम्पायन एव च ।४
एते चान्ये च बहवो मुनयो हर्षिता ययुः ।
मम पुत्रस्य दक्षस्य सदारास्ससुता मखम् ।५
तथा सर्वे सुरगणा लोकपाला महोदयाः ।
तथोपनिर्जरास्सर्वे स्वोपकारबलान्विताः ।६
सत्यलोकात्समानीतो नुतोहं विश्वकारकः ।
ससुतस्सपरीवारो मूर्तवेदादिसंयुतः ।७

ब्रह्माजी ने कहा--हे नारदजी ! उस समय दक्ष ने एक महायज्ञ का आरम्भ किया और दीक्षा लेकर सभी महर्षियों को आमन्त्रित किया।१। शिव माया से मोहित देवगण और ऋषिगण यज्ञ कराने के लिए वहाँ पहुँचे ।२। अगस्त्य, कश्यप, अत्रि, वामदेव, भृगु, दधीचि, व्यास, भरद्वाज तथा गौतम ।३। पैल, पाराशर, गर्ग, भार्गव, ककुत्सित, सुमन्तत्रिक, कंक और वैशम्पायन ।४। तथा अन्य अनेक मुनि प्रसन्न होकर वहाँ आये । यह सभी स्त्री-पुत्रों सहित दक्ष के यज्ञ में उपस्थित हुए ।५। इसी प्रकार सभी देवता, लोकपाल तथा अन्य देवता, उपकरण तथा बल से सम्पन्न वहाँ आये ।६। सत्यलोकसे मुझे भी प्रार्थना करके आमन्त्रित किया गया और मैं भी सपरिवार तथा मूर्तवेद शास्त्रादि के सहित वहाँ पहुँचा ।७।

वैकुण्ठाच्च तथा विष्णुस्संप्रार्थ्यं विविधादरात् ।
सपार्षदपरीवारस्समानीतो मखं प्रति ।८
एवमन्ये समायाता दक्षयज्ञं विमोहिताः ।
सत्कृतास्तेन दक्षेण सर्वे ते हि दुरात्मना ।९
भवनानि महार्हाणि सुप्रभाणि महांति च ।
त्वष्ट्रा कृतानि दिव्यानि तेभ्यो दत्तानि तेन वै ।१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेषु सर्वेषुधिष्ण्येषु यथायोग्यं च संस्थिताः ।
सम्मानिता अराजंस्ते सकला विष्णुना मया ।११
वर्त्तमाने महायज्ञे तीर्थे कनखले तदा ।
ऋत्विजश्च कृतास्तेनभृग्वाद्याश्च तपोधनाः ।१२
अधिष्ठाता स्वयं विष्णुस्सह सर्वं मरुद्गणैः ।
अहं तत्राऽभवं ब्रह्मा त्रयोविधिदिर्शकः ।१३
तथैव सर्वदिक्पाला द्वारपालाश्च रक्षकाः ।
सायुधास्सपरिवाराः कुतूहलकरास्सदा ।१४

अत्यन्त आदर सहित वैकुण्ठ से भगवान् विष्णु को बुलाया और वे भी अपने पार्षद तथा परिवार सहित पधारे ।८। अन्य अनेक महात्मा मोहित होकर दक्ष-यज्ञ में आये और उस शिव द्रोही दक्षने सभी का सत्कार किया ।९। विश्वकर्मा द्वारा निर्मित अत्यन्त प्रकाशमान भवन उन सबको रहने के लिए बता दिये ।१०। उन स्थानोंमें मेरे और नारायण के सहित सभी देवता सम्मानित होकर विराजमान हुए ।११। यह महायज्ञ उस कनखल तीर्थमें जैसे ही प्रारम्भ हुआ, उस समय भृगु आदि तपस्वी उसमें ऋत्विक् बनें ।१२। सब मरुद्गणों के सहित विष्णु इसमें अधिष्ठाता हुए और त्रयी को बिधि का ज्ञाता मैं उस यज्ञ में ब्रह्मा हुआ ।१३। इसी प्रकार सब दिक्पाल यज्ञ में द्वारपाल रूप से उसके रक्षक हुए, वे हाथी में आयुध धारण किये उस कुतूहल में परिवार संलग्न थे ।१४।

उपतस्थे स्वयं यज्ञस्सुरूपस्तस्य चाध्वरे ।
सर्वे महामुनिश्रेष्ठाः स्वयं वेदधराऽभवन् ।१५
तनूनपादपि निजं चक्रे रूपं सहस्रशः ।
हविषां ग्रहणायाश तस्मिन् यज्ञे महोत्सवे ।१६
अष्टाशीतिसहस्राणि जह्वंति सह ऋत्विजः ।
उद्गातारश्चतुषष्टिसहस्राणि सुरर्षयः ।१७
अध्वर्यवोध होतारस्तावन्तो नारदादयः ।
सप्तर्षं यस्समा गाथाः कुर्वन्ति स्म पृथक्पृथक् ।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्धर्वविद्याधरसिद्धसंघानादित्यसंघान सगणान् सयज्ञान् ।
संख्यावरान्नागचरान् समस्तान् वव्रे स दक्षोहि महाध्वरेस्वे।१९

द्विजर्षिराजर्षिसुर्रजिसंघा नृपास्समित्राः सचिवास्सैन्याः ।
वसुप्रमुख्या गणदेवताश्च सर्वेवृतास्तेन मखोपवेत्राः ।२०
दीक्षायुक्तस्तदा दक्षः कृतकौतुकमङ्गलः ।
भार्यया सहितो रेजे कृत स्वस्त्ययनो भृशस ।२१

उस स्थान पर यज्ञ भी अपने स्वरूप में स्थिर हो गया तथा सब महामुनि स्वयं ही वेद के धारण करने वाले हुये ।१५। अग्नि ने अपने सहस्रों रूप धारण किये और उस महोत्सव युक्त यज्ञ में आहुति ग्रहण करने लगे।१६। अठासी हजार ऋषि आहुति दे रहेथे और चौसठ हजार ऋक् उसमें उद्‌गाता थे ।१७। इतने ही अध्वर्यु तथा होतार्थ तथा नारद आदि महर्षि पृथक्-पृथक् गाथा गानकर रहे थे ।१८। गन्धर्व विद्याधर तथा सिद्धोंके समूह आदित्यगण, यक्षगण, समस्त संख्या वाले नाग तथा समस्त चर दक्ष द्वारा यज्ञ में वरण किये गये थे ।१९। ब्रह्मर्षि, राजर्षि, देवर्षि, मित्र मन्त्री तथा सेना सहित सभी राजा,वसु तथा गण देवताओं को दक्ष ने वरण किया था ।२०। कौतुक मंगल के उपरान्त दक्षने दीक्षा ग्रहणकी तथा स्वस्तिवाचन के पश्चात् भार्या सहित सुशोभित हुआ।२१।

तस्मिन् यज्ञे वृतश्शंभुर्न दक्षेण दुरात्मना ।
कपालीति विनिश्चित्य तस्य यज्ञार्हता न हि ।२२
कपालभार्येति सती दयिता स्वसुतापि च ।
नाहूतायज्ञविषये दक्षेणागुणदर्शिना ।२३
एवं प्रवर्तमाने हि दक्षयज्ञे महोत्सवे ।
स्वकार्यं लग्नास्तत्रासन् सर्वे तेऽध्वरसंमताः ।२४
एतस्मिन्नन्तरे तत्र दृष्ट्वा वै शङ्करं प्रभुम् ।
प्रोद्विग्नमावसश्शैवो दधीचो वाक्यमब्रवीत् ।२५
सर्वे शृणुत मद्वाक्यं देवर्षिप्रमुखा मुदा ।
कस्मान्नैवा गतश्शंभुरस्मिन् यज्ञे महोत्सवे ।२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एते सुरेशा मुनयो महत्तरास्सलोकपालश्च समागता हि ।
तथापि यज्ञस्तुन शोभते भृशंपिनाकिना तेन महात्मना विना।२७
येनैव सर्वाण्यपि मङ्गलानि भवन्तिप्रशंसन्ति महाविपश्चितः ।
सोऽसौ न दृष्टोत्र पुमान् पुराणो वृषध्वजो नीलगलः परेशः ।२८

परन्तु उस दुरात्मा ने शिवजी को कपाली और अयोग्य कहकरउस यज्ञ में आमन्त्रित नहीं किया ।२२। यद्यपि उसको अपनी कन्या सती अत्यन्त प्रिय थी, किन्तु वह कपाली की पत्नी है, ऐसा विचार कर उसे भी यज्ञ में नहीं बुलाया ।२३। इस प्रकार दक्ष के यश महोत्सव का आरम्भ हुआ और सभी अध्वर्यु अपने कार्यमें तत्पर हुए।२४। तब यहाँ अपने स्वामी भगवान् शिव को न देखकर परम शैव दधीचि ने उद्विग्न मन से कहा ।२५। दधीचि ने कहा-सभी देवगण और ऋषिगण इस सभा में मेरा प्रश्न सुनें कि इस यज्ञ महोत्सव में भगवान् शंकरक्यों नहीं पधारे?।२६।सभी सुरेश्वर मुनीश्वर और लोकपाल इस यज्ञमें उपस्थित हैं, परन्तु महात्मा शिवजी के अभाव में यह यज्ञ शोभा नहीं पा रहा है ।२७। महात्मा जन जिनके द्वारा सम्पूर्ण मङ्गल होना कहते हैं, इन्हीं पुराण पुरुष, वृषभध्वज, नीलकण्ठ के यहाँ दर्शन नहीं हो रहे हैं ।२८।

अमङ्गलान्येव च मंगलानि भवन्ति येनाधिनतानि दक्ष ।
त्रिपञ्चकेनाप्यथमंगलानि भवन्ति सद्यः परतः पुराणि।२९
तस्मात्त्वयैव कर्तव्यमाह्वनं परमेशितुः ।
त्वरितं ब्रह्मणा वापि विष्णुना प्रभविष्णुना ।३०
इन्द्रेण लोकपालश्च द्विजैस्सिद्धैस्सहाधुना ।
सर्वथा नयनीयोसौ शङ्करो यज्ञपूर्तये ।३१
सर्वैभवद्भिर्गन्तव्यं यत्र देवो महेश्वरः ।
दाक्षायण्या समं शम्भुमानयध्वं त्वरान्विताः ।३२
तेन सर्वं पवित्रं स्याच्छम्भुना परमात्मना ।
अत्रागतेन देवेशास्सांगेन परमात्मना ।३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या समग्रं सुकृतं भवेत् ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ह्यानेतव्यो वृषध्वजः ।३४
समागमे शङ्करेण पावनो हि भवेन्मखः ।
भविष्यत्यन्यथाऽपूर्णः सत्यमेवद्ब्रवीम्यहम् ।३५

जिनके पाते ही सम्पूर्ण अमङ्गल मङ्गलरूप हो जाते हैं और आठों दिशायें मंगल से परिपूर्ण हो जातीहैं।२९। इसलिए ब्रह्माजी या भगवान विष्णु को भेजकर शीघ्रही भगवान् शंकर को यहाँ बुलाना चाहिए ।३० इन्द्र लोकपाल या सिद्ध ब्राह्मणों के सहित यज्ञ पूर्ति के लिए शंकर को शीघ्र यहाँ लाना चाहिए।३१। अथवा सभी उन महेश्वर के पास जाकर उन्हें दक्ष-सुता सहित यहाँ ले आवें ।३२। यदि वे देवेश यहाँ सती सहित आ गये तो यह यज्ञ पवित्र हो जायेगा ।३२। उनके स्मरण करने अथवा नामोच्चारण करनेसे सब सुकृत होताहै । उन वृषभध्वजको प्रयत्नपूर्वक यहाँ लाना चाहिए ।३४। मैं सत्य कहता हूँ कि शंकर के आने से ही यज्ञ पवित्र होगा अन्यथा अपूर्ण रह जायेगा ।३५।

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा दक्षो रोषसमन्वितः ।
उवाच त्वरितं मूढः प्रहसन्निव दुष्टधीः ।३६
मूलं विष्णुर्देवतानां यत्र धर्मस्सनातनः ।
समानीतोमया सम्यक् किं नूनं यज्ञकर्मणि ।३७
यस्मिन्वेदाश्च यज्ञाश्च कर्माणि विविधानि च ।
प्रतिष्ठातानि सर्वाणि सोऽसौ विष्णुरिहागतः ।३८
सत्यलोकात्समायातो ब्रह्मा लोक पितामहः ।
वेदैस्सोपनिषद्भिश्च विविधैरागमैस्सह ।३९
तथा सुरगणैस्साकमागतस्सुरराट् स्वयम् ।
तथायूयं समायाता ऋषयो वीतकल्मषाः ।४०
ये ये यज्ञोचिताश्शांताः पात्रभूतास्समागताः ।
वेदवेदार्थं तत्वज्ञास्सर्वे यूयं दृढव्रताः ।४१

ब्रह्माजीने कहा कि दधीचिके इस प्रकार वचन सुनकर दक्षअत्यन्त

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोधित हुआ और अहंकार से हँसता हुआ कहने लगा ।३६। विष्णु भगवान् देवताओंके मूल हैं और सनातन धर्म उन्हींमें स्थित है, मैंने उनको इस यज्ञ में बुला ही लिया है तो अब न्यूनता ही क्या रह गयी ? ।३७। जिन विष्णु भगवान में अनेक कर्म, यज्ञ और वेद भी स्थित हैं वे यहाँ साक्षात् उपस्थित हैं ।३८। सत्यलोक से लोक पितामह ब्रह्मभी आ गये है तथा उपनिषद् और आगम भी मूर्त रूप से उनके साथ यहाँ हैं ।३९। सब देवताओं के सहित देवराज यहाँ हैं ही और आप सब पाप-रहित ऋषिगण भी यहां हैं ।४०। यज्ञ में उचित पात्र रूप वेद वेदार्थ के तत्वज्ञाता एवं दृढ़व्रती जितने भी हैं वे सभी आ गये हैं ।४१।

अत्रैव च किमस्माकं रुद्रेणापि प्रयोजनम् ।
कन्या दत्ता मया विप्र ब्रह्मणा नोदितेन हि ।४२
ह्ररोऽकुलीनोसौ विप्र पितृमातृविवर्जितः ।
भूतप्रेतपिशाचानां पतिरेको दुरत्ययः ।४३
आत्मसम्भावितो मूढस्स्तब्धौ मौनी समत्सरः ।
कर्मण्यस्मिन्न योग्योसौ नानीतो हि मयाऽधुन ।४४
तस्मात्वमीदृशं वाक्यं पुनर्वाक्यं नहि क्वचित् ।
सर्वैर्भवद्भिः कर्तव्यो यज्ञोमेसफलो महान् ।४५
एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य दधीचो वाक्यमब्रवीत् ।
सर्वेषां शृण्वतां देवमुनीनां सारसंयुतम् ।४६
अयज्ञोयं महाजातो विना तेन शिवेन हि ।
विनाशोऽपि विशेषेण ह्यत्र ते हि भविष्यति ।४७
एवमुक्त्वा दधीचासावेक एवं विनिर्गतः ।
यज्ञवाटाश्च दक्षस्य त्वरितः स्वाश्रमं ययौ ।४८
ततोन्ये शांकरा ये च मुख्याश्शिवमतानुगाः ।
निर्ययुस्स्वाश्रमान् सर्वे शापं दत्वा तथैव च ।४९

फिर रुद्र से हमें क्या प्रयोजन है ? ब्रह्मा की आज्ञा से मैंने अपनी कन्या उनको दी थी ।४२। परन्तु, हे ब्रह्मन् ! वे तो अकुलीन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता-पिता हीन तथा भूत-पिशाचों के अधिपति और दुर्गम है ।४३। आत्मा की सम्भावना से युक्त, स्तब्ध अहंकारी, कर्म से अयोग्य होने के कारण मैंने उन्हें नहीं बुलाया है ।४४। इसलिए आप सब मिलकर ही मेरे यज्ञ को सफल करें और रुद्र के विषय में फिर कुछ न कहें ।४५ ब्रह्माजी ने कहा–दक्ष की बात सुनकर दधीचि ने पुनः कहा, जिसे देवता, मुनि आदि सब ने सुना ।४६। दधीचि बोले––शिवजी के बिना यह यज्ञ अयज्ञ ही है, इससे तुम नष्ट हो जाओगे ।४७। इतना कहकर दधीचि वहाँ से उठकर चले गये और अपने आश्रम में जा पहुँचे ।४८। इसके पश्चात् जो भी शिव भक्त वहाँ आये वे सभी दक्ष को शाप देकर अपने-अपने स्थान को गये ।४६।

मुनौ विनिर्गते तस्मिन् मखादन्येषु दुष्टधीः ।
शिवद्रोही मुनीन्दक्षः प्रहसन्निदमब्रवीत् ।५०
गतः शिवप्रियो दधीचो नाम नामत्तः ।
अन्ये तथाविधा ये च गतास्ते मम चाध्वरात् ।५१
एतच्छुभतरं जातं संमतं मे हि सर्वथा ।
सत्यं ब्रवीमि देवेश सुराश्च मुनयस्तथा ।५२
विनष्टचित्ता मन्दाश्च मिथ्यावादरताः खलाः ।
वेदबाह्या दुराचास्त्याज्यास्ते मखकर्मणि ।५३
वेदवादरता यूयं सर्वे विष्णुपुरोगमाः ।
यज्ञं मे सफलं विप्रसुराः कुर्वन्तु माचिरम् ।५४
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य शिवमायाविमोहिताः ।
यन्मखे देवयजनं चक्रुस्सर्वे सुरर्षयः ।५५
इति तन्मखशापो हि वर्णितो मे मुनीश्वर ।
यज्ञविध्वंसयोगोपि प्रोच्यते श्रृणु सादरम् ।५६

जब कुछ अन्य मुनिगण भी वहांसे चले गये तब वह शिवद्रोही दक्ष उपस्थित जनों से कहने लगा ।५०। दक्ष ने कहा–शंकर का प्रिय दधीचि यहाँ से चला गया और उस जैसे अन्य व्यक्ति भी यहां से उठ कर चये गनें ।५१। यह अत्यन्त शुभ हुआ, मैं भी यही चाहता था, मैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सत्य ही कह रहा हूँ ।५२। जिनकी बुद्धि नष्ट हो गई हो, आत्मा अस्वच्छ हों मिथ्यावाद में रत हों, वेदसे विरुद्ध तथा दुराचार से प्रवृत्त हों, ऐसा कभी भी यज्ञ में न बुलावें ।५३। विष्णु आदि आप आसी वेदवाद में निरत हैं । हे विप्रो ! हे देवताओ ! आप ही मेरे यज्ञ को सफल कीजिए ।५४। ब्रह्माजी ने कहा दक्ष के ऐसे वचन सुनकर शिव-माया में विमोहित हुए देवता और ऋषि उस यज्ञ में देव-यजन करने लगे ।५५। इस प्रकार यज्ञ में शाप देने का वर्णन हुआ अव यज्ञ विध्वंस का वृत्तान्त आदर सहित श्रवण करो ।५६।

सती का पिता यज्ञ में जाने के लिए आग्रह

यदा ययुर्दक्षमखमुत्सवेन सुरर्षयः ।
तस्मिन्नेवांतरे देवी पर्वते गन्धमादने ।१
धारागृहे वितानेन सखीभिः परिवारिता ।
दाक्षायणी महाक्रीडाश्चकार विविधास्सती ।२
क्रीडासक्ता तदा देवी ददर्शाथ मुदा सती ।
दक्षयज्ञे प्रयातं च रोहिण्यापृच्छ सत्वरम् ।३
दृष्ट्वा सोमं तथा भूतां विजयां प्राह सा सती ।
स्वसखीं प्रवरां प्राणप्रियां सा हितावहाम् ।४
हे सखीप्रवरे प्राणप्रिये त्वं विजये मम ।
क्व गमिष्यति चन्द्रोऽयं रोहिण्यापृच्छ सत्वरम् ।५
तथोक्ता विजया सत्य गत्वा तत्सन्निधौ द्रुतम् ।
क्व गगच्छसीति पप्रच्छ शशिन तं यथोचितम् ।६
विजयोक्तमथाकर्ण्य स्वयात्रां पूर्वमादरात् ।
कथितं तेन तत्सर्वं दक्षयज्ञोत्सवादिकम् ।७

ब्रह्माजी ने कहा—जब दक्ष-यज्ञ के लिए देवता और ऋषि जा रहे थे, उस अवसर पर सती गन्धमादन पर्वत पर ।१। वितान के नीचे अपनी सखियों के साथ विभिन्न प्रकार की क्रीड़ा में रत थी ।२। उस क्रीड़ा के समय सतीने दक्ष-यज्ञ में जाती हुई रोहिणी के विषय में पूछा ।३। उसका श्रृङ्गार करते हुए देखकर सती ने विजया से कहा-क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजया सती की अत्यन्त प्रिय सखी तथा हितसाधिका थी ।४। सती ने कहा–हे विजया ! तू मेरी अत्यन्त प्रिय जखी है । यह चन्द्रमा कहाँ जा रहा है, यह बात तू रोहिणी में जाकर पूछ ।५। ब्रह्माजी ने कहा–सती की बात सुनकर विजया ने चन्द्रमा के पास जाकर पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो ? ।५। विजया की बात सुनकर चन्द्रमा ने दक्ष के यहाँ यज्ञ महोत्सवका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहकर अपने वहाँ जाने की बात बताई ।७।

तच्छ्रुत्वा विजया देवीं त्वरिता जातसंभ्रमा ।
कथयामास मत्सर्वयदुक्तं शशिना सतीम् ।८
तच्छ्रुत्वा कायिका देवी विस्मृताभूत्सतीतदा ।
विमृश्य कारणं तत्राज्ञात्वा चेतस्यचिंतयत् ।६
दक्ष पिता में माता च वीरिणी नौ कुतस्सतीं ।
आह्वानं न करोति स्म विस्मृता मां प्रियां सुताम् ।१०
पृच्छेयं शंकरं तत्र कारणं सर्वमादरात् ।
चिंतयित्वेति सासीद्वै तत्र गन्तुं सुनिश्चया ।११
अथ दाक्षायणी देवी विजयां प्रवरां सखीम् ।
स्थापयित्वा द्रुतं तत्र समगच्छच्छिवांतिकम् ।१२
ददर्श तं सभामध्ये संस्थितं बहुभिर्गणैः ।
नन्द्यादिभिर्महावीरैः प्रवरैर्यूथ यूथपैः ।१३
दृष्ट्वा तं प्रभुमोशानं स्वपतिं साथ दक्षजा ।
प्रष्टुं तत्कारणं शीघ्रं प्राप शंकर संनिधिम् ।१४

यह सुनकर विजया अत्यन्त विस्मित हुई और उसने सती के पास आकर वह सव वृत्तान्त कह सुनाया जो उससे चन्द्रमा ने कहा था ।८। यह सुनकर सती को भी वड़ा आश्चर्य हुआ और उसका कारण समझ में न आने से वह सोचने लगी ।६। मेरे पिता है मेरी माता वीरिणी हैं, इन्होंने मुझे यज्ञोत्सव में क्यों नहीं बुलाया ? मुझे वे क्यों भूल गए ? ।१०। मैं शिवजी के पास चलकर इसका कारण पूछूँ । यह सोचकर शिवजी के पास जाने का निश्चय किया ।११। सती विजया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को वहीं छोड़कर शिवजी के पास शीघ्रता से पहुँची ।१२। वहाँ सभा जुड़ी हुई देखी नन्दी आदि महागणों के मध्य में शिवजी विराजमान थे ।१३। दक्षसुता ने अपने पति को इस प्रकार यूथपों बीच में देखा और वह शीघ्रता से उनके समीप जा पहुँची ।१४।

अथ शंभुर्महाशीलः सर्वेशः सुखदः सताम् ।
सतीमुवाच त्वरितं गणमध्यस्थ आदरात् ।१५
किमर्थमागतात्र त्वं सभामध्ये सविस्मया ।
कारणं तस्य सुप्रीत्या शीघ्रं वद सुमध्यमे ।१६
एवमुक्ता तदा तेन महेशेन मुनीश्वर ।
साञ्जलिस्सुप्रणम्याशु सत्युवाच प्रभुं शिवा ।१७
पितुर्मम महान् यज्ञो भवतीति मया श्रुतम् ।
तत्रोत्सवो महानस्ति समवेतास्सुरर्षयः ।१८
पितुर्मम महायज्ञे कस्मात्तव न रोचते ।
गमनं देवदेवेश तत्सर्वं कथय प्रभो ।१९
सुहृदामेष वै धर्मस्सुहृद्भिस्सह सङ्गतः ।
कुर्वन्ति यन्महादेवः सुहृदः प्रीतिवर्द्धिनीम् ।२०

उस समय महाकौतुकी एव सत्पुरुषों के लिए कल्याण प्रद शिवजी गणों के मध्य बैठे हुए ही सती से बोले ।१५। शिवजी ने कहा--तुम आश्चर्यचकित सी इतनी द्रुत-गति से सभा के मध्य क्यों आई हो, यह मुझे शीघ्र बताओ ।१६। ब्रह्माजी ने कहा कि शंकर के इस प्रकार कहने पर सती ने हाथ जोड़ कर अपने स्वामी से कहा ।१७। सती बोली-- हे प्रभो ! मेरे पिता के यहाँ महान् यज्ञ हो रहा है, ऐसा मैंने सुना है। उस महोत्सव में सब ऋषि मुनि एकत्र हुए हैं ।१८। आपको मेरे पिता का यज्ञ अच्छा क्यों नहीं लगा ? आप वहाँ क्यों नहीं गये ? यह मुझे बताइये ।१९। सुहृदों का सुहृदों से मिलन परम धर्म है । आप प्रीति की वृद्धि करने वाली इस नीति का पालन करें ।२०।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मया गच्छ सह प्रभो ।
यज्ञवाटं पितुर्मेद्य स्वामिन् प्रार्थनया मम ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा सत्या देवो महेश्वरः ।
दक्षवागिषुहृद्विद्धो बभाषे सूनृतं वचः ।२२
दक्षस्तव पिता देवि मम द्रोही विशेषतः ।२३
यस्य ये मानिनस्सर्वे ससुरर्षिमुखाः परे ।
ते मूढा यजनं प्राप्ताः पितुस्ते ज्ञानवर्जिताः ।२४
अनाहूताश्च ये देवि गच्छन्ति परमन्दिरम् ।
अपमानं प्राप्नुवन्ति मरणादधिकं तथा ।२५
परालयं गतोपेन्द्रो लघुर्भवति तद्विधः ।
का कथा च परेषां वै रीढा यात्रा हि तद्विधा ।२६
तस्मात्त्वया मया चापि दक्षस्य यजनं प्रति ।
न गन्तव्यं विशेषेण सत्यमुक्तं मया प्रिये ।२७

हे प्रभो ! आप मेरे साथ वहाँ चलिए हे स्वामिन् ! मेरा निवेदन है कि आप मेरे पिताजी के यज्ञ महोत्सव में अवश्य चलें ।२१। ब्रह्माजी ने कहा--सती के यह वचन सुनकर दक्ष के वचनों को स्मरण करते हुए शंकर ने सत्य वचन कहे ।२२। शिव ने कहा–हे देवि ! तुम्हारे पिता दक्ष मुझसे द्वेष रखते हैं ।२३। जो देव-ऋषि उनके लिए मान्य हैं, वही मूर्ख बुद्धि वाले तुम्हारे पिता के यज्ञ में पहुँचे हैं ।२४। हे प्रिये ! जो किसी के यहाँ विना बुलाये जा पहुँचते हैं वे तिरस्कृत होते हैं और उन्हें मरणादि तक प्राप्त हो सकता है ।२५। दूसरे के घर जाने पर इन्द्र की गरिमा भी नहीं रहती । विना बुलाये जाना अनर्थक है ।२६। अतः दक्ष यज्ञ में मेरा जाना ठीक नहीं तुम मेरी यह बात सत्य समझो ।२७।

तथारिभिर्न व्यथते ह्यर्दितोऽपि शरैर्जनः ।
स्वानां दरुक्तिभिर्मताडितस्स यथा मतः ।२८
विद्यादिभिर्गुणैः षड्भिरसदन्यैस्सतां स्मृतौ ।
हतायां भूयसां काम न पश्यन्ति खलाः प्रिये ।२९
एवमुक्ता सती तेन महेशेन महात्मना ।
उवाच रोषसंयुक्ता शिवं वाक्यविदां वरम् ।३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञस्स्यात्यफलो येन स त्वं शंभोऽखिलेश्वरः ।
अनाहूतोसि तेनाद्य पित्रा मे दुष्टकारिणा ।३१
तत्सर्वं ज्ञातुमिच्छामि भवं भावं दुरात्मनः ।
सुरर्षीणां च सर्वेषामागतानां दुरात्मनाम् ।३२
तस्माच्चाद्यैव गच्छामि वापि तुर्यंजनं प्रभो ।
अनुज्ञां देहि मे नाथ तत्र गन्तुं महेश्वर ।३३
इत्युक्तो भगवान् रुद्रस्तया देव्या शिवस्स्वयम् ।
विज्ञाताखिलदृक् द्रष्टा सतीं सूतिकरोऽब्रवीत् ।३४

स्वजनों के दुर्वाक्यों से अन्तःकरण जितना व्याप्त होता है, उतना तो शत्रुओं के बाणों से भी नहीं होता ।२८। हे प्रिये ! विद्यादि छः गुणों से सम्पन्न भी खलों द्वारा तेजहीन हो जाते हैं ।२९। ब्रह्माजी ने कहा-जब शिवजी ने सती से इस प्रकार कहा तब सतीने शङ्कर से क्रोधपूर्वक कहा ।३०। सती बोली-हे शङ्कर ! आप सबके ईश्वर हैं । आपके वहाँ जाने से यज्ञ सफल हो जाता, परन्तु मेरे दुष्टकर्मा पिता ने आपको निमन्त्रित नहीं किया ।३१। इसलिए मैं उस दुरात्मा के भाव को जानना चाहती हूँ । वहाँ दुरात्मा होकर सभी देवता और ऋषि पहुँचे हैं ।३२। इसलिए मैं भी उस यज्ञ में अवश्य जाऊँगी । हे प्रभो ! आप मुझे वहाँ जाने को अनुमति दें ।३३। ब्रह्माजी ने कहा--जब इस प्रकार सती ने कहा तो सर्वज्ञाता भगवान् शङ्कर ने उससे कहा ।३४।

यद्येवं ते रुचिर्देवि तत्र गन्तुमवश्यकम् ।
सुव्रते वचनान्मे त्वं गच्छ शीघ्रं पितुर्मखम् ।३५
एतं नंदिनमारुह्य वृषभं सज्जमादरात् ।
महाराजोपचाराणि कृत्वा बहुगणान्विता ।३६
भूषितं वृषमारोहेत्युक्ता रुद्रेण सा सती ।
सुभूषिता सती युक्ताह्यगमत्पितृमन्दिरम् ।३७
महाराजोपचाराणि दत्तानि परमात्मना ।
सुच्छत्र चामरादीनि सद्वस्त्राभरणानि च ।३८
गणाः षष्टिसहस्राणि रौद्रा जग्मुश्शिवाज्ञया ।
कुतूहलयुताः प्रीता महोत्सवसमन्विताः ।३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदोत्सवो महानासीद्यजते तत्र सर्वतः ।
सत्याशिशवप्रियायास्तु वामदेवगणैः कृतः ।४०
कुतूहलं गणाश्चक्रु शिशवयोर्यश उज्जगुः ।
वालांतः पुप्लुवुः प्रीत्या महावीराशिशवप्रिया ।४१
सर्वथासीन्महाशोभा गमने जगदम्बिके ।
सुखारावस्संबभूव पूरितं भुवनत्रयम् ।४२

हे देवि ! यदि तुम वहाँ जाना ही चाहती हो तो मेरी आज्ञा से अवश्य ही जाओ ।३५। इस नन्दी वृषभ को सुसज्जित कर और इस पर चढ़कर ।३६। अपने सभी आभूषण धारण कर शीघ्र जाओ । यह सुन-कर सती सभी साज सज्जा युक्त होकर अपने पितृगृह को चली ।३७। भगवान शंकर ने महाराजों जैसी साज सज्जा प्रदान की छत्र, चबर-आभरण आदि दिये ।३८। शिवजी की आज्ञा से आठ हजार शिवगण सती के साथ महोत्सव करते हुए चले ।३९। उस समय उस देव यजन भूमि से महोत्सव आरम्भ हुआ और सती के साथ अनेक वाम-देव गणों ने प्रस्थान किया ।४०। शिवजी तथा शिवा का गुणगान करते हुए शिव गण कुतूहल पूर्वक दूर-दूर तक कूदते फाँदते चले ।४१। सती के चलने में सब प्रकार की शोभा हुई और उनके मुख से निकले हुए शब्दों से तीनों भुवन परिपूर्ण हो गये ।४२।

दक्ष द्वारा सती का तिरस्कार

दाक्षायणी गता तत्र यत्र यज्ञो महाप्रभः ।
सुरासुरमुनीन्द्रादिकुतूहलसमन्वितः ।१
स्वपितुर्भवनं तत्र नानाश्चर्य समन्वितम् ।
ददर्श सुप्रभं चारु सुरर्षिगणसंयुतम् ।२
द्वारि स्थिता तदा देवी ह्यवरुह्य निजासनात् ।
नन्दिनोऽभ्यन्तरं शीघ्रमेकैवागच्छदध्वरम् ।३
आगतां च सतीं दृष्ट्वाऽसिन्की माता यशस्विनी ।
अकरोदादरं तस्या भगिन्यश्च यथोचितम् ।४
नाकरोदादरं दक्षो दृष्ट्वा तामपि किंचन ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नान्योपि तभ्दयात्तत्र शिवमायाविमोहितः ।५
अथ सा मातरं देवी पितरं च सती मुने ।
अनमद्विस्मितात्यन्तं सर्वलोकपराभवात् ।६
भागान् पश्यद् देवानां हर्यादीनां तदध्वरे ।
न शंभु भागमकरोत् क्रोधं दुर्विषहं सती ।७

इस प्रकार सती वहाँ पहुँच गई, जहाँ अत्यन्त प्रभावशाली यज्ञ हो रहा था। देवता दैत्य मुनि और इन्द्रादि वहाँ कुतूहल कर रहे थे ।१। उस समय सती ने अपने पिता के स्थान को अनेक आश्चर्यों तथा देवता और मुनियों से युक्त देखा ।२। सती अपने आसन से द्वार में उतर पड़ी और केवल नन्दी को साथ लेकर यज्ञ भूमि में पहुँची।३। सती को आयी हुई देखकर उनकी माता और बहिनों ने उसका स्वागत किया।४। परन्तु दक्ष ने उसे देखकर भी आदर नहीं किया तथा शिवमाया में मोहित अन्य व्यक्तियों ने भी आदर नहीं किया ।५। तब सती ने अत्यन्त आश्चर्य से अपने माता-पिता को प्रणाम किया और अत्यन्त दुःखी हुई ।६। सती ने उस यज्ञ में विष्णु आदि सब देवताओं का भाग पृथक्-पृथक् देखा, परन्तु शिव का भाग न देखकर अत्यन्त क्रोधित हुई ।७।

तदा दक्षं दहन्तीव रुषा पूर्णा सतीं भृशम् ।
क्रूरदृष्ट्या विलोक्यैव सर्वानप्यपमानिता ।८
अनाहूतस्त्वया कस्माच्छंभूः परमशोभनः ।
येन पूतमिदं विश्वं समग्रं सचरचारम् ।९
यज्ञो यज्ञविदां श्रेष्ठो यज्ञांगो यज्ञदक्षिणः ।
यज्ञकर्ता च यश्शंभुस्तं विना च कथंमखः ।१०
यस्य स्मरमात्रेण सर्वपूतं भवत्यहो ।
विना तेन कृतं सर्वमपवित्रं भविष्यति ।११
द्रव्यमन्त्रादिकं सर्वं हव्यं कव्यं च्च यन्मयम् ।
शंभुना हि विनातेन कथं यज्ञं प्रवर्तितः ।१२
किं शिवं सुरसामान्यं मत्वाकार्षीरनादरम ।
भ्रष्टबुद्धिर्भवानद्य जातोसि जनकाधम ।१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णुब्रह्मादयो देवा यं संसेव्य महेश्वरम्।
प्राप्ताः स्वपदवीं सर्वे तं न जानासि रे हरम् ।१४

अत्यन्त क्रोध में जैसे दक्ष को भस्म करना चाहती हो अत्यन्त अपमान अनुभव करते हुए उसने कहा ।८। कि जिनकी कृपा से यह सम्पूर्ण चराचर जगत् पवित्र हो जाता है, उन शिवको तुमने क्यों नहीं बुलाया ? ।६। यज्ञ स्वरूप यज्ञ ज्ञाताओं में श्रेष्ठ यज्ञ के अङ्ग, यज्ञ के दक्षिणास्वरूप तथा यज्ञ-कर्ता शङ्कर के विना यज्ञ का सम्पादन कैसा ? ।१०। जिनके स्मरण मात्र से ही सब कुछ पवित्र हो जाता है, उसके न होने पर सब अपवित्र ही रहेगा ।११। सम्पूर्ण द्रव्य, मन्त्र तथा हव्य--कव्य उनके विना निरर्थक हैं तव इस यज्ञ की प्रवृत्ति ही उनके विना किस प्रकार हुई ? ।१२। क्या तुमने शिवजी को सामान्य देवता समझ कर उनका निरादर किया है ? हे पिता ! तुम अधम और बुद्धि भ्रष्ट हो ।१३।विष्णु ब्रह्मा आदि भी जिन शङ्कर की सेवा करके अपनी पदवी को प्राप्त हुए हैं तुम उन महेश्वर को नहीं जानते ? ।१४।

एते कथं समायाता विष्णुब्रह्मादयस्सुराः ।
तव यज्ञे विना शंभुं स्वप्रभुं मुनयस्तथा ।१५
इत्युक्त्वा परमेशानी विष्ण्वादीन्सकलान् प्रति ।
पृथक्पृथगवोचत्सा भर्त्सयन्ती भवात्मिका ।१६
हे विष्णो त्वं महादेवं किं न जानासि तत्वतः ।
सगुणं निर्गुणं चापि श्रुतयो यं वदन्ति ह ।१७
यद्यपि त्वां करं दत्वाबहुवारं महेश्वरः ।
अशिक्षयत्पुरा शाल्वप्रमुखाकृतिभर्हरे ।१८
तदपि ज्ञानमायातं न ते चेतसि दुर्मते ।
भागार्थी दक्ष यज्ञेऽस्मिन् शिवं स्वस्वामिनं विना ।१९
पुरा पञ्चमुखो भूत्वा गर्वितोऽसि सदाशिवम् ।
कृतश्चतुर्मुखस्तेन विस्मृतोसि तदद्भुतम् ।२०
इन्द्र त्वं किं न जानासि महादेवस्य विक्रमम् ।
भस्मीकृतः पविस्तेहि हरेण क्रूरकर्मणा ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह विष्णु तथा ब्रह्मादि देवता अपने स्वामी शङ्कर के विना यहां कैसे आ गये ? ।१५। ब्रह्माजी बोले कि सब देवताओं के प्रति इस प्रकार कहती हुई सती ने क्रोधपूर्ण मुद्रा में देखते हुए कहा ।१६। सती ने कहा- हे विष्णु ! क्या आप तत्व से शिवजी को नहीं जानते श्रुतियां उनको गुण-रहित बताती हैं ।१७। हे विष्णु ! यद्यपि शिवजी ने अनेक बार शाल्व आदि के समय राय देकर तुम्हें शिक्षा दी है ।१८। हे मतिहीन ! फिर भी तुमको ज्ञान नहीं हुआ और अपने स्वामी का भाग न देकर भी अपना भाग स्वीकार कर लिया ।१६। हे ब्रह्मा ! तुम पहिले अहंकार वश शिवजी के प्रति द्रोह किया करते थे । तुम्हारे पाँच मुख थे परन्तु शिवजी ने चार कर डाले । इसे क्या तुम भूल गये ? ।२०। हे इन्द्र ! क्या तुम्हें शिवजी का पराक्रम ज्ञान नहीं है । कठिनकर्मा रुद्र ने तुम्हारे वज्र तक को भस्म कर डाला था ।२१।

हे सुरा किन्न जानीथ महादेवस्य विक्रमम् ।
अत्रे वशिष्ठ मुनयो युष्माभिः किं कृतं त्विह ।२२
भिक्षाटनं च कृतवान् पुरा दारुवने विभुः ।
शप्तो यद्भिक्षुको रुद्रो भवद्भिर्मुनिभिस्तदा ।२३
शप्तेनापि च रुद्रेण यत्कृतं विस्मृतं कथम् ।
तल्लिगेनाखिलं दग्धं भुवनं सचराचरम् ।२४
सर्वे मूढाश्च संजाता विष्णु ब्रह्मादयस्सुराः ।
मुनयोऽन्ये विना शंभुमागता यदिहाध्वरे ।२५
सर्वे वेदाश्च संभूताः सांगाश्शास्त्राणि वाग्यतः ।
योऽसो वेदांतश्शंभुः कैश्चिज्ज्ञातुं न पार्यते ।२६
इत्यनेकविधा वाणीरगदज्जगदम्बिका ।
कोपान्विता सती तत्र हृदयेन विदुयता ।२७

हे देवगण ! क्या तुम शङ्कर के कर्म से अनभिज्ञ हो ? हे अत्रि ! हे वसिष्ठ ! तुमने यह क्या किया ? ।२२। जब वे दारुवन में भीख माँगने गये थे, उस समय तुम ऋषियों नें उन भिखारी के वेश वाले शिवजी को शाप दे दिया था ।२३। उन शापित शिव ने जो किया,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे क्या तुम भूल गये ? उस लिंग से चराचर जगत् भस्म होने लगा था ।२४। इस समय विष्णु आदि सभी देवता मूढ़ हो गये हैं जो शिवजी के विना इस यज्ञ में उपस्थित हुए हैं ।२५। यहाँ अङ्गों सहित वेदशास्त्र भी मौन है, परन्तु वेदान्त से जानने के योग्य भगवान शिव को जानने में समर्थ कोई भी नहीं है ।२६। ब्रह्माजी ने कहा कि सती ने ऐसे वचन क्रोध पूर्वक कहे और वह दुःखी हृदय से क्रोध में खड़ी रही ।२७।

विष्ण्वादयोऽखिला देवा मुनयो ये चे तद्वचः ।
मौनीभूतास्तदाकर्ण्य भयव्याकुलमानसाः ।२८
अथ दक्षस्समाकर्ण्य स्वपुत्र्यास्तदृशं वचः ।
विलोक्य क्रूरदृष्ट्वा तां सती क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ।२९
तव कि बहुनोक्तेन कार्यं नास्तीह सांप्रतम् ।
गच्छ वा तिष्ठ वा भद्रे कस्मात्त्वं हि समागता ।३०
अमंगलस्तु ते भर्ता शिवोऽसौगम्यते बुधैः ।
अकुलीनो वेदबाह्यो भूतप्रेतपिशाचराट् ।३१
तस्मान्नाह्वारितो रुद्रो यज्ञार्थं सुकुवेषभृत् ।
देवर्षिसंसदि मया ज्ञात्वा पुत्रि विपश्चिता ।३२
विधिना प्रेरितेन त्वं दत्तामन्देन पापिना ।
रुद्रा या विदितार्थाय चोद्धताय दुरात्मने ।३३
तस्मात्कोपं परित्यज्य स्वस्था भव शुचिस्मिते ।
यद्यागतासि यज्ञेस्मिन् दायं गृह्णीष्व चात्मना ।३४
दक्षेणोक्तेति सा पुत्री सती त्रैलोक्य-पूजिता ।
निंदायुक्तं स्वपितरं दृष्ट्वासीद्रुषिता भृशम् ।३५

सती के क्रोध पूर्ण वाक्यों को सुनकर विष्णु आदि सभी देवता भय भीत मन से मौन बैठे रहे ।२८। अपनी पुत्री के वैसे वचन सुनकर दक्ष ने उसे क्रूर दृष्टि से देखा और क्रोध पूर्वक कहने लगा ।२९। दक्ष ने कहा—हे भद्रे ! तू अधिक यह सब क्या कह रही है । तेरा यहाँ कोई प्रयोजन नहीं है, तू रह चाहे चली जा । तू यहाँ किस लिये आई है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।३०। सब मेधावीजन जानते हैं कि तुम्हारे पति शंकर अमंगलमय लक्षण वाले अकुलीन, वेद से बहिर्मुख और भूत-पिशाचों के अधिपति हैं।३१। इसीलिए उन कुवेश वाले शिव को यहाँ नहीं बुलाया। मैंने बुद्धिपूर्वक समझ लिया कि देवताओं और ऋषियों की सभा में उनका क्या प्रयोजन हैं? ।३२। मुझ मंद बुद्धि वाले ने ब्रह्माजी के कहने से तुझे उनको दे दिया मैं यह नहीं जानता था कि रुद्र क्रोधी तथा दुरात्मा हैं ।३३। हे पुत्री! इसलिए तू क्रोध को छोड़कर स्वस्थ हो और इस यज्ञ में आ गई तो अपना भाग ग्रहण कर।३४। ब्रह्माजी ने कहा—दक्ष के इस प्रकार कहने पर सती अपने पिता को निन्दायुक्त दृष्टि से देखते हुए अत्यन्तरोष करने लगी।३५।

अचिंतयत्तदा सेति कथं यास्यामि शंकरम्।
शंकरं द्रष्टुकामाहं पृष्टा वक्ष्ये किमुत्तरम्।३६
अथ प्रोवाच पितरं दक्षं तं दुष्टमानसम्।
निश्श्वसंती रुषाविष्टा सा सती त्रिजगत्प्रसूः।३७
यो निंदति महादेवं निंद्यमानं श्रृणोति वा।
तावुभो नरकं यातौ यातौ यावच्चन्द्रदिवाकरौ।३८
तस्मा त्त्यक्ष्याम्यहं देहं प्रवेक्ष्यामिहुताशनम्।
किं जीवितेन मे तात श्रृण्वंत्यानादर प्रभोः।३९
यदि शक्तिस्स्वयं शंभोर्निदकस्य विशेषतः।
निंद्यात प्रसह्य रसनां तदा शुद्ध्येन्न संशयः।४०
यद्यशक्तो जनस्तत्र निरयात्सुपिधाय वै।
कर्णौ धीमान् ततश्शुद्ध्येद्वदतीदं बुधान्वरान्।४१
इत्युभुक्त्वा धर्मनीतिं पश्चात्तापमवापसा।
अस्मरच्छांकरं वाक्यं दूयमानेन चेतसा।४२

सती विचार करने लगी कि मैं शिवजी के पास किस प्रकार पहुँचूँ? इस समय मुझे शिवजी के दर्शन की कामना है, परन्तु जब वे मुझसे यहाँ का हाल पूछेंगे तो उन्हें क्या उत्तर दूँगी? ।३६। तीनों लोकों को उत्पन्न करने वाली सती क्रोध से बारम्बार श्वांस खींचती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई अपने दुष्ट-हृदय पिता दक्ष से कहने लगी ।३७। सती ने कहा--जो शिवजी की निन्दा करते या उनकी निन्दा सुनते हैं वह निश्चय ही नरक में पड़ते हैं ।३८। इसलिए मैं अग्नि में प्रविष्ट होकर देह छोड़ती हूँ। क्योंकि अपने स्वामी की निन्दा सुनकर मैं जीवित नहीं रह सकती ।३९। यदि सामर्थ्य हो तो निन्दा करने वाले की जिह्वा को काट डाले तभी दोष छूटता है, इसमें सन्देह नहीं है ।४०। यदि सामर्थ्य न हो तो अपने कानों पर हाथ रखकर वहाँ से चला जाय, ज्ञानियों का यही कहना है ।४१। ब्रह्माजी ने कहा कि इस प्रकार नीति वचन कहकर सती अत्यन्त दुःखी मन से शिवजी को याद करने लगी ।४२।

ततस्संक्रुद्ध्य सा दक्षं निश्शंक प्राह तानपि ।
सर्वान्विष्णवादिकान्देवान्मुनीनपि सती ध्रुवम् ।४३
तात त्वं निंदकश्शंभोः पश्चात्तापं गमिष्यसि ।
इह भुक्त्वा महादुःखमन्ते यास्यसि यातनाम् ।४४
यस्य लोकेऽप्रियो नास्ति प्रियश्चैव परात्मनः ।
तस्मिन्नवैरेशर्वेस्मिन त्वां विना कः प्रतीपकः ।४५
महद्भिर्निंदा नाश्चर्यं सर्वदाऽसत्सु सेर्ष्यकम् ।
महद्दंघ्रिरजो ध्वस्तंसमस्सु सैव शोभना ।४६
शिवेति द्व्यक्षरं यस्य नृणां नाम गिरेरितम् ।
सकृत्प्रसङ्गात्सकलमघमाशु विहंति तत् ।४७
पवित्रकीर्तितमलं भवान् द्वेष्टि शिवेतरः ।
अलंघ्यशासनं शंभुमहो सर्वेश्वरं खः ।४८
सत्पापदद्मं महतां मनोलिसुनिषेवितम् ।
सर्वार्दिद्रं ब्रह्मरसैः सर्वार्थिभिरथादरात् ।४९

फिर निःशंक भाव से विष्णु आदि देवताओं और मुनियों से क्रोध-पूर्वक कहने लगीं ।४३। सती ने कहा--तुम सब शिव निन्दक अत्यन्त पश्चात्ताप को प्राप्त होंगे । यहां महा दुःख प्राप्त करते हुए अन्त में यमलोक के कष्ट सहोगे ।४४। जिसका विश्व में कोई अप्रिय नहीं,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब ही उनके प्रिय हैं, उन निर्वैर शिवजी से तुम्हारे सिवाय अन्य कौन वैर करेगा ? ।४५। इसमें विस्मय भी क्या है ? असत् व्यक्ति महान पुरुषों की निन्दा करते हैं परन्तु महापुरुषों की चरण-रज से अज्ञान नष्ट कर लेनें में ही शोभा है ।४६। जिसने अपनी वाणी से 'शिव' इन दो अक्षरों का उच्चारण किया, उसके पाप एक वार के उच्चारण से ही नष्ट हो गये ।४७। भगवान् शिव का शासन लंघन के योग्य नहीं है, परन्तु तुम मंगल स्वरूप उन पवित्र प्रभु से द्वेष करते हो ।४८। जिनके पाद-पद्मों में बड़े-बड़े सन्त पुरुषों का मन रमा रहता है, जो ब्रह्मरस के द्वारा सभी कामना करने वालों को उनके अनुसार फल देते हैं ।४९।

यद्वर्षत्यर्थिनश्शीघ्रं लोकस्य शिव आदरात् ।
भवान् द्रुह्यति मुखत्वात्तस्मै चाशेषबन्धवे ।५०
किं वा शिवाख्यमशिवं त्वदन्ये न विदुर्बुधाः ।
ब्रह्माद यस्तं मुनयस्सनकाद्यास्तथापरे ।५१
अवकीर्य जटाभूतैश्श्मशाने स कपालधृक् ।
तन्माल्यभस्म वा ज्ञात्वा प्रीत्यावसदुदारधीः ।५२
ये मूर्द्धभिर्दधति तच्चरणोत्सृष्टमादरात् ।
निर्माल्यं मुनयो देवास्सशिवः परमेश्वरः ।५३
प्रवृत्तं च निवृत्तं च द्विविधं कर्म चोदितम् ।
वेदे विविच्य वृत्तं च तद्विचार्यमनीषिभिः ।५४
विरोधि योगपद्यैककर्तृ के च तथा द्वयम् ।
परब्रह्मणि शंभौ तु कर्मच्छंन्ति न किंचन ।५५
मा वा पदव्यस्म पितर्या अस्मदास्सिदा ।
यज्ञशालासु वो धूम्रवर्त्मभुक्तोज्झिताः परम् ।५६

जो शिवजी अभ्यर्थियों पर शीघ्र ही कामना की दृष्टि करते हैं, उन लोक वन्धु शिवजी से तुम शत्रुता करते हो ।५०। उन शिव को तुम्हारे सिवा कोई अन्य 'अशिव' नहीं जानता, ब्रह्मादि, सनकादि तथा अन्य मुनि क्या उन्हें नहीं जानते ? ।५१। वे भूतगणों के साथ श्मशान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जटा खोलकर कपाल धारण करते हैं। वे उदार बुद्धि वाले प्रेम से मृतक की अस्थियों की माला और भस्म को धारण करते हैं।५२। उनकी चरणरज को आदर सहित सिर पर धारण करने वाले मनुष्य पाप रहित हो जाते हैं। जिनके निर्माल्य की कामना मूर्ति और देवता करते हैं, वह परमेश्वर शिव ही हैं।५३। वेद के अनुसार प्रवृत्ति और निवृत्ति के भेद से दो प्रकार के कर्म हैं, बुद्धिमानों को उन पर विचार करना चाहिए।५४। एक ही कर्त्ता में वे दोनों विरोधी हो जाते हैं परन्तु शिवजी के लिए किसी कर्मादि की इच्छा नहीं है।५५। हे पिता तुम्हारी यज्ञ शाला का धूम्र अपने को छोड़ दे और तुम्हारे पद का व्यय न हो।५६।

नोऽव्यक्त लिंगस्सततमवधूतस्सुसेवितः।
अभिमानमतो न त्वं कुरु तात कुबुद्धिधृक् ।५७
किं बहूक्तेन वचसा दुष्टस्त्वं सर्वथा कुधीः।
त्वदुद्भवेन देहेन न मे किंचित्प्रयोजनम् ।५८
तज्जन्म धिग्यो महतां सर्वथावद्यकृत्खलः।
परित्याज्यो विशेषेण तत्सम्बन्धो विपश्चिता ।५९
गोत्रँ त्वदीयं भगवान् यदाह वृषभध्वजः ।
दाक्षायणीति सहसांह भवामि सुदुर्मनाः ।६०
तस्मात्त्वदङ्गजं देहं कुणपं गर्हितं सदा ।
व्युत्सृज्य नूनमधुना भविष्यामि सुखावहा ।६१
हे सुरा मुनयस्सर्वे यूयं श्रृणुत मद्वचः।
सर्वथानुचितं कर्म युष्माकं दुष्टचेतसाम् ।६२
सर्वे यूयं विमूढाहि शिवनिंदाः कलिप्रियाः।
प्राप्स्यन्ति दण्डं नियतमखिलं च हराद्ध्रुवम् ।६३
दक्षमुक्त्वाध्वरे ताञ्च व्यरमत्सा सती तदा।
अनूद्य चेतसा शम्भुमस्मरत्प्राणवल्लभवम् ।६४

वह व्यक्त लिंग अवधूतों के द्वारा सदा सेवित है, तुम कुबुद्धि से उनके प्रति अभिमान न करो।५७। कुबुद्धिवश तुम महादुष्ट हो गये हो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे द्वारा उत्पन्न इस देह को रखना ठीक नहीं है ।५८। जिस जन्ममें महान् पुरुषों की निन्दा हो उस जन्म को धिक्कार है । बुद्धिमान् व्यक्ति को तुमसे सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए ।५६। तुम्हारे द्वारा उत्पन्न होनेके कारण शिवजी मुझे दाक्षायणी कहते हैं, मुझे इस उच्चारण से अब दुःख होगा ।६०। इसलिए तुम्हारे देह से उत्पन्न हुए गर्हित शरीर को अभी छोड़कर सुखी होऊँगी ।६१। हे देवगण ! हे मुनिगण ! तुम सब मेरे वचनों को सुनो । तुम सब दुष्ट चित्त वाले हो और तुम्हारा यह कर्म सर्वथा निन्दा के योग्य है ।६२। तुम सभी मूर्ख हो गये, तुमने शिव की निन्दा की है, इसलिए भगवान् शंकर द्वारा तुम्हें इसका दण्ड शीघ्र ही प्राप्त होगा ।६३। यह कहकर सती दुःख से व्याकुल हुई अपने प्राणवल्लभ शिवजी का चिंतन करने लगीं ।६४।

यज्ञ स्थल में सती का देह त्याग

मौनीभूता यदा सासीत्सती शङ्कर बल्लभा ।
चरित्रं किमभूत्तत्र विधे तद्वद चादरात् ।१
मौनीभूता सती देवी स्मृत्वा स्वपतिमादरात् ।
क्षितावुदीच्यां सहसा निषसाद प्रशांतधीः ।२
जलमाचम्य विधिवत् संवृता वाससा शुचिः ।
दृङ्नीमील्य पतिं स्मृत्वा योगमार्गं समाविशत् ।३
कृत्वा समानावनिलौ प्राणापानौ सितानना ।
उत्थाप्योदानमथ च यत्नात्सा नाभिचक्रतः ।४
हृदि स्थाप्योरसि धिया स्थितं कंठाद्भुवोस्सती ।
अनिन्दितानयन्मध्यं शङ्करप्रावबल्लभा ।५
एवं स्वदेहं सहसा दक्षकोपाज्जिहासती ।
दग्धे गात्रे वायुशुचिर्धारणं योगमार्गतः ।६
ततस्वभर्तुश्चरण चिंतयन्ती न चापरम् ।
अपश्यत्सा सतीं तत्र योगमार्गनिविष्टधीः ।७

नारदजी ने कहा--हे ब्रह्माजी ! जब सती चुप हो गई, तब क्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ वह आप सादर मेरे प्रति कहें ।१। ब्रह्माजी ने कहा--अपने पति का स्मरण करती हुई सती मौन एवं शान्त होकर भूमिमें उत्तरकी ओर बैठ गई ।२। उसने विधिपूर्वक आचमन किया और नियम में तत्पर होकर शुद्ध वस्त्र पहिन कर नेत्र मूंद लिए तथा शिवजी के स्मरणपूर्वक योगमार्ग में लीन हो गई ।३। उसने प्राण-अपान वायु को समान कर और यत्नपूर्वक उदान को नाभिचक्र से उठाकर ।४। उन्हें हृदय में स्थापित किया और फिर कण्ठ में लाकर भौंह के बीच में प्राण वायु को छोड़ने की इच्छा से सती ने इस प्रकार योग धारण किया और वायु से ही शरीर को भस्म करना प्रारम्भ किया ।५-६। उस समय उसने केवल अपने पति के चरण कमलों का स्मरण किया वह शिवजीका ध्यान करते हुए योग-मार्ग में प्रवृत्त हुई ।७।

हृतकल्मषतद्देहः प्रापतच्च तदग्निना ।
भस्मसादभवत्सद्यो मुनिश्रेष्ठ तदिच्छया ।८
तत्पश्यतां च खे भूमौ नादोऽभूत्सुमहांस्तदा ।
हाहेति सोद्भुतश्चित्रस्सुरदीनां भयावहः ।९
हत प्रिया परा शम्भोर्देवदेवतमस्य हि ।
अहादसून् सती केन सुदुष्टेन प्रकोपिता ।१०
अहो ष्वनाम्त्यं सुमहदस्य दक्षस्य पश्यत् ।
चराचरं प्रजा यस्य यत्पुत्रस्य प्रजापतेः ।११
अहोऽधद्यद्विमनाऽभूत्सा सती देवी मनस्विनी ।
वृषध्वजप्रियाऽभीक्ष्णं मानयोग्या सतां सदा ।१२
सोऽयं दुर्मर्षहृदयो ब्रह्मधृक् स प्रजापतिः ।
महतीमपकीर्तिं हि प्राप्स्यति त्वखिले भवे ।१३
यत्स्वाङ्गजां सुतां शंभुद्विट् न्यषेधत्समुद्यताम् ।
महानरकभोगी स मृतये नोऽपराधतः ।१४

उसका शरीर विकार रहित हो गया और सब ओर से उसमें अग्नि प्रज्वलित हो उठी और उसकी इच्छा से तत्काल ही सम्पूर्ण शरीर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भस्म हो गया यह होते ही पृथिवी और आकाश में बड़ा कोलाहल मचा देवताओं के हाहाकार गूँज उठे सभी उस अद्भुत दृश्य से विस्मित थे। ।९। खेद है कि परम देव शिवजी की प्रिया सती ने अपने प्राण त्याग दिये, इसे किस दुष्ट ने रुष्ट किया था ? ।१०। इस यज्ञ दक्ष की घोर मूर्खता देखो, चराचर प्रजा, जिस प्रजापति की पुत्र रूप है, इसके अज्ञान को तो देखो ।११। देखो, आज सती का यह क्या हुआ ? निश्चय ही वह शिव-प्रिया अपमान के योग्य नहीं थी ।१२। परन्तु, यह प्रजापति घोर अहंकारी और ब्रह्म-द्रोही हो गया, संसार में इस कर्म से घोर अपयश को प्राप्त किया है ।१३। जिसने देह से उत्पन्न हुई पुत्री का शिव-द्रोही के वश तिरस्कार किया, यह इसका घोर अपराध हुआ है, इसे अन्त में महानरक भोगना पड़ेगा ।१४।

वदत्येवं जने सत्या दृष्ट्वाऽसुत्थागमद्भुतम् ।
द्रुतं तत्पार्षदाः क्रोधादुदतिष्ठन्नुदायुधाः ।१५
द्वारि स्थिता गणास्सर्वे रसायुतमिषा रुषा ।
शङ्करस्य प्रभोस्ते वाऽक्रुध्यन्नति महाबलाः ।१६
हाहाकारमकुर्वंस्ते धिक्धिक् इति वादिनः ।
उच्चैस्सर्वे सक्रुद्ध राश्शङ्करस्य गणाधिपाः ।१७
हाहाकारेण महता व्याप्तमासीद्दिगन्तरम् ।
सर्वं प्रापन् भद्रं देवा मुनयोऽन्येपि ते स्थिताः ।१८
गणास्संमन्त्र्य ते सर्वैऽभूवन् क्रुद्धा उदायुधाः ।
कुर्वन्तः प्रलयं वाद्यश त्रैर्व्याप्तं दिगंतरम् ।१९
शस्त्रैरघ्नजागानि केचित्तत्र शुचाकुलाः ।
शिरोमुखानि देवर्षे सुतीक्ष्णैः प्राणनाशिभिः ।२०
इत्थं ते विलयं प्राप्ना दाक्षायण्या समं तदा ।
गणायुते द्वे च तदा तदद्भुतमिवाभवत् ।२१

सती के देह त्याग के पश्चात् सभी इस प्रकार कह रहे थे । इस काण्ड को देखकर शिवगण भी हाथों में आयुध ग्रहण कर उठ खड़े हुए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।१५। यज्ञद्वार में साठ हजार शिवगण उपस्थित थे, वे महाबली थे, उन्हें बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ ।१६। वे सब हाहाकार करते हुए अपने को धिक्कारने लगे तथा क्रोध पूर्वक वे उच्च स्वर से चिल्लाये ।१७। उनके हाहाकार से पृथिवी और आकाश भर उठे। वहाँ उपस्थित सभी देवता और मुनि अत्यन्त भयभीत हुए ।१८। गणों ने परस्पर सलाह कर अस्त्र ग्रहण किये उनके वाद्य तथा अस्त्रों के भीषण शब्द प्रलय का सा दृश्य उपस्थित हो गया ।१९। किसी-किसी ने तो अपने अंग काट डाले और किसी-किसी ने उन तीक्ष्ण शस्त्रों से अपने शिर और मुख नष्ट कर लिए ।२०। इस प्रकार वे सती के साथ स्वयं भी नष्ट हो गये। इस प्रकार बीत हजार गण स्वयं नष्ट हो गए, यह अत्यन्त अद्‌भुत बात हुई ।२१।

गणा नाशाऽवशिष्टा ये शङ्करस्य महात्मनः ।
दक्षं क्रोधितं हन्तु मुदातिष्ठन्नुदायुधाः ।२२
तेषामापततां वेगं निशम्य भगवान भृगुः ।
यज्ञघ्नघ्नेन यजुषा दक्षिणाग्नौ जुहोन्मुने ।२३
हूयमाने च भृगुणा समुत्पेतुर्महासुराः ।
ऋभवोनाम प्रबलवीरास्तत्र सहस्रशः ।२४
तैरलातायुधैस्तत्र प्रमथानां मुनीश्वर ।
अभूद्युद्धं सुविकटं शृण्वतां रोमहर्षणम् ।२५
ऋभुभिस्तैर्महावीरै र्हंऽयमानास्समन्ततः ।
अयत्नयानाः प्रमथा उशद्भिर्ब्रह्म तेजसा ।२६
एवं शिवगणास्ते वै हता विद्राविता द्रुतम् ।
शिवेच्छया महाशक्त्या तदद्भुतमिवाऽभवत् ।२७
तद्दृष्ट्वा ऋषयो देवाश्शक्राद्यास्समरुद्गणाः ।
विश्वेश्विनो लोकपालास्तूष्णी भूतास्तदाऽभवन् ।२८

जो शिवगण शेष रहे उन्होंने दक्षका वध करने के लिए क्रोध पूर्वक आयुध ग्रहण किये ।२२। महर्षि भृगु ने उनका यह विचार देखकर यज्ञ के विघ्न को दूर करने वाले यजुमन्त्रों से दक्षिणाग्नि में आहुति देना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ किया।२३। भृगु की आहुतियों से ऋभु नामक सहस्रों महावीर उस कुण्ड से उत्पन्न हुए।२४। हे मुनीश्वर ! उनके चक्रायुधों से शंकर के हजारों गण युद्ध करने लगे और वहाँ अत्यन्त भयंकर युद्ध होने लगा।२५। ऋभु और महावीरगण परस्पर भिड़ गये और ब्रह्म तेज के धारण प्रयत्न के विना ही शिवगण मृत्यु को प्राप्त होने लगे।२६। शिव की इच्छा रूप महाशक्ति से वह शिवगण मरने लगे, यह बात विचित्र-सी हुई।२७।इसे देखकर इन्द्रादि देवता, मरुद्गण, विश्वेदेवा, अश्विनीकुमार तथा सब लोकपाल मौन बैठे रहे।२८।

केचिद्विष्ण प्रभुं तत्र प्रार्थयन्तस्समन्ततः।
उद्विग्ना मन्त्रयन्तश्च विघ्नाभावं मुहुर्मुहुः।२९
सुविचार्योदर्कफल महोद्विग्नास्सुबुद्धयः।
सुरविष्णवादयोभूवम तन्नशूद्रावणान्मुहुः।३०
एवं भूते तदा यज्ञे विघ्नो जातो दुरात्मनः।
ब्रह्मबँधोश्च दक्षस्य शंकरद्रोहिणो मुने।३१

किसी ने उस समय भगवान् विष्णु से प्रार्थना की किसी ने उद्विग्न होकर विघ्नों के नष्ट होने की प्रार्थना की।२९। आगामी परिणाम को विचारते हुए विष्णु आदि चिन्ता करने लगे और विघ्न को नष्ट न कर सकने के कारण उनमें अत्यन्त उद्विग्नता हुई।३०। इस प्रकार शिवद्रोही दुरात्मा दक्ष के यज्ञ में विघ्न उपस्थित हुआ।३१।

देव वाणी और दक्ष की भर्त्सना और भविष्य-कथन

एतस्मिन्नन्तरे तत्र नभोवाणी मुनीश्वर।
अवोचच्छृण्वतां दक्ष सुरादीनां यथार्थतः।१
रे रे दक्ष दुराचार दम्भाचारपरायण।
किं कृतं ते महामूढ कर्म चानर्थकारकम्।२
न कृत शैवराजस्य दधीचेर्वचनस्य हि।
प्रमाणं तत्कृते मूढ सर्वानन्दकरं शुभम्।३
निर्गतस्ते मखाद्विप्रः शापं दत्वा सुदुस्सहम्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततोऽपि बुद्धं किंचिन्नो त्वया मूढेन चेतसि ।४
ततः कृतः कथं नो वै स्वपुत्र्यास्त्वादरः परः ।
समागतायास्सत्याश्च मंगलाया गृहं स्वतः ।५
सतीभवौ नार्चितौ हि किमिदं ज्ञानदुर्बलः ।
ब्रह्मपुत्र इति वृथा गर्वितोऽसि विमोहितः ।६
सा सत्येव सदाराध्या सर्वा पापफलप्रदा ।
त्रिलोकमाता कल्याणी शंकरार्द्धांगभागिनी ।७

ब्रह्माजी ने कहा-हे मुनीश्वर!दक्ष और देवता आदि सभीके सन्मुख उसी समय यहाँ आकाशवाणी हुई- ।१। हे दुराचारी दक्ष ! तूने दम्भ में भर कर यह कैसा अनर्थं कर्म कर डाला है ? ।२। अरे मूर्खं तूने शैव-राज दधीचि के सर्वानन्दायक वचनों पर भी ध्यान नहीं दिया ।३। वह ब्राह्मण तुझे घोर शाप देकर यज्ञ से उठकर चला गया तो भी तू अपने चित्त में कुछ भी न समझ सका ।४। फिर तूने घर पर कन्या का भी तिरस्कार किया, वह मंगलमयी सती स्वयं तेरे घर पर उपस्थित हुई थी ।५। हे मूर्खं ! तूने शिवा और शिव का अनादर किया तुझे ब्रह्मा का पुत्र होने का घोर अहंकार हैं ।६। तुझे सर्वपुण्यवती सती की आराधना करनी चाहिए थी, वह त्रैलोक्य माता शिवजी के अर्द्धांग में सदा निवास करती थीं ।७।

सा सत्येवार्चिता नित्यं सर्वसौभाग्य दायिनी ।
माहेश्वरी स्वभक्तानां सर्वमंगलदायिनी ।८
सा सत्येवार्चिता नित्यं संसारभयनाशिनी ।
मनोभीष्टप्रदा देवी सर्वोपद्रवकारिणी ।९
सा सत्येवार्चिता नित्यं कीर्तिसंपत्प्रदायिनी ।
परमा परमेशानी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।१०
सा सत्येव जगद्धात्री जगद्रक्षणकारिणीं ।
अनादिशक्तिः कल्पान्ते जगत्संहारकारिणी ।११
सा सत्येव जगन्मा विष्णुमाता विलासिनी ।
ब्रह्मेन्द्रवह्न्यर्कदेवादि जननी स्मृता ।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा सत्येव तं तपोधर्मदानादिफलदायिनी ।
शंभुशक्तिर्महादेवी दुष्टहंत्री परात्परा ।१३
हृग्विधा साती देवी यस्य पत्नी सादा प्रिया ।
तस्मै भागो न दत्तस्ते मढेन कुविचारिणा ।१४

वह माहेश्वरी अपने भक्तों को सदा मंगलदायिनी है, तुझे उस सौभाग्यदात्री सती की सेवा करनी चाहिए थी ।८। नित्य पूजन करने से जगत् के भय को दूर करने वाली, कामना को देने वाली और सभी उपद्रवों को नष्ट करने वाली थी ।९। नित्य पूजन से वह कीर्ति और वैभव के देने वाली तथा भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी परमेशानी थी ।१०। विश्व-माता सती संसार की रक्षा करने वाली तथा कल्प के अन्त में संहार करने वाली अनादि शक्ति है ।११। सती ही संसार की माता, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, चन्द्रमा तथा सूर्यादि सभी की जननी हैं ।१२। वही तप दान, का धर्म फल देने वाली, शिवजी की शक्ति महादेवी, दुष्टों का संहार करने वाली तथा परे से भी परे है ।१३। इस प्रकार वह सती जिसकी प्राणवल्लभा थी उसे तूने यज्ञ भाग भी नहीं दिया ।१४।

शंभुर्हि परमेशानस्सार्वस्वामी परात्परः ।
विष्णुब्रह्मादिसंसेव्यः सर्वकल्याणकारकः ।१५
तप्यते हि तपः सिद्धै रेतद्दर्शनकांक्षिभिः ।
युज्यते योगिभिर्योगैतद्दर्शनकांक्षिभिः ।१६
अनन्तधनधान्यानां यागादीनां तथैव च ।
दर्शनं शंकरस्यैव महत्फलमुदाहृतम ।१७
शिव एव जग्द्धाता सर्वविद्यापतिः प्रभुः ।
आदिविद्यावरस्वामी सर्वमङ्गलमङ्गलः ।१८
तच्छक्तेर्न कृतो यस्मात्सत्कारोद्य त्वया खल ।
अत एवाऽध्वरस्यास्य विनाशो हि भविष्यति ।१९
अमङ्गलं भवत्येव पूजार्हाणामपूजया ।२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्रेणापि शिरसां शेषो यत्पादजं रज: ।
वहत्यहरहः प्रीत्या तस्य शक्ति: शिवासती ।२१

भगवान् शंकर ही सबके अधीश्वर एव ब्रह्मा विष्णु आदि से सेवित हैं, वही सवका कल्याण करने वाले हैं ।१५। इनके दर्शनों की कामना से ही सिद्धजन तपस्या करते हैं और योगीजन योगाभ्यासमें लीन रहतेहैं ।।१६। अनन्त धन, धान्य तथा यज्ञादि का जो फल होता है । वह फल भगवान् शंकर के दर्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है ।१७। वही विश्व के धाता तथा सभी विद्याओं के अधीश्वर हैं, वही आदि विद्या के अधिपति तथा मंगलों के भी मंगलकर्त्ता प ।१८। तूने मूर्खतायश उनकी शक्ति का सत्कार न कर निरादर किया इस कारण तेरा यज्ञनष्ट हो जायगा।१९। जहाँ पूजन के योग्य पुरुषों का पूजन नहीं होता । वहाँ अमंगल होना स्वाभाविक है ।२०। जिसकी चरण-रज को शेष जी अपने हजार शिर से प्रीति-सहित धारण करते हैं, यह वहीं शिवा है ।२१।

यत्पादद्मनिशं ध्यात्वा संपूज्य सादरम् ।
विष्णुर्विष्णुत्वमापन्नस्तस्य शंभो: प्रिया सती ।२२
यत्पादद्मनिशं ध्यात्वा संपूज्य सादरम् ।
ब्रह्मा ब्रह्मत्वमापन्नस्तस्य शंभो प्रिया: सती ।२३
यत्पादपद्ममनिशं ध्यात्वा संपूज्य सादरम् ।
इन्द्रादयौ लोकपाला: प्रापुस्स्वं स्वं परं पदम् ।२४
जगत्पिता शिवश्शक्तिजगन्माता च सा सती ।
सत्कृतौ न त्वया मूढ कथं श्रेयो भविष्यति ।२५
दौर्भाग्यं त्वयि संक्रांतास्त्वयि चापदः ।
यौ चानाराधितौ भक्त्या भवानीशंकरौ च तौ ।२६
अनभ्यर्च्यं शिवं शंभु कल्याणं प्राप्नुयामिति ।
किमस्ति गर्वो दुर्वारस्स गर्वोद्य विनश्यति ।२७
सर्वेशविमुखो भूत्वा देवेष्वेतेषु कस्तव ।
करिष्यति सहायं ते न तं पश्यामि सर्वथा ।२८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसके चरणों का निरन्तर ध्यान करने से विष्णु को विष्णुत्व की प्राप्ति हुई है, यह वही शिवा है।२२। जिसके चरणों का ध्यान और पूजन करने से ब्रह्मा को ब्रह्मत्व की प्राप्त हुई है, यह वही शिवा है।२३। जिनके चरणों के ध्यान और पूजन से इन्द्र आदि लोकपालों को उनके पद की प्राप्ति हुई, यह वही शिवा है।२४। यह शिवाही जगत् की माता और शिव ही जगत्पिता हैं, अरे मूर्ख तूने उनका निरादर किया है तो तेरा कल्याण किस प्रकार सम्भव है ? ।२५। तेरा दुर्भाग्य उपस्थित हो गया जो तूने भक्तिपूवक उस भवानी की और शिव की आराधना यहाँ की ।२६। शिव के पूजन बिना ही मैं अपना मंगल कर लूँगा, तेरा यह मिथ्या गर्व आज खण्डित हो जायगा ।२७। सर्वेश्वर शिव से विरोध लेकर कौन-सा देवता तेरी सहायता करेगा ? मैं तो ऐसा कोई भी नहीं देखता ।२८।

यदि देवा: करिष्यन्ति साहाय्यमधुना तव ।
तदा नाशं समाप्स्यन्ति शलभा इव वह्निना ।२९
ज्वलत्वद्य मुखं ते वं यज्ञध्वंसो भवत्वति ।
सहायास्तव यावन्तस्ते ज्वलन्त्वद्य सत्वरम् ।३०
अमराणां च सर्वेषां शपथोऽमङ्गलाय ते ।
करिष्यन्त्यद्य सापाय्यं यदेतस्य दुरात्मन: ।३१
निर्गच्छन्त्वमरास्स्वोकमेतदध्वरमंडपात् ।
अन्यथा भवतां नाशो भविष्यन्त्यद्य सर्वथा ।३२
निर्गच्छन्त्वपरे सर्वे मुनिनागादयो मखात् ।
अन्यथा भवतां नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा ।३३
निर्गच्छ त्वं हरे शीघ्रमेतदध्वरमंडपात् ।
अन्यथा भवतो नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा ।३४
निर्गच्छ त्वं विधे शीघ्र मेतध्वरमंडपात् ।
अन्यथा भवतो नाशो भविष्यत्यद्य सर्वथा ।३५
इत्युक्त्वाध्वरशालायामखिलायां सुसंस्थितान् ।
व्यरमत्सा नभोवाणी सर्वकल्याणकारिण: ।३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

तच्छ्रुत्वा व्योमवचनं सर्वे हर्यादयस्सुराः ।
अकार्षुर्विस्मयं तात मनुयश्च तथा परे ।३७

इस समय जो देवता तेरी सहायता करेंगे वे भी इस प्रकार नष्ट हो जायेंगे, जैसे अग्नि में शलभ हो जाता है ।२९। तेरा मुख भस्म होजाय, तेरे सभी सहायक भस्म हो जाँय और यज्ञभी विध्वंस होजाय।३०।सभी देवताओं को अमङ्गलार्थं शपथ है यदि कोई इस दुरात्मा की सहायता करे ।३१। सब देवता इस मंडप से शीघ्र ही बाहर हो जाँय अन्यथा उनका सर्वथा नाश हो जायगा ।३२।मुनिगण और नाग आदि भी शीघ्र ही यहाँ से चले जाँय, अन्यथा वे नष्ट हो जायेंगे ।३३। हे विष्णो ! तुम भी इस मण्डप से शीघ्र चले जाओ, अन्यथा तुम्हारा भी नाश हो जायगा ।३४। हे ब्रह्मा ! तुम भी इस स्थान से शीघ्र ही बाहर जाओ, अन्यथा तुम भी नष्ट हो जाओगे ।३५। ब्रह्माजी ने कहा इस प्रकार यज्ञ शालामें सबकी उपस्थिति में यह आकाशवाणी सबके कल्याणार्थ उपदेश कर मौन हो गई ।३६। विष्णु आदि सभी देवता और मुनिगण आकाश-वाणी को सुनकर अत्यन्त आश्चर्य मानने लगे ।३७।

सती मरण सुनकर शिवजी का वीरभद्र को प्रकट करना

श्रुत्वा व्योमगिरं दक्ष किमकार्षीत्तदाऽवुधः ।
अन्ये च कृतवन्तः किं ततश्च किमभूद्वद ।१
पराजिता शिवगणा भृगुमन्त्रबलेन वै ।
किमकार्षुः कुत्र गतास्तत्त्वं वद महामते ।२
श्रुत्वा व्योमगिरं सर्वे विस्मिताश्च सुरादयः ।
नावोचत्किंचिदपि ते तिष्ठन्मस्तु विमोहिताः ।३
पलायमाना ये वीरा भृगुमन्त्रबलेन ते ।
अवशिष्टाशिवगणाश्शिवं शरणामाययुः ।४
सर्वं निवेदयामास रुद्रायामिततेजसे ।
चरित्रं च यथाभूतं सुप्रणम्यादराच्चते ।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवदेव महादेव पाहि नश्शरणागतान् ।
संशृण्वादरतो नाथ सतीवार्ता च विस्तरात् ।६
गर्वितेन महेशानदक्षेण सुदुरात्मना ।
अवमानः कृतस्सत्याऽनादरो निर्जरैस्तथा ।७

नारदजी ने पूछा--आकाशवाणी को सुनकर उस अदूरदर्शी दक्ष ने तथा वहाँ उपस्थित अन्य व्यक्तियों ने क्या किया, यह मेरे प्रति कहिये ।१। जब शिवगण भृगु के मन्त्र बल से परास्त हो गये तब उन्होंने क्या किया और वे कहाँ गये ? इस सब वृत्तान्त को मुझसे कहिये ।२। ब्रह्मा जी ने कहा-आकाशवाणी सुनकर सभी देवता आश्चर्य चकित होकर मौन का अवलम्बन कर बैठे रहे ।३। उधर भृगुके मन्त्र से परास्त होकर भागे हुए शिवगण शिवजी की शरण में पहुँचे ।४। और उनके समक्ष उपस्थित होकर प्रणाम किया तथा आदर सहित सम्पूर्ण वृत्तान्त उन्हें सुनाया ।५। गणों ने कहा--हे देव ! हम शरणागतों की रक्षा करिये । प्रभो ! आप विस्तारपूर्वक सती की बात सुनो।६। हे प्रभो! उस दुरात्मा दक्षने अत्यन्त अहंकार पूर्वक देवताओं सहित सतीका तिरस्कार किया।७

तुभ्यं भागमदान्नो स देवेभ्यश्च प्रदत्तवान् ।
दुर्वचांस्यवदत्प्रोच्चैर्दुष्टो दक्षस्तु गर्वितः ।८
ततो दृष्ट्वा न ते भागं यज्ञेऽकुप्यत्सती प्रभो ।
विनिंद्य बहुशस्तातमधाक्षीत्स्वतनुं तदा ।९
गणास्त्वयुतसंख्याका मृतास्तत्र विलज्जया ।
स्वांगान्याच्छिद्यशस्त्रैश्च क्रुध्याम ह्यपरे वयम् ।१०
तद्यज्ञं ध्वंसितुं वेगात्सन्नद्धास्तु भयावहाः ।
तिरस्कृता हि भृगुणा स्वप्रभावाद्विरोधिना ।११
ते वयं शरणं प्राप्तव विश्वंभर प्रभो ।
निर्दयान् कुरु नस्तस्माद्दयमानभयाद्भयात् ।१२
अपमानं विशेषेण तस्मिन् यज्ञे महाप्रभो ।
दक्षाद्यास्तेऽखिला दुष्टा अकुर्वन् गर्विता अति ।१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्तं निखिलं वृत्तं स्वेषा सत्याश्च नारद ।
तेषां च मूढबुद्धीनां यथेच्छसि तथा कुरु ।१४

आपको यज्ञभाग न देकर अन्य सभी देवताओं को दिया और अहङ्कार पूर्वक बहुत से दुर्वचन दक्ष ने कहे ।८। हे नाथ! आपका भाग यज्ञ में न देखकर सती को अत्यन्त क्रोध हुआ और उन्होंने अपने पिता की अनेक प्रकार से भर्त्सना करके अपने देह का त्याग कर दिया।९। लज्जा के कारण हजारों शिवगणों ने वहाँ अपने अङ्गों को काटकर प्राण त्याग दिये, परन्तु जब हम उसे मारने और यज्ञ विध्वंस करने लगे,तब आपके विरोधी भृगु ने मन्त्र बल से हमको रोक दिया ।१०-११। हे प्रभो ! हम भयभीत होकर आपके शरण में आये हैं, हमारा निर्दयता पूर्वक पराभव हुआ है, हमको भय-रहित कीजिए, हे नाथ ! हम पर दया करिये ।१२ हे शंकर हमारा उस यज्ञ में घोर अपमान हुआ है, उन दुष्ट दक्ष आदि ने हमारा पूर्ण तिरस्कार किया है ।१३। हमने सती की और अपनी सम्पूर्ण वार्ता आपसे निवेदन कर दी, अब आप जैसा उचित समझें, वैसा ही करें ।१४।

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य स्वगणानां वचः प्रभुः ।
सस्मार नारदं सर्वं ज्ञातुं तच्चरितं लघु ।१५
आगतस्त्वं द्रुतं तत्र देवर्षे दिव्यदर्शन ।
प्रणम्य शंकरं भक्त्या सांजलिस्तत्र तस्थवान् ।१६
त्वां प्रशस्याथ स्वामी सत्यां वार्त्तां च पृष्टवान् ।
दक्षयज्ञगताया वै परं च चरितं तथा ।१७
पृष्ठेन शंभुना तात त्वयाश्वेव शिवात्मना ।
तत्सर्वं कथितं वृत्तं जातं दक्षाध्वरे हि यत् ।१८
तदाकर्ण्येश्वरो वाक्यं मुने त्वन्मुखोदितम् ।
चुकोपातिद्रुतं रुद्रो महारौद्र पराक्रमः ।१९
उत्पाट्यैकां जटां रुद्रो लोकसंहारकारकः ।
आस्फालयामास रुषा पर्वतस्य तदोपरि ।२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोदनाच्च द्विधा भूता सा जटा चा मुने प्रभोः ।
संबभूव महाराबो महाप्रलयभीषणः ।२१

ब्रह्माजी ने कहा—इस प्रकार अपने गणों की बात सुनकर उस चरित्र को शीघ्र जान लेने की इच्छा से भगवान् शंकर ने नारदजी को याद किया। ।१५। तब, हे दिव्य दर्शन नारदजी ! तुम तुरन्त ही वहाँ पहुँचे और शिवजीको भक्तिपूर्वक प्रणाम कर हाथ जोड़े।१६। उस समय शिव ने तुम्हारी प्रशंसा करके सती का वृत्तान्त तथा दक्ष-यज्ञ में जाने का सम्पूर्ण समाचार कहने को कहा।१७। शिवजी द्वारा ऐसा प्रश्न करने पर वहाँ जो कुछ घटना घटी थी, वह सब तुमने उनको सुनाई ।१८। तुम्हारे मुख से सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर शिवजी अत्यन्त क्रोधित होकर महारौद्र रूप हो गये ।१९। लोक संहारक रुद्र ने अपनी एक जटा उखाड़ क्रोधपूर्वक पर्वत पर दे मारी ।२०। जटा के मारते ही उसके दो खण्ड हो गये और उससे महा प्रलय के समान भयंकर शब्द हुआ ।२१।

तज्जटायास्सपद्भूतो वीरभद्रो महाबलः ।
पूर्वभागेन देवर्षे महाभीमो गणाग्रणीः ।२२
स भूमिं विश्वतो वृत्यात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ।
प्रलयानलसङ्काशः प्रोन्नतो दोस्सहस्रवान् ।२३
कोपनिःश्वास स्तत्र महारुद्रस्य चेशितुः ।
जातं ज्वराणां शतकं संनिपातास्त्रयोदश ।२४
महाकाली समुत्पन्ना तज्जटापरमागतः ।
महाभयंकरा तात भूतकोटिभिरावृता ।२५
सर्वं मूर्त्तिधराः क्रूराः स्वरालोकभयंकराः ।
स्वतेजसा प्रज्वलन्तो दहन्त इव सर्वतः ।२६
अथ वीरो वीरभद्रः प्रणम्य परमेश्वरम् ।
कृताञ्जलिपुटः प्राह वाक्यविशारदः ।२७
महारुद्र महारौद्र सौमसूर्याग्निलोचन ।
किं कर्तव्यं मया कार्यं शीघ्रमाज्ञापय प्रभो ।२८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस जटा से महाबली वीरभद्र प्रकट हुआ । जटा के पूर्व भाग से उत्पन्न यह वीर वीरों में अग्रणी तथा अत्यन्त भयंकर था ।२२। इसने सम्पूर्ण पृथिवीको व्याप्तकर लिया तथा वह दश अंगुल परिमाण स्थान में स्थित था । वह प्रलय की अग्नि के समान तेजस्वी था और उसके दो हजार भुजाएं थी ।२३। महारुद्र के क्रोध से उस समय सौ ज्वर और तेरह प्रकार के सन्निपात उत्पन्न हुए ।२४। जटा के दूसरे भाग से महाकाली उत्पन्न हुई वह महा भयंकर और करोड़ भूतों से घिरी हुई थीं ।२५। यह सभी महा भयंकर क्रूर स्वरूप वाले थे, वे अपने तेज से प्रज्वलित हुए सब दिशाओं को दग्ध करते हुए से प्रतीत होते थे ।२६। उस समय वह वीरभद्र शिवजी को प्रणाम कर हाथ जोड़ता हुआ इस प्रकार कहने लगा ।२७। वीरभद्र ने कहा—हे महारुद्र! हे सोम, सूर्य और अग्नि जैसे नेत्र वाले ! मुझे क्या कार्य करना है, इसकी शीघ्र ही आज्ञा दीजिए ।२८।

शोषणीयाः किमीशान क्षणार्द्धं नैव सिंधवः ।
पेषणीयाः किमीशान क्षणार्द्धं नैव पर्वताः ।२९
क्षणेन भस्मसात्कुर्य्यां ब्रह्मांडमुत किं हर ।
क्षणेन भस्मसात्कुर्यांम्सुरान्वा किं मुनीश्वरान् ।३०
भ्याश्वासः सर्वलोकानां किमु कार्यो हि शंकर ।
कर्तव्यं किमुतेशान सर्वप्राणविहिंसनम् ।३१
ममाशक्यं न कुत्रापि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।
पराक्रमेण मत्तुल्यो न भूतो न भविष्यति ।३२
यत्र यत्कार्यमुद्दिश्य प्रेषयिष्यसि मां प्रभो ।
तत्कार्यं साधयाम्येव सत्वरं त्वत्प्रसादतः ।३३
क्षुद्रास्तरन्ति लोकाब्धि शासनाच्छंकरस्य ते ।
हरातोहं न किंततुं महापत्सागरं क्षमः ।३४
त्वत्प्रेषिततृणेनापि महत्कार्यमयत्नतः ।
क्षणेन शक्यते कर्तुं शंकरात्र न संशयः ।३५

हे ईशान ! आज्ञा हो तो क्षणमात्र म समुद्र का शोषण कर डालूं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा क्षणमात्र में ही पर्वतों को चूर्ण कर डालूँ ।२९। हे शंकर ! क्षण मात्र में ब्रह्माण्ड को भस्म कर दूँगा देवताओं और मुनीश्वरों का दग्ध कर डालूँ।३०। सब लोकों को अस्त व्यस्त करदूं । अथवा सब प्राणियों को ही नष्ट कर डालूँ।३१। आपके प्रसाद से मैं सब कुछ करने में समर्थ हूँ क्योंकि मेरे समान पराक्रमी न कोई हुआ न होगा ।३२। हे नाथ ! आप जिस-जिस कार्यके लिए जहाँ-जहाँ मुझे भेजेंगे, मैं वहीं-वहीं जाकर उस-उस कार्य को करूँगा ।३३। हे शंकर ! आपके शासन से क्षुद्र प्राणी भवसागर से तर जाते हैं तो क्या मैं आपकी कृपा से महा विपत्ति के सागर से तरने में अशक्य हूँ ।३४। आपकी कृपा से तिनका भी महान् कार्य करने में समर्थ होता है और क्षणभर में कर सकता है,इसमें संशय नहीं है ।३५।

लीलामात्रेण ते शंभो कार्यं यद्यपि सिद्ध्यति ।
तथाप्यहं प्रेषणीयो तवैवानुग्रहो ह्ययम् ।३६
शक्तिरेतादृशी शंभो ममापि त्वदनुग्रहात् ।
विनाशक्तिर्न कस्यापि शंकर त्वदनुग्रहात् ।३७
त्वदाज्ञया विना कोऽपि तृणादीनपि वस्तुतः ।
नैव चालयितुं शक्तसः सत्यमेवन्न संशयः ।३८
शंभो नियम्यास्त्यास्सर्वेपि देवाद्यास्ते महेश्वर ।
तथैवाहं नियम्यस्ते नियन्तुस्सर्वदेहिनाम् ।३९
प्रणतोस्मि महादेव भूयोपि प्रणतीस्म्यहम् ।
प्रेषय स्वेष्टसिद्ध्यर्थं मामद्यहर सत्वरम् ।४०
स्पन्दोऽपि जायते शंभो सव्याङ्गानां मुहुर्मुहुः ।
भविष्यत्यद्य विजयो मामतः प्रेषय प्रभो ।४१
हर्षोत्साहविशेषोपि जायते मम कश्चन ।
शंभो त्वत्पादकमले संसक्तञ्च मनो मम ।४२

हे प्रभो ! यद्यपि आपकी लीला से ही सब कार्य पूर्ण हो जाते हैं, फिर भी आप कृपा करके मुझे कार्य के लिए भेजिए ।३६। हे नाथ ! आपके अनुग्रह से मुझ में, जो शक्ति है वह आपकी कृपा के अभाव में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी सम्भव नहीं है।३७।आपकी आज्ञाके बिना कोई तिनकेको भी चलायमान नहीं कर सकता, यह मैं सत्य ही कह रहा हूँ।३८। हे शिव !जैसे सब देवता आपके नियम में स्थित हैं, वैसे ही मैं भी आपके नियम में पूर्णतया स्थित हूँ।३९। हे शंकर मैं आपके बारम्बार प्रणाम करता हूँ आप अपनी, इच्छा पूर्ति के लिए मुझे अवश्य भेजिये।४०। हे प्रभो ! मेरे दक्षिण अङ्ग निरन्तर फड़क रहे हैं, आप मुझे जहाँ कहीं भेजेंगे, वहीं विजय होना निश्चित है।४१। मेरा मन आपके पद पद्मों में है और मुझे एक विशेष प्रकार का उत्साह तथा हर्ष हो रहा है।४२।

भविष्यति प्रतितदं प्रभसंतानसंततिः।४३
तस्यैव विजयो नित्यं नित्यैव शुभमन्वहम्।
यस्य शंभो दृढा भक्तिस्त्वयि शोभनसंश्रये।४४
इत्युक्तं तद्वच श्रुत्वा सन्तुष्टो मङ्गलापतिः।
वीरभद्रजयेति त्वं प्रोक्ताशीः प्राह तं पुनः।४५
शृणु मद्वचनं तात वीरभद्र सुचेतसा।
करणीयं प्रयत्नेन तद्द्रुतं मे प्रतोषकम्।४६
याग कर्तुं समुद्युक्तो दक्षो विधिसुतः खलः।
मद्विरोधी विशेषेण महागर्वोऽबुधोऽधुका।४७
तन्मखं भस्मसात्कृत्वा सयागपरिवारकम्।
पुनरायाहि मत्स्थानं सत्वर गणसत्तम।४८
सुरा भवन्तु गन्धर्वा यक्षा वान्ये न केचन।
तानप्यद्यैव सहसा भस्मसात्कुरु सात्वरम्।४९

अच्छी सन्तान की सन्तति भी प्रत्येक पद में अच्छी ही होती है।४३। आप सुन्दर आश्रय वाले शंकर के चरणों में जिसकी भक्ति हो, उसी की नित्य विजय तथा सब प्रकार मंगल होओ।४४। ब्रह्माजी ने कहा--भगवान् शंकर उसके वचनों से सन्तुष्ट हो गये और उन्होंने वीर भद्र ! तेरी विजय हो। इस प्रकार उसे आशीर्वाद दिया।४५। शिवजी बोले-हे वीरभद्र ! श्रेष्ठ मनसे मेरी बात सुनो और मेरे सन्तोष के लिए मेरा आदेश पालन करो।४६। वह दुष्ट ब्रह्मपुत्र दक्ष यज्ञ कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है, वह मेरा द्रोही, मूर्ख तथा घोर अहंकारी है ।४७। सपरिवार उसका यज्ञ नष्ट करके तुम शीघ्र ही मेरे पास लौट आओ ।४८। वहाँ देवता, गन्धर्व जो कोई भी उपस्थित हों, उन सभी को भस्म कर डालो ।४६।

तत्रास्तु विष्णुर्ब्रह्मा वा शचीशो वा यमोपिवा ।
अपि चाद्यैव तान्सर्वान्पातयस्व प्रयत्नतः ।५०
सुरा भवन्तु गन्धर्वा यक्षा वान्ये च केचन ।
तानप्यद्यैव सहसा भस्मसात्वरम् ।५१
दधीचिकृतमुल्लंघ्य शपथं मयि तत्रये ।
तिष्ठन्ति ते प्रयत्नेन ज्वालनीयास्त्वया ध्रुवम् ।५२
प्रमथाश्चागमिष्यन्ति यदि विष्ण्वादयो भ्रमात् ।
नानाकर्षणमन्त्रेण ज्वालयानीय सत्वरम् ।५३
ये तत्रोल्लंघ्य शपथं मदीयं गर्विताः स्थिताः ।
ते हि मद्द्रोहिणोऽतस्तान् ज्वालयानमालया ।५४
सपत्नीकान्ससारांश्च दक्षयागस्थलस्थितान् ।
प्रज्वाल्य भस्मसात्कृत्वा पुनरायाहि सत्वरम् ।५५
तत्र त्वयि गते देवा विश्वाद्या अपि सादरम् ।
स्तोष्यन्ति त्वां तदाप्याशु ज्वालया ज्वालयैव तान् ।५६

विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम जो कोई वहाँ मिले, उसी को नष्टकर दो ।५०। देव, गन्धर्व, यक्ष जो कोई हो उसे दग्ध करो ।५१। दधीचि की शपथ का उल्लंघन कर जो कोई स्थित रहे उन सभी को भस्म कर दो ।५२। यदि विष्णु भी उनके साथ कोई भ्रमपूर्ण कार्य करें तो अनेक प्रकार के आकर्षण मन्त्रों द्वारा उन्हें जला दो ।५३। उस ऋषि की शपथ का उल्लंघन करके वहाँ ठहरने वाले सभी मेरे द्रोही हैं, उन्हें अग्नि लपटों से भस्म कर दो ।५४। जो भी स्त्री धन आदि के सहित दक्ष यज्ञ में स्थित हों, उन सभीको भस्म करके मेरे पास शीघ्र लौट आओ ।५५। तुम्हारे वहाँ पहुँचने पर यदि विश्वेदेवा आदि देवता तुम्हारी स्तुति करें तो भी उन्हें मत छोड़ना, भस्म कर देना ।५६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवानपि कृतद्रोहान् ज्वालमालासमाकुलैः ।
ज्वालस ज्वलनेश्शीघ्रमाध्यायाध्यायपालकम् ।५७
दक्षादीन्सकलांस्तत्र सपत्नीकान्सबांधवान् ।
प्रज्वाल्य वोर दक्षं नु सलिलं शीतलं पिव ।५८
इत्युक्तो रोषताम्राक्षो वेदमर्यादपालकः ।
विरराम महावीरं कालारिस्सकलेश्वरः ।५९

जो देवता हमारे द्रोही हैं, उनको शीघ्रही अग्नि की लपटों से भस्म कर देना । उनके मन्त्र पालक होने का भी ध्यान न करना।५७।सपत्नीक गांधर्वादि सहित दक्ष आदिको भस्म करके फिर नील धारा का जलपान करना ।५८। ब्रह्माजी ने कहा कि वेद मर्यादा का पालन करने वाले भगवान् शंकर क्रोध से रक्तवर्ण युक्त नेत्र वाले तथा काल के भी शत्रु वीरभद्र से ऐसा कहकर मौन हो गये ।५९।

वीरभद्र का सेना सहित गमन

इत्युक्तं श्रीमहेशस्य श्रुत्वा वचनमादरात् ।
वीरभद्रोतितुष्टः प्रणनाम महेश्वरम् ।१
शासनं शिरसा धृत्वा देवदेवस्य शूलिनः ।
प्रचचाल ततः शीघ्रं वीरभद्रो मखं प्रति ।२
शिवोऽथ प्रेषयामास शोभार्थं कोटिशो गणान् ।
तेन सार्द्धं महावीरान्प्रलयानलसन्निभान् ।३
अथ ते वीरभद्रस्य पुरतः प्रबलागणाः ।
पश्चादपि ययुर्वीराः कुतूहलकरा गणाः ।४
वीरभद्रसमेता ये गणाश्शतहस्रशः ।
पार्षदा कालकालस्य सर्वेरुद्रस्वरूपिणः ।५
गणैस्समेतः किलतैर्महात्मा स वीरभद्रो हरवेषभूषणः ।
सहस्रबाहुर्भुजगाधिपाढयो ययौ रथस्य प्रबलोतिभीकरः ।६
नल्वानं च सहस्रे द्वे प्रमाणं स्यन्दनस्यहि ।
अयुतेनैवसिंहानां वाहनानां प्रयत्नतः ।७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्माजी ने कहा-शिवजी के उक्त वचनों को आदरपूर्वक सुनकर अत्यन्त सन्तोष सहित वीरभद्र ने उन्हें प्रणाम किया ।१। देवदेव महादेव के शासन को शीश चढ़ाकर वीरभद्र तुरन्त ही यज्ञ स्थान को चल पड़ा ।२। शिव ने भी शोभा के लिए करोड़ों गणों को उसके साथ भेजा जो प्रलयाग्नि के समान वीरभद्र के पीछे-पीछे चले ।३। उस समय वे महा-वली गण कुछ वीरभद्र के आगे और कुल पीछे हो लिए और मार्ग को अनुकूल करने लगे ।४। वीर भद्र के साथ जो गण चले वे सभी काल के भी काल तथा साक्षात् रुद्र रूप थे ।५। वीरभद्र भी शिवजी जैसा वेश धारण किये हुए था । वह सहस्र भुजा वाला, सर्पों को लपेटे हुए महा-प्रवल शत्रुओं को भी भयभीत करने वाला था, वह रथारूढ़ होकर चला ।६। उसके रथ का प्रमाण दो हजार तत्व था, उस रथ में दश हजार सिंह जुते हुए थे ।७।

तथैव प्रवलाः सिंहा वहवः पार्श्वरक्षकाः ।
शार्दूला मकरा मत्स्या गजास्तत्र सहस्रशः ।८
वीरभद्रे प्रचलिते दक्षनाशाय सत्वरम् ।
कल्प वृक्षसमुत्सृष्टा पुष्पवृष्टिरभूत्तदा ।९
तुष्टवुश्च गणा वीरं शिपिविष्टे प्रचेष्टितम् ।
चक्रुः कुतूहलं सर्वे तस्मिश्च गमनोत्सवैः ।१०
काली कात्यायिनीशानी चामुंडा मुंडामर्दिनी ।
भद्रकाली तथा त्वरिता वैष्णवी तथा ।११
एताभिर्नवदुर्गाभिर्महाकाली समन्विता ।
ययौ दक्षविनाशाय सर्वभूतगणैस्सह ।१२
डाकिनी शाकिनी चैव भूतप्रमथगुह्यकाः ।
कूष्मांडाः पर्पटाश्चैव चटका ब्रह्मरक्षसाः ।१३
भैरवाः क्षेत्रपालाश्च दक्षयज्ञविनाशकाः ।
निर्ययुस्त्वरितं वीराश्शिवाज्ञाप्रतिपालकाः ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार असंख्य सिंह पार्श्वरक्षक थे, तथा शार्दूल, मकर, मत्स्य और हाथी भी हजारों की संख्या में साथ थे।८। जब वीरभद्र दक्ष का संहार करने के लिए चला, तब उस पर कल्प वृक्ष के पुष्पों की वृष्टि होने लगी।९। शिव, चेष्टा वाले, उस वीरभद्र की शिवगण स्तुति करने लगे और उसके साथ चलते हुए सभी कुतूहल करने लगे।१०। काली, कात्यायनी ईशानी, चामुण्डा, मुण्डमर्दिनी, भद्रकाली, भद्रा त्वरिता तथा वैष्णवी।११। इन नौ दुर्गाओं के साथ महाकाली दक्ष संहार के निमित्त उस भूतगणों के साथ चली।१२। डाकिनी, शंकिनी भूत, प्रमथ, गुह्यक, कूष्माण्ड, चर्पट चटक तथा ब्रह्मराक्षस।१३। भैरव क्षेत्रपाल यह सभी शिवाज्ञा से दक्ष को नष्ट करने के निमित्त द्रुत गति से चले।१४।

तथैव योगिनीचक्रं चतुःषष्टिगणान्वितम्।
निर्ययौ सहसा क्रुद्धं दक्षयज्ञं विनाशितुम्।१५
तेषां गणनां सर्वेषां संख्यानं शृणु नारद।
महाबलवतां संघो मुख्यानां धैर्यशालिनाम्।१६
अभ्ययाच्छंकुकर्णश्च दशकोट्या गणेश्वरः।
दशभिः क्रेकराक्षश्च विकृतोष्टाभिरेव च।१७
चतुः षष्ट्या विशाखैश्च नवभिः पारियात्रिकः।
षड्भिस्सर्वांककोऽ वीरस्तथैव विकृताननः।१८
ज्वालकेशो द्वादशभि कोटिभिर्गणपुङ्गवः।
सप्तभिः समदज्जीमान् दुद्रभोष्टाभिरेव।१९
पञ्चभिश्च कपालोशः कड्भिस्सदारको गणः।
कोटिकोटिभिरेवेह कोटिकुण्डस्तथैव च।२०
विष्टभीष्टाऽष्टभिर्वीरैः कोटिभिर्गणसप्तमः।
सहस्रकोटिभिस्तात संनादः पिप्पलस्तथा।२१

उन गणों के साथ चौंसठ योगनियाँ भी चली। यह सब क्रोध पूर्वक दक्ष का विनाश करने के लिए उद्यत थे।१५। हे नारद ! उन गणों की संख्या मैं तुमसे कहता हूँ, उन महाबली तथा धैर्यशाली गणों में संघगणों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञातुं नेशं संभवंति वदंत्यंवं पुरातनाः ॥२६
न स्वज्ञ यो महेशानस्सर्वंदायुतेन सः ।
भक्त रनस्यवारणैर्नान्ययेति महाश्रुतिः ॥२७
शांत्या च परया दृष्ट्या सर्वथा निर्विकारया ।
तदनुग्रहतो नूनं ज्ञातव्यो हि सदाशिवः ॥२८
परं तु सं वदिष्यामि कार्याकार्यविवक्षितौ ।
सिध्यंशं च सुरेशान तं श्रणु त्वं हिताय वै ॥२९

वृहस्पति बोले-हे इन्द्र ! पहिले नारायण ने जो कुछ कहा था, वही हो गया अब तुम मेरी बात को सावधानी पूर्वक श्रवण करो सभी कर्मों का फलदाता ईश्वर भी कर्त्ता की अपेक्षा करता है क्यों कि स्वयं करने में वह भी समर्थ नहीं हैं ।२३-२४। मन्त्र, औषधि, अभिचार तथा लौकिक कर्म और वेद मीमांसाओं तथा वेद सम्मत अन्य सभी शास्त्र, उसके बिना कुछ नहीं हैं और न ईश्वर को जानने में समर्थ है, ऐसा विज्ञजन कहते हैं ।२५। भगवान शंकर को सम्पूर्ण वेदों का ज्ञाता भी जानने के समर्थ नहीं, उन्हें तो केवल उन्हीं को शरणको प्राप्त भक्तजान सकता है ।२६। शान्त, निर्विकार पर दृष्टि होने तथा उनकी कृपा होने पर ही शिव तत्व का ज्ञान हो सकता है । फिर भी, हे इन्द्र ! कार्य-अकार्य के निर्णय में सिद्ध हुए अंश को में तुमसे कहता हूँ, सावधानी से सुनो ।२७-२९।

त्वमिंद्र बालिशो भूत्वा लोकपालैः सहाद्य वै ।
आगतो दक्षयज्ञं हि किं करिष्यसि विक्रमम् ॥३०
एते रुद्रसहायाञ्च गणाः परमकोपनाः ।
आगता यज्ञविघ्नार्थं तं करिष्यत्यसंशयम् ॥३१
सर्वथा न ह्युपायोत्र केषांचिदपि तत्वतः ।
यज्ञाविघ्नाशार्थं सत्यं सत्यं ब्रवीम्यहम् ॥३२
एवं बृहस्पतेर्वाक्यं श्रुत्वा ते हि दिवौकसः ।
चिंतामापेदिरे सर्वे लोकपालास्स वासवाः ॥३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततोऽब्रवीद्वीरभद्रो महावीरगणैर्वृतः ।
इन्द्रादीन लोकपालांस्तान् स्मृत्वा मनसि शंकरम् ॥३४
सर्वे यूयं बालिशत्वादवदानार्थं मागताः ।
सर्वेदानं प्रयच्छामि आगच्छत ममांतिकम् ॥३५
हे शुक्र हे शुचे भानो हे शशिन् हे धनाधिप ।
हे पाशपाणे हे वायो निऋते यम शेष हे ॥३६

हे इन्द्र ! तुम लोकपालों सहित मूर्खतावश उस यज्ञ में आये हो तो भलातुम पराक्रम करने में समर्थ हो ? रुद्र के अत्यन्त क्रोध वाले यह गण यज्ञ को विध्वंस करने आये हैं तो वे अपना कार्य अवश्य करेंगे ।३०। मैं तुम से सत्य ही कहता हूँ कि इस यज्ञ के विध्वंस को रोकने का कोई भी उपाय नहीं है ।३१। ब्रह्माजी ने कहा कि वे सभी देवता बृहस्पति जी की बात सुनकर इन्द्र और लोक पालों सहित चिन्ता मग्न हो गये।३२। तथा अत्यन्त क्रोध पूर्वक उस महावली वीरभद्र ने इन्द्रादि लोकपालों से कहा ।३३। वीरभद्र बोला–तुम सब अपनी मूर्खता से इस यज्ञ में आये हो । इसका उत्तम फल तुमको चखाऊँगा । हे इन्द्र ! अग्ने सूर्य, चन्द्र, कुवेर, वरुण, वायो, निऋ मियम और शेष ।३४-३६।

हे सुरासुरसंधाञ्च हीतेत च विचक्षणा ।
अवदानानि दास्यामि आतृप्त्याद्यासतां वराः ॥३७
एवमुक्त्वा सितैर्वाणैर्जघानाथ रुषान्वित ।
निखिलांस्तान् सुरान् सद्यो वीरभद्रो गणाग्रणीः ।
तें र्वाणैंनिहतास्सर्वे वांसवाद्याः सुरेश्चराः ॥३८
पलायन्परा भूत्वा जग्मुस्ते च दिशो दशं ।
गतेषु लोकपालेषु विद्रु तेषु सुरेषु च ।
यज्ञवाटोपकंटं हि वीरभद्रोगमदगणैः ॥३९
तदा ते ऋषयस्सर्वे सुभीता हि रमेश्वरम् ।
विज्ञप्तुकामास्सहस्रा शीघ्रमूचुर्नता भृशम् ॥४०
देव-देव रमानाथ सर्वेश्वर महाप्रभो ।
रक्ष यज्ञं हि दक्षस्य यज्ञोसि त्वं न संशयः ॥४१
यज्ञकर्मा यज्ञरूपो यज्ञांमो यज्ञरक्षकः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्ष यज्ञमतो रक्ष त्वत्तोन्यो न हि रक्षकः ॥४२
इत्याकर्ण्य वचस्तेषांमृषीणां वचनं हरिः ।
योद्धु कांमो भयाद्विष्णुवीरभद्रेण तेन वै ॥४३

हे सुरो ! असुरो ! तुम्हें मैं अब इसका फल देता हूं, भले प्रकार इसका उपभोग करो । ब्रह्माजी ने कहा--यह कह कर वीरभद्र तीक्ष्ण बाणों से देवताओं पर प्रहार करने लगा । उस समय उनकी चोट से इन्द्रादि देवता अत्यन्त व्यथित हुए ।३७। फिर वे दशों दिशाओं में भागने लगे । लोकपालों को भागा हुआ देखकर वीरभद्र गणों के सहित यज्ञशाला में आया ।३८। तब सभी ऋषि भगवान नारायण के पास पहुँचे और भय के कारण शीघ्रता से बोले ।३९। ऋषियों ने कहा--हे लक्ष्मीपते ! हे महाप्रभो ! आप साक्षात् यज्ञ स्वरूप हैं, दक्ष के इस यज्ञ की रक्षा कीजिए ।४०। आप ही यज्ञ के अङ्ग, यज्ञ के स्वरूप तथा यज्ञ रक्षक हैं, अतः आप यज्ञ की रक्षा कीजिये । आप के अतिरिक्त कौन रक्षा करने में समर्थ है ? ।४१। ब्रह्माजी ने कहा--उन ऋषियों के यह वचन सुनकर वीरभद्र से भयभीत हुए विष्णु उससे युद्ध करनेका विचार करने लगे ।४२-४३।

चतुर्भुजस्सुसनद्धो चक्रायुधधरः करैः ।
महाबलोमरगणैर्यज्ञवाटात्स निर्ययौ ॥४४
वीरभद्रः शूलपाणिर्नानागण समन्वितः ।
ददर्श विष्णु संनद्धं योद्ध काम महाप्रभुम् ॥४५
तं दृष्ट्वा वीरभद्रोभद्भ्रुकुटीलाननः ।
कृतांत इव पापिष्ठं मृगेन्द्र इव वराणमम् ॥४६
तथाविध हरिं दृष्ट्वा वीरभद्रोरिमर्दनः ।
अवदत्त्वरितः क्रुद्धो गणै वीरैस्समावृतः ॥४७
रे रे हरे महादेव शपथोल्लंघनं त्वया ।
कथमद्य कृत चित्ते गर्वः किमभवत्तव ॥४८
तव श्रीरुद्रशपथोल्लंघने शक्तिरस्ति किम् ।
को वा त्वमसि को वाते रक्ष कोऽस्ति जगत्त्रये ॥४९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्र त्वमागतः कस्माद्वयं तन्नैव विद्महे ।
दक्षस्य यज्ञपातात्वं कथं जातोसि तद्वद ।।५०

वे चार भुजाधारी, सुदर्शन चक्र धारण किये महाबलवान् देवताओं को साथ लेकर यज्ञशाला से बाहर निकले। इधर गणों के सहित त्रिशूल हाथ में लिए वीरभद्र ने विष्णु को युद्ध की इच्छा से आते देखा ।४४। विष्णु को देखते ही वीरभद्र ने टेढ़ी भौंह करके उन्हें देखा, जैसे काल किसी पापी को अथवा सिंह किसी हाथी को देखता है ।४५। इस प्रकार वीरों से घिरे शत्रु संहारक वीरभद्र ने विष्णु की ओर देखा और क्रोध पूर्वक शीघ्रता से कहा ।४६। हे विष्णु ! तुमने शंकर की शपथका उल्लं-घन, किस अभिमानके वशीभूत होकर यह किया है? ।४७। क्या शिवजी की शपथ को तोड़ने में तुम समर्थ हो ? तुम कौन हो ? तीनों लोकों में तुम्हारी-रक्षा करने वाला कौन है ? ।४८। मैं नहीं जानता कि तुम यहाँ कैसे आये? तुम दक्ष-यज्ञ की रक्षा कैसे कर सकते हो ? यह मुझे बताओ ।४९-५०।

दाक्षायण्या कृतं यच्च तन्न दृष्टं किमु त्वया ।
प्रोक्तं यच्च दधीचेन श्रुतं तन्न किमु त्वया ।।५१
त्वञ्चापि दक्षयज्ञे स्मिन्नवदानार्थमागतः ।
अवदानं प्रयच्छामि तव चापि महाभुजः ।।५२
वक्षो विदारयिष्यामि त्रिशूलेन हरे तव ।
कस्तवास्ति समायातो रक्षकोद्य ममांतिकम् ।।५३
पातयिष्यामि भूपृष्ठे ज्वालयिष्यामि वह्निना ।
दग्धं भवन्तमधुना पेषयिष्यामि सत्वरम् ।।५४
रे रे हरे दुराचार महेश विमुखाधम ।
श्रीमहारुद्रमाहात्म्यं किन्नजानासि पावनम् ।।५५
अथापि त्वं महाबाहो योद्धु कामोग्रतः स्थितः ।
नेष्यामि पुनरावृत्ति यदितिष्ठेस्त्वमत्मना ।।५६
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वीरभद्रस्त बुद्धिमान् ।
उवाच विहसन् प्रीत्या विष्णुस्तत्र सुरेश्वरः ।।५७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सती ने जो कुछ किया, क्या उसे तुमने नहीं देखा ? क्या दधीचि के वाक्यों को तुमने सुना नहीं ? क्या तुम भी दक्ष के यज्ञ में कुत्सित दान ग्रहण करने आये हो ? लो तुम्हें मैं इसका कुत्सित दान देता हूँ।५१ हे विष्णो ! मैं तुम्हारे हृदय को त्रिशूल से विदीर्ण कर दूँगा, तुम्हारा जो रक्षक हो उसे भी मेरे निकट बुला लो।५२। मैं तुम्हें पृथिवी में डाल कर जला दूँगा तथा भस्म करसे पीस डालूँगा।५३। हे दुराचारी विष्णु हे शिव-विमुख अधम! क्या तुम शिवजी के पवित्र माहात्म्य से अनभिज्ञ हो ? ।५४। फिर भी तुम युद्ध की इच्छा से आगे बढ़ो हो,यदि यहाँ ठहरे तो मैं ऐसे स्थान को भेज दूँगा, जहाँ से फिर लौटना न पड़े ।५५। ब्रह्माजी ने कहा--वीरभद्र की बात सुनकर देवाधिदेव भगवान विष्णु हँसते हुए बोले ।५६-५७।

श्रृणु त्वं वीरभद्राद्य प्रवक्ष्यामि त्वदग्रतः ।
न रुद्राविमुखं मां त्वं वद शंकरसेवकम् ॥५८
अनेनं प्रार्थितः पूर्वं यज्ञार्थं च पुनः पुनः ।
दक्षेणाविदितार्थेन कर्मनिष्ठेन मोढयतः ॥५९
अहं भक्तपराधीनस्तथा सोऽपि महेश्वरः ।
दक्षो भक्तो हि मेतात तस्मादत्रागतो मखे ॥६०
श्रृणु प्रतिज्ञां में वीर रुद्रकोपसमुद्भव ।
रुद्र तेजस्स्वरूपोहि सुप्रतापालयं प्रभो ।६१
अहं निवारयामि तवां त्वं च मां विनिवारय ।
तद्भविष्यति यद्भावि करिष्येऽहं पराक्रमम् ॥६२
इत्युक्तवति गोविन्दे प्रहस्य स महाभुजः ।
अवदत्सुप्रसन्नोऽस्मि त्वां ज्ञात्वास्मत्प्रभोः प्रियम् ॥६३
ततो विहस्य सुप्रीतो वीरभद्रो गणागणीः ।
प्रश्रयावनतो वादीद्विष्णुं देवं हि तत्वतः ॥६४

विष्णु ने कहा-हे वीरभद्र ! मैं तुम्हारे प्रति तत्त्व कहता हूँ, तुम मुझ शिव सेवक को शिव के विरुद्ध मत समझो। इस दक्ष ने यज्ञ के लिए बहुत बार प्रार्थना की थी, अवश्य ही यह कर्मनिष्ठ है, परन्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्खता कर बैठा है ।५८। मैं भक्तों के अधीन हूँ, शिवजी भी भक्तों के आधीन हैं । दक्ष मेरा भक्त है, इसलिए उसके यज्ञ में मैं आया हूँ।५६। तुम रुद्र कोप से उत्पन्न हुए हो, शिव के प्रताप से निर्मित तथा उन्हीं के तेज से प्रकट हो, मेरी प्रतिज्ञा को सुनो ।६०। मैं तुमको निवारण करूँ और तुम मुझे निवारण करो, फिर जो होना हैं वह तो होगा ही । मैं पराक्रम करूँगा ।६१। ब्रह्माजी ने कहा--नारायण के इस प्रकार कहने पर महाभुजा वीरभद्र ने कहा कि आपको अपने प्रभु का प्रिय जान कर मैं प्रसन्न हूँ ।६२। फिर गणों में अग्रणी वीरभद्र नम्रता पूर्वक भगवान विष्णु से कहने लगा ।६३-६४।

तव भावपरीक्षार्थमित्युयुक्तं मे महाप्रभो ।
इदानीं तत्वतो वच्मि श्रृणु त्वं सावधानतः ।।६५
यथा शिवस्तथा त्वं हि यथा त्वं च तथा शिवः ।
इति वेदा वर्णयन्ति शिव शासनतो हरे ।।६६
शिवाज्ञया वयं सर्वे सेवकाः शंकरस्य वै ।
तथापि च रमानाथ प्रवादो चितमादरात् ।६७
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य वीरभद्रस्य सोऽच्युतः ।
प्रहस्य चेदं प्रोवाच वीरभद्रमिदं वचः ।।६८
युद्धं कुरु महावीर मया साद्धं मशांकितः ।
तवास्त्रैः पूर्यमाणोहं गमिष्यामि स्वमाश्रमम् ।।६९
इत्युक्त्वा हि विरम्यासौ सन्नद्धोभद्रणाय च ।
स्वगणेर्वीरभद्रोपि सन्नद्धोथ महाबलः ।।७०

उसने कहा--हे प्रभो ! आपकी भाव परीक्षा के लिए ही मैंने यह बात कही थी, अब मैं जो बात विचार पूर्वक कह रहा हूँ उसे ध्यान से सुनो । जैसे शिव हैं, वैसे ही आप हैं और जैसे आप वैसे ही शिव हैं शिवजी की आज्ञासे वेदों का ऐसा कथन है ।६५। हे लक्ष्मीपते! शिवाज्ञा से हम सभी उनके सेवक हैं, इसलिए आदर सहित यह बात कहना उचित है ।६६। ब्रह्माजीने कहा--वीरभद्र की बात सुनकर भगवान विष्णु ने हँसते हुए वीरभद्र के प्रति कहा ।६७। विष्णु ने कहा--हे महाबले !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंका रहित होकर मेरे साथ युद्ध करो मैं तुम्हारे अस्त्रों से परिपूर्ण होकर अपने स्थान को गमन करूँगा ।६८। ब्रह्माजी ने कहा—यह कह कर विष्णु भगवान संग्राम के लिए तत्पर हुए तथा महाबली वीरभद्र भी अपने गणों के सहित युद्ध के लिए तत्पर हुआ । ।६९-७०।

देवताओं की पराजय और दक्ष का शिर का काटा जाना

वीरभद्रोथ युद्धे वै विष्णुना स महाबलः ।
संस्मृत्य शंकर चित्ते सर्वापद्विनिवारणम् ॥१
आरूह्य स्यन्दनं दिव्यं सर्ववैरिविमर्दनः ।
गृहीत्वा परमास्त्राणि सिंहनादं जगर्ज ह ॥२
विष्णञ्चापि महाघोषं पांचजान्यामिधनिजम् ।
दध्मौ बली महाशंख स्वकीयान् हर्षयन्निव ॥३
तच्छ्रुत्वा शंखनिर्ह्नादं देवा रे च पलायिताः ।
रण हित्वा गतः पूर्वं ते द्रुत पुनराययुः ॥४
वीरभद्रगणैस्तेषां लोकपालास्स वासवाः ।
युद्धाक्रचक्रुस्तथा सिंहनाद कृत्वा बलान्विताः ॥५
गणानां लोकपालानां द्वन्द्वयुद्धं भयावहम् ।
अभवत्तत्र तुमुलं गर्जतां सिंह नादतः ॥६
नन्दिना युयुधे शक्रोऽनलो वै वैष्णवास्तथा ।
कुबेरोऽपि हि युयुधे बली ॥७

ब्रह्माजी ने कहा—उस समय वीरभद्र भगवान शंकर का स्मरण करता हुआ नारायण के साथ संग्राम करने को तत्पर हुआ ।१। सब शत्रुओं का संहारक वीरभद्र दिव्य रथ पर आरूढ़ होकर परम अस्त्र ग्रहण करता हुआ सिंहनाद करने लगा ।२। इधर महाबली नारायण ने अपने पक्ष के देवताओं को साथ ले पाञ्चजन्य शंख का महानाद किया ।३। जो देवता रण भूमि से भाग गये थे, वे उस शंखनाद को सुनकर पुनः आ गये ।४। फिर इन्द्रादि सभी लोकपाल उच्च स्वर से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहनाद कर वीरभद्र के साथ संग्राम करने लगे ।५। सिंहनाद कर गरजते हुए गणों और लोकपालों का अत्यन्त भयानक संग्राम हुआ ।६। नन्दी के साथ इन्द्र, अनल के साथ वैष्णव और कूष्माण्डपति के साथ कुबेर आदि का संग्राम होने लगा ।७।

तदेन्द्रेण हतो नन्दी वज्रेण शतपर्वणा ॥८
नन्दिना च हतश्शक्रस्त्रिशूलेन स्तनांतरे ॥९
बलिनो द्वावपि प्रीत्या युयुधाते परस्परम् ।
नानाघातांश्च कुर्वन्तौ नन्दिशक्रौजिगीषया ॥१०
शक्त्या जघान चाश्मानं शुचिः परमकोपनः ।
सोऽपि शूलेन तं वेगाच्छितधारेण पावकम् ॥११
यमेन सह संग्रामं महालोको गणाग्रणीः ।
चकार तुमुलं वीरो महादेवं स्मरन्मुदा ॥१२
नैऋतेन समागम्य चण्डश्चबलवत्तरः ।
युयुधे परमास्त्रैश्च निऋर्ति निविडं वयन् ॥१३
वरुणेन समं वीरो मुंडश्चैव महाबलः ।
युयुधे परया शक्त्या त्रिलोकीं विस्मयन्निव ॥१४

इन्द्र ने अपने सौ पर्व वाले वज्र से नन्दी पर आघात किया ।८। नन्दी ने भी अपने त्रिशूल से इन्द्र की छाती पर प्रहार किया ।९। दोनों वीर अत्यन्त उत्साह पूर्वक परस्पर संग्राम करने लगे । नन्दी और इन्द्र दोनों ही एक दूसरे को हराने के विचार में अनेक कौशल कर रहे थे ।१०। अत्यन्त क्रोधी अग्नि ने अश्मा को शक्ति से मारा और उसने भी अत्यन्त वेग से अपने सौधार वाले त्रिशूल से अग्नि पर प्रहार किया ।११। यम के साथ महालोक नामक गण भगवान् शिवका स्मरण करता हुआ युद्ध कर रहा था ।१२। वीर चण्ड ने नैऋत के साथ परमास्त्रों से युद्ध आरम्भ किया ।१३।वरुण से वीरमुण्डी भिड़ गया इनके युद्ध कौशल से तीनों लोक विस्मय पूर्ण थे ।१४।

वायुना च हतो भृङ्गी स्वास्त्रेण परभोजसा ।
भृंगिणा च हतो वायुस्त्रिशूलेन प्रतापिना ॥१५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुबेरणैव सगंम्य कूष्मांडपतिरादरात् ।
युयुधे बलवान् वीरो ध्यात्वा हृदि महेश्वरम् ॥१६
योगिनोचक्रसंयुक्तो भैरवीनायको महान् ।
विदार्य्यं देवानखिलान्पपौ शोणितमद्भुतम् ॥१७
क्षेत्रपालास्तथा तत्र बुभुक्षः सुरपुङ्गवान् ।
काली चापि विदार्यैव तान्पपौ रुधिरं बहु ॥१८
अथ विष्णुर्महातेजा युयुधे तैश्च शत्रुहा ।
चक्रं चिक्षेप वेगेन दहन्निव दिशोदश ॥१९
क्षेत्रपालस्समायांत चक्रमालोक्य वेगतः ।
तत्रागत्यागतो वीरश्चग्रसत्सहसा बली ॥२०
चक्रं ग्रसितमालोक्य विष्णु परपुरञ्जयः ।
मुखं तस्य परामृज्य तमुद्गलितावानरिम् ॥२१

भृंगी पर वायु ने अपने परमास्त्र का प्रयोग किया और वायु पर भृंगी ने अपने अत्यन्त प्रतापी त्रिशूल से प्रहार किया ।१५। कूष्मांडपति ने अत्यन्त उत्साह से शिवजी का ध्यान कर कुबेर के साथ युद्ध किया ।१६। योगिनी चक्र सहित भैरवी ने सब देवताओं को द्रवित कर उनका रक्त पीना आरम्भ कर दिया ।१७। इसी प्रकार क्षेत्रपाल ने भी देवताओं का भक्षण आरम्भ किया और काली भी उनका हृदय विदीर्ण कर रक्तपान करने लगी ।१८। इधर भगवान नारायण भी युद्ध रत हुए दशों दिशाओं को भस्म करते हुए चक्र से प्रहार करने लगे ।१९। उस चक्र को वेगपूर्वक आता हुआ देखकर क्षेत्रपाल ने सम्मुख होकर उसका ग्रास किया, तब उसके मुख को पकड़ कर विष्णु ने चक्र को उगलवाया ।२१।

स्वचक्रमादाय महानुभावश्चुकोप चातीब भवैकभर्त्ता ।
महाबली तैर्युयुधे प्रवीरैस्सक्रुद्धनानायुधधारकोस्त्रैः ॥२२
चक्रे महारणं विष्णुस्तैस्सार्द्धं युयुधेमुदा ।
नानायुधानि संक्षिप्त तुमुलं भीमविक्रमम् ॥२३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ ते भैरवाद्याश्च युयुधुस्तेन भूरिशः ।
नानास्त्राणि विमुञ्चन्तस्संक्रुद्धाः परमोजसा ॥२४
इत्थं तेषां रणंदृष्ट्वा हरिणातुलतेजसा ।
विनिवृत्य समागत्य तान्स्वयं युयुधं बली ॥२५
अथ विष्णुर्णं हृतेजाश्चक्रमुद्यम्य मूर्च्छितः ।
युयुधे भगवांस्तेन वीरभद्रेण माधवः ॥२६
तयोः समभवद्युद्धं सुघोरं रोमहर्षणम् ।
महायीराब्धिपत्योस्तु नानास्त्रधरयोर्मुने ॥२७
विष्णोर्योगबलात्तस्य देहादेव सुदारुणाः ।
शंख चक्रगदाहस्ता असंख्याताश्चजज्ञिरे ॥२८

फिर जगदीश्वर विष्णु अत्यन्त क्रोध में भरकर अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र धारण कर वेग से युद्ध करने लगे ।२२। उत्साह पूर्वक संग्राम करते हुए भगवान को बड़ा क्रोध हुआ और उन्होंने अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्र चलाये ।२३। भैरव आदि अत्यन्त क्रोधपूर्वक उनसे युद्ध करते हुए अस्त्र चलाने लगे ।२४। इस प्रकार उनका युद्ध देखकर भगवान विष्णु भी पुनः वेग से संग्राम करने लगे ।२५। फिर उन्होंने सुदर्शन चक्र ग्रहण कर अत्यन्त वेगपूर्वक वीरभद्र के साथ युद्ध प्रारम्भ किया ।२६। उन दोनों में अत्यन्त घोर संग्राम हुआ उस समय नारायण ने अनेक प्रकार से अस्त्रों से प्रहार किया ।२७। विष्णुजी के देह से योग बल के कारण शंख, चक्र और गदाधारी असंख्य वीर उत्पन्न होगये।२८।

ते चापि युयुधुस्तेन वीरभद्रेण भाषता ।
विष्णुवत् बलयंतो हि नानायुधधरागणाः ॥२९
तान्सर्वानपि वीरोसौनारायणसमप्रभान् ।
भस्मीचकार शूलेन हत्वा स्मृत्वा शिवं प्रभुम् ॥३०
ततञ्चारसितं विष्णुं लीलयैवरणाजिरे ।
जघान वीरभद्रो हि त्रिशूलेन महाबली ॥३१
तेन घातेन सहसा विहतः पुरुषोत्तमः ।
पपात च तदा भूमौ विसंज्ञोभून्मुने हरिः ॥३२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो यज्ञोद्भुतं तेजः प्रलयानलसन्निभम् ।
त्रैलोक्यदाहकं वीराणामपि भीकरम् ॥३३

क्रोधरक्तेक्षणः श्रीमान् पुनरुत्थाय स प्रभुः ।
प्रहर्तुं चक्रमुद्यम्य ह्यतिष्ठत्पुरुषर्षभः ॥३४

तस्य चक्रं महारौद्रं कालादित्यसमप्रभम् ।
व्यष्टं भयदीनात्मा वीरभद्रश्शिवः प्रभुः ॥३५

वे सभी नारायण के समान महाबली और अनेक प्रकार के हथियार धारण किये हुए थे, वे सब वीरभद्र के साथ भिड़ गए।२९। वे सभी महाबली भगवान के समान ही प्रभावशाली थे परन्तु वीरभद्र ने रुद्र का स्मरण कर उन सभी को त्रिशूल से भस्म कर दिया ।३०। फिर उस महाबली वीरभद्र ने भगवान विष्णु पर अपने त्रिशूल से प्रहार किया ।३१। उस आघात से ताडित हुए नारायण सहसा मूर्छित होकर पृथिवी पर गिर पड़े।३२। उस समय वीरों के लिए भयदायक प्रालयाग्नि के समान तीनों लोकों को भस्म करने वाला तेज प्रकट हुआ ।३३। क्रोध के कारण रक्तवर्ण हुए नेत्र वाले भगवान विष्णु पुनः उठकर चक्र ग्रहण कर वीरभद्र को मारने के लिए उद्यत हुए।३४। वीरभद्र ने काल रूपी सूर्य के समान कान्तिमान होकर उस चक्र को स्तम्भित कर दिया ।३५।

मुने शंभोः प्रभावात्तु मायेशस्य महाप्रभोः ।
न चचाल हरेश्चक्रं करस्थं स्तंभिति ध्रुवम् ॥३६

अथ विष्णुर्गणेशेन वीरभद्रेण भाषता ।
अतिष्ठत्स्तम्भितस्तेन श्रृङ्गवानिव निश्चलः ॥३७

ततो विष्णुः स्तभितो हि वीरभद्रेण नारद ।
यज्वोपमंत्रेणमना नीरस्तम्भनकारकम् ॥३८

ततस्स्तंभननिर्मुक्तः शार्ङ्गधन्वारमेश्वरः ।
शार्ङ्गं जग्राह सक्रुद्धः स्वधनुस्सशरं मुने ॥३९

त्रिभिश्च घर्षितो वाणैस्तेन शार्ङ्गं धनुर्हरेः ।
वीरभद्रेण तत्तात त्रिधाभत्तत्क्षाणान्मुने ॥४०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथविष्णुर्मया वाण्या बीधितस्तं महागणम् ।
असह्य वर्चसं ज्ञात्वा ह्यंतर्धातुं मनोदधे ॥४१
ज्ञात्वा च तत्सर्वमिदं भविष्यं सतीकृतं दुष्प्रसहं परेषाम् ।
गताः स्वलोकं स्वलोकं स्वगणान्वितास्तु
स्मृत्वा शिवं सर्वपतिं स्वतन्त्रम् ॥४२

भगवान माया के स्वामी शिवजी के प्रभाव से विष्णु के हाथ का सुदर्शन चक्र स्तम्भित हो गया।३६। उस समय गणेश्वर वीरभद्र के द्वारा स्तम्भित हुए भगवान नारायण पर्वतके समान निश्चल हो गये।३७। हे नारदजी ! जब वीरभद्र ने विष्णु को स्तम्भित कर दिया, तब वे यज्ञ-मन्त्र के द्वारा स्तम्भन से मुक्त हुए।३८। जब शार्ंग धनुर्धारी भगवान स्तम्भन से मुक्त हो गये तब उन्होंने शार्ग धनुष ग्रहणकर उस पर बाण चढ़ाया।३९। उस धनुष से निकले तीन बाणों से ताड़ित हुए वीरभद्र ने उनको तीन प्रकार से ही काट डाला।४०। तब मैंने और सरस्वती ने उस गण के विषय में विष्णु को बताया और उसे असह्य तेज वाला बताकर अन्तर्धान होने का संकेत किया।४१। तब सती मरण के दुःसह पाप को जान कर भगवान विष्णु अपने स्वामी शिवजी का स्मरण करते हुए अपने विकारो सहित निज लोक को गये।४२।

सत्यलोकगतश्चाहं पुत्रशोकेन पीडितः ।
अचिंतयं सुदुःखार्तो मया किं कार्यमद्य वै ॥४३
विष्णौ मयि गते चैव देवाश्च मुनिभिस्सह ।
विनिर्जिता गणैस्सर्वे ये ते यज्ञोपजीविनः ॥४४
समुपद्रवमालभ्य विध्वस्तं च महामखम् ।
मृगस्वरूपो यज्ञो हि महाभीतोऽपिदुद्रुवे ॥४५
तं तदा मृगरूपेणधावन्तं गगनं प्रति ।
वीरभद्रस्समादाय विशिरस्कमथाकरोत् ॥४६
ततः प्रजापतिं धर्मं कश्यप च प्रगृह्यसः ।
अरिष्टनेमिनं वीरो बहुपुत्रमुनीश्वरम् ॥४७
मुनिमङ्गिरसं चैव कृशाश्वं च महागणः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

जघान मूर्ध्नि पादेन दत्त च मुनिपुङ्गवम् ।।४८
सरस्वत्याश्चनासाग्रं देवमातुस्तथैव च ।
चिच्छेद करजाग्रेण वीरभद्रः प्रतापवान् ।।४९

मैं भी पुत्र शोक में सन्तप्त हुआ सत्य-लोक को गया और दुःखी चित्त से सोचने लगा कि अब क्या किया जाय ? ।४३। जब मैं और विष्णुजी वहाँ से चले गये तब वीरभद्र ने यज्ञ के सब देवताओ और मुनियों पर विजय प्राप्त कर ली ।४४। इस घोर उत्पात और यज्ञ का ध्वस्त हुआ देखकर यज्ञ भी भयभीत होकर मृग रूप धारण कर वहीं से भाग गया ।४५। जब मृग रूप धारण कर वह आकाश मार्ग से दौड़ा तभी वीरभद्र ने पकड़ कर उसका शीश काट डाला ।४६। फिर प्रजा-पति, धर्म, कश्यप, अरिष्टनेमि और बहु पुत्र मुनि ।४७। आंगिरस और कृशाश्वमुनि को पकड़ कर इनके शिरों पर पाँव की ठोकर मारी ।४८। सरस्वती देवमाता की नाक का छेदन कर दिया, वीरभद्र ने यह कार्य अपने हस्तकौशल से किया ।४९।

ततोन्यानपिदेवादीन् विदार्यं पृथिवीतले ।
पातयामास सोयं वै क्रोधाक्रांतातिलोचनः ।।५०
वीरभद्रो विदार्य्यापि देवान्मुख्यान्मुनीनपि ।
नाभूच्छान्तो द्रुतक्रोधः फणिराडिव मण्डितः ।।५१
वीरभद्रोद्ध ताराति: केशरीव वनद्विपान् ।
दिशो विलोकयामास कः कुलास्तीत्यनुक्षणम् ।।५२
व्यपोथयम् भृगुं यावन्मणिभद्रः प्रतापवान् ।
पदाक्रम्थोरसि तदाऽकार्षीत्तच्छमश्रु लुंचनम् ।।५३
चंडश्चोत्पाट्यामास पूष्णोदंतान् प्रवेगतः ।
शप्यमाने हरे पूर्वं योऽहसद्दर्शयन्दतः ।।५४
नन्दी भगस्य नेत्रे हि पातितस्य रुषा भुवि ।
उज्जहार स दक्षोक्ष्णा यश्शपन्तम सूचत ।।५५
विडम्बिता स्वधातत्रसा स्वाहा दक्षिणा तथा ।
मन्त्रास्तन्त्रस्तथा चान्ये तत्रस्थागणनायकैः ।।५६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर अन्य बहुत से देवताओं को विदीर्ण कर धराशायी कर डाला ।५२। इस प्रकार मुख्य देवताओं और मुनियों को विदीर्ण करके भी क्रोधित अहिराज के समान शांत नहीं हुआ ।५३। जैसे सिंह जंगल के हाथियों को भगाकर चारों ओर देखता है, वैसे ही वीरभद्र देखने लगा ।५२। उनकी छाती पर पैर रखा और दाढ़ी उखाड़ ली ।५४। चण्ड ने अत्यन्त वेग से पूषाके दाँत उखाड़ डाले, क्योंकि शिव का निरादर होने पर दाँत खोलकर प्रथम वही हँसा था ।५४। नन्दी ने क्रोध पूर्वक भग देवता के नेत्र निकाल लिए, क्योंकि उसने दक्ष के कारण शिव निन्दा में भाग लिया था।५५। जितने भी स्वधा, स्वाहा, दक्षिणा मन्त्र तन्त्र आदि थे उन सभी पर प्रहार किये गये ।५६।

ववृषुस्ते पुरीषाणि वितानाऽग्नौ रूषागणाः ।
अनिर्वाच्यं तदा चक्रु र्गणा वीरास्तमध्वरम् ॥५७
अन्तर्वेद्यं तरगतं निलीनं तद्भयाद्बलात् ।
आनिनाय समाज्ञाय वीरभद्रश्चभूसुतम् ॥५८
कपोलेस्यगृहीत्वा तु खगं नोपहृतं शिरः ।
अभेद्यमभवत्तस्य तच्च योगप्रभावतः ॥५९
अभेद्यं तच्छिरो मत्वा शस्त्रास्त्रैश्च तु सर्वशः ।
करेण त्रोटयामास पद्भ्यमाक्रम्य चोरसि ॥६०
तच्छिरस्तस्य दुष्टस्य दक्षस्य हरवैरिणः ।
अग्निकुण्डे प्रचिक्षप वीरभद्रो गणाग्रणीः ॥६१
रेजे तदा वीरभद्रस्त्रि शूलं भ्रामयन्करे ।
क्रुद्धा रक्षाक्षसंवर्ता प्रज्वाल्यपर्वतोपाः ॥६२
अनायासेन हत्वैतान् वीरभद्रस्ततोग्निना ।
ज्वालयामास सक्रोधोदीप्ताग्निश्शलभानिव ॥६३

फिर गणों ने क्रोधपूर्वक वितानाग्नि पर वृद्धि की और दक्ष यज्ञ को अनिर्वाच्य कर दिया ।५७। बलवान वीरभद्र के भय से दक्ष अन्तर्वेदी में छुप गया था, यह जानकर वीरभद्र उसे वहाँ से पकड़ लाया।५८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कपोल पकड़ कर उस पर खंग से वार किया, परन्तु योगबल के कारण उसका शीश अभेद्य हो गया ।५६। जब वीरभद्र ने शस्त्रास्त्रों से उसके सिर का काटा जाना असम्भव देखा तब उसकी छाती पर पाँव रखकर हाथ से शिर नोंच डाला।६०। और उस शिव द्रोही के शिर को उसने अग्नि कुण्ड में डाल दिया ।६१। उस समय त्रिशूल घुमाता हुआ वीरभद्र युद्ध स्थल में अत्यन्त सुशोभित हुआ तथा युद्ध की संवर्ताग्नि क्रोध पूर्वक सब कुछ भस्म करने लगी ।६२। इस प्रकार वीरभद्र ने उन सबको उस जलती हुई अग्नि में शलभ के समान भस्म कर डाला ।२६।

वीरभद्रस्ततो दग्धान्दृष्ट्वा दक्षपुरोगमान् ।
अट्टाट्टहासमकरोत्पूरयश्च जगत्रयम् ।।६४
वीरश्रिया वृतस्तत्र ततोनन्दनसंभवा ।
पुष्पवृष्टिरभूद्दिव्या वीरभद्रे गणान्विते ।।६५
ववर्गन्धवहाश्शीतास्सुगन्धास्सुखदाः शनैः ।
देवदुंदभयो नेदुस्सममेव ततः परम् ।।६६
कैलाशं स ययौ वीरः कृतकार्य्यस्ततः परम् ।
विनाशितहृध्वांतो भानु मानिविसत्वपम् ।।६७
कृतकार्य्यं वीरभद्रं दृष्ट्वा सन्तुष्टमानसः ।
शंभुर्वीरगणाध्मक्षं चकार परमेश्वरः ।।६८

दक्ष आदि सभी को भस्म करके उसने तीनों लोकों को परिपूर्ण करने के लिए घोर अट्टहास किया ।६४। उस समय वीरभद्र विजय श्री से आवृत्त हुआ और उसके ऊपर पुष्प वृष्टि होने लगी तथा सभी शिव गण प्रसन्न हो गये ।६५। फिर शीतल सुगन्धित, सुख की देने वाली मन्द वायु चल पड़ी, देवताओं के द्वारा दुन्दुभी बजने लगीं ।६६। कुछ समय बाद अन्धकार उसने नष्ट कर दिया ।६७। वीरभद्र को कार्य में सफल हुआ देखकर परमेश्वर शिव अत्यन्त सन्तुष्ट हुए और उन्होंने उसे गणेश्वर बना दिया ।६८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुद्र संहिता पार्वती खंड

शिव पार्वती संवाद

किन्मुक्तं गिरिराजाय त्वया योगिंस्तपस्विना ।
तदुत्तरं शृणु विभो मत्तोज्ञानिविशारद ।।१
पार्वत्यास्तद्वचः श्रुत्वा महोतिकरणे रतः
सुविहस्य प्रसन्नात्मा महेशो वाक्यमब्रवीत् ।।२
तपसा परमेणैव प्रकृतिं नाशयाम्यहम् ।
प्रकृत्यारहितश्शंभुरहं तिष्ठामि तत्वतः ।।३
तस्माच्च प्रकृतेस्सद्भिर्न कार्यस्संग्रहः क्वचित् ।
स्थातव्यं निर्विकारैश्च लोकाचारविवर्ज्जितैः ।।४
इत्युणा शम्भुना तात लौकिकव्यवहारतः ।
सुविहस्य हृदा काली जगाद मधुर वचः ।।५
यदुक्तं भवता योगिस्वचनं शंकर प्रभो ।
सा च किं प्रकृतिर्न स्यादतीतस्तां भवान्कथम् ।।६
एतद्विचार्यं वक्तव्यं तत्वतोहि यथातथम् ।
प्रकृत्या सर्वमेतच्च बद्धमस्ति निरन्तरम् ।।७

भवानी ने शिवजी से कहा—हे योगिराज ! हे ज्ञानियों में परम पण्डित ! हे व्यापक ! तपोनिष्ठ होते हुए आपने जों मेरे पिता से कहा था उसका उत्तर आप मुझसे सुनिए ।१। ब्रह्माजी ने कहा गौरी के इस कथन को सुनकर कठोर तपश्चर्या से निमग्न परम प्रसन्न चित्त वाले महेश्वर हँसकर कहने लगे ।२। महादेवजी ने कहा मैं अपनी उग्र तपस्या के द्वारा ही प्रकृति को नष्ट कर देता हूँ मैं शङ्कर नाम धारी नित्य ही प्रकृति से रहित होकर स्थित रहता हूँ । और मेरी स्थिति तत्व से रहती है ।३। इसी कारण से जो सद्वृत्ति वाले पुरुष होते हैं उनको प्रकृति का संग्रह कभी भी न करके बिना बिकार के लोक के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य था ।१६। शंकुकर्ण दश करोड़ गण लेकर चला, केकराक्ष ने भी दश करोड़ तथा विकृत ने आठ करोड़ गण साथ लिए ।१७। विशाख के साथ चौंसठ करोड़ पारियात्र के साथ नौ करोड़, सर्वोकक के साथ छः करोड़ और वीर विकृतानल के साथ छः करोड़ ।१८। श्रेष्ठ ज्वाला के साथ बारह करोड़, समान के साथ सात करोड़ और दुद्रम के साथ आठ करोड़ थे ।१९। कपालीश के साथ पांच करोड़, मंदारक के साथ छः करोड़ तथा कोटि और कुण्डके साथ एक एक करोड़ थे ।२०। चिष्ट-भोष्ट के साथ आठ करोड़, वीर के साथ सात करोड़ तथा सनाद और पिप्पल के साथ हजार-हजार करोड़ चले ।२१।

आवेशनस्तथाष्टाभिरष्टाभिश्चन्द्रतापनः ।
महावेशः सहस्रंण कोटिना गणपा वृत ।२२
कुण्डोद्वादशकोटीभिस्तथा पर्वतको मुने ।
विनाशितुं दक्षयज्ञं निर्ययौ गणसत्तमः ।२३
कालश्च कालकश्चैव महाकालस्तथैव च ।
कोटिनां शतकेनैवदक्षयज्ञं ययौ प्रति ।२४
कग्नकृच्छतकोट्या च कोट्याग्निमुख एव च ।
आदित्यमूर्द्धा कोट्या च तथा चैव घनावहः ।२५
सन्माहश्शत कोट्या च कोट्या च कुमुदो गणः ।
अमोघः कोकिलश्चैव कोटिकोट्या गणाधिपः ।२६
काष्ठागूढश्चतुः षष्ट्या सुकेशीं वृषभस्तदा ।
सुमन्त्रको गणाधीशस्तथा तात सुनिर्ययौ ।२७
काकपादोदरः षष्टि कोटभिर्गणसत्तमः ।
तथा सन्तानकः षष्टिकोटभिर्गणपुंगवः ।२८

आवेशन के साथ आठ करोड़ चन्द्रतापन के साथ भी आठ करोड़, महावेश गणपति के साथ आठ करोड़, चले ।२२। कुण्ड और पर्वतक ने बारह करोड़ सेना को साथ लेकर दक्ष-नाश के निमित्त गमन किया ।२३ काल कालक और महाकाल सौ-सौ करोड़ गण लेकर दक्ष-नाश के हेतु चले ।२४। अग्निकृत ने सौ करोड़, अग्नि ने एक करोड़, आदित्यमूर्धा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और धनावह ने भी एक एक करोड़ सेना साथ ली ।२६। सन्नाह ने भी एक करोड़ कुमुदने भी एक करोड़, अमोघ तथा कोकिल गणाधिपने भी एक-एक करोड़ गण साथ लिए ।२७। काष्ठा गूढ़, सुकेशी, वृषभ गणाणीश और सुमन्त्रक चौंसठ-चौंसठ करोड़ गण लेकर चले ।२७। काकपादोदर ने साठ करोड़ तथा सन्नातक ने साठ करोड़ गण लिए ।२८।

महाबलश्च नवभिः कोटिभिः तुङ्गवस्तथा ।२९
मधुपिंगस्तथा तात गणाधीशो हि निर्ययो ।
नीलो नवत्या कोटीनां पूर्णभद्रस्तथैव च ।३०
निर्ययौ शतकोटीभिश्चतुर्वक्त्रो गणाधिपः ।
काष्ठागूढश्च तुष्षष्ट्या सुकेशो वृषभस्तदा ।३१
विरूपाक्षश्च कोटीनां चतुष्षष्ट्या गणेश्वरः ।
तालकेतुः षडस्यश्च पञ्चास्यश्च गणाधिपः ।३२
संवर्तकस्तथा चैव कुलीशश्च स्वयं प्रभुः ।
लोकांतकश्च दीप्तात्मा तथा दैत्यान्तको मुने ।३३
गणो भृङ्गीरिटिः श्रीमान् देवदेवप्रियस्यथा ।
अशनिर्भालिश्चैव चतुःषष्ट्या सहस्रकः ।३४
कोटि कोटि सहस्राणां शतैर्विंशतिभिर्वृतः ।
वीरेशोह्यभ्ययाद्वीरः वीरभद्रः शिवाज्ञया ।३५

श्रेष्ठगण महाबल ने नौ करोड़ गण लिए ।२९। गणाधीश मधुपिंग भी इसी प्रकार चला था नील और पूर्ण भद्र ने नब्बे करोड़ गण साथ लिए ।३०। चतुर्वक्त्र ने सौ करोड़ तथा काष्ठागूढ़, सुकेश और वृषभ ने चौंसठ करोड़ गणों को साथ लिया ।३१। गणेश्वर विरूपाक्ष ने चौंसठ करोड़ गण साथ लिए तथा तालकेतु, षठमुख, पञ्चमुख और गणेश्वर ।३२। संवतककुलिश, लोकान्तक दीप्तात्मा और दैत्यान्तक शिव के प्रिय भृङ्गीरिटि, अशनि और भालकगण ने चौंसठ हजार करोड़ सेना साथ ली ।३३-३४। इस प्रकार शिवाज्ञा से वीरभद्र हजारों सैकड़ों बीसियों करोड़ सेना से घिर कर चला ।३५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतकोटि सहस्रैस्तु प्रययौ कोटिभिस्त्रिभिः ।
रोमजैः श्वगणैश्चैव तथा वीरो ययौद्रुतम् ।३३
तदा भेरीमहानादः शंखाश्च विविधस्वनाः ।
जटाहारामुखाश्चैव श्रृङ्गाणि विविधानि च ।३७
ते तानि वितितान्येव बन्धनानि सुखानि च ।
वादित्राणि विनेदुश्च विविधानि महोत्सवे ।३८
वीरभद्रस्य यात्रायां सवलस्य महामुने ।
शकुनान्यभवंस्तत्र भूरीणि सुखदानि च ।३६

हजारों करोड़ भूत तथा तीन करोड़ अन्य जाति के भूत यथा रोमज और श्वगणों सहित वीरभद्रने गमन किया ।३६। उस समय भेरी का तीक्ष्ण नाद होने लगा, जटाहार और मुखों के अनेक प्रकार के शब्द तथा श्रृङ्गों के शब्द होने लगे ।३७। बन्ध स्थानों पर सुखदायक शब्द बढ़ने लगे तथा वह उत्सव अनेक प्रकार के शब्दों से भर उठा ।३८। हे नारद बलवान वीरभद्र की यात्रा में सुख देने वाले अनेक शकुन होने लगे ।३६।

यज्ञ में देवों के उत्पातों का वर्णन

एवं प्रचलिते चास्मिन् वीरभद्रे गणान्विते ।
दुष्टचिह्नानि दक्षणे दृष्टानि विबुधैरपि ।१
उत्पाता विविधाश्चासन वीरभद्र गणान्विते ।
त्रिविधा अपि देवर्षे यज्ञविध्वंससूचकाः ।२
दक्षवामाक्षिबाहूविस्पन्दस्समजायत ।
नानाकष्टप्रदस्तात सर्वथाऽशुभसूचकः ।३
भूकम्पस्समभूत्तत्र दक्षयागस्थले तदा ।
दक्षोपश्यच्च मध्याह्ने नक्षत्राण्यद्‌भुतानि च ।४
दिशश्चासन्सुमलिनाः कर्बुरोभूद्दिवाकरः ।
परिवेषसहस्रेण सक्रांतश्च भयंकर ।५
नक्षत्राणि पतन्तिस्म विद्युदग्निप्रभाणि च ।
नक्षत्राणामभूद्वक्रा गतिश्चाधोमुखी तदा ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृध्रा दशशिरः स्पृष्ट्वा समुद्भूताः सहस्रशः ।
सामीद्गृध्ररक्षच्छापैरुसच्छायो यागमंडपः ।७

ब्रह्माजी ने कहा—जब इस प्रकार गणों को साथ लेकर वीरभद्र ने गमन किया, तब दक्ष ने देवताओं सहित उसके लक्षण देखे । हे नारद ! वीरभद्र के गमन समय में यज्ञ के विध्वंस होने के सूचक तीन उत्पादक हुए ।१-२। दक्ष का वाम नेत्र, हाथ उरु आदि अङ्ग फड़कनेलगे तथाअन्य अनेक कष्टदायक उत्पात दिखाई दिये ।३। यज्ञ की भूमि कम्पायमान हो उठो, मध्यान्ह में ही नक्षत्र दिखाई देने लगे ।४। दिशायें मलीन होगई सूर्य में काले धब्बे दिखाई पड़ने लगे, अन्य सैकड़ों भयंकर अपशकुन हुए ।५। विजली और अग्निके समान तारे गिरने लगे, नक्षत्रों की गति टेढ़ी तथा अधोमुखी हो गई ।६। दक्ष के सिरको स्पर्श करते हुए सैकड़ों गिद्ध उड़ने लगे, उनकी छाया से यज्ञ मण्डप ढक गया ।७।

ववाशिरे यागभूमौ क्रोष्टारो नेत्रकस्तदा ।
उल्कावृष्टिरभूत्तत्राश्वेतश्चिकसंभवा ।८
खरा वाता वबुस्तत्र पांशुवृष्टिसमन्विताः ।
शलभाश्च समुद्भूता विवर्तानिलक पिताः ।६
रीतैश्च पवनैरुद्ध स दक्षाध्वरमंडपः ।
देवान्वितेन दक्षेणयः कृतोनूतनोद्भुतः ।१०
वेमुर्दक्षादयस्सर्वे तदाशोणितमद्भुतम् ।
वेमुश्च माँसखण्डानि सशल्यानि मुहुर्मुहुः ।११
सकंपाश्च वभूवुस्ते दीपा वातहताइव ।
दुःखिताश्चाभवन्सर्वे शस्त्रधाराहता इव ।१२
सदा निन दजातानि वाष्पवर्षाणि तत्क्षणे ।
प्रातस्तुषारवर्षाणि पद्मानीव वनाँतरे ।१३
दक्षाद्यक्षीणि जातानि ह्यकस्माद्विशदान्यपि ।
निशायां कमलाश्चैव कुमुदानीव सङ्क्षवे ।१४

गीदड़ और नेत्रक पक्षी शब्द करने लगे, श्वेत मृश्चिकों के साथ उल्कापात होने लगा ।८। पांशुवृष्टि के साथ तीखी वायु चल पड़ी, सब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर से शलभ हो गये तथा आवर्त्त की वायु अत्यन्त वेगसे चलने लगी ।९। दक्ष का मण्डप रीति वाली वायु से ही उड़ने लगा जिसे देवताओंके सहयोग से दक्ष ने नवीन और अद्‌भुत ढग से दबाया ।१०। दक्षादि सब रक्तवमन करने लगे तथा शल्य सहित मांसके टुकड़े मुखके द्वारा गिरने लगे ।११। वायु के कारण शव दीपक काँपने लगे तथा सभी जीव शस्त्र की धारसे आहत हुए के समान दुःखी हो गये ।१२। उस शब्दसे शत्रुओं की वर्षा होने लगी, जैसे प्रातःकालीन ओस से कमल म्लान हों, सभी के मुख ऐसे हो रहे थे ।१३। जैसे रात्रि में कुमद विशद हो जाते हैं वैसे ही दक्ष आदि के नेत्र अकस्मात् बड़े हो गये ।१४।

असृग्वर्षं देवश्च तिमिरेणावृता दिशः ।
दिग्दाहोऽभूद्विशेषेण त्रासयन् सकलाञ्जनान् ।१५
एवं विधान्यरिष्टानि ददृशुर्विबुधादयः ।
भयमापेदिरेऽत्यंतं मुने विष्ण्वादिकास्तदा ।१६
भुवि ते मूर्च्छिताः पेतुर्हा हताः स्म इतीरयन् ।
तरवस्तीरसजाता नदीवेगहता इव ।१७
पतित्वा ते स्थिता भूमौ क्रूरा सर्पाहता इव ।
कन्दुका इव ते भूयः पतिताः पुनरुत्थिताः ।१८
तपस्ते तापसन्तप्ता रुरुदुः कुररी इव ।
रोदनध्वनिसक्रांत्वोक्तिप्रत्युक्तिका इव ।१९
सवैकुंठास्ततस्सर्वे तदा कुंठितशक्त्यः ।
स्वस्वोपकंठमाकंठं लुलुठुः कमला इव ।२०
एतस्मिन्नन्तरे तत्र संजाताँ चाशरीरवाक् ।
श्रावयत्यखिलान् देवान्दक्षं चैव विशेषतः ।२१

आकाश से लोहित वर्षा होने लगी, दिशायें अन्धकार से भर गयीं सब प्राणियों के लिए दुःखदायी दिग्दाह होने लगा ।१५। हे मुने ! इस प्रकार देवताओं ने बहुत उत्पात देखे विष्णु आदि को भी बड़ा भय प्रतीत हुआ ।१६। 'हाय मरे' कहते वे वैसे ही गिर पड़े जैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदी के वेग से तट के वृक्ष गिर जाते हैं ।१७। क्रूर सर्प द्वारा डसे हुए समान वे पृथिवी पर गिर गये तथा गेंद के समान उठते और पुनः गिर पड़ते थे ।१८। फिर वह ताप संतप्त होकर कुररी के समान रोने लगे और शक्ति तथा प्रत्युक्त करने लगे ।१९। विष्णु सहित सभी की शक्ति क्षीण हो गई और वे कमल के समान अपने स्थानों के लिए लौट पड़े । ।२०। तभी वहां आकाश वाणी हुई उसे सभी देवताओं ने और विशेष कर दक्ष ने भी सुना ।२१।

धिग्जन्म तव दक्षाद्य महामूढोसि पापधीः ।
भविष्यति महद्दुःखमनिवार्यं हरोद्भवम् ।२२
हाहापि नात्रेये मूढास्तव देवादस्स्थिताः ।
तेषामपि महादुःखं भविष्यति न संशयः ।२३
तच्छ्रुत्वाकाशवनं दृष्ट्वारिष्ठानि तानि च ।
दक्षः प्रापद्भयं चाति परे देवादयोपि ह ।२४
वेपमानस्तदा दक्षो बिकलश्चाति चेतसि ।
अगच्छच्छरणं विष्णोः स्वप्रभोरिन्दिरापतेः ।२५
सुप्रणम्य भयाविष्टः संस्तूय च विचेतनः ।
अवोचद्देवं तं विष्णु स्वजनवत्सलम् ।२६

आकाश वाणी ने कहा--हे दक्ष ! तुम अत्यन्त पापी और मूढ़ को धिक्कार है । शिवजी द्वारा तुम्हें दुःख प्राप्ति अवश्य होगी ।२२। यहाँ जितने देवता उपस्थित हैं, वे सब भी महा दुःख प्राप्त करेंगे ।२३। ब्रह्मा जी ने कहा-ऐसी आकाश वाणी सुनकर और उत्पात देखकर दक्ष तथा देवताओं ने बड़ा दुःख माना ।२४। दक्ष अत्यन्त कम्पित और व्याकुल हुआ अपने स्वामी नारायण की शरण में गया ।२५। प्रणाम कर स्तुति की तथा भय से शंकित होता हुआ उनसे बोला ।२६।

विष्णु द्वारा शिव की सामर्थ्य का वर्णन

देवदेव हरे विष्णु दीनबन्धो कृपानिधे ।
मम रक्षा विधातव्या भवता साध्वरस्य च ।१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षकस्त्वं मखस्यै च मखस्यैच मखकर्मा मखात्मकः ।
कृपा विधेया यज्ञस्य भङ्गो भवतु न प्रभो ।२
इत्थं बहुविधांदक्षः कृत्वा विज्ञप्तिमादरात् ।
पपात पादयोस्तस्य भय व्याकुलमानसः ।३
उत्थाप्य तं ततो विष्णुर्दक्षं विप्लवमानसम् ।
श्रुत्वा च तस्य तद्वाक्यं कुमतेरस्मरच्छिवम् ।४
स्मृत्वा शिवं महेशानं स्वप्रभुं परमेश्वरम् ।
अवदंच्छिवतत्वज्ञो दक्षं सम्बोधयन्हरिः ।५
श्रृणु दक्ष प्रवक्ष्यामि तत्वतः श्रृणु मे वचः ।
सर्वथा ते हितकरं महामन्त्रसुखप्रदम् ।६
अवज्ञा हि कृता दक्ष त्वया तत्वमजानता ।
सकलाधीश्चरस्यैव शंकरस्य परात्मनः ।७

दक्ष ने कहा–देवदेव ! हे दीनबन्धो ! हे विष्णो ! आप कृपा के सिन्धु हैं, जैसे भी हो सके, इस यज्ञ में मेरी रक्षा करो ।१। आप मेरे यज्ञ के रखवाले, यज्ञ रक्षक तथा साक्षात् यज्ञात्मा है, मेरा यज्ञ भंग न हो ऐसी कृपा कीजिए ।२। ब्रह्माजी ने कहा–कि दक्ष ने इस प्रकार बहुत भांति प्रार्थना की और भय से व्याकुल होकर वह उनके चरणों में गिर पड़ा ।३। विष्णुजी ने उस व्याकुल दक्ष को उठाया और उनकी बात सुनकर उन्होंने शिवजी का स्मरण किया ।४। अपने प्रभु भगवान् शंकर का स्मरण कर, शिवतत्व के ज्ञाता नारायण बोले–हे दक्ष ! तुम मेरी बात सुनो ! मैं तुम्हारे लिए हितकारो महामन्त्र कहता हूँ ।५–६। तुमने सर्वेश्वर शंकर का तत्व न जानकर उनका निरादर किया है ।७।

ईश्वरावज्ञया वर्वं कार्यं भवति सर्वथा ।
विफलं केवलं नैव विपत्तिश्च पदेपदे ।८
अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते ।
त्रिणि तत्र भविष्यन्ति दारिद्रयं मरणं भयम् ।९
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन माननीयो वृषध्वजः ।
अमानितान्महेशाच्च महद्भयमुपस्थितम् ।१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्यापि न वयं सर्वे प्रभवः प्रभवामहे ।
भवतो दुर्नयेनैव मया सत्यानुदीय्यते ।११
विष्णोस्तद्वचनं श्रुत्वा दक्षश्चितापरोऽभवत् ।
विविर्णवदनो भूत्वातूष्णीमासीद्भुवि स्थितः ।१२
एतस्मिन्नन्तरे वीरभद्रः सैन्यसमन्वितः ।
अगच्छदध्ववं रुद्रप्रेरितो गणनायकः ।१३
पृष्ठे केचित्समायाता गगनं केचिदागताः ।
दिशश्च विदिशः सर्वे समावृत्य तथापरे ।१४

ईश्वर की अवज्ञा करने वाले को केवल कार्य में सफलता नहीं पद-पद विपत्ति उठानी पड़ती है ।८। जहां अपूजनीयों का पूजन और पूजनीयों का निरादर होता है वहाँ दारिद्रय, मृत्यु और भय तीनों की प्राप्ति होती है ।९। भगवान् शिवजी सब प्रकार मान्य हैं, उनका तिरस्कार करने से ही इस घोर भय की तुम्हें प्राप्ति हुई है ।१०। तुम्हारी दुर्नीति के कारण ही अब हम सभी का प्रभाव न रहेगा, यह बात सत्य समझो ।११। ब्रह्माजीने कहा कि भगवान् विष्णु की बात से अत्यन्त चिन्तिय हुआ दक्ष व्याकुल मन से, विवर्ण होकर मौन खड़ा रहा ।१२। इसी समय महान् सेना के सहित रुद्र द्वारा भेजा गया वीरभद्र वहाँ पहुँचा ।१३। कई गण उसके पीछे से और कोई नभ-मार्ग से तथा कोई दशा, विदिशा से वहां आ गये ।१४।

शर्वाज्ञया गणाः शूरा निर्भया रुद्रविक्रमाः ।
असंख्याः सिंहनादान्वै कुर्वन्तो वीरसत्तमाः ।१५
तेन नादेन महता नादितं भुवनत्रयम् ।
रजसा चावृतं व्योम तमसा चावृत्ताः दिशः ।१६
सप्तद्वीपान्विता पृथ्वी चचालातिभयव्कुला ।
सशैलकानना तत्र चुक्षुभुस्सकलाब्धयः ।१७
एवंभूतं तत्सैन्यं लोकक्षयकरं महत् ।
दृष्ट्वा च विस्मितास्सर्वे वभूवुरमरादयः ।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैन्योद्योगमथालोक्य दक्षश्चासृङ् मुख कुल: ।
दंडवत्पतितो विष्णु सललत्रोऽभ्यभाषत ।१९
भवद्बलेनैव मया यज्ञ: प्रारम्भितो महान् ।
सत्कर्मसिद्धये विष्णो प्रमाणं त्वं महाप्रभो ।२०
विष्णो त्वं कर्मणां साक्षीं यज्ञानां प्रतिपालक: ।
धर्मस्य वेदगर्भस्य ब्रह्मणस्त्वं महाप्रभो ।२१
तस्माद्रक्षा विधातव्या यज्ञस्यास्या मम प्रभो ।
त्वदन्य: कस्समर्थोस्ति यतस्त्व सकलप्रभु: ।२२

शिव आज्ञा से वह गण निर्भय, पराक्रमी तथा शूर थे, वे सब वीर वहाँ असंख्य सिंहनाद करने लगे उससे तीनों भुवन शब्दायमान हो गये तथा आकाश धूलसे और दिशायें अन्धकार से परिपूर्ण हो गयी।१५ १३। सप्त दीप युक्त पृथिवी भय के कारण कांपने लगी तथा वनों सहित पर्वत और समुद्र भी चलायमान हो गये।१७। इस प्रकार उस लोकनाशक महासेना को आया देखकर देवता आदि सभी क्षुब्ध हो उठे।१८। सेना का उद्यम देखकर दक्ष का शीश झुक गया और वह भगवान् विष्णु के समक्ष दण्ड के समान गिरता हुआ कहने लगा।१९। दक्ष ने कहा--हे प्रभो ! मैंने आपके बल के भरोसे ही इस महान् यज्ञका प्रारम्भ किया था और इस कार्य की सिद्धि आपकी कृपा से ही सम्भव है।२०। हे, विष्णो ! आप कर्मों के साक्षी तथा यज्ञों के पालन कर्त्ता हैं। हे प्रभो ! आप ही वेद धर्म के अधिष्ठान स्वरूप ब्रह्म हैं।२१। इसलिए आपको इस यज्ञ की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि आपके अतिरिक्त अन्य कौन इस कार्य में समर्थ हो सकता है।२२।

दक्षस्य वचनं श्रुत्वा विष्णुर्दीनतरं तदा ।
अवोचद्बोधयंस्तं वै शिवतत्वपराङ्मुखम् ।२३
मया रक्षा विधातव्या तवयज्ञस्य दक्ष वै ।
ख्यातो मम प्रण: सत्यो धर्मस्य परिपालनम् ।२४
तत्सत्यं तु त्वयोक्तं हि किं तत्तस्य व्यतिक्रम: ।
श्रृणुष्वं वचम्यहं दक्ष क्रूरबुद्धित्यजाऽधुना ।२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैमिषे निमिषक्षेत्रे यज्जातं वृत्तमद्भुतम् ।
तत्कि न स्मर्यते दक्ष विस्मृतं किं कुबुद्धिना ।२६
रुद्रकोपाच्च को ह्यत्र समर्थो रक्षणे तव ।
न यस्याभिमतं दक्ष सस्त्वाँ रक्षतिदुर्मतिः ।२७
किं कर्म किमकर्मेति तन्न पश्यसि दुर्मते ।
समर्थं केवलं कर्म न भविष्यति सर्वदा ।२८

ब्रह्माजी ने कहा-दक्ष के वचन सुनकर विष्णुजी सन्तुष्ट हो गये तथा शिवतत्व से परमुख दक्ष को समझाते हुए कहने लगे ।३२। विष्णु जी ने कहा--हे दक्ष ! धर्म का पालन मेरा कर्त्तव्य है, इसलिए मैं तुम्हारे यज्ञ की रक्षा करूँगा ।२४। तुमने सत्य कहा है, परन्तु तुम अब अपनी क्रूर बुद्धि को छोड़ दो इसी में कल्याण है ।२५। हे दक्ष ! नैमिषारण्य में जो घटना हुई थी क्या वह तुम्हें याद नहीं हैं ? क्रूर बुद्धि से तुम उसे भुला बैठे हो ।२६। हे दक्ष! तुम्हारी रक्षा करना भी सुमति नहीं है, रुद्र के कोप से तुम्हारी रक्षा करने में कौन समर्थ होगा ।२७। हे दुर्बुद्धि वाले ! तुम कर्म-अकर्म को नहीं देखते हो, परन्तु सब बातों में ही कर्म को सफलता नहीं हो सकती ।२८।

स्वकर्मविद्धि तद्येन समर्थत्वेनजायते ।
न त्वन्यः कर्मणो दाता शंभवेदीश्वरं विना ।२९
ईश्वरस्य च यो भक्त्या शांतस्तद्गतमानसः ।
कर्मणो हि फलं तस्य प्रयच्छति सदा शिवः ।३०
केवलं ज्ञानमाश्रित्य निरीश्वरापरा नराः ।
निरयं ते च गच्छन्ति कल्पकोटिशतानि च ।३१
पुनः कर्ममयैः पाशैर्बद्धा जन्मनि जन्मनि ।
निरयेषु प्रपच्यन्ते केवलं कर्मरूपिणः ।३२
अयं रुद्रगणाधीशो वीरभद्रोऽरिमर्दनः ।
रुद्रकोपाग्निसभूतः समावायोध्वरांगणे ।३३
अयसस्मद्विनाशार्थमागतोऽस्ति न संशयः ।
अशक्यमस्यास्त्येव किमप्यस्तु तु वस्तुतः ।३४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना कर्म वही समझो, जिसमें सामर्थ्य हो, कर्म का फल देने में समर्थ शिव के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है।२९। शान्त चित्त से भक्ति पूर्वक ईश्वर में मन लगाने वाले को ही शिवजी कर्मका फल प्रदान करते हैं।३०। जो मनुष्य ईश्वर को नहीं मानते और केवल ज्ञान के आश्रय में ही बढ़ने की इच्छा करते हैं, वे सैकड़ों करोड़ वर्षों के नरक में पड़ते हैं।३१। फिर जन्म जन्मान्तर रूप कर्म के फन्दों में बंध कर कर्म रूपी नरक को बारम्बार प्राप्त होते हैं।३२।यह शत्रुओं का नाश करने वाला वीरभद्र रुद्रगणों का अधीश्वर है तथा रुद्र की क्रोधाग्निसे उत्पन्न होकर ही यहाँ आया है।३३। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे विनाशार्थ ही यहाँ आया है उसको शान्त करना यथार्थ ने तो क्या कल्पना में भी सम्भव नहीं है।३४।

प्रज्जाल्यास्मानयं सर्वान् ध्रुवमेव महाप्रभुः।
ततः प्राक्षांतहृदयो भविष्यति न संशयः।३५
श्रीमहादेवशपथं समुल्लंघ्य भ्रमान्मया।
यतः स्थितं ततः प्राप्यं मया दुःखं त्वया सह॥३६
शक्तिर्मम तु नास्त्येव तु दक्षाद्य तन्निवारणे।
शपथोल्लंनादेव शिवद्रोही यतोस्म्यहम्।३७
कालत्रयेपि न यतो महेशद्रोहिणा सुखम्।
ततोऽवश्यं मया प्राप्त दुःखमणेत्वया सह।३८
सुदर्शनाभिधं चक्रमेतस्मिन्न लगित्यति।
शैवचक्रमिदं यस्मादशैवलयकारणम्।३९
विनापि वीरभद्रेण नामैतच्चक्रमैश्वरम्।
हत्वा गमिष्यत्यधुना सत्वरं हरसन्निधौ।४०
शैव शपथमुल्लंघ्य स्थितं मां चक्रमीदृशम्।
असंहत्यैव सहसा कृपयैव स्थिरं परम्।४१
अतः परमिदं चक्रमपिन स्थास्यमिध्रुवम्।
गमिष्यत्यधुनाशीघ्रं ज्वालामालासमाकुलम्।४२

वह हम सबको इस यज्ञ में भस्म करके फिर शान्त होगा,इसमेंसंशय नहीं है।३५। भ्रमवश शिवजी की शपथ का उल्लंघन कर यहाँ ठहरना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका परिणाम तुम्हारे सहित प्रत्यक्ष ही प्राप्त है ।३६। हे दक्ष ! इस उत्पात को शान्त करना मेरी सामर्थ्य से बाहर है ।शपथ का उल्लंघन करने के कारण मैं भी शिवद्रोही हो गया ।३७। शिवद्रोही को त्रिकालमें भी सुख की प्राप्ति नहीं होती, तुम्हारे इसी दुष्कर्म के कारण मुझे भी दुःख मिला है ।३८। इस पर सुदर्शन चक्र भी प्रहार करने में समर्थ नहीं है क्योंकि यह शैव-चक्र अशैवों पर ही प्रहार करता है ।३९। यदि इस चक्र को छोड़ा गया तो यह वीरभद्र पर प्रहार किये विना ही शङ्कर के पास पहुँच जायगा ।४०। शिवजी की शपथ का उल्लंघन करने पर भी वह चक्र मेरे पास स्थित है, इसे शिवजी की परम कृपा ही समझनी चाहिए ।४१। अन्यथा यह चक्र किसी प्रकार भी नहीं ठहर सकता और ज्वालामुखी से व्याकुल होकर तुरन्त ही यहाँ से चला जायगा ।४२।

वीरभद्रः पूजितोऽपि शीघ्रमस्माभिरादरात् ।
महाक्रोधसमाक्राँतो नास्मान्संरक्षयिष्यति ।४३
अकांडप्रलयोऽस्माकमागतोद्य हि हा हहा ।
हाहा वत तं वेदानी नाशोस्मकामुपस्थितः ।४४
शरण्योस्माकधुना नास्त्येव हि जगत्त्रये ।
शङ्करद्रोहिणा लोके कश्शरण्यो भविष्यति ।४५
तनुनाशेऽपि संप्राप्यास्तैश्चापि यमयातनाः ।
ता नैव शक्यते सोढुं वहुदुःखप्रदायिनी ।४६
शिवद्रोहिणमालोकस्य दष्टदंतो यमः स्वयम् ।
तप्ततैलकटाहेषु पातयत्येव नान्यथा ।४७
गन्तुमेवाह्स्युद्यु क्तं सर्वथा शपथोत्तरम् ।
तथापि न गतश्शीघ्रं दुष्टससर्गपाततः ।४८
यदद्य क्रियतेस्माभिः पलायनमतिस्तदा ।
शार्वो नाकर्षकश्शस्त्रैरस्मानाकर्षयिष्यति ।४९

यदि हम यहाँ आदरपूर्वक वीरभद्र का पूजन करें तो भी भगवान् शंकर के क्रोधित होने के कारण यह हमारी रक्षा किसी प्रकार न कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायेगा ।४२। इस कुसमय में यह कैसा प्रलयकाल उपस्थित हुआ और हमारा तुम्हारा अन्तकाल आ गया ।४४। इस प्रकार तीनों लोकों में हमारा कोई रक्षक नहीं है, क्योंकि शिवद्रोही की रक्षा कौन कर सकता है ? ।४५। देहका नष्ट होना और यम यातना को सहन करना यह दुःख हम से किस प्रकार भोगा जायेगा ? ।४६। शिवद्रोही को देखते ही यम-राज दांत पीसते हैं और उसको गर्म तेल के कड़ाहमें डाल देते हैं ।४७। मैं शपथ से सर्वथा मुक्तहो सकता था, परन्तु दुष्ट-सग के कारण मैं उससे न निकल सका ।४८। अब यदि हम यहां से भागें तो भी शिव अपने आकर्षणास्त्रों से हमको खींच लेंगे ।४६।

स्वर्गे वा भुवि पाताले यत्र कुत्रापि वा यतः ।
श्रीवीरभद्राशस्त्राणां गमनं न हि दुर्लभम् ।५०
यावन्तश्च गणास्सन्ति श्रीरुद्रस्य त्रिशूलिनः ।
तावतामपि सर्वेषां शक्तिरेताद्दृशी ध्रुवम् ।५१
श्रीकालभैरवः काश्यां नाखग्रेणैव लीलया ।
पुरा शिरश्च चिच्छेद पञ्चमं ब्रह्मणो ध्रुवम् ।३२
एतदुक्त्वा स्थितो विष्णुरतित्रस्तमुखाम्बुजः ।
वीरभद्रोऽपि स प्राप तदैवाऽध्वरमंडपम् ।५३
एवं ब्रुवति गोविन्दे आगतं सैन्यसागरम् ।
वीरभद्रेण सहितं ददृशुश्च सुरादयः ।५४

स्वर्ग, पृथिवी, पाताल कहीं भी चले जायें, वीरभद्र के शस्त्र सभी स्थानों में पहुँच सकते हैं ।५०। त्रिशूलधारी भगवान शिव के सब गणों की ऐसी ही शक्ति हैं ।५१। शिवजी की आज्ञा से श्री काल भैरवने अपने नखों से ही काशी में ब्रह्माजी का पांचवां शीश काट डाला ।५२। यह कहकर नारायण अत्यन्त व्याकुल-मुख हो गये, तभी वीरभद्र भी यज्ञ-मण्डप में आ पहुँचा ।५३। साथ ही सेना रूप सागर उमड़ आया और सभी देवताओं ने वीरभद्र के साथ इस सेना को देखा ।५४।

वीरभद्र द्वारा लोकपालों की पराजय

इन्द्रोऽपि प्रहसन् विष्णुमात्मवादस्तं तदा ।
वज्रपाणिस्सुरैस्सार्द्धं योद्धु कामोऽभवत्तदा ।१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदेन्द्रो गजसमारूढो वस्तारूढोऽनलस्तथा ।
यमो महिषमारूढो निऋ तिः प्रेतमेव च ।२
पाशी च मकरारूढो मृगारूढस्सदागतिः ।
कुबेरः पुष्पकारूढस्संनद्धोभूदतद्रितः ।३
तथान्ये सुरसंघाश्च यक्षचारणगुह्यकाः ।
आरुह्य वाहनान्येव स्वानि स्वानि प्रतापिनः ।४
तेषामुद्योगमालोक्य दक्षश्चासृङ्मुखस्तथा ।
तदंतिकं समागत्ल सकलत्रोऽप्यभाषत ।५
युष्मद्बलेनैव मया यज्ञः प्रारम्भितो महान् ।
सत्कर्मसिद्धये यूयं प्रमाणस्स्युर्महाप्रभाः ।६
तच्छ्रुत्वा दक्षवचनं सर्वे देवास्सवासवाः ।
निर्ययुस्त्वरितं तत्र युद्धं कर्तुं समुद्यताः ।७

ब्रह्माजी ने कहा--तब इन्द्र ने नारायण का उपहास करता हुआ आत्मप्रशंसा पूर्वक वज्र ग्रहण किया और देवताओं के सहित वीरभद्र से युद्ध करने को तत्पर हुए ।१। उस अवसर पर इन्द्र ऐरावत पर, अग्नि मेढ़ें पर, यम महिष पर और निऋंति प्रेत पर ।२। वरुण मकर पर, वायु मृग पर, कुवेर, पुष्पक पर चढ़े तथा अन्य सभी देवता तैयार हो गये ।३। इसी प्रकार असंख्य देवता, यज्ञ चारण गुह्यक अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर चल दिये ।४। उनको युद्ध के लिए तत्पर रखकर नीचा मुख किये हुए दक्ष ने इन्द्र के पास आकर कहा ।५। दक्ष बोला--मैंने यह यज्ञ आपके भरोसे पर आरम्भ किया, क्योंकि आप अत्यन्त प्रभाव वाले हैं और इस यज्ञ की सिद्धि आप पर ही निर्भर है ।६। दक्ष की बात सुनकर इन्द्र सहित सभी देवता अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक युद्ध करने के लिए चले ।७।

अथ देवगणाः सर्वे युयुधुस्ते बलान्विताः ।
शक्रादयोलोकपालामोहिताः शिवमायया ।८
देवानाँ च गणानां च तदासीत्समरोमहान् ।
तीक्ष्णतोमरनाराचैयुंयुधुस्ते परस्परम् ।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेदुश्शंखाश्च भेर्य्यश्च तस्मिन् रणमहोत्सवे ।
महादुंदुभयो नेदु पटहा डिंडिमादयः ।१०
तेन शब्देन महता श्लाघ्यमानास्तदा सराः ।
लोकपालैश्च संहिता जघ्नुस्तांश्छिव किंकरान् ।११
इन्द्राद्यैर्लोकपालैश्च गणाश्शंभोः पराङ्मुखाः ।
कृताश्च मुनिशार्दूल भृगोर्मन्त्रबलेन च ।१२
उच्चाटनं कृतं तेषां भृगुणयज्वना तदा ।
यजनार्थं च देवानाँ तुष्ट्यर्थं दीक्षितस्य च ।१३
पराजितान्स्वकान्दृष्ट्वा वीरभद्रो रुषान्वितः ।
भूतस्तुपिशाचांश्च कृत्वा तानेव पृष्ठतः ।१४

फिर वे सभी बलवान देवता युद्ध करने लगे । सभी इन्द्रादि के सहित शिवमाया से मोहित हो रहे थे ।८। उस समय देवताओं और शिवगणों का भयंकर युद्ध हुआ, वे तीक्ष्ण तोमर और नाहाचों से युद्ध करने लगे ।९। उस समय शंख और भेरियाँ बजने लगीं तथा दुन्दुभि, पटह और डिमडिमी भी बजी ।१०। उस महान शब्द से उत्साहित हुए देवता लोकपालों सहित उन शिवगणों को मारने लगे ।११। उस समय भृगु के मन्त्र बल से इन्द्रादि लोकपालों ने शिवगणों का संहारकर डाला ।१२। देव यजन और दक्ष के सन्तोष के निमित्त यज्ञ कर्त्ता भृगुजी ने सबका उच्चाटन कर दिया ।१३। उन भूत, पिशाचों को हारता हुआ देखकर वीरभद्र ने क्रोधपूर्वक उन्हें पीछे कर दिया ।१४।

वृषभस्थान् पुरस्कृत्य स्वयं चैव महाबलः ।
महात्रिशूलमादाय पातयामास निर्जरान् ।१५
देवान् यक्षान् साध्यगणान् गुह्यकामचारणानपि ।
शूलघातैश्च ते सर्वे गणा प्रवेगात् जघ्निरे ।१६
केचित्द्विधा कृताः सङ्गैर्मुंद्गरैश्च विपोथिताः ।
अन्यैश्शस्त्रैरपि सुरा गणैर्भिन्नास्तदाऽभगन् ।१७
एवं पराजितास्सर्वे पलायनपरायणाः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परस्परं परित्यज्य गया देवास्त्रिविष्टपम् ।१८
केवलं लोकपालास्ते शक्राद्यास्तस्थुरुत्सुकाः ।
संग्रामे दारुणे तस्मिन् घृत्वा धैर्यं महाबलाः ।१९
सर्वे मिलित्वा शक्राद्या देवास्तत्र रणाजिरे ।
बृहस्पतिं च प्रयच्छुर्विनया नतास्तदा ।२०
गुरो बृहस्पते तात महाप्राज्ञ दयानिधे ।
शीघ्र वद पृच्छतो नः कुतोऽस्माकञ्जयो भवेत् ।२१
इत्याकर्ण्यं वचस्तेषाँ स्मृत्वा शंभु प्रयत्नवान् ।
बृहस्पतिरुवाचेदं महेन्द्रं रूढानदुर्बलम् ।२२

वृषभ पर स्थित महावली ने त्रिशूल से देवताओं को मारकर गिराना प्रारम्भ किया ।१५। देवता, यक्ष, साध्य गुह्यक और चरणादि को त्रिशूल का प्रहार कर धराशायी कर दिया ।१६। खड्ग से किसी के दो टुकडे किये, किसी पर मुद्‌गदर प्रहारकिया तथा अन्य शिवगणोंने भी शस्त्र प्रहार द्वारा देवताओं को विदीर्ण किया ।१७। इस प्रकार पराजित होते हुए देवता एक दूसरे का त्याग कर भागते हुए स्वर्ग को गये ।१८ तब इन्द्रादि देवताओं ने भी युद्धभूमि त्याग दी और अत्यन्त नम्रतापूर्वक बृहस्पति जी से कहा ।१९-२०। लोकपालों ने कहा-हे गुरो ! हे महा-पण्डित ! हे दयासिन्धो ! आप शीघ्र ही हमको वह उपाय बताइये जिससे हमारी विजय हो सके। ब्रह्माजी ने कहा--उन सबकी बात सुनकर भगवान् शिव का स्मरण करके ज्ञान दुर्बल इन्द्र से बृहस्पतिजी ने कहा ।२१-२२।

यदुक्तं विष्णुना पूर्वं तत्सर्वं जातमद्यकं ।
तदेव विवृणीमीन्द्र सावधानतया शृणु ।२३
अस्ति यक्षेश्वरः कश्चित् फलदः सर्वं कर्मणाम् ।
कर्तारं भजते सोऽपि न स्वकर्त्तुः प्रभुर्हि स ।२४
अमन्त्रौषधयस्सर्वे नाभिचारा न लौकिकाः ।
न कर्माणि न वेदाश्च न मांमांसाद्वयं तथा ।२५
अन्यान्यपि च शास्त्राणि नानावेदयुतानि च ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार से रहित होकर ही स्थित रहना चाहिए ।४। ब्रह्माजी ने कहा–हे तात ! शिवजी ने जिस समय लोक के व्यवहार के विषय में इस प्रकार कहा तो, भगवती मन में मुस्कराकर शिवजीसे परम मधुर वचन कहने लगी ।५। काली ने कहा–हे शङ्कर ! हे योगीवर्य! हे प्रभो! आपने इस समय जो भी कुछ कहा हैं क्या वह प्रकृति नहीं है? फिर आप किस तरह प्रकृति से परे हो सकते हैं ।५। आप इसका भली भांति विचार करके तत्व स्वरूप जो भी योग्य हो वही कहिए। यह सब तो सर्वदा प्रकृति से बँधा हुआ ही है ।७।

तस्मात्वया न वक्तव्यं न कार्यं किंचिदेव हि ।
वचन रचनं सर्वं प्राकृतं विद्धि चेतसा ॥८
यच्छृणोषि यदश्नासि यत्पश्यसि करोषि यत् ।
तत्सर्वं प्रकृतेः मिथ्यावादी निरर्थकः ॥६
प्रकृतेः परमश्चेत्वं किमर्थं तप्यसे तपः ।
त्वया शंभोऽधुना ह्यस्मिन्गिरौ हिमवति प्रभो ॥१०
प्रकृत्या गिलितोऽसि त्वं न जानासि निजहर ।
निजञ्चानासि चेदीश किमर्थं तप्यते तपः ॥११
वाग्वादेन च किं कार्यं ममयोगिस्त्वया सह ।
प्रत्यक्षे ह्यनुमानस्य न प्रमाणं विदुर्बुधाः ॥१२
इन्द्रियाणां गोचरत्वं यावद्भवति देहिनाम् ।
तावत्सर्वं विमन्तव्यं प्राकृत ज्ञानिभिर्धिया ॥१३
किं बहूक्तेन योगीशश्शृणु मद्वचनं परम् ।
सा चाहं पुरुषोऽसि त्वं सत्यं सत्यं न संशयः ॥१४

अतएव यह बात तो कभी भी आप को कहनी ही नहीं चाहिए कि प्रकृति से कुछ मतलब ही नहीं हैं। संसार में समस्त रचना एवं वचन आदि प्रकृति से ही हैं, इसे आप अच्छी तरह जान लेवे ।८। आपका श्रवण भोजन और दर्शन आदि को कुछ भी होता है यह सभी कुछ इस प्रकृति का ही कार्य कलाप हैं, मिथ्यावाद करना निरर्थक है ।६। यदि अपने आप आपको प्रकृति से परे मानते या कहते हैं तो, हे प्रभो ! मैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह जिज्ञासा रखती हूँ कि आपको तप से क्या प्रयोजन है और इस निर्जन स्थान में रहकर तपस्या रखने की क्या आवश्यकता है ? ।१०। हे शम्भो ! प्रकृति से गर्भित होजाने के कारण ही आप अपने स्वरूपको नहीं जानते हैं हे ईश ! यदि आपको निज का ही ज्ञान नहीं है तो फिर तपस्या किसलिए करते हैं ? ।११। हे योगीराज ? मेरा आपने साथ विवाद करने का कोई प्रयोजन नहीं है । जव किसी वस्तु का प्रत्यक्ष हो जाता है तो वहाँ विद्वान लोग अनुमान को प्रमाण नहीं माना करते हैं ।१२। शरीर धारण करने वालों को जव तक इन्द्रिय गोचर हुआ जाता है तब तक ज्ञानी लोगों को प्रजा बल से सभी कुछ प्रकृति कार्य जानना चाहिए ।१३। हे योगीश्वर ? यहाँ अधिक कथन की कोई आवश्यकता नहीं है, आप मेरे बचन सुनिये, मैं ही वह प्रकृति हूँ, यह सर्वथा सत्य है कि आप पुरुष हैं ।१४।

मदनुग्रहतस्त्वं हि सगुणो रूपवान्मतः ।
मां विना त्वं निरीहोऽसि न किंचित्कर्तु महंसि ।।१५
पराधीनस्सदा त्वं हि नानाकर्म्मकरो वसी ।
र्निविकारी कथं त्वं हि न लिप्तश्च मया कथम् ।।१६
प्रकृतेः परमोऽसि त्वं यदि सत्यं वचस्तव ।
तर्हि त्वया न भेतव्यं समीपे मम शंकर ।।१७
इत्याकर्ण्य वचस्तस्याः सांख्यशास्त्रोदितं शिवः ।
वेदांतमतसंस्थो हि वाक्यमचे शिवां प्रति ।।१८
इत्येवं त्वं यदि ब्रूषे गिरिजे सांख्यधारिणी ।
प्रत्यहं कुरु मे सेवामनिषिद्धां सुभाषिणि ।।१९
यद्यहं ब्रह्म निर्लिप्तो मायया परमेश्वरः ।
वेदांतवेद्यो मायेशस्त्वं करिष्यसि किं तदा ।।२०

यह मेरी ही कृपा का फल है कि आप सगुण ब्रह्म रूपधारी हुए हैं। मेरे अभाव में आप एक गिरोह है आप में मेरे विना कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं हैं ।१५। आप वशी हैं किन्तु ऐसा होते हुए भी आप अनेक प्रकार के कर्म किया करते हैं। आप विकार रहित किस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और मुझमें किस तरह नहीं रहते हैं ? ।१३। हे शंकर ! यदि प्रकृति से परे आप हैं और आपका प्रकृति से दूर रहने का कथन सर्वथा सत्य ही है तो फिर आपको मेरे सान्निध्य में रहने में कभी कोई भय नहीं होना चाहिए ।१७। ब्रह्माजी ने कहा--इस युक्ति प्रकार से सांख्य-शास्त्र से सम्मत भवानी की वचनावली सुनकर शिवजी देहान्त के सिद्धान्त का आश्रय लेकर कहने लगे ।१८। शंकर ने कहा-हे गिरिजे हे सुभाषिणी ! तुम इस तरह सांख्य--दर्शन के सिद्धान्त के अनुसार वाली रही तो तुम नित्य प्रति मेरी सेवा किया करो, मैं इसका निषेध तुम से कभी भी नहीं करता हूँ ।१९। मैं माया से लिप्त न रहने वाला ब्रह्म परमेश्वर देहान्त दर्शन के द्वारा जानने के योग्य हूँ ।२०।

इत्येवमुक्त्वा गिरिजां वाक्यमूचे गिरिं प्रभुः ।
भक्तानुरञ्जनकरी भक्तानुग्रहकारकः ॥२१
अत्रैव सोऽहं तपसा परेण गिरे तव प्रस्थवरेऽतिरम्ये ।
चरामिभूमौ परमार्थभावस्वरूपमानन्दमय सुलोचयन् ॥२२
तपस्तप्तुमनुज्ञा मे दातव्या पर्वताधिप ।
अनुज्ञया विना किंचित्तपः कर्तुं न शक्यते ॥२३
सांख्यवेदांतमतयोश्शिवदस्सदा ।
संवादः सुखकृच्चोक्तोऽभिन्नयोस्सुविचारतः ॥२४
गिरिराजस्य वचनात्तनयां तस्य शंकरः ।
पार्श्वे समीपे जग्राह गोरवादपि गोपरः ।२५
उवाचेदं वचः कालीं सखाभ्यां सह गोपतिः ।
नित्यं मां सेवतां यातु निर्भीता ह्यत्र तिष्ठतु ॥२६
एवमुक्त्वा तु तां देवीं सेवायै जगृहे हरः ।
निर्विकारो महायोगी नाना लीलाकरः प्रभुः ॥२७
इदमेव महद्धैर्यं धीराणां सुतपस्विनाम् ।
विघ्नवन्तयपि संप्राप्य यद्विघ्नैर्न विहन्यते ॥२८

ब्रह्माजी ने कहा--भगवन् शम्भु गौरी से इस प्रकार कहकर फिर गिरिराज बोले--भगवान् सदा अपने भक्तों के ऊपर अनुग्रह-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया करते हैं और उन्हें प्रसन्न रखने वाले हैं ।२१। हे गिरिराज ! मैं तुम्हारे इस परम सुन्दर पर्वत-प्रदेश में तप करते हुए अपने स्वरूप का परमार्थ भगवान से चिन्तन करते हुए विचरण करूँगा ।२२। हे नगाधीश ! अब आपको मुझे तपश्चर्या करने की आज्ञा प्रदान कर देनी चाहिए । विना आज्ञा के प्राप्त किये हुए किसी भी प्रकार की तपस्या नहीं की जा सकती है ।२३। सांख्य दर्शन और वेदान्त दर्शन के मत को स्वीकार करके (गौरी) और शिव (शंकर) का यह पारस्परिक सम्वाद सुख प्रद बन गया है । वस्तुतः ये दोनों भिन्नता से रहित ही हैं ।२४। भगवान् शिव ने इन्द्रियजन्य विषय सुख से परे होते हुए भी नगाधीश के वचनों का गौरव रखते हुए भवानी को अपनी सेवा में रखना स्वीकार कर लिया था ।२५। भगवान् शङ्कर ने अपनी सहेलियों के साथ रहने वाली भवानी से कहा कि तुम प्रति दिन मेरी सेवा आकर किया करो और भय रहित होकर स्थित रहो ।२६। प्रभु शिव सर्वदा विकार रहित महा योगीश्वर और विविध प्रकार की लीलायें करने वाले हैं उन्होंने इसी रीति से पार्वती को अपनी सेवा में ग्रहण किया है ।२७। धीरतापूर्वक तपश्चर्या करने वालों का यही महान्-धैर्य है जो अनेक विघ्न-बाधाओं से विचलित नहीं हुआ करते हैं ।२८।

इन्द्र द्वारा कामदेव को शिव के पास भेजना

गतेषु तेषु देवेषु शक्रः सस्मार वै स्मरम् ।
पीडित स्तारकेनाति दैत्येन च दुरात्मना ।।१
आगतस्तत्क्षणात्कामस्सवसन्तो रतिप्रियः ।
सावलेपो युतोरत्या त्रैलोक्यविजयी प्रभुः ।।२
प्रणामं च ततः कृत्वा स्थित्वा तत्पुरतस्मः ।
महोन्नतमनास्तात सांजलिश्शक्रमब्रवीत् ।।३
किं कार्य्यं ते समुत्पन्न स्मृतोऽहं केन हेतुना ।
तत्वं कथय देवेश तत्कर्तुं समुपागतः ।।४
तच्छ्रुत्वा वचन तस्य कन्दर्पस्य सुरेश्वरः ।
उवाच वचनं प्रीत्या युक्त फक्तामिति स्तवन् ।।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव साधु संमारम्भो यन्मे कार्य्यमुपस्थितम् ।
तत्कर्तुमुद्यतोऽसि त्वंधन्योऽसि मकरध्वज ॥६
न केवलं मदीयं च कार्य्यमस्ति सुखावहम् ।
किन्तु सर्वसुरादीनां कार्य्यमेतन्न संशयः ॥७

ब्रह्माजी ने कहा--देवगण के चले जाने के पश्चात् दुरात्मा तारक नाम वाले असुर से परम पीड़ित होकर देवराज इन्द्र ने कामदेव का स्मरण किया ।१। उसी समय अपनी शक्ति से त्रिभुवन को वश में करने वाला रति-वल्लभ कामदेव रति और सखा-वसन्त के सहित अभिमान-पूर्वक उपस्थित हो गया ।२। देवराज इन्द्र के सम्मुख उपस्थित होकर प्रणाम पूर्वक कामदेव ने उन्नत मन से कहा ।३।हे महेन्द्र ! ऐसा कौनसा कार्य है जिसके लिए मुझे आज याद किया है ? आप मुझे अपनी आज्ञा देवे मैं शीघ्र ही उसका पालन करने के लिए सेवा में प्रस्तुत हूँ ।४। ब्रह्माजी ने कहा--रति बल्लभ के इस प्रकार के वचन सुनकर इन्द्र को बहुत प्रसन्नता हुई और उसकी प्रशंसा करके उन्होंने यह कहा ।५। देव-राज ने कहा--हे मकरध्वज ! इस समय तुम्हारा यह आरम्भ अधिक उत्तम है और अब मेरे इस प्रस्तुत कार्य को पूर्ण करने के लिए जो तुम यहाँ सहसा उपस्थित हुए हो इसके लिए तुम परम धन्य हो ।६। यह केवल मुझे ही सुख देने वाला कार्य नहीं है अपितु यह समस्त देवगण का सुखप्रद कार्य है, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है ।७।

सङ्कटे वहु यो ब्रूते स किं कार्य्यं करिष्यति ।
तथापि च महाराज कथयामि श्रृणु प्रभो ॥८
पदं ते कर्षितुं यो वै तपस्तपति दारुणम् ।
पातयिष्याम्यहं तं च शत्रुं ते मित्र सर्वथा ॥९
क्षणेन भ्रंशयिष्यामि कटाक्षेण वर स्त्रियाः ।
देवर्षिदानवादींश्चैव नराणां गणना न मे ॥१०
वज्रं तिष्ठतु दूरे वै शस्त्राण्यन्यान्यनेकशः ।
किं ते कार्य्यं करिष्यन्ति मयि मित्र उपस्थिते ॥११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्माणं वा हरिं वापि भ्रष्ट कुर्य्यां न संशयः ।
अन्येषां गणनां मास्ति पातयेयं हरं त्वपि ॥१२
पचैव मृदवो बाणास्ते च पुष्पमया मम ।
चापस्त्रिधा पुष्पमयशिशञ्जिनी भ्रमरार्ज्जिता ॥१३
वलं सुदयिता मे हि वसन्तः सचिवस्स्मृतः ।
अहं पञ्जवलो देवा मित्रं मम सुधानिधिः ॥१४

कामदेव ने कहा--हे महाराज ! संकट के समय में अधिक बातें बोलने वाला व्यक्ति कुछ भी कार्य नहीं कर सकता है, तथापि मैं जो भी कुछ निवेदन करता हूँ इसे आप सुन लीजिए ।८। क्यों कि आप मेरे परम मित्र हैं अतएव यदि कोई भी आपका पद प्राप्त करने के लिए तपस्या करता है तो मैं आपके शत्रु का निश्चय पतन कर दूँगा ।९। चाहे कोई देवर्षि हो, या दानव क्यों न हो उसके तपोबल को ललनाओं के कटाक्षपात से क्षण भर में नष्ट-भ्रष्ट कर दूँगा, मनुष्य की तो बात ही क्या है इसका नष्ट कर देना बहुत ही साधारण काम है ।१०। आपके कठोर वज्र तथा अन्य शस्त्रास्त्र अलग ही रखे रहें,मुझ जैसे शक्तिशाली मित्र के होने पर वे मेरा कुछ भी नहीं कर सकते हैं ।११। मैं अपनी असाध्य शक्ति के द्वारा ब्रह्मा और विष्णु को भी तप से हिला सकता हूँ-शिव जैसे योगस्थ को भी कठिन समाधि से विचलित कर सकता हूँ अन्य विचारों की गिनती ही क्या है ।१२। मेरे कोमल पुष्पोंके ये पाँच बाण तीन स्थानों में झुकी हुई कुसुमों की धनुही, मधुकरों की गुञ्जार-रूपिणी प्रत्यंचा और सुन्दर रमणी ही मेरा बल है तथा ऋतुराज सहा-यक सखा है ।१३। मैं पाँच प्रकार के उपर्युक्त बल का देवता हूँ और राकापति चन्द्र मेरा घनिष्ठ मित्र है ।१४।

सेनाधिपञ्ज श्रृङ्गारो हावभावाश्च सैनिकाः ।
सर्वे मे मृदवः शक्र अहं चापि तथाविधः ॥१५
यद्येन पूर्य्यते कार्य्यं धीमांस्तत्तेन योजयेत् ।
मम योग्यं तु यत्कार्य्यं सर्वं तन्मे नियोजय ॥१६
इत्येव तु वचस्तस्य श्रुत्वा शक्रस्सुहर्षितः ।
उवाच प्रणमन्वाचा कामं कांतासुखावहम् ॥१७

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्कार्य्यं मनसोद्दिष्टं मयातात मनोभव ।
कर्त्तु तत्वं समर्थोऽसि नान्यस्मात्तस्य सम्भवः ।।१८
तारकाख्यो महादैत्यो ब्रह्मणोवरमद्भुतम् ।
अभूदजेयस्संप्राप्य सर्वेषामपि दुःखदः ।।१९
तेन संपीड्यते लोको नष्टाधर्मा ह्यनेकशः ।
दुःखिता निर्जरास्सर्वे ऋषयंश्च तथाखिलाः ।।२०
देवैश्च सकलैस्तेन कृतं युद्धं यथाबलम् ।
सर्वेषां चायुधान्यत्र विफलान्यभवन्पुरा ।।२१

रसराज श्रृंगार मेरा सेनाध्यक्ष है और हाथ-पांव की विविध चेष्टायें मेरे सैनिक हैं। हे देवराज ! ऊपर बताये हुए ये सभी मृदु स्व-रूप वाले हैं और मैं स्वयं भी मृदु रूप वाला हूँ ।१५। मतिमान् का यही कर्त्तव्य होना चाहिए कि जो भी जिस कार्य के सम्पादन करने के योग्य हो उत ही उसे कार्य के पूर्ण करनें में लगा देवे मेरे करने के लायक जो भी कोई हो उसे पूर्ण करने के लिए के आप मेरी नियुक्ति करे ।१६। ब्रह्माजी से कहा–कामदेव के ऐसे वचन सुनकर इन्द्र को बहुत ही अधिक हर्ष हुआ और वह हर्षोद्गार वचन रूप में रमणियों को सुख देने वाले कामदेव से कहे ।१७। इन्द्र ने कामदेव से कहा–हे तात ! मैंने अपने मन में जो सोचा है उसे एक मात्र तुम ही पूर्ण करने में समर्थ होते हो। अन्य किसी से भी उसका होना सम्भव है ।१८। तारक नामधारी एक महान् दैत्य है जिसने ब्रह्माजी से अद्भुत वरदान प्राप्त कर लिया है और अब अजेय हो गया हैं। उसे कोई भी युद्ध में जीत ही सका है। अब वह प्रवल वली होकर सबको दुःख देता रहता है ।१९। इस समय वह लोगों को बहुत पीड़ा दे रहा है। इसके कारण से बहुतसे कर्म नष्ट होगये हैं। समस्त देवता तथा ऋषि वृन्द इसके उत्पीड़न से महा दुःखी हो रहे हैं ।२०। देवगण ने अपने वल से उसके साथ बहुत युद्ध किया किन्तु उसके सामने सब आयुध विफल हो गये हैं ।२१।

भग्नः पाशौजलेशस्य हरिचक्र सुदर्शनम् ।
तत्कुण्ठितमभत्तस्य कण्ठे क्षिप्तं च विष्णुना ।।२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतस्य मरण प्रोक्तं प्रजेशेन दुरात्मनः ।
शम्भोर्वीर्योद्भवाद्बालान्महायोगीश्वरस्य हि ॥२३
एतकार्य्यं त्वया साधु कर्तव्यं सुप्रयत्नतः ।
ततस्स्यान्मित्रवर्य्यीति देवानां नः परं सुखम् ॥२४
ममापि विहितं तस्मात्सर्वंलोकसुखावहम् ।
मित्रधर्मं हृदि स्मृत्वा कर्तुंमर्हसि साम्प्रतम् ॥२५
शंभुस्स गिरिराजे हि तपः परमास्थितः ।
स प्रभुर्नापि कामेन स्वतन्त्रः परमेश्वरः ॥२६
तत्समीपे च देवार्थं पार्वती च स्वसखीयुता ।
सेवमाना तिष्ठतीति पित्राज्ञप्ता मयाश्रुतम् ॥२७
यथा तस्यां रुचितस्तस्य शिवस्य नियतात्मनः ।
जायते नित्तरां मोर तथा कार्यंत्वया ध्रुवम् ॥२८

वरुण देव की प्रसिद्ध पाश उनके कण्ठ में आते ही टूट गई है और नारायण का अभेद्य सुदर्शन चक्र उसके कण्ठ को छूकर ही कुण्ठित हो गया है ।२२। इस दुष्ट महान् दैत्य की मृत्यु-प्रजापति ने महा योगिराज शिवजी के वीर्य से समुत्पन्न पुत्र के द्वारा ही निर्धारित की है ।२३। हे मित्र ! इस कठिन कार्य का सम्पादन तुमको ही करना चाहिए तभी देवताओं को सर्वाधिक सुख का लाभ हो सकता है ।२४। समस्त लोकों को आनन्द देने वाला यह कर्म है । ऐसा मैंने विचार किया है अतएव तुम अब अपने मनमें मित्र-धर्म का ध्यान करके इस कार्य को करो ।२५ शंकरजी के हृदय में कोई भी कामना नहीं है और वे इस समय पर्वतों के राजा हिमालय पर घोर तपश्चर्या कर रहे हैं । भगवान् शिव परम स्वतन्त्र ईश्वर हैं ।२६। मैंने यह बात भी सुनी है कि पार्वती स्वयं उन्हें अपना पति बनाने की कामना से पिता की आज्ञा प्राप्त कर सखियों के सहित सर्वदा उनकी सन्निधि में सेवा के लिए प्रस्तुत रहा करती हैं ।२७। अतः हे रतिनाथ ! अब तुम कोई ऐसा उपाय एवं कार्य अवश्य ही करना चाहिए जिससे शंकर भगवान् में पार्वती को पत्नी रूपसे स्वीकार करने की रुचि उत्पन्न हो जावे ।२८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति कृत्वा कृती स्यास्त्वं सर्वं दुःखं विनक्ष्यति ।
लोके स्थायीं प्रतापस्ते भविष्यति न चान्यथा ॥२६
इत्युक्तस्स तु कामो हि प्रफुल्लमुखपंकजः ।
प्रेम्णोवाचेति देवेशं करिष्यामि न संशयः ॥३०
इत्युक्त्वा वचन तस्मै तथेत्योमिति तद्वचः ।
अग्रहीत्तरसा कामः शिवमायाविमोहितः ॥३१
यत्र योगीश्वरस्साक्षात्तप्यते परमं तपः ।
जगाम तत्र सुप्रीतस्सदारस्मवसन्तकः ॥३२

ऐसा कार्य करने से तुम समस्त दुःखों का नाश कर अपने जीवन में सफलहो जाओगे और निस्सन्देह संसारमें तुम्हारा प्रताप फिर स्थायी हो जायगा ।२६। ब्रह्माजी ने कहा--इतना सुनते ही कामदेव का मुख विकसित कमल की भांति खिल उठा और बड़े ही प्रेम के साथ कहाकि यह आपका कार्य मैं निश्चय ही करूँगा ।३०। इसके पश्चात् 'ओम्' अर्थात् ऐसा ही होगा--ऐसा कहकर स्वीकृति दी । उस समय शिवजी की माया से मोहयुक्त होकर ही कामदेव ने इन्द्रदेव की इस बात को स्वीकार कर लिया था ।३१। जिस हिमालय के शिखर पर साक्षात् योगिराज शंकर घोर तपस्या में लीन समाधिस्थ थे वहाँ प्रसन्न चित्त कामदेव सुन्दरी पत्नी और सखा बसन्त को साथ लेकर गया ।३२।

काम द्वारा शिवजी में मोह उत्पन्न होना

तत्र गत्वा स्मरो गर्वी शिवमायाविमोहितः ।
मोहकस्स मधोश्चादौ धर्मं विस्तारयन्स्थितः ॥१
वसन्तस्य च योधर्म्मः प्रससार च सर्वतः ।
तपः स्थाने महेशस्योषधि प्रस्थे मुनीश्वर ॥२
वनानि च प्रफुल्लानि पावकानां महामुने ।
आसन्विशेषतस्तत्र तत्प्रभावान्मुनीश्वर ॥३
पुष्पाणि सहकाराणामशोकवनिकासु वै ।
विरेजुस्सुस्मरोद्दीपकराणि सुरभीण्यपि ॥४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैरवाणि च पुष्पाणि भ्रमराकलितानि च ।
बभूवुर्मदनावेशकराणि च विशेषतः ॥५

सुकामोद्दीपनकरं कोकिलाकलकूजितम् ।
आसीदति सुरम्यं हि मनोहर मतिप्रियम् ॥६

भ्रमराणां तथा शब्दा विविधा अभवन्मुने ।
मनोहराश्च सर्वेषां कामोद्दीपकरा अपि ॥७

ब्रह्माजी ने कहा--शंकर की माया से मोहित होकर इस महाभिमानी मन्मथ ने मधुको साथ लेकर अपना मोहने वाला मायाजाल का प्रसार करना वहाँ पहुँच कर आरम्भ कर दिया ।१। मुनिवर ! जहाँ अनेक महौषधियाँ उत्पन्न होती थीं वहाँ ऋतुराज वसन्त का प्रभाव सर्वत्र फैलने लगा और उस महामहिम महेश्वर की तपोभूमि पर वसन्त को पूर्ण महिमा दिखलाई देने लगी ।२। हे मुनिश्रेष्ठ ! कामदेव के सखा वसन्त के प्रभाव से उस भूमि के समस्त वृक्ष पुष्पित हो गये और एक विशेष प्रकार की छटा दिखाई दे रही थी ।३। आम्र लतिकाओं से वीर निकल आये और अशोक-वाटिका विकसित हो गई तथा उनको मोहक सुगन्धित में काम-वासना का उद्दीपन होने लगा ।४। कैरव कुसुम मधुकरों की गूंज से शोभित हो गये और इन सभी कारणों से कामदेव का वेग बढ़ने लगा ।५। कोकिलों का कलरव काम-वासना को बढ़ाता हुआ परमप्रिय प्रतीत होने लगा ।६। हे मुनिराज ! भ्रमरों की गुञ्जार उस समय अनेक प्रकार से हो रही थी जिससे तामसों के हृदय में भी काम-वासना जागृत होने लगी ।७।

चन्द्रस्य विशदा कांतिर्विकीर्णा हि समन्ततः ।
कामिनां कामिनीनां च दूतिका इवसाभवत् ॥८

मानिनां प्रेरणा यासीत्तत्काले कालदीपिका ।
मारुतश्च मुखः साधो ववौ विरहिणोऽप्रियः ॥९

एवं वसंतविस्तारो मदनावेशकारकः ।
वनौकसां तदा तत्र मुनीनां दुस्सहोऽत्यभूत् ॥१०

अचेतसामपि तदा कामासक्तिरभून्मुने ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुचेतसां हि जीवानां सेति किं वर्ण्यते कथा ॥११
एवं चकार स मधुस्स्वप्रभावं सुदुस्सहम् ।
सर्वेषां चैव जीवानां कामोद्दीपनकारकः ॥१२
अकालनिर्मितं तात मधोर्वीक्ष्य हरस्तदा ।
आश्चर्य्यं परमं मेने स्वलींलात्ततनुः प्रभुः ॥१३
अथ लीलाकरस्तत्र तपः परमदुष्करम् ।
तताप स वशीशीहि हरो दुःखहरः प्रभु ॥१४

सर्वत्र चन्द्रमा की चारुतत चांदनी छिटक उठी जो कि कामी और कामनियों के लिए दूतिकाओं के समान प्रतीत हो रही थी ।८। उस वक्त काम की उद्दीपन तथा मानी और माननीयों के मान का भजनकर विहार करने को अग्रसर होने की प्रेरणा देने वाली विरही जनों को अति अप्रिय वायु चलने लगी ।९। वहाँ उस समय वसन्त ऋतु का ऐसा विस्तार सर्वत्र छा गया कि तपोनिरत मुनियों के हृदय में भी काम की उद्दीप्त वासना जाग उठी और वनवासी मुनिजनों के लिए वह दुःसह्य हो गई ।१०। हे मुनिवर ! उस समय कुछ ऐसा प्रबल प्रभाव सर्वत्र फैल गया कि चेतना वाले प्राणियों की तो बात ही क्या है जो जड़ अचेतन थे उनमें भी काम की आसक्ति ने घर बना लिया ।११। बसन्त ऋतुका ऐसा दुःसह्य प्रभाव सभी ओर फैल गया कि समस्त जीवों के हृदय में वहाँ पर असह्य काम का उद्दीपन हो गया था ।१२। हे तात ! उस समय विना प्रकृति काम के ऋतुराज का ऐसा चमत्कृत प्रभाव देखकर भगवान शंकर अत्यन्त आश्चर्य करने लगे क्यों कि प्रभु ने तो लीला का विस्तार करने के लिए ही शरीर धारण किया है ।१३। उस समय सब का दुःख निवारण करने वाले शिवजी परम सयुक्त होकर लीलापूर्वक दुष्कर तपश्चर्या करने में निरत हो गये ।१४।

वसन्ते प्रसृते तत्रकामो रतिसमन्वितः ।
चूतं वाणं सभाकृष्य स्थितस्तद्वामपार्श्वतः ॥१५
स्वप्रभावं वितस्तार मोहयन्सकलाञ्जनान् ।
रत्या युक्तं तदा कामं दृष्ट्वा को वा न मोहितः ॥१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं प्रवृत्तसुरतौ शृंगारोऽपि गणैस्सह ।
हविभावयुतस्तत्र प्रविवेश हरांतिकम् ॥१७
मदन: प्रकटस्तत्र न्यवसच्चित्तगो वहि: ।
न दृष्ट्वांस्तदाशंभोश्छिद्रं येन प्रविश्यते ॥१८
यदा चाप्राप्तविवरस्तस्मिन्योगिवरेस्मर: ।
महादेवस्तदा सोऽभून्महाभयविमोहित: ॥१९
ज्वलज्ज्वालाग्निसंकाशभालनेत्रसमन्वितम् ।
ध्यानस्थ शङ्करं को वा समासादयितुं क्षम: ॥२०
एतस्मिन्नन्तरे तत्र सखीभ्यां संयुता शिवा ।
जगाम शिव पूजार्थं नीत्वा पुष्पाण्यनेकश: ॥२१

इस तरह बसन्त ने अपना पूर्ण प्रभाव प्रसूत कर दिया तब कामदेव अपनो स्त्री रति को साथ लेकर आम्र की मृदुल मञ्जरि का बाण चढ़ाकर शिवजी के वाम-भाग में स्थित हो गया ।१५। कामदेव के प्रभाव के विस्तारसे सभी मोहित हो गये । ऐसा कोई भी न वच सका तरह रति की प्रवृत्ति हुई तो रस राज शृङ्गार भी अपने हाव-भाव आदि सैनिकगणों को लेकर शंकरजी के निकट प्रविष्ट हो गया ।१७। अपने पूर्ण प्रभाव के साथ कामदेव प्रकट तो हो गया किन्तु शिवजी के मन में कोई छिद्र न पाकर, प्रवेश न कर सका और वाहर ही स्थिर बना रहा।१८। जब कामदेव ने योगीश्वर शिव के हृदय में काम-विकार उत्पन्न करने का कोईभी अवसर नहीं प्राप्त किया तो स्वयं महान होते हुए भी महादेवजी से भयभीत होकर मोहित हो गया ।१९। शङ्कर के मस्तक में रहने वाला तीसरा नेत्र परम प्रज्वलित होकर अग्नि के समान प्रकाश युक्त हो रहा था । ध्यानावस्था में समाधिस्थ भगवान् शिव को अपने अधीन बनाने की शक्ति किस की हो सकती है ।२०। उसी समय नित्य की भाँति भवानी अपनी सखी सहेलियों सहित बहुत से पुष्प हाथों में लेकर शिव को अर्चा करने को वहाँ आ गई ।२१।

यदा शिवसमीपे तु गता सा पर्वतात्मजा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदैव शंकरो ध्यानं त्यक्त्वा क्षणमवस्थित: ॥२२
तच्छिद्रं प्राप्य मदनः प्रथमं हर्षणेन तु ।
बाणेन हर्षयामास पार्श्वस्थं चन्द्रशेखरम् ॥२३
शृङ्गारैश्च तदा भावैस्सहिता पार्वती हरम् ।
जगाम काम साहाय्ये मुने सुरभिणा सह ॥२४
तदैवाकृष्य सच्चापं रुज्यर्थं शूलधारिण: ।
द्रुतं पुष्पशरं तस्मै स्मरोऽमुञ्चत्सुसंयत: ॥२५
यथा निरन्तरं नित्यमागच्छति: तथा शिवम् ।
तन्नमस्कृत्य तत्पूजां कृत्वा तत्पुरत: स्थिता ॥२६
सा दृष्टा पार्वती मंत्र प्रभुणा गिरिशेन हि ।
विवृण्वती तदांगानि स्त्रीस्वभावात्सुलज्जया ॥२७
सुसंस्मृत्यवरं तस्या विधिदत्तं पुरा प्रभु: ।
शिवोऽपि वर्णयामास तदङ्गानि मुदा मुने ॥२८

जब पार्वती शिवजी के बिल्कुल समीप में पहुँची तो भगवान् शंकर एकक्षण के लिए अपनी समाधि छोड़कर जागृत होगये ।२२। कामदेव ने इतना ही छिद्र प्राप्य कर लिया और प्रसन्न होकर पासमें स्थितहोते हुए अमोघ बाण द्वारा शिव को आह्लादित करने लगा।२३। हे मुनिवर उस समय अपने पूर्ण शृङ्गार और हाव-भावों के साथ पार्वती का आगमन ऐसा हुआ मानों वह कामदेव की सहायता के लिए मन्द सुगन्ध से पूर्ण वायु के साथ वहाँ आई हों ।२४। उस समय कामदेव को पूरा अवसर प्राप्त हो गया और शिवजी की मनोरुचि को भवानी के निरीक्षण आदि व्यापारों के बढ़ाने के लिए उसने अपना धनुष सँभाल कर सावधानी से पुष्प बाण का प्रहार शिव पर किया ।२५। प्रतिदिन की भाँति शिव के समीप में स्थित होकर प्रणाम, अर्चना और वन्दना का कार्य क्रम के लिए उस समय पार्वती शिव के सम्मुख प्रस्तुत हो गई ।२६। शिव ने उस दिन कुछ विशेष रुचि के साथ पार्वती को जैसे ही देखा तो वह स्त्री सुलभा स्वभाव से लज्जित सी होकर, अपने अङ्ग-प्रत्यंगों को सिकोड़ने लगी ।२७। उस समय विधाता के दिये वरदान कर स्म-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रण कर शिवजी पार्वतीके अंगों की सुन्दरता की प्रशंसा करने लगे।२८

किं मुखं किं शशांकञ्च किं नेत्रे चोत्पले च किम् ।
भ्रकुक्यौ धनुषी कैते कन्दर्पस्य महात्मनः ।।२६
किं गतिर्वर्ण्यते ह्यस्याः किं रूपं वर्ण्यत मुहुः ।
पुष्पाणि किं च वर्ण्यन्ते वस्त्राणि व तथा पुनः ।।३०
लालित्यं चारुसृष्टौ तदेकत्र विनिर्मितम् ।
सर्वथा रमणीयानि सर्वांगानि न संशयः ।।३१
अहो धन्यतरा चेयं पार्वत्यद्भुतरूपिणी ।
एतत्समा न त्रैलोक्ये नारी कापि सुरूपिणीं ।।३२
सुलावण्ययि धिश्चेयमद्भुतांगानि विभ्रता ।
विमोहिनी मुनीनां च महासुखवित्र्द्धिनीं ।।३३
क्षणमात्रं विचार्य्येत्यं संपूज्य गिरिजां ततः ।
प्रबुद्धस्स महाथोगी सुविरक्तोजगाविति ।।३४
किं जातं चरितं चित्र किमह मोहमागतः ।
कामेन विकृतश्चाद्यभूत्वापि प्रभुरीश्वरा ।।३५
ईश्वरीहं यदीच्छपं परांगस्पर्शनं खलु ।
तर्हि कोऽन्यौऽक्षमः क्षुद्रः किं नैव करिष्यति ।।३६
एवं वैराग्यमाद्य पर्य्यंकांसादनं च तत ।
वारयामास सर्वात्मा परेशः किं पतेदिह ।।३७

शिव के मुख से ये वचन निकल पड़े पार्वती का यह मुख हैं या चन्द्रमा है--ये नेत्र हैं या पूर्ण विकसित कमल हैं–क्या ये भृकुटियाँ हूँ अथवा मनोभाव कामदेव का धनुष है ।२। इसकी गति भी अनूठी है, रूप भी अनुपम है और पुष्पोंके आभरण वथा वस्त्रादि भी सभी अनोखे दिखाई देते हैं । यहाँ किसका वर्णन किया जावे कुछ समझमें नही आता है ।३०। इस संसार को रचना में जितना भी जो लालित्य है वह सभी बटोर कर विधाता ने इसी एक में भर दिया है । यह पूर्णतया निरसदेह है कि इस पार्वती के समस्त अंग-प्रत्यंग सब प्रकार से सुन्दर एव मन को हरण करने वालेहैं ।३१। यह महान् अद्भुत एवं रमणीय रूप पाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्वती परम धन्य है। इसकी समता रखने वाली एवं सुन्दरी अन्य कोई भी स्त्री लोक में नहीं हो सकती है।३२। पार्वती लावण्य की खान है और अनुपम सुन्दर अङ्गों को धारण करती हुई मननशील मुनियोंके भी मन को मोहित करने वाली तथा अनिर्वचनीय सुख देने वाली है।३३। शिवजी क्षण मात्र में ही भवानी के सौन्दर्य की प्रशंसा करते हुए कुछ विचार कर रहे थे कि उन योगीश्वर शम्भु को चेतना आ गई और तुरन्त ही विरक्ति भावना में मग्न होकर कहने लगे।३४। यह क्या विचित्र घटना हुई ? मुझे ऐसा महामोह किस प्रकार और क्यों हुआ ? समर्थ और ईश्वर होते हुए भी मुझे कामदेव ने विकार युक्त किस तरह कर दिया ?।३५। मैं इतना समर्थ होते किसी के अस्पृश्य अङ्ग का स्पर्श करने की लालसा रक्खूँ तो फिर साधारण सामर्थ्य विहीन क्षुद्र पुरुष संसार में क्या-क्या नहीं करेंगे ?।३६। इस तरह पूर्ण परिपक्व वैराग्य में निमग्न होकर शिव ने अपने मन से पार्वती की प्राप्ति को एक दम हटा दिया। सर्वान्तर्यामी परमेश का क्या कभी भी पतन होना सम्भव हो सकता है ?।३७।

शिव द्वारा कामदेव का भस्म किया जाना

धैर्यस्य व्यसनं हृष्ट्वा महायोगी महेश्वरः।
विचिचित मनस्येवं विस्मितोऽस ततः परम् ॥१
किमु विघ्नाः समुत्पन्नाः कुर्वतस्तप उत्तमम्।
कोन मे विकृतं चित्तं कुतमत्र कुकर्मिणा।२
कुवर्णनं मया प्रीत्या परस्त्र्युपरि वै कृतम्।
जातो धर्मविरोधोऽत्रश्रुतिसीमा विलंघिता ॥३
विचिन्त्येत्थं महायोगी परमेशस्सतां गतिः।
दिशो विलोकयामास परितश्शङ्कितस्तदा ॥४
वामभागे स्थितं कामं ददर्शाकृष्टवाणके।
स्वशरं क्षेप्तुकामं हि गर्वितं मूढ़ चेतसम् ॥५
तं हृष्ट्वा तादृशं कामं गिरीशस्य परात्मनः।
संजातः क्रोधसंमर्दस्तत्क्षणादपि नारद ॥६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामः स्थितोऽन्तरिक्षे स धृत्वा तत्सशरं धनुः ।
चिक्षेपास्त्रं दुर्निवारममोघं शङ्करे मुने ।।७

महान योगीश्वर महादेवजी ने अपने धैर्य में विघ्न होता देखकर विस्मय पूर्वक गहन विचार किया और इस घटना पर बहुत अधिक आश्चर्य किया ।१। शिवजी मन में कहने लगे मुझे घोर तपश्चर्या करते हुए इस प्रकार के विघ्न क्यों उपस्थित हुए और किस दुरात्मा ने मेरे नितान्त शांत चित्त में ऐसा विकार उत्पन्न कर दिया ? ।२। मैंने अनुराग विभोर होकर अन्य स्त्री के रूप-लावण्य का वखान किया–यह धर्म के सर्वथा विरुद्ध ही हुआ । मुझसे आज शास्त्र की मर्यादा का प्रत्यक्षतः उल्लंघन हुआ है ।३। ब्रह्माजी ने कहा–सत्पुरुषों का उद्धार करने वाले महायोगीश्वर परमेशने ऐसा सोचते हुए अ'कित होकर समस्त दिशाओं का अवलोकन किया ।४। उस समय शिवजी ने देखा कि उनके वाम्भाग में कामदेव वाण छोड़ने की इच्छा रखकर खड़ा हुआ हैं और उनसे अपनी विजय का लाभ पाने पर वह महामूढ़ वहुत गर्वित हो रहा है ।५। इस दूषित भावना से उपस्थित मदन को देखकर भगवान् गिरीश को महान क्रोध उत्पन्न हो गया ।६। हे मुनीश्वर ! उसी समय कामदेव भयभीत होकर अपना धनुष वाण वहीं छोड़ अन्तरिक्ष में स्थित हो गया उसने ऐसा समझ रक्खा था कि मैंने अपना दुर्निवार अमोघ वाण शंकर जी पर चला दिया है ।७।

वभूवामोघमस्त्रं तु मोघ तत्परमात्मनि ।
समाशाम्यत्ततस्तस्मिन्सक्रुद्धे परमेश्वरे ।।८
मोघीभूते शिवे स्वेस्त्रे भयमापाशु मन्मथः ।
चकंपे च तुरास्थित्वा दृष्ट्वा मृत्युञ्जयं प्रभुम् ।।९
सस्मार त्रिदशान्सर्वान्शक्रादीन्भयविह्वलः ।
स स्मरो मुनि शार्दूल स्त्रप्रयासे निरर्थके ।।१०
कामेन सुस्मृता देवाश्शक्राद्यास्ते मुनीश्वर ।
आययुः सकलास्ते हि शंभु नत्वा च तुष्टुवुः ।।११
स्तुतिं कुर्वत्सु देवेषु क्रुद्धस्याति हरस्य हि ।
तृतीयात्तस्य नेत्राद्वै निस्ससार ततो महान् ।।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललाटमध्यगात्तस्मात्स वह्निरुद्गतसम्भवः ।
जज्वालोर्द्ध्वशिखो दीप्तः प्रलयाग्निसमप्रभः ।१३
उत्पत्य गगने पूर्णे निपत्य धरणीतले ।
भ्रामंभ्रामं स्वपरितः पपातमेदिनीं परि ।१४

वह काम का अमोघ अस्त्र परमेश में निष्फल हो गया और शिवके क्रोध उत्पन्न होने पर उसकी अमोघता नष्ट हो गई।८। शिवजी के ऊपर चलाये हुए अस्त्र के विफल हो जाने से कामदेव को बड़ा भय हो गया और प्रभु मृत्युञ्जय को कोपनिष्ठ देखकर वह काँप उठा ।६। उस भयसे बहुत व्याकुल होकर कामदेव ने देवराज इन्द्र आदि देवों को याद किया क्योंकि मदन का किया हुआ सभी प्रयास व्यर्थ हो गया था ।१०। हे मुनीश्वर ! मन्मथ ने जब देवों का स्मरण किया तो समस्त देवताओं ने वहाँ आकर शिव को प्रणाम किया और वन्दना करने लगें ।११। जब से समस्त देवगण शिवजी का स्तवन कर रहे थे, उसी क्षण अत्यन्त क्रुद्ध महेश्वर के तृतीय नेत्र से जो विशाल ललाट के मध्य में था, अग्नि का पुञ्ज प्रकट होकर प्रलय कालीन अग्नि के समान ऊर्ध्व शिखा वाला प्रदीप्त होकर जल उठा ।१२-१३। तुरन्त ही उस प्रदीप्त अग्नि के तेज को आकाश, भूमि और अपने चारों तरफ दौड़ते हुए देखकर कामदेव पृथ्वी पर गिर पड़ा ।१४।

भस्मसात्कृतवान्साधो मदनं तावदेव हि ।
यावच्च मरुतां वाचः क्षम्यतां क्षम्यतामिति ।१५
हते तस्मिन्स्मरे वीरे देवा दुःखमुपागताः ।
रुरुदुर्विह्लाश्चात्क्रोशंतः किमभूदिति ।।१६
क्षणमात्रं रतिस्तत्र विसंज्ञा साभवत्तदा ।
भर्तृमृत्युजदुःखेन पतिता सा मृता इव ।१७
जातायां चैव संज्ञायां रतिरत्यन्तविह्वला ।
विललाप तदा तत्रोच्चरन्ती विविधं वचः ।१८
किं करोमि क्व गच्छामि किं कृत दैवतैरिह ।
मत्स्वामिनं समाहूय नाशयामासुरुद्धतम् ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ प्रस्तुत देवताओंका समुदाय जब तक यही प्रार्थना कर रहाथा कि "अपराधी को क्षमा कीजिए" तब तक तो उस आग ने कामदेव को जलाकर भस्मभूत कर दिया ।१५। उस समय उस पर परम वीर मदन-देव के नाश हो जाने से देवगणों को अत्यन्त दुःख हुआ और वे सब दुःखाकुल होकर रुदन करते हुए कहने लगे-यह क्या हो गया ? ।१६। थोड़े समय के लिए कामदेव की स्त्री रति बेहोश होकर अपने स्वामी की मृत्यु की असह्य वेदना से गिर कर मूच्छित दशा में मृतक के समान हो गई थी ।५७। कुछ समय के पश्चात होश में आकर पति-वियोग के दुःख से बेचैन होकर करुणा विलाप करती हुई विविध भाँतिके वचन बोलने लगी ।१८। रति ने रोते हुए कहा--मैं क्या करूँ और कहाँ जाकर किसका आश्रय लूँ ! यह देवगणों ने क्या कर दिया । मेरे पति को अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए यहां भेजकर मेरा सर्वनाश ही कर दिया ।१६।

पार्वती को नारदजी का उपदेश

विधे तात महाप्राज्ञ विष्णुशिष्य त्रिलोककृत् ।
अद्भुतेयं कथा प्रोक्त शङ्करस्य महात्मनः ।१
भस्मीभूते स्मदे शंभुतृतीयनयनाग्निना ।
तस्मिन्प्रविष्टे जलधौ वद त्वं किमभूत्ततः ।२
किं चकार ततो देवी पार्वती कुधरात्मजा ।
गता कुत्र सखीभ्यां सा तद्वदाद्य दयानिधे ।३
श्रृणु तात महाप्राज्ञ चरित शशिमौलिनः ।
महोतिकारकस्यैव स्वामिनी मम चादरात् ।४
यदादहच्छंभुनेत्रोद्भवो हि मदनं शुचिः ।
महाशब्दोऽद्भूद्वै येनाकाशः प्रपूरितः ।५
तेन शब्देन महता कामं दग्धं समीक्ष्य च ।
सखीभ्यां सह भीता सा ययौ स्वगृहमाकुला ।६
तेन शब्देन हिमवान्परिवारसमन्वितः ।
विस्मितोऽभूदतिक्लिष्टस्सुतां स्मृत्वा गतां ततः ।७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारदजी ने कहा हे तात ब्रह्माजी ! महामनीषी! हे विष्णु भगवान् के शिष्य ! त्रैलोक्य की रचना करने वाले भगवान् शिव की परम अद्भुत यह कथा आपने मुझे सुनाई है ।१। शिवजी के तृतीय नेत्र की प्रदीप्त अग्नि की ज्वाला से जब कामदेव भस्म हो गया और यह अग्नि समुद्र में प्रवेश कर गई इसके पश्चात् क्या हुआ ? ।२। पर्वतराज की पुत्री पार्वती उस समय सखियों के साथ कहाँ चली गईं और उसने फिर क्या किया ? हे दयासागर ! यह और मुझे बताइये ।३। ब्रह्माजी बोले--हे महान भाग्य वाले तात ! जब मेरे स्वामी अद्भुत चरित्र करने वाले शिवजी का चरित्र मैं तुमको सुनाता हूँ, उसे तुम आदरपूर्वक सुनो ।४। जब शिव के नेत्र से समुत्पन्न अग्नि के द्वारा कामदेव भस्म हुआ था उस उक्त ऐसा भयङ्कर शब्द हुआ था कि समस्त गगन मंडल उससे गूँज उठा था ।५। इस महाध्वनि से कामदेव को ताप दग्ध सोच कर पार्वती बहुत व्याकुल हो गईं और सखियों के साथ अपने स्थान में चली गईं ।६। उस भयानक शब्द को सुनकर नाराज हिमालय को बड़ा विस्मय हुआ और तपोनिरता अपनी पुत्री पार्वती का स्मरण करते हुए वहाँ सपरिवार पहुँच गये ।७।

जगाम शोकं शैलेशो सुतां दृष्ट्वातिविह्वलाम् ।
रुदन्ती शंभुविरहादाससादलेश्वरः ।८
आसाद्य पाणिना तस्या मार्जयन्नयनद्वयम् ।
मा विभीहि शिवेऽरोदीरित्युक्त्वा तां तदाग्रहीत् ।९
क्रोडे कृत्वा सुतां शीघ्रं हिमवान चलेश्वरः ।
स्वमालयमथानिन्ये सांत्वयन्नतिविह्वलाम् ।१०
अन्तर्हिते स्मरं दग्ध्वा हरे तद्विरहाच्छिवा ।
विकलाभूद् भृशंसा वै लभे शर्म न कुत्रचित् ।११
पितृगृहं तदा गत्वा मिलित्वा मातरं शिवा ।
पुनर्जातं तदा मेने स्वात्मानं सा धरात्मजा ।१२
ततस्त्वं पूजितस्तेन भूधरेण महात्मना ।
कुशलं पृष्टदांस्तं तदा विष्टो वगासने ।१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततः प्रोवाच शैलेशः कन्याचरितमादितः ।
हरसेवान्वितं कामदहनं च हरेण ह ।१४

हिमालय को अपनी आत्मजा पार्वती को शोक से व्याकुल देखकर बहुत अधिक कष्ट हुआ ।८। शैलराज शिव के विरह की वेदनासे व्याकुल पार्वती के पास पहुँचे और पार्वती के नेत्रों से अपने हाथों के द्वारा आँसुओं को पोंछकर कहने लगे–'हे शिवे ! तुम डरो मत, रुदन बन्द कर दो, ऐसा कहकर उन्होंने पार्वती को ग्रहण करते हुए ढाँढस बधाया ।९। नगाधिराज ने इस तरह पार्वती को समझाते हुए अपनी गोद में बैठाया और फिर अपने भवन में लिवा ले गये ।१०। कामदेव को भस्मी भूत करने के पश्चात शिव अन्तर्धान हो गईं उन्हें किसी भी स्थान में शान्ति नहीं मिल सकी ।११-१२। ब्रह्माजी ने कहा––हे नारद ! उस समय इन्द्र ने मतिमान हिमालय के स्थान पर तुमको नियुक्त किया और विचरण करते हुए तुम वहाँ पहुँच गये थे ।१३। वहाँ शैलराजने तुम्हारी अर्चना कर तुम्हें श्रेष्ठासन पर बैठाया और तुमने उनसे कुशल क्षेम का प्रश्न किया । हिमालय ने पुत्री पार्वती की सेवा एवं तपस्या और शिव के द्वारा काम दहन का सारा चरित्र आपको सुनाया ।१४।

श्रुत्वावोचो मुनेत्त्वं तु तं शैलेशं शिवं भज ।
तमामंत्र्योदतिष्ठस्त्वं संस्मृत्य मनसा शिवम् ।१५
तं समुत्सृज्य रहसि कालीं तामगमस्त्वरा ।
लोकोपकारको ज्ञानी त्वं मुने शिवबल्लभः ।१६
आसाद्य कालीं संबोध्य तद्धिते स्थित आदरात् ।
अवोचस्त्वं वचस्तस्यै सर्वेषां ज्ञानिनां वरः ।१७
श्रृणु कालि वचो मे हि सत्यं वच्मि दयारतः ।
सर्वथा ते हितकारं निर्विकारं सुकामदम् ।१८
सेवितश्च महादेवस्त्वयेह तपसा विना ।
गर्वं वत्या यदध्वसीद्दीनानुग्रहकारकः ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरक्तश्च स ते स्वामी महायोगी महेश्वरः ।
विसृष्टवान्स्मरं दग्ध्वा त्वां शिवे भक्तवत्सलः ।२०
तस्मात्त्वं सुतपोयुक्ता चिरमाराधयेश्वरम् ।
तपसां संस्कृतां रुद्रस्य द्वितीया करिष्यति ।२१

हे मुनिराज ! यह सुनकर तुमने शैलेश को उपदेश किया था कि तुम शिव की आराधना करो और इतना कहकर शङ्कर के परम प्रिय एवं ज्ञाननिधि तुम एकान्त में बैठी हुई पार्वती के पास पहुँच कर कहने लगे ।१५-१६। भवानी के समीप जाकर बड़े आदर के साथ सम्बोधन करके उसके हित के लिए ज्ञानियों में श्रेष्ठ एवं परोपकारी आपने अति उत्तम वचन कहे थे ।१७। नारदजी ने कहा–हे काली ! मुझे आप पर इस समय बड़ी दया आ रही है, इसलिए मैं तुमसे तुम्हारे हित करने वाले जो भी कुछ वचन कहता हूँ उन्हें तुम दत्त चित्त होकर सुनो । मेरे वचन तुम्हारे परम हितकारी और विकार रहित कामना के प्रदान करने वाले हैं ।१८। तुमने महेश्वर की सेवा तो की, किन्तु वह तपस्या से रहित थी और तुमको उस सेवा का बहुत गर्व सा हो गया था । इसलिए दीन हितकारी शिव ने अनुग्रह करके ही तुम्हारा वह गर्व नष्ट किया है ।१९। हे शिवा ! तुम्हारे स्वामी महेश्वर महान योगी और परम विरक्त हैं । वे भक्तवत्सल हैं और इसीलिए उन्होंने दुरात्मा कामदेव को भस्म करके भी तुमको छोड़ दिया था । अतएव अब तुम कुछ अधिक समय तक तपस्या करके महेश्वर प्रभु की आराधना करो तपश्चर्या से सुसंस्कृत हो जाने वाली तुमको भगवान् शङ्कर अवश्य ही स्वीकार कर लेंगे ।२०-२१।

त्वं चापि शङ्करं शम्भुं न त्यक्ष्यसि कदाचन ।
नान्यं पतिं हठाद्देवि ग्रहीष्यसि शिवादृते ।२२
इत्याकर्ण्य वचस्ते हि मुने साभूधरात्मजा ।
किंचिदुच्छ्वसिता लाली प्राह त्वां साँजलिर्मुदा ।२३
त्वं तु सर्वज्ञ जगतामुपकारकर मुभो ।
रुद्रस्याराधानार्थां मंत्रं देहि मुने हि मे ।२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न सिद्ध्यति क्रियां कापि देवर्षे सद्गुरुं विना ।
मया श्रुता पुरा सत्यं श्रुतिरेषा सनातनी ।२५
इति श्रुत्वा वचस्तस्याः पार्वत्या मुनिसत्तमः ।
पञ्चाक्षरं शम्भुमन्त्रं विधिपूर्वमुपादिशः ।२६
अवोचश्च वचस्तां श्रद्धामुत्पादयन्मुने ।
प्रभावं मन्त्रराजस्य तस्य सर्वाधिकं मुने ।२७
श्रृणु देवि मनोरस्य प्रभाव परमाद्भुतम् ।
तस्य श्रवणमात्रेण शङ्करस्सू प्रसीदति ।२८

हे देवि ! फिर तुम कभी भी महेश्वर का त्याग नहीं कर सकोगी और केवल शङ्करको ही तुम हठपूर्वक अपना पति बनाओगी अन्य किसी भी देव को नहीं ।२२-२३। ब्रह्माजी ने कहा शैलजा इस प्रकार के नारदजी के वचन सुनकर एक ऊँची श्वांस भरकर करबद्ध होकर नारदजी से (तुमसे) बोली ।२४। पार्वती से कहा--हे देवर्षि ! आप तो संसार में समस्त प्राणियों का उपचार एवं हित करने वाले हैं । अब आप भगवान रुद्र की सेवाराधना करने के लिए अपना गुरु-मन्त्र प्रदान कीजिए ।२५। संसार में अच्छे गुरु की प्राप्ति के अभाव में कभी भी कोई क्रिया सिद्ध नहीं होती---ऐसी मैंने सुन रक्खा है और यही सन्तान श्रुति भी है । ब्रह्माजी ने कहा--हे मुनिवर ! आपने ऐसे पार्वती के विनयपूर्ण वचन सुनकर उसको सविधि शिवके 'नमः शिवाय' इस पंचाक्षरी मन्त्र का उपदेश दिया था ।२६-२७। हे मुनिश्रेष्ठ ! परम श्रद्धा की भावना को उपजाते हुए आपने इस मन्त्रराज का अतुल प्रभाव सर्वश्रेष्ठ प्रतिपादन करते हुए कहा–हे देवि ! पञ्चाक्षरी मन्त्र-राजा बड़ा ही अद्भुत प्रभाव होता है । इसके श्रवण करने से ही महेश्वर प्रभु प्रसन्न हो जाते हैं ।२८।

मन्त्रोयं सर्वमन्त्रेणामधिराजश्च कामदः ।
भुक्तिमुक्तिप्रदोऽत्यंतं शङ्करस्य महाप्रियः ।२९
सुभगे येन जप्तेन विधिना सोऽचिराद्द्रुतम् ।
आराधितस्ते प्रत्यक्षो भविष्यति शिवो ध्रुवम् ।३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंतयन्ती च तद्रूपं नियमस्याक्षराक्षरम् ।
जप मन्त्रं शिवे त्वं हि सन्तुष्यति शिवो द्रुतम् ।३१
एवं कुरु तपस्साध्वि तपस्साध्यो महेश्वरः ।
तपस्येव फलं सर्वैः प्राप्यते नान्यथा क्वचित् ।३२

मैं तुम्हें इसका प्रभाव बतलाता हूँ । उसे तुम सुनो। यह सभी मंत्रों का राजा है । हार्दिक कामना तथा भुक्ति और मुक्ति के प्रदान करने की इसमें सामर्थ्य है और यह मन्त्र शङ्कर भगवान को अत्यन्त प्रिय है ।२६। हे सुभगे ! जिस समय भक्ति के साथ तुम इस मन्त्र का जाप करोगी तो तुम्हारी आराधना से बहुत ही शीघ्र निःसन्देह शिव प्रत्यक्ष हो जायेंगे ।३०। शिवे ! नियमपूर्वक शिव स्वरूप का मन में ध्यान करती हुई इस मन्त्र के जप से निश्चय ही शिव शीघ्रही तुम पर प्रसन्न हो जायेंगे । हे महेश ! तपस्या से ही प्राप्त हो सकते हैं और लोक में सब तप से ही अभीष्ट फल की प्राप्ति किया करते हैं । तप का प्रभाव ध्रुव सत्य है इसमें कुछ भी अन्यथा नहीं है ।३१-३२।

शिव के निमित्त पार्वती का तप करना

त्वयि देवमुनौ याते पार्वती हृष्टमानसा ।
तपस्साध्यं हरं मेरे तपोर्थं मन आदधे ।१
ततः सख्यौ समादाय जयां च विजया तथा ।
मातरं पितरं चैव सखीभ्यां पर्यपृच्छतः ।२
प्रथमं पितरं गत्वा हिमवन्तं नगेश्वरम् ।
पर्यपृच्छत्प्रणम्य विनयेन समन्विता ।३
हिमवञ्च्छ्रूयतां पुत्रीवचनं कथ्यतेऽधुना ।
सा स्वयं चैव देहस्य रूपस्यापि तथा पुनः ।४
भवतोहि कुलस्यास्व साफल्यं कर्तुमिच्छति ।
तपसा साधनीयोऽसौ नान्नथा दृश्यतां व्रजेत् ।५
तस्माच्च पर्वतश्रेष्ठ देयाज्ञा भवताधुना ।
तपः करोतु गिरिजा वनं गत्वेति सादरम् ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्येवं च तदा पृष्टस्सखीभ्यां मुनिसत्तम ।
पार्वत्या सुविचार्याथ गिरिराजोऽब्रवीदिदम् ।७

ब्रह्माजी ने कहा--हे मुनिराज ! वहाँ से आपके गमन करने के पश्चात् पार्वती परम प्रसन्न हुई और मन में महेश्वर तप के द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं ऐसा दृढ़ निश्चय कर भवानी ने तपस्या में ही मन लगा दिया ।१। फिर अपनी जया-विजया नाम वाली दो सहेलियों के साथ पार्वती ने अपने माता-पिता तथा अन्य सखी जनों में जाकर पूछा ।२। सर्व प्रथम अपने पिता हिमालय से प्रणाम पूर्वक विनय और भक्ति के साथ पूछा ।३। पार्वती की दोनों सहेलियों ने हिमालय से प्रार्थना की हे राजन् ! आपकी पुत्री पार्वती अपने देह और रूप को सफल करने के लिए आपसे कुछ निवेदन करना चाहती है, आप कृपाकर उसे सुने ।४। यह आपकी आत्मजा आपके कुल को सफल करने की इच्छा करती है। इसे अब निश्चय हो गया है कि भगवान् शंकर तप से ही साध्य हो सकते हैं अन्य कोई भी उपाय उनके प्रत्यक्ष करने का नहीं है ।५। अतएव हे शैलाधीश ! आपको अब कृपा कर इसे आज्ञा प्रदान कर देनी चाहिए कि यह पार्वती वन में जाकर शिव की प्रसन्नता के लिए तपस्या करें ।६। ब्रह्माजी ने कहा-जब पार्वती सखियों ने हिमालय से पूछा तो शैलराज कुछ विचार कर कहने लगे ।७।

मह्यं च रोचतेऽत्यर्थं मेनायै रुच्यतां पुनः ।
यथेदं भवितव्यं च किमतः परमुत्तमम् ।८
साफल्यं तु मदीयस्य कुलस्य च न संशयः ।
मातुः तु रुच्यते चेद्वै ततः शुभतरं न किम् ।६
इत्येवं वचनं पित्रा प्रोक्तं श्रुत्वा तु ते मुदा ।
जग्मतुर्मातरं सख्यौ तदाज्ञप्ते दया सह ।१०
गत्वा तु मातरं तस्या पार्वत्याते च नारद ।
सुप्रणम्य करौ बध्वोचतुर्वचनमादरात् ।११
मातरत्वं वचनं पुत्र्याः शृणु देवि नमोऽस्तु ते ।
सुप्रसन्नतया तद्वै श्रुत्वा कर्तुं मिहार्हसि ।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तप्तुकामा तु ते पुत्री शिवार्थं परमं तपः ।
प्राप्तानुज्ञा पितुश्चैव तुभ्यं च परिपृच्छति ।१३
इयं स्वरूपसाफल्यं कर्तुकामा पतिव्रते ।
त्वदाज्ञां यदि जायेत तप्यते च तया तपः ।१४

शैलराज ने कहा--मुझे पार्वती का ऐसा निश्चय बहुत पसन्द आया है किन्तु इस प्रकार तप करने की आज्ञा पार्वती की माता से लेनी चाहिए । यदि ऐसा हो जावे तो इससे श्रेष्ठतम अन्य क्या बात हो सकती है ।९। ब्रह्माजी ने कहा शैलराज के ऐसे वचन सुनकर वे दोनों सखी पार्वती की मातासे पार्वती की तपस्या के हेतु अनुमति प्राप्त करने के लिए वहाँ गईं ।१०। हे नारद ! वे दोनों भवानी की माता के समक्ष प्रयास पूर्वक सादर करबद्ध हो प्रार्थना करने लगी ।११। सखियों ने कहा--माता ! आपकी पुत्री आपसे कुछ निवेदन करना चाहती है और आपको प्रणाम करती है । आप प्रसन्नतापूर्वक इनकी प्रार्थना को स्वीकार करने योग्य है।१२। आपकी पुत्री अपने अभीष्ट देव शंकरको प्राप्त करने के लिए वनमें जाकर तप करना चाहती है । इसने अपने पिताजी से तो आज्ञा प्राप्त करली है । अब आपसे अनुमति लेने के लिए यहां उपस्थित हुई हैं ।१३। हे पतिव्रते आपकी पार्वती अपने रूप को सफल बनाना चाहती है । यदि आपकी आज्ञा प्राप्त हो जावे तो वह वन में जाकर कठोर तपोव्रत धारण कर लेंगी ।१४।

इत्युक्त्वा च ततस्सख्यौ तूष्णीमास्तां मुनीश्वर ।
नांगीचकार मेना सा तद्वाक्यं खिन्नमानसा ।१५
ततस्सा पार्वती प्राह स्वयमवाथ मातरम् ।
करौ बद्ध्वा विनीतात्मा स्मृत्वा शिवपदांबुजम् ।१६
मातस्तप्तुं गमिष्यामि प्रातः प्राप्तुं महेश्वरम् ।
अनुजानीहि मां गन्तु तपसेऽद्य तपोवनम् ।१७
इत्याकर्ण्य वचः पुत्र्या मेना दुःखमुपागता ।
सोपाहूय तदा पुत्री मुवाच विकला सती ।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःखितासि शिवे पुत्रि तपस्तप्तुं पुरा यदि ।
तपश्चर गृहेऽद्य त्वं न बहिर्गच्छ पार्वति ।१९
कुत्र यासि तपः कर्तुं देवास्संति गृहे मम ।
तीर्थानि च समस्तानि क्षेत्राणि विविधानि च ।२०
कर्तव्यो न हठः पुत्रि गन्तव्यं न बहिः क्वचित् ।
साधितं किं त्वया पूर्वं पुनः किं साधयिष्यसि ।२१

हे मुनीश्वर ! यह कहकर वे सखियाँ चुप हो गईं और पार्वती की माता मेनाने व्याकुलतावश उसको स्वीकार नहीं किया ।१५। उस समय भवानी ने मन में शिव का ध्यान रखकर स्वयं ही विनयपूर्वक हाथ जोड़ कर माता से प्रार्थना की ।१६। पार्वती ने कहा--हे माता मैं महेश की प्राप्ति के लिए कल प्रातःकाल ही तपस्या करने के लिए तपोवन में प्रस्थान करूँगी, अतः आप प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा प्रदान कर ।१७। ब्रह्माजी ने कहा--प्रिय पुत्री के इस वचन के सुनने से मेना को अत्यन्त दुःख हुआ और परम विकल होकर बेटी को अपने पास बैठाकर कहने लगीं ।१८। मेना ने कहा--हे पुत्री शिवे ! यदि तुझे दुःख है और तेरी शिव के निमित्त तपस्या करने की ही प्रबल इच्छा है तो तू यहाँ अपने घर में ही स्थित रहकर तपश्चर्या कर, बाहर कहीं भी मत जा ।१९। तू वन में घर छोड़कर कहाँ जायगी ? मेरे इस घर में सभी देवता तीर्थ और अनेक उत्तम क्षेत्र विद्यमान रहते हैं ।२०। हे पुत्री ! इस विषय में विशेष हठ करना उचित नहीं है । तपके लिए बाहर मत जाओ । इससे पूर्व तुमने क्या साधना कर ली है और क्या करना चाहती हो ।२१।

शरीरं कोमलं वत्से तपस्तु कठिनं महत् ।
एतस्मात्तु त्वया कार्यं तपोऽत्र न बहिर्व्रज ।२२
स्त्रीणां तपोवनगतिर्न श्रुता कामनार्थिनी ।
तस्मात्त्वं पुत्रि मा कार्षीस्तपोर्थं गमनं प्रति ।२३
इत्येवं बहुधा पुत्री तन्मात्रा विनिवारिता ।
संवेदे न सुखं किंचिद्विनाराध्य महेश्वरम् ।२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपोनिषिद्धा तपसे वनं गन्तुं च मेनया ।
हेतुना तेन सोमेति नाम प्राप शिवा तदा ।२५
अथ तां दुःखितां ज्ञात्वा मेना शैलप्रिया शिवाम् ।
निदेशं सा ददौ तस्याः पार्वत्यात्तपसे मुने ।२६
मातुराज्ञां च स प्राप्य सुव्रता मुनिसत्तम ।
ततः स्वांते सुखं लेभे पार्वती स्मृतशङ्करा ।२७
मातरं पितरं साथ प्रणिपत्य मुदा शिवा ।
सखीभ्यां च शिवं स्मृत्वा तपस्तप्तुं समुद्गता ।२८

हे बेटी ! तेरा शरीर कुसुमसे भी अधिक कोमल है और तपस्याका कार्य वहुत कठिन है । इसलिए तू यही अपनी साधना पूरी कर, कहीं बाहर मत जाओ ।२२। हे मनोकामना रखने वाली पार्वती ! तपोवन में स्त्रियों की जाति नहीं सुनी गई है । अतएव तपस्या करने के लिए वन गमन नहीं करना चाहिए ।२३। ब्रह्माजी ने कहा–मेना ने अनेक प्रकारसे पुत्री को तपोवन जाने का निवारण किया किन्तु भवानी ने शंकर की आराधना के अतिरिक्त किसी भी तरह सुख नहीं समझा ।२४। मेना ने अनेक बार तपस्या करने के लिए वन में जाने का निषेध किया इसी कारण से भवानी का नाम 'उमा' पड़ गया ।२५। हे मुनीश्वर शैलराज की पुत्री शिवा को अत्यन्त दुःखित जानकर मेना ने उसे तपश्चर्या करने के लिए आज्ञा प्रदान करदी ।२६। मुनीश्वर! उस समय माता की आज्ञा प्राप्तकर सुव्रत वाली भवानी ने शंकरजी का स्मरण करके हृदयमें बहुत सुख का लाभ लिया ।२७। गौरी अपने माता-पिता को प्रणाम करके शिवजी के चरणों का स्मरण करते हुए अपनी दो सहेलियों को साथ में लेकर वन में तपस्या करने के लिए चली गई ।२८।

हित्वा मतान्यनेकानि वस्त्राणि विविधानि च ।
वल्कलानि धृतान्याशु मौजीं बद्ध्वातु शोभनाम् ।२९
हित्वा हारं तथा चर्म्मं मृगस्य परमं धृतम् ।
जगाम तपसे तत्र गङ्गावतरणं प्रति ।३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंभुना कुर्वता ध्यानं यत्र दग्धो मनोभवः ।
गङ्गावतरणो नाम प्रस्थो हिमवतस्स च ।३१
हरशून्योऽथ ददृशे स प्रस्थो हिमभूभृतः ।
काल्या तत्रेत्थं भोस्तात पार्वत्या जगदम्बया ।३२
यत्र स्थित्वा पुरा शंभुस्तप्तवान्दुस्तरं तपः ।
तत्र क्षणं तु सा स्थित्वा बभूव विरहार्दिता ।३३
हा हरेति शिवा तत्र रुदन्ती सा गिरेस्सुता ।
विललापाति दुःखार्ता चिन्ताशोकसमन्विता ।३४
ततश्चिरेण सा मोह धैर्य्यात्सं स्तम्य पार्वती ।
नियमायाऽभवत्तत्र दीक्षिता हिमवत्सुता ।३५

विविध भाँतिके आभूषण तथा अनेक प्रकारके वस्त्रादिकों को त्याग कर भवानीने कटि में सुन्दर मौञ्जी बाँधली और वल्कलके वस्त्र लज्जा निवारणार्थ धारण कर लिए ।२९। कठहार के स्थान में मृग चर्म धारण कर लिया और गङ्गोत्तरी के निकट तप करने को चल दी ।३०। जिस स्थान पर भगवान् शंकर ने अपनी समाधि लगाई थी और जहाँ पर मन्मथ को भस्म किया था वही गङ्गा के अवतरण होने का एक हिमालयका प्रस्थ है ।३१। हे तात ! सबसे पहले पार्वती उसी स्थलपर पहुँची किन्तु उस जगदम्बा के वहाँ पहुँचने के समय पर वह स्थान शिवजी से रहित पड़ा था ।३२। सर्वप्रथम शिवजी ने उस स्थान पर परम उत्कट तपस्या की थी । वहाँ एक क्षण के लिए पार्वती स्थित रहीं और फिर शिव के विरह में बहुत अधिक व्याकुल हो गयीं ।३३। अत्यन्त वियोगके दुःख में बेचैन होती हुई भवानी गहन शोकमग्न होकर 'हा शंकर' यह कहकर रुदन करने लगी ।३४। बहुत समय के पश्चात् रुद्राणी ने धैर्य धारण कर विरह के मोहको स्तम्भित किया और दीक्षित विधान से तपश्चर्या के लिए नियम धारण किये ।३५।

तपश्चकार सा तत्र शृङ्गितीर्थे महोत्तमे ।
गौरीशिखरनामासीत्तपः करणाद्धि तत् ।३६
सुन्दराश्च द्रुतमास्तत्र पवित्राश्शिवया मुने ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरोपिता: परीक्षार्थं तपस: फलभागिना: ।३७
भूमिशुद्धि तत: कृत्वा वेदी निर्माय सुन्दरी ।
तथा तपस्समा ब्यं मुनीनामपि दुष्करम् ।३८
विगृह्य मनसा सर्वाणीद्रियाणि सहाशु सा ।
समुपस्थानिके तत्र चकार परमं तप: ।३९
ग्रीष्मे च परितो वह्निं प्रज्वलंतं दिवानिशम् ।
कृत्वा तस्थौ च तन्मध्ये सततं जपती मनुम् ।४०
सततं चैव वर्षासु स्थंडिले सुस्थिरासना ।
शिलापृष्ठे च संसिक्ता बभूव जलधारया ।४१
शीते जलांतरे शश्वत्तस्थौ सा भक्तितत्परा ।
अनाहारार्तोपस्तत्र नीहारेषु निशासु च ।४२

इसके अनन्तर उस सर्वोत्तम शृङ्गि तीर्थमें पार्वती तप करने लगीं। इसी से उस स्थान में तपस्या करने से उसका नाम तभीसे गौरी शिखर पड़ गया है ।३६। हे मुने ! पार्वती ने अपने किये जाने वाले तप का फल किस तरह ज्ञात होगा यह जानने के लिए वहाँ परीक्षार्थ बहुत से वृक्ष लगाये थे वे सब भवानी के यहाँ पदार्पण करते ही एकदम हरे भरे हो गये ।३७। गौरी ने पहिले भूमि की शुद्धि की और फिर उस स्थान में वेदी की रचना की । इसके अनन्तर ऐसी घोर तपस्या का आरम्भ किया जो कि महामुनियों को भी दुष्कर थी ।३८। उनके साथ समस्त इन्द्रियोंका निरोध करके ध्यानावस्थित होकर कठोर तपस्या करने लगीं ।३९। ग्रीष्म की ऋतु में अहर्निश अपने चारों ओर अग्नि जलाकर स्वयं मध्य में बैठकर पार्वती ने मन्त्रका जप किया ।४०। वर्षा काल में खुले मैदान में आसन जमाकर एक शिला पर बैठते हुए अपने ऊपर अविरल वर्षा की धारा लेकर जाप किया ।४१। शीतकाल को कठिन रात्रियों में शिव-भक्ति में निरत होकर विना आहार किए जल के मध्य में स्थित होकर ध्यान तथा मन्त्र जप भवानी ने किया ।४२।

एवं तप: प्रकुर्वाणा पञ्चाक्षरजपेरता ।
दध्यौ शिवं शिवा तत्र सर्वकामफलप्रदम् ।४३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वारोपिताञ्च्छुभान्वृक्षान्सखीभिस्सिचती मुदा ।
प्रत्यहं सावकाशे सा तत्रातिथ्यमकल्पयन् ।४४
वातश्चैव तथा शीतवृष्टिश्च विविधा तथा ।
दुस्सहोऽपि तथा धर्म्मस्तया सेहे सुचित्तया ।४५
दुःखं च विविधं तत्र गणितं न तयागतम् ।
केवलं मन आधाय शिवे सासीत्स्थिता मुने ।४६
प्रथमं फलभोगेन द्वितीयं पर्णभोजनैः ।
तपः प्रकुर्वंती देवी क्रमान्निन्येऽमिताः समाः ।४७
ततः पर्णान्यपि शिवा निरस्यं हिमवत्सुता ।
निराहाराभवद्देवी तपश्चरणसंरता ।४८
आहारे त्यक्तपर्णोभूद्यस्माद्धिमवतः सुता ।
तेन देवैरपर्णेति कथिता नामसा शिवा ।४९

इस तरह समस्त कर्मों के फल प्रदाता शंकरजी के ध्यान में निमग्न होकर पार्वती ने घोर तपस्या में पञ्चाक्षरी मन्त्र का जाप किया ।४३। वहां अपने समारोपित वृक्षावलीका सिञ्चन स्वयंअवकाश पाकर पार्वती करती थीं तथा अपनी सहेलियों से उन्हें सिञ्चित कराती थीं और समागत अतिथियों का सत्कार करती रहती थीं ।४४। शीत-वात वर्षा और ग्रीष्म के विविध प्रकार के सन्तापों को सावधान चित्त से सहन करने लगी ।४५। इस तपश्चर्या के काल में भवानी को विघ्न स्वरूप अनेक दुःख उपस्थित हुए किन्तु उसने किसी की परवाह न की । हे मुनिवर ! पार्वती का ध्येय तो एक शिवाराधना थी, उसने उसी में पूर्व रूप से मन लगाया था ।४६। प्रथम वर्ष में फलों का भोजन और दूसरे वर्ष में पत्तों का आहार करते हुए तपस्या में देवी को इसी क्रम से बहुत से वर्ष व्यतीत हो गये ।४७। इसके अनन्तर भवानी ने पूर्णाहार त्याग कर दिया था । उसी समय देवगणों ने शिवा का नाम 'अपर्णा' रख दिया ।४८-४९।

एकपादस्थिता सासीच्छिव संस्मृत्य पार्वती ।
पञ्चाक्षरं जपन्ती च मनु तेपे तपो महत् ।५०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीरवल्कलसंवीता जटासंघातधारिणी ।
शिवचिंतनससक्ता जिगाय तपसा मुनीन् ।५१
एवं तस्यास्तपस्यन्त्या चिंतयंत्या महेश्वरम् ।
त्रीणि वर्षसहस्राणि जग्मुः काल्यास्तपोवने ।५२
षष्टिवर्षसहस्राणि यत्र तेपे तपो हरः ।
तत्र क्षणमद्योषित्वा चिंतयामास सा शिवा ।५३
नियमस्थां महादेव किं माँ जानासि नाधुना ।
येनाहं सुचिरं तेन नानुयाता तपोरता ।५४
लोके वेदे च गिरिशो मुनिभिर्गीयते सदा ।
शङ्करस्स हि सर्वज्ञस्सर्वात्मा सर्वदर्शनः ।५५
सर्वभूतिप्रदो देवस्सर्वभावानुभावानः ।
भक्ताभीष्टप्रदो नित्यं सर्वक्लेशनिवारणः ।५६

कुछ समय वाद गौरी ने एक चरण से खड़े होकर पञ्चाक्षरी मन्त्र के जाप द्वारा महान् तपश्चर्या का आरम्भ कर दिया । पार्वती की ऐसी घोर तपस्या थी कि उसने बल्कल, जटाजूट से युक्त शिवजी का ही चिन्तन करते हुए अपने तप द्वारा महातापस मुनियों को भी जीत लिया था ।५०। इसी भाँति तप करते हुए और महेश्वर का ध्यान करते हुए भवानी को उस तपोवन में तीन सहस्र वर्ष व्यतीत हो गये ।५१। जिस स्थान पर शिव ने साठ हजार वर्ष पर्यन्त तपस्या की थी वहाँ एकक्षण के लिए स्थित होकर पार्वती अपने मन में विचार करने लगीं क्या मेरे उपास्य महेश्वर यह नहीं जान पाये हैं कि मेरे पाने के लिए हा यह तपोनिरता हो रही है जिससे कि उतने लम्बे समय में भी तपस्या करने वाली मेरी सुधि नहीं ले सके ।५२-५४। लोक में और वेद में तथा मुनि समाज में यह प्रख्यात है कि महेश सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी और सर्वदर्शी हैं एवं वे सब प्रकार के वैभव के प्रदाता, समस्त भावों से अनुभावित और सर्वदा अपने भक्तों की मनोकाननाओं को पूर्ण करने वाले सभी क्लेशों के निवारक हैं ।५५-५६।

सर्वकामान्परित्यज्य यदि चाहं वृषध्वजे ।
अनुरक्ता तदा सोत्र संप्रसादतु शङ्करः ।५७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि नारदतन्त्रोक्त मन्त्रो जप्तश्शराक्षरः ।
सुभक्तया विधिनाँ नित्यं संप्रसीदतु शङ्करः ।५८
यदि भक्त्या शिवस्याहं निर्विकारा यथोदितम् ।
सर्वेश्वरस्य चात्यत संप्रसीदतु शङ्करः ।५६
एवं चिंतयती नित्यं तेपे सा सुचिरं तपः ।
अधोमुखी निर्विकारा जटावल्कलधारिणी ।६०
तथा तया तपस्तप्तं मुनीनामपि दुष्करम् ।
स्मृत्वा च पुरुषास्तत्र परमं विस्मयं गताः ।६१
तपोदर्शनार्थं ही समाजग्मुश्च तेऽखिलाः ।
धन्यान्निज न्मन्यमाना जगदुश्चेति सम्मताः ।६२
महतां धर्म्मवृद्धेषु गमनं श्रेयं उच्यते ।
प्रमाणं तपसौ नास्ति मान्यो धर्म्मस्सदा बुधैः ।६३

यदि वास्तव में मैंने समस्त अन्य कामनाओं का त्याग कर केवल शिव में अनुराग किया है तो वे महेश्वर मुझ अनुरागिणी पर अवश्य कृपा करेंगे ।५७। यदि नारदीय तन्त्रोक्त पञ्चाक्षरी मन्त्र को विधि एवं भक्ति के साथ मैंने प्रतिदिन जपा है तो गिरीश प्रभु मुझ पर प्रसन्न हों ।५८। यदि पूर्ण भक्ति की भावना से विकार रहित शिव की समुचित समाराधना की है तो वे सबके स्वामी प्रभु शंकर मुझ पर प्रसन्न होंगे ।५६। इस तरह महा चिन्ता में डूबी हुई वह रुद्री जटा धारण किये हुए निर्विकार होकर नीचे की ओर मुख करके महा तपस्या करने लगी ।६०। पार्वती ने ऐसा कठोर तप किया कि मुनिगण भी उसे नहीं कर सकते थे, उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था ।६१। अनेक ऋषि मुनि तो पार्वती की कठोर तपस्या को सुनकर वहां देखने के लिए आये और अपने को परम धन्य समझकर भवानी की प्रशंसा करते हुए अत्यधिक विस्मत हुए ।६२। जो धर्म वृद्ध होते हैं उनके समीप गमन करना महानपुरुषों को परम कल्याणकारी होता । तप का कोई प्रणाम नहीं होता एवं पण्डितों को सर्वदा धर्म को मान्यता देनी चाहिए ।६३।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रुत्वा दृष्ट्वा तपोऽस्यास्तु किमन्यैः क्रियते तपः ।
अस्मात्तपोऽधिकं लोके न भूतं न भविष्यति ।६४
जल्पन्त इति ते सर्वे सुप्रशस्य शिवातपः ।
जग्मुः स्वं धाम मुदिताः कठिनांगाश्च येऽप्यपि ।६५
अन्यच्छृणु महर्षे त्वं प्रभावं तपसोऽधुना ।
पार्वत्या जगदंबायाः पराश्चर्य्यकरं महत् ।६६
तदाश्रमगता ये च स्वभावेन विरोधिनः ।
तेप्यासंस्तत्प्रभावेण विरोधरहितास्तदा ।६७
सिंहागावश्व सततं रागादिदोषसंयुताः ।
तन्महिम्ना च ते तत्र नाबाधन्त परस्परम् ।६८
अथान्ये च मुनिश्रेष्ठ माज्र्जारा मूषकादयः ।
निसर्गाद्वैरिणो यत्र विक्रीयन्ते स्म न क्वचित् ।६९
वृक्षाश्च सफलास्तत्र तृणानि विविधानि च ।
पुष्पाणि च विचित्राणि तत्रासन्मुनिसत्तम ।७०
तद्वनं च तदा सर्वं कैलाशेनोपमान्वितम् ।
जातं च तपसस्तस्यास्सिद्धिरूपमभूत्तदा ।७१

पार्वती की तपश्चर्या देख व सुनकर दूसरों के तपको हेय बताते हुए मुनिजन कहने लगे तप तो ऐसा ही होना चाहिए जैसा यह श्री शिव के लिए किया जा रहा है इनसे विशेष बढ़कर लोक में अब तक न किसी ने किया और न भविष्य में भी हो सकेगा ।६४। इस प्रकार वे सब पार्वती के तप की प्रशंसा कहते-सुनते अपने-अपने स्थानों को चले गये यद्यपि वे कठिन अङ्ग वाले थे ।६५। हे महर्षे ! अब तुम जगदम्बा के परम अद्भुत चरित को तथा उनकी इस तपस्या के प्रबल प्रभाव को सुनो । परस्पर में स्वभाव के विरोधी भी कोई उस आश्रम में पहुँचतेही अपने स्वाभाविक विरोध का त्याग कर देते थे । यह पार्वतीके तप और स्वभाव का ही प्रभाव है ।६६-६७। सिंह और गौ परस्पर में रागादि दोष वाले हैं, किन्तु उस तपोवन में शिवा की महिमा से किसी ने किसी को कभी कोई बाधा नहीं पहुँचाई ।६८। मूषक और मार्जार आदि अन्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी स्वाभाविक शत्रुओं ने अपनी स्वभाव सिद्ध शत्रुत का वहाँ त्यागकर दिया था।६९। वहाँ के वृक्ष-लता आदि सब पुष्पित और फलित हो गये। हे मुनिवर ! उस समय बड़े-बड़े विचित्र पुष्प विकसित हो गये और समस्त तपोवन कैलाश के समान बन गया था। यह सभी कुछ पार्वती के कठोर तप का ही प्रभाव था। इस तरह वह देवी सिद्ध रूप हो गई थीं ।७०-७१।

देवताओं का तप से व्याकुल हो ब्रह्मलोक जाना

एवं तपस्त्यां पार्वत्यां शिवप्राप्तौ मुनीश्वर।
चिरकालो व्यतीयाय प्रादुर्भूतो हरो नहि ।१
हिमालयस्तदागत्य पार्वतीं कृतनिश्चयाम्।
सभार्यस्सुतामात्य उवाच परमेश्वरीम् ।२
मा खिद्यतां महाभागे तपसानेन पार्वति।
रुद्रो न दृश्यते बाले विरक्तो नात्र संशयः ।३
त्वं तन्वो सुकुमारांगी तपसा च विमोहिता।
भविष्यसि न संदेहस्सत्यं सत्यं वदामि ते ।४
तस्मादुत्तिष्ठ चैहि त्वं स्वगृह वरवर्णिनि।
किं तेन तव रुद्रेण येन दग्ध पुरा स्मरः ।५
अतोहि निर्विकरत्वात्त्वामातुं वरां हरः।
नागमिष्यति देवेशि तं कथं प्रार्थयिष्यसि ।६
गगनस्था यथा चन्द्रो ग्रहीतुं न हि शक्यते।
तथैव दुर्गमं शंभुं जानीहि त्वमिहानघे ।७

ब्रह्माजी ने कहा-हे नारद ! इस तरह तपस्या करते हुए पार्वती को जब बहुत समय हो गया और शिव दर्शन की उत्कट लालसा करते हुए भी शिव के दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई। तब दृढ़ निश्चय वाली पार्वती के पास हिमालयस्त्री, पुत्री और मन्त्रियों के साथ, उपस्थित हुए और भवानी से कहने लगे ।१-२। हे महाभागे ! हे पार्वती ! इस तपस्या से तू खिन्न मत होना। हे बाले ! तुमको रुद्र दर्शन नहीं दे रहे हैं सो वे परम विरक्त हैं इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है ।३। तू परम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुकुमार अङ्ग प्रत्यंगों वाली है अतः तपस्या से मोहित हो गई है इसमें संदेह नहीं है। मैं तुमसे जो कुछ भी कहता हूँ वह पूर्ण सत्य है।४। हे वरर्वणिनी! इसलिए अब तुम तपको छोड़कर उठ जाओ और अपने घर को चलो। ऐसे गुरुदेव से तुम्हारा क्या मनोरथ पूरा होगा जिसने पहले ही रतिनाथ कामदेव को भस्म कर दिया है।५। शिवजी तो विकार से रहित है। अतः वे तुमको ग्रहण करने के लिए कभी नहीं आयेंगे। हे देवी ! तुम उनके पाने की क्यों प्रार्थना कर रही हो ?।६। जिस तरह गगन-मण्डलमें चन्द्रको कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता है,हे पाप-रहिते! उसी भाँति तुम शिव की प्राप्ति भी परम दुर्लभ एवं दुर्गम समझ लो।७

तथैव मेनया चोक्ता तथा सह्याद्रिणा सती।
मेरुणा मन्दरेणैव मेनाकेन तथैव सा।८
एवमन्यैः क्षितिध्रैश्च कौंचादिभिरनातुरा।
तथैव गिरिजा प्रोक्ता नानावादविधायिभिः।९
एवं प्रोक्ता यदा तन्वी सा सर्वैस्तपसिस्थिता।
उवाच प्रहसंत्येव हिमवन्त शुचिस्मिता।१०
पुरा प्रोक्तं मया तात मातः किं विस्मृतं त्वया।
अधुनापि प्रतिज्ञां च श्रृणुध्वं मम बांधवाः।११
विरक्तोसौ महादेवो येन दग्धो रुषा स्मरः।
तं तोषयामि तपसा शंकरं भक्तवत्सलम्।१२
सर्वे भवन्तो गच्छन्तु स्वं स्वं धाम प्रहर्षिताः।
भविष्यत्येव तुष्टोसौ नात्र कार्य्या विचारणा।१३
दग्धो हि मदनो येन येन दग्धं निरेवंनम्।
तमानयिष्वे चात्रैव तपसा केवलेन हि।१४

ब्रह्माजी ने कहा–सती मेना ने भी पार्वती को बहुत कुछ समझाया तथा सह्य, मेरु, मन्दर और मेनाक पर्वतों ने भी समझाया एवं अन्य कौञ्च गिरि ने भी अनेक हेतु बनाकर भली-भाँति आतुरता सहित भवानी को समझाया था।८-९। इस प्रकार से जब सभी ने तपस्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में गिरिजा पार्वतीको समझानेका प्रयास किया तो मुस्कराती हुई पवित्र हास्य वाली देवी पिता हिमवान् से कहने लगी ।१०। पार्वती ने कहा--हे तात ! हे माता ! मैंने पहिले ही आप लोगों से कह दिया था, क्या आपने अब उसे भुला दिया है ? अच्छा, इस समय समस्त बन्धुगण मेरी प्रतिमाको सुन लेवें । यह सुनिश्चित है कि महेश्वर परम विरक्त हैं और उन्होंने क्रोध से कामदेव को भी भस्म कर दिया हैं । अब उन्हीं भक्तों पर कृपा दृष्टि करने वाले शिवको मैं अपनी इस उग्र तपश्चर्या से सन्तुष्ट एव प्रसन्न अवश्य ही करूंगी ।११-१२। आप लोग प्रसन्नता पूर्वक इस समय अपने-अपने स्थानों को चले जावें । इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि शंकर भगवान् मुझ पर प्रसन्न होंगे ।१३। जिस प्रभु ने कामदेव को जलाकर भस्म कर दिया और गिरि के वन को दग्ध कर दिया, मैं अव उन्हें अपने तपोबल के प्रभाव से यहाँ पर ही बुला लूँगी ।१४।

तपोबलेन महता सुसेव्यो हि सदाशिवः ।
जानीध्वं हि महाभागास्सत्यं सत्यं वदामि वः ।१५

आभष्य चैवं गिरिजा च मेनकां मैनाकबन्धुं पितरं हिमालयम्।
तूर्ष्णी चभूवाशु सुभाषिणी शिवा समन्दरं पर्वतराजवालिका।१६
जग्मुस्तयोक्ताः शिवया हि पर्वता यथागतेनापि विचक्षणास्ते ।
प्रशंसमाना गिरिजा मुहुर्मुहुस्सुविस्मता हेमनगेश्वराद्याः ।१७

गतेषु तेषु सर्वेषु सखीभिः परिवारिताः ।
तपस्तेपे तदधिकं परमार्थसुनिश्चया ।१८
तपसा महता तेन तप्तमासीच्चराचरम् ।
त्रैलोक्यं हि मुनिश्रेष्ठं सदेवासुरमानुषम् ।१९
तदा सुरासुराः सर्वे यक्षकिन्नरचारणाः ।
सिद्धास्साध्याश्च मुनयो विद्याधरमहोरगाः ।२०
सप्रजापतयश्चैव गुह्यकाश्व तथापरे ।
कष्टात् कष्टतरं प्राप्ताः कारण न विदुः स्म तत् ।२१

हे महान् भाग्य वालो ! मैं आपसे परम सत्य विधान वताती हूँ कि महाभाग शिव केवल महान तपोबलसे ही सेविते हो सकते हैं । यह आप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूब अच्छी तरह समझ लेवें।१५। ब्रह्माजी ने कहा—शैलराजकी आत्मजा गिरिजाने अपनी माता मेनका,भाई मैनाक और पिता हिमाचल से ऐसा कहकर तथा मन्दर को भी इसी तरह समझा कर सुभाषिणी ने मौन धारण कर लिया ।१६। गिरिनन्दनी ऐसे वचन सुनकर पर्वतराज और सुमेरु गिरि आदि वार-वार पार्वतीकी दृढ़ता की प्रशंसा करते हुए परम आश्चर्यान्वित होकर वापिस चले गये ।१७। सबके जाने के पश्चात् भवानी अपनी सहेलियों के साथ परमार्थ के विषय से महान् तप में पुनः सलग्न हो गई ।१८। उस समय उसके कठोर तपोव्रत से चराचर सभी सन्तप्त हो उठे । हे मुनीश्वर! त्रिभुवन में देव और असुरों में कोई ऐसा नहीं रहा, जिसे सन्ताप न हुआ हो ।१९। सुर-असुर-यक्ष-किन्नर-चारण-सिद्ध, मुनि, महोरग, विद्याधर प्रजापति और गुह्यक् सबको महान् कष्ट होने लगा और इसका क्या कारण है—यह किसी को भी ज्ञात न हो सका ।२०-२१।

सर्वे मिलित्वा शक्राद्या गुरुमामन्त्र्य विह्वलाः ।
सुमेरौ तप्तसर्वाङ्गा विधि मां शरणं ययुः ।२२
तत्र गत्वा प्रणम्याशु विह्वला नष्टसुत्विषः ।
ऊचुस्सर्वे च संस्तूय ह्येकपद्मेन मां हि ते ।२३
त्वया सृष्टमिदं सर्वं जगदेतच्चराचरम् ।
तन्तप्तमति कस्माद्वै न ज्ञातं कारणं विभो ।२४
तद्ब्रूहि कारणं ब्रह्मन् ज्ञातुमर्हसि नः प्रभोः ।
दग्धभूततनून्देवान् त्वत्तो नान्योऽस्ति रक्षकः ।२५
इत्याकर्ण्य वचस्तेषामहं स्मृत्वा शिवं हृदा ।
विचार्य मनसा सर्वं गिरिजायास्तपः फलम् ।२६
दग्धं विश्वमिति ज्ञात्वा तैः सर्वैरिह सादरात् ।
हरये तत्कथयितुं क्षीराब्धिमगमं द्रुतम् ।२७
तत्र गत्वा हरिं दृष्ट्वा विलसतं सुखासने ।
सुप्रणम्य सुसंस्तूय प्रावोचं सांजलिः सुरैः ।२८

इन्द्र आदि समस्त देव गुरु बृहस्पतिसे परामर्श कर सुमेरु पर्वत पर
CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वांग सन्ताप से अत्यन्त व्याकुल होते हुए विधाता की शरणमें पहुँचे। ।२२। वहाँ आकर सबने मुझे प्रणाम किया । मैंने देखा उनकी कांति एकदम क्षीण हो चुकी थी। उन्होंने मेरी स्तुति कर कहना आरम्भ किया ।२३। देवगण ने कहा—हे विभो ! आपका निर्मित चराचर जगत् किस कारण से इस समय परम सन्तप्त हो रहा है? हम लोग कोई भी इसका कारण नहीं समझ पा रहे हैं ।२४। हे ब्रह्मन् ! आपही इसका कारण एवं उपाय बतलाइए । शरीर सन्ताप से जल-सा रहा है । आपके अतिरिक्त हमारा कोई अन्य रक्षा करने वाला नहीं है ।२५। ब्रह्माजी ने कहा—मैंने उनकी प्रार्थना सुनकर मन में शिव का स्मरण करके विचार किया कि यह पार्वती की उग्रतम तपस्या का ही परिणाम है ।२६। उस समय समस्त विश्व को ताप दग्ध जानकर सब लोग क्षीर सागर पर पहुँचे और भगवान् नारायण से बात कही ।२७। वहाँ सुखासन पर स्थित नारायण की सेवा में प्रणाम पूर्वक सबसे स्तुति करके निवेदन किया।२८

त्राहि त्राहि महाविष्णो तप्तान्नश्शरणागतान् ।
तपसोग्रेण पार्वत्यास्तपत्याः परमेण हि ।२९
इत्याकर्ण्य वचस्तेषामस्मदादि दिवौकसाम् ।
शेषासने समा वष्टोस्मानुवाच रमेश्वरः ।३०
ज्ञातं सर्वनिदानं मे पार्वतीतपसोद्य वै ।
युष्माभिस्महितस्त्वद्य व्रजामि परमेश्वरम् ।३१
महादेवं प्रार्थयामो गिरिजाप्रायपणाय तम् ।
पाणिग्रहार्थं मधुना लोकानां स्वस्तयेऽमराः ।३२
वरं दान्तु शिवायै हि देवदेवः पिनाकधृक् ।
यथा चेष्यति तत्रैव करिष्यामोऽधुना हि तत् ।३३
तस्माद्वयं गमिष्यामो यत्र रुद्रो महाप्रभुः ।
तपसोग्रेण संयुक्तोऽद्यास्ते परममंगलः ।३४
विष्णो स्तद्वचनं श्रुत्वा सर्वे ऊचुस्सुर दयः ।
महाभीता हठात् क्रुद्धाद्दग्धकामात् भयंकरात् ।३५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे नारायण! हम पार्वती की कठोरतम तपश्चर्या के तेज से सन्तप्त होकर आपकी शरण में आये हैं। आप हमारी रक्षा कीजिए।२९। इस प्रकार हम समस्त देवगणों की प्रार्थना सुनकर भगवान् रमापति शेष शय्या पर बैठे होकर हमसे बोले।३०। गिरिनन्दिनी की उग्र तपस्या का कारण हमको ज्ञात हो गया है। अब आप सबके साथ हम महेश्वर के स्थान पर चलते हैं।३१। हे देववृन्द! हम सभी महेश्वर से पार्वती के पाणिग्रहण की प्रार्थना करेंगे। इस पाणिग्रहण के कर लेने पर सभी लोकों का परम कल्याण होगा।३२। परमदेव महेश्वर पार्वतीको वरदान देने के लिए जिस तरह भी वहाँ जावें, हम सभी उनसे यही प्राथना करेंगे और हमको वहीं चाहिए, जहाँ वह महाप्रभु अपनी उग्र तपस्या से परम मंगल सम्पन्न होकर विराजमान हैं।३३-३४। ब्रह्माजी ने कहा--तब सब देवता कहने लगे-हम उन प्रलय करने वाले महादेव से अत्यन्त भयभीत हैं, क्योंकि उन्होंने भयंकर क्रोध से हठात् कामदेव को भस्म कर दिया है।३५।

महाभयंकरं क्रुद्धं कालानलसमप्रभम्।
न यास्यामो वयं सर्वे विरूपाक्षं महाप्रभम्।३६
यथा दग्धः पुरा तेन मदनो दुरतिक्रमः।
तथैव क्रोधयुक्तो न स धक्ष्यति न संशयः।३७
तदाकर्ण्य वचस्तेषां शक्रादीनां रमेश्वरः।
सांत्वयंस्तान्सर्वान्प्रोवाच हरिर्मुने।३८
हे सुरा मद्वच प्रीत्या श्रृणुतादरतोऽखिलाः।
न वो धक्ष्यति स स्वामी देवानां भयनाशनः।३९
तस्माद्भवद्भिर्गन्तव्यं मया सार्द्धं विचक्षणैः।
शंभुं शुभकरं मत्वा शरणं तस्य सुप्रभोः।४०
शिवं पुराणं पुरुषमधीशंवरेण्यरूपं हि परं पुराणाम्।
तपोजुषाणा परमात्मारूपं परात्परं तं शरणं व्रजामः।४१
एवमुक्तास्तदा देवा विष्णुना प्रभविष्णुना।
जग्मुस्सर्वे तेन सह द्रष्टुकामाः पिनाकिनम्।४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उन महाक्रोधाविष्ट कालानल के समान कान्ति वाले विरूपाक्ष से अत्यन्त डरे हुएहैं ।अतः क्रोध युक्त उनके समीप हम नहीं जायेंगे।३६ वे क्रोधमें भरे हुए हैं,जैसे परम दुस्सह कामदेव को भस्म कर दिया वैसे ही हम सबको भी वे निस्सन्देह भस्म कर देंगे ।३७। ब्रह्माजी ने कहा-भगवान् विष्णु देवगणके बचन सुनकर सबको सांत्वना देकर कहने लगे ।३८।भगवान् हरि ने कहा-हे देववृन्द! तुम सब मेरे वचनों पर विश्वास करो और सुनो । वे तो सर्वदा देवों के भय के नाश करने वाले परम रक्षक स्वामी हैं तुमको कभी भी भस्म नहीं करेंगे ।३९ अतएव तुम सब हमारे साथ वहाँ उनके समीप में चलो शिव सदा शुभकारी है । इसलिए उन शुभ करने वाले की ही शरण में चलना चाहिए ।४०। आप मन में यह धारण करो कि शिव परम कल्याणकारी सर्वाधीश्वर, परात्पर वरेण्य स्वरूप, उग्र तपस्वी और परमात्मा-रूप हैं । उन्हीं की शरण में जा रहे हैं ।४१। ब्रह्माजी ने कहा-जब भगवान् नारायणने इस प्रकार सबको समझाकर सांत्वना दी तो सब देवता शंकर के दर्शन की इच्छा लेकर वहाँ गये ।४२।

प्रथमं शैलपुत्र्यास्तत्तपो द्रष्टुं तदाश्रमम् ।
जग्मुर्मार्गवशात्सर्वे विष्ण्वाद्यास्सकुतूहलाः ।४३
पार्वत्यास्सुतपो दृष्ट्वा तेजसा व्यापृतास्तदा ।
प्रणेमुस्तां जगद्धात्रीं तेजोरूपां तपःस्थिताम् ।४४
यशंसंतस्तपस्तस्यास्साक्षात्सिद्धितनोस्सुराः ।
जग्मुस्तत्र तदा ते च यत्रास्ते वृषभध्वज ।४५
तत्र गत्वा च ते देवास्त्वां मुने प्रेषय स्तदा ।
पश्यन्तो दूरतस्तस्थुः कामभस्मकृतोहरात् ।४६
नारद त्वं शिवस्थानं तदा गत्वाऽभयस्तदा ।
शिवभक्तो विशेषेण प्रसन्नं दृष्ट्वान् प्रभुम् ।४७
पुनरागत्य यत्नेन देवानाहूय तांस्ततः ।
निनाय शङ्करस्थानं तदा विष्ण्वादिकान्मुने ।४८
अथ विष्ण्वादयस्सर्वे तत्र गत्वा शिवं प्रभुम् ।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दद्दशुस्सुवमासीनं प्रसन्नं भक्तवत्संलम् ।४९
योगपट्टस्थितं शंभुगणैश्च परिवारितम् ।
तपोरूपं दधानं च परमेश्वररूपिणम् ।५०
ततो विष्णुर्मयान्ये च सुरासिद्धमुनीश्वराः ।
प्रणम्य तुष्टुवुस्सूक्तं वेंद्रोपनिषदन्वितैः ।५१

मार्ग में सबसे पहिले विष्णु आदि देवों ने भगवती शैलात्मजा की तपोभूमि के दर्शन किये और पार्वती के कठोर तप को देखा तपस्या के तेज से व्याप्त उस जगदम्बा को प्रणाम किया ।४३-४४। भवानी के तप की सभी देवता बड़ाई करते हुए बोले कि ऐसा प्रतीत होता है, यह साक्षात् सिद्धि का शरीर है। फिर सब भगवान् शंकर के समीप गये।४५ हे मुनिवर ! वहाँ पहुँच कर समस्त देवों ने आपको ही पहले शिवजी के पास भेजा और मन्मथ का मन्थन करने वाले शंकर को देखकर दूर ही स्थित हो गये ।४६। हे मुने ! आप उस वक्त निर्भीक होकर शिवजी के समीप गये और आपने विशेष रूपसे महेश्वर को प्रसन्न देखा ।४७।फिर आपने यत्न करके देवगणों को बुलाया और विष्णु आदि सभी को शंकर के सन्निकट में ले गये।४८। तब वहाँ विष्णु प्रभृति सब देवों से सुखपूर्वक विराजमान और प्रसन्नमुख एवं भक्तों पर कृपा करने वाले शंकर के दर्शन किये ।४९। उस वक्त शिवजी योगासन पर संस्थित थे और तपश्चर्या करने का रूप धारण किए हुए थे। उनके चारों ओर गण घिरे हुए थे ।५०। उस समय में भगवान विष्णु, समस्त सुर-सिद्ध और मुनिगण सबने शिव को पहले प्रणाम किया, फिर वेद तथा उपनिषदों के सूक्तों के द्वारा उनकी स्तुति की ।५१।

विष्णु-ब्रह्मा के आग्रह से शिवजी का सहमत होना

नमो रुद्राय देवाय मदनांतकराय च ।
स्तुत्यांय भूरिभासाय त्रिनेत्राय नमोनमः ।१
शिपिविष्टाय भीमाय भीमाक्षाय नमोनमः ।
महादेवाय प्रभवे त्रिविष्टपतये नमः ।२
त्वं नाथः सर्वलोकानां पिता माता त्वमीश्वरः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंभुरशश्शङ्करोसि दयालुस्त्वं विशेषतः ।३
त्वं धाता सर्वजगतां त्रातुमर्हसि न प्रभोः ।
त्वं विना कस्समर्थोस्ति दुःखनाशे महेश्वरः ।४
इत्याकर्ण्य वचस्तेषाँ सुराणां नन्दिकेश्वरः ।
कृपया परया युक्तो विज्ञप्तु शंभुमारभत् ।५
विष्णुवादयस्सुरगणा मुनिसिद्धसंघास्त्वांद्रष्टुमेव
सुखर्य्यं विशेषयन्ति ।
कार्य्योर्थिनोऽसुशवरै परिभर्त्स्यमानास्सम्यक्
पराभवपदं परमं प्रपन्नाः ।६
तस्मात्वयाहि सर्वेश त्रातव्या मुनयस्सुराः ।
दीनबन्धुर्विशेषेण त्वमुक्तोभक्तवत्सलः ।७

देवताओं ने कहा–काम को भस्म करने वाले उज्ज्वल कान्तिसे पूर्ण तीन नेत्रों को धारण करने वाले, परम स्तुति के योग्य रुद्र देव शंकर भगवान् को सब का प्रणाम स्वीकार हो ।१। शिपिविष्ट, भीम और भीमाक्ष के लिए प्रणाम है। महेश्वर इस जगत् के उत्पन्न करने वाले और स्वर्ग के स्वामी हैं, उनके लिए सबका प्रणाम स्वीकार हो ।२।आप सब लोकों के स्वामी, माता-पिता और ईश्वर हैं, आप शम्भु ईश और शंकर तथा दया करने वाले हैं।३। हे महेश्वर! आप त्रिभुवन के विधाता और रक्षक हैं, अतः अब आप हमारी रक्षा करें। आपके अतिरिक्त दुःख का नाश करने को अन्य कोई समर्थ नहीं है।४। ब्रह्माजी ने कहा–देवगण के ऐसे दीनता भरे वचन सुनकर परम कृपालु नन्दिकेश्वर महेश से विज्ञप्ति करने लगे ।५। नन्दिकेश्वर ने कहा–हे भगवान् शंकर ! दैत्यों की दी हुई पीड़ा ने अत्यन्त उत्पीड़ित होकर परम व्याकुल विष्णु आदि समस्त देवगण मुनि-वृन्द और सिद्ध लोग आपके पुण्यमय दर्शन के लिए यहाँ उपस्थित हुए हैं। हे सुरवर ! ये सबसे ताड़ित एवं तिरस्कृत होकर अब आपकी शरण ग्रहण करना चाहते हैं ।६। हे सर्वेश्वर ! हे दीन-बन्धो ! अब आपको इन सबकी रक्षा करनी चाहिए आप तो विशेष रूपसे भक्तों के वत्सल कहे जाते हैं ।७।

एवं दयावता शंभुर्लिप्तो नन्दिना भृशम् ।
शनैश्शने रुपरसद्धयाताद्न्मील्य चाक्षिणी ।८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईशोऽथोपरतश्शंभुस्तदा परम कोविद ।
समाधेः परमात्मासौ सुरान्सर्वानुवाच ह ।९
कस्माद्यूयं समायाता मत्समीप सुरेश्वराः ।
हरिब्रह्मादयस्सर्वे ब्रूत कारणमाशु तत् ।१०
इति श्रुत्वा वचश्शम्भोस्सर्वे देवा मुदाऽन्विताः ।
विष्णुर्विलोकयामासुर्मुखं विज्ञप्तिहेतवे ।११
अथ विष्णुर्महाभक्तो देवानां हितकारकः ।
मदीरितमुवाचेदं सुरकार्यं महत्तरम् ।१२
तारकेण कृतं शंभो देवानां परमाद्भुतम् ।
कष्टात्कष्टतरं देवा विज्ञप्तु सर्वं आगता ।१३
हे शंयो तव पुत्रेणौरसेन हि भविष्यति ।
निहतस्तारको दैत्यो नान्यथा मम भाषितम् ।१४

ब्रह्माजी ने कहा–जब नन्दिकेश्वर ने दयालु शिवजी से इस तरह प्रार्थना की तो ध्यानावस्था से शंकर ने शनैः शनैः अपने नेत्र खोले ।८। इसके अनन्तर परम पण्डित शंकर ध्यान से धीरे-धीरे उपरत होकर अपनी समाधि से जाग्रत हुए और देवताओं से बोले ।९। भगवान् शङ्कर ने कहा––हे देववृन्द! तुम हरि ब्रह्मा आदि सब हमारे पास किस कारण से उपस्थित हुए हो ? आप लोग यहाँ आने का कारण स्पष्ट रूपसे हम को बतलाओ ।१०। ब्रह्माजी ने कहा–भगवान शिव के ऐसे आज्ञा भरे वचन सुनकर समस्त देवों को अत्यन्त हर्ष हुआ और विज्ञप्ति करने के लिए विष्णु के मुख की ओर ताकने लगे ।११। सब देवगणों के हितैषी विष्णु ने देवताओं के महान् कार्य के पूर्ण करने के लिए शंकर भगवान से निवेदन करना आरम्भ किया ।१२ विष्णु ने कहा–हे शङ्कर! तारकासुर से देवताओं को वहुत भारी पीड़ा उत्पन्न हो गई है इसलिए ये सब एकत्रित होकर आपकी सेवा में प्रार्थना करने को यहाँ आये हैं ।१३। हे भगवान् ! जिस समय आपके वीर्य से पुत्र उत्पन्न होगा, उसी के द्वारा इस तारक दैत्य का संहार हो सकेगा । यह मेरा निवेदन पूर्णतया सत्य एवं ध्रुव हैं ।१४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार्य्येत्थं महादेव कृपां कुरु नमोऽस्तु ते ।
देवान्समुद्धर स्वामिन् नष्टात्तारकनिर्मितात् ।१५
तस्मात्वया गिरिजा देव शम्भो ग्रहीतव्या पाथिना दक्षिणेन
पाणिग्रहेणैव महानुभावां दत्तां गिरीन्द्रेण च तां कुरुष्य।१६
विष्णोस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रसन्नो ह्यब्रवीच्छिव: ।
दर्शयन् सद्गतिं तेषां सर्वेषां योगतत्पर: ।१७
यदा मे स्वीकृता देवी गिरिजा सर्वसुन्दरी ।
तदा सर्वे सुरेन्द्राश्च मुनयो ऋषयस्तदा ।१८
सकामाश्च भविष्यन्ति न क्षमाश्च परे पथि ।
जीवयिष्यति दुर्गा सा पाणिग्रहणतस्स्मरम् ।१६
मदनो हि मया दग्धस्सर्वेषां कार्य्यं सिद्धये ।
ब्रह्मणो वचनाद्विष्णो नात्र कार्य्या विचारणा ।२०
एवं विमृश्य मनसा कार्याकार्यै व्यवस्थितौ ।
सुधीः सर्वैश्च देवेन्द्र हठं नो कर्तुं मर्हसि ।२१

हे महेश्वर ! मैं प्रणति पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि आप इस तथ्य पर विचार कर मुझ पर कृपा कीजिए । हे स्वामिन् ! तारकासुर बड़ा भारी कष्ट दे रहा है । आप उससे सबका उद्धार कीजिये । हे शङ्कर ! गिरिराज हिमवान् अपनी महाभागा प्रियपुत्री गिरिजा को आपकी सेवा में पत्नी रूप में देने को इच्छुक हो रहे हैं । आप उसका दक्षिण कर से पाणिग्रहण कर उसे स्वीकार करें ।१५-१६। भगवान विष्णु के वचन श्रवण कर शिवने योग में परायण समस्त देवगणोंको व्यवहारिक सुन्दर गति का प्रदर्शन करते हुए प्रसन्न चित्त से कहा—जब परम सुन्दर गौरी मेरे द्वारा अङ्गीकृत की जायेगी तब सभी सुरऋषि और मुनिवृन्द सकाम हो जायेंगे और पारमर्थिक मार्ग की सामर्थ्य खो बैठेंगे क्योंकि पाणि-ग्रहण हो जाने पर वही दुर्गा भस्मीभूत कामदेव को पुनः जीवित कर देंगी ।१७-१६। मैंने तो ब्रह्माजी के वचन से सबके कार्यों की सिद्धि के लिए कामदेव को भस्म किया । हे विष्णुदेव ! इस बात में कुछ भी सन्देह नहीं है ।२०। हे देवेन्द्र ! आपही स्वयं कार्य और अकार्य की व्य-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्था का मन विचार करें और परम बुद्धिशील आप इन देवताओं के साथ इस विषय में कोई हठ न करे ।२१।

दग्धे कामे मया विष्णो सुरकार्यं महत् कृतम् ।
सर्वे तिष्ठन्तु निष्कामा मया सह सुनिश्चितम् ।२२
यथाऽहं च सुरास्सर्वे तथा यूयमयत्नतः ।
तपः परमसंयुक्ताः करिष्यध्वं सुदुष्करम् ।२३
यूयं समाधिना तेन मदनेन विना सुराः ।
परमानन्दसंयुक्ता निर्विकारा भवन्तु वै ।२४
पुरावृत्तं स्मरकृतं विस्मृतं यद् विधे हरे ।
महेन्द्र मुनयो देवा यत्तत्सर्वं विमृश्यताम् ।२५
महाधनुर्धरेणैव मदनेन हठात्सुराः ।
सर्वेषां ध्यानविध्वंसः कृतस्तेन पुरा पुरा ।२६
कामोहि नरनायैव तस्मात् क्रोधोऽभिजायते ।
क्रोधाद्भवति संमोहो मोहाच्च भ्रंशते तपः ।२७
कामक्रोधौ परित्याज्यौ भवद्भिस्सुरसत्तमैः ।
सर्वैरेव च मन्तव्यं मद्वाक्यं नान्यथा क्वचित् ।२८

हे विष्णो ! कामदेव को भस्मकर मैंने देवगण का एक परम महान् कार्य किया है। जिस तरह मैं इस समय हूँ वैसे ही समस्त देवता भी कामवासना से मुक्त होकर स्थित रहें। जैसे मैं तपश्चर्या में मग्न हूँ, हे देवगण ! वैसेही आप सब भी दुष्कर तपस्या करो ।२२-२३।हे देववृन्द! उस काम के विना समाधिस्थ हो परम आनन्द के साथ निर्विघ्न तपोव्रत का पालन करो ।२४। हे विधाता ! हे विष्णो ! हे महेन्द्र ! हे मुनि वृन्द ! हे देवगण ! यदि कामदेव की पुरानी सब बात भुला दी हो तो पुनः उसी पुरातन बात का संस्मरण करके भली भाँति विचार करो ।२५। हे देवगण ! उस परम शक्तिशाली पुष्पधन्वाने महेन्द्र, मुनि और देवी की जो दशा की है आपको उसका अच्छी तरह विचार अवश्य ही करना चाहिए। उसने पहिले भी सबका ध्यान आकृष्ट किया था। ।२६। नरक का द्वार काम ही होता है, इसके कारण ही क्रोध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उत्पत्ति हुआ करती है, क्रोध से मोह से स्मृति-भ्रम और भ्रम से बुद्धि नाश होकर तप का नाश होता है ।२७। हे देवगण ! आप सबको काम तथा क्रोध का त्याग कर देना चाहिए । मेरी यह उपदेश पूर्ण-बात आप लोग अवश्य मान लें इसमें पूरा तथ्य भरा हुआ है ।२८।

एवं विश्राव्य भगवान् महादेवो वृषध्वजः ।
युरान् प्रवाचयामास विधिविष्णू तथा मुनीन् ।२९
तूष्णीभूतोऽभवच्छंभुर्ध्यानमाश्रित्य वै पुनः ।
आस्ते पुरा यथा स्थाणुर्गणैश्च परिवारितः ।३०
स्यात्मानमात्मना शम्भुरात्मन्येव व्यचिंतयत् ।
निरंजनं निराभासं निर्विकारं निरामयम् ।३१
परात्परतरं नित्यं निर्मम निरवग्रहम् ।
शब्दातीतं निर्गुणं च ज्ञानगम्यं परात्परम् ।३२
एवं स्वरूपं परमं चिंतयन् ध्यानमास्थितः ।
परमानंदसंमग्नो बभूव बहुसूतिकृत् ।३३
ध्यानस्थितं च सर्वेशं दृष्ट्वा सर्वे दिवौकसः ।
हरिशक्रादयस्सर्वे नन्दिनं प्रोचुरानताः ।३४
किं वयं करवामाद्य विरक्तो ध्यानमास्थितः ।
शंभुस्त्वं शङ्करसखस्सर्वज्ञः शुचिसेवकः ।३५
केनोपायेन गिरिशः प्रसन्नः स्याद्गणाधिप ।
तदुपायं समाचक्ष्व वयं त्वच्छरणं गताः ।३६

ब्रह्माजी ने कहा–वृषध्वज महेश ने ऐसा कह कर विष्णु विधाता देववृन्द और मुनिगण से उत्तर श्रवण करने की इच्छा प्रकट की ।२९। इसके पश्चात् शिव ध्यान मग्न होकर मौन हो गये । उस समय वे गणों से युक्त थे और एक स्थाणु के तुल्य अचल हो गये ।३०। महेश्वर भगवान् निरंजन, निराकार, निराभास, निर्विकार और निरामय आत्मतत्व का अपनी ही आत्मा में चिन्तन करने लग गये।३१। वे यह चिंतन कर रहे थे कि परमात्मा तत्व परात्पर, नित्य स्वरूप, निरवग्रह ममता से रहित, निर्गुण, ज्ञान द्वारा जानने योग्य और शब्द से भी परे हैं ।३२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभू शङ्कर परमानन्द में निमग्न हो गये ।३३। तब समस्त देवता और विष्णु ने महादेव को ध्यानावस्थित देखकर नन्दिकेश्वर से कहा--हम लोग अब क्या कर सकते हैं ? शङ्कर भगवान तो समाधि में लीन हो गये हैं आप ही इन परम विरक्त शिव के सच्चे सखा और परम पवित्र सेवक हैं ।३४-३५। हे गणाधिप ! जिस उपाय से शङ्कर प्रसन्न हों वही हमें कृपाकर बतलाइये । हम सब आपकी शरण में आये हैं ।३६।

इति विज्ञापितो देवैर्मुने हर्षादिभिस्तदा ।
प्रत्युवाच सुरांस्तान्स नन्दी शम्भुप्रियो गणः ।३७
हे हरे हे विधे शक्र निर्जरा मुनयस्तथा ।
शृणुध्वं वचनं मे हि शिवसन्तोषकारकम् ।३८
यदि वो हठ एवाद्य शिवदारपरिग्रहे ।
अतिदीनतया सर्वे सुनुतिं कुरुतादरात् ।३९
भक्तेर्वश्यो महादेवो न साधारणतस्सुराः ।
अकार्यमपि सद्भक्त्या करोति परमेश्वरः ।४०
एवं कुरुत सर्वे हि विधिविष्णुमुखाः सुराः ।
यथागतेन मार्गेणान्यथा गच्छत मा चिरम् ।४१
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य मुने विष्ण्वादयस्सुराः ।
तथेति मत्वा सुप्रीत्या शङ्कर तुष्टुवुर्हिते ।४२

हे मुने ! इस तरह प्रसन्नतापूर्वक देवताओं की स्तुति सुनकर शिव के परम प्रिय नन्दी ने देवताओं से कहा ।३७। नन्दिकेश्वर ने कहा--हे ब्रह्मा--विष्णु प्रभृति देव-मुनियों ! अब मैं आप सबको शिवको सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने वाली बात बतलाता हूँ, उसे सुनिये । यदि शिव के द्वारा परिग्रह करने में ही आप अपना कल्याण समझ कर बड़ा हठ करते हैं तो आप सब परम दीन-भाव से इनका स्तवन करें ।३८-३९। हे देवगणों ! महेश्वर सदा भक्ति द्वारा ही वशीभूत होते हैं वह भक्ति भी उच्च कोटि की होनी चाहिए । साधारण से काम नहीं चलेगा । शिव-भक्ति द्वारा वश में होकर जो कोई अकार्य भी होता है उसे कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया करते हैं ।४०। ब्रह्माजी ने कहा--विष्णु आदि समस्त देवताओं ने नन्दी की यह बात सुनकर कि अगर आप ऐसा नहीं कर सकते हैं । तो कुछ भी फल नहीं होता। अतः जहां से आप आये हैं वापिस चले जाइये सबने कहा हम सब यही करेंगे और फिर सभी दीनतापूर्ण भक्ति-भाव से शिव स्तुति करने में परायण हो गये ।४१-४२।

देवदेव महादेव करुणासागरप्रभो ।
समुद्धर महाक्लेशात्त्राहि नश्शरणागतान् ।४३
इत्येवं बहुदीनोक्त्या तुष्टुवुश्शङ्करं सुराः ।
रुरुदुस्सुस्वरं सर्वे प्रेमव्याकुलमानसाः ।४४
हरिर्मया सुदीनोक्त्या सुविज्ञप्तं चकार ह ।
संस्मरन्मनसा शंभुं भक्त्या परमयान्विताः ।४५
सुरैरेवं स्तुतश्शंभुर्हरिणा च मया भृशम् ।
भक्तवात्सल्यतो ध्यानाद्विरतोभून्महेश्वरः ।४६
उवाच सुप्रसन्नात्मा हर्यादीन्हर्षयन्नरः ।
विलोक्य करुणादृष्ट्या शंकरो भक्तिवत्सलः ।४७
हे हरे हे विधे देवाश्शक्राद्या युगपत्समे ।
किमर्थमागता यूयं सत्यं ब्रूत ममाग्रत ।४८

उन्होंने कहा--हे करुणासागर ! हे देवदेव ! हम सब इस समय महान् क्लेश में डूबे आपकी शरण आये हैं । आप हम सबका उद्धार कीजिए ।४३। ब्रह्माजी बोले-जब बार-बार अपनी रक्षा के लिए सबने दीन भाव से स्तवन किया और व्याकुल रुदन करने लगे तो मैंने और हरि ने अत्यन्त भक्ति के साथ शङ्कर का स्मरण करते हुए दीनता से विज्ञप्ति की।४४-४५।ब्रह्माजी ने कहा-मेरे विष्णु के तथा सभी देवताओं के द्वारा मन से शिव का स्मरण करने पर भक्तवत्सलतावश शिव ने समाधि से उपराम ग्रहण किया ।४६। भक्तों पर दया करने वाले परम प्रसन्न शिव ने सबकी ओर करुणा दृष्टि से देखते हुए कहा-हे विधाता! हरे ! इन्द्राणि देवगण ! आप सब मुझे सत्य बात बतलाओ कि यहाँ किस कारण से आये हो ? ।४७-४८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वज्ञस्त्वं महेशान त्वंतर्यम्यखिलेश्वरः ।
किं न जानासि चित्तस्थं तथा वच्म्यपि शासनात् ।४६
तारकासुरतो दुःखं संभतं विविधं मृड ।
सर्वेषां नस्तदर्थं हि प्रसन्नोऽकारि वै सुरैः ।५०
शिवा सा जनित शैलात्वदर्थं हि हिमालयात् ।
तस्यां त्वदुद्भवात्पुत्रात्तस्य मृत्युर्न चान्यथा ।५१
इति दत्तो ब्रह्मणा हि तस्मै दैत्याय यद्वरः ।
तदन्यस्मादमृत्युस्स बाधते निखिलं जगत् ।५२
नारदस्य निदेशात्सा करोति कठिनं तपः ।
तत्तेजसाखिलं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।५३
वरं दातुं शिवायै हि गच्छ त्वं परमेश्वर ।
देवदुःखं जहि स्वामिन्नस्माकं सुखमावह ।५४
देवानां मे महोत्साहो हृदये चास्ति शंकर ।
विवाहं तव संद्रष्टुं तत्त्वं कुरु यथोचितम् ।५५
रत्यै यद्भगवता दत्तो वरस्तस्य परात्पर ।
प्राप्तोऽवसर एवाशु सफलं स्वप्रणं कुरु ।५६

तब भगवान् विष्णु ने कहा—हे महेश्वर ! आप सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी और अखिलेश्वर हैं। आप हमारे मन की बात खूब अच्छी तरह जानते हैं तथापि आपकी आज्ञा का पालन करते हुए मैं सेवा में निवेदन करता हूँ ।४६। हे महेश ! तारक दैत्य ने हम सबको बहुत दुःख दिया है। इसी दुःख से छुटकारा पाने के लिए आपको सब देवता प्रसन्न करने के हेतु यहाँ उपस्थित हुए है ।५०। जगदम्बा गौरी ने आप ही के लिए हिमाचल के यहाँ जन्म धारण किया है। इस गिरिजा के उदरसे उत्पन्न पुत्र द्वारा ही तारकासुर की मृत्यु निश्चित है इनमें तनिक भी अन्यथा बात नहीं है ।५१। ब्रह्माजी ने उस दैत्य को ऐसा ही वरदान दिया है। किसी भी अन्य के द्वारा अपनी मृत्यु न देखकर यह दुरात्मा समस्त जगत् को सता रहा है ।५२। देवर्षि नारद के उपदेश से भगवती गिरिजा अत्यन्त कठोर तपस्या कर रही हैं और उसका तेज समस्त चराचर में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याप्त होता है ।५३। हे परमेश्वर ! अब उस तपोमग्न पार्वती को वरदान देने के लिए वहाँ पधारें । हे स्वामिन ! अब आप देवों के दुःख को दूर कर हम सबको प्रसन्न कीजिए ।५४। हे शङ्कर ! सब देवगण और हमारे मन में आपके विवाह देखने का उत्साह भरा हुआ है सो यदि समुचित हो तो आप उसे स्वीकार करने की कृपा करें ।५५। हे परात्पर ! आपने कामदेव की स्त्री रति को वरदान दिया है । उसका भी अवसर आ गया है, सो आप उसे सत्य सफल करें ।५६।

इत्युक्त्वा तं प्रणम्यैव विष्णुर्देवा महर्षयः ।
संस्तूय विविधैस्तोत्रैस्संतस्थुस्तत्पुरोऽखिलाः ।५७
भक्ताधीनः शंकरोऽपि श्रुत्वा देववचस्तदा ।
विहस्य प्रत्युवाचाशु वेदमर्यादरक्षकः ।५८
हे हरे हे विधे देवाश्शृणुतादरतोऽखिलाः ।
यथोचितमहं वच्मि सविशेषं विवेकताः ।५९
नोचितं हि विधानं वै विवाहकरणं नृणाम् ।
महानिगडसंज्ञो हि विवाहो दृढबन्धनः ।६०
कुसङ्गा बहवो लोके स्त्रीसङ्गस्तत्र चाधिकः ।
उद्धरेत्सकलैर्बन्धैर्न स्त्रीसङ्गात्प्रमुच्यते ।६१
लोहदारुमयैः पाशैर्दृढं बद्धोऽपि मुच्यते ।
स्त्र्यादिपाशसम्बद्धो मुच्यते न कदाचन् ।६२
वर्द्धन्ते विषयाश्शश्वन्महाबन्धनकारिणः ।
विषयाक्रांतमनसस्स्वप्ने मोक्षोऽपि दुर्लभः ।६३

ब्रह्माजी ने कहा–इस प्रकार विष्णु, देवगण और महर्षियों ने कह कर प्रणाम किया और सब लोग अनेक स्तोत्रों के द्वारा शिव की स्तुति कर उनके समक्ष में स्थित हो गये ।५७। भक्ताधीन महेश्वर ने देव गणों के निवेदन को श्रवण कर देव-मर्यादा पालन करते हुए हँस कर उसी समय कहा–।५८। हे हरे विधाता ! हे देववृन्द्र ! मैं जो ज्ञान की विशेषता से पूर्ण समुचित बात कहता हूँ उसे आप सब सुनिए ।५९।जहाँ तक भी बन सके मनुष्यों को भी विवाह का बन्धन उचित नहीं होता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। क्योंकि यह वैवाहिक बन्धन ऐसा दृढ़ है जोकि महानिगडके समान होता है।६७। यों तो संसार में बहुत से बुरे संग करते हैं। उन सब में स्त्री का प्रसंग महा हानिकारक होता है। अन्य कुसंग के बंधनों से मुक्ति हो सकती है किन्तु स्त्री के बन्धन से कभी उद्धार नहीं हो सकता।६१। लोहा तथा दारुमय पाशों से दृढ़ता पूर्वक वद्ध पुरुष भी छुटकारा पा सकता है। परन्तु स्त्री के संग रूपी पाश से बँधा हुआ मनुष्य किसी तरह छुटकारा नहीं पा सकता है।६२। इस महा बन्धन में पड़े हुए पुरुषों की विषय कामना बराबर बढ़ती जाती है और सब विषयों की बाढ़ निरन्तर बढ़ती चली जावे तो स्वप्न में भी मोक्ष की आशा रखना दुर्लभ है।६३।

सुखमिच्छतु चेत्प्राज्ञो विधिवद्विषयांस्त्यजेत् ।
विषवद्विषतानाहुर्विषयैर्निहन्यतेनरः ।६४
जनो विषयिणा साकं वार्तातः पतति क्षणात् ।
विषयं प्राहुराचार्यास्सितालिप्तेन्द्रवारुणीम् ।६५
यद्यप्येवं हि जानामि सर्वंज्ञानं विशेषतः ।
तथाप्यहं करिष्यामि प्रार्थनां सफलां च वः ।६६
भक्ताधीनोऽहमेवास्मि तद्वशात्सर्वंकार्यं कृत ।
अयथोचित कर्ता हि प्रसिद्धो भुवनत्रये ।६७
कामरूपाधिपस्यैव प्रणश्च सफलः कृतः ।
सुदक्षिणस्य भूपस्य भैमबन्धगतस्य हि ।६८
गौतमक्लेशकर्ताहि त्र्यंबकात्मा सुखावहः ।
तत्कष्टप्रददुष्टानां शापदायी विशेषतः ।६९
विषं पीतं सुरार्थं हि भक्तवत्सलभावधृक् ।
देवकष्टं हृत यत्नात्सर्वंदैव मया सुराः ।७०

यदि मतिमान् मनुष्य सच्चा सुख चाहता है तो उसे सविधि विषयों का त्याग कर देना चाहिए। ये विषय विष के तुल्य प्राणी के मारने वाले हुआ करते हैं।६४। विषयी पुरुषों के साथ वार्तालाप करने मात्र से मनुष्य का एक क्षण में पतन हो जाता है। हे महेन्द्र ! महामनीषी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्यों ने विषयों को मिश्री से मिश्रित साक्षात् सुरा बतलाया है ।६५ मैं यद्यपि विषयों के बुरे प्रभाव एवं कुपरिणाम को भली भाँति जानता हूँ और मुझे विशेष रूप से सब ज्ञान भी हैं, तो भी मैं अब तुम्हारी इस प्रार्थना को सफल करूँगा ।६६। भक्तों के आधीन होकर उनकी प्रार्थनानुसार सभी कुछ करता हूँ । जो त्रिभुवन में बड़े शक्तिधारियों से भी असाध्य कार्य हैं, उस महान् तथा अनुचित कार्यको करने वाला मैं जगत् में प्रख्यात हूँ।६७। मैंने कामरूप नामक देश के राजा की प्रतिज्ञाको पूरा किया तथा कठिन बन्धन में प्राप्त सुदक्षिण नृप का प्रण भी पूरा किया था । गौतम को मैंने क्लेशित किया । मैं त्र्यम्बकात्मा सुख को पाने वाला होने के कारण अपने भक्तोंको सताने वाले दुष्टात्माओं को विशेष रूप से कष्ट एवं शाप दिया करता हूँ ।६८-४६। भक्तवत्सलता के भावके हेतु ही ँत्रहित के लिए मैंने महाकालकूट विष का पान किया था । हे देवगण ! आप लोगों का कष्ट तो मैं सर्वदा यत्न से दूर करता हूँ ।७०।

भक्तार्थमसहं कष्टं नहुशो बहुयत्नतः ।
वैश्वानरमुनेर्दुःख हृतं गृहपतिर्भवन् ।७१
किं बहूक्तेन च हरे विधे सत्यं ब्रवीम्यहम् ।
मत्प्रणोऽस्तीति यूयं वै सर्वे जानीथ तत्वतः ।७२
यदायदा विपत्तिर्हि भक्तानां भवति क्वचित् ।
तदातदा हराम्यशु तत्क्षास्सर्वशस्सदा ।७३
जानेऽहं तारकाद्दुःखं सर्वेषां वस्समुत्थितम् ।
असुरात्तद्धरिष्यामि सत्यंसत्यं वदाम्यहम् ।७४
नास्ति यद्यपि मे काचिद्विहारकरणे रुचिः ।
विवाहयिष्ये गिरिजां पुत्रोत्पादननेतवे ।७५
गच्छत स्वगृहाण्येव निर्भयास्सकलाः सुराः ।
कार्यं वस्साधयिष्यामि नात्र कार्या विचारणा ।७६
इत्युक्त्वा मौनमास्थाय समाधिस्थोऽभवद्धरः ।
सर्वे विष्णवादयो देवास्स्वधामानि ययुर्मुने ।७७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तजनके हितार्थ मैंने अनेक बार विविध कष्टों को सहन कियाहै। गृहपति होकर मैंने वैश्वानर मुनिका दुःख निवारण किया था।७१। हे हरे ! हे विधाता ! मेरे इस कथन को आप पूर्ण सत्य एवं तत्व पूर्ण समझें। अधिक कहना व्यर्थ है।७२। मेरे भक्तों पर जिस समय भी कोई विपत्ति आ पड़ती है मैं उसी समय तत्काल उसे सर्व प्रकार से दूर भगा देता हूँ।७३। मुझे ज्ञान है कि आप सबको तारकासुर बड़ा कष्ट दे रहा है। अब मैं सत्य कहता हूँ कि तुम्हारी उस पीड़ा का हरण मैं अवश्यही करूँगा। इसमें कुछ भी संदेह नहीं।७४। यद्यपि मुझे विषय वासना में लिप्त होकर विहार करने की किंचितमात्र भी अभिरुचि नहीं है तो भी पुत्रोत्पादन के लिए ही मैं गिरिजा के साथ विवाह अवश्य करूँगा।७५। हे देववृन्द ! आप लोग भयविहीन होकर अपने स्थान को चले जाओ। मैं प्रण करता हूँ कि आपका कार्य पूर्ण करूँगा। अब इसमें कुछ भी विचार करने की आवश्यकता नहीं है।७६। इतना कहकर शिव मौन हो समाधिस्थ हो गये और विष्णु आदि सब देवता अपने-अपने स्थानों को चले गये।७७।

सप्तऋषियों का हिमालय को विवाह के लिए सहमत करना

वशिष्ठस्य वचः श्रुत्वा सगणोऽपि हिमालयः।
विस्मितो भार्य्यया शैलानुवाच स गिरीश्वरः।१

हे मेरो गिरिराट् सह्यगन्धमादन मन्दर।
मैनाक विन्ध्य शैलेन्द्रास्सर्वे शृणुत मद्वचः।२

वशिष्ठो हि वदत्येवं किं मे कार्य्यं विचार्य्यते।
यथा तथा च शंसध्वं निर्णीय मनसाखिलम्।३

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य सुमेरुप्रमुखाश्च ते।
प्रोचुर्हिमालयं प्रीत्या सुनिर्णीय महीधराः।४

अधुना किं विमर्शेन कृतं कार्य्यं तथैव हि।
उत्पन्नेयं महाभाग देवकार्यार्थमेव हि।५

प्रदातव्या शिवायेति शिवस्यार्थेवतारिणी।
अनयाराधितो रुद्रो रुद्रेण यदि भाषिता।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतच्छ्रुत्वा वचस्तेषाम्मेर्वादीनां हिमाचलः ।
सुप्रसन्नतरोभूदै जहास गिरिजा हृदि ।७

ब्रह्माजी ने कहा–हिमालय ने वसिष्ठ मुनि के वचनों को श्रवणकर अपनी पत्नी और गणों सहित अत्यधिक विस्मित होकर कहा ।१। गिरिराज हिमवान् ने कहा–हे मेरु ! हे गन्ध मादन ! इसी प्रकार यहाँ गिरिराज मन्दर, मैनक, विन्ध्य और शैलेन्द्र को सम्बोधित कर कहा–तुम सब मेरे वचन सुनो ।२। महामुनि वसिष्ठजी इस तरह कह रहे हैं, कि मेरा कर्त्तव्य है इस बात का आप सभी भली भाँति विचार कर वर्णन करें वही मैं करूं ।३। ब्रह्माजी ने कहा–हिमवान् के इन वचनों को श्रवण कर मन्दिर, विंध्यादि पर्वतों ने आपस में परामर्श करके जो निर्णय किया उसे उन्होंने प्रेम से कहा ।४। महाभाग ! अब कार्य तो हो ही गया है । इसका विचार करना व्यर्थ है यह तो देवों के कार्य पूर्ण करने के लिए ही समुत्पन्न हुई हैं ।५। इस गिरिराज का संसार में अवतीर्ण होना शिव के लिए ही है, अतः उन शङ्कर को ही पार्वती ने भी इसके लिए ही शिवाराधना की है और रुद्रदेवके द्वारा वह अङ्गीकृत भी हो चुकी है ।६। ब्रह्माजी ने कहा–सुमेरु प्रभृति पर्वतों के उत्तर को सुनकर हिमवान् को परम प्रसन्नता हुई और गिरि नन्दिनी अपने मन में हँसने लगी ।७।

अरुन्धती च तां मेनां बोधयामास कारणात् ।
नानावाक्यसमुहेनेतिहासैर्विविधैरपि ।८
अथ सा मेनका शैलपत्नी बुद्धा प्रसन्नधीः ।
मुनीनरुन्धतीं शैलं भोजयित्वा बुभोज च ।९
अथ शैलवरो ज्ञानी सुसंसेव्य मुनींश्च तान् ।
उवाच साञ्जलि प्रीत्या प्रसन्नात्मा गतभ्रमः ।१०
सप्तर्षयो महाभागा वचश्शृणुत तामकम् ।
विस्मयो मेगतस्सर्वश्शिवयोश्चरितं श्रुतम् ।११
मदीयं च शरीरम्वै पत्नी मेना सुतास्सुता ।
ऋद्धिसिद्धिश्च चान्यद्वै शिवस्यैव न चान्यथा ।१२

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्त्वा स तदा पुत्रीं दृष्ट्वा तस्मादरं च ताम्।
भूषयित्वा यदङ्गानि ऋष्युत्सङ्गे न्यवेशयत् ।१३
उवाच च पुनः प्रीत्या शैलराज ऋषींस्तदा।
अयं भागो मया तस्मै दातव्य इति निश्चितम् ।१४

उधर अन्तःपुर में मुनिपत्नी अरुन्धती ने अनेक प्रमाणिक वचन और इतिहास की बातें सुनाकर मेना का पूर्ण प्रबोधन किया।८। शैलराजकी पत्नी ने यथार्थता को समझकर प्रसन्नता प्राप्त की और उसने अरुन्धती और शैलराज को भोजन कराकर स्वयं भी भोजन किया।९। परम ज्ञानी हिमवान् ने समस्त श्रेष्ठतम मुनियों की सुचारु रूप से सेवा करते हुए करबद्ध होकर प्रसन्नता से भ्रम-रहित वचन कहे।१०। हे महान् भाग्य वाले ऋषिवृन्द! आप सप्त ऋषियों की परम कृपा से मैंने शङ्कर और रुद्राणी का पुण्य-चरित्र सुना और अब मेरा विस्मय पूर्ण रूप से उन्मूलित हो गया है।११। उसे मैं भली-भाँति समझ गया कि यह मेरा शरीर, पत्नी मेना, पुत्री पार्वती और समस्त ऋद्धि सिद्धियाँ जो कुछ भी है वह सभी भगवान महेश्वर का ही है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।१२। ब्रह्माजी ने कहा--हिमवान् भी यह कह कर अपनी पुत्री पार्वती को वस्त्राभूषणों से भली-भाँति समलंकृत कराकर आदरपूर्वक ऋषियों की गोद में बैठा दिया।१३। फिर परम प्रसन्न होते हुए शैलाधि-पति ने ऋषियों से कहा--अब मैंने दृढ़ निश्चय कर दिया है कि यह भाग मैं शिव की सेवा में ही समर्पित कर दूँगा।१४।

शंकरो भिक्षुकस्तेय स्वयं दाता भवान् गिरे।
भैक्ष्यञ्च पार्वती देवी किमतः परमुत्तमम् ।१५
हिमवान् शिखराणान्ते यद्धेतोस्सदृशीगतिः।
धन्यस्त्वं सर्वशैलानामधिपस्सर्वतो वरः ।१६
एवमुक्त्वा तु कन्यायै मुनयो विमलाशया।
आशिष दत्तवन्तस्ते शिवाय सुखदा भव।१७
स्पृष्ट्वा करेण तां तत्र कल्याणं ते भविष्यति।
शुक्लपक्षे यथा चन्द्रो वर्द्धन्तां त्वद्गुणास्तथा।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्त्वा मुनयस्सर्वे दत्वा ते गिरये मुदा ।
पुष्पाणि फलयुक्तानि प्रत्ययं चक्रिरे तदा ।१९
अरुन्धती तदा तत्र मेना सा सुमुखी मुदा ।
गुणैश्च लोभयामास शिवस्य परमा सती ।२०
हरिद्राकुंकुमैश्चैवश्मश्रूणि प्रत्यमार्जयत् ।
लौकिकाचारमाधाय मङ्गलायनमुत्तमम् ।२१

ऋषियों ने कहा--भगवान् शङ्कर ग्रहण करने वाले आप दानदाता और पार्वती भिक्षा स्वरूपहैं, इससे अधिक सर्वोत्तम कार्य क्या हो सकता है ।१५। हे हिमाचल आप अपने सर्वोच्च शिखर समुदाय के पति होनेके कारण परम धन्य, समस्त शैलों के स्वामी तथा श्रेष्ठ हो।१६। यह कहते हुए पवित्रान्त:करण वाले ऋषियों ने जगदम्बा को आशीर्वाद दिया कि हे गिरिनन्दिनी ! तुम भगवान शिवको सुखदायक होओ ।१७। फिर ऋषियों ने अपने कर कमल से उसका स्पर्श करते हुए कहा--तुम्हारा परम कल्याण होगा और शुक्ल पक्ष के चन्द्र के समान अपने गुणों की गरिमा से वृद्धि वाली होंगी ।१८। यह कहकर ऋषियों ने हिमवान् को फल पुष्प प्रदान कर पूर्ण विश्वास दिला दिया। उधर अन्त:पुर में सुन्दर मुख वाली अरुन्धती ने शिव के गुणों का बखान कर मेना के हृदय में शिव की भक्ति भावना उत्पन्न कर दी।१९-२०।हरिद्रा चूर्ण और कुंकुम से शैलराज की दाढ़ी मूछोंका परिमार्जन किया गया और सभी लौकिक आचारों के द्वारा मङ्गल कार्य किये गये ।२१।

ततश्च ते चतुर्थेह्नि संधार्य्य लग्नमुत्तमम् ।
परस्परं च सन्तुष्य संजग्मुश्शिवसन्निधम् ।२२
तत्र गत्वा शिव नत्वा विविधसूक्तिभि: ।
ऊचु: सर्वे वशिष्ठाद्य मुनय: परमेश्वरम् ।२३
देवदेव महादेव परमेश महाप्रभो ।
श्रृणवस्मद्वचनं प्रीत्या यत्कृतं सेवकैस्तव ।२४
बोधिता गिरिराजश्च मेना विविधसूक्तिभि: ।
सेतिहासं महेशान प्रबुद्धोसौ न संशय: ।२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्यदत्ता गिरीन्द्रेण पार्वती ते हि नान्यथा ।
उद्वाहाय प्रगच्छ त्वं गणैर्देवैश्च संयुतः ।२६
गच्छ शीघ्रं महादेव हिमाचलगृहं प्रभो ।
विवाहाय यथा रीतिः पार्वतीमात्मजन्मने ।२७

फिर चतुर्थ दिन उत्तम लग्न में सभी परस्पर सन्तुष्ट होकर भगवान् शंकर के समीप पहुँचे।२२। वहाँ जाकर सबने उनको सादर प्रणाम किया तथा अनेक सूक्तों द्वारा उनका स्तवन करके वसिष्ठादि ऋषिगण ने महेश्वर से कहा—हे देवाधिदेव ! हे महाप्रभो ! आपके चरण सेवियों ने जो कुछ कियाहै उसे हम निवेदन करने आयेहैं आप कृपाकर सुनिए।२३-२४ हे महेश्वर ! हमसे शैलराज और उनकी पत्नी मेना की ऐतिहासिक तथ्य सुनकर अच्छी तरह समझा दिया है और वे निस्सन्देह इसे भलीभाँति समझ गये हैं ।२५। शैलराज ने वाग्दान द्वारा अपनी प्रिय पुत्री पार्वती को आपके लिए दे दिया हैं । अब आप सन्देह रहित होकर समस्त देववृन्द और गणों सहित सविधि विवाह करने के लिए वहाँ पधारिये ।२६। हे महेश्वर ! अब आप अविलम्ब हिमवान् के स्थान पर चलिये और रीतिपूर्वक पार्वती को अपनी पत्नी बनाने के लिए विवाह कीजिए ।२७।

शिवजी की बारात का सजाया जाना

अथ शम्भुः समाहूय नन्द्यादीन् सकलान्गणान् ।
आज्ञापयामास मुदा गन्तुं स्वेन च तत्र वै ।१
अपि यूयं सह मया सङ्गच्छध्वं गिरेःपुरम् ।
कियद्गणानिहास्थाप्य महोत्सवपुरस्सरम् ।२
अथाते समनुज्ञप्ता गणेश निर्युयुर्मुदा ।
स्वंस्वं बलमुपादाय तान् कथयिद्वदाम्यहम् ।३
अभ्यगाच्छंखकर्णश्च गणकोट्या गणेश्वरः ।
शिवेन सार्द्धं सङ्गन्तु हिमाचलपुरम्प्रति ।४
दशकोट्या केकराक्षो गणानां समहोत्सवः ।
अष्टकोट्या च विकृतो गणानां गणनायकः ।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्माजी ने कहा–भगवान महेश ने इसके अनन्तर नन्दी आदि अपने समस्त गणों को बुलाकर अपने साथ वरयात्रा में चलने के लिए आज्ञा प्रदान की। शिवने कहा–कुछ गण तो यहाँ रहें और शेष सभी महान उत्सव एवं उत्साव के साथ हिमाचल के नगर को चले।१-२। ब्रह्माजी ने कहा––गण वर्ग ने इस प्रसन्नता की बात को सुनकर जिस परम आह्लाद के साथ प्रस्थान किया मैं उसका पूरा विवरण बताता हूँ।३। गणराज शंखकर्ण अपने साथ एक करोड़ गण लेकर हिमालय की नगरी को चल दिया। देवगण गणाधिपति दश करोड़ गण लेकर तथा गणेश्वर विकृत आठ करोड़ सेना लेकर बड़े ही उत्साह के साथ हिमाचल के नगर को चल दिये।४-५।

चतुष्कोट्या विशाखश्च गणानां गणनायकः।
पारिजातश्च नवभि कोटिभिर्गणपुङ्गवः।६
शष्टिस्सर्वान्तकः श्रीमान्तथैव विकृताननः।
गणानान्दुन्दुभीष्टाभिः कोटिभिर्गणनायकः।७
पञ्चभिश्च कपालाख्यो गणेशः कटिभिस्तथा।
षड्भिरस्सन्दारको वीरो गणानाँ कोटिभिर्मुने।८
कोटिकोटिभेरेवेह कन्दुकः कुण्डकस्तथा।
विष्टम्भो गणपोऽष्टाभिर्गणानां कोटिभिस्तथा।९
सहस्रकोट्या गणपः पिप्पलो मुदितो ययौ।
तथा संनादकों वीरो गणेशो मुनिसत्तम।१०
आवेशनस्तथाष्टाभिः कोटिभिर्गणनायकः।
महाकेशस्सहस्रेण कोटिनांगणपो ययौ।११
कुण्डो द्वादशकोट्या हि तथा पर्वतको मुने।
अष्टाभि कोटिभिर्वीरस्समगाच्चन्द्रतापनः।१२
कालश्च कालकश्चैव महाकालश्शतेन वै।
कोटीनां गणानाथो हि तथैवाग्निकनामकः।१३

गणनायक विशाख चार करोड़ गण पारिजात नौ करोड़ गण, श्रीमान सर्वान्तक और विकृतानन साठ-साठ करोड़ गण, दुन्दुभ गण-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायक आठ करोड़ गण कपाल नामधारी गणेश्वर पाँच करोड़, गण, सन्वारक वीर गणाधिपति छः करोड़ गण विघ्नम गणराज अपने साथ आठ करोड़ गण, गणेश्वर पिप्पल एक सहस्र कोटि गण, संनादक गणाधीशा अपने साथ एक सहस्र करोड़ गण आवेदन आठ करोड़ गण और महाकेश नामक गण नामक अपने साथ सहस्र करोड़ गण लेकर हिमवान के यहाँ चल दिये ।६-११। हे मुनीश्वर ! इसी तरह कुण्ड और पर्वतक बारह करोड़ दल साथ लेकर चल दिया ।१२। काल कालक, महाकाल और अग्निक नाम वाले गणाधीश्वर अपने साथ सौ-सौ करोड़ सैनिक दल लेकर चले ।१३।

कोट्याग्निमुख एवागाद् गणानां गणानायकः ।
आदित्यमूर्द्धा कोट्या च तथा चैव घनावहः ।१४
सन्नाहश्शतकोट्या हि कुमुदो गणपस्तथा ।
अमोघः कोकिलश्चैव शतकोट्या गणाधिपः ।१५
सुमन्त्रः कोटिकोट्या च गणानां गणनायकः ।
काकपादोदरः कोटिषष्ट्या सन्तानकस्तथा ।१६
महाबलञ्च नवभिर्मधुपिंगश्च कोकिलः ।
नीलो नवत्या कोटीनां पूर्णभद्रस्तथैव च ।१७
सप्तकोट्या चतुर्वक्त्रः करणो विंशकोटिभिः ।
ययौ नवतिकोट्या तु गणेशानो हि रोमकः ।१८
यज्वाक्षशतमन्युश्च मेधमन्युश्च नारद ।
तावत्कोट्या ययुस्सर्वे गणेशा हि पृथक् पृथक् ।१९
काष्ठाङ्गुश्चतुषष्ट्या कोटीनां गणानायकः ।
षवरूपाक्षस्सुकेशश्च वृषाभश्च सनातनः ।२०

अग्निमुख गणनायक आदित्य मूर्धा और धनावह नामक गणेश्वरों ने भी साथ से एक-एक करोड़ गण लेकर प्रस्थान किया ।१४। सन्नाह, कुमुद, अमोघ और कोकिल ने सौ-सौ करोड़ दल लेकर प्रस्थान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया ।१५। गणनायक सुमन्त्र ने एक कोटि तथा काकपादोदर और सन्तानक ने साठ करोड़ गण लेकर प्रस्थान किया ।१६। महाबल ने नौ करोड़ कोकिल, नील, मधुपिंग और पूर्वभद्र ने नब्बे करोड़ दल के साथ गमन किया ।१७। चतुर्वक्त्र ने सात करोड़, करण ने बीस करोड़ और रोमक नाम वाले ने नब्बे करोड़ गणों का दल लेकर हिमवान् के यहाँ गमन किया ।१८। हे नारद ! यज्वाक्ष-शतमन्यु मेघमन्यु ये सब नब्बे करोड़ दल लेकर गये ।१९। काष्ठांगुष्ठ गणनायक विरूपाक्ष और सुकेश-सनातन और वृषभ चौंसठ दल के साथ गये ।२०।

तालकेतुः षडास्यश्च चञ्च्वास्यश्च सनातनः ।
सम्वर्तकस्तथा चैत्रो लकुलीशस्स्वयम्प्रभुः ।२१
लोकान्तकश्च दीप्तात्मा तथा दैत्यन्तको मुने ।
देवो भृङ्गिरिटिः श्रीमान्देवदेवप्रियस्तथा ।२२
अशनिर्भानुकश्चैव चतुष्षष्ट्या सहस्रशः ।
ययुश्शिवविवाहार्थं शिवेन सह सोत्सवाः ।२३
भूतकोटिसहस्रेण प्रमथाः कोटिभिस्त्रिभिः ।
वीरभद्रश्चतुष्षष्ट्या रोमजानान्त्रिकोटिभिः ।२४
कोटिकोटिसहस्राणां शतैर्विंशतिभिर्वृताः ।
तत्र जग्मुश्च नन्द्याद्या गणपाश्शंकरोत्सवे ।२५
क्षेत्रपालो भैरवश्च कोटिकोटिगणैर्युतः ।
उद्वाहश्शंकरस्येत्या ययौ प्रीत्या महोत्सवः ।२६
एते चान्ये च गणपा असङ्ख्याता महाबलाः ।
तत्र जग्मुर्महाप्रीत्या सोत्साहाश्शङ्करोत्सवे ।२७

हे मुने ! कालकेतुषड्मुख-चंचुमुख सनातन-सम्वर्तक-चैत्र-लंकुलीश स्वयंप्रभु-लोकान्तक-दीप्तात्मा-दैत्यान्तक-देवगिरिटि-श्रीमान-देव देव प्रिय अशनि और भानुक ये चौंसठ हजार गणेश्वर महान उत्सवोल्लास से पूर्ण होकर भगवान शंकर के विवाह में चल दिये ।२१-२२। एक हजार करोड़ भूत, तीन करोड़ प्रमथ, चौंसठ करोड़ वीरभद्र और तीन रोमज शिव विवाह में सम्मिलित होने को चल दिये ।२३। ये सभी कोटि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि-सहस्त्र और बीस हजार करोड़ से संयुक्त होकर विवाह में चले इस तरह नन्दी आदि गणराज भगवान् रुद्रदेवके विवाहोत्सव का आनन्द लेने को चले ।२५। क्षेत्रपाल और भैरव करोड़-करोड़ गणों के दल के साथ सुसंज्जित होकर महोत्सव का सुख लेने को रवाना हुए और बहुत ही अधिक प्रेमपूर्ण होकर प्रस्थान किया ।२६। इसी रीति से अन्य भी असंख्य महाबलधारी गणराज अत्यन्त प्रेम से शंकर के विवाहोत्सव में सम्मिलित हुए ।२७।

सर्वे सहस्रहस्ताश्च जटामुकुटधारिणः ।
चन्द्ररेखावतंसाश्च नीलकण्ठास्त्रिलोचनाः ।२८
रुद्राक्षाभरणास्सर्वे तथा सद्भस्मधारिणः ।
हारकुण्डलकेयूरमुकुटाद्यै रलंकृताः ।२९
ब्रह्मविष्विन्द्रसङ्काशा अणिमादिगुणैर्युताः ।
सूर्य्यकोटिप्रतीकाशास्तत्र रेजुर्गणेश्वराः ।३०
पृथिवीचारिणः केचित् केचित्पातालचारिणः ।
केचिद्व्योमचराः केचित्सप्तस्वर्गचरा मुने ।३१
किम्बहूक्तेन देवर्षे सर्वलोकनिवासिनः ।
आययुस्स्वर्गणाश्शम्भोः प्रीत्या वै शङ्करोत्सवे ।३२
इत्थं देवगणैश्चान्यैस्सहितश्शङ्करः प्रभुः ।
ययौ हिमगिरिपुरं विवाहार्थं निजस्य वै ।३३
यदा जगाम सर्वेशो विवाहार्थं सुरादिभिः ।
तदा तत्र ह्यभूद्वृत्तं तच्छृणु त्वं मुनीश्वर ।३४
रुद्रस्य भगिनी भूत्वा चण्डी सूत्सवसंयुता ।
तत्राजगाम सुप्रीत्या परेषां सुभयावहा ।३५

इसी विवाह के महोत्सव में बहुत से सहस्र कर वाले, जटाजूट तथा मुकुट धारण करने वाले, मस्तक पर चन्द्र-रेखाधारी नीले कण्ठ वाले तीनों नेत्र से युक्त समस्त रुद्राक्ष मालाधारी, सद्भस्म से भूषित अंग वाले, हार केयूर-कुण्डल-मुकुट आदि से समलंकृत शरीर वाले, ब्रह्मा, विष्णु और महेन्द्र के तुल्य, अणिमादि सिद्धियों के गुणगण से भूषित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सूर्य के समान तेज के प्रकाश वाले गणेश्वर शोभित हुए थे ।२८-३०। इन सब में कुछ भूमिचारी तो कोई गगनचारी और कोई पाताल में विचरण करने वाले एवं कुछ सातों स्वर्ग में पर्यटन करने वाले थे ।३१। हे महर्षे ! अधिक कहाँ तक वर्णन किया जावे इन महेश्वर के विवाह महोत्सव में आनन्द का लाभ पाने के लिए समस्त लोकों के निवासी बड़े प्रेम के साथ सम्मिलित हुए ।३२। इस तरह भगवान शंभु समस्त देवगण के साथ अपने विवाह के लिए हिमवान् के नगर में गये ।३३। हे नारद ! जब भगवान् महेश्वर देवगण के साथ अपना विवाह करने गये उस समय जोकुछ हुआ उसको मैं सुनाता हूँ। उसे आप सुनिये ।३४।शत्रुओंको भय देने वाली रुद्र भगिनी होकर चण्डी भी बड़े उत्साह के साथ प्रेमपूर्वक वहाँ आई ।३५।

प्रेतासनसमारूढा सर्पाभरणभूषिता ।
पूर्णं कलशमादाय हैमं मूर्ध्नि महाप्रभुम् ।३६
स्पपरीवारसंयुक्ता दीप्तास्या दीप्तलोचन ।
कुतूहलम्प्रकुर्वन्ती जातहर्षा महाबला ।३७
तत्र भूतगणा दिव्या विरूपाः कोटिशो मुने ।
विराजन्ते स्म बहुशस्तथा नानाविधास्तदा ।३८
तैस्समेताग्रतश्चण्डी जगाम विकृतानना ।
कुतूहलान्वितातत्र प्रीत्युपद्रवकारिणी ।३९
चण्ड्या सर्वे रुद्रगणाः पृष्ठतश्च कृतास्तदा ।
कोट्येकादशसंख्याका रौद्ररुद्रप्रियाश्च ते ।४०
तथा डमरुनिर्घोषैर्व्याप्तमासीज्जगत्त्रयम् ।
भेरीझङ्कारशब्देन शाखानां निनदेन च ।४१
तथादुन्दुभिनिर्घोषैश्शब्दः कोलाहलोऽभवत् ।
कुर्वञ्जगन्मङ्गलं च नाशयन्मलेतरत् ।४२

हे मुने! प्रेतासन पर स्थित सर्पों के आभरण से विभूषितांग वाली मस्तक पर महाकान्ति युक्त सुवर्ण कलशको धारण किये,अपने परिकरसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त, दीप्त सुख वाली, और दीप्तिपूर्ण नेत्र वाली प्रसन्नता से प्रफुल्ल त्रिविध कुतूहल करती हुई, प्रसन्नमुखी,महाबल वाली भगवती वहाँ आई तथा करोड़ों दिव्य भूत और अनेकों नाना प्रकार वाले विरूपाक्ष भी वहाँ उत्सव में शोभित होने लगे ।३६-३८। इन सबके सहित विकट मुख वाली भगवती चण्डी बड़े प्रेम से प्रीतिमय उपद्रव करती वहाँ उपस्थित हो गई । उस समय चण्डी ग्यारह करोड़ रुद्र गणों को पीछे कर स्वयं आगे हो गई । उस समारोह में डमरू की ध्वनि की तुमुलता से त्रिभुवन एकदम-व्याकुल हो गये । साथ ही भेरी की झंकार और शंखों की ओर ध्वनि सर्वत्र फैल गई ।३९-४१। उस समय दुन्दुभियों के निर्घोष के द्वारा महान् कोलाहल होने लगा जिससे जगत् के समस्त अमङ्गल भाग जावें सर्वत्र जगत् मङ्गलमय हो जाये ।४२।

गणानां पृष्ठतो भूत्वा सर्वे देवास्समुत्सुकाः ।
अन्वयुस्सर्वसिद्धाश्च लोकपालादिका मुने ।४३
मध्ये व्रजन् रमेशोऽथ गरुडासनमाश्रितः ।
शुशुभे ध्रियमाणेन छत्रेण महता मुने ।४४
चामरैर्वीज्यमानोऽसौ स्वकर्णै, परिवारितः ।
पार्षदैर्विलसद्भिश्च स्वभूषाविधिभूषितः ।४५
तथाऽहमप्यशोभम्वै व्रजन्मार्गे विराजितः ।
वेदैर्मूर्तिधरैश्शास्त्रैः पुराणैरागमैस्तथा ।४६
सनकादिमहासिद्धैस्सप्रजापतिभिस्सुतैः ।
परिवारैस्संयुतो हि शिवसेवनतत्परः ।४७
स्वसैन्यमध्यगश्शक ऐरावतगजस्थितः ।
नानाविभूषितोऽत्यन्तं व्रजन् रेजे सुरेश्वरः ।४८
तदा तु व्रजमानास्ते ऋषयो बहवश्च ते ।
विरेजुरतिसोत्कण्ठाश्शिवस्योद्वाहनम्प्रति ।४९

ऐसे निर्घोषकारी गणों के पीछे पूर्ण उत्कण्ठा से युक्त देवीने प्रस्थान किया और उनके पीछे समस्त सिद्धियों तथा लोपकाल आदि ने प्रयाण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया ।४३। इन सबके साथ बैकुण्ठनाथ ने प्रयास किया भगवान विधु पार्षदों द्वारा चामर से बीज्यमान अपने परिकरों के सहित दिव्याभूषणों से भूषित थे ।४४-४५। हे नारद ! उस विवाह यात्रा में इसी तरह मार्ग में प्रयाण करने वाला मैं भी था मेरे साथ मूर्तिमान वेद सम्मत शास्त्र और पुराण भी चल रहे थे ।४६। महासिद्धि सनकादि, प्रजापति पुत्र तथा परिवार के सहित में शिवजी की सेवा करने में परायण हो रहा था ।४७।इसी प्रकार अपने ऐरावत हाथी पर विराजमान देवराज महेन्द्र भी इसी समस्त परिवार से युक्त वहाँ शोभायमान हो रहे थे । वे अनेकानेक दिव्य आभूषणों से अलंकृत वरयात्रा के मार्ग को शोभा वृद्धि कर रहे थे ।४८। महर्षियों का समुदाय भी शिव विवाह की उत्कण्ठा लिए इस वरयात्रा ने अपूर्व शोभा बढ़ा रहा था ।४९।

शांकिन्यो यातुधानाश्च वेताला ब्रह्मराक्षसा ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च तथान्ये प्रमथादयः ।५०
तुम्बुरुर्नारद्रो हाहाहूहूक्षश्वेत्यादयो वराः ।
गन्धर्वा किन्नरा जग्मुर्वाद्याध्माय हर्षिताः ।५१
जगतो मातरस्सर्वा देवकन्याश्च सर्वशः ।
गायत्री चैव सावित्री लक्ष्मीरन्यास्सुरस्त्रियः ।५२
एताश्चान्याश्च देवानां पत्नयो भवमातरः ।
उद्वाहश्शंकरस्येति जग्मुस्सर्वा मुदान्विताः ।५३
शुद्धस्फटिकसंकाशो वृषभस्सर्व सुन्दरः ।
यो धर्मं उच्यते वेदैश्शास्त्रैस्सिद्धमहर्षिभिः ।५४
तमारूढो महादेवो वृषभं धर्मवत्सलः ।
शुशुभेतीव देवर्षिसेवितस्सकलव्रजन् ।५५
एभिस्समेतैस्सकलैर्महर्षिभिर्बभौ महेशो बहुशोष्यलंकृतः ।
हिमालयाह्वस्य धरस्य संव्रजन्पाणिग्रहार्थं संदनं शिवायाः ।५६

शिवजी की बारात में यातुधानी-शाकिनी-वेताल-ब्रह्म राक्षस भूत-प्रेत-प्रमथ-तुम्बरु-नारद-हाहा-हूहू किन्नरगण श्रेष्ठ संघर्ष आदि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सभी परमाह्लाद प्रदर्शन करते हुए मुख और हाथ के वाद्य बजाते हुए प्रयाण कर रहे थे।५०-५१। समस्त जगत् की मातायें, गायत्री, लक्ष्मी सावित्री, सब देवकन्यायें देवांगनायें आदि नारी वर्ग के समूह भगवान् शङ्कर के विवाहोत्सव में प्रसन्नता के साथ सम्मिलित हुए।५२-५३ हे महर्षे! विशुद्ध स्फटिकके तुल्य दीप्तिमान् परम सुन्दर वृषभ पर भगवान् महेश्वर बिराजमान हुए। इस वृषभको बड़े-बड़े सिद्धमहर्षियों ने शास्त्र में धर्म बतलाया है। धर्म वत्सल शिव सब के साथ वृषभ पर जाते हुए अत्यन्त शोभित हुए।५४-५५। इस रीति से समस्त महर्षियों के साथ जाते हुए शङ्कर शोभायमान हुए। उस समय सबने देखा कि आज रुद्रदेव पार्वती के पाणि को ग्रहण करने के लिए हिमाचल के स्थान पर पदार्पण कर रहे हैं।५६।

शिव पार्वती का विवाहोत्सव

एतस्मिन्नंतरे तत्र गर्गाचार्य्यप्रणोदितः।
हिमवान्मेकया सार्द्धं कन्यां दातुं प्रचक्रमे।१
हैमं कलशमादाय मेना चार्द्धांगमाश्रिता।
हिमाद्रेश्च महाभागो वस्त्राभरणभूषिता।२
पाद्यादिभिस्ततः शैलः प्रहृष्टः स्वपुरोहितः।
तं वरं वरयामास वस्त्रचंदनभूषणैः।३
ततो हिमाद्रिणा प्रोक्ता द्विजास्तिथ्यादिकीर्तन।
प्रयोगो भण्यतां तादस्मिन्समय आगते।४
तथेति चोक्ता ते सर्वे कालज्ञा द्विजसत्तमाः।
तिथ्यादिकीर्तनं चक्रुः प्रीत्या परमनिर्वृताः।५
अथ ते प्रवंतश्रेष्ठा मेर्वाद्या जातसंभ्रमाः।
ऊचुस्ते चैकपद्येन हिमवंतं गणेश्वरम्।६
कन्यादाने स्थायतां चाद्यशैलाथोक्त्वा किं कार्यनाशस्तथैव।
सत्यं ब्रूमो नात्र कार्यो विमर्शस्तस्मात्कन्या दायतामीश्वराय।७

ब्रह्माजी ने कहा--गर्गाचार्य की प्रेरणा से उसी अवसर पर प्रेरित होकर हिमालय ने अपनी पत्नी मेना के साथ कन्या के दान करने की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इच्छा की ।१। महाभाग्यशालिनी सेना दिव्य वस्त्राभूषणों से समलंकृत होकर सुवर्ण का एक कलश हाथ में लेकर पर्वत-राज हिमालय के वाम भाग में स्थित हो गई ।२। इसके पश्चात् हिमाचल ने परम प्रसन्नता के साथ अपने पुरोहित के साथ अर्घ्यं पाद्य और चंदन वस्त्रादि देते-हुए वर का वरण किया ।३। इसके अनन्तर हिमवान ने ब्राह्मण वृन्दको तिथ्यादि का कीर्तन करने के कार्य के लिए नियुक्त किया और जब समय उपस्थित हो गया तब यह कहा कि अब समय आ गया है कि तिथि आदि का प्रयोग करना चाहिए ।४। यह सुनकर समय का ज्ञान रखने वाले परम श्रेष्ठ ब्राह्मण अति शान्ति के साथ वेगपूर्वक तिथि आदि का संकीर्तन करने लगे ।५। उस समय गिरिश्रेष्ठ मेरु आदि सबने सम्भ्रम पूर्वक एक ही साथ पर्वत-राज हिमालय से कहा--हे शैलराज! आप अब कन्या के दान करने के कार्य को सम्पन्न कीजिए, विलम्ब करने से लग्न निकल जायगी और कार्य का नाश होगा । अब अन्य कुछ भी विचार करने की आवश्यकता नहीं है । आप भगवान शंकर को अपनी कन्या देने का आयोजन करिये ।६-७।

तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां सुहृदां हिमालयः ।
स्वकन्यादानमकरोच्छिवाय विधिनोदितः ।८
इमां कन्या तुभ्यमहं ददामि परमेश्वर ।
भार्यार्थे परिगृह्णीष्व प्रसीद सकलेश्वर ।९
तस्मै रुद्राय महते मन्त्रेणानेनं दत्तवान् ।
हिमाचलो निजां कन्यां पार्वतीं त्रिजगत्प्रसूम् ।१०
इत्थं शिवाकरं शैल शिवहस्ते निधाय च ।
मुमोदातीव मनसि तीर्णकाममहार्णवः ।११
वेदमन्त्रेण गिरिशो गिरिजाकरपङ्कजम् ।
जग्राह स्वकरेणाशु प्रसन्नः परमेश्वरः ।१२
क्षितिं संस्पृश्य कामस्य कोदादिति मनु मुने ।
पपाठं शङ्करः प्रीत्या दर्शयलौकिकी गतिम् ।१३
महोत्सवो महानासीत्सर्वत्र प्रमुदावहः ।
बभूव जयसंरावो देवि भूम्यन्तरिक्षके ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्माजी ने कहा–हिमवान ने ऐसे वचन श्रवणकर विधि-विधान के साथ अपनी कन्या का दान कर दिया।८। हिमवान् ने कहा-हे परमेश्वर मैं आज अपनी इस कन्या का दान आपको कर रहा हूँ। हे सर्वेश्वर अब आप इसको अपनी प्रिय पत्नी के स्वरूप में स्वीकार कीजिए।९। इस तरह उस समय त्रिभुवन की उत्पत्ति करने वाली जगदम्बा पार्वती को मन्त्रोच्चारण के साथ शंकर को दान कर दिया।१०। हिमालय अपनी आत्मजा पार्वती का हाथ भगवान शंकरके हाथमें सौंपकर अथाह सागर से पार हो जाने के सामान अपने हृदय में परम प्रसन्न हुए।११ जब हिमवान् ने परमेश्वर को वेद मन्त्रों के साथ अपनी कन्या का समर्पण कर दिया तो शिव ने परम प्रसन्नता से जगज्जननी गिरिजा का पाणि ग्रहण कर लिया।१२। हे मुनीश्वर ! फिर लौकिक गति का प्रदर्शन करते हुए भगवान शंकर ने भूमि का स्पर्श करके "कोदात् कास्मायदात्" इत्यादि मन्त्र का प्रेम के सहित उच्चारण किया।१३।उस समय सर्वत्र परमानन्द का प्रदान करने वाला महान् उत्सव मनाया गया और त्रिभुवन में जय-जयकार की ध्वनि छा गई।१४।

साधुशब्दं नमः शब्दं चक्रुस्सर्वेऽति हर्षिताः।
गन्धर्वास्सुजुगुः प्रीत्या ननृश्चाप्सरोगणाः।१५
हिमाचलस्य पौरा हि मुमुदुश्चाति चेतसि।
मंगलं महदासीद्वै महोत्सवपुरस्सरम्।१६
अहं विष्णुश्च शक्रश्च निर्जरा मुनयोऽखिलाः।
हर्षिता ह्यभवञ्चाति प्रफुल्लवदनाम्बुजाः।१७
अथ शैववरस्सोदात्सुप्रसन्नो हिमाचलः।
शिवाप्र कन्यादानस्य सांगता सुयथोचिताम्।१८
ततो बन्धुजनास्तस्य शिवां सम्पूज्य भक्तितः।
ददुश्शिवाय सद्द्रव्यं नानाविधिविधानः।१९
हिमालयस्तुष्टमनाः पार्वतीशिवप्रीतये।
नानाविधानि द्रव्याणि ददौ तत्र मुनीश्वर।२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोतुकानि ददौ तस्मै रत्नानि विविधानि च ।
चारुरत्नविकाराणि पात्राणि विविधानि च ।२१

सभी लोग प्रसन्नतारे 'साधु-साधु' और 'नमः' इन शब्दोंका उच्चा-रण करने लगे । प्रेम सहित गन्धर्वगण गान करते लगे और अप्सरायें नृत्य करने में तत्पर हो गई ।१५। हिमालय के पुर के निवासी लोग भी अपने मनमें अत्यन्त आह्लादित हुए तथा सब जगह मङ्गलमय महोत्सव मनाने लगे ।१६। ब्रह्माजीने कहा–मैं, भगवान् विष्णु और देवराज इन्द्र, मुनि एवं अन्य समस्त देवगण प्रफुल्लित मुख वाले होकर अत्यन्त प्रसन्न हुए ।१७। पर्वतराज हिमालय अपनी कन्या के दान की सांग सम्पन्नता करने के लिए उद्यत हुए और शंकर को यथोचित सामग्री प्रदान की ।१८। अन्य समस्त बन्धु-बान्धव जनों ने भी बड़े भक्ति भाव से पार्वती का अर्चन कर शिव और शिवा की सविधि श्रेष्ठतम धन दिया ।१९। विभवयुक्त वस्तुयें प्रदान की । हे मनीश्वर! गिरिराज ने कन्या के दहेज में रत्नों से जटित पात्र एवं बहुमूल्य रत्न प्रदान किये ।२०-२१।

गवां लक्षं हयानां च सज्जितां शतं तथा ।
दासीनामनुरक्तानां लक्षं सद्द्रव्यभूषितम् ।२२
नागानां शतलक्षं हि रथानां च तथा मुने ।
सुवर्ण जटितानां च रत्नसारविनिर्मितम् ।२३
इत्थं हिमालयौ दत्वा स्वसुतां गिरिजां शिवाम् ।
शिवाय परमेशाय विधिनाऽऽप कृतार्थताम् ।२४
अथ शैलवरो माध्यदिनोक्तस्तोत्रतो मुदा ।
तुष्टाव परमेशानं सद्गिरा सुकृतांजलिः ।२५
ततोवेदविदा तेनाज्ञप्ता मुनिगणास्तदा ।
शिरोऽभिषेकं चक्रुस्ते शिवायाः परमोत्सवाः ।२६
देवाभिधानमुच्चार्य्यं पर्य्युक्षणविधिं व्यधुः ।
महोत्सवस्तदा चासीन्महानन्दकरो मुनेः ।२७

एक लाख दूध वाली गौ, सुसज्जित सौ अश्व और गिरिनन्दिनी में सौहार्द भाव वाली श्रेष्ठ रत्नों से विभूषित एक लाख परिचारिकायें दी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।२२। एक करोड़ हाथी और रथ दिये जो कि रत्न एवं सुवर्ण से मण्डित एवं जटित थे ।२३। हिमवान् ने उदारपूर्वक दिल खोलकर बहुत-सा सामान दहेज में पार्वती और शिव को देकर सफलता का लाभ प्राप्त किया ।२४। यह सब कुछ करने के पश्चात् हिमालय ने यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा के स्तोत्र के द्वारा स्तवन कर हाथ जोड़ते हुए अपनी श्रेष्ठ वाणी में भगवान् शिव को प्रसन्न किया ।२५। वेद के ज्ञाताओं ने आज्ञा प्राप्तकर उत्साह के साथ भवानी का अभिषेक करना आरम्भ किया।२६।वेद अभिधान का उच्चारण करते हुए उन्होंने पर्थ्युक्षण विधि का विधान सम्पन्न किया। हे मुनिराज! बड़े ही आनन्द का प्रदान करने वाला महान उत्सव उस समय हुआ जो कि वाणी द्वारा वर्णित नहीं किया जा सकता है ।२७।

द्विज पत्नी द्वारा पार्वती को पतिव्रत धर्म का उपदेश

अथ सप्तर्षयस्ते च प्रोचुर्हिमगिरीश्वरम् ।
कारयस्वात्मजादेव्या यात्रामद्योचितां गिरे ।१
इति श्रुत्वा गिरीशो हि बुद्ध्वा तद्विरहम्परम् ।
विषण्णोभून्महाप्रेम्णा कियत्कालं मुनीश्वर ।२
कियत्कालेन सम्प्राप्य चेतनां शैलराट् ततः ।
तथाऽस्त्विति गिरामुक्त्वा मेनां सन्देशमब्रवीत् ।३
शैलसन्देशमाकर्ण्य हर्षशोकवशा मुने ।
मेना संयापयामास कर्त्तुमासीत्समुद्यता ।४
श्रुतिस्वकुलजाचारं चचार विधिवन्मुने ।
उत्सवम्विविधन्तत्र सा मेना क्षितिभृत्प्रिया ।५
गिरिजाम्भषयामास नानारत्नांशुकर्बरैः ।
द्वादशाभरणैश्चैव शृङ्गारैर्नृपसस्मितैः ।६
मेना मनोगतिम्बुद्धा साध्व्येका द्विजकामिनी ।
गिरिजां शिक्षयामास पातित्यव्रतम्परम् ।७

ब्रह्माजी ने कहा—सप्त-ऋषियों ने हिमवान् के समीप उपस्थित होकर कहा—हे गिरिराज ! आज परम शुभ दिन है अतएव अब आप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्वती की विदा यात्रा करा दीजिए ।१। हे महामुने ! अपनी पुत्री की विदाई करने की बात सुनकर हिमवान पार्वती भावी महान वियोग से कुछ समय तक बहुत व्याकुल हो गये ।२। कुछ समय पश्चात् चेतना प्राप्त कर हिमालय ने कहा-ऐसा ही किया जायेगा और इसका संदेश अन्तःपुर में मेना के पास भेज दिया ।३। हे मुनीश्वर ! पति के इस संदेश से मेनाको हर्ष और शोक दोनों ही हुए किन्तु उसने पुत्रीकी विदा करने का साज-समान सब इकट्ठा कर लिया ।४। हे मुने ! हिमवान की पत्नी ने वेद और कुल का सम्पूर्ण आचार, सविधि करके विदाई के उत्सव का सम्पादन किया ।५। अनेक प्रकार के रत्नभरणों से तथा दिव्य वस्त्रादि से पार्वती को विभूषित कर द्वादशोचित्त भूषणों द्वारा उसका शृङ्गार किया ।६। इसके अनन्तर महारानी मेना का हार्दिक विचार समझकर एक पतिव्रता ब्राह्मणी ने गिरिजा को परम पतिव्रत धर्म की शिक्षा देना आरम्भ किया ।७।

गिरिजे शृणु सुप्रीत्या मद्वचो धर्म वर्द्धनम् ।
इहामुत्रानन्दकरं शृण्वतां च सुखप्रदम् ।८
धन्या पतिव्रता नारी नान्या पूज्या विशेषतः ।
पावनी सर्वलोकानां सर्वपापौघनाशिनी ।९
सेवते या पतिम्प्रेम्णा परमेश्वरवच्छिवे ।
इह भुक्त्वाखिलान्भोगानन्ते चत्यां गतिम् ।१०
पतिव्रता च सावित्रीं लोपामुद्रा ह्यरुन्धती ।
शाण्डिल्या शतरूपानुसूया लक्ष्मीस्स्वधा सती ।११
संज्ञा च सुमतिः श्रद्धा मेना स्वाहा तथैव च ।
अन्या बव्योऽपि साध्व्यो हि नोक्ता विस्तरजाद्भयात् ।१२
पतिवृत्यवृवेणैव ता गतास्सर्वपूज्यताम् ।
ब्रह्मविष्णुहरैश्चापि मान्या जाता मुनीश्वरैः ।१३
सेव्यस्त्वया पतिस्तस्मात्सर्वदा शङ्करः प्रभुः ।
दीनानुग्रहकर्ता च सर्वसेव्यस्सता गतिः ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विज पत्नी ने कहा–हे पार्वती ! अब तुम धर्म की वृद्धि करने वाले मेरे कतिपय उपदेश श्रवण करो जो कि उभय लोक आनन्दप्रद और सुनने वालों को परम सुख देने वाले हैं ।८। संसार में पतिव्रता नारी ही सबको पवित्र करने वाली और सब तरह के पापों का नाश करने वाली होती है । अन्य कोई भी नही हो सकती ।९। हे प्रिये ! जो नारी अपने स्वामी को ही परमेश्वर समझकर उसको बड़े प्रेमोत्साह से सेवा किया करती है वह यहाँ समस्त सुखप्रद भोगों का उपभोग कर अन्त में पतिलोक का लाभ प्राप्त करती है ।१०। नारियों में उदाहरणीय पतिव्रता सावित्री, अरुन्धती, शाण्डिल्या, लोपामुद्रा, शतरूपा, लक्ष्मी, अनसूया, स्वधा और सती कही जाती है ।११। इनके अतिरिक्त सुमति, श्रद्धा, सेना, स्वाहा आदि अन्य भी बहुत पतिव्रता है । विस्तार के भय से इन सबका वर्णन अब मैं नहीं करना चाहती हूँ ।१२। पतिव्रत धर्म के महामहिम प्रभाव के कारण ही वे सब संसार में वन्दनीय एवं मान्य हो गई है और ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने भी तथा अन्य बड़े महर्षियोंने इनका अत्यन्त सम्मान किया है ।१३। मेरे कथन का सार यही है कि इसी प्रकार अपने पतिदेव भगवान् की भक्ति भाव से सेवा करती रहना । ये सत्पुरुषों का उद्धार करने वाले दीनों पर दयालु और समस्त चराचर के द्वारा सेवित है ।१४।

महान्पतिव्रताधर्म्मश्श्रुतिस्मृतिषु नोदितः ।
यथैव वर्ण्यते श्रेष्ठो न तथान्वोऽस्तिनिश्चितम् ।१५
भुंज्याद्भुक्ते प्रिये पत्यौ पातिव्रत्यपरायणा ।
तिष्ठेत्तस्मिञ्छिवे नारी सर्वथा सति तिष्ठति ।१६
स्वप्यात्स्वपिति सा नित्यं बुध्येत्तु प्रणमं सुधीः ।
सर्वदा तद्धितं कुर्यादकैतवगतिः प्रियाः ।१७
अनलं कृतमात्मानन्दशंयेन्न क्वाचिच्छिवे ।
कार्यार्थम्प्रोषिते तस्मिन्भवेन्मण्डनवर्जिता ।१८
पत्युर्नाम न गृह्णीयात् कदाचन पतिव्रतः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आक्रुष्टापि न चाक्रोशेत्मुसीदेत्ताडितापि च ।
हन्यतामिति च ब्रूयात्स्वामिन्निति कृपाङ्कुरु ।१९
आहूता गृहकार्याणि त्यक्त्वा गच्छेत्तदन्तिकम् ।
सत्वरं साञ्जलिः प्रीत्या सुप्रणम्य वदेदिति ।२०
किमर्थंव्याहृता नाथ स प्रसादो विधीयताम् ।
तदा दिष्टा चरेत्कर्मं सुप्रसन्नेन चेतसा ।२१

परम पावन पतिव्रत धर्मका महत्व श्रुति स्मृतियों में विशद रूपसे लिखा हुआ है । ऐसा अच्छा अन्यत्र कहीं भी नहीं हैं इसे निश्चित समय लेना ।१५। अपने स्वामी के भोजन कर लेने के पश्चात् पति की भक्ति में परायण नारी को स्वयं भोजन करना चाहिए ।१६। पतिदेव के शयन करने के पीछे शयन करे और स्वामी के उठने के पूर्व शय्या त्यागकर देवे । सदा निश्चय भाव से परम प्रिय बनकर सेवा करे और पति का हित-निश्चय भाव से परम प्रिय बनकर सेवा करे और पति का हित चिंतन करती रहे ।१७। सदा अपने पतिके समक्ष में समलंकृत होकर ही जाना चाहिए । जब स्वामी विदेश यात्रादि को गयेहों तो श्रृङ्गार कभी नहीं करे ।१८। पतिव्रता नारी को अपने पति का नाम कभी नहीं लेना चाहिए । स्वामी के बुरे एवं तिरस्कार के वचन सुनकर भी उत्तर में बुरे वचन कभी न कहे । ताड़ना और भर्त्सना पाकर भी स्वामीसे कृपा करने की ही याचना करनी चाहिए ।१९। पतिव्रता को स्वामीके बुलाने पर तुरन्त अन्य समस्त कार्यों को छोड़कर पति के समीप जाना चाहिए और प्रणाम पूर्वक हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करे ।२०। हे पतिदेव ! आपने मुझ दासी को किस कार्य के लिए बुलाने की कृपा की है । पति जो भी उस समय आज्ञा देवें उसे प्रसन्नता से पूरा करे ।२१।

चिरन्तिष्ठेन्न च द्वारे गच्छेन्नैव परालये ।
आदाय तत्वं यत्किंचित्कस्मैचिन्नार्पयेत्क्वचित् ।२२
पूजोपकरणं सर्वमनुक्ता साधयेत्स्वयम् ।
प्रतीक्षमाणावसरं यथाकालोचितं हितम् ।२३
न गच्छेत्तीर्थयात्रां वै पत्याज्ञां विना क्वचित् ।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरतो वर्जयेत्सा हि समाजोत्सवदर्शनम् ।२४
तीर्थार्थिनी तु या नारी पतिपादोदकम्पिवेत् ।
तस्मिन्सर्वाणि तीर्थानि क्षेत्राणि च न संशयः ।२५
भुज्यात्सा भर्तु रच्छिष्टमिष्टान्नादिकं च यत् ।
महाप्रसाद इत्युक्त्व पतिदत्तम्पतिव्रता ।२६
अविभज्य न चात्नीयाद्देवपित्रविध्वपि ।
परिचारकवर्गेषु गोषु भिक्षुकुलेषु च ।२७
संयतोपस्करा दक्ष हृष्टा व्यवपराङ्मुखी ।
भवेत्सा सर्वदा देवी पतिव्रतपरायणा ।२८

पतिव्रता नारी घरके द्वार पर अधिक समय तक न रहे,अन्य समीप वासी आदि के घरमें न जावे और जो कुछ भी श्रवणकर ले उसे दूसरों से न कहे।२२। बिना कहे ही पूजा की समस्त सामिग्री एकत्रित करनेका कार्य सम्पन्न करे और सर्वदा अपने हित करने वाले अवसर को देखती रहना चाहिए ।२३। पति के आदेश के बिना कहीं भी तीर्थ यात्रा आदि के लिए पतिव्रत को नहीं जाना चाहिए तथा समाज एवं उष्सव आदि में भी कहीं न जावे ।२४। जिध स्त्रीको तीर्थाटन आदि करने की उत्कट अभिलाषा होती हो उसे अपने स्वामी के चरणोदक को सादर ग्रहण करना चाहिए पतिव्रता के लिए निस्सन्देह उसमें ही समस्त धाम, क्षेत्र और महा तीर्थ निवास किया करते हैं ।२५। अपने स्वामी के भोजन के पश्चात् जो कुछ भी मिष्ठान्नादि शेष रहे उसे पतिदेव के द्वारा प्रदत्त महाप्रसाद समझकर पतिव्रता को सप्रेम भोज़न करना चाहिए ।२६। पतिव्रत धर्म की मर्यादानुसार सदा देव पितरगण और अतिथियों को पहिले समर्पित करके स्वयं खाना चाहिए । सेवक वर्ग गौ और भिक्षूक को भी यथासमय पूर्वक देवे ।२७। नारी की घर की समस्त सामग्री का संग्रह करने का कौशल परम आवश्यक है । सदा प्रसन्नचित रहे और व्यय अधिक न करे और इन सब पतिव्रत धर्म के नियमों के पूर्ण पालन से परायण रहना चाहिए ।२८।

कुर्यात्पत्यननुज्ञाता नोपवासव्रतादिकम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा तत्फलं नास्ति परत्र नरकम्व्रजेत् ।२९
सुखपूर्वं सुखासीनं रममाणं यदृच्छया ।
आन्तरेष्वपि कार्येषु पतिं नोत्थापयेत्क्वणित् ।३०
क्लीबम्वा दुःखस्थम्वा व्याधितं वृद्धमेव च ।
सुखितं दुःखितं वापि पतिमेकं न लधयेत् ।३१
स्त्रीधर्मिणी त्रिरात्रंश्च स्वमुखं नैव दर्शयेत् ।
स्ववाक्यं श्रावयेन्नापि यावत्स्नान्न शुध्यति ।३२
सुस्नाता भर्तृ वदनमीक्षेतान्यस्य न क्वचित् ।
अथवा मनसि ध्यात्वा पतिम्भानुम्विलोकयत् ।३३
हरिद्राकुङ्कुमं चैव सिन्दूरं कज्जलादिकम् ।
कुपासकञ्च ताम्बूलं मांगल्याभरणादिकम् ।३४
केशसंस्कारकवरीकरकर्णादिभूषणम् ।
भर्तुरायुष्यमिच्छन्ती दुस्येन्न पतिव्रता ।३५

पतिव्रता नारी को पति की आज्ञा के बिना व्रतोपवास आदि नहीं करना चाहिए । आज्ञा के बिना इनका करना निष्फल हो जाता है और परलोक में नरक गामिनी होना पड़ता है ।२९। सुख के साथ बैठे हुए और स्वेच्छया रमण करने वाले पति को कभी अन्य कार्य के लिए न उठावे ।३०। पतिव्रता नारी का धर्म है कि वह दुरवस्थाग्रस्त, व्याधि-युक्त, वृद्धताको प्राप्त और पुंस्त्वहीन सुखी, दुःखी कैसा भी क्यों न हों, अपने पति का तिरस्कार न करे ।३१। जब मासिक धर्म में नारी रहे तो उसे तीन रात तक अपना मुख नहीं दिखाना चाहिए और मुद्ध स्नान के पहले अपना शब्द भी नहीं सुनावे ।३२। चतुर्थ दिन शुद्ध स्नान कर सर्व प्रथम पतिव्रता नारी अपने स्वामी का मुख-दर्शन करें, अन्य किसी का नहीं । यदि पति कहीं अन्यत्र हो तो उनका ध्यान करके सूर्य का दर्शन करे ।३३। शुद्ध स्नानकर हल्दी, कुंकम, सिन्दूर, कज्जल और कुपासकं (चोली) तथा मङ्गलमय भूषण और दिव्य वस्त्र धारण करे एवं ताम्बूल आदि का सेवन करे ।३४। उस अवसर पर सुचारुता से अपने केशों का संस्कार कर केशमाश को भली भाँति सम्भाल लेवे । कर कण्ठ और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानों में भूषण पहले। अपने स्वामी की आयु की वृद्धि कामना करती हुई पतिव्रता स्वामी से तब दूर न रहे।३५।

न रजक्या न बन्धक्या तथा श्रवेणया न च।
न च दुर्भगया क्वापि सखित्वं कारयेत्क्वचित्।३६
पतिविद्वेषिणीं नारीं न सा संभाषयेत्क्वचित्।
नैकाकिनी क्वचित्तिष्ठेन्नग्ना स्नायान्न क्वचित्।३७
नोलूखले न मुसले न वर्द्धन्यां दृषद्यपि।
न यन्त्रके न देहल्यां सती च प्रवसेत्क्वचित्।३८
विना व्यवासमयं प्रागल्भ्यं नाचरेत्क्वचित्।
यत्र यत्र रुचिर्भर्तुस्तत्र प्रेमवती भवेत्।३९
हृष्टा हृष्टे विषण्णे स्यादिषण्णास्वे प्रिये प्रिया।
पतिव्रता भवेद्देवी सदा पतिहितैषिणी।४०
एकरूपा भवेत्पुण्या संपत्सु च विपत्सु च।
विकृतिं स्वात्मन क्वापि न कुर्याद्धैर्य्यंचारिणी।४१
सर्पिलवर्णंतलादिक्षयेपि च पतिव्रता।
पतिं नास्तीति न ब्रूयादायासेयु न योजयेत्।४२

धोबिन, व्यभिचारिणी, संन्यासिनी और दुर्भाग्य वाली स्त्रीसे पतिव्रता को कभी मित्रता तथा अधिक भाषण नहीं करना चाहिए।३६। जो स्त्री अपने स्वामी से द्वेषभाव रखती हो ऐसी स्त्री से कभी वार्तालाप न करे। कभी एकान्त में अकेली न रहे और बिल्कुल नग्न होकर कभी स्नान न करे।३७। ओखली, मूसल, बुहारी, पाषाण-यन्त्र और देहली के निकट सती स्त्री को कभी शयन नहीं करना चाहिए।३८। किसी उचित एवं उपयुक्त समय के न होने पर सती नारी को प्रगल्मता नहीं करना चाहिए। जिन वस्तुओं तथा कार्यों में अपने पति को विशेष रुचि हो उनमें पतिव्रता नारी को भी प्रेम करना चाहिए।३९। अपना स्वामी विषादयुक्त हो तो स्वयं भी विषण्य रहे, जो पति प्रसन्न हो तो आप भी प्रसन्नता से रहे। प्रिय के प्रतिकूल आचरण करे। हे देवी! इस रीति से पतिव्रता नारी को सबकी हितकारिणी होना चाहिए।४०।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पत्ति और विपत्ति के दोनों समयों में समान भावना रखते हुए पुण्य रूपसे धैर्य धारण करके सर्वदा अपने पति से हित करने वाली बन कर सती नारी का रहना उचित हैं।४१। पतिव्रत पालन करने वाली नारी नर घृत, तेल और लवण आदि अत्यावश्यक वस्तुओंके न रहने पर कुछ भी नहीं हैं ऐसे वचन पति से न कहे और किसी श्रम के कार्य में भी स्वामी की नियुक्ति नहीं करे।४२।

विधेर्विष्णोर्हराद्वापि पतिरेकोधिको मतः।
पतिव्रताया देवेशिस्वपतिश्शिव एव च।४३
व्रतोपवासनियमम्पतिमुल्लंध्य या चरेत्।
आयुष्यं हरते भर्तुर्मृता निरयंगच्छति।४४
उक्ता प्रत्युत्तरन्दद्याद्या नारीं क्रोधतत्परा।
सरमा जायते ग्रामे श्रृगाली निर्जने वने।४५
उच्चासनं न सेवेत न व्रजेद्दुष्टसन्निधौ।
न च कातरवाक्यानि वदेन्नारी पतिक्वचित्।४६
अपवादं न च ब्रूयात्कलह दूरतस्त्यजेत्।
गुरुणां सन्निधौ क्वापि नोच्चैर्ब्रूयन्नि वै हसेत्।४७
बाह्यादायान्तमालोक्य त्वरितान्नजलाशनैः।
ताम्बूलैर्वसनैश्चापि पादसम्बाहनादिधिः।४८
तथैव चाटुवचनैः खेदसन्नोदनैः परैः।
या प्रियं प्रीणायेत्प्रीता त्रिलोकी प्रीणिता तथा।४९

हे देवी ! स्त्री के लिए उसका स्वामी ब्रह्मा, विष्णु और शिव से भी कहीं विशेष बतलाया गया। अतएव पतिव्रता नारी को अपना स्वामी सर्वदा शिव स्वरूप में ही मानना चाहिए।४३। जो भी नारी पतिके आदेशका उल्लंघन करके व्रत, उपवास आदि धर्म के कृत्य किया करती हैं या कुछ नियम लिया करती है वह अपने पति की आयु का अपहरण ही किया करती है और मृत्यु के पश्चात् घोर नरककी यातना सहती है।४४। जो स्त्री क्रोधावेश में आकर अपने स्वामी को चाहे जो उत्तर प्रत्युत्तर दिया करती है वह दूसरे जन्म में किसी गाँव की कुतिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या निर्जन वन की गीदड़ हुआ करती है ।४५। स्त्री को अपने पति से किसी भी उच्च स्थान पर नहीं बैठना चाहिए और किसीभी दुष्ट व्यक्ति के समीप में नहीं जावे तथा स्वामी से कभी कोई कातर वचन नहीं कहे ।४६। पतिव्रता नारी का कर्तव्य है कि वह कभी पति की निन्दा न करे क्लेश के करने वाले कार्य दूर से ही त्याग दे, अपने पूज्य जनो के सामने ऊँची आवाज में जोर से न बोले और उच्च स्वर में कभी न हँसे ।४७ जब भी कभी पति कहीं बाहर से आवे तो उन्हें देखने के साथ ही तुरन्त सामने होकर पाद प्रक्षालन के पश्चात् भोजन, जल ताम्बूल और वस्त्रादि समर्पित कर पूर्ण सत्कार करना चाहिए ।४८। इस तरह मृदु और मधुर वचन कह एवं व्यंजन द्वारा, पति का पसीना सुखानी हुई जो नारी अपने पति को सुखी तथा प्रसन्न करती है उसने मानो त्रैलोक्य जीत लिया हो ।४९।

मितन्ददाति जनको मितं भ्राता मितं सुतः ।
अभितस्य हि दातारं भर्तारम्पूजयेत्सदा ।५०
भर्ता देवोगुरुर्भर्ता धर्मतीर्थ व्रतानि च ।
तस्मात्सर्वम्परित्यज्य पतिमेक समर्चयेत् ।५१
या भर्तारम्परित्यज्य रहश्चरति दुर्मतिः ।
उलूकी जायते क्रूरा वृक्षकोटरशायिनी ।५२
ताडिता ताडितं चेच्छत्सा व्याध्री वृषदंशिका ।
कटाक्षयति यान्यम्वै केकराक्षी तु सा भवेत् ।५३
या भर्तारम्परित्यज्य मिष्टमश्नाति केवलम् ।
ग्रामे वा शूकरी भूयाद्वल्गुर्वापि स्वविड्भुजा ।५४
या तु कृत्यं प्रियम्ब्रूयान्मूका सा जायते खलु ।
या सपत्नीं सदेर्ष्येत दुर्भगा सा पुनः पुनः ।५५
दृष्टिम्विलुप्य भर्त्तुर्या कञ्चिदन्य समीक्षते ।
काणा च विमुखी चापि कुरूपापि च जायते ।५६

स्त्री के माता-पिता, भाई और पुत्रादि सब सीमित सुख ही देते हैं, पति ही उसे अपरिमित सुख देता है । अतः उसकी सर्वदा पूजा करे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।५०। हे देवी ! नारी के लिए पति ही देवता, गुरु, धर्म, तीर्थ और व्रत सब कुछ है। इसलिए अन्य सबको त्यागकर एक मात्र अपने स्वामी ही की अर्चनोपासना तन, मनसे करे।५१। जो दुष्ट बुद्धि वाली अपने वन्द नीय पति को छोड़कर एकान्त में अन्य पुरुष के समीप जाती है वह वृक्ष की खोंतर में निवास करने वाली उलूकी होती है।५२। स्वामी से प्रताड़ित होकर जो स्त्री पति को मारने को दौड़ती है वह दूसरे जन्म में बाघिन और वृषदंशिका का शरीर धारण करती है। स्वामी को कुटिलता पूर्ण नेत्र से देखने वाली केकराक्षी होती है। स्वामी से बचाकर स्वयं मिष्ठान्न खाती है वह ग्राम शूकरी या छायी अपनी विष्टा खाने वाली होती है।५३-५४। जो अपने पति को "तू' कहती है वह अगले जन्म में गूंगी होती है और जो अपनी सपत्नी से ईर्ष्या रखती है, वह बारम्बार भाग्यहीन होती है।५५। जो अपने स्वामी से आँख चुराकर किसी पराये पुरुष को देखती है वह कानी, बुरे मुख वाली रूपसौन्दर्य से हीन होती है।५६।

जीवहीनो यथा देहः क्षणादशुचिताम्व्रजेत् ।
भर्तृहीना तथा योषित्सुस्नाताप्यशुचिस्सदा ।५७
सा धन्या जननी लोके स धन्यो जनकः पिता ।
धन्याश्च च पतिर्यस्य गृहे देवी पतिव्रता ।५८
पितृवंश्या मातृवंश्या पतिवशास्त्रयस्त्रयः ।
पतिव्रताया पुण्येन स्वर्गे सौख्यानि भुंजते ।५६
शीलभङ्गेनदुर्वृत्ताः पातयन्ति कुलत्रयम् ।
पितुर्मातुस्तथा पत्युरिहामुत्रापि दुःखिताः ।६०
पतिव्रतायाश्चरणो यत्र यत्र स्पृशेद्भुवम् ।
तत्र तत्र भवेत्सा हि पापहन्त्री सुपावनी ।६१
विभुः पतिव्रतास्पर्शं कुरुते भानुमानपि ।
सोमो गन्धर्वश्चापि स्वपावित्र्यायनान्यथा ।६२
आपः पतिव्रतास्पर्शमभिलष्यन्ति सर्वदा ।
अद्य जाड्यविनाशो नो जातस्त्वद्यान्यपावनाः ।६३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे देवी ! जैसी जीवात्मा के निकल जाने पर मानव देह एक क्षण में ही अपवित्र हो जाती है वैसे ही अपने स्वामी के विना स्नान करने पर भी स्त्री अशुचि ही रहती है ।५७। पतिव्रता स्त्रीके माता-पिता और पति भी स्वयं परम धन्य होते हैं ।५८। पतिव्रता नारी के पुण्य-प्रभाव से माता-पिता और पति के वंश में तीन-तीन पुरुष स्वर्ग के सुख का उप-भोग करते हैं ।५६। स्त्री अपने शील का भंग करने पर लोक परलोक दोनों जगह दुःख भोगती और माता-पिता और पति के तीनों कुलों को नरक में ले जाती है ।६०। हे देवी! पतिव्रत धर्म का अनिर्वचनीय महत्व है । पतिव्रता नारी के चरण पृथ्वी पर जहाँ भी पड़ते हैं वहीं वह पापों का हरण कर पवित्र करती है ।६१। सर्वत्र व्यापक सूर्य, चन्द्र और पवन देव भी अपने आपको पवित्र बनाने के लिए पतिव्रता नारी के शरीर का स्पर्श करने के इच्छुक होते हैं ।६२। सबकी शुद्धि करने वाला जल भी सर्वदा पतिव्रता के अङ्ग का स्पर्श करना चाहता है, जिससे वह अपनी जड़ता का नाश करे ।६३।

भार्या मूलं गृहस्थस्य भार्या मूलं सुखस्य च ।
भार्या धर्मफलावाप्त्यै भार्या सन्तानवृद्धये ।६४
गृहे गृहे न किं नार्य्यो रूपलावण्यगर्विताः ।
परम्विश्वेशभक्त्यैव लभ्यते स्त्री पतिव्रता ।६५
परलोकस्त्वय लोको जीयते भार्यया द्वयम् ।
देवपित्रतिथीज्यादि नाभायः कर्म चार्हति ।६६
गृहस्थस्स हि विज्ञेयो यस्य गेहे पतिव्रता ।
ग्रस्यतेऽन्यान्प्रतिदिनं राक्षस्या जरया यथा ।६७
यथा गङ्गावगाहेन शरीरं पावनं भवेत् ।
तथा पतिव्रतां दृष्ट्वा सकलम्पावनं भवेत् ।६८
न गङ्गया तया भेदो या नारी पतिदेवता ।
उमाशिवसमौ साक्षात्तस्मात्तौ पूजयेद्बुधः ।६६
तारः पतिश्श्रुतिर्नारी क्षमा सा स स्वयन्तपः ।
फलसम्पतिः सत्क्रिया सा धन्यौ तों दम्पती शिवे ।७०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत् में पतिव्रता पत्नी ही गार्हस्थ्य और सुख का मूल है। धर्म के फल की प्राप्ति और सुसन्तति के लिए भार्या ही साधन स्वरूप होती है ।६४। यों तो रूप-लावण्य एवं सौन्दर्य से संयुत अनेक घरों में बहुत सी स्त्रियाँ विद्यमान हैं किन्तु भगवान् शङ्कर की कृपा एवं भक्ति पतिव्रता नारी को ही सुलभ हुआ करती है ।६५। जगत् में भार्या ही के द्वारा सच्चा सुख एवं महान् विजय प्राप्त होते हैं। पत्नी के अभाव में देवपितृ-गण, अतिथि, आदि का अर्चन एवं सत्कार तथा यज्ञ-कर्म नहीं हो सकते हैं ।६६।सही अर्थमें उसी व्यक्ति को गृहस्था प्रेमी मानना चाहिए जिसके घर पतिव्रता पत्नी है । वैसे तो स्त्रियाँ सबकी ही होती हैं जो अहर्निश जरा राक्षसी के तुल्य ग्रास करती है ।६७। जिस प्रकार पुण्य सलिला देव-नदी गङ्गा के अवगाहन करने से शरीर पवित्र हो जाता है वैसे ही पतिव्रता नारी के केवल दर्शन मात्र से ही सब पवित्र हो जाया करते हैं ।६८। पतिव्रता स्त्री और भागीरथी में कुछ भी अन्तर नहीं है। शिव और भवानी के समान वे दोनों ही स्त्री पुरुष हैं, अतएव मनीषी मानव को उनका निरन्तर अर्चन करना चाहिए ।६९। यदि पति आकार है तो स्त्री वेदश्रुति है यदि स्त्री क्षमारूपिणी है तो पुरुष तपोरूप है । यदि पति फल है तो स्त्री सत्क्रिया है। हे पार्वती ! जो ऐसे हैं वे दोनों ही स्त्री-पुरुष महाधन्य हैं ।७०।

एवम्पतिव्रताधर्मो वर्णितस्ते गिरीन्द्रजे ।
तद्भेदाक्रश्शृणु सुप्रीत्या सावधानतयाऽद्य वै ।७१
चतुर्विधास्ताः कथिता नार्यो देवि पतिव्रताः ।
उत्तमादिविभेदेन स्मरतां पापहारिकाः ।७२
उत्तमा मध्यमा चैव निकृष्टाविनिकृष्टिका ।
ब्रुवे तासां लक्षणानि सावधानतया शृणु ।७३
स्वप्नेपि यन्मनो नित्य स्वपति पश्यति ध्रुवम् ।
नान्यम्परमतिं भद्रै उत्तमा सा प्रकीर्तिता ।७४
या पितृमातृसुतवत्तु परम्पश्यति सिद्धिया ।
मध्यमा सा हि कथिता शैलजे वै पतिव्रताः ।७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बद्धा स्वधर्मं मनसा व्यभिचारं करोति न ।
निकृष्टा कथिता सा हि सुचरित्रां च पार्वति ॥७६
पत्युः कुलस्य च भयाद्व्यभिचारं करोति ।
पतिव्रताऽधमा सा हि कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७७

हे गिरजे ! मैंने अब तक पतिव्रत धर्म का स्वरूप एवं परम महत्व का वर्णन किया, अब पतिव्रता के भेदों का वर्णन करती हूँ । उसे तुम दत्त चित्त होकर प्रेम से सुनो ।७१। पतिव्रतायें भी उत्तम मध्य आदि के भेदसे जगत में चार तरह की होती हैं जिनका स्मरण मात्र ही पापों का क्षय करने वाला है ।७२। ये चार भेद उत्तम, मध्यम, अधम और अति निकृष्ट होते हैं । इनके स्वरूप लक्षण तुम सावधानी से सुनो ।७३। जिसका मन स्वप्न में भी अपने पति को ही देखा करता है और किसी भी दशा में पर पुरुष की ओर नहीं आता वह उत्तम है ।७४। हे पार्वती ! नारी दूसरी स्त्रियों के पतियों को अवस्थानुसार पिता, भ्राता और पुत्र के तुल्य देखती है वह मध्यम श्रेणी की है ।७५। जो नारी हृदय में अपना धर्म समझकर व्यभिचार को बहुत बुरा कार्य मानते हुए उससे पूर्णतया बचती है वह अच्छे चरित्र वाली अधम कोटि कोटि की पतिव्रता है ।७६। जो मन में इच्छा रखते हुए भी अवसर न पाकर तथा पति और कुल के भय से एवं लोकापवाद के कारण व्यभिचार से बची रहती है उसको भी पण्डित सभुताय ने अति निकृष्ट श्रेणी की पतिव्रता मानी है ।७७।

चतुर्विधा अपि शिवे पापहन्त्र्यः पतिव्रता ।
पावनास्सर्वलोकानामिहामुत्रापि हर्षिताः ॥७८
पतिव्रत्यप्रभावेणात्रिस्त्रिया त्रिसुरार्थनात् ।
जीवितो विप्र एको हि मृतो वाराहशापतः ॥७९
एवं ज्ञात्वा शिवे नित्यं कर्तव्यम्पतिसेवनम् ।
त्वया शैलात्मजे प्रीत्या सर्वकामप्रदं सदा ॥८०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगदम्ब महेशीत्वं शिवस्साक्षात्पतिस्तव ।
तव स्मरणतो नार्यो भवन्ति हि पतिव्रताः ॥८१
त्वदग्रे नथनेनानेन किं देवि प्रयोजनम् ।
तथापि कथितं मेऽद्य जगदाचारातश्शिवे ॥८२
इत्युक्त्वा विररामासौ द्विजस्त्री सुप्रणम्य ताम् ।
शिवाम्मुदमति प्राप पार्वती शंकरप्रिया ॥८३

हे गिरिनन्दनी ! ये चारों तरह की पतिव्रतायें पापों का नाश करने वाली और दोनों लोकोंको पवित्र बनाने वाली कही जाती है।७८ पतिव्रत धर्म के प्रवल प्रभाव से ही अत्रि ऋषि की स्त्री ने तीनों देवों की प्रार्थना पर विप्र के शाप से मृत एक ब्राह्मण को जीवित कर दिया ।७६। शैलपुत्री ! पतिव्रत धर्म के महत्व को समझकर तुमको पति की प्रेम भक्ति के भाव से सेवा करनी चाहिए। इससे तुम्हारी समस्त मनोकामनायें निश्चय पूरी हो जायेगी ।८०। तुम जगदम्बा महेश्वरी साक्षात् भगवान शङ्कर तुम्हारे पति हैं तुम्हारे पवित्र नाम का स्मरण करके ही जगत् में पतिव्रतायें होगीं और सौभाग्य सुख का उपभोग करेंगी ।८१। हे देवी ! हे कल्याणि ! यद्यपि समस्त जगत् की स्वामिनी आपके सामने ऐसे उपदेशों के कथन की आवश्यकता नहीं हैं, तो भी लोकाचार से ही मैंने यह सब कुछ तुमसे कहा है ।८२। ब्रह्माजीने कहा वह ब्राह्मणी इतना कहकर प्रणाम करती हुई मौन हो गई और शिव प्रिया पार्वती भी परमानन्द में मग्न हो गईं ।८३।

--०--

रुद्र संहिता कुमार खंड

कुमार द्वारा तारक वध और देवोत्सव

निवार्य वीरभद्र तं कुमारः परवीरहा ।
समैच्छत्तारकवधं स्मृत्वा शिवपदाम्बुजौ ॥१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगर्जाथ महातेजा: कार्तिकेयो महाबलः ।
सन्नद्धः सोऽभवत्क्रुद्धः सैन्येन महता वृतः ॥२
तदा जयेजयेत्युक्तं सर्वेर्देवैर्गणैस्तथा ।
संस्तुतो वाग्भिरिष्टाभिस्तदैव च सुरर्षिभिः ॥३
तारकस्य कुमारस्य संग्रामोऽतीव दुःस्सहः ।
जातस्तदा महाघोरस्सर्वभूतभयङ्करः ॥४
शक्तिहस्तौ च तो वीरो युयुधाते परस्परम् ।
सर्वेषां पश्यतां तत्र महाञ्चर्यवतां मुने ॥५
शक्तिनिर्भिन्नदेहो तौ महासाधनसंयुतौ ।
परस्पर वंचयतौ सिंहाविव महाबलौ ॥६
वैतालिकं समाश्रित्य तथा खेचरक मतम् ।
पाप तं च समाश्रित्व शाक्त्या शक्ति विजघ्नतुः ॥७

ब्रह्माजी ने कहा--कुमार कार्तिकेय ने वीर शत्रु का नाश करने वाले वीर भद्र का निवारण कर भगवान शिव के चरण-कमल का स्मरण किया और मन में तारकासुर का वध कर देने की इच्छा की।१। इसके अनन्तर महाबली और परम तेजस्वी कुमार कार्तिकेय को बड़ा भारी क्रोधावेश हो गया और बड़ी भारी सेना साथ लेकर युद्ध करने को चल दिये ।२। उस समय समस्त देवगण अपने गणों सहित जय-जयकार करने लगे और ऋषि मुनि श्रेष्ठ वाणी द्वारा स्तुति का गान करने में तत्पर हो गये । उस समय तारकासुर और कार्तिकेय का अत्यन्त भयंकर महाघोर युद्ध होने लगा जो कि समस्त प्राणियों को भय उत्पन्न करने वाला था।४। हे मुने ! संग्राम भूमि में वे दोनों वीर हाथोंमें शक्ति लेकर परस्पर ऐसा भीषणयुद्ध करने लगे कि समस्तदेवता लोग परमाश्चर्य से चकित हो गये ।५। उस महान संग्राम में दोनों ही वीरों का शरीर शक्ति के प्रहारों से छिन्न-भिन्न हो गया था, किन्तु वे दोनों निरन्तर एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे ।६। दोनों बली वीर वैंतालिक एवं खेचर मत वाले युद्ध-शास्त्र का आश्रय ग्रहण कर तथा प्राप्य का समाश्रय लेकर परस्पर युद्ध में परायण हो रहे थे ।७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

एभिर्मंत्रैः मंहावीरौ चक्रतुर्युद्‌भुतम् ।
अन्योन्यं साधकौ भूत्वा महाबलपराक्रमौ ।।८
महाबलं प्रकुर्वंतौ परस्परवधैषिणौ ।
जघ्नतुश्शक्तिधाराभी रणे रणविशारदौ ।।९
मूर्घ्नि कंठे तथा चोर्वोजान्वोञ्चैव कटीतटे ।
वक्षस्युरसि पृष्ठे च चिच्छिदुञ्च परस्परम् ।।१०
तदा तौ युध्यमानौ च हन्तुकामौ महाबलौ ।
वल्गरतौ वीरशब्दैश्च नानायुद्धविशारदौ ।।११
अभवन्प्रेक्षकास्सर्वे देवा गन्धर्वकिन्नराः ।
ऊचुः परस्परं तत्र कोस्मिन्युद्ध विजेष्यते ।।१२
तदा नभोगता वाणी जगौ देवांश्च सांत्वयन् ।
असुरं तारकं चात्र कुमारोऽयं हनिष्यति ।।१३
मा शोच्यतां सुरैः सर्वै सुखेन स्थीयतामिति ।
युष्मदर्थं शङ्करो हि पुत्ररूपेणसंस्थितः ।।१४

मन्त्रों के द्वारा दोनों का संग्राम चल रहा था और महाबल पराक्रम वाले दोनों एक दूसरे के सामने होकर अद्‌भुत युद्ध कर रहे थे । ।८। उस समय परस्पर में दोनों ही एक दूसरे के वध की इच्छा में बड़ा बल एवं पराक्रम दिखा रहे थे और युद्ध में विशारद शक्ति द्वारा पारस्परिक प्रहारों की बौछार करने लगे ।९। दोनों वीर ही एक दूहरे के शिर, कण्ठ, उरु, जानु-कटि वक्षस्थल और पृष्ट-मार्गमें सर्वत्र प्रहार पर प्रहार कर रहे थे ।१०। दोनों के हृदय में एक दूसरे के वध की प्रबल इच्छा थी और उस इच्छा को पूर्ण करने के लिए कौशल से संग्राम कर रहे थे और महा वीर गर्जना पूर्ण ध्वनि भी करते जाते थे ।११। समस्त देव समुदाय और गन्धर्व आदि एकत्र होकर इस अभूतपूर्व भीषण संग्राम को देखते हुए आपस में किसकी जय होगी, ऐसी चर्चा करते थे ।१२। सभी देवों के सन्देह के निवारणार्थ आकाशवाणी हुई कि कुमार कार्तिकेय द्वारा ही तारक दैत्य का निश्चय ही वध होगा ।१३। आकाशवाणी में देव गणों से कहा गया कि देवताओ ! आप चिन्ता मत करो और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख-पूर्वक रहो, तुम्हारे कल्याण के लिए भगवान शिव ही यहाँ पुत्र रूप में उपस्थित होकर युद्ध कर रहे थे।१४।

श्रुत्वा तदा तां गगने समीरितां वाचं शुभां सप्रमथैस्समावृतः।
निहंतुकामः सुखितः कुमारकोदैत्याधिपं तारकमाश्वभूत्तदा॥१५

शक्त्या तया महाबाहुराजघानस्तनांतरे।
कुमारः स्म रुषाविष्टस्तारकासुरमोजसा॥१६
तंप्रहारमनाहृत्य तारको दैत्यपुंगवः।
कुमारं चापि संक्रुद्धस्स्वशक्त्यासंजघानसः।१७
तेन शक्तिप्रहारेण शांकरिर्मूर्च्छितोऽभवत्।
मुहूर्त्तच्चेतनां प्राप स्तूयमानो महर्षिभिः॥१८
यथा सिंहो मदोन्मत्तो हन्तुकामस्तथासुरम्।
कुमारस्तारकं शक्त्या स जघानप्रतापवान्॥१९
एवं परस्परं तौ हि कुमारश्चापि तारकः।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ शक्तियुद्धविशारदौ॥२०
अभ्यासपरमावास्तामन्योन्यं विजिगीषया।
पदातिनौ युध्यमानौ चित्ररूपौ तरस्विनौ॥२१

आकाशवाणी के सुन्दर वचनों को श्रवण कर गणों के सहित कुमार को बहुत प्रसन्नता हुई और सुखपूर्वक तारक के वध का निश्चय किया।१५। उस समय महाबाहु कुमार ने तारक की छाती में बड़े क्रोध और पराक्रम के साथ शक्ति का प्रबल प्रहार किया किन्तु महासुर ने उस प्रहार को तिरस्कार करते हुए कुमार पर अपनी शक्ति का प्रहार कर दिया।१६-१७। उस भीषण प्रहार में कुमार मूर्छित हो गये थे। तब महर्षियों ने स्तवन किया और वे क्षण भर के पश्चात् ही उठकर संभल गये।१८। मदोन्मत्त सिंह के समान बड़ी गर्जना के साथ एकदम टूटकर प्रतापी कुमार कार्त्तिकेय ने तारक पर अपना प्रहार किया।१९। शक्ति संग्राम में परम कुशल कुमार और तारक दोनों का महाघोर संग्राम चला। युद्ध के अभ्यास में चतुर दोनों ही पारस्परिक जय की इच्छा से पैदल युद्ध में विचित्र युक्त थे।२०-२१।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविधैर्थातिपुंजैस्तावन्योन्यं विनिजघ्नतुः ।
नानामार्गान्प्रकुर्वन्तौ गर्जन्तौ सुपराक्रमौ ॥२२
अवलोकपरास्सर्वे देवगन्धर्वकिन्नराः ।
विस्मयं परमं जग्मुर्नोचुः किंचन तत्रते ॥२३
न ववौ पवमानश्च निष्प्रभोऽभूद्दिवाकरः ।
चचाल वसुधा सर्वा सशैलवनकानना ॥२४
एतस्मिन्नन्तरे तत्र हिमालयमुखा धराः ।
स्नेहार्दितास्तदा जग्मुः कुमारं च परीप्सवः ॥२५
ततस्स दृष्ट्वा तान्सर्वान्भयभीतांश्च शांकरिः ।
पर्वतान्गिरिजा पुत्रो वभाषे परिबोधयन् ॥२६
मा खिद्यतां महाभागा मा चिन्तां कुर्वतां नगाः ।
घातयाम्यद्य पापिष्ठ सर्वेषां वः प्रपश्यताम् ॥२७
एवं समाश्वास्य तदा पर्वतान् निर्जरान् गणान् ।
प्रणम्य गिरिजां शंभुमाददे शक्तिमुत्प्रभाम् ॥२८

अनेक प्रकार के बल का प्रयोग करते हुए दोनों वीर आपस में प्रहारों की बौछार कर रहे थे और विविध मार्गों से चलते हुए पराक्रम पूर्वक गर्जने लगे ।२२। देव गन्धर्वादि सब उस युद्ध को देखकर वहुत आश्चर्यान्वित हुए और कुछ भी न कह सके ।२३। उस समय संग्राम की भीषणताके कारण वायु का चलना वन्द हो गया भास्कर कान्तिहीन हो गये और समस्त वन-कानन के सहित पर्वत एवं पृथिवी चलायमान हो गई।२४। उस समय गिरिराज हिमवान् अन्य शैल समुदाव के साथ स्नेह से आकूल होकर कुमार के समीप गये ।२५। शिव पुत्र कुमारने इन सब को देखकर समझाते हुए कहा--हे महाभागो! आप लोग मन में कुछभी खेद तथाचिन्ता मत करिए । मैं अभी कुछ क्षणमें इस महापापी दैत्यका वध कर दूँगा ।२६-२७। तव कुमार ने शैलराज देवगण, जगदम्बा और भगवान शंकर को प्रणाम करके एक परम प्रभावशाली शक्ति को ग्रहण किया ।२८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं तारकं हन्तुमना: करशक्तिर्महाप्रभु: ।
विरराज महावीर: कुमारश्शंभुबालक: ॥२९
शक्त्या तया जघानाथ कुमारस्तारकासुरम् ।
तेजसाढ्यश्शं करस्य लोकक्लेशंकरं च तम् ॥३०
पपात सद्यस्सहसा विशीर्णाङ्गोऽसुर: क्षितौ ।
तारकाख्यो महावीरस्सर्वासुरगणाधिप: ॥३१
कुमारेण हतस्सोतिवोरस्स खलु तारक: ।
लयं ययौ च तत्रैव सर्वेषां पश्यतां मुने ॥३२
तथा तं पतितं दृष्ट्वा तारकं बलवत्तरम् ।
न जघान पुनर्वीरस्स गत्वा व्यसुमाहवे ॥३३
हृते तस्मिन्महादैत्ये तारकाख्ये महाबले ।
क्षयं प्रणीता बहवो देवगणैस्तदा ॥३४
केचिद्भीता: प्रांजलयो: बभूवुस्तत्र चाहवे ।
छिन्नभिन्नांगका: केचिन्मृता दैत्यास्सहस्रश: ॥३५

शिव पुत्र महाबली महाप्रभु ने तारक के वध की इच्छा से शक्ति को हाथ में उठाया और एक अद्भुत शोभा हुई ।२९। फिर कुमार ने लोक को क्लेश देने वाले तारक पर बहुत ही तेजी से भरा हुआ प्रहार किया ।३०। उस प्रहार से तारक जो महा बलवान असुरों का अधिपति था, सर्वाङ्ग विदीर्ण होकर तुरन्त पृथ्वी पर गिर गया और पृथिवी की गोद में सो गया ।३१। हे मुने ! वीर कार्तिकेय ने इस प्रकार तारकासुर को मारकर गिरादिया तो वह सबके देखतेही वह नाशवान होगया।३२। तब कूमार ने वीर नियम के कारण कोई भी प्रहार नहीं किया ।३३। महाबली तारक जोकि दैत्य-वर्ग का नायक था, मर गया तो फिर देवगण ने अनेक असुरों का संहार यों ही बात में कर डाला ।३४। असुरों में तहुत से भयभीत होकर युद्ध स्थल से दीनता प्रदर्शित करने लगे, कुछ छिन्न-भिन्न अङ्ग वाले होकर भाग गये और सहस्रों काल कवलित हो गये ।३५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केचिञ्जाताः कुमारस्य शरणं शरणर्थिनः ।
वदन्तः पाहि पाहीति दैत्याः सांजलयस्तदा ॥३६

कियंतश्च हतास्तत्र कियन्तश्च पलायिताः ।
पलायमाना व्यथितास्ताडिता निर्ज्जरैर्गणैः ॥३७

सहस्रशः प्रविष्टास्ते पाताले च जिजीषवः ।
पलायमानास्ते सर्वे भग्नाशा दैत्यमागताः ॥३८

एवं सर्वं दैत्यसैन्यं भ्रष्टं जातं मुनीश्वर ।
न केचित्तत्र सन्तस्थुर्गणदेवभयात्तदा ॥३९

आसीन्निष्कंटक सर्वं हते तस्मिन्दुरात्मनि ।
ते देवाः सुखमापन्नास्सर्वे शक्रादयस्तदा ॥४०

एवं विजयमापन्नं कुमारं निखिलास्सुराः ।
बभूवुर्युगपद्धृष्टास्त्रिलोकाश्च महासुखाः ॥४१

कुछ अत्यन्त घबड़ाकर दीन होते हुए कुमार की शरण में जाकर 'रक्षा करो' ऐसी प्रार्थना करने लगे ।३६। उस संग्राम में कुछ मारे गये, बहुत से भाग खड़े हुए और कुछ पलायन परायण होते हुए भी देवों द्वारा प्रताड़ित एव व्यथित किये गये ।३७। युद्ध भूमि से भागने वाले असुरों की परिपूर्णआशाये निष्फल हो गईं और वे अपने प्राणों के त्राण के लिए भाग कर पाताल लोक में चले गये ।३८। हे मुनिसत्तम ! उस समय इस प्रकार से दैत्य सेनायें नष्ट भ्रष्ट हो गई कि वहाँ भीति विवश होकर कोई भी सामने नहीं ठहर सकीं ।३९। दुरात्मा तारकासुर के मर जाने पर सब निष्कण्टक हो गये और इन्द्र आदि समस्त देवता परम प्रसन्न हो गये ।४०। उस समय देवताओं ने उस आशातीत विजय को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त की और फिर त्रिभुवन में महान् आनन्दोल्लास छा गया ।४१।

तदा शिवोऽपि तं ज्ञात्वा विजयं कार्तिकस्य च ।
तत्राजगाम समुदा सगणः प्रियया सह ॥४२

स्वात्मजं स्वांकमारोप्य कुमारं सूर्यवर्जसम् ।
लालयामास सुप्रीत्या शिवा च स्नेहसंकुला ॥४३

हिमालयस्तदागत्य स्वपुत्रैः परिवारितः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबन्धुस्सानुगश्शंभु तुष्टाव च शिवां गुहम् ॥४४
ततो देवगणास्सर्वे मुनयस्सिद्धचारणाः ।
तुष्टुवुश्शांकरिं शंभुं गिरिजां तुषितां भृशम् ॥४५
पुष्पवृष्टिं सुमहतीं चक्रुश्चोपसुरास्तदा ।
जगर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥४६
वादित्राणि तथा नेदुस्तदानीं च विशेषतः ।
जयशब्दो ममः शब्दो बभूवोच्चैर्मुहुर्मुहुः ॥४७
ततो मयाच्युतश्चापि सन्तुष्टोभद्विशेषतः ।
शिवं शिवां कुमारं च सन्तुष्टाव समादरात् ॥४८
कुमारमग्रतः कृत्वा हरिकेन्द्रमुखास्सुराः ।
चक्रुर्नीराजन प्रीत्या मुनयश्चापरे तथा ॥४६

जब भगवान महेश्वर ने विजय का सम्वाद सुना तो वे स्वयं समस्त गण और प्रिया भवानी के साथ कुमार के समीप गये ।४२। भास्कर के तुल्य दिव्य कान्ति से कमनीय कुमार कार्तिकेय को पार्वती माँ ने अपनी गोद में बैठा लिया और स्नेह से गद्गद होकर लाड़ करने लगी ।४३। उसी अवसर पर हिमवान भी अपने समस्त परिवार के साथ यहाँ आ गये और पूज्य शंकर और अपनी पुत्री पार्वती और कुमार की प्रशंसा करके उन्हें हर्षित करने लगे ।३४। समस्त देवगण, मुनि, ऋषि, विद्याधर गन्धर्व और सिद्ध, चारण आदि ने भी प्रसन्न चित्त होकर शिव, शिवा और शिवकुमार की स्तुति की ।४५। उपदेव, अन्तरिक्ष से पुष्प वृष्टि करने लगे, गन्धर्वगण गुणगान कर रहे थे और अप्सरायें नृत्य करने में तत्पर हो रही थीं ।४६। चारों और विशेष वाद्यों का वादन होने लगा 'जय जयकार' और 'नमो नमः' की तुमुल ध्वनि से आकाश गूंज उठा ।४७। उस समय हे मुने ! मैं और भगवान् अच्युत भी वहाँ पर गये और रीव-भवानी और कार्त्तिकेय कुमार की हम दोनों ने बहुत प्रशंसा की ।४८। इसके अनन्तर ब्रह्मा, विष्णु और महेन्द्र आदि समस्त देवों ने मुनिगण के साथ कुमार को आगे बैठाकर उनकी आरती की । ।४६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीतवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेण भूयसा ।
तदोत्सवो महानासीत्कीर्तनं च विशेषतः ।।५०
गीतवाद्यैस्सुप्रसन्नैस्समथा साञ्जलिभिर्मुने ।
स्तूयमानो जगन्नाथस्सर्वैर्देवैर्गणैरभूत् ।।५१
ततस्स भगवान्रुद्रो भवान्या जगदंबया ।
सर्वैः स्तुतो जगामाथ स्वगिरिं स्वगणैर्वृतः ।।५२

वेदध्वनि, गायन वादन और यज्ञ कीर्तन आदि के द्वारा उस विजय का एक महान उत्सव मनाया गया ।५०। हे मुनीश्वर! उस समय गायन वादन के साथ बद्धञ्जलि देवों के द्वारा संस्तुत भगवान शिव अत्यन्त प्रसन्न हुए । इसके पश्चात् उस समय देवों से स्तुत होकर भगवान रुद्र, भवानी और अपने गणों के साथ कैलास पर चले गये ।५१-५२।

बाण और प्रलम्ब का वध करना

एतस्मिन्नन्तरे तत्र क्रौंचनामाचलो मुने ।
आजगाम कुमारस्य शरणं बाणपीडित् ।।१
पलायमानो यो युद्धादसोढा तेज ऐश्वरम् ।
तुतोदातीव सक्रौंच कोट्यायुतवलान्वितः ।।२
प्रणिपत्य कुमारस्य सभक्त्या चरणाम्बुजम् ।
प्रेमनिर्भर्‌या वाचा तुष्ठाव गुहमादरात् ।।३
कुमार स्कन्द देवेश तारकासुरनाशक ।
पाहि मां शरणापन्नं वाणसुरनिपीडितम् ।।४
सङ्गरात्ते महासेन समुच्छिन्नः पलायितः ।
न्यपीड्यच्च मागत्य हा नाथ करुणाकर ।।५
तत्पीडितस्ते शरणमागतोऽहं सुदुःखितः ।
पलायमानो देवेश शरजन्मन्दया कुरु ।।६
दैत्यं तं नाशय विभो वाणत्वं मां सुखीकुरु ।
दैत्यघ्नस्त्वं विशेषेण देवावनकरस्स्वराट ।।७

ब्रह्माजी ने कहा--हे नारद ! उस समय वाणासुर से उत्पीड़ित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर क्रौञ्च नाम वाला पर्वत कुमार की शरण में उपस्थित हुआ ।१। वाणासुर कुमार का असह्य तेज न सहकर पहिले संग्राम छोड़कर भाग गया था उस दैत्य में दश सहस्र कोटि का महान बल था और क्रौंच को पीड़ा पहुँचा रहा था ।२। तब कुमार के दोनों चरणों में पड़कर बहुत ही सादर के साथ प्रेम से भरी हुई वाणी से क्रौंच ने प्रार्थना की ।३। क्रौंच ने कहा–हे कुमार ! हे स्कन्द ! हे देवेश ! हे तारक के नाशक ! मैं वाणासुर से इस समय बहुत ही पीड़ित हो रहा हूँ । आपकी शरणमें आया हूँ । आप मुझे दयनीय हीनकी रक्षा करो । हे महासेन ! हे नाथ! वह आपके समक्ष घवड़ाकर युद्धभूमि से भाग गया है और वहाँ जाकर मुझे सता रहा है ।५। मैं उसी दुष्ट वाण से उत्पीड़ित होकर आपके चरणों की शरण में आया हूँ । हे देवेश ! उस भगोड़े से मेरे प्राणों की रक्षा कीजिए ।६। हे विभो ! आप तो दुष्ट दैत्यों का संहार करने वाले हैं और अपने ही अतुल तेज से प्रकाशित होकर देवों की सर्वदा रक्षा करने वाले हैं । अव उस दुरात्मा का वध कर मुझे सुख प्रदान करने की कृपा कीजिए ।७।

इति क्रौंचस्तुतस्स्कन्दः प्रसन्नो भक्तपालकः ।
गृहीत्वा शक्तिमातुलां स्वां सस्मार शिवो धिया ।।८
चिक्षेप तां समुद्दिश्य स बाण शङ्करात्मजः ।
महाशब्दो बभूवाथ जज्वलुश्च दिशो नमः ।।९
सबल भस्म सात्कृत्वासुरं तं क्षण मात्रतः ।
गुहोपकंठं शक्तिस्सा जगाम परमात्मुने ।।१०
ततः कुमार प्रोवाच क्रौंच गिरिवरं प्रभुः ।
निर्भयस्स्वगृहं गच्छ नष्टस्स सबलोऽसुरः ।।११
तच्छ्रुत्वा स्वामिवचनं मुदितो गिरिराट् तदा ।
स्तुत्वा गुहं तदारातिं स्वधाम प्रत्ययद्यत् ।।१२
ततः स्कन्दो महेशस्य मुदा स्थापितवान्मुने ।
त्रीणि लिंगानि तत्रैव पापघ्नानि विधानतः ।।१३
प्रतित्रेश्वरनामादौ कपालेश्वरमादरात् ।
कुमारेश्वरमेवाथ सर्वसिद्धिप्रदं त्रयम् ।।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्माजी ने कहा--इस तरह दीनता पूर्ण क्रौञ्च की स्तुति को सुन कर भक्त वत्सल कुमार बहुत प्रसन्न हो गये तथा शिव का स्मरण कर उन्होंने अपने हाथों में शक्ति धारण कर ली।८। वाण को सूक्ष्म बनाकर उसे मारने के उद्देश्य से शक्ति छोड़ दी। कुमार के उस शक्ति के प्रयोग के उस समय एक महान ध्वनि हुई और सब दिशायें तेज से प्रज्वलित हो उठी।९। क्षणमात्र में कुमार की शक्ति वाणासुर को उसके अनुगामियों के साथ भस्मीभूत करके तुरन्त कुमार के पास वापिस आ गई।१०। इसके अनन्तर कुमार ने क्रौञ्च से कहा-अब तुम भय रहित होकर अपने स्थान को चले जाओ। तुम को सताने वाला वाण मारा गया है और उसके अनुगामी भी सब विध्वंस हो गये।११। स्वामी कार्तिकेय के ऐसे सन्तोषप्रद वचन सुनकर क्रौञ्च को अत्यन्त प्रसन्नता हुई और फिर उसने कुमार का स्तवन किया तथा वह अपने निवास स्थान को चला गया।१२। इसके पश्चात् परम प्रसन्न होकर कुमार ने समस्त पापों के समूह का क्षय करने वाले शिव के तीन लिंगों की स्थापना की।१३। इन तीनों के नाम प्रतिज्ञेश्वर, कपालेश्वर और कुमारेश्वर हुए। वे तीनों ही समस्त सिद्धियों के प्रदान करने वाले हैं।१४।

पुनस्सर्वेश्वरस्तत्र जयस्तम्भसमीपतः।
स्तम्भेश्वराभिधिं लिङ्गं गहः स्थापितवान्मुदा ॥१५
ततस्सर्वे सुरास्तत्र विष्णुप्रभृतयो मुदा।
लिङ्गं स्थापितवंतस्ते देवदेवस्य शूलिनः ॥१६
सर्वेषां शिवलिंगानां महिमाभूत्तदाद्भुतः।
सर्वंक्रामप्रदश्चापि मुक्तिदो भक्तिकारिणाम् ॥१७
ततस्सर्वे मरा विष्णुप्रमुखाः प्रीतमानसाः।
ऐच्छिन्गिरिवरं गन्तुं पुरस्कृत्य गृह मुदा ॥१८
तस्मिन्नवसरे शेषपुत्रः कुमदनामकः।
आजगाम कुमारस्य शरणं दैत्यपीडितः ॥१९
प्रलंवाख्योऽसुरो योहि रणादस्मात्पलायितः।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तत्रोपद्रवं चक्रे प्रबलस्तारकानुगः ॥२०
सोऽथ शेषस्य तनयः कुमुदोऽहिपतेर्महान् ।
कुमारशरणं प्राप्तस्तुष्टाव गिरजात्मजम् ॥२१

अपने जय-स्तम्भ के समीप में सर्वेश्वर लिंग को स्थापित किया और उसके समीप में ही एक अन्य लिंग स्थापित किया जिसका नाम स्तम्भेश्वर है।५। इसके पश्चात् विष्णु आदि समस्त देवाधिदेव शंकर का लिंग वहाँ स्थापित किया।१६। उस जगह पर इन सभी सुसं-स्थापित शंकर के लिंगों की अद्‌भुत महिमा हुई ये सभी काम-नाओं के पूर्ण करने वाले यथा भक्ति-भाव रखने वालों को मुक्ति प्रदान करने वाले हैं।१७। उस समय विष्णु आदि सब देवताओं ने सप्रेम पुत्र को आगे करके कैलाश गमन करने की इच्छा की।१८। उसी समय वहाँ शेषजी का पुत्र कुमुद नाम वाला वहाँ आया और दैत्य से पीड़ित होकर कुमार की शरण ग्रहण की।१९। प्रलम्बासुर नामक दुष्ट दैत्य कुमार के सामने से युद्ध से भागकर वहाँ पहुँच गया था और तारक के अनुगामी उसने पाताल में उपद्रव मचाना आरम्भ कर दिया था।२०। महान गतिमान शेष के आत्मज कुमुद ने गिरजानन्दन की शरण में आकर स्तुति करना आरम्भ कर दिया।२१।

देवदेवमहादेववरतात महाप्रभो ।
पीड़ितोऽहं प्रलंबेन त्वाह शरणमागतः ॥२२
पाहि मां शरणापन्न प्रलंबासुरपीडितम् ।
कुमार स्कन्द देवेश तारकारे महाप्रभो ॥२३
त्वं दीनबन्धुः करुणासिन्धुरानतवत्सलः ।
खलनिग्रह कर्ता हि शरण्यश्च सतां गतिः ॥२४
कुमुदेन स्तुतश्चेत्थं विज्ञप्तस्तद्वधायहि ।
स्वाञ्च शक्ति स जग्राह स्मृत्वा शिवपदांबुजौ ॥२५
चिक्षेप तां समुद्दिश्य प्रलंबं गिरिजासुतः ।
महाशब्दो बभूवाथ जज्वलुश्च दिशो नभः ॥२६
तं सायुतबलं शक्तिद्रुतं कृत्वा च भस्मसात् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुहोपकंठ सहसा जगामाक्लिष्टकारिणी ।।२७

ततः कुमारः प्रोवाच कुमुदं नागबालकम् ।
निर्भयः स्वगृहं गच्छ नष्टस्स सबलोऽसुरः ।।२८

कुमुद ने प्रार्थना की--हे देवाधिदेव महादेव के आत्मज ! हे महा प्रभो! मैं इस समय दुष्ट प्रलम्ब की पीड़ा से सताया हुआ आपके चरणों की शरण में प्राप्त हुआ हूँ ।२२। हे कुमार ! हे स्कन्द ! तारक संहारक ! कृपा कर प्रलम्ब दैत्य से पीड़ित मुझ दीन की रक्षा कीजिए ।२३ आप दीनों के बन्धु दया के समुद्र दुष्टों के निग्रह करने वालें, भक्तों के वत्सल, शरणागत के प्रतिपालक और सत् पुरुषों के उद्धारक हैं ।२४। जब कुमुद ने ऐसी वीरता के साथ दैत्यका वध करने की विनय की तो महाप्रभु तुरन्त अपनी शक्ति उठा ली ।२५। तब गिरिजानन्दन के प्रलम्ब वध के साथ ही आकाश और दिशायें प्रज्वलित हो गये ।२६। दश हजार के वल वाले उस दैत्य को अनुचरों सहित वह शक्ति भस्म करके कुमार के पास आ गई ऐसा उस शक्ति का अद्भुत कर्म सम्पन्न हुआ ।२७। उस समय कुमार ने कुमुद को आज्ञा दी कि तुमको सताने वाला दुष्ट दैत्य सपरिवार ध्वस्त हो गया है । अब तुम निडर होकर अपने घर लौट जाओ ।२८।

तच्छ्रुत्वा गुहवाक्यं स कुमुदोहिपतेस्सुतः ।
स्तुत्वा कुमारं नत्वा च पाताल मुदितो ययौ ।।२९
एवं कुमार विजयं वर्णित ते मुनीश्वर ।
चरित तारकवधं परमाश्चर्यकारकम् ।।३०
सर्वं पापहरं दिव्यं सर्वकामप्रद नृणाम् ।
धन्य यशस्यमायुष्यं भुक्तिमुक्तिप्रदं सताम् ।।३१
ये कीर्तंयति सुयशोऽमितभाग्ययुता नराः ।
कुमाचरितं दिव्य शिवलोकं प्रयाति ते ।।३२
श्रीष्यंन्ति ये चतष्कीर्ति भक्त्या श्रद्धान्विता जनाः ।
मुक्तिं प्राप्स्यन्ति ते दिव्यामिह भुक्त्वा परंसुखम् ।।३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमुद ने ऐसे कुमार के परमानन्द प्रदान करने वाले वचन सुनकर उनकी बहुत कुछ स्तुति की और सादर प्रणाम कर अपने निवास स्थान को चला गया ।२९। हे मुनिवर ! इस तरह मैंने आपको कुमार कार्त्तिकेय के इस परम अद्‌भुत युद्धोंमें विजय प्राप्त करने का सम्वाद सुनाया है । इसमें तारकासुर के वध का चरित्र तो अत्यन्त ही विस्मय उत्पन्न करने वाला है ।३०। यह तारक वध की कथा पापोंका क्षय करने वाली हैं और संसारमें मनुष्यों की समस्त कामनायें पूरीकर यश आयु के साथ भक्ति एवं मुक्ति को भी प्रदान करने वाली हैं ।३१। जगत में मनुष्योंको इस चरित्र के कथन एवं श्रवण करने पर परम सुख सौभाग्य का लाभ होगा और कुमार के इस अति उत्तम चरित्र के कीर्तन तथा सुनने से अन्त में शिव लोक की प्राप्ति निश्चय ही होगी ।३२। जो मनुष्य श्रद्धा और भक्ति की भावना से इस दिव्य कुमार की कीर्ति का श्रवण करेंगे। उन्हें यहाँ सर्व सुखों के उपभोग और अन्त में मोक्ष का लाभ होगा । ।३३।

गणेश को प्रथम पूज्य पद दिया जाना और विवाह

साधु पृष्टं मुनिश्रेष्ठ भवता करुणात्मना ।
श्रूयतां दत्तकर्ण हि वक्ष्येऽहं ऋषिसत्तम् ।।१
शिवा शिवश्च विप्रेन्द्र द्वयोश्च सुतयोः परम् ।
दर्शंदर्शं च तल्लीलां महत्प्रेम समावहत् ।।२
पित्रोर्ललियतोस्तत्र सुकं चाति व्यवर्द्धत ।
सदा प्रीत्या मुदा चातिलेखनं चक्रतुस्सुतौ ।।३
तावेव तनयौतत्र मातापित्रोर्मुनीश्वर ।
महाभक्त्या यदा युक्तौ परिचर्यां प्रचक्रतुः ।।४
षण्मुखे च गणेशे च पित्रोस्तदधिकं सदा ।
स्नेहो व्यवर्द्धत महाञ्छुक्लपक्षे यथा शशी ।।५
कदाचितौ स्थितौ तत्र रहसि प्रेमसंयुतो ।
शिवा शिवश्च देवर्षे सुविचारपरायणौ ।।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहयोग्यौ संजातौ सुताविति च तावुभौ ।
विवाहश्च कथं कार्यः पुत्रयोरुभयोः शुभम् ॥७

श्री ब्रह्माजी ने कहा–परम् कारुनिक ऋषि श्रेष्ठ ! अब तुमने बहुत ही सुन्दर प्रश्न मुझसे पूछा है । आप सावधान होकर श्रवण करो मैं उसका उत्तर तुम्हें भली-भाँति देता हूँ ।१। हे विप्रेन्द्र देव ! परम तपस्वी महेश्वर और जगज्जननी पार्वती अपने उन दोनों पुत्रों की अद्-भुत बाल-लीलाओं को देखते हुए परम प्रसन्नता प्राप्त करने लगे ।२। उन दोनों का माता-पिता के लालन से सुख दिन दूना समृद्ध हो रहा था और वे सर्वदा प्रेम के साथ बाल-क्रीड़ा आनन्द लाभ करने लगे ।३। हे मुनिराज ! शिव के दोनों पुत्र परम पितृ भक्ति से युक्त होकर अपने माता-पिता की सेवा सुश्रुषा करने में संलग्न हो गये।४। इस तरह शिव और शिवा का षण्मुख और लम्बोदर में शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा के तुल्य आये दिन प्रीति का भाव बढ़ने लगा ।५। हे देवर्षि ! एक दिन प्रेम के साथ एकान्त में स्थित शिव और गौरी परस्पर में विचार कर रहे थे । ।६। वे कहने लगे कि अब हमारे ये दोनों ही पुत्र विवाह संस्कार के योग्य हो गये हैं सो इनका विवाह किसी रीति से करना चाहिए ।७।

षण्मुखश्च प्रियतमो गणेशश्च तथैव च ।
इति चितासमद्विग्नौ लीलानन्दौ बभूवतुः ॥८

स्वपित्रोर्मतमाज्ञाय तौ सुतावपि संस्पृहौ ।
ततिच्छया विवाहार्थं बभूवतुरथो मुने ॥९
अहं च परिणेष्यामि ह्यहं चैव पुनः पुनः ।
परस्परं च नित्यं वै विवादे तत्परावुभौ ॥१०
श्रुत्वा तद्वचनं तौ च दवती जगतां प्रभु ।
लौकिकाचारमाश्रित्य विस्मयं परमं गतौ ॥११
किं कर्तव्यं कथं कार्यो विवाहविधिरेतयोः ।
इति निश्चित्य ताभ्यां वै युक्तिश्च रचिताद्भुता ॥१२
कदाचित्त्वगयेस्थित्वा समाहूय स्वपुत्रको ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथयामासतुस्तत्र पुत्रयोः पितरौ तदा ।१३
अस्माकं नियमः पूर्वं कृतश्च सुखदो हि वाम ।
श्रूयतां सुसुतौ प्रीत्या कथयावो यथार्थकम् ।१४

हमारे तो ये दोनों ही अतिशय प्रीति के पात्र परम प्रिय हैं । इस प्रकार कुमार और गणेश के विषय में विचार करते हुए आनन्दित हो रहे थे ।८। हे मुनीश्वर ! जब अपने माता-पिता की वह इच्छा जानते हुए दोनों कुमारों के मन में भी एकही साथ अपने विवाह के सम्पादन की इच्छा उत्पन्न हो गई । तब दोनों अपने माता-पिता के समक्ष में बैठकर प्रार्थना करने लगे कि मैं अपना विवाह पहिले करूँगा और इस प्रकार उस समय विवाद बढ़ना प्रारम्भ हो गया ।९-१०। जगत् के माता पिता महेश्वर भवानी अपने दोनों बेटों के विवादपूर्ण वचन सुनकर लोकाचार के आश्रय से परम विस्मित होकर सोचने लगे ।११। किस तरह से इन दोनों का विवाह एक साथ सम्पन्न होने के विषय में क्या उपाय किया जावे- ऐसा विचार करते हुए उस समय उन्होंने एक युक्ति खोज निकाली ।१२। इसके अनन्तर एक दिन भवानी और महेशने अपने दोनों पुत्रों को अपने पास बुलाकर कहा ।१३। हमने तुम दोनों को सुख हो—इसके लिए एक नियम बना दिया है । उसे तुम दोनों प्रेम के साथ श्रवण करो । हम उसे ठीक-ठीक बतलाते हैं ।१४।

समौ द्वावपि सत्पुत्रो विशेषो नात्र लभ्यते ।
तस्मात्प्रणः कृतश्शंद पुत्रयोरुभयोरपि ।१५
यश्चैव पृथिवीं सर्वां क्रांत्वा पूर्वं मुपाव्रजेत् ।
तस्यैव प्रथमं कार्यो विवाश्शुभलक्षणः ।१६
तयोरेव वचः श्रुत्वा शरजन्मा महाबलः ।
जगाम मन्दिरात्तूर्णं पृथिवीक्रमणाय वै ।१७
गणनाथश्च तत्रैव संस्थितो बुद्धि सत्तमः ।
सुबुद्ध्या सविचार्येति चित्त एव पुनः पुनः ।१८
किं कर्तव्य क्व गन्तव्यं लंघितुं नैव शक्यते ।
क्रोशमात्रं गतः स्याद्वै गम्यते न मया पुनः ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किं पुनः पृथिवीमेतां क्रांत्वा चोपार्जित सुखम् ।
विचार्येति गणेशस्तु यच्चकार श्रृणुष्व तत् ।२०
स्नानं कृत्वा यथान्यायं समागत्य स्वयं गृहम् ।
उवाच पितरं तत्र मातरंपुनरेव सः ।२१

तुम दोनों हमारे परम प्रिय आत्मज होने के कारण समान भाव से ही प्यार के पात्र होते हो। इसमें कुछ भी कोई विशेषता नहीं है। हमने अब तुम दोनों ही के लिए प्रतिज्ञा की है और वह यह है ।१५। तुम दोनों में इस समस्त भूमि मण्डल की पूर्ण परिक्रमा देकर जो भी यहाँ पहले आ जायगा उसी का शुभ विवाह पहिले किया जायेगा ।१६। ब्रह्मा जी ने कहा--अपने माता-पिता के ऐसे प्रतिज्ञायुक्त वचनों को सुनते ही महा बलवान् कुमार कार्तिकेय तुरन्त ही पृथ्वी की प्रदक्षिणा पूरी करने के लिए घर से चल दिये ।१७। परम बुद्धिमान् गणेश वहीं स्थित होकर बार-बार अपने मन में बुद्धि से विचार करने में ही हो गये ।१८। अब क्या उपाय करना चाहिए मैं किसी भी तरह परिक्रमा नहीं कर सकता और मुझमें तो एक कोश तक भी चलने की शक्ति नहीं है। कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ।१९। इस समस्त भूमण्डल की परिक्रमा को पूरा कर देना तो बहुत ही कठिन कार्य है ऐसा विचार करते हुए मतिमान् गणेशजी ने जो कुछ अद्भुत उपाय किया मैं उसे तुमको सुनाता हूँ सो श्रवण करो ।२०। गणेश्वर ने भली-भाँति स्नानादि से शुरू होकर अपने माता-पिता से विनयान्वित होकर प्रार्थना की ।२१।

आसने स्थापिते ह्यत्र पूजार्थं भवतोरिह ।
भवन्तौ संस्थितौ तादौ पूर्य्यतां मे मनोरथः ।२२
इति श्रुत्वा वचस्तस्य पार्वतीपरमेश्वरौ ।
अस्थातामासने तत्र तत्पूजाग्रहणाय वै ।२३
तेनाथ पूजितौ तौ च प्रक्रान्तौ च पुनः पुनः ।
एवं च कृतवान् सप्त प्रणामांस्तु तथैव सः ।२४
बद्धांजलिरथोवाच गणेशो बुद्धिसागरः ।
स्तुत्वा बहुतिथस्तात पितरौ प्रेतविह्वलौ ।२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भो मातर्भो पितस्त्वं च श्रृणु मे परमं वचः ।
शीघ्रं चैवात्र कर्तव्यो विवाहः शोभनो मम ।२६
इत्येवं वचनं श्रुत्वा गणेशस्य महात्मनः ।
महाबुद्धिनिधि तं तौ पितराबूचतुस्तदा ।२७
प्रकामेत भवान्सम्यक् पृथिवीं च सकाननाम् ।
कुमारो गतवास्तत्र त्वं गच्छ पुर आव्रज ।२८

मैं पहिले आप दोनों को सिंहासन पर विराजमान कर आपकी अर्चना करना चाहता हूँ सो आप मेरे समीप विराजकर मेरा यह मनोरथ पूर्ण करने की कृपा करें ।२२। ब्रह्माजी ने कहा--ऐसी गणेश की पवित्र प्रार्थनासुनकर पार्वती और परमेश्वरदोनों उनकी अर्चना स्वीकार करने के लिए सिंहासन पर बैठ गये ।२३। गणपति ने भक्ति के साथ उन दोनों का अर्चन कर प्रणामपूर्वक सात बार परिक्रमा की ।२४। बुद्धि के सागर गणेशजी ने प्रेम विभोर होकर हाथ जोड़ते हुए माता-पिता की बहुत स्तुति की ।२५। उसी समय गणेशजी ने कहा–हे माता ! हे पितृ देव ! आप दोनों अब मेरी प्रार्थना सुनकर शीघ्र ही मेरा विवाह करने की कृपा करें ।२६। यह प्रार्थना सुनकर दोनों शिव और पार्वती गणेश से कहने लगे ।२७। जिस तरह कुमार कार्तिकेय पृथ्वी की परिक्रमा के लिए चले गये हैं वैसे ही तुम भी पर्वत कानन के सहित भूमण्डल की प्रदक्षिणा करके शीघ्रता से आ जाओ ।२८।

इत्येवं वचनं श्रुत्वा पित्रोगणपतिद्रुतम् ।
उवाच नियतस्तत्र वचनं क्रोधसंयुतः ।२९
भो मायर्भो पितर्धमरूपौ प्राज्ञौ युवां मतौ ।
धर्मंतः श्रुयतां सम्यग्वचनं मम सत्तमौ ।३०
मया तु पृथिवी क्रांता सप्तहारं पुनः पुनः ।
एवं कथ ब्रुवाते वै पुनश्च पितराविह ।३१
तद्वचस्तु तदा श्रुत्वा लौकिकीं गतिमाश्रितौ ।
महालीलाकरौ तत्र पितरावूचतुश्चतम् ।३२
कदा क्रांता त्वया पुत्र पृथिवी समहत्तरा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सप्तद्वीपा समुद्रांता महद्भिर्गहनैर्युता ।३३
तयोरेवं वचः श्रुत्वा शिवाशङ्करयोर्मुने ।
महाबुद्धिनिधि पुत्रौ गणेशो वाक्यमब्रवीत् ।३४
भवताः पूजनं कृत्वा शिवाशंकरयोरहम् ।
स्वबद्ध या हि सकुद्रान्तपृथ्वीवृतपरिक्रमः ।३५

ब्रह्माजी ने कहा-अपने माता-पिता के ये वचन सुनकर गणेश क्रोध पूर्वक कहने लगे ।२९। हे माता ! हे पिता आप दोनों ही धर्म स्वरूपी और महामनीषी हैं । मैं इस समय जो धर्मसे युक्त प्रार्थना करता हूँ उसे आप श्रवण करने की कृपा करें ।३०। गणेशजी ने कहा-मैंने तो एक बार नहीं सात बार इस पृथ्वी के समस्त मण्डल की पूरी परिक्रमा कर ली फिर आप मुझे क्यों पृथ्वी की परिक्रमा करने की आज्ञा दे रहे हैं । ।३१। ब्रह्माजी ने कहा-गणेश के वचन सुनकर लौकक गति-विधि का आश्रय ग्रहण करते हुए महा लीलाधारी दोनों ने कहा ।३२। हे पुत्र ! तुमने भूमण्डल की परिक्रमा किस समय पूरी कर डाली है ? प्रदक्षिणा न करके भी ऐसी बात क्यों करते हो? यह भूमि तो सात द्वीपो से साग रात पर्यन्त बड़े-बड़े विशाल पर्वतों से युक्त है।३३। ब्रह्माजीने कहा-अपने माता-पिता शिव-पार्वती के ये वचन सुनकर महा मतिमान् गणेशजी ने उत्तर दिया ।३४। गणेशजी ने कहा-मैंने आप दोनों माता-पिताओं का पूजन कर सात बार परिक्रमा कर ली है मैंने तो अपनी बुद्धि से समस्त भूमण्डल की भाँति पहले ही प्रदक्षिणा समाप्त करली है ।३५

इत्येवं वचन वेदे शास्त्रे वा धर्मसञ्चये ।
वर्त्तते किं च तत्तथ्य न हि किं तथ्यमेव वा ।।३६
पित्रोश्च पूजनं कृत्वा प्रक्रांतिं च करोति यः ।
तस्य वै पृथिवीजन्यं फल भवति निश्चितम् ।३७
अपहाय गृहे वो वै पितरौ तीर्थमाव्रजेत् ।
तस्य पाप तथा प्रोक्तं हनने च तयोर्यथा ।३८
पुत्रस्त्र च महातीर्थं पित्रोश्चरणपङ्कजम् ।
अन्यतीर्थं तु दुरे वै गत्वा सम्प्राप्यते पुनः ।३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इदं संनिहितं तीर्थं सुलभं धर्म साधनम् ।
पुत्रस्य च स्त्रियाश्चैव तीर्थं गेहे सुशोभनम् ।४०
इति शास्त्राणि वेदाश्च भाषन्ते यन्निरन्तरम् ।
भवद्भ्यां तत्प्रकर्तव्यमसत्य पुनरेव च ।४१
भवदीयं त्विदं रूपमसत्यं च भवेदिह ।
तदा वेदोप्यसत्यो वै भवेदिति न संशयः ।४२

यह बात तो वेदों और धर्म शास्त्रों में लिखी हुई है । यह शास्त्रके वचन सत्य हैं या असत्य हैं इसका निर्णय करके आपही बताने की कृपा करें ।३६। शास्त्र कहता है कि जो अपने माता-पिता का अर्चन करके उनकी परिक्रमा कर लेता है उसे इस भूमण्डल की परिक्रमा पूर्ण करने के फल की सुनिश्चित प्राप्ति हो जाती है ।३७। जो कोई अपने माता-पिता को घर में छोड़कर तीर्थाटन करने को जाया करता हैं उस बुद्धि-हीन को उनके मार देने का महा पाप लगता हैं । अतएव उनकी आज्ञा प्राप्त करके ही कहीं जाना चाहिए ।३८। पुत्र के लिए माता-पिता की सेवा में संलग्न रहना ही सबसे बड़ा तीर्थ होता है । माता-पिता के चरणों की सेवा तो घर में ही रहकर सम्पन्न होती है और अन्य तीर्थों के लिए तो दूर जाना पड़ता हैं ।३६। यह परम पुण्यमय तीर्थ सर्वदा समीप में स्थित और परम सुलभ तथा समस्त धर्मों के साधन स्वरूप हैं । पुत्र की स्त्री के लिए भी घर में इसी को परम शोभन तीर्थ बतलाया गया है ।४०। वेद और समस्त धर्मशास्त्र इसी बात को निरन्तर बतलाते हैं, आपको भी इसे मानना चाहिए नहीं तो ये सब शास्त्र झूँठे हो जायेंगे ।४१। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपका यह सत्य स्वरूप ये वेद भी असत्य हो जायेंगे ।४२।

शीघ्रं च भवितव्यो मे विवाहः क्रियतां शुभः ।
अथवा वेदशास्त्रञ्च व्यलीकं कथ्यतामिति ।४३
द्वयोः श्रेष्ठतमं मध्ये यत्स्यात्सम्यग्विचार्यं तत् ।
कर्तव्यं च प्रयत्नेन पितरौ धर्मरूपिणौ ।४४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्त्वा पार्वतीपुत्रस्स गणेशः प्रकृष्टधीः ।
विरराम महाज्ञानी तदा बुद्धिमतां वरः ।४५
तौ दम्पती च विश्वेशौ पार्वतीशङ्करौ तदा ।
इति श्रुत्वा वचस्तस्य विस्मयं परमं गतौ ।४६
ततः शिवा शिवश्चैव पुत्रं बुद्धिविचक्षणम् ।
सुप्रशस्योचतुः प्रीत्या तौ यथार्थप्रभाषिणम् ।४७
पुत्र ते विमला बुद्धिस्समुत्पन्ना महात्मनः ।
त्वयोक्तं यद्वचश्चैव ततश्चैव च नान्यथा ।४८
समुत्पन्ने च दुःखे च यस्य बुद्धिर्विशिष्यते ।
तस्यदुःखं विनश्येत सूर्ये दृष्टे यथा तम ।४९

अब आपको मेरा शुभ विवाह यथा सम्भव शीघ्रातिशीघ्र कर देना चाहिए या फिर आप इस वेद-शास्त्र की मानवीय मर्यादा को व्यर्थ बना दीजियेगा ।४३। आप धर्मके स्वरूप वाले माता-पिता हैं अतः इन दोनों बातों के मध्य में जो भी श्रेष्ठ समझें उसे ही यत्नके साथ करने की कृपा करें ।४४। ब्रह्माजी ने कहा--महाज्ञानी और महायतियों में परम श्रेष्ठ पार्वती के पुत्र गणेशजी ने प्रसन्नता के साथ इतना कहकर मौन का अवलम्बन ले लिया ।४५। उस समय गणेश के इन वचनों को सुन कर समस्त विश्व की माता पार्वती और जगत पिता परमेश्वर परम आश्चर्यान्वित हुए ।४६। उस समय भवानी महेश्वर ने अपने आत्मज गणेशकी इस तरह विलक्षण बुद्धि से पूर्ण बातें सुनकर उसकी अत्यधिक उड़ाईकी और प्रेम के साथ कहा-हे पुत्र ! तुम सर्वथा यथार्थ कह रहे हो ।४७। शिव और रुद्राणी दोनों ने कहा-हे पुत्र ! निश्चय ही तुम्हारी लोकोत्तर निर्मल बुद्धि महात्माओं जैसी है । तुमने जो कुछ भी इस समय कहा है वह बिल्कुल यथार्थ है । इसमें कुछ भी अन्यथा नहीं है ।४८। भुवन भास्कर के उदय हो जाने पर अन्धकार की भाँति संकट का समय आ पड़ने पर भी जिसकी बुद्धि विशेष रूपसे सुस्थिर बनी रहती है उसका दुःख नष्ट हो जाता है ।४९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम् ।
वने सिंहो तदोन्मत्तश्शशकेन निपातितः ।५०
वेदशास्त्रपुराणेषु बालकस्य यथोदितम् ।
त्वया कृतं तु तत्सर्वं धर्मस्य परिपालनम् ।५१
सम्यक्कृतं त्वया यच्च तत्केनापि भवेदिह ।
आवाभ्यां मानितं तच्च नान्यथा क्रियतेऽधुना ।५२
इत्युक्त्वा तौ समाश्वास्य गणेश बुद्धिसागरम् ।
विवाहवरणे चास्य मतिं चक्रतुरुत्तमाम् ।५३

वस्तुतः जिसमें विवेक बुद्धि होती है उसी में बल का भी निवास रहता है। जो बुद्धिहीन होता है उसमें बल कभी भी नहीं रह सकता है। बुद्धिमान खरगोश ने तो बुद्धि के द्वारा महान मदोन्मत्त सिंह को कुँए में डालकर नष्ट कर दिया था ।५०। वेद और शास्त्रों में एवं महा पुराणों में जैसा भी बालकों का कर्त्तव्य बताया गया है तुमने उसका पूर्ण रूप से अक्षरशः पालन किया है ।५१। हे पुत्र ! इस समय तुमने जो कुछ किया उसे अन्य कोई भी नहीं कर सकता । तुम्हारी बात को अन्यथा कर देने की सामर्थ्य किसी में नहीं है। हम दोनों ने अब तुम्हारी बात मान ली है ।५२। ब्रह्माजी ने कहा–इस तरह महादेव पार्वती दोनों ने बुद्धि के सागर गणेश को आश्वासन देते हुए उनके विवाह कर देने की इच्छा प्रकट की ।५३।

रुद्र संहिता युद्ध खण्ड

शंखचूड़ और शिव का दूत प्रेषण

तत्र स्थित्वा दानवेन्द्रो महान्तं दानवेश्वरम् ।
दूतं कृत्वा महाविज्ञं प्रेषयामास शङ्करम् ।१
स तत्र गत्वा दूतश्च चन्द्रभालं ददर्श ह ।
वटमूले समासीनं सूर्यकोटिसमप्रभम् ।२
कृत्वा योगासनं दृष्ट्या मुद्रायुक्तं च सस्मितम् ।
शुद्धस्फटिकसंकाशं ज्वलन्तं ब्रह्मतेजसा ।३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिशूलं पट्टिशधरं व्याघ्रचर्माम्बरावृतम् ।
भक्तमृत्युहरं शांतं गौरीकान्तं त्रिलोचनम् ।४
तपसां फलदातारं कर्त्तारं सर्वसंपदाम् ।
आशुतोषं प्रसन्नास्यं भक्तानुग्रहकातरम् ।५
विश्वनाथ विश्वबीजं विश्वरूपं च विश्वजम् ।
विश्वंभरं विश्वकरं विश्वसंहारकारणम् ।६
कारणं कारणानां च नरकार्णवतारणम् ।
ज्ञानप्रदं ज्ञानबीजं ज्ञानानन्दं सनातनम् ।७

श्री सनत्कुमारजी ने कहा–शंखचूड़ ने वहीं पर स्थित होकर महान दानवेश्वर को अपना दूत बनाकर भगवान् शंकर के समीप में भेजा ।१। दूत ने कोटि सूर्य के समान कान्ति वाले वट के मूल में विराजमान भगवान शंकर के दर्शन किये ।२। भगवान शिव योगासनकी मुद्रा में बैठकर दृष्टि लगाये हुए हास्ययुक्त थे । स्फटिक मणि के तुल्य ब्रह्म तेज से पूर्ण प्रकाशित हो रहे थे ।३। दूत ने देखा शिव त्रिशूल और पट्टिश लेकर व्याघ्र चर्म धारण किये हुए हैं । गौरी के पति त्रिलोचन परम शांतिकी मुद्रा में स्थित अपने भक्तों की मृत्युका हरण करने वाले हैं । शिव भक्तों की तपश्चर्या के फल प्रदान करने, समस्त सम्पत्तियों के दाता, शीघ्रातिशीघ्र भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने के कारण कातर होकर प्रसन्न होने वाले हैं ।४-५। भगवान् शंकर शिव के स्वामी विश्व के बीज रूप स्वयं विश्व स्वरूप विश्व के उत्पादक–विश्व के भरण-पोषण कर्त्ता और विश्व के संहार करने वाले देव हैं।६। ये कारण के भी कारण नरक रूपी समुद्र से पार करने वाले–ज्ञान के प्रदान कर्त्ता ज्ञान के बीज रूप और सर्वदा स्वयं ज्ञानानन्द में निमग्न एवं सनातन हैं । शंखचूड़ के दूत दानवेश्वर ने इस सुन्दर स्वरूप से समन्वित शिव को देखा ।७।

अवरुह्य रथाद्दूतस्तं दृष्ट्वा दानवेश्वरः ।
शंकरं सकुमारं च शिरसा प्रणनाम सः ।८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वामतो भद्रकालीं च स्कन्दं तत्पुरतः स्थितम् ।
लोकाशिषं ददौ तस्मै कालीं स्कन्दश्च शंकरः ।९

अथासौ शङ्खचूडस्य दूतः परमशास्त्रवित् ।
उवाच शंकरं नत्वा करौ बद्ध्वा शुभं वचः ।१०

शंखचूडस्य दूतोहं त्वत्संकाशमिहागतः ।
वर्तते ते किमिच्छाद्य तत्वं ब्रूहि महेश्वर ।११

इति श्रुत्वा च वचनं शङ्खचूडस्य शंकरः ।
प्रसन्नात्मा महादेवो भगवांस्तमुवाच ह ।१२

शृणु दूत महाप्राज्ञ वचो मम सुखावहम् ।
कथनीयमिदं तस्मै निर्विवादं विचार्य च ।१३

विधाता जगतां ब्रह्मा पिता धर्मस्य धर्मवित् ।
मरीचिस्तस्य पुत्रश्च कश्यपस्तत्सुतः स्मृतः ।१४

दानेश्वर ने अपने रथ से उतरकर परम सुकुमार स्वरूप वाले शङ्कर को सादर प्रणाम किया ।८। भगवान् शिव के वाम भाग में भद्र काली और आगे स्कन्द विराजमान थे । काली देवी, षण्मुख और शंकर ने लोक-रीति का निर्वाह करते हुए आशीर्वाद दिया ।९। उस समय शास्त्र के ज्ञाता शङ्खचूड़ के दूत दानवेश्वर ने अपने दोनों हाथ जोड़कर शिवजी ने प्रार्थना की ।१०। दूत ने कहा–हे महेश्वर ! मैं शङ्खचूड़ का दूत होकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ । आपको जो भी इच्छा हो वह मुझसे तात्विक रूप से कहिये ।११। सनत्कुमार ने कहा–शङ्ख-चूढ़ के दूत दानवेश्वर के ये वचन श्रवणकर अत्यन्य प्रसन्नतापूर्वक महा-देव बोले ।१२। श्री शिव ने कहा–हे महापण्डित दूत ! मेरा सन्देश सावधानी से सुनकर तुम अपने स्वामी से विचार पूर्वक निर्विवाद कह देना ।१३। ब्रह्मा इस समस्त जगत के पिता और धर्म को पूर्ण रूप से जाननें वाले हैं ब्रह्मा के पुत्र मरीचि और उनके पुत्र कश्यप हुए ।१५।

दक्षः प्रीत्या ददौ तस्मै निजकन्यास्त्रयोदश ।
तास्वेका च दनुस्साध्वी तत्सौभाग्यविवर्द्धिनी ।१५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चत्वारस्ते दनोः पुत्रा दानवास्तेजसौल्वणाः ।
तेष्वेको विप्रचित्तिस्तु महाबलपराक्रमः ।१६
तत्पुत्रो धार्मिको दंभो दानवेन्द्रो महामतिः ।
तस्य त्वं तनयः श्रेष्ठो धर्मात्मा दानवेश्वरः ।१७
पुरा त्वं पार्षदो गोपो गोपेष्वेव च धार्मिकः ।
अधुना राधिकाशाँपाज्जातस्त्वं दानवेश्वरः ।१८
दानवी योनिमायातस्तत्वतो न हि दानवः ।
निजवृत्तं पुरा ज्ञात्वा देवबैरं त्यजाधुना ।१९
द्रोहं न कुरु तैस्सार्द्धं स्वपदं भक्ष्व सादरम् ।
नाधिकं सविकारं च कुरु राज्यं विचार्य च ।२०
देहि राज्यं च देवानां मत्प्रीतिं रक्ष दानव ।
निजराज्ये सुखं तिष्ठ तिष्ठन्तु स्वपदे सुराः ।२१

प्रजापति दक्ष ने अपनी तेरह कन्यायें कश्यप को दी उनमें एकपरम पतिव्रता दनु नाम वाली कन्या थी जो कि उनके सौभाग्य को बढ़ाने वाली थी ।१५। उससे महान् तेजस्वी चार दानव पुत्रों ने जन्म ग्रहण किया । इसमें एक विप्रचित नाम वाला अत्यन्त बलवान् तथा पराक्रमी था ।१६। विप्रिचत्ति का पुत्र बुद्धिमान परम धार्मिक दानवराज दम्भ उत्पन्न हुआ उसके पुत्र धर्मात्मा तुमने जन्म लिया ।१७। हे दानवेश्वर ! पहिले तुम भगवान् श्रीकृष्ण के प्रिय पार्षद गोपों में एक प्रमुख गोपथे । इस समय श्री राधिका के शाप के कारण दानवेश्वर हुए हो ।१८। तुम शापवश ही इस दानवयोनि में आ गये हो वस्तुतः दानव नहीं हो, इस लिए तुम अपना प्राचीन हाल समझकर देववृन्द के साथ वैरभाव को त्याग दो ।१९। देवताओं के साथ किसी प्रकार का द्रोह न करते हुए आपने पद का सानन्द उपयोग करो । ऐसा करने में विचार पूर्वक देखो तुम्हारी कुछ भी हानि नहीं है ।२०। हे दानवेश्वर ! मेरी प्रीतिके विषय में विचार कर देवताओं को उनका राज्य लौटा दो । तुमको सुखपूर्वक अपने ही राज्य में स्थित रहना चाहिए । देवगण अपने घर पर स्थित रहें, इसी में भलाई है ।२१।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलं भूतविरोधेन देवद्रोहेण किं पुनः ।
कुलीनाश्शुद्धकर्माणः सर्वे कश्यपवंशजाः ।२२
यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ।
ज्ञातिद्रोहजपापस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।२३
इत्यादिबहुवार्त्तां च श्रुतिस्मृतिपरां शुभाम् ।
प्रोवाच शंकरस्तस्मै बोधयन् ज्ञानमुत्तमम् ।२४
शिक्षितश्शंखचूडेन स दूतस्तर्कवित्तमः ।
उवाच वचनं नम्रो भवितव्यविमोहितः ।२५
त्वया यत्कथितं देव न यथा तत्तथा वचः ।
तथ्यं किंचिद्यथार्थं च श्रूयतां मे निवेदनम् ।२६
ज्ञातिद्रोहे महत्पापं त्वयोक्तमधुना च यत् ।
तत्किमीशा सुराणां च न सुराणां वद प्रभो ।२७
सर्वेषाति चेत्तद्वै तदा वच्मि विचार्य च ।
निर्णयं ब्रूहि तत्राद्य कुरु सन्देहभञ्जनम् ।२८

साधारण प्राणियों के साथ भी विरोध भाव रखना अच्छा नहीं होता है फिर देवगण से विनोध रखने के बावत क्या कहा जावे ? ये सभी शुद्ध कर्मों के करने वाले परम कुलीन कश्यप ऋषि की सन्तान हैं ।२२। ब्रह्म-हत्या आदि जितने भी महाघोर पाप होते हैं वे सभी अपनी जाति से द्रोह करने के पाप की सोलहवीं कला बराबर भी नहीं होते हैं ।२३। सनत्कुमार जी ने कहा—इस रीति से श्रुति एवं स्मृति के सिद्धान्त से अनुमत अनेक उपदेशमय वाले कहते हुए भगवान् शङ्कर ने उसे भली भाँति समझाकर अपना ज्ञान स्वरूप सन्देश कहा ।२४। इसके अनन्तर शङ्खचूड़ के द्वारा समझाये हुए तर्क के जानने वाले उस दूत ने भक्तिव्यता से मोहित होकर नम्रतापूर्वक शिव से कहा ।२५। शङ्खचूड़ के दूत ने कहा—हे देवी ! आपने जो कुछ भी मुझ से कहा वह 'सर्वथा सत्य है, किन्तु अब मैं जो भी निवेदन करना चाहता हूँ उसे भी आप सत्य सुनने की कृपा करें ।२६। हे आदिदेव ! अभी आपने जाति के साथ द्रोह को एक महा१ पाप बतलाया है। यह अक्षरशः सत्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है किन्तु यह बात केवल असुरोंके लिए ही है देववृन्द के लिए नहीं है ? ।२७। यदि दोनों पक्षों के लिए यह जाति द्रोह के महान् पाप की बातहै तो फिर मैं विचार करके कुछ निवेदन करता हूँ आप मेरे संदेह का निवारण करिए ।२८।

मधुकैटभयोर्दैत्यवरयोः प्रलयार्णवे ।
शिरश्छेदं चकारासौ कस्माच्चक्री महेश्वरः ।२९
त्रिपुरैस्सह संयुद्धं भस्मत्वकारणं कुतः ।
भवाञ्चकार गिरिश सुरपक्षीति विश्रुतम् ।३०
गृहीत्वा तस्य सर्वस्वं कुत प्रस्थापितो बलिः ।
सुतलादि समुद्धतुं तद्द्वारे च गदाधरः ।३१
सभ्रातृको हिरण्याक्षः कथं देवैश्च हिंसितः ।
शुंभादयोऽसुराश्चैव कथं देवैर्निपातिताः ।३२
पुरा समुद्रमथने पीयूषं भक्षितं सुरैः ।
क्लेशभाजो वयं तत्र ते सर्वे फलभोगिनः ।३३
क्रीडाभांडमिदं विश्व कालस्य परमात्मनः ।
स ददाति यदा यस्मै तस्यैश्वर्यं भवेत्तदा ।३४
देवदानवयोर्वैरं शश्वन्नैमित्तकं सदा ।
पाजयो जयस्तेषां कालाधीनः क्रमेण च ।३५

हे महेश्वर यदि ऐसा सभी के लिए है तो फिर आपने मधुकैटभ श्रेष्ठ दैत्य का मस्तक चक्र से क्यों काटा था जब अन्य कोई कारण न था ।२९। हे गिरीश ! आपने त्रिपुरासुरा के साथ किस कारण से महा-युद्ध किया था और क्यों उसे भस्मी भूत बना दिया? आपने देववृन्द का पक्ष लेकर उनका ही कल्याण किसलिए किया था ।३०। राजा बलि का सब कुछ हरण करने के पश्चात् भी उसको पाताल लोक में भेजने का क्या कारण था जहाँ कि सर्वदा गदाधारण उसके द्वार पर स्थित रहा करते हैं ? ।३१। अपने सहोदर भाई के सहित देवताओं ने हिर-ण्याक्ष को किस कारण मार गिराया और देवों के ही द्वारा शुम्भादि महाबली दैत्य कैसे मारे गये ।३२। समुद्र मन्थन के महाप्रयास में हम
CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने भी अत्यन्त घोर श्रम के साथ क्लेश भोगा किन्तु अमृत का पान केवल देवों ने ही करके उस श्रम फल को प्राप्त किया ।३३। यह समस्त विश्व काल का एक खिलौना है । परमात्मा-स्वरूप यह काल जब भी जिसको देता है यह ऐश्वर्य उसे प्राप्त हो जाता है ।३४। देवता और दैत्यों के बीच में होने वाले युद्ध तथा वैर का कुछ कुछ निमित्त रहा करता है । इन में जय और पराजय का होना काल के आधीन होता है ।३५।

तवानयोर्विरोधं च गमनं निष्फलं भवेत् ।
समसंबंधिनां तद्वै रोचते नेश्वररेय ते ।३६
सुरासुराणां सर्वेषामीश्वरस्य महात्मनः ।
इयं ते रहिता लज्जा स्पर्द्धास्माभिस्सहाधुना ।३७
यतोधिका चैव कीर्तिर्हानिश्चैव पराजये ।
तवैतद्विपरीतं च मनसा सविचार्यताम् ।३८
इत्येतद्वचनं श्रुत्वा संप्रहस्य त्रिलोचनः ।
यथोचितं च मधुरमुवाच दानवेश्वरम् ।३९
वयं भक्तपराधीना न स्वतन्त्राः कदापि हि ।
तदिच्छया तत्कर्मणो न कस्यापि च पक्षिणः ।४०
पुरा विधिप्रार्थनया युद्धमादौ हरेरपि ।
मधुकैटभयोर्दैत्यवरयो प्रलयार्णवे ।४१
देवप्रार्थनया तेन हिरण्यकशिपोः पुरा ।
प्रह्लादार्थं वधोऽकारि भक्तानां हितकारिणा ।४२

आपस में इन दोनों के विरोध में व्यर्थ ही आपको नहीं पड़ना चाहिए । विरोध भाव समान बल की शक्ति वालों का ही उचित हुआ करता है । हे शिव ! आपको विरोध करना शोभा नहीं देता हैं ।३६। आप तो देव और दैत्य सभी के स्वामीहै । यह एक बड़ी लज्जा की सी बात है कि आप जैसे महान् आत्मावाले का हमारे साथ वैर-भाव रहता है ।३७। जिस जयलाभ से बहुत बड़ी कीर्ति और हार हो जाने पर महती हानि हो, वह बात आपके स्वरूप से सर्वथा विपरीत है । आप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वयं इसका विचार मन में करें ।३८। सनत्कुमार जी ने कहा दानवेश्वर के ऐसे वचन श्रवण कर महेश्वर हँसते हुए समुचित एवं मधुर वचनों द्वारा उससे बोले ।३९। महेश ने कहा–हे दानवेश्वर ! मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ सर्वदा अपने भक्तजन के आधीन रहा करता हूँ । उनकी इच्छा के अनुसार ही मुझे कर्म करने को विवश होना पड़ता है । हम कभी किसी का भी पक्षपात नहीं किया करते हैं ।४०। सर्वप्रथम विधाता द्वारा प्रार्थना की जाने पर प्रलय सागरमें विष्णु भगवान् ने मधु कैटभके साथ युद्ध किया था ।४१। देवगण की दीन प्रार्थना पर ही भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए और भक्तजन के हितार्थ हिरण्यकशिपु का वध विष्णु ने नृसिंह स्वरूप से किया था ।४२।

त्रिपुरैस्सह संयुद्धं भस्मत्वकरणं ततः ।
देवप्रार्थनयाकारी मयापि च पुरा श्रुतम् ।४३
सर्वैश्वर्यास्सिर्वमातुर्देवप्रार्थनया पुरा ।
आसीच्छुंभादिभियुद्धं वधस्तेषां तया कृतः ।४४
अद्यापि त्रिदशास्सर्वे ब्रह्माणं शरणं ययुः ।
स सदेवो हरिर्मा च देवश्शरणमागतः ।४५
हरिब्रह्मादिकानां च प्रार्थनावशतोप्यहम् ।
सुराणामीश्वरो दूत युद्धार्थममगं खलु ।४६
पार्षदप्रवरस्त्वं हि कृष्णस्य च महात्मनः ।
ये ये हताश्च दैतेया न हि केपि त्वया समाः ।४७
का लज्जा महती राजन् मम युद्ध त्वया सस ।
देवकार्यार्थि मोशोहं विनयेन च प्रषितः ।४८
गच्छ त्वं शङ्खचूडे वै कथनीयं च मे वचः ।
स च युक्तं करोत्वत्र सुरकार्यं करोम्यहम् ।४९
इत्युक्त्वा शंकरस्तत्र विरराम महेश्वरः ।
उत्तस्थौ शंखचूडस्य दूतोऽगच्छत्तदन्तिकम् ।५०

मैंने भी देवगण की प्रार्थना और अतिशय भक्तिहो जाने पर त्रिपुरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुर का संहार किया था--यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध ही है ।४३। सबका वैभव और पद बलात्छीनने वाले तथा देवगणको अत्यन्त कष्ट देने वाले शुम्भ आदि का वध भी जब देवों ने बहुत बार प्रार्थना की थी, किया गया था ।४४। इस समय भी समस्त देवगण पहिले ब्रह्माजी की शरण गये और फिर ब्रह्मा विष्णु मेरी शरण में आये हैं ।४५। हे दूत अब हरि तथा ब्रह्मा की प्रार्थना करने पर ही यहाँ देवगणों की ओर से सग्राम करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ।४६। मैं पुनः तुमको बतला देना चाहता हूँ कि तुम भगवान कृष्ण के परमोत्तम पार्षद हो, अब तक जितने भी असुर मारे गये हैं । तुम्हारे सदृश उनमें एक भी कोई नहीं था ।४७। हे राजन् ! तुम्हारे साथ में संग्राम करने के कार्य में मुझे क्या लज्जा हो सकती है ? यह तो देवों का कार्य ही है जिसे पूर्ण करने के लिए विनय प्रार्थना से प्रेरित होकर मुझ ईश्वर को यहाँ आना पड़ा है ।४८। अब यहाँ से जाकर तुम शंखचूड़ से स्पष्ट कह देना कि उसके मन में जो भी रुचे वह वही करे । मुझे तो यहाँ देव-कार्य करना ही है ।४९। इतना कहने के पश्चात् महेश्वर चुप हो गये और शंखचूड़ के द्वारा प्रषित वह दूत भी वहाँ से उठकर अपने स्वामी के समीप चला गया ।५०।

देवता दानवों का रोमहर्षणयुद्ध

स दूतस्तत्र गत्वा च शिववाक्यं जगाद ह ।
सविस्तरं यथार्थं च निश्चय तस्य तत्वतः ।१
तच्छ्रुत्वा शंखचूडोऽसौ दानवेन्द्रः प्रतापवान् ।
अङ्गीचकार सुप्रीत्या रणमेव स दानवः ।२
समारुरोह यानं च सहामात्यैश्च सत्वरा ।३
शिवस्स्वसैन्यं देवाश्च प्रेरयामास सत्वरः ।
स्वमप्यखिलेशोऽपि सन्नद्धोभूच्च लीलया ।४
युद्धारंभो बभूवाशु नेदुर्वाद्यानि भूरिशः ।
कौलाहलश्च संजातो वीरशब्दस्तथैव च ।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवदानवयोर्युद्धं परस्परमभन्मुने ।
धर्मतो युयुधे तत्र देवदानवयोगणः ।६
स्वयं यहेन्द्रो युयुधे सार्धं च वृषपर्वणा ।
भास्करा युयुधे विप्रचित्तिसा सह धर्मतः ।७

श्री सनत्कुमारजी ने कहा--उस दूत ने वापिस जाकर अपने नृपेन्द्र को भगवान् शङ्कर से होने वाली पूरी बातें सुनादीं और उनके अन्तिम निश्चय को विस्तृत रूप से बतला दिया ।१। यह सब श्रवण करने के अनन्तर दानवों के राजा प्रतापी शंखचूड़ ने सप्रेम युद्ध करना स्वीकार कर लिया ।२। शंखचूड़ अपने समस्त मन्त्रिगणों के सहित विमान पर चढ़कर तैयार हो गया और शिव के साथ संग्राम करने का आदेश सेना को शीघ्रही दे दिया।३। उधर शङ्कर भगवान भी समस्त देवताओं तथा सेना को प्रेरित कर लीला के सहित युद्ध के लिए प्रस्तुत हो गये ।४। उस समय तुरन्त ही युद्ध का आरम्भ हो गया । युद्ध क्षेत्रमें बहुत प्रकार के वाद्यों का वादन तथा वीर योद्धाओं का महान कोलाहल सर्वत्र छा गया ।५। हे मुनिराज ! तब देवों और दानवों का आपस में अत्यन्त घोर धर्म युद्ध होना शुरू हो गया ।६। इन्द्रदेव वृषपर्वा के साथ और भास्कर विप्रचिति के साथ धर्मयुद्ध में प्रवृत्त हो गये ।७।

दंभेन सह विष्णुश्च चकार परमं रणम् ।
कालासुरेण कालश्च गोकर्णेनं हुताशनः ।८
कुबेरः कालकेयेन विश्वकर्मा मयेन च ।
भयंकरेण मृत्युश्च संहारेण यमस्तथा ।९
कालम्बिकेन वरुणश्चंचलेन समीरणः ।
बुधश्च घटपृष्ठेन रक्ताक्षेण शनैश्चरः ।१०
जयन्तो रत्नसारेण वसवो वर्चसांगणैः ।
अश्विनौ दीप्तिमद्भयां च धर्मेण नलकूबरः ।११
धुरन्धरेण धर्मश्च गणकाक्षेण मंगलः ।
शोभाकरेण वैश्वानरः पिपिटेन च मन्मथः ।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोकामुखेन चूर्णेन खङ्गनाम्नाऽसुरेण च ।
धूम्रेण संहलेनापि विश्वेन च प्रतापिना ॥१३
पलाशेन द्वादशाऽर्कं युयुधुर्धर्मतः परे ।
असुरैरमरस्साद्धं शिव साहाय्यशालिनः ॥१४

विष्णु दम्भ दैत्य से, कालदेव कालासुर से हुताशन गोकर्ण से घोर युद्ध करने लगे ।८। कुवेरने कालकेय से, विश्वकर्माने मय नामक असुरसे मृत्यु ने भयंकर से यमराज का संहारक से, वरुण का कालम्बिक से पवनदेव का चंचलसुर से, बुध का घटपृष्ठ से, शनिदेव का रक्ताक्ष नाम वाले असुर से वर्चसगण तथा रत्नसार के साथ जयन्तका अश्विनी-कुमार का दीप्ति मानों के साथ और नलकूबर का धूम्र के साथ महान युद्ध हुआ ।९-११। धर्म और धुरन्धर का मङ्गल और गणकाक्ष का, वैश्वानर और शोभाकार का तथा मन्मथ और पिपिट का धर्मयुद्ध, भगवान् शंकर की सहायता प्राप्त कर देवताओं ने दैत्यगण से अत्यन्त भयानक युद्ध किया ।१२-१४।

एकादश महारुद्राश्चैकादशभयंकरैः ।
असुरैर्युयुधैर्वीरैर्महाबलपराक्रमैः ॥१५
महामणिश्च युयुधे चोग्रचंडादिभिस्सह ।
राहुणा सह चन्द्रश्च जीवः शुक्रेण धर्मतः ॥१६
नन्दीश्वरादयस्सर्वे दानवप्रबरैस्सह ।
युयुधुश्च महायुद्धं नोक्ता विस्तरतः पृथक् ॥१७
वटमूले तदा शम्भुस्तस्थौ काल्या सुतेन च ।
सर्वे च युयुधुस्सैन्यसमूहास्सततमुने ॥१८
रत्नसिंहासने रम्ये कोटिदानवसंयुतः ।
उवास शंखचूडश्च नाना रत्नभूषितः ॥१९
महायुद्धो वभूवाथ देवासुरविमर्दनः ।
नानायुधानि दिव्यानि चलन्तिस्म महामृधे ॥२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदर्ष्टिपट्टिशाचक्रभुशुण्डिप्रासमुद्गराः ।
निस्त्रिंल्लपरिघाः शक्तियुन्मुखपरश्वधाः ।।२१
शरतोमरखड्गाश्च शतघ्नश्च सहस्रशः ।
भिन्दिपालादश्चान्ये वीरहस्तेषु शोभिताः ।।२२

एकादश महारुद्रों ने महाभयंकर, महाबली, महापराक्रमी ग्यारह असुरोंसे युद्धकिया । महामणि और उग्रचण्ड चन्द्र और राहुदेवगण बृहस्पति और शुक्र परस्पर में युद्ध करने लगे ।१५-१६। उस समय नन्दीश्वर प्रभृति समस्त शिव गण भी उन सभी दानवों के साथ महायुद्ध में प्रवृत्त हो गए ।१७। भगवान् महेश्वर, महाकाली तथा अपने पुत्रके साथ वटवृक्ष के मूल के निकट विराजमान हो रही थी और उनकी समस्त सेना निरन्तर युद्ध कर रही थी ।१८। इसी तरह रत्नजटित रमणीय सिंहासन पर करोड़ों दैत्यों के साथ बहुमूल्य मणि एवं रत्नों के अनेक आभरणों से समलंकृत दानवेन्द्र शङ्खचूड़ विराजमान हो रहा था ।१६। इस युद्ध भूमि में देवों और असुरों के प्राणों का संहारक महायुद्ध हो रहा था और उसमें विविध प्रकार के अनेक दिव्य आयुधों का प्रहार किया जा रहा था ।२०। गदा पट्टिश ऋष्टि, भुशुण्डी, मुद्गर, पाश, भल्ल निस्त्रिंश, परिघ, शक्ति, परशु, सन्मुख, शर, तोमर, खड्ग, भिन्दिपाल और सहस्रों शतघ्नी (तोपें) आदि महावीरों के हाथों में शोभित होकर प्रयोग में लाये जा रहे थे ।२१-२२।

शिरांसि चिच्छिदुश्चैभिर्वीरास्तत्र महोत्सवाः ।
वीराणामुभयोश्चैव सैन्ययोर्गर्जतो रणे ।।२३
गजास्तुरङ्गा बहवः स्यन्दन्नाश्च पदातयः ।
सारोहवाहा विविधास्तत्रासन् सुविखण्डिताः ।।२४
विकृत्तवाहूरुकरकटिकर्णयुगांघ्रयः ।
संछिन्नध्वजवाणासितनुत्र वरभूषणाः ।।२५
समुद्धतकिरीटैश्च शिरोभिस्सह कुण्डलैः ।
संरंभनष्टैरास्तीर्णा बभौ भूः करभोरुभिः ।।२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभुजैस्साभरणैस्संछिन्नैस्सायुधैस्तथा ।
अङ्गै रन्यैश्च सहसा पटलैर्वाससारघैः ॥२७
मृधेभटाः प्रधावन्तः कबन्धान् स्वशिरोक्षिभिः ।
पश्यन्तस्तत्र वोत्पेतुरुद्यतायुधसद्भुजैः ॥२८

दोनों दलों के वीर योद्धागण महा गर्जना तथा तर्जनाके साथ अपने अतुल पराक्रम से शत्रुओं के शिरों का छेदन कर रहे थे ।२३। उस समय हाथी, अश्व, रथ, पैदल और रथादि अनेक सवारियाँ नष्ट भ्रष्ट होकर गिरने लगीं ।२४। वीरों के भुज, उरु, कर कटि कर्ण और पैर आदि शरीर के अवयव छिन्न-भिन्न हो-होकर गिर रहेथे ।२५। किरीट,कुण्डल आदि से भूषित मस्तकों, ध्वज, वाण, तलवार,वख्तर, टूटे हुए भूषण और हथियारों से युक्त वीरों की भुजायें ही कट-कटकर तथा गजों की सूड़ आदि से सम्पूर्ण युद्ध भूमि ढक गई ।२६। वह भूमि शरों से मधु-मक्खियों के छत्तों के समान व्याप्त हो गई थीं ।२७। उस देवासुरों के महान् भीषण युद्ध में योद्धागण कट कर गिरे हुए मस्तकों को आँखों से देखकर आयुध उठाते हुए सावधान हो रहे थे ।२८।

वल्गंतोऽतितरां वीरा युयुधुश्च परस्परम् ।
शस्त्रास्त्रैर्विवधैस्तत्र महावलपराक्रमाः ॥२६
केचित्स्वर्णमुखैर्वाणैर्विनिहत्य भटान्मृधे ।
व्यनदन् वीरसन्नादं स तोया इव तोयदाः ॥३०
सर्वतश्शरकूटेन वीरस्सरथं सारथिम् ।
वीरं संछादयामास प्रावृट्सूर्यमिवाम्बुदः ॥३१
अन्योन्यमभिसंसृत्ययुयुधुर्द्वन्द्वयोधिनः ।
आह्वयन्तो विशंतोऽग्रे छिपन्तो मर्मभिमथः ॥३२
सर्वतो वीरसंघाश्च नानावाहुध्वजायुधाः ।
व्यदृश्यन्त महासंख्ये कुर्वन्त सिंहसंरवम् ॥३३
महारवान् स्वशंखाश्च विदध्मुर्वै पृथक् पृथक् ।
वल्गनं चक्रिरे तत्र महावीराः प्रहर्षिताः ॥३४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं चिरतरं कालं देवदानवयोर्महत् ।
बभूव युद्धं विकटं करालं वीरहर्षदम् ॥३५
महाप्रभोश्च लीलेयं शंकरस्य परात्मनः ।
यया संमोहितं सर्वं सदेवासुरमानुषम् ॥३६

महा पराक्रम वाले वीर अनेक तरह के अस्त्र-शस्त्र उठाकर सिंह-नाद करते हुए घोर युद्ध करने लगे ।२९। उनमें कुछ वीर सुवर्ण पङ्ख वाले वाणों से योधाओं का संहार करते हुए महामेघ के तुल्य गम्भीर गर्जनकर रहे थे ।३०। सब तरह से आने वाले वाणों के समूह से वीर सारथी इस प्रकार ढक गये मानो मेघों की घटा ने आकर सूर्य को ढक लिया हो ।३१। द्वन्द्व-युद्ध करने वाले भी एक दूसरे के मर्म स्थलों का भेदन करते हुए प्रहार पर प्रहार कर रहे थे ।३२। सभी ओर से वीरों के समूह नाना भाँति के आयुध हाथों में लेकर सिंहके समान घोर काट करते हुए युद्ध स्थल में दिखलाई दे रहें थे ।३३। वे बड़े-बड़े शङ्खों को बजा रहे थे, जिनकी महाध्वनि से आकाश व्याप्त हो रहा था ऐसे अनेक शङ्ख पृथक्-पृथक् वजाते हुए वीर प्रसन्नता के साथ ताड़न और वेधन करने में तत्पर थे ।३४। इस रीति से बहुत समय पर्यन्त देवदानवों का वह भीषण वीरों को प्रसन्नता देने वाला महाघोर युद्ध हुआ ।३५। यह सब परमेश शङ्कर की ललित लीला है जिसने देव, दानव, मनुष्य सभी को मोहित कर दिया है ।३६।

शंखचूड़ का कार्तिकेय आदि से युद्ध

तदा देवगणास्सर्वे दानवैश्च पराजिताः ।
दुद्रवुर्भयभीताश्च शस्त्रास्त्रक्षतविग्रहाः ॥१
ते परावृत्य विश्वेशं शंकरं शरणं ययुः ।
त्राहि त्राहीति सर्वेशेत्यूचु र्विह्वलया गिरा ॥२
दृष्ट्वा परजयं तेषां देवादीनां स शंकरः ।
सभयं वचनं श्रुत्वा कोपमुच्चैश्चकार ह ॥३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरीक्ष्य स कृपादृष्ट्यादेवेभ्यश्चाभयं ददौ ।
बलं च स्वगणानां वै वर्द्धयामास तेजसा ॥४
शिवाज्ञप्तस्तदा स्कन्दो दानवानां गणैस्सह ।
युयुधे निर्भयस्संख्ये महावीरो हरात्मजः ॥५
कृत्वा क्रोधं वीरशब्दंदेवो यस्तारकांतकः ।
अक्षौहिणीनां शतक समरे संजधान ह ॥६
रुधिरं पातयामास काली कमललोचना ।
तेषां शिरांसि संछिद्य बभक्ष सहसा च सा ॥७

सनत्कुमारजी ने कहा---उस समय सभी देवगण दानवों से पराजय प्राप्त कर उनके शस्त्रास्त्रों से क्षत विक्षत होते हुए भागने लगे ।१। देवगण युद्ध स्थल से प्लावित होकर भगवान् शंकर की शरण में पहुँचे और विह्वल वाणी के द्वारा "भगवान् ! हमारी रक्षा कीजिए"---इस तरह पुकार कर कहने लगे ।२। उस समय महेश्वर को देववृन्दकी हार देखकर और डर के भय से परिपूर्ण वचन सुनकर महान् क्रोध उत्पन्न हुआ ।३। शंकर ने कृपा की दृष्टि से देवों को देखकर उनका भय दूर कर दिया और अपनी तेजोमयी भक्ति के द्वारा अपने गणों में विशेष वल-पराक्रम की वृद्धि कर दी । इसके पश्चात् स्कन्द शिव की आज्ञा प्राप्त कर महावीरता का प्रकाश भरते हुए निर्भय होकर दानवों के साथ युद्ध करने के लिए चल दिये ।४-५। उस समय तारक के संहार करने वाले महान् वीर स्कन्द महा गर्जन का घोर शब्द सुनाते हुए दानवों की सैकड़ों अक्षौहिणी सेना का संहार करने लगे ।६। इधर महाकाली देवी समर भूमि में दानवों का नाश करती हुई उनके गर्म रुधिर का पान करने में तत्पर हो गई और शत्रु के शिरों को काट कर उनका भक्षण करने लगी ।७।

पपौ रक्तानि तेषां च दानवानां समन्ततः ।
युद्धं चकार विविधं सुरदानवभीषणम् ॥८
शतलक्षं गजेन्द्राणां शतलक्षं नृणां तथा ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप लीलया ॥९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबन्धानां सहस्रं च सन्ननर्त रणे वहु ।
महान् कोलाहलो जातः क्लीवानां च भयंकरः ॥१०
पुनः स्कन्दः प्रकुप्योच्चैः शरवर्षाञ्चकार ।
पातयामासक्षणतः कोटिशोऽसुरनायकान् ॥११
दानवाः शरजालेन स्कन्दस्य क्षतविग्रहाः ।
भीताः प्रदुद्रुवुस्सर्वे शेषा मरणतस्तदा ॥१२
वृषपर्वा विप्रचित्तिर्दण्डश्चापि विकंपनः ।
स्कन्देन युयुधुस्सार्द्धं तेन सर्वे क्रमेण च ॥१३
महामारी च युयुधे न बभूव पराङ्मुखी ।
बभूवुस्ते क्षतांगाश्च स्कन्दशक्तिप्रपीडिताः ॥१४

उस समय देव-दानवों का ऐसा महा भयंकर युद्ध हुआ कि सभी तरफ से असुर दल के रुधिर का पान किया जाने लगा ।८। सौ लाख महान् गजों और एक शत लक्ष वीर दानवों को हाथ से उठाकर महा काली लीला से ही अपने मुख में डालने लगी ।९। सैकड़ों धड़ जिनके मस्तकों का छेदन हो गया था उस रण भूमि में नाच रहे थे । उस समय भीरु मनुष्यों के हृदय में महा भय की उत्पत्ति करने वाला महान् कोलाहल सब ओर हो रहा ।१०। ऐसा होते हुए भी कुमार स्कन्द ने क्रोध के साथ वाणों की महावृष्टि के द्वारा करोड़ोंकी संख्यामें दानवोंका संहार कर दिया ।११। जो स्कन्द की वाण वर्षा से विध गये थे वे क्षत विक्षत शरीर वाले होकर समर भूमि से भागने लगे ।१२। स्कन्द के साथ क्रम से विप्रचित्ति । वृषपर्वा, दण्ड और विकम्पन ने युद्ध करना आरम्भ किया ।१३। उधर महामारी संग्राम में पराङ्मुख न होते हुए युद्ध कर रही थी । स्कन्द की शक्ति से दैत्य क्षत-विक्षत हो रहे थे ।१४।

महामारीस्कन्दयोश्च विजयोभूत्तदा मुने ।
नेदुर्दुंदुभयस्स्वर्गे पुष्पवृष्टिः पपात ह ॥१५
स्कन्दस्य समरं दृष्ट्वा महारौद्रं तमद्भुतम् ।
दानवानां क्षयकरं यथा प्रकृतिकल्पकम् ॥१६
महामारीकृतं तच्चोपद्रवं क्षयहेतुकम् ।
चुकोपातीवसहसा सत्रद्धोभूत्स्वयं तदा ॥१७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरं विमानमारुह्य नानाशस्त्रास्त्रसंयुतम् ।
अभयं सर्ववीराणां नानारत्नपरिच्छदम् ॥१८
महावीरैश्शंखचूडो जगाम रथमध्यत: ।
धनुर्विकृष्य कर्णान्तं चकार शरवर्षणम् ॥१६
तस्य सा शरवृष्टिश्च दुर्निवार्य्या भयंकरी ।
महाघोरांधकारश्च वधस्थाने बभूव ह ॥२०
देवा: प्रदुद्रुवु: सर्वे येऽन्ये नन्दीश्वरादय: ।
एक एव कार्तिकेयस्तस्थौ समरमूर्द्धनि ॥२१

हे मुनिश्रेष्ठ ! इस युद्ध में स्कन्द और भगवती की जीत हुई। इस विजय को देखकर स्वर्ग में दुन्दुभि बजने लगी और आकाश से पुष्प वृष्टि हुई ।१५। कुमार स्कन्द ने बहुत ही भीषण प्रकृति कल्प के समान असुरों का नाश करने वाला युद्ध किया था और उस क्षय का हेतु महा-मारी ने प्रस्तुत किया था यह देखकर दानवों के राजा को बड़ा भारी क्रोध हुआ और फिर वह स्वयं ही युद्ध करने के लिए तैयार हो गया ।१६-१७। दानवेन्द्र उस समय एक ऐसे विमान पर आरूढ हुआ जो सबको अभय देने वाला और जिसमें नाना प्रकार के शस्त्रास्त्र रक्खे हुए थे ।१८। दानवराज शंखचूड बड़े-बड़े योद्धाओं को साथ में लेकर रथ में बैठकर युद्ध क्षेत्र में आ गया और कान तक धनुष की प्रत्यञ्चा को तानकर बाणों की वृष्टि करने लगा ।१६। उस असुरेन्द्र की घोर बाण वृष्टि निवारण करने के अयोग्य हो रहीं और इससे युद्ध भूमि में महान् अन्धकार छा गया ।२०। नन्दीश्वर आदि को साथ लेकर सभी देवगण घबराते हुए वहाँ से भाग खड़े हुए और उस समय वहाँ अकेले कुमार कार्त्तिकेय ही रह गये थे ।२१।

पर्वतानां च सर्पाणां नागानां शाखिनां तथा ।
राजा चकार वृष्टिं च दुर्निवार्यां भयंकरीम् ॥२२
तद्वृष्ट्या प्रहत: स्कन्दो बभूव शिवनन्दन: ।
नीहारेण च सांद्रेण संवृतो भास्करो यथा ॥२३
नानाविधां स्वमायां च चकार मयदर्शिताम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तां नाविदन् सुरः कोऽपि गणाश्च मुनिसत्तम ॥२४
तदैव शंखचूडश्च महामायी महाबलः ।
शरेणैकेन दिव्येन धनुश्चिच्छेद तस्य वै ॥२५
बभञ्ज तद्रथं दिव्यं चिच्छेद रथं पीडकान् ।
मयूरं जर्जरीभूतं दिव्यास्त्रेण चकार सः ॥२६
शक्ति चिक्षेप सूर्याभां तस्य वक्षसि घातिनीम् ।
मूर्च्छामवाप सहसा तत्प्रहारेण सक्षणम् ॥२७
पुनश्च चेतनां प्राप्य कार्तिकः परवीरहा ।
रत्नेन्दसारनिर्माणमारुरोह स्ववाहनम् ॥२८
स्मृत्वा पादौ महेशस्य साम्बिकस्य च षण्मुखः ।
शस्त्रास्त्राणि गृहीत्वैव चकार रणनुल्वणम् ॥२९

शङ्खचूड़ ने पर्वत, सर्प, नाग, और वृक्षोंकी व दुर्निवारणीय भयानक वृष्टि देव सेना पर की ।२२। ऐसी भयङ्कर वर्षा से शिव पुत्र कार्त्तिकेय परम व्याधित एवं प्रताड़ित हुए । कुहरे के समय में भास्कर देव की भाँति उस समय दोनों महावीर दिखाई दे रहे थे ।२३। इस युद्ध में दानवेन्द्र ने मय दानव की बहुत सी माया प्रकट की । महान् बलवान् अत्यन्त मायाधारी शङ्खचूड़ ने अपने एक वाण से स्कन्द के धनुष का छेदन कर दिया।२४-२५। दानवेन्द्रने कुमारके रथको छिन्न भिन्न करके वाहन मयूर को भी अपने दिव्य वाण से जर्जरित कर दिया ।२६। असुरराज ने सूर्य तुल्य एक घातक शक्ति के द्वारा स्कन्ध के वक्षस्थल में ऐसा भयानक प्रहार किया कि क्षणमात्र के लिए वे मूर्छित हो गये ।२७। थोड़े ही समय के पश्चात् चेतना प्राप्त कर स्कन्द अपने महारत्न निर्मित वाहन पर आरूढ़ हो गये और उस समय कुमार ने अपने माता के सहित पिता श्री शिव का ध्यान करते हुए शस्त्रास्त्र सह कर महाघोर संग्राम किया ।२८-२९।

सर्पांश्च पर्वतांश्चैव वृक्षांश्च प्रस्तरांस्तथा ।
सर्वांश्चिच्छेद कोपेन दिव्यास्त्रेण शिवात्मजः ॥३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह्नि निवारयामास पार्जन्येन शरेण ह ।
रथं धनुश्च चिच्छेद शंखचूडस्य लीलया ॥३१
सन्नाहं सर्ववाहांश्च किरीटं मुकुटोज्ज्वलम् ।
वीरशब्दं चकारासौ जगर्ज च पुनः पुनः ॥३२
चिक्षेप शक्ति सूर्याभां दानवेन्द्रस्य वक्षसि ।
तत्प्रहारेण संप्राप मूर्च्छां दीर्घतमेन च ॥३३
मुहूर्तमात्रं तत्क्लेशं विनीय स महाबलः ।
चेतनां प्राप्य चोत्तस्थौ जगर्ज हरिवर्चसः ॥३४
शक्त्या जघान तं चापि कार्तिकेयं महाबलम् ।
स पपात मही पृष्ठेऽमोघां कुर्वन् विधिप्रदाम् ॥३५

दानवेन्द्रके चलाये हुए सर्प, वृक्ष, पर्वत और प्रस्तर आदि को अपने दिव्य रस्त्र-शस्त्रोंके द्वारा कुमार छेदनकर दिया।३०। कुमारने मेघास्त्र प्रयोग कर असुरेन्द्र द्वारा प्रसारित अग्नि को शान्त शीतल कर दिया तथा लीला ही में शङ्खचूड़ के रथ और धनुष का छेदन कर दिया।३१। कार्तिकेय ने असुरों के कवच वाहन और निर्मल किरीट कुण्डल सबको काट कर गर्जना के साथ बार-बार वीरता भरी ध्वनि की ।३२। कुमार ने सूर्य के समान जाज्वल्यान एक शक्ति के द्वारा शङ्खचूड़की छाती में ऐसा प्रवल प्रहार किया कि वह बहुत समय तक बेहोश हो गया ।३३। महा वलवान् . वह दैत्यराज थोड़ी देर में ही क्लेश का निवारण कर सचेत हो गया और तुरन्त फिर उठकर जोरसे गजंने लगा ।३४। उसने स्वामी कार्त्तिकेय पर पुनः शक्ति का प्रहार किया तो कुमार ब्रह्माजी के वचन को सफल करने के लिए भूमि पर गिर गये ।३५।

काली गृहीत्वा तं क्रोडे निनाय शिवसन्निधौं ।
ज्ञानेन तं शिवश्चापि जीवयामास लीलया ॥३६
ददो बलमनंतं च समुत्तस्थौ प्रतापवान् ।
गमनाय मति चक्रे पुनस्तत्र शिवात्मजः ॥३७
एतस्मिन्नंतरेतत्र वीरभद्रो महाबलः ।
शंखचूडेन युयुधे समरे बलशालिना ॥३८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ववर्ष समरेऽस्त्राणि यानि यानि च दानवः ।
चिच्छेद लीलया वीरस्तानितानि निजैश्शरैः ॥३९
दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे दानवेश्वरः ।
तानि चिच्छेद तं बाणैर्वीरभद्रः प्रतापवान् ॥४०
अथातीव चुकोपोच्चैश्शंखचूडः प्रतापवान् ।
शक्त्या जघानोरसि तं स चकपे पपात च ॥४१
क्षणेन चेतनां प्राप्य समुत्तस्थौ गणेश्वरः ।
जग्राह च धनुर्भूयो वीरभद्रो गणाग्रणीः ॥४२
एतस्मिन्नन्तरे काली जगाम समरं पुनः ।
भक्षितुं दानवान् स्वांश्च रक्षितुं कार्तिकेच्छया ॥४३
वीरास्तामनुजग्मुश्च ते च नन्दीश्वरादयः ।
सर्वे देवाश्च गन्धर्वा यक्षा राक्षसपन्नगाः ॥४४
वाद्यभांडाश्च बहुशश्शतशो मधुवाहकाः ।
पुनः समुद्यताश्चासन् वीरा उभयतोऽखिलाः ॥४५

उस समय महाकाली ने उन्हें गोद में उठाकर शिव के समीप में पहुँचा दिया और भगवान् शंकर ने अपने ज्ञान के बल से उनको लीला से ही जीवित कर दिया ।३६। शिव ने कार्त्तिकेय को असीम बल भी प्रदान किया इससेवे उठकर पुनः युद्ध भूमि में जाने की इच्छा करने लगे ।३७। इस वीच में गणेश्वर वीरभद्र ने दैत्यराज से घोर युद्ध किया ।३८। उस समय युद्ध करते हुए दानवेन्द्र से जिन अस्त्रों की वर्षा की वीरभद्र ने उन सबको आसानी से ही काट गिराया ।३९। तब शंखचूड़ को महान् क्रोध आया और उसने एक ऐसी शक्ति का प्रयोग किया कि वीरभद्र भी पृथिवी पर गिर गये । गणेश्वर ने चेतना युक्त होकर हाथ में धनुष उठा लिया ।४०-४२। महाकाली पुनः आकर कार्त्ति केय की रक्षा और दानवों के भक्षण की इच्छा प्रकट करने लगी ।४३। उसके साथ नन्दीश्वर आदि महावीर योधा, देव गन्धर्व,यक्ष राक्षस और पन्नग थे जो कि विचित्र वाद्य तथा मधु के सैकड़ों पात्र लिए हुएथे फिर क्या था दोनों ही ओर के बलवान् योद्धा युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हो गये ।४४-४५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काली और शंखचूड़ में दिव्य अस्त्रों से युद्ध

सा च गत्वा हि संग्रामे सिंहनाद चकार ह ।
देव्याश्च तेन नादेन मूर्च्छामापुश्च दानवाः ॥१
अट्टाट्टहाससमशिवं चकार च पुनः पुनः ।
तदा पपौ च माध्वीकं ननर्त रणमूर्द्धनि ॥२
उग्रदंष्ट्रा चोग्रदंडा कोटवीच पपौ मधु ।
अन्याश्च देव्यस्तत्राजौ नृतुर्मधु संपपुः ॥३
महान् कोलाहलो जातो गणदेवदले तदा ।
जहृषुर्बहुगर्जन्तस्सर्वे सुरगणादयः ॥४
दृष्ट्वा कालीं शंखचूडश्शीघ्रमाजौ समाययौ ।
दानवाश्च भयं प्राप्ता राजा तेभ्योऽभयं ददौ ॥५
काली चिक्षेप वह्निं च प्रलयाग्निशिखोपमम् ।
राजा जघान तं शीघ्रं वैष्णवांकितलीलया ॥६
नारायणास्त्रं सा देवी चिक्षेपतदुपर्यरिम् ।
बृद्धि जगाम तच्छस्त्रं विलोक्येव च दानवम् ॥७

सनत्कुमार ने कहा--उस समय भगवती काली ने युद्ध भूमि में पहुँचते ही बड़े जोर से सिंहनाद किया जिसे सुनते ही समस्त दानवोंकी मूर्च्छा हो गई ।१। देवी ने इस तरह कितनी ही बार भयंकर सिंहनाद किया और वह बार-बार मधु का पान करती हुई समर स्थल में नृत्य करने लगी ।२। काली की भयोत्पादक बड़ी दाढ़े थी, उनसे सबको डराती हुई दण्ड हाथ में ग्रहण करके मदिरा पान कर रही थी और उसके साथ वाली अन्य देवियाँ भी पान तथा नर्तन करती थीं ।३। काली के वहाँ आ जाने पर दैत्यों में महान् कोलाहल मच गया तथा देवगण उस ध्वनि को सुनकर हर्षोल्लास से भर गये ।४। महा-काली को युद्ध के मैदान में आई देखकर शीघ्र शंखचूड़ वहाँ आ गया और जो दानव भयभीत हो गये थे उन्हें अभय देने लगा ।५। कालदेवी ने प्रलयकालीन उद्दीप्त अग्नि के तुल्य शक्ति के द्वारा प्रहार किया । किन्तु दानवेश्वर ने उसे वैष्णवास्त्र से तुरन्त ही शान्त कर दिया ।६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पश्चात् भगवती ने असुर पर नारायणास्त्र का प्रयोग किया जो कि दानव को देखकर बढ़ने लगा ।७।

तं दृष्ट्वा शंखचूडश्च प्रलयाग्निशिखोपमम् ।
पपात दंडवद्भूमौ प्रणनाम पुनः पुनः ॥८
निवृत्ति पाप तच्छस्त्रं दृष्ट्वा नम्रं च दानवम् ।
ब्रह्मास्त्रमथ सा देवी चिक्षेप मन्त्रपूर्वकम् ॥९
तं दृष्ट्वा प्रज्ज्वलंतं च प्रणम्य भुवि संस्थितः ।
ब्रह्मास्त्रेण दानवेन्द्रो विनिवारं चकार ह ॥१०
अथ क्रुद्धो दानवेन्द्रो धनुराकृष्य रंहसा ।
चिक्षेप दिव्यान्यस्त्राणि देव्यै वै मन्त्रपूर्वकम् ॥११
आहारं संमरे चक्रे प्रसार्य मुखभायतम् ।
जगर्ज साट्टहासं च दानवा भयमाययुः ॥१२
काल्यै चिक्षेप शक्ति स शतयोजनमायताम् ।
देवी दिव्यास्त्रजालेन शतखण्डं चकार सा ॥१३
स च वैष्णवमन्त्रं च चिक्षेप चंडिकोपरि ।
माहेश्वरेण काली च विनिवारं चकार सा ॥१४

शङ्खचूड़ इस अस्त्र को प्रलयकाल की अग्नि के समान देखकर भूमि पर गिर गया और उसे प्रणाम करने लगा ।८। वह अस्त्रराज दानवकी ऐसी विनम्रता देखते ही निवृत्तहो गया। फिर देवीने मन्त्रपूर्वक सविधि ब्रह्मास्त्र को छोड़ा ।९। इस अस्त्र को परम प्रज्वलित रूप में देखकर भूमि गत हो दानवेन्द्र ने उसे प्रणाम किया और उसके प्रहार से बच गया ।१०। इसके पश्चात् दानवेन्द्र क्रोधपूर्वक वहुत ही वेग के साथ धनुष लेकर मन्त्रों के साथ देवी पर वाणों की घोर वृष्टि करने लगा ।११। उस समय देवीने अपना मुख फैला दिया और उसने प्रयोगमें लाये गये सभी अस्त्रों का भक्षण कर लिया और अट्टहास करती हुई नाचने लगीं। इससे दानव अत्यन्त भय से कातर हो उठे ।१२। इसके अनन्तर दानवराज ने सौ योजन तक प्रभाव दिखाने वाली शक्ति का प्रयोग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काली पर किया तो देवी ने अपने परम दिव्य अस्त्रों से उस शक्ति को काट कर खण्ड-खण्ड कर दिया ।१३। इसके बाद शंखचूड़ ने वैष्णवास्त्र छोड़ा जिसे देवी ने माहेश्वरास्त्र से हटा दिया ।१४!

एवं चिरतरं युद्धमन्योन्यं संबभूव ह ।
प्रेक्षका अभवन् सर्वे देवाश्च दानवा अपि ॥१५
अथ क्रुद्धा महादेवी काली कालसमा रणे ।
जग्राह मन्त्रपूतं च शरं पाशुपतं रुषा ॥१६
क्षेपात्पूर्वं तन्निषेधुं वाग्बभूवाशरीरिणी ।
न क्षिपास्त्रमिदं देवि शंखचूडाय वैरुषा ॥१७
मृत्युः पाशुपतान्नास्त्यमोघादपि चंडिके ।
शंखचूडस्य वीरस्योपायमन्यं विचारय ॥१८
इत्याकर्ण्य भद्रकाली न चिक्षेप तदस्त्रकम् ।
शतलक्षं दानवानां जघास लीलया क्षुधा ॥१६
अत्तुं जगाम वेगेन शंखचूडंभयंकरी ।
दिव्यास्त्रेण रौद्रेण वारयामास दानवः ॥२०
अथक्रुद्धो दानवेन्द्रः खड्गं चिक्षेप सत्वरम् ।
ग्रीष्मसूर्योपमं तीक्ष्णधारमत्यन्तभीकरम् ॥२१
सा काली तं समालोक्यायांतं प्रज्वलितं रुषा ।
प्रसार्यं मुखमाहारं चक्रे तस्य च पश्यतः ॥२२

इस तरह इन दोनों का अधिक काल तक युद्ध चलता रहा, सबदेव और दानव पारस्परिक युद्ध देखने में तत्पर हो गये ।१५। उस समय भगवती को काल के समान महान् क्रोध हुआ । उसने पाशुपतास्त्र को लेकर मन्त्रों द्वारा पवित्र किया ।१६। वह शस्त्र का जैसेही प्रयोग करना चाहती थी कि वहाँ आकाशवाणी हुई । हे देवी ! शंखचूड़ पर इसका आक्षेप मत करो । यद्यपि यह महास्त्र निश्चय ही अमोघ है किन्तु हे चण्डिके ! इसके द्वारा इसकी मृत्यु नहीं होगी । इसलिए इसके वध के लिए कोई दूसरा ही उपाय करो ।१७-१८। इस आकाशवाणी को सुन कर देवी ने उस अस्त्र का प्रयोग नहीं किया और लीला के साथ वैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही सौ लाख दानवों का भक्षण कर डाला ।१६। इसके बादमें जब काली शंखचूड़ को भक्षण करने को भागी तो उसने उसके इस भयंकर वेग को दिव्य रौद्रास्त्र के द्वारा रोका ।२०। तब दानवेश्वर ने सूर्य के सदृश परम तीक्ष्ण धार वाले खंग का देवी पर क्रोध के साथ प्रहार किया।२१ काली ने उस प्रज्वलित खंग को अपना मुख फैलाकर भक्षण कर डाला ।२२।

दिव्यान्यस्त्राणि चान्यानि चिच्छेद दानवेश्वरः ।
प्राप्तानि पूर्वतश्चक्रे शतखण्डानि तानि च ॥२३
पुनरत्तुं महादेवी वेगतस्तं जगाम ह ।
सर्वसिद्धेश्वरः श्रीमानन्तर्धानं चकार सः ॥२४
वेगेन मुष्टिना काली तमदृष्ट्वा च दानवम् ।
बभंज च रथं तस्य जघान किल सारथिम् ॥२५
कुथागत्य द्रुतं मायी चक्रं चिक्षेप वेगतः ।
भद्रकाल्यै शंखचूडः प्रलयाग्निशिखोपमम् ॥२६
सा देवी तं तदा चक्रं वामहस्तेन लीलया ।
जग्राहस्वमुखेनैवाहारं चक्रे रुषा द्रुतम् ॥२७
मुष्ट्या जघान तं देवी महाकोतेन वेगतः ।
बभ्राम दानवेन्द्रोऽपि क्षणं मूर्च्छामवाप सः ॥२८
क्षणेन चेतनां प्राप्य स चोत्तस्थौ प्रतापवान् ।
न चक्रे बाहुयुद्धं च मातृबुद्ध्या तया सह ॥२९

इस तरह दानवराज ने अनेक उत्तम से उत्तम अस्त्रों का काली पर प्रयोग किया किन्तु उसने सबको काटकर खण्ड-खण्ड कर दिया ।२३। जिस समय भगवती शंखचूड़ को ही भक्षण कर डालने के लिए वेग से दौड़ी तो सब सिद्धों का स्वामी दानवेश्वर अन्तर्धान हो गया ।२४। जब काली ने शंखचूड़ को वहाँ कहीं नहीं देखा तो उसने बड़े जोर के साथ मुष्टि मारकर उसका रथ और सारथी का नाश कर दिया ।२५। इसके बाद फिर उस माया से भरे हुए दानवेश्वर ने वहाँ शीघ्र ही आकर देवी पर आघात किया जो कि प्रलय की अग्नि के तुल्य भयंकर था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।२६। भगवती ने उसे भी बड़ी आसानी से बाँये हाथोंसे पकड़कर क्रोध पूर्वक खा लिया ।२७। इसके अनन्तर बहुत कोप और अत्यन्त वेग से काली ने उस शंखचूड़ पर मुष्टि का प्रहार किया जिससे वह घूम गया और क्षणभर को उसे मूर्च्छा हो गई ।२८। थोड़ी ही देर के बाद वह मूर्च्छा से उठ बैठा किन्तु चण्डिका को मातृ भाव से देखकर उससे बाहु-युद्ध करना उचित नहीं समझा ।२६।

गृहीत्वा दानवं देवी भ्रामयित्वा पुनः पुनः ।
खध्वै च प्रापयामास महाकोपेन वेगतः ॥३०
उत्पपात च वेगेन शङ्खचूडः प्रतापवान् ।
निपत्य च समुत्तस्थौ प्रणम्य भद्रकालिकाम् ॥३१
रत्नेन्द्रसारनिर्माणविमानं सुमनोहरम् ।
आरुरोह स हृष्ट्वात्मा न भ्रान्तोऽपि महारणे ॥३२
दानवानां हि क्षतजं सा पपौ कालिका क्षुधा ।
एतस्मिन्नंतरे तत्र वाग्बभूवाशरीरिणो ॥३३
लक्षं च दानवेन्द्राणामवशिष्टं रणेऽधुना ।
उद्धतं गुञ्जता सार्द्धं ततस्त्वं भुक्ष्व चेश्वरि ॥३४
संग्रामे दानवेन्द्रं च हन्तुं न कुरु मानसम् ।
अवध्योयं शङ्खचूडस्तव देवीति निश्चयम् ॥३५
तच्छ्रुत्वा वचनं देवी निःसृतं व्योममंडलात् ।
दानवानां बहुनां च मांसं च रुधिरं तथा ॥३६
भुक्त्वा पीत्वा भद्रकाली शङ्करांतिकमाययौ ।
उवाच रणवृत्तांतं पौर्वापर्येण संक्रमम् ॥३७

इसके पश्चात भगवती ने उसे पकड़ कर अनेक बार चारों ओर घुमाते हुए क्रोधपूर्वक बड़े वेग से ऊपर की ओर फेंक दिया।३०। प्रताप वाला शंखचूड़ वेगपूर्वक उधर की ओर कूद गया और पुनः आकर भद्र-काली को प्रणाम करते हुए युद्ध के लिए प्रस्तुत हो गया ।३१। उत्तम रत्न रचित विमान पर आरूढ़ होकर विना किसी भ्रान्ति के परम प्रसन्नता से सग्राम के लिए तैयार हो गया ।३२। इस ओर काली देवी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानवों के रक्त पान कर रही थीं उस समय पुनः आकाश से वाणी सुनाई दी। हे चण्डिके ! अभी समर भूमि में एक लाख दानवों का दल शेष रह गया है। ये बड़े उद्धत भी हैं। अतः हे ईश्वरि ! इनको तुम शीघ्रातिशीघ्र भक्षण कर डालो।३३-३४। हे देवी ! इस संग्राम में शंखचूड़ के वध करने का विचार ही त्याग दो। वह तुम्हारे द्वारा वध नहीं किये जाने वाला है, इसे निश्चय रूप से समझ लेना चाहिए।३५। ऐसा वचन सुनकर देवी ने अन्तरिक्ष के मण्डल से बहुत से असुरों का रक्त तथा माँस निकाल कर खाते हुए देखा।३६। भगवती ने सानन्द उसका भक्षण एवं पान किया और भगवान् शंकर के पास उपस्थित होकर समस्त आद्यन्त युद्ध का समाचार उन्हें सुना दिया।३७।

शिव और शंखचूड़ का तुमुल संग्राम

श्रुत्वा काल्युक्तिमीशानो किं चकार किमुक्तवान् ।
तत्त्वं वद महाप्राज्ञ परं कौतूहलं मम ॥१
काल्युक्ति वचनं श्रुत्वा शङ्करः परमेश्वरः ।
महालीलाकरश्शम्भुर्जहासाश्वासयञ्च ताम् ॥२
व्योमवाणीं समाकर्ण्य तत्वज्ञानविशारदः ।
ययौ स्वयं च समरे स्वगणैस्सह शङ्करः ॥३
महावृषभसमारूढो वीरभद्रादिसंयुतः ।
भैरवै क्षेत्रपालैश्च स्वसमानैस्समन्वितः ॥४
रणं प्राप्तो महेशश्च वीररूपं विधाय च ।
विरराजाधिकं तत्र रुद्रो मूर्त इवांतकः ॥५
शङ्खचूडश्शिवं दृष्ट्वा विमानादवरुह्य सः ।
ननाम परया भक्त्या शिरसा दंडवद् भुवि ॥६
तं प्रणम्य तु योगेन विमान मारुरोह सः ।
पूर्णं चकार सन्नाहं धनुर्जग्राह सेषुकम् ॥७

व्यासजी ने कहा—हे महाप्राज्ञ ! हे सनत्कुमार ! भद्रकाली के द्वारा संग्राम का वृत्तान्त सुनकर फिर भगवान् शंकर ने क्या कहा तथा क्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया यह बताइये । मुझे मन में इसके जानने का महान् कौतूहल हो रहा है सनत्कुमार ने कहा--शंकर जी काली की कही हुई सारी कथा सुनकर हँसने लगे और उसे भली-भाँति लीलापूर्वक समझाया ।१२। शिव, तत्वों के ज्ञान के महापण्डित हैं । उन्होंने आकाशवाणी की बातें सुनते ही अपने गणों के सहित स्वयं युद्ध भूमि में जाने की प्रवृत्ति प्रकट की ।३। शिव ने वृषभ पर सवारी की और वीरभद्र गणों से संयुक्त हुए तथा अपने ही तुल्य भैरव और क्षेत्रपाल को साथ में ले लिया । अपना महान वीर के समान स्वरूप बनाकर युद्धस्थल में पहुँच गये । उस समय भगवान परम शान्त स्वरूप वाले शिव काल के सदृश भयंकर प्रतीत होकर विराजमान थे ।४-५। शिवजी को वहाँ आये हुए देखते ही शंख-चूड़ विमान से नीचे उतर पड़ा और उसने परम श्रद्धा भक्तिकी भावना से चरणों में मस्तक रखकर शिव को दण्डवत्प्रणाम किया ।६। शंकर को प्रणाम करने के अनन्तर वह योग मार्ग से विमान पर चढ़ गया और कवच धारण कर उसने धनुष-बाण हाथ में ले लिया ।७।

शिवदानवयोर्युद्धं शतमब्दं बभूव ह ।
बाणवर्षमिवोग्रं तद्वर्षतोर्मोघयोस्यदा ॥८
शंखचूडो महावीरश्शरांश्चिक्षेम दारुणान् ।
चिच्छेद शंकरस्तान्वै लीलया स्वशरोत्करैः ॥९
तदंगेषु च शस्त्रौधैस्ताडयामास कोपतः ।
महारुद्रो विरूपाक्षो दुष्टदण्डस्सतां गतिः ।१०
दानवो निशितं खड्गं चर्म चादाय वेगवान् ।
वृषं जघान शिरसि शिवस्य बरवाहनम् ॥११
ताडिते वाहने रुद्रस्तं क्षुराग्रेण लीलया ।
खड्गं चिच्छेद तस्याशु चर्म चापि महोज्ज्वलम् ॥१२
छिन्नेऽसौ चर्मणि तदाशक्ति चिक्षेप सोऽसुरः ।
द्विधा चक्रे स्वबाणेन हरतां समुखागताम् ॥१३
कोपाध्मातश्शङ्खचूडश्चक्रं चिक्षेप दानवः ।
मुष्टिपातेन तच्चाप्य चूर्णं यत्सहसा हरः ॥१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ वर्ष तक निरन्तर शिव और शंखचूड़ का संग्राम चलता रहा और बराबर मेघोंकी अविरल धारा के सदृश बाणों की वृष्टि होती रही ।८। यद्यपि सब दानवों एवं श्रेष्ठ वीर शंखचूड़ ने बहुत दारुण बाणों की वर्षा शिव पर की किन्तु शंकर ने लीला ही में अपने बाणों द्वारा सभी का खण्डन कर दिया ।९। दुष्टों को दण्ड तथा सज्जनों को उद्धार देने वाले विख्यात शंकर ने बड़े ही कोप से दानव के अंगों पर शस्त्रों का प्रहार किया ।१०। उसी समय दानवेन्द्र ने बड़ी तेजी से एक तेज धार वाले खड्ग से शङ्कर के वाहन के शिरपर आधात किया।११। दानव के प्रहार करते ही शिव ने तीक्ष्ण नोंक वाले बाण से उसकी ढाल तथा तलवार का छेदन कर दिया ।१२। तलवार के छिन्न होने के बाद उसने शक्ति के प्रहार करना आरम्भ किया तो महादेव ने बाण से उसके भी खण्ड-खण्ड कर दिये।१३। दानव के चक्र को मुष्टि के प्रहार से नष्ट भ्रष्ट कर उससे प्रहार होने को निरर्थक कर दिया ।१४।

गदामाविध्य तरसा संचिक्षेप हरं प्रति ।
शम्भुना सापि सहसा भिन्ना भस्मत्वमागता ॥१५
ततः परशुमादाय हस्तेन दानवेश्वरः ।
धावति स्म हरं वेगाच्छंखचूडः क्रुधाकुल ॥१६
समाहृत्य स्वगाणौघैरपायत् शङ्करः ।
द्रुतं परशुहस्तं तं भूतले लीलयासुरम् ॥१७
ततः क्षणेन संप्राप्य संज्ञामारुह्य सद्रथम् ।
धृतदिव्यायुधशरौ बभो व्याप्याखिल नभः ।१८
आयातं तं निरीक्ष्यैव डमरूध्वनिमादरात् ।
चकार ज्यारवं चापि धनुषी दुस्सहं हरः ॥१९
पूरयामास ककुभः शृंगनादेन च प्रभुः ।
स्वयं जगर्ज गिरिशस्त्रासयन्नसुरांस्तदा ॥२०
त्याजितेभमहागर्वैर्महानादैर्वृषेश्वरः ।
पूरयामाससहसा खं गां दश दिशस्तथा ॥२१

शंखचूड़ने प्रहार करने को अपनी गदा जब उठाई तो उसको चलाते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही शम्भु ने बाण द्वारा तोड़-फोड़कर चूर्ण कर दिया ।१५। इन सब आयुधों के नष्ट हो जाने पर वह परशु लेकर शिव पर प्रहार करने को भागा तो महेश्वर ने उसके हाथ काट कर भूमि में निपतित कर दिया ।१६-१७। थोड़े ही समय के पश्चात् वह दैत्य सचेतन होकर रथारूढ़ हुआ और दिव्यास्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो आकाश में व्यापक रूप से संस्थित हो गया ।१८। इस रीति से पुनः आते हुए दानव को देखकर भगवान शम्भु ने अपने धनुष की प्रत्यञ्चा और डमरू का भीषण शब्द किया ।१९। शंकर के डमरू की ध्वनि से उस समय समस्त दिशा-विदिशायें भर गईं और दैत्यों को भयपूर्ण कर शिव गर्जना करने लगे ।२०। शिव के गर्व पूर्ण इस महानाद से तथा वृषेन्द्र की उच्च ध्वनि से समस्त भूमण्डल और आकाश गूंज उठा ।२१।

महाकालस्समुत्पत्याताडयनां तथा नभः ।
कराभ्यां तन्निादेन क्षिप्ता आसन्पुराऽसुरा ॥२२
अट्टाट्टसमशिव क्षेत्रपालश्चकार ह ।
भैरवोऽपि महानादं स चकार महाहवे ॥२३
महाकोलाहलो जातो रणमध्ये भयङ्करः ।
वीरशब्दो बभूवाथ गणमंध्ये समंततः ॥२४
सत्रेसुर्दानवास्सर्वे तैश्शब्दैर्भयदैः खरैः ।
चुकोपातीव तच्छ्रुत्वा दानवेन्द्रो महाबलः ॥२५
तिष्ठतिष्ठेति दुष्टात्मन्व्याजहार यदा हरः ।
देवैर्गणेश्च तैश्शीघ्रमुक्त जयजयेति च ॥२६
अथागत्य स दंभस्य तनयस्सुप्रतापवान् ।
शक्तिं चिक्षेप रुद्राय ज्वालामालातिभीषणाम् ॥२७
वह्निकूटप्रभा याती क्षेत्रपालेन न सत्वरम् ।
निरस्तागत्य साजौ वै मुखोत्पन्नमहोल्कया ॥२८

उस समय महा कालेश्वर ने भूमि एवं अन्तरिक्ष को अपने दोनों हाथोंद्वारा प्रताड़ित किया । उससे भयंकर शब्द हुआ जिसे सुनकर सब असुर एकदम बेचैन हो गये ।२२। इसी रीति से क्षेत्रपाल तथा भैरव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने भी उस युद्धस्थल में महाशब्द किया था ।२३। तब तो समस्त युद्ध के मैदान में चारों ओर महान कोलाहल हो उठा और गणों के परिकर में सर्वत्र वीर-शब्दों की ध्वनि सुनाई देने लगी ।२४। उस समय भय देने वाले परम तीक्ष्ण शब्दों को सुनकर समस्त दैत्यवृन्द व्याकुल हो गये और महा बलवान दानवेश्वर उन शब्दों को सुनकर अत्यन्त क्रोधित हो, गया ।२५। तब शिवजी ने उससे कहा--'अरे दुरात्मा ! यहीं खड़ा रह, भाग कर मत जा इतना शिव के कहने पर देवगण और असुरों के समुदाय नें जय-जयकार का उच्चारण किया ।२६। उसके अनन्तर प्रतापी दम्भ के पुत्र ने वहाँ आकर ज्वाला की माला से युक्त एक भीषण शक्ति का प्रहार रुद्र देव के ऊपर किया ।२७। अग्नि की पूर्णप्रभा के तुल्य उस छोड़ी हुए शक्ति को आते हुए देखकर प्रतापी क्षेत्रपाल ने आगे की और बढ़ते अपने मुख की ज्वाला से उसें नष्ट कर दिया ।२८।

पुनः प्रववृते युद्धं शिवदानवयोर्महत् ।
च कंपे धरणी द्यौश्च सनगाब्धिजलाशया ॥२९
दांभिमुक्तञ्छराञ्शम्भुश्शरांस्तत्प्रहितान्स च ।
सहस्रशश्शरैरुग्रै श्चिच्छेद शतशस्तदा ॥३०
ततश्शम्भु-स्त्रिशूलेन संक्रुद्धस्तंजघान ह ।
तत्प्रहारमसह्याशु क्षौ पपात स मूर्च्छितः ॥३१
ततः क्षणेन संप्राप संज्ञां स च तदासुरः ।
आजघान शरैरुद्रं तान्सर्वानात्तकार्मुकः ॥३२
वाहूनामयुतं कृत्वा छादयामास शङ्करम् ।
चक्रायुतेन सहसा शङ्खचूडः प्रतापवान् ॥३३
ततो दुर्गापतिः क्रुद्धो रुद्रो दुर्गार्तिनाशनः ।
तानि चक्राणि चिच्छेद स्वशरैरुत्तमैद्रुतम् ॥३४
ततो वेगेन सहसा गदामादाय मानवः ।
अभ्यधावत वै हन्तुं बहुसेनावृतो हरम् ॥३५
गदां चिच्छेद तस्याश्वापततः सोऽसिना हरः ।
शितधारेण संक्रुद्धो दुष्टगर्वापहारकः ॥३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पश्चात् भी दानवेश्वर और भगवान् शम्भु का महान् घोर संग्राम हुआ । उस समय स्वर्ग भूमि-पर्वत और समुद्र सब कम्पित हो उठे ।२९। दम्भ के पुत्र द्वारा छोड़े गये वाणों को शम्भु ने अपनी परमोग्र वाण वृष्टि से छिन्न-भिन्न कर दिया।३०। इसके अनन्तर शिवने अत्यन्त असह्य वेदना होने के कारण मूच्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा ।३१। मूर्च्छा से जगकर एक क्षणके बाद ही वह असुर धनुष पर वाण-चढ़ाकर बहुत ही तीक्ष्ण वाणों की वर्षा शिव पर करने लगा ।३२। शंखचूड़ ने अपनी दश सहस्र भुजाओं से शिव को आच्छादित कर एक ही बार में एक सहस्र चक्र छोड़ दिये थे ।३३। कठिन से कठिन दुर्गति के नाशक दुर्गा के पति भगवान् शङ्कर ने उस पर महान् क्रोधित होते हुए अपने बाणों से उन समस्त चक्रों का छेदन कर दिया ।३४। इसके अनन्तर दानवेश्वर अपनी बहुत बड़ी सेना के साथ गदा लेकर बहुत ही वेग से शम्भु को मारने के लिए दौड़ा तो शिवने अपने तीक्षणतम खंग से उसकी गदा को काटकर फेंक दिया और उस दुरात्मा दैत्य के बढ़े हुए गर्व को चूर-चूर कर दिया ।३५-३६।

छिन्नायां स्वगदायां च चुकोपातीव दानवः ।
शूलं जग्राह तेजस्वी परेषां दुस्सहं ज्वलत् ।।३७
सुदर्शनं शूलहस्तयमायायां दानवेश्वरम् ।
स्वत्रिशूलेन विव्याध हृदि तं वेगतो हरः ।।३८
त्रिशूलभिन्नहृदयान्निष्क्रांतः पुरुषः परः ।
तिष्ठतिष्ठेति चौवाच शङ्खचूडस्य वीर्यवान् ।।३९
निष्क्रातते हि तस्याशु प्रहस्य स्वनवत्ततः ।
चिच्छेद च शिरोभीममसिना सोऽपतद्भुवि ।।४०
ततः काली चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ।
असुरांस्तान बहून् क्रोधात् प्रसार्य स्वमुखं तदा ।।४१
क्षेत्रपालश्चखादान्यान्बहून्दैत्यान्क्रुधाकुलः ।
केचिन्नेशुर्भैरवास्त्रच्छिन्नाभिन्नास्तथापरे ।।४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरभद्राऽपरान्धीमान्बहून् क्रोधादनाशयत् ।
नन्दीश्वरो जघानान्यान्बहूनमरमर्दकान् ॥४३
एवं बहुगुणा वीरास्तदा संदह्य कोपतः ।
व्यनाशयन्बहून्दैत्यानसुरान् देवमर्दकान् ॥४४
इत्थं बहुतरं तत्र तस्य सैन्यं ननाश तत् ।
विद्रुताश्चापरे वीरा बहवो भयकातराः ॥४५

गदा के कट जाने से दानवेश्वर को बहुत भारी क्रोध आया और शत्रुओं को भय देनेवाला प्रज्वलित शूलप्रहार करनेके लिए उसने उठाया ।३७। सुदर्शन शूल को हाथ में ग्रहण कर आते हुए दानवेन्द्र को देखकर शिव ने वेगपूर्वक अपने त्रिशूल का आघात उसके हृदयमें कर दिया।३८ जिस समय त्रिशूल से उसका हृदय विदीर्ण हुआ तो उसमें से एक अन्य पुरुष निकल पड़ा। पराक्रमी शंखचूड़ ने उससे कहा—तुम यहाँ ही स्थित रहो, किन्तु जब वीर्यशाली शखचूड का निष्क्रमण हो गया तो शब्द करने के साथ ही उसके मस्तक का भयावह खंगके द्वारा छेदनकर दिया गया और फिर वह भूमि पर गिर गया ।३९-४०। उसी समय महाकाली ने अपना मुख खोलकर भीषण-चेष्टाओं से उसको चबा डाला और साथ ही अन्य अनेक असुरों को भी भक्षण कर लिया ।४१। इधर क्षेत्रपाल ने क्रोधपूर्वक बहुतों का भक्षण किया तो बहुत से भैरव के अस्त्र से छिन्न भिन्न होकर नाशवान हो गये ।४२। इसी तरह गणराज वीरभद्र तथा नन्दीश्वर ने क्रोधित होकर अनेक वीर असुरों का नाश कर दिया ।४३। उस समय उस सेना के महान् वीर अत्यन्त क्रोध कर देवों से द्रोह करने वाले असुरों के नाश करने में संलग्न हो गए ।४४। ऐसे सहार से उस दैत्यराज की सेना के बहुत से सैनिक नष्ट भ्रष्ट हो गए और बचे खुचे भयभीत होकर वहाँ से भाग गये ।४५।

शंखचूड़ का वध

स्वबलं निहतं दृष्ट्वा मुख्यं बहुतरं ततः ।
तथा वीरान् प्राणसमान् चुकोपातीव दानवः ॥१
उवाच वचनं शम्भुं तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किमेतैर्निहतैर्मेऽद्य सम्मुखे समरं कुरु ॥२
इत्युक्त्वा दानवेन्द्रोसौ सन्नद्धस्सरे मुने ।
आगच्छन्निश्चय कृत्वाऽभिमुखं शङ्करस्य च ॥३
दिव्यान्यस्त्राणि चिक्षेप महारुद्राय दानवः ।
चकार शरवृष्टिञ्च तोयवृष्टिं यथा घनः ॥४
मायाश्चकार विविधा अदृश्या भयदर्षिताः ।
अप्रतर्क्याः सुरगणैर्निखिलैरपि सत्तमैः ॥५
तां दृष्ट्वा शङ्करस्तत्र चिक्षेपास्त्रं च लीलया ।
माहेश्वर महादिव्यं सर्वमायाविनाशनम् ॥६
तेजसा तस्य तन्माया नष्टाश्चासन् द्रुतं तदा ।
दिव्यान्यस्त्राणि तान्येव निस्तेजांस्यभवन्नपि ॥७

सनत्कुमारजी ने कहा--इस भाँति दानवेन्द्र ने अपनी प्रमुख सेना को नष्ट-भ्रष्ट होते हुए देखकर तथा प्राणों के तुल्य प्रिय वीरों के संहार का ध्यान करके बहुत भारी क्रोध किया ।१। उस समय उसने भगवान शंकर के समक्ष में आकर उनसे कहा--मैं यहाँ बिल्कुल तैयार होकर आया हूँ, आप अच्छी तरह सम्हल जावें । इन विचारे सैनिकों को मार गिराने से क्या लाभ होगा, अब मुझसे युद्ध करे ।२। हे मुनीन्द्र ! इतना कहकर वह दैत्यराज युद्ध करने का पूरा निश्चय करके शंकर के सामने उपस्थित हो गया ।३। दानवेन्द्र ने अपने बहुत से उत्तम अस्त्र शस्त्रों का उस समय महारुद्र पर प्रहार किया । जैसे मेघ जल धारा की वृष्टि किया करता है उसके समान दानवेश्वर ने बाणों की वृष्टि रुद्र-देव पर की ।४। उस समय वह अदृश्य होकर अपनी दानवी माया फैलाते हुए अनेक प्रकार का भय दिखाने लगा जिसे देव-वृन्द में यथार्थ रूप से कोई भी न समझ पाया ।५। प्रभु शङ्कर उसके इस माया-जाल को देखकर लीलापूर्वक अपने अस्त्रों से उस पर प्रहार करने लगे और उसकी माया का नाश करने के लिए महान् दिव्य माहेश्वर अस्त्र का प्रयोग किया।६। माहेश्वरास्त्र के दिव्य तेज प्रभाव से उसकी सारी माया नष्ट हो गई और समस्त अस्त्र तुरन्त तेज हीन हो गये ।७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ युद्धे महेशानस्तद्वधाय महाबलः ।
शूलंजग्राह सहसा दुर्निवार्यं सुतेजसा ॥८
तच्छूलं विजयं नाम शंकरस्य परात्मनः ।
सचकाशे दिशस्सर्वा रोदसी संप्रकाशयन् ॥९
कोटिमध्याह्नमार्तण्डलयाग्निशिखोपमम् ।
दुर्निवार्यं च दुद्धर्षमव्यर्थं वैरिघातिकम् ॥१०
तेजसां चक्रमत्युग्रं सर्वंशस्त्रास्त्रसायकम् ।
सुरासुराणां सर्वेषां दुस्सहं च भयङ्करम् ॥११
संहर्तुं सर्वब्रह्माण्डमवलंव्य च लीलया ।
संस्थितं परमं तत्र एकत्रीभूय विज्वलत् ॥१२
धनुस्सहस्रं दीर्घेण प्रस्थेन शतहस्तकम् ।
जीवब्रह्मस्वरूपं च नित्यंरूपमनिर्मितम् ॥१३
विभ्रमद् व्योम्नि तच्छूलं शंखचूडापरि क्षणात् ।
चकार भस्म तच्छीघ्रं निपत्य शिवशासनात् ॥१४
अथ मूलं महेशस्य द्रुतमावृत्यशत्तरम् ।
ययौ विहायसा विप्रमनोयायि स्वकार्यकृत् ॥१५

उस समय महाबलशाली महेश्वर भगवान् ने दानवेश्वर के वध करने के लिए बहुत से तेजस्वियों के द्वारा भी दुर्निवार्य शूल को ग्रहण किया ।८। वह परमेश्वर शंकर का विजय नाम वाला शूल समस्त दिशाओं में और द्युलोक में अपना अतुल प्रकाश प्रसारित करता हुआ मध्याह्न समय के करोड़ों सूर्य तथा प्रलय कालकी अग्नि शिखाके सदृश निवारण न करनेके योग्य, असह्य एवं अमोघ रूप वाला, शत्रुओं के नाश करने वाला था ।९-१०। वह समस्त शस्त्रास्त्रों का साधक तेज समूह के चक्र के स्वरूप वाला तथा सुरासुर सभी के लिए अति असह्य एवं अत्यन्त भयंकर था ।११। वह तेजयुक्त अस्त्र लीला से ही इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नष्ट कर देने की शक्ति वाला एवं समस्त प्रचण्डता का एक प्रज्वलित स्वरूप था ।१२। वह शूल एक हजार धनुष के बराबर लम्बा और सौ हाथ चौड़ा नित्य रूपवाले जीव ब्रह्मके स्वरूप जैसा था जिसका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण किसी के द्वारा नहीं किया गया है ।१३। ऐसा दिव्य अस्त्र एक क्षण में ही शिव के हाथ से छूटकर आकाश भ्रमण करते हुए शिवाज्ञा को पाकर अविलम्ब ही शंखचूड़ के मस्तक पर गिर गया तुरन्त ही उसने दानवराज शंखचूड़ को भस्मीभूत बना दिया ।१४। हे मुने ! वह दिव्यास्त्र त्रिशूल शीघ्र ही दैत्य को मार आकाश मार्ग से मनोवेग की तरह शिव के समीप में आ गया ।१५।

नेदुर्दुन्दुभयस्स्वर्गे जगुर्गन्धर्वकिन्नराः ।
तुष्टुवुर्मुनयो देवा ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥१६
बभूव पुष्प वृष्टिश्च शिवस्योपरि संततम् ।
प्रशशंस हरिर्ब्रह्मा शक्राद्या मुनयस्तथा ॥१७
शंखचूडो दानवेन्द्रः शिवस्य कृपया तदा ।
शापमुक्तो बभूवाथ पूर्वरूपमवापह ॥१८
अस्थिभिश्शंखचूडस्य शंखजातिर्बभूव ह ।
प्रशस्तं शंखतोयं च सर्वेषां शङ्करं विना ॥१९
विशेषेण हरेर्लक्ष्म्या शंखतोय महाप्रियम् ।
संबंधिनां च तस्यापि न हरस्य महामुने ॥२०
तमित्थं शंकरो हत्वा शिवलोक जगाम सः ।
सुप्रहृष्टो वृषारूढः सोमस्कन्दगणैर्वृतः ॥२१

उस समय प्रसन्नता से स्वर्ग में दुन्दुभिजाँ बजने लगीं, किन्नर और गन्धर्व गायन करने लगे, अप्सरायें आनन्द से नर्तन करने लगीं और समस्त देवगण तथा मुनिवृन्द को अत्यन्त हर्षोल्लास हुआ ।१६। भगवान् शिव पर पुष्प वर्षा हुई और ब्रह्मा, इन्द्रादि देव तथा सभी मुनिगण शङ्करकी प्रशंसा करने लगे ।१७।दानवाराज शंखचूड़ भगवान् शङ्करकी कृपा से शाप विमुक्त होकर अपने पहिले स्वरूप में स्थित हो गया ।१८। उस शंखचूड़ की अस्थिओं से शंख जातियों का उद्‌भव हुआ । यह शंख का जल अन्यत्र सभी जगह तो प्रशस्त माना जाता है किन्तु शंकर पर नहीं चढ़ाया जाता है ।१९। महालक्ष्मी और विष्णु को इस शंख का जल विशेष रूप से प्रिय होता है इनसे सम्बन्धित देवादि को महाप्रिय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है, किन्तु केवल एक शंकर ही ऐसे हैं जिन्हें यह प्रिय नहीं है ।२०। इस तरह शिव उस दैत्यराज का वध कर वृष वाहन पर आरूढ़ हो उमादेवी, कुमार स्कन्द और गणों के सहित परम प्रसन्न होते हुए शिवलोक को चले गये ।२१।

हरिर्जगाम बैंकुण्ठ कृष्णस्स्वस्थो बभूव ह ।
सुरास्स्वविषयं प्रापुः परमानन्दसंयुताः ॥२२
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप सर्वंनिर्विघ्नमापकम् ।
निर्मलं चाभवद्व्योम क्षितिस्सर्वासुमङ्गला ॥२३
इति प्रोक्तं महेशस्य चरितं प्रमुदावहम् ।
सर्वदुःखहरं श्रीदं सर्वंकामप्रपूरकम् ॥२४
धन्यं वशस्यमायुष्यं सर्वंविघ्ननिवारणम् ।
भुक्तिदं मुक्तिदं चैव सर्वकामफलप्रदम् ॥२५
य इदं शृणुयान्नित्यं चरितं शशिमौलिनः ।
श्रावयेद्वा पठेद्वापि पायेद्वा सुधीर्नरः ॥२६
धनं धान्यं सुतं सौख्यं लभेतात्र न संशयः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति शिवभक्ति विशेषतः ॥२७
इदमाख्यानमतुलं सर्वोपद्रवनाशनम् ।
परमज्ञानजननं शिवभक्त विवर्द्धनम् ॥२८
ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
धनाढ्यो वैश्यजशूद्रश्श्रण्वन् सत्तमतामियात् ॥२९

भगवान अपने वैकुण्ठमें चले गये कृष्ण भी स्वस्थ होगये और सभी देवता अपने-अपने स्थानों को चले गये ।२२। इसके संहार होने से जगत् आकाश स्वच्छ हो गया और पृथ्वी मंगलमयी बन गई ।२३। मैंने यह परम पावन भगवान शंकर के चरित्र का वर्णन किया है। यह समस्त दुःखों का हर्ता और परम सुख-सौभाग्य का देने वाला है। इसके सुनने तथा पढ़ने से लक्ष्मी की प्राप्ति और सभी कामनाओं की पूर्ति होती है ।२४। इससे धन और सभी यश का लाभ होता है और समस्त विघ्न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पूर्ण स्वच्छता हो गई और सर्वतोभावी से विघ्नोंका निवारण होगया बाधाओं को हटाने वाला है। भुक्ति और मुक्ति दोनों ही को यह देता है तथा मन की सब इच्छाओं को पूर्ण कर देता है।२५।जो भी कोई व्यक्ति इसको नित्य सुनता है या सुनाता है तथा कोई बुद्धिमान स्वयं पढ़ता-पढ़ाता है वह धन-धान्य, सुख-समृद्धि और सन्तान को अवश्य ही प्राप्त कर लेता है। वह निस्सन्देह समस्त मनोरथ के साथ शिव की भक्ति की भी विशेष रूप से प्राप्ति कर लेता है।२६-२७। यह एक अनुपम आख्यान है। इससे सभी उपद्रवों का नाश होकर परम ज्ञान का तथा शिव भक्ति की अति वृद्धि का लाभ होता है।२८। विप्र ब्रह्म तेज वाला क्षत्रिय विजय लाभ से युक्त, वैश्य सम्पत्तिशाली और शूद्र इसके सुनने मात्र से श्रेष्ठ हो जाता है ।२९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतरुद्र संहिता

शिवजी की आठ मूर्तियों का वर्णन

श्रृणु तात महेशस्यावतारान्परमान्प्रभो ।
सर्वकार्यं करांल्लोके सर्वस्य सुखदान्मुने ॥१
तस्य शम्भो: परेशस्य मूर्त्यष्ट कमयं जगत् ।
तस्मिन्व्याप्य स्थितं विश्वं सूत्रे मणिगणाइव ॥२
शर्वो भवस्तथा रुद्र उग्रो भीम: पशो: पति: ।
ईशानश्च महादेवो मूर्तयश्चष्टविश्रुता: ॥३
भूम्यंभोग्निमरुद्व्योमक्षेत्रज्ञार्कनिशाकरा: ।
अधिष्ठिताश्च शर्वाद्यै रष्टरूपै: शिवस्य हि ॥४
धत्ते चराचरं विश्वं रूपं शिववंभरात्मकम् ।
शंकरस्य महेशस्य शास्त्रस्यैवेति निश्चय: ॥५
सञ्जीवनं समस्तस्य जगत: सलिलात्मकम् ।
भव इत्युच्यते रूपं भवस्य परमात्मन: ॥६
वहिरंतर्जगद्विश्वं विभर्त्ति स्पन्दतेस्वयम् ।
उग्र इत्युच्यते सभद्री रूपमुग्रस्य सत्प्रभो ॥७

नन्दीश्वर ने कहा--हे मुने ! हे तात ! हे प्रभो अब शिवजी के जो बड़े अवतार हुए हैं उनकी कथा सुनिए । ये इस लोक में समस्त कार्यों के पूर्ण करने वाले तथा प्राणिमात्र को सुख प्रदान करने वाले हैं ।१। यह समस्त संसार भगवान् शिवजी की आठ मूर्तियों से युक्त है । जिस प्रकार धागे में पिरोई हुई मणियों का एक समुदाय होता है उसी भाँति यह समस्त विश्व उसी में व्याप्त होकर स्थित हो रहा है । भगवान शिव की शर्व भर्व, रुद्र भीम पशुपति, ईशान और महादेव ये आठ मूर्तियाँ सर्वत्र प्रसिद्ध हैं ।२-३। शिव के उक्त शर्व प्रभृति, आठ रूपों से अधिष्ठित होने वाले भूमि जल अग्नि पवन, अन्तरिक्ष क्षेत्रज्ञ, सूर्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और चन्द्रमा है ।४। शास्त्र का यह निश्चय है कि शिव महेश का विश्वम्भर स्वरूप वाला रूप इस सम्पूर्ण चर-अचर संसार को धारण किया करता है ।५। इस समस्त संसार को जो वरदान देकर जीवित रखने वाला शिव को जल के स्वरूप वाला बताया गया है ।६। हे प्रभो ! सत्पुरुष ऐसा कहा करते हैं कि जो स्वयं बाहर भीतर सर्वत्र स्थित होकर इस संसार का पालन किया करता है तथा इसे चलाता रहता है वह शिव का उग्र नाम वाला रूप होता है ।७।

सर्वावकाशदं सर्वव्यापकं गगनात्मकम् ।
रूपं भीमास्य भीमाख्यं भूपवृन्दस्य भेदकम् ॥८
सर्वात्मनामधिष्ठानं सर्वक्षेत्रनिवासकम् ।
रूप पशुपतेर्ज्ञेयं पशुपाशनिकृन्तनम् ॥९
सन्दीपयज्जगत्सर्वं दिवाकरसमाह्वम् ।
ईशानाख्यं महेशस्य रूप दिविविसर्पति ॥१०
आप्याययति यो विश्वममृतांशु निशाकरः ।
महादेवस्य तद्रूपं महादेवस्य चाह्वयम् ॥११
आत्मा तस्याष्टमं रूपं शिवस्य परमात्मनः ।
व्यापिकेतरमूर्तीनां विश्वं तस्माच्छिवात्मकम् ॥१२
शाखा पुष्यन्ति वृक्षस्य वृक्षमूलस्य सेचनात् ।
तद्वदस्य वपुर्विश्वं पुष्यते च शिवार्चनात् ॥१३
यथेहापुत्रपौत्रादेः प्रीत्या प्रीतो भवेत्पिता ।
तथाविश्वस्य सम्प्रीत्या प्रीतो भवति शङ्करः ॥१४

समुदाय का भेदन करने वाला सर्वव्यापक और सबको अवकाश प्रदान करने वाला अवकाशात्मक भीम नाम वाला शिव का ही रूप होता है।८। पशुरूप जीवोंके पाश बन्धन का छेदन करनेवाला जो समस्त आत्माओं का अधिष्ठाता देव है तथा सम्पूर्ण क्षेत्रों की निवास भूमि है वह पशुपति नाम वाला शिव का स्वरूप है ।९। सूर्य के स्वरूप में रह कर जो सम्पूर्ण संसार को प्रकाश प्रदान करताहै वह ईशान नाम वाला शिव का स्वरूप आकाश में फैला है ।१०। जो अमृतमयी किरणों के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
द्वार समस्त जगत को तृप्त एवं शीतल किया करता है अर्थात् चन्द्र स्वरूप में स्थित हैं वह शिव का महादेव नाम वाला रूप होता है ।११। आठवाँ परमात्मा शिव का आत्मा वाला रूप होता है, जिसके मूर्त-अमूर्त सब में व्याप्त होने के कारण यह सम्पूर्ण संसार शिवरूपमय है ।१२। वृक्षकी जड़के सेवन सेचन से उसकी समस्त शाखा प्रशाखाओं की पुष्टि की भाँति शिव के शरीर स्वरूप वह सारा संसार है और उसका मूलस्वरूप साक्षात् शिव है। इसके अर्चनसे सम्पूर्ण विश्व पुष्ट हो जाता है ।१३। संसार में पुत्र-पौत्रादि के प्रसन्न रखने से पिता को परम प्रसन्नता होने के तुल्य ही समस्त संसार के साथ प्रीति भाव रखने से जगत् के पिता शिव स्वयं प्रसन्न हो जाया करते हैं ।१४।

क्रियते यस्य कस्यापि देहिनो यदि निग्रहः ।
अष्टमूर्तेरनिष्ट तत्कृतमेव न संशयः ॥१५
अष्टमूर्त्यात्मना विश्वमधिष्ठायास्थितं शिवम् ।
भजस्व सर्वभावेन रुद्र परमकारणम् ॥१६
इति प्रोक्ताः स्वरूपास्ते विधिपुत्राष्टविश्रुताः ।
सर्वोपकारनिरताः सेव्याः श्रेयोर्थिभिर्नरैः ॥१७

देहधारी किसी प्राणी के बन्धन से शिव की अष्टमूर्ति स्वरूप अपने ही को बन्धन समझकर अपना अनिष्ट मान लेते हैं, इनमें कुछ भी संदेह नहीं है ।१५। शिव अपनी अष्टमूर्ति स्वरूप आत्मा में इस सारे विश्व में अधिष्ठत होकर व्याप्त है अतएव परम कारण रूप रुद्रात्मक शिव का सर्वभाव से भजनोपासन करना चाहिए ।१६। हे सनत्कुमारजी ! मैंने परम प्रसिद्ध शिवके आठ स्वरूप, जो सबके उपकार करने के कार्य में सर्वदा तत्पर रहा करते हैं उनका वर्णन् कर दिया। अपने कल्याण की कामना वाले पुरुष इनकी सबकी सेवा करें ।१७।

अर्द्धनारी शिव का प्रादुर्भाव

श्रृणु तातः महा प्राज्ञ विधिकाम प्रपूरकम् ।
अर्द्धनारीनराख्ययं हि शिवरूपमनुत्तमम् ॥१
यदा सृष्टाः प्रजाः सर्वाः न व्यवर्द्धन्त वेधसा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदा चिंताकुलोऽभूत्स तेन दुःखेन दुःखितः ॥२
नभोवाणी तदाभूद्वै सृष्टिं मिथुनजां कुरु।
तच्छ्रुत्वा मैथुनीं सृष्टिं ब्रह्मा कर्तुं ममन्यत ॥३
नारीणां कुलमीशानान्निर्गतं न पुरा यतः।
ततो मैथुनजां सृष्टिं कर्तुं शेके न पद्मभूः ॥४
प्रभावेण विना शंभोर्न जायेरन्निमा प्रजाः।
एवं संचिन्तयन्ब्रह्मा तपः कर्त्तुं प्रचक्रमे ॥५
शिवाय परया शक्त्या संयुतं परमेश्वरम्।
संचित्य हृदये प्रीत्या तेपे स परमं तपः ॥६
तीव्रेण तपसा तस्य संयुक्तस्य स्वयंभुवः।
अचिरेणैव कालेन तुतोष स शिवौ द्रुतम् ॥७

नन्दीश्वर ने कहा–हे महाप्राज्ञ ! हे तात ! अब मैं विधाता के मनोरथों के सफल करने वाले और अर्द्ध नारीश्वर नाम वाले भगवान शिव के परम श्रेष्ठ स्वरूप का वर्णन करता हुँ उसे आप सुनिए।१। जिस समय ब्रह्माणी ने अपने द्वारा सृजन की हुई प्रजा की वृद्धि नहीं देखी तो वे दुःख से अत्यन्त व्याकुल होकर परम चिन्तित हुए।२। उस समय एक आकाशवाणी हुई कि 'अब मैथुनी सृष्टि की रचना करो" यह सुनकर ब्रह्माजी ने अपनी मैथुनी सृष्टि के निर्माण करने का मन में निश्चय कर लिया।३। इसके पहिले शिव से स्त्रियों के कुल का प्राकट्य नहीं हुआ था, इसी कारण विधाता मैथुनी सृष्टि करने के कार्य में समर्थ न हो सके।४। शिवजी के प्रभाव के विना यह प्रजा किसी भी प्रकार से उत्पन्न नहीं हो सकेगी ऐसा विचार कर ब्रह्मा शिव के प्रसन्न करने के लिए तपश्चर्या करने को तत्पर हुए।५। पार्वती स्वरूपिणी परम प्रधान शक्ति से समन्वित परमेश्वर का हृदय में ध्यान करते हुए प्रीतिपूर्वक तप करने में ब्रह्माजी लीन हो गये।६। कठोरतम तपस्या में तत्पर ब्रह्माजी से शिव थोड़े ही समय में शीघ्र सन्तुष्ट हो गये।७।

ततः पूर्णचिदीशस्य मूर्तिमाविश्य कामदाम्।
अर्द्धनारीं नरो भूत्वा ततो ब्रह्मान्तिकं हरः ॥८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं दृष्ट्वा शङ्करं देवं शक्त्या परमयान्वितम् ।
प्रणम्य दण्डवद्ब्रह्मा स तुष्टाव कृताञ्जलिः ॥९
अथ देवो महादेवो वाचा मेघगंभीरया ।
संभवाय सुसंप्रीतो विश्वकर्त्ता महेश्वरः ॥१०
वत्स वत्स महाभाग मम पुत्रपितामह ।
ज्ञातवानस्मि सर्वं तत्त्वतस्ते मनोरथम् ॥११
प्रजानामेव वृद्ध्यर्थं तपस्तप्तं त्वयाधुना ।
तपसा तेन तुष्टोऽस्मि ददामि च तवेप्सितम् ॥१२
इत्युक्त्वा परमोदारं स्वभावमधुरं वचः ।
पृथक्चकार वपुषो भागाद्देवीं शिवां शिवः ॥१३
तां दृष्ट्वा परमां शक्तिं पृथग्भूतां शिवागताम् ।
प्रणिपत्य विनीतात्मा प्रार्थयामास तां विधि ॥१४

इसके अनन्तर पूर्ण चिद्रूप ईश्वर ने अपनी काम प्रदायिनी मूर्ति में प्रवेश करते हुए आधी नारी और आधा पुरुषका स्वरूप होकर ब्रह्माजी के समीप में पदार्पण किया ।८। तब ब्रह्माजी ने भगवान शिवको अपनी पर शक्ति से संयुक्त दण्डवत् प्रणाम करते हुए करवद्ध होकर उनकी स्तुति करने का आरम्भ किया ।९। उस समय समस्त देवोंमें परम श्रेष्ठ इस विश्व के रचने वाले महेश्वर शिव अत्यन्त प्रसन्न होकर मेध के समान गम्भीर वाणी से कहने लगे ।१०। शिव ने गंगाजी से कहा–हे वत्स ! हे मेरे पुत्र ब्रह्मा ! हे महाभाग ! मैंने तुम्हारे मनोरथ को तत्व रूप से समझ लिया है ।११। तुमने इस समय अपनी प्रजा की वृद्धि की इच्छा से ही यह उग्र तप किया है मैं तुम्हारी तपस्या से अति सन्तुष्ट एवं प्रसन्न होकर तुमको तुम्हारे अभीष्टित वरदान देता हूँ ।१२। शिवजी ने इस तरह परम उदार भाव से मधुर वाणी में ब्रह्माजी से ये वचन कहकर अपने शरीर के अर्द्धभाग से शिवा शक्तिमयी देवी को प्रकट कर दिया, तब उनका शिव से पृथक स्वरूप दिखाई देनेलगा।३१। उस शिव भगवान की परम शक्ति को महेश से अलग स्थित देखकर विनीत ब्रह्माजी प्रणामपूर्वक प्रार्थना करने लगे ।१४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवदेवेन सृष्टोहमादौ त्वत्पतिना शिवे ।
प्रजाः सर्वा नियुक्ताश्च शंभुना परमात्मना ॥१५
मनसा निर्मिताः सर्वे शिवदेवादयो मया ।
न वृद्धिमुपगच्छन्ति सृज्यमानाः पुनः पुनः ॥१६
मिथुनप्रभवामेव कृत्वा सृष्टिमतः परम् ।
सम्बर्द्धयितुमिच्छामि सर्वा एव मम प्रजाः ॥१७
न निर्गतं पुरात्वत्तो नारीणां कुलव्ययम् ।
तेन नारी कुलश्रेष्ठं मम शक्तिर्न विद्यते ॥१८
सर्वासामेव शक्तीनां त्वत्तः खलु समुद्भवः ।
तस्मात्त्वां परमां शक्तिं प्रार्थयाम्यखिलश्वरीम् ॥१९
शिवे नारीकुलं स्रष्टुं शक्तिं देहि नमोऽस्तु ते ।
चराचरजदद्विद्धिहेतोर्मातः शिवप्रिये ॥२०

विधाता ने कहा--हे अम्बिके ! देवाधिदेव आपके पतिदेव महादेव ने मेरा सृजन किया और इस सम्पूर्ण प्रजा की भी सृष्टि उन्हीं ने की ।१५। हे शिवे ! मैंने इन समस्त देवों की रचना मन से की है इनके पुनः पुनः निर्माण करने पर भी कुछ वृद्धि नहीं होती दिखाई दे रही है ।१६। अब इनके आगे मैथुन द्वारा उत्पन्न होकर जन्म ग्रहण करने वाली प्रजा की रचना करने की और प्रजा बढ़ाने की मुझे इच्छा हुईहै। यह सब मेरी ही प्रजा है ।१७। अब तक आप से यह श्रेष्ठ नारी कुल, जिसका विनाश नहीं है उत्पन्न नहीं हुआ था। अतः यह नारी कुल परम श्रेष्ठ है इसके सृजन की शक्ति मेरे अन्दर नहीं है ।१८। ब्रह्माजी ने कहा--हे जगज्जननी ! समस्त शक्तियों का उद्भव आपकी शक्ति के द्वारा ही होता है । अतएव सबकी ईश्वरी आपकी सेवा में मेरी निवेदन है कि परमशक्ति स्वरूपिणी आप मुझे इस नारीकुल के सृजन करने की महाशक्ति प्रदान करने की कृपा कीजिए। मेरा आपको प्रणाम है । सम्पूर्ण चराचर-जगत् के कारण एकमात्र भगवान शिव ही है ।१९-२०।

अन्यं त्वत्तः प्रार्थयामिवरं च वरदेश्वरि ।
देहिमे तं कृपां कृत्वाजिगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चराचर विवृद्ध्यर्थमीशेनैकेन सर्वगे ।
दक्षस्य मम पुत्रस्य पुत्री भव भवाम्बिके ।।२२
एव संयाचिता देवी ब्रह्माणा परमेश्वरी ।
तथास्त्विति वच प्रोच्य: तच्छक्ति विधये ददौ ।।२३
तस्माद्विसा शिवा देवी शिवशक्तिर्जगन्मयी ।
शक्तिमेकां भ्रुवोर्मध्यात्ससर्जात्मसमप्रभाम् ।।२४
तामाहं प्रहसन्प्रेक्ष्य शक्तिं देववरो हर: ।
कृपासिन्धुर्महेशानो लीलाकारी भवाम्बिकाम् ।२५
तपसाराधिता देवि ब्रह्मणा परमेष्ठिना ।
प्रसन्ना भव सुप्रीत्या कुरु तस्यालिलेप्सितम् ।।२६
तामाज्ञां परमेशस्य शिरसा प्रतिगृह्य सा ।
ब्रह्मणो वचनाद्देवी दक्षस्य दुहिताभवत् ।।२७
दत्वैवमतुलां शक्तिं ब्रह्मणे सा शिवा मुने ।
विवेश देहं शंभोर्हि शंभुश्चान्तर्दधे प्रभु: ।।२८

ब्रह्माजी ने कहा--हे वरदेश्वरी ! मैं आपके एक अन्य वरदान के प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ उसे भी आप मुझ पर कृपा करती हुई देने की उदारता करें । हे जगत् की माँ ! मेरा आपको वार-बार प्रणाम है ।२१। एक उत्तम शक्ति के द्वारा ही उस समस्त चराचर जगत् की वढ़ोत्तरी के लिए आप मेरे पुत्र दक्ष प्रजापति की पुत्री के रूप में प्रकट हो जावें ।२२। इस प्रकार ब्रह्मा ने जब याचना की तो परमेश्वरी भगवती ने कहा--ऐसा ही हो जायगा--यह कहते हुए उस परम शक्ति को विधाता को दे दिया ।२३। जगदीश्वर जगन्मयी भवानी ने उसी शक्ति के द्वारा अपने भृकुटि के मध्य भाग से अपने ही सदृश कमनीय कान्ति वाली एक अन्य शक्ति का निर्माण कर दिया ।२४। देवों में परम कृपा के सागर लीलाधारी भगवान शिव ने उस शक्ति को देखकर मुस्कराते हुए जगत् की माता से कहा ।२५। शिव ने कहा--हे देवि ! अब आप पितामह परमेष्ठी की घोर तपस्या से अत्यन्त प्रसन्न हो गई । अत: इनकी आराधना से सन्तुष्ट होती हुई आप इनके सभी मनोरथोंको

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण कर दो।२६। उसी समय शंकर की आज्ञा को मानकर ब्रह्मा के द्वारा याचना की गई दक्ष की पुत्री होना अङ्गीकार कर लिया।२७। हे मुनीश्वर ! उस जगदीश्वर शिवा ने उसी समय ब्रह्माजी को अपनी असीम एवं अनुपम शक्ति प्रदान कर दी और पुनः शिव के अङ्ग में प्रविष्ट हो गई और महाशक्ति के सिन्धु भगवान् शिव भी तब अन्तर्धान हो गये।२८।

तदाप्रभृति लोकेऽस्मिन्स्त्रिया भागः प्रकल्पितः ।
आनन्दं प्राप स विधिः सृष्टिर्जाता च मैथुनी ॥२९
एतत्ते कथितं तात शिवरूपं महोत्तमम् ।
अर्द्धनारीनरार्द्धं हि महामङ्गलदं सताम् ॥३०
एतदाख्यानमनघं यः पठेच्छृणुयादपि ।
स भुक्त्वा सकलान्भोगान्प्रयाति परमां गतिम् ॥३१

उसी समय में जगत् में स्त्री का भाग कर देना कल्पित हुआ। ब्रह्माजी को महान् आनन्द हुआ और फिर इस संसार में मैथुन द्वारा होने वाली सृष्टि का आरम्भ हो गया।२९। हे तात ! शिव का यह अत्यन्त श्रेष्ठ स्वरूप तुमको बतला दिया है। यह अर्द्ध नारी और नरार्द्ध स्वरूप सज्जन पुरुषों को परम मंगल का प्रदाता है।३०। जो इस कथा का पाठ श्रवण करता है वह सब भोग भोगकर मोक्ष पाता है।३१।

श्वेतमुनि और ऋषभदेव के रूप में अवतार

सनत्कुमार सर्वज्ञ चरितं शांकरं मुदा ।
रुद्रेण कथितं प्रीत्या ब्रह्मणे सुखदं सदा ॥१
सप्तमे चैव वाराहे कल्पे मन्वन्तराभिधे ।
कल्पेश्वरोऽथ भगवान्सर्वलोकप्रकाशनः ॥२
मनोर्वैवस्वतस्यैव ते प्रपुत्रो भविष्यति ।
तदा चतुर्युगाश्चैव तस्मिन्मन्वन्तरे विधे ॥३
अनुग्रहार्थं लोकानां ब्राह्मणानां हिताय च ।
उत्पश्यामि बिधे ब्रह्मन्द्वापराख्ययुगान्तिके ॥४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगप्रवृत्या च तदा तस्मिश्च प्रथमे युगे ।
द्वापरे प्रथमे ब्रह्मन्यदा व्यासः स्वयंप्रभुः ।।५
तदाहं ब्राह्मणार्थाय कलौ तस्मिन्युगान्तिके ।
भविष्यामि शिवायुक्त.श्वेतो नाम महामुनिः ।।६
हिमवच्छिखरे रम्ये छागले पर्वतोत्तमे ।
तदा शिष्याः शिखायुक्ता भविष्यन्ति विधे मम ।।७

नन्दीश्वर ने कहा--हे सबके ज्ञाता सनत्कुमार ! रुद्र द्वारा कथित यह भगवान् शंकर का चरित्र ब्रह्मा को सर्वथा सुख प्रदान करने वाला होता है ।१। शिव ने कहा--सप्तम मन्वन्तर के वाराह नाम कल्प में समस्त लोकों में प्रकाश करने वाले कल्पेश्वर भगवान अवतीर्ण होंगे ।२। वे वैवस्वत मनु तेरे, प्रपौत्र रूप में होंगे । हे ब्रह्मा ! उस समय उस मन्वन्तर में चार युग होंगे । हे ब्रह्मन् ! हे विधे ! ब्राह्मणों का हित सम्पादन करने के लिए और समस्त लोगों पर कृपा करनेके वास्ते द्वापर युग के अन्त में मैं अवतीर्ण होऊंगा ।३-४। हे विधाता ! जब युगों की प्रवृत्ति होने का कार्य आरम्भ हो जायगा तो जिस समय प्रथम बार द्वापर आयेगा, उस वक्त व्यास उसके प्रभु होंगे ।५। उस समय विप्रवृन्द की भलाई करने के लिए जब कलियुग का अन्त होगा तो मैं शिव के साथ नामधारी मुनिश्रेष्ठ होकर जन्म लूंगा ।६। उस समय ब्रह्मा स्वयं हिमाचल के रमणीय चोटी पर पर्वतोत्तम छागल में मेरे शिखा से युक्त शिष्य बनेंगे ।७।

श्वेतः श्वेतशिखश्चैव श्वेताश्वः श्वेतलोहितः ।
चत्वारो ध्यानयोगात्ते गमिष्यन्ति पुरं मम ।।८
ततो भक्ता भविष्यन्ति ज्ञात्वा मां तत्वतोऽव्ययम् ।
जन्ममृत्युजराहीनाः परब्रह्मसमाधयः ।।९
द्रष्टुं शक्यो नरैर्नाहमृते ध्यानात्पितामह ।
दानधर्मादिभिर्वत्स साधनैः कर्महेतुभिः ।।१०
द्वितीये द्वापरे व्यासः सत्यो नाम प्रजापतिः ।
यदा यदा भविष्यामि सुतारो नामतः कलौ ।।११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्रापि मे भविष्यन्ति शिष्या वेदविदो द्विजा ।
दुन्दुभिः शतरूपश्च हृषीकः केतुमांस्तथा ॥१२
चत्वारो ध्यानयोगात्ते गमिष्यन्तो पुरं मम ।
ततो मुक्ता भविष्यन्ति ज्ञात्वा मां तत्वतोऽव्ययम् ॥१३
तृतीये द्वापरे चैव यदा व्यासस्तु भार्गवः ।
तदाप्यहं भविष्यामि दमनस्तु पुरान्तिके ॥१४

तब श्वेत, श्वेताश्व, श्वेत लौहित और श्वेतशिख ये चारों ध्यान योग से मेरे पुत्र होंगे ।८। उस समय तत्व दृष्टि से मेरे अव्यय स्वरूपका ज्ञान प्राप्त कर मेरे अन्य अनेक भक्त बन जायेंगे और परब्रह्म के ध्यान में समाधि लगाकर आवागमन तथा वार्धक्य क्लेशादि रहित होकर सुखी होंगे ।९। हे पितामह ! मैं ध्यान योग के विना मनुष्यों को कभी भी दिखाई नहीं दे सकता हूँ । केवल दान-धर्म आदि सत्कर्म युक्त साधनों द्वारा मुझे प्राणी देखने में समर्थ हो सकते हैं ।१०। द्वितीय द्वापर युग में सत्य नाम वाले प्रजापति व्याप्त होंगे । उस समय कलियुग में 'सुतार' इस नाम से प्रसिद्ध होऊंगा ।११। उस वक्त भी दुन्दुभि, शतरूप हृषीक और केतु इन नामों वाले वेद के ज्ञाता ब्राह्मण मेरे शिष्य बनेंगे ।१२। ये चारो शिष्य मेरे अव्यय अविनाशी स्वरूप को तात्विक रूप से जान-कर मेरे लोक में पहुँच जायेंगे और मुक्त हो जायेंगे ।१३। तीसरे द्वापर में भार्गव मुनि व्यास बनेंगे उस समय मैं पुर के निकट ही दमन--इस नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करूँगा ।१४।

तत्रापि च भविष्यन्ति चत्वारो मम पुत्रकाः ।
विशोकश्च विशेषश्च विपापः पापनाशनः ॥१५
शिष्यैः साहाय्यं व्यासस्य करिष्ये चतुरानन ।
निवृत्तिमार्गं सुदृढं वर्त्तयिष्ये कलाविह ॥१६
चतुर्थे द्वापरे चैव यदा व्यासोऽङ्गिराः स्मृतः ।
तदाप्यहं भविष्यामि सुहोत्रो नाम नामतः ॥१७
तत्रापि मम ते पुत्राश्चत्वारो योगसाधकाः ।
भविष्यन्ति महात्मानस्तन्नामानि ब्रुवे विधे ॥१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमुखो दुर्मुखश्चैव दुदर्भो दुरतिक्रमः ।
शिष्यः साहाय्यं व्यासस्य करिष्येऽहं तदा विधे ॥१६
पञ्चमे द्वापरे चैव व्यासस्तु सविता स्मृतः ।
तदा योगी भविष्यामि कंको नाम महातपाः ॥२०

उस वक्त वहाँ मेरे विशोक विशेष विपाप और पापनाशक इन नामों वाले चार पुत्र उत्पन्न होंगे ।१५।-हे चतुरानन ! तब मैं व्यासजी के शिष्यों की पूर्ण सहायता करूँगा और कलियुग में भी मोक्ष प्राप्ति के सन्मार्ग को बताऊँगा ।१६। चौथे द्वापर युग में अंगिरा ऋषि व्यासजी के स्वरूप में आकर अवतीर्ण होंगे। उस वक्त मैं सुहोत्र नामधारी होकर प्रकट होऊंगा ।१७। हे विधे! उस समय भी मेरे निम्न नामों वाले चार पुत्र योग के साधन करने वाले परम महान् आत्मा वाले जन्म लेंगे और उनके नाम ये होंगे ।१८। सुमुख, दुर्मुख दुरतिक्रम और दुदर्भ । हे ब्रह्मा ! उस वक्त भी मैं हर तरह से व्यास के होने वाले शिष्य समुदाय का सहायक रहूँगा ।१९। पाँचवें द्वापर में सविता देव व्यास बनेंगे तब भी कंक नाम धारण कर अति महान् योगी तथा तपस्वी के स्वरूप में प्रकट होऊंगा ।२०।

तत्रापि मम ते पुत्राश्चत्वारो योगसाधकाः ।
भविष्यन्ति महात्मानस्तन्नामानि श्रृणुष्व मे ॥२१
सनकः सनातनश्चैव प्रभुर्यश्च सनन्दनः ।
विभुः सनत्कुमारश्च निर्मलो निरहंकृतिः ॥२२
तत्रापि कंकनामाहं साहाय्यं सवितुर्विधे ।
व्यासस्य हि करिष्यामि निवृत्तिपथवर्द्धकः ॥२३
परिवर्ते पुनः षष्ठे द्वापरे लोककारकः ।
कर्ता वेदविभागस्य मृत्युर्व्यासो भविष्यति ॥२४
तदाऽप्यहं भविष्यामि लोकाक्षिर्नामनामतः ।
व्यासस्य साहाय्यार्थं निवृत्तिपथवर्द्धनः ॥२५
तत्रापि शिष्याश्चत्वारो भविष्यन्ति दृढव्रताः ।
सुधामा विरजाश्चैव संजयो विजयस्तथा ॥२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तमे परिवर्त्ते तु यदा व्यासः शतक्रतुः ।
तदाप्यहं भविष्यामि जैगीषव्यो विभुर्विधे ॥२७
योगं संद्रढयिष्यामि महायोगविचक्षणः ।
काश्यां गुहान्तरे संस्थो दिव्यदेशे कुशास्तरिः ॥२८

उस समय भी योग की साधना करने वाले चार ही पुत्र महान् आत्मा वाले उत्पन्न होंगे जिनके नाम अधोलिखित हैं।२१। सनक और सनातन के अतिरिक्त परम सामर्थ्य वाले सनन्दन तथा अहकारसे रहित विभु और निर्मल हृदय वाले चौथे सनत्कुमार नामक होंगे।२२। हे विधाता उस युग में मेरा नाम कंक होगा और मैं तब निवृत्ति के उत्तम मार्ग की बृद्धि करते हुए व्यासजी का सहायक बनूंगा।२३। इसके पश्चात् जिस समय छठवाँ द्वापर युगका समय उपस्थित होगा तब मृत्यु नामक व्यास के रूप में जन्म ग्रहण करेंगे जिन्होंने लौकिकी रचना तथा वेदों का यथाक्रम विभाजन किया है।२४। उस वक्त भी मेरा आविर्भाव लोकाक्षि के नाम से होगा और व्यास की सहायता करते हुए निवृत्ति के मार्ग को ही बढ़ाने वाला रहूँगा।२५। उस वक्त भी सुधामा, संजय विरजा और विजय नाम वाले चार शिष्य बहुत ही दृढ़ व्रत के धारण करने वाले होंगे।२६। हे विधिदेव ! जब सप्तम द्वापर युग आयेगा तब इन्द्र व्यास होंगे और में सर्वज्ञाता जैगीषव्य होकर प्रकट होउँगा।२७। उस समय मैं महान् योग में अत्यन्त निपुण होकर योग को सुदृढ़ बना-ऊंगा और काशी में एक गुफा के अन्दर परम उत्तम स्थान की रचना कर कुशासन पर संस्थित रहूँगा।२८।

साहाय्यं च करिष्यामि व्यासस्य हि शतक्रतोः ।
उद्धरिष्यामि भक्तांश्च संसारभयतो विधे ॥२९
तत्रापि मम चत्वारो भविष्यन्ति सुता युगे ।
सारस्वतश्च योगीशो मेघवाहः सुवाहनः ॥३०
अष्टमे परिवर्त्ते हि वशिष्ठो मुनिसत्तमः ।
कर्त्ता वेदविभागस्य वेदव्यासो भविष्यति ॥३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्राप्यहं भविष्यामि नामतो दधिवाहनः ।
व्यासस्य हि करिष्यामि साहाय्यं योगवित्तमः ॥३२
कपिलश्चासुरिः पञ्चशिखः शाल्वलपूर्वकः ।
चत्वारो योगिनः पुत्रा भविष्यन्ति समा मम ॥३३
नवमे परिवर्त्ते तु तस्मिन्नेव युगे विधे ।
भविष्यति मुनिश्रेष्ठो व्यासः सारस्वताह्वयः ॥३४
व्यासस्य ध्यायतस्तस्य निवृत्तिपथवृद्धये ।
तदाप्यहं भविष्यामि ऋषभो नामतः स्मृतः ॥३५

व्यास स्वरूप में जो उस वक्त शतक्रतु होंगे उनकी सहायता करते हुए भक्तों का उद्धार करूँगा।२९। उस समय भी मेरे सारस्वत-योगीश मेघवाहन और सुवाहन नाम वाले चार पुत्र उत्पन्न होंगे।३०। जब उसी क्रम से अष्ट द्वापर आयेगा तब वसिष्ठ मुनि व्यास होंगे और ये ही मुनिश्रेष्ठ उस वक्त वेदों के विभाग करने वाले बनेंगे।३१। हे ज्ञान रखने वालों में परम श्रेष्ठ ! उस समय मेरा नाम दधिवाहन होगा और व्यास का सहायक रहूँगा।३२। उस वक्त भी परम योगी कपिल-आसुरी पञ्च शिख और शाल्वल नाम वाले चार पुत्र होंगे जो सभी समान रूप से योग्यता रखने वाले होंगे।३३। नवम द्वापर युग में मुनियों में अति श्रेष्ठ सारस्वत नामधारी व्यास होंगे।३४। उस वक्त में होने वाले व्यास का ध्यान रखकर निवृत्ति मार्ग की वृद्धि के लिए ही मैं ऋषभ नाम से आविर्भूत होऊँगा।३५।

पराशरश्च गर्गश्च भार्गवो गिरिशस्तथा ।
चत्वारस्तत्र शिष्या मे भविष्यन्ति सुयोगिनः ॥३६
तैः साकं द्रढयिष्यामि योगमार्गं प्रजापते ।
करिष्यामि साहाय्यं वै वेदव्यासस्य सन्मुने ॥३७
तेन रूपेण भक्तानां बहूनां दुःखिनां विधे ।
उद्धारं भवतोऽहं वै करिष्यामि दयाकरः ॥३८
सोऽवतारो विधे मे हि ऋषभाख्यस्सुयोगकृत् ।
सारस्वतव्यासमनः कर्त्ता नानोतिकारकः ॥३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवतारेण मे येन भद्रायुर्नृपबालकः ।
जीवितो हि मृतः क्ष्वेडदोषतो जनकोज्झितः ॥४०
प्राप्तेऽथ षोडशे वर्षे तस्य राजशिशोः पुनः ।
ययौ तद्वेश्म सहसा ऋषभः स मदात्मकः ॥४१
पूजितस्तेन स मुनिः सद्रूपश्च कृपानिधिः ।
उपादिदेश तद्धर्मान्राजयोगान्प्रजापते ॥४२

उस समय मेरे पराशर-गर्ग-भार्गव और गिरीश नाम वाले चार परम श्रेष्ठ योगी शिष्य रूप में प्रकट होंगे ।३६। हे प्रजापते ! इनको साथ में लेकर मैं संसार में योगके मार्ग को अति सुदृढ़ बनाते हुए व्यास का सहायक बनूंगा ।३७। मैं उस वक्त अत्यन्त दुःखित भक्तजनों का और तुम्हारा भी उद्धार करूँगा। मेरा यह अवतार ऋषभके नाम वाला सुयोग करने के लिए सारस्वत व्यास मुनि का सहायक और बहुविध कल्याणका करनेवाला होगा।३८-३९।उससमय मैंने अवतार लेकर भद्रायु नाम वाले एक नृप के बालक को जो छींक के दोष के कारण मृत्युगतहो गया था और पिता ने त्याग दिया था उसे पुनः जीवित कर दिया था ।४०। जब वह बालक सोलह वर्ष का हो गया उस समय उस राजा के घर में मेरी आत्मा ऋषभ के स्वरूप में हो गई थी ।४१। हे प्रजापते ! उस वक्त परम शोभित स्वरूप वाले कृपा के निधि उन मुनि का बहुत बड़ा आदर-सत्कार किया गया था । मुनीश्वर ने राजा को राजयोग से युक्त धर्म का उपदेश दिया था ।४२।

ततः स कवचं दिव्यं शंखं खड्गं च भास्वरम् ।
ददौ तस्मै प्रसन्नात्मा सर्वशत्रुविनाशनम् ॥४३
ददङ्गभस्मनावृत्य कृपया दीनवत्सलः ।
स द्वादशसहस्रस्य गजानां च बलं ददौ ॥४४
इतिभद्रायुषं सम्यगनुश्वास्य स मातृकम् ।
ययौ स्वैरगतस्तस्यां पूजितस्त्वृषभः प्रभु ॥४५
भद्रायुरपि राजर्षिजित्वा रिपुगणान्विधे ।
राज्यं चकार धर्मेण विबाह्य कीर्तिमालिनीम् ॥४६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्थं प्रभाव ऋषभोऽवतारः शंकरस्य मे ।
सतां गतिर्दीनबन्धुर्नवमः कथितस्तव ।।४७
ऋषभस्य चरित्रं हि परमं पावनं महत् ।
स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यं श्रोतव्यं च प्रयत्नतः ।।४८

ऋषभ देव ने परम प्रसन्न होकर राजा को एक दिव्य कवच शंख और समस्त शत्रु समुदाय का नाश करने वाला एक खंग प्रदान दिया था ।४३। दीनजनों पर दया की दृष्टि करने वाले ऋषभ मुनिराज ने उस राजा के समस्त अंगों में भस्म लगाकर उसे बारह हजार हाथियों के समान बल प्रदान किया।४४। उस समय माता के साथ भद्रायु को भली भाँति समझा कर धीरज दिया और फिर माता एवं पुत्र द्वारा बन्दित होकर ऋषण मुनि अपने अभीष्ट स्थान को चले गये थे ।४५। हे विधे ! इसके अनन्तर राजर्षि भद्रायु समस्त शत्रुओं पर विजय पाकर कीर्त्ति-मालिनी नाम वाला एक सुन्दर कन्या के साथ विवाह धर्मके साथ राज-काल करने में तत्पर हो गये ।४६। मेरे इन नवम ऋषभ अवतार का ऐसा प्रभाव होता है जो सदा सत्पुरुषों का उद्धारक-दीनो का बन्धुरूप हुआ है । मैने तुमको इसे सुना दिया है । यह ऋषभ चरित्र मानवो को पवित्र बना देने वाला, स्वर्ग सुख प्रदाता और यश तथा आयु की वृद्धि करने वाला है । इसे सबको यत्न के साथ अवश्य ही श्रवण करना चाहिए ।४७-४८।

ग्यारह रुद्रावतारों का वर्णन

एकादशावतारान्वै श्रृण्वतां शांकरान्वरान् ।
यान्श्रुत्वा न हि बाध्येत बाधासत्यादिसम्भवा ।।१
पुरा सर्वे सुराश्शक्रमुखा दैत्यपराजिता ।
त्यक्त्वामरावतीम्भीत्याऽपलायन्त निजाम्पुरीम् ।।२
दैत्यप्रपीडिता देवा जग्मुस्ते कश्यपान्तिकम् ।
बद्धा करान्नतस्कन्धाः प्रणेमुस्तं सुविह्वलम् ।।३
सुनुत्वा तं सुरास्सर्व्वे कृत्वा विज्ञप्तिमादरात् ।
सवं निवेदयामासुस्स्वदुःखन्तत्पराजयम् ।।४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततस्स कश्यपस्तात तत्पिता शिवशक्तधीः ।
तदाकर्ण्यामरार्थं वै दुःखितोभूत्स चाधिकम् ॥५
तानाश्चास्य मुनिस्सोऽथधैर्यमाधाय शान्तधीः ।
काशीं जगाम सुप्रीत्या विश्वेश्वर पुरीम्मुने ॥६
गङ्गाम्भसि ततः स्नात्वा कृत्वा तं विधिमादरात् ।
विश्वेश्वरं समानर्च्य साम्बं सर्वेश्वरम्प्रभुम् ॥७

नन्दीश्वर ने कहा-- अब भगवान शिव के ग्यारह परम श्रेष्ठ अवतारों की कथा सुनो जिससे असत्य आदि के दोषों से उत्पन्न होने वाली बाधा मनुष्यों को कभी भी पीड़ित नहीं किया करती है ।१। पूर्व समय में इन्द्रादि देवगण दैत्योंसे पराजित होकर सब भयभीत होते हुए अपनी अमरावती को छोड़कर इधर-उधर भाग गये ।२। असुरों से उत्पीड़ित होकर समस्त देवता कश्यप ऋषि के पास पहुँचे और व्याकुल होकर दोनों हाथ जोड़ कर कन्धा झुकाते हुए उन्हें प्रणाम किया ।३। इसके अनन्तर अपने दैत्यों से होने वाले पराजय के दुःख के विषय में ऋषि से आदर पूर्वक प्रार्थना की ।४। हे तात ! देवगणों के पिता की भगवान शिव में आसक्ति होने के कारण उनकी उस प्रार्थना को सुनकर विशेष दुःखित हुए ।५। हे मुने ! तब परम शान्त बुद्धि वाले कश्यप ऋषि ने देवताओं को आश्वासन देते हुए धैर्य बँधाया और प्रसन्नता के साथ विश्वनाथ की पुरी काशी को चले गये ।६। वाराणसी में गंगा स्नान कर विधिपूर्वक अपना नित्य नैमित्तिक कर्म सादर समाप्त कर उमा के सहित जगदीश्वर विश्वनाथ का अर्चन किया ।७।

शिवलिङ्ग सुसंस्थाप्य चकार विपुलन्तपः ।
शम्भुमुद्दिश्य सुप्रीत्या देवानां हितकाम्यया ॥८
महान्कालो व्यतीताय तपतस्तस्य वै मुनेः ।
शिवपादाम्बुजासक्तमनसोधैर्य्यशाशालिनः ॥९
अथ प्रादुरभूच्छम्भुर्वरदातुन्तदर्षये ।
स्वपदासक्तमनसे दीनबन्धुस्सतां गतिः ॥१०
वरम्ब्रूहीति चोवाच प्रसन्नो महेश्वरः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्यपं मुनिशार्दूलं स्वभक्तं भक्तवत्सलः ॥११
दृष्ट्वाथ तं महेशानं स प्रणम्यकृताञ्जलिः ।
तुष्टाव कश्यपो हृष्टो देवतातः प्रसन्नधीः ॥१२
देवदेव महेशान शरणागत वत्सल ।
सर्वेश्वरः परमात्मा त्वं ध्यानगम्योद्वयोऽव्ययः ॥१३
बलनिग्रहकर्ता त्वं महेश्वरः सतांगतिः ।
दीनबन्धुर्दयासिन्धुर्भक्तरक्षणदक्षधीः ॥१४

काशीपुरी में कश्यप ऋषि ने शिव के लिंग की स्थापना करके देव-गण की भलाई करने की इच्छा से शिव को प्रसन्न करने के लिए प्रेम भाव के साथ अत्यन्त कठिन तपस्या की ।८। हे मुनीश्वर ! इस तरह विश्वनाथ के चरणों में धीरज के साथ मन लगाकर तपश्चर्या करते हुए कश्यप मुनि का बहुत सा समय व्यतीत हो गया ।९। इसके पश्चात् ऐसे मनोयोग से कठिन तपस्या करने वाले ऋषि को परम सन्तुष्ट होकर प्रसन्नता से वरदान देने के लिए सत्पुरुषों की उद्धार करने वाले दीन-बन्धु शिव प्रकट होगये ।१०। उस समय शिवने भक्तवत्सलता के कारण द्रवीभूत होकर परम भक्त कश्यप ऋषि से कहा--लो, मेरा यह वरदान ग्रहण करो ।११। भगवान महेश्वर के साक्षात् दर्शन कर कश्यप ऋषि अत्यन्त हर्षित हुए और उत्तम बुद्धि वाले कश्यप ने साञ्जलि उनको प्रणाम कर स्तुति करना आरम्भ किया ।१२। कश्यप ऋषि ने निवेदन किता--हे देवदेव ! हे शरणा,ात वत्सल ! आप सबके स्वामी, परमेश और ध्यान-योग से प्राप्त करने योग्य हैं । आप सर्वदा अविनाशी एवं अद्वैत रूप हैं ।१३। हे महेश्वर ! आप वल के अवरोधक, सज्जनों को सद्गति देने वाले, दीन-हीन के बन्धु, दया के अगाध सागर और अपने भक्तजनों की रक्षा करने में कुशल है ।१४।

एते सुरास्त्वदीया हि त्वदभक्ताश्च विशेषतः ।
दैत्यैः पराजिताश्चाद्य पाहि तान्दुःखितान् प्रभो ॥१५
असमर्थो रमेशोपि दुःखदस्ते मुहुर्मुहुः ।
अतः सुरा मच्छरणा वेदयन्तो सुखं च तत् ॥१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदर्थं देवदेवेभ देवेदु:खविनाशक: ।
तत्पूरितुं तपोनिष्ठां प्रसन्नार्थं तवासदम् ॥१७
शरणन्ते प्रपन्नोऽस्मि सर्वथाहं महेश्वर: ।
कामं मे पूरय स्वामिन्देव: दुखं विनाशय ॥१८
पुत्रदु:खैश्च देवेश दु:खितोऽहं विशेषत: ।
सुखिनं कुरु मामीश सहायस्त्वन्दिवौकसाम् ॥१९
भूत्वा मम सुतो नाथ देवा यक्षा: पराजिता: ।
दैत्यैर्महाबलैश्शम्भो सुरानन्दप्रदोभव ॥२०
सदैवास्तु महेशान सर्वदेवसहायक: ।
यथा दैत्यकृता बाधा न बाधेत सुरान्प्रभे ॥२१

हे प्रभो! ये समस्त देवगण आपके हैं और विशेष रूप से ये आपकी भक्ति करने वाले हैं। इस समय ये विचारे असुरों से पराजित होकर महादु:खित हो रहे हैं। आप कृपा कर इनकी रक्षा कीजिए।१५। भगवान् विष्णु भी स्वयं असमर्थ होकर आपको ही आकर कष्ट देते हैं। अतएव देवगण दु:खित होते हुए बार-बार मेरी शरण में आते हैं और अपने उत्पीड़न की बात कहा करते हैं।१६। हे देवेश्वर ! देवों के दु:ख विनाशक ! अपने इसी मनोरथ की पूर्णताके लिए आपका प्रसन्न करने को मैंने इस घोर तपस्या का अनुष्ठान किया है।१७। हे स्वामिन् ! हे महामहेश्वर ! मैं सब प्रकार से अब आपकी शरण में आ गया हूँ। आप कृपाकर मेरी कामना सफल करते हुए देवगणों की पीड़ा का निवारण करे।१८। हे ईश मैं अपने आत्मजों के दु:ख से विशेष दु:खित हो रहा हूँ। आप स्वयं सर्वदा देवों के सहायक रहे हैं अब इसका दु:ख दूर कर मुझे सुख प्रदान करें।१९। हे शम्भो ! हे नाथ ! देवगण मेरे पुत्र होते हुए इन दुष्ट दैत्यों से पराजित हुए हैं। आप सदा यक्ष और देवों को आनन्द देने वाले हैं।२०। हे महेशान ! आप समस्त देवगण की सहायता करने वालेहैं। अत: अब ऐसा अपना अनुग्रहकरे जिससें दैत्यों द्वारा देवताओं को कोई पीड़ा की बाधा उपस्थित न हो।२१।

इत्युक्तस्स तु सर्वेशस्तथेति प्रोच्य शंकर: ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्यस्तस्य भगवांस्तत्रैवान्तर्दधे हरः ॥२२
कश्यपोऽपि महाहृष्टः स्वस्थानमगमदद्रुतम् ।
देवेभ्यः कथयामास सर्वं वृत्तान्तमादरात् ॥२३
ततस्स शंकरश्शर्वस्सत्यं कर्तुं स्वकं वचः ।
सुरभ्यां कश्यपाज्जज्ञे एकादशस्वरूपवान् ॥२४
महोत्सवस्तदासीद्वै सर्वं शिवमयं त्वभूत् ।
आसन्हृष्टाः सुराश्चाथ मुनिना कश्यपेन च ॥२५
कपाली १ पिंगलो २ भीमो ३ विरूपाक्षो ४ विलोहितः ५ ।
शास्ताऽ६ जपाद७ हिर्बुध्न्य८ श्शंभु९ श्चण्डो१० भवस्तथा११।२६
एकादशैये रुद्रास्तु सुरभीतनयाः स्मृताः ।
देवकार्य्यार्थमुत्पन्नाश्शिवरूपास्सुखास्पदम् ॥२७
ते रुद्राः काश्यपा वीरा महाबलपराक्रमाः ।
दैत्याञ्जघ्नुश्च संग्रामे देवसाहाय्यकारणः ॥२८

नन्दीश्वर ने कहा—जब कश्यप ऋषि ने ऐसी दीन प्रार्थना की तो 'ऐसा ही होगा' इतना कहकर उनके देखते हुए ही भगवान् शंकर वहाँ ही अन्तर्हित हो गये ।२२। इसके अनन्तर कश्यप मुनि अत्यन्त प्रसन्नता के साथ शीघ्र ही अपने स्थान पर लौट आये और यह समस्त वृतान्त प्रेम पूर्वक देवगणों को सुना दिया ।२३। उसके पश्चात् भगवान शिव अपना वचन सत्य करने के लिए एकादश स्वरूप धारण कश्यप ऋषि से सुरभि में प्रकट हुए।२४। उस समय विश्वमें सर्वत्र आनन्दोल्लास छा गया । ऐसा प्रतीत होता था मानो यह जगत् सब शिव स्वरूप ही हो गयाहै । समस्त देवगण कश्यपजीसे बहुत अधिक प्रसन्न हुऐ और उत्सव मनाने लगे ।२५। सुरभि के दकादश पुत्रों के नाम कपाली-पिंगल भीम विरुपाक्ष-विलोहित शास्ता-अहिर्दुध्न्य-शम्भु चण्ड और भव हुए थे।२६। वे एकादण रुद्र सुरभि में पुत्र रूपमें उत्पन्न हुए हैं और इन सबका उद्-भव केवल देवगणों के कार्य सम्पादन करने ही के लिए हुआ था । ये सब सुख के आलय साक्षात् शिव के स्वरूप हैं ।२७। ये महान बली एवं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम पराक्रमी वीर थे। कष्यप के पुत्र रूप में उत्पन्न होकर सुरों की सहायता को इन ग्यारह रुद्रों का प्रादुर्भाव हुआ। इन्होंने युद्ध में दैत्यों का संहार किया।२८।

तद्रुद्रकृपया दिवा दैत्याञ्जित्वा च निर्भयाः।
चक्रुः स्वराज्यं सर्वे ते शक्राद्यास्स्वस्थमानसाः ॥२६
अद्यापि ते महारुद्रास्सर्वे शिवस्वरूपकाः।
देवानां रक्षणार्थाय विराजन्ते सदा दिवि ॥३०
ऐशान्याम्पुरि ते वासं चक्रिरे भक्तवत्सलाः।
विरमन्ते तदा तत्र नानालीलाविशारदाः ॥३१
तेषामनुचरा रुद्राः कोटिशः परिकीर्तिताः।
सर्वत्र संस्थितास्तत्र त्रिलोकेष्वभिभोगशः ॥३२
इति ते वर्णितास्तातावताराश्शंकरस्य वै।
एकादशमिता रुद्रास्सर्वलोकसुखावहाः ॥३३
इदमाख्यानममलं सर्वपापप्रणाशकम्।
धन्यं यशस्यमायुष्यं सर्वकामप्रदायकम् ॥३४
य इदं श्रृणुयात्तात श्रावयेद्वै समाहितः।
इह सर्वसुखम्भुक्त्वा ततो मुक्तिं लभेत सः ॥३५

इसके उपरान्त एकादश रुद्रों के अनुग्रह से दैत्यों पर विजय प्राप्त कर देवगणों ने निर्भय होकर इन्द्रादि के सहित सुखपूर्वक अपने राज्य के आनन्द का अनुभव किया।२६। आज तक भी शिव के स्वरूप वाले थे महारुद्र देवगणोंकी रक्षा करने के लिए निरन्तर देवलोक में विराजमान रहते हैं।३०। परम भक्तवत्सल विवध लीला कुशल ये ईशान दिशा में सदा निवास करते हुए वहाँ रमण किया करते हैं।३१। उनके अनुगामी सेवक करोड़ों की संख्या ने हैं जो कि त्रिभुवन में सब जगह चारों ओर स्थित रहा करते हैं।३२। हे तात ! हमने तुम्हारे समक्ष में भगवान् शिव के इन एकादश अवतारों का वर्णन कर दिया। यह चरित्र सबको अत्यन्त सुख देने वाला होता है।३३। जो कोई भी इस परम पावन चरित्र को सुनता या सुनाता है वह इस समस्त लोक में लौकिक सुखों का उपभोग कर अन्त समयमें मोक्ष की प्राप्ति किया करता है।३४-३५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दत्तात्रेय-दुर्वासा और चन्द्रमा का जन्म

अथान्यच्चरितं शम्भोश्शृणु प्रीत्या महामुने ।
यथा बभूव दुर्वासाश्शंकरो धर्महेतवे ॥१
ब्रह्मपुत्रो बभूवातितपस्वी ब्रह्मवित्प्रभुः ।
अनसूयापतिर्धीमान्ब्रह्माज्ञाप्रतिपालकः ॥२
सुनिर्देशाद्ब्रह्मणो हि सस्त्रीकः पुत्रकाम्यया ।
स त्र्यक्षकुलनामानं ययौ च तपसे गिरिम् ॥३
प्राणानायम्य विधिवन्निर्विन्ध्यातटिनी तटे ।
तपश्चचार सुमहद्द्वन्द्वाऽब्दशतम्मुनिः ॥४
य एक ईश्वरः कश्चिचदविकारो महाप्रभुः ।
स मे पुत्रवरं दद्यादिति निश्चितमानसः ॥५
वहुकालो व्यतीयाय तस्मिंस्तपति सत्तपः ।
आविर्बभूव त्कात्त् शुचिर्ज्वाला महीयसी ॥६
तयासन्निखिला लोका दग्धप्राया मुनीश्वराः ।
तथा सुरर्षयः सर्वे पीडिता वासवादयः ॥७

नन्दीश्वर ने कहा--हे महामुने ! अब आप भगवान शिव का वह चरित्र प्रेमपूर्वक सुनो जिसमे शिवने धर्म के निमित्त दुर्वासा का स्वरूप ग्रहण किया था ।१। परम तपस्वी, पूर्ण ब्रह्म के ज्ञाता, महामनषी, विधाता के अत्यन्त आदेश पालक और अनसूयाके पति अत्रि मुनि ब्रह्मा जी के पुत्र थे ।२। अपने पिता की आज्ञा मानकर पुत्र प्राप्ति की इच्छा से अत्रि अपनी पत्नी के साथ त्यक्ष नामक गिरि पर तपश्चर्या करने के लिए चले गये ।३। विन्ध्य गिरि के निकट नदी तट पर अत्रि मुनि ने सविधि अपने प्राणों को रोककर निश्चिन्त रूप से सौ वर्ष तक महाघोर तपस्या की ।४। उस समय अत्रि ने अपने हृदय में ऐसा ठान लिया था कि जो भी कोई अधिकारी एकमात्र परमेश्वर महाप्रभु हैं वे मुझे अवश्य ही श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करने का वरदान देंगे ।५। इस तरह अत्यन्त कठिन तपस्या करते हुए जब अधिक समय व्यतीत हो गया तो उनके मस्तकसे बहुत ही तीक्ष्ण पवित्र अग्नि की ज्वाला प्रकट हुई ।६। उस अग्नि-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वाला का ऐसा तीव्रतम तेज था कि समस्त इन्द्रादि देवगण, मुनि-मण्डल, ऋषि समूह और लोक भस्म होकर पीड़ित होने लगे ।७।

अथ सर्वे वासवाद्या सुराश्च मुनयो मुने ।
ब्रह्मस्थानं ययुश्शीघ्रं तज्ज्वालातिप्रीडिताः ।८
नत्वा विधिवन्देवास्तत्स्वदुःखन्न्यवेदयन् ।
ब्रह्मा सह सुरैस्तात विष्णुलोकं ययावरम् ।९
तत्र गत्वा रमानाथं नत्वा नुत्वा विधिस्सुरैः ।
स्वदुःखन्तत्समाचख्यौ विष्णवेऽनन्तकं मुने ।१०
विष्णुश्च विधिना देवै रुद्रस्थानं ययौ द्रुतम् ।
हरं प्रणम्य तत्रेत्य तुष्टाव परमेश्वरम् ।११
स्तुत्वा बहुतया विष्णुं स्वदुःखं च न्यवेदयत् ।
शर्वे ज्वालासमुद्भूतंमंत्रैश्च तपसः परम् ।१२
अथ तत्र समेतास्तु ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ।
मुने संमन्त्र्याञ्चक्रुरन्योन्यं जगतां हितम् ।१३
तदा ब्रह्मादयो देवास्त्रयस्ते वरदर्षभाः ।
जग्मुस्तदाश्रमं शीघ्रं वरन्दातुन्तदर्षये ।१४
स्वचिह्नचिह्नितांस्तान्स दृष्ट्वात्रिमुंनिसत्तमः ।
प्रणनाम च तुष्टाव वाग्भिरिष्टाभिरादरात् ।१५

हे मुनिवर ! उस समय इन्द्रादि देववृन्द और मुनि आदि उस अग्नि से सन्तप्त होकर शीघ्र ही ब्रह्माजी के निवास स्थान पर गये ।८। हे तात ! वहाँ पहुँचकर सबने प्रणाम पूर्वक स्तवन कर ब्रह्माजी से अपने दुःख का वृत्तान्त बताया । तब ब्रह्मा भी उनको साथ लेकर विष्णुलोक को गये ।९। हे मुनिराज ! वहाँ पहुँचकर सब देवों के सहित विष्णु को बार-बार प्रणाम करते हुए उनसे अपने दुःख की प्रार्थना की ।१०। इसके अनन्तर इन सबको अपने साथ लेकर भगवान विष्णु शिव के समीप गये । वहाँ महेश्वर को प्रणाम करके सभी लोग भगवान् शङ्कर की स्तुति करने लगे ।११। अधिक समय तक स्तुति करने के पश्चात् व्यापक शिव के अत्रि के तप द्वारा उत्पन्न अग्नि के तेज से होने वाले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दु:ख का निवेदन किया ।१२। हे मुने ! उस समय वहाँ, ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनों ने परस्पर में मिलकर समस्त लोकों के कल्याण के लिए परामर्श करना आरम्भ कर दिया ।१३। हे देव ! खूब सोच विचार कर ब्रह्मादि तीनों देवता अत्रि ऋषि को वरदान देने के लिए शीघ्रता से ऋषि के आश्रम में गये ।१४। बस उस समय अत्रि ने इन तीनों को अपने-अपने वेष चिन्हों से अङ्कित देखकर सादर सबको परम प्रिय वाणी द्वारा प्रणाम किया और स्तुति करने लगे ।१५।

ततस्स विस्मितो विप्रस्तानुवाच कृताञ्जलिः ।
ब्रह्मपुत्रो विनीतात्मा ब्रह्मविष्णुहराभिधान् ।१६
हे ब्रह्मन् हे हरे रुद्र पूज्यास्त्रिजगतास्मताः ।
प्रभवश्चेश्वराः सृष्टिरक्षासंहारकारकाः ।१७
एक एव मया ध्यानं ईश्वरः पुत्रहेतवे ।
यः कश्चिदीश्वरः ख्यातो जगतां स्वस्त्रिया सह ।१८
यूयं त्रयस्सुराः कस्मादागता वरदर्षभाः ।
एतन्मे संशयं छित्वा ततो दत्तेप्सितं वरम् ।१९
इति श्रुत्वा वचस्तस्य प्रत्यूचुस्ते सुरास्त्रयः ।
यादृक्कृतस्ते संकल्पस्तथैवाभून्मुनीश्वर ।२०
वयं त्रयो भवेशानास्समाना वरदर्षभाः ।
अस्मदंशभवास्तस्माद्भविष्यन्ति सुतास्त्रयः ।२१

इसके अनन्तर परम विनीत ब्रह्मा के आत्मज अत्रि विस्मित होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनों देवों से हाथ जोड़कर कहने लगे ।१६ अत्रि मुनि ने कहा—हे ब्रह्मन् ! हे विष्णो ! हे महेश्वर ! आप लोग इस समस्त विश्व के परम पूज्य माने जाते है और इस जगत् के आप प्रभु ईश्वर तथा सृजन, पोषण और विनाश करने वाले हैं ।१७। मैंने तो अपने पुत्र को प्राप्ति के लिए केवल शिव का ही स्त्री के सहित तप में ध्यान स्मरण किया था क्योंकि शंकर ससार में ईश्वर विख्यात है ।१८। हे वरदाताओं में श्रेष्ठ ! अब आप तीनों ही देवता यहाँ किस कारणसे आये हैं ! पहिले मेरे इस संशय को मिटाकर फिर वरदान देने की कृपा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें ।१९। हे मुने ! अत्रि के इन वचनों को सुनकर इसका उत्तर उन तीनों देवों ने यह दिया कि हे अत्रिमुने ! तुमने जो भी हृदय में सङ्कल्प किया है वह उसी तरह से पूर्ण होगा ।२०। तीनों देवों ने कहा--हम तीनों ब्रह्मा विष्णु और महेश समान वर देने वाले हैं इसलिए हमारे अंशों से जन्म ग्रहण करने वाले तुम्हारे एक नहीं तीन पुत्र होंगे ।२१।

विन्दिता भुवने सर्वे पित्रोः कीर्तिविवर्द्धनाः ।
इत्युक्तास्ते त्रयो देवास्स्वधामानि ययुर्मुदा ।२२
वरं लब्ध्वा मुनिस्सोऽथ जगाम स्वाश्रम मुदा ।
युतोऽनुसूयया प्रीतो ब्रह्मानन्दप्रदोमुने ।२३
अथ ब्रह्मा हरिशम्भुरत्रेः स्त्रियां ततः ।
पुत्ररूपैः प्रसन्नात्मा नाना लीलाप्रकाशकाः ।२४
विधेरंशाष्टिधुर्ज्ञधेऽनसूयायां मुनीश्वरात् ।
आविबभूवोदधितः क्षिप्तो देवैस्स एवहि ।२५
विष्णोरंशात्स्त्रियान्तस्यामत्रेर्दत्तो व्यजायत ।
संन्यासपद्धतिर्येन वर्द्धितां परमा मुने ।२६
दुर्वासा मुनिशार्दूलः शिवांसान्मुनिसत्तमः ।
जज्ञे तस्याँ स्त्रियामत्रेर्वरधर्मप्रवर्तकः ।२७
भूत्वा रुद्रश्च दुर्वासा ब्रह्मतेजोविवर्द्धनः ।
चक्रे धर्मपरीक्षाञ्च बहूनां स तथापरः ।२८

वे तीनों पुत्र ऐसे होंगे जो अपने माता-पिता की कीर्ति की वृद्धि करेंगे इतना कहकर तीनों देव प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने निवास स्थानों को चले गये ।२२। हे मुनिवर! इसके उपरान्त अत्रि मुनिजी इच्छित वर पाकर अनसूया के सहित प्रसन्नचित्त से अपने स्थान को चले गये और ब्रह्मानन्द को पाने लगे ।२३। इसके पश्चात् ब्रह्मा-विष्णु-महेश-अत्रि की पत्नी अनुसूया के उदर से पुत्र रूपमें परम प्रसन्न तथा विविध लीलाओं के रचने वाले उत्पन्न हुए ।२४। अनसूया के गर्भ से, अत्रि के द्वारा ब्रह्माजी के अंश से चन्द्रमा उत्पन्न हुए जो कि देवों द्वारा फेंके जाने पर फिर समुद्रसे प्रकट हुआ था ।२५। भगवान् विष्णुके अङ्गसे अनुसूया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अत्रि के द्वारा दत्तात्रेय उदभूत हुए जितने जगत् में संन्यास की विशाल पद्धति का प्रचार किया था ।२६। हे मुनिवर ! भगवान् शंकर के अंश से अनसूया की कुक्षि से धर्म के श्रेष्ठ प्रवर्तक दुर्वासा उत्पन्न हुए ।२७। भगवान् महेश्वर ने ब्रह्मतेज की वृद्धि करने वाले दुर्वासा के स्वरूप से समुत्पन्न होकर दयालुता के साथ बहुतों की धर्मनिष्ठा की जाँच की थी ।२८।

सूर्य्यवंशे समुत्पन्नो योऽम्बरीषो नृपोऽभवत् ।
तत्परीक्षामकार्षीत्स तां शृणु त्वं मुनीश्वरः ।२६
सोऽम्बरीषो नृपवरः सप्तद्वीपरसापतिः ।
नियमं हि चकारासावेकादश्याव्रतेदृढम् ।३०
एकादश्या व्रतं कृत्वा द्वादश्यां चैव पारणाम् ।
करिष्यामीति सुदृढः संकल्पस्तु नराधिपः ।३१
ज्ञात्वा तन्नियमन्तस्य दुर्वासा मुनिसत्तमः ।
तदन्तिकं गतश्शिष्यैर्बहुभिश्शंकरांशजः ।३२
पारणे द्वादशीं स्वल्पां ज्ञात्वा यावत्स भोजनम् ।
कर्तुं व्यवसितस्तावदागतं स न्यमन्त्रयत् ।३३
ततः स्नानार्थमगद् दुर्वासाः शिष्यसंयुतः ।
विलम्बं कृतवांस्तत्र परीक्षार्थं मुनिर्बहु ।३४
धर्मविघ्नं तदा ज्ञात्वा स नृपः शास्त्रशासनात् ।
जलम्प्राश्यास्थितस्तत्र तदागमनकांक्षया ।३५

हे मुनीश्वर ! सूर्यवंश में समुत्पन्न परम धार्मिक राजा अम्बरीष की धर्म परीक्षा इन्हीं दुर्वासा मुनि ने की थी, उस चरित्रको मैं सुनाता हूँ । तुम उसे श्रवण करो ।२९। राजा अम्बरीष विशाल सातद्वीप की भूमि का अधीश्वर था । एकादशी के दिन सावधि उपवास करने का उसका बहुत ही दृढ़ नियम था ।३०। राजा अम्बरीष का ऐसा प्रण था कि मैं सदा एकादशी का उपवास करके द्वादशी में ही पारण किया करूँगा ।३१। भगवान् शङ्कर के अंश से समुत्पन्न हुए दुर्वासा मुनि ने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा के इस दृढ़ संकल्प को जानकर अपने शिष्य-वर्गके साथ राजा अम्बरीष के यहाँ पदार्पण किया।३२। अम्बरीष द्वादशी तिथिका थोड़ा सा ही शेष समय जानकर अपने एकादशी व्रत धारण करने ही वाले थे कि वहाँ दुर्वासा पहुँच गये। राजा ने उनको निमन्त्रण ? दिया था।३३।राजा का निमन्त्रण स्वीकार कर दुर्वासा शिष्योंके सहित स्नानादि करने को चले गये। दुर्वासा मुनि ने राजा की दृढ़ता की परीक्षा करने के हेतु से वहाँ जान बूझकर अधिक, विलम्ब कर दिया।३४। राजा ने अपने धर्ममें विघ्न समझकर शास्त्र की आज्ञा के अनुसार जल ग्रहणकर पारण कर लिया और दुर्वासा की प्रतीक्षा में भोजन नहीं किया।३५।

एतस्मिन्नन्तरेतत्रदुर्वासा मुनिरागतः।
कृताशनं नृपं ज्ञात्वा परीक्षार्थं धृताकृतिः।३६
चुक्रोधाति नृपे तस्मिन्परीक्षार्थंनृपस्य सः।
प्रोवाच वचनन्तूग्रं स मुनिश्शंकरांशजः।३७
मां निमन्त्रय नृपाभोज्य जलं पीतन्त्वयाधम।
दर्शयामि फलं तस्य दुष्टदण्डधरोह्यहम्।३८
इत्युक्त्वा क्रोधताम्राक्षो नृपं दग्धुं समुद्यतः।
समुत्तस्थौ द्रुतं चक्रं तत्स्थं रक्षार्थमैश्वरम्।३९
प्रजज्वालापि तं चक्रं मुनिं दग्धुं सुदर्शनम्।
शिवरूपं तमज्ञात्वा शिवमायाविमोहितम्।४०
एतस्मिन्नन्तरे व्योमवायु वाचाशरीरिणी।
अम्बरीषम्महात्मानं ब्रह्मभक्तं च वैष्णवम्।४१
सुदर्शनमिदं चक्रं हरये शम्भुनार्पितम्।
शान्तं कुरु प्रज्वलितत्तद्य दुर्वाससे नृप।४२

उसी समय मुनिराज दुर्वासा वहाँ आ गये और राजा को भोजन किया हुआ समझकर उस पर परीक्षा के लिए अत्यधिक क्रोधित हुए।३६। शिवके अंशावतार दुर्वासा मुनि धर्म की जाँच करते हुए राजा से रोषावेश में जाकर कठोर वचन कहने लगे।३७। दुर्वासा ने राजा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्बरीष से कहा–अरे अधम नृप! तूने मुझे तो भोजन का निमन्त्रण दे दिया और मुझे भोकन कराने के पूर्व ही जलपान कर लिया। मैं तुम्हें इसका फल दिखाता हूँ क्योंकि मैं तुझ जैसे दुष्टों को दण्ड देने वाला हूँ।३८। क्रोध से अरुण नेत्र वाले ऋषि इतना कहकर राजा को भस्मीभूत करने को उद्यत हुए थे कि नृप के समीप स्थित सुदर्शन चक्र ने प्रकट होकर उनकी रक्षा की।३९। शिव की माया से मोहित होकर दुर्वासाको शिव का ही रूप समझकर मुनिको दग्ध करने के लिये सुद-र्शन चक्र प्रज्वलित रूप वाला हो गया।४०। उसी समय वैष्णव और ब्राह्मणों के भक्त महात्मा अम्बरीष से बिना शरीर वाली व्योम वाणी ने कहा–है नृप! इस समय दुर्वासा को भस्म करने के लिए परम प्रज्वलित शिव से ही प्राप्त भगवान् विष्णु के इस सुदर्शन चक्र को प्रार्थना द्वारा शान्त कर दो।४१-४२।

दुर्वासायं शिवः साक्षात्स चक्रं हरयेऽर्पितम्।
एवं साधारणमुनिं न जानीहि नृपोत्तम।४३
तव धर्मपरीक्षार्थमागतोऽयं मुनीश्वराः।
शरणं याहि तस्याशु भविष्यत्यन्यथालयः।४४
इत्युक्त्वा च नभोवाणी विरराम मुनीश्वर।
अस्तावीत्स हरांशं तमम्बरीषोऽपि चादरात्।४५
यद्यस्ति तत्तमिष्टं च स्वधर्मोवा स्वनुष्ठितः।
कुलं नो विप्रदेवं चेद्धरेरस्त्रं प्रशाम्यतु।४६
यदि नो भगवान्प्रीतो मद्भक्तोभक्तवत्सलः।
सुदर्शनमिदं चास्त्रं प्रशाम्यतु विशेषतः।४७
इति स्तुवति रुद्राग्रे शैवं चक्रं सुदर्शनम्।
अशाम्यत्सर्वथा ज्ञात्वा तं शिवांशं सुलब्धधीः।४८

हे नृपश्रेष्ठ! यह दुर्वासा मुनि साक्षात् महेश्वर ही है। इन्होंने इस सुदर्शन चक्र को विष्णु के लिए दिया था। दुर्वासा को कोई सामान्य मुनि मत समझो।४३। इस समय यह ऋषि तुम्हारी धर्म परीक्षा करने के लिए ही उपस्थित हुए हैं। अब तुम इनकी शरण में आओ अन्यथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रलय हो जायगा ।४४। नन्दीश्वर ने कहा–हे मुनीश्वर ! इतना कहकर आकाशवाणी शान्त हो गई और राजा अम्बरीष ने शिव के अंश- स्वरूप दुर्वासा की स्तुति करना आरम्भ कर दिया ।४५। राजा अम्बरीषने प्रार्थना की–यदि आपने मुझे वरदान प्रदान किया है किम्बा मैंने अपना धर्मोचित अनुष्ठान किया है, यदि मेरा कुल देवगण और ब्राह्मण वर्ग का भक्त है तो मेरा विनय पूर्ण निवेदन है कि भगवान विष्णु का अस्त्र सुदर्शन चक्र अब शान्त हो जावे ।४६। यदि मेरे ऊपर भक्त वत्सल भगवान् परम प्रसन्न हैं मेरी प्रार्थना है कि यह सुदर्शन देव विशेष रूप से अब शान्त हो जाय ।४७। नन्दीश्वर ने कहा–हे बुद्धिशालिन् ! इस तरह शिव के समक्ष में अम्बरीष के द्वारा स्तुति किये जाने पर शिव के द्वारा प्रदान किया हुआ सुदर्शन चक्र दुर्वासा को शिव का अंश समझ कर उसी समय शान्त हो गया ।४८।

अथाम्बरीषस्स नृपः प्रणनाम च तं मुनिम् ।
शिवावतारं संज्ञाय स्वपरीक्षार्थमागतम् ।४९
सुप्रसन्नो बभूवाथ स मुनिः शङ्करांशजः ।
भुक्त्वा तस्मै वरं दत्वा स्वाभीष्टं स्वातयं ययौ ।५०
अम्बरीषपरीक्षायां दुर्वासश्चरितम्मुने ।
प्रोक्तमन्यच्चरित्रन्त्वं श्रृणु तस्य मुनीश्वर ।५१
पुनर्दाशरथेश्चक्रे परीक्षां नियमेन वै ।
मुनिरूपेण कालेन यः कृवो नियमो मुनि ।५२
तदैव मुनिना तेन सौमित्रिः प्रेषितो हठात् ।
तन्तत्याज द्रुतं रामो बन्धुं प्रणवशान्मुने ।५३
सा कथा विहिता लोके मुनिभिर्बहुधोदिता ।
नातो मे विस्तरात्प्रोक्ता ज्ञाता यत्सर्वथा बुधैः ।५४
नियमं सुदृढं दृष्ट्वा सुप्रसन्नोऽभवन्मुनिः ।
दुर्वासास्सुप्रसन्नात्मा वरन्तस्मै प्रदत्तवान् ।५५
श्री कृष्णनियमस्यापि परीक्षां स चकार ह ।
तां श्रृणु त्वं मुनिश्रेष्ठ कथयामि कथां च ताम् ।५६

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा ने इसके अनन्तर अपनी परीक्षा करने के लिए ही आगत दुर्वासा मुनि को भगवान् शिव का अंश समझकर उन्हें सादर प्रणाम किया ।४९। उस समय शिवके अंश से उत्पन्न होने वाले दुर्वासा अम्बरीष पर बहुत अधिक प्रसन्न हुए और उसके भोजन को स्वीकार कर अभीष्ट स्थान को वापिस चले गये ।५०। हे मुनीश्वर! मैंने अभी तो यह अम्बरीष की परीक्षा करने के चरित्र से सम्बन्धित दुर्वासा के चरित्र का वर्णन किया है । अब इनके अन्य चरित्र को मैं सुनाता हूँ । उसे श्रवण करो।५१। हे मुने! इसके अनन्तर मुनि रूप को धारण करने वाले दुर्वासा ने भगवान् श्रीराम की परीक्षा करने का निश्चय किया । श्री राम ने काल-रूप मुनि से यह नियम निश्चित कियाथा कि हमारे आप के सम्वाद के समय में कोई भी न आवेगा ।५२। दुर्वासा मुनि ने यह जानकर श्रीराम का नियम भंग करनेके लिए हठ करके उनके समीपमें लक्ष्मण को भेज दिया था और श्रीराम ने अपने किये प्रण के वशीभूत होने के कारण शीघ्र ही अपने भाई लक्ष्मण का परित्याग कर दिया ।५३। यह कथा बहुधा मुनिगणों के द्वारा कही हुई है और परम प्रसिद्ध भी है । इसे प्रायः सभी विद्वान भली भाँति जानते हैं । अतः विस्तार से मैं इसका वर्णन नहीं कर रहा हूँ ।५४। श्रीरामचन्द्रजी के अत्यन्त दृढ़ नियम को देखकर महर्षि दुर्वासा को बहुत ही प्रसन्नता हुई और इसके लिए श्रीराघवेन्द्र को वरदान भी दिया ।५५। हे मुनिवर ! इसी प्रकार दुर्वासा मुनि ने एकबार श्रीकृष्ण के नियम की परीक्षा की थी । मैं उस कथा को आपको सुनाता हूँ । तुम श्रवण करो ।५६।

ब्रह्मप्रार्थनया विष्णुर्वसुदेवसुतोऽभवत् ।
धराभारावतारार्थे साधूनां रक्षणाय च ।५७
हत्वा दुष्टान्महापापान् ब्रह्मद्रोहकरान्खलान् ।
ररक्ष निखिलान्साधून्ब्राह्मणान्कृष्णनामभाक् ।५८
ब्रह्मभक्ति चकारातिस कृष्णो वसुदेवजः ।
नित्यं हि भोजयामास सुरसान्ब्राह्मन्बहून् ।५९
ब्रह्मभक्तो विशेषेण कृष्णश्चेति प्रथागमात् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संद्रष्टुकामस्स मुनिः कृष्णान्तिकमगान्मुने ।६०
रुक्मिणीसहितं कृष्णं नग्नं कृत्वा रथे स्वयम् ।
संयोज्य संस्थितोवाहं सुप्रसन्न उवाह तम् ।६१
मुनी रथात्समुत्तीर्य दृष्ट्वा तां दृढताम्पराम् ।
तस्मै भूत्वा सुप्रसन्नो वज्राङ्गत्ववरन्ददौ ।६२

ब्रह्माजी की प्रार्थना पर भगवान् विष्णु ने पृथ्वी का भार हल्का करने और साधु पुरुषों की रक्षा करने के लिए वसुदेव के पुत्र होकर अवतार लिया था ।५७। श्रीकृष्ण वासुदेव ने महान् पापी दुरात्माओं तथा ब्राह्मणों से द्रोह करने वाले खलों का संहार कर समस्त साधु ब्राह्मणों का त्राण किया ।५८। वासुदेव श्रीकृष्ण ब्राह्मणों के अत्यन्त भक्त थे और अनेकों ब्राह्मणों को प्रतिदिन सुन्दर स्वादिष्ट रस वाले भोजन कराया करते थे ।५९। हे मुनिश्रेष्ठ ! श्रीकृष्ण ब्राह्मणोंकी विशेष भक्ति करने वाले हैं ऐसी उनकी ख्याति सुन उनको भी परीक्षा करने के उद्देश्य से दुर्वासा मुनि उनके पास पहुँचे ।६०। रुक्मिणी के सहित श्रीकृष्ण को अपने रथ में जोड़कर उसमें बैठ परम प्रसन्न होकर कहने लगे ।६१। दुर्वासा रथ से उतर आये और श्रीकृष्ण की इस अत्यन्त दृढ़ता से बहुत प्रसन्न होकर उनको वज्र तुल्य अङ्ग हो जाने का वरदान मुनि ने दिया था ।६२।

द्यु नद्यामेकदा स्नानं कुर्वन्नग्नो बभूव ह ।
लज्जितोभून्मुनिश्रेष्ठो दुर्वासाः कौतुकी मुने ।६३
तज्ज्ञात्वा द्रोपदी स्नानं कुर्वती तत्र चादरात् ।
तल्लज्जां छादयामास भिन्नस्वाञ्चलदानतः ।६४
तदादाय प्रवाहेनागतं स्वनिकटं मुनिः ।
तेनाच्छाद्य स्वगुह्यं च तस्यै तुष्टो बभूव सः ।६५
द्रौपद्यै च वरम्प्रादात्तदञ्चलविवर्द्धनम् ।
पाण्डवान्सुखिनश्चक्रे द्रौपदी तद्वरात्पुनः ।६६
हंसडिम्भौ नृपौ कोचित्स्वावमानकरौ खलौ ।
दत्वा निदेशं च हरेर्घातयामास स प्रभुः ।६७

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मतेजोविशेषेण स्थापयामास भूतले ।
सन्यासपद्धतिञ्चैव यथाशास्त्रविधिक्रमम् ।६८
बहूनुद्धारयामास सूपदेशं विवोध्य च ।
ज्ञानं दत्वा विशेषेण बहून्मुक्तांश्चकार सः ।६९
इत्थं चक्रे स दुर्वासा विचित्रं चरितम्बहु ।
धन्यं यशस्यमायुष्यं शृण्वतस्सर्वकामदम् ।७०
य इदं शृणुयाद्भक्त्या दुर्वासश्चरितम्मुदा ।
श्रावयेद्व परान्यश्च स सुखी परत्र च ।७१

हे मुने ! एक बार अत्यन्त कौतुक करने वाले मुनियों में श्रेष्ठ दुर्वासा विल्कुल नग्न होकर भगीरथी में स्नान करने के कारण बहुत लज्जित हुए।६३। उस समय द्रौपदी भी वहाँ स्नान कर रही थी । इससे मुनिको लज्जायुक्त देखकर उन्हें अपना वस्त्र फाड़कर सादर समर्पित किया और उनकी लज्जा दूर की ।६४। उस समय जल के बहाब में बहकर आते हुए वस्त्र को प्राप्त कर मुनि ने अपने योग्य अङ्ग का आच्छादन किया और इस उपकार के लिए द्रौपदी पर बहुत प्रसन्न हुए ।६५। दुर्वासा ने द्रौपदी को उसके वस्त्र की वृद्धि हो जाने का वरदान दिया । इस वरदान के प्रभाव से द्रौपदीने पांडवों को सुखी बनाया था ।६६। हंस डिम्भ नामक एक राजा था । वह बहुत दुष्ट और परम स्वाभिमानी था । इसको भगवान् विष्णुका सन्देश देकर महर्षि दुर्वासा ने नष्ट कर दिया ।६७। दुर्वासा ने ब्रह्म तेज का विस्तार भूमि पर विशेष रूप से किया था और शास्त्रों के विधान के अनुकूल सांसारिक पद्धति का पूर्णतया प्रसार किया ।६८। मुनि ने अपने सुन्दर उपदेशों द्वारा ज्ञान देकर अनेकों का उद्धार एवं अनेकोंको मुक्त कर दिया ।६९। दुर्वासा मुनि के इस प्रकार से अनेक अत्यन्त अद्भुत चरित्र हैं और सुनने पर समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाले हैं ।७०। जो पुरुष दुर्वासा मुनि के इस चरित्र को भक्ति के साथ आनन्दपूर्वक सुनता या सुनाता है वह इस लोक और परलोक में दोनों जगह सुख प्राप्त किया करता है ।७१।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दधीचि का अस्थिदान

एकदा निर्ज्जरास्सर्वे वासवाद्या मुनीश्वर ।
वृत्रासुरसहायैश्च दैत्यैरासन्पराजिताः ।१
स्वानिस्वानि वरास्त्राणि दधीचन्याश्रमेऽखिलाः ।
निक्षिप्य सहसा सद्योऽभवन्देवाः पराजिताः ।२
तदा सर्वे सुरास्सेन्द्रा वध्यमानास्तदर्षयः ।
ब्रह्मलोकगताश्शीघ्रं प्रोचुः स्वं व्यसनं च तत् ।३
तच्छ्रुत्वा देववचनं ब्रह्मा लोकपितामहः ।
सर्वं शशंस तत्वेन त्वष्टुश्चैव चिकीर्षितम् ।४
भवद्वार्थं जनितस्त्वष्टायं तपसा सुराः ।
वृत्रो नाम महातेजाः सर्वदैत्याधिपो महान् ।५
अथ प्रयत्नः क्रियतां भवेदस्य वधो यथा ।
तपोपायं शृणु प्राण धर्महेतोर्वदामि ते ।६
महामुनिर्दधीचिर्यस्स तपस्वी जितेन्द्रियः ।
लेभे शिवं समाराध्य वज्रास्थित्ववरम्पुरा ।७

नन्दीश्वरने कहा–हे मुनिराज ! एकबार इन्द्र आदि समस्त देवगण वृत्रासुर की सहायता करने वाले दैत्यों से युद्ध में पराजित हो गये और सबने अपने अस्त्रों को दधीचि मुनि के आश्रम में फेंक दिया ।१-२। उस समय समस्त देववृन्द इन्द्र को साथ लेकर और अत्यन्त पीड़ित ऋषि लोग एकत्रित होकर शीघ्र ही ब्रह्माजी के पास गये और सबने ही अपने दुःख को ब्रह्माजी से प्रार्थना की ।३। समस्त जगत् के पितामह ब्रह्माजी देवगणों के वचनों को श्रवणकर त्वष्टा द्वारा करने वाली इच्छा को तात्विक रूप से देवों को कहने लगे ।४। ब्रह्माजी से कहा–वृत्रासुर महान् तेजस्वी और समस्त दैत्यों का स्वामी है। इसको त्वष्टा दैत्य ने तुम सबको मारने के लिए ही तपस्या करके पैदा किया है ।५। हे प्राज्ञ ! अब जिस रीति से इसका वध हो सकता है वही उपाय धर्म के हित के विचार से मैं तुमको बतलाता हूँ तुम सब सुनलो ।६। पहिले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी समय में परम तपस्वी-जितेन्द्रिय महामुनि दधीचि ऋषि ने भगवान महेश्वर की आराधना से वज्र के समान हड्डी वाला शरीर हो जान का वरदान प्राप्त किया ।७।

तस्थास्थीन्येव याचध्वं स दास्यति न संशयः ।
निर्माय तैर्दण्डवज्रं वृत्रं जहि न शंशयः ।८
तच्छ्रुत्वा ब्रह्मवचनं शक्रो गुरुसमन्वितः ।
आगच्छत्सामरः सद्यो दधीच्याश्रमनुत्तमम् ।६
दृष्ट्वा तत्र मुनिं शक्रः सुवर्चान्वितमादरात् ।
ननाम साञ्चलिर्नम्रः सगुरुः सामरश्चतम् ।१०
तदभिप्रायमाज्ञाय स मुनिर्बुधसत्तमः ।
स्वपत्नीं प्रेषयामास सुवर्चां स्वाश्रमान्तरम् ।११
ततस्स देवराजश्च सामरः स्वार्थसाधकः ।
अर्थशास्त्रपरो भूत्वा मुन्नीशं वाक्यमब्रवीत् ।१२
त्वष्टा विप्रकृताः सर्वे वयन्देवास्तथर्षयः ।
शरण्यं त्वां महाशैवं दातारं शरणं गताः ।१३
स्वास्थीनि देहि नो विप्र महावज्रमयानि हि ।
अस्थ्ना ते स्वपविं कृत्वा हनिष्यामि सुरद्रुहम् ।१४

सो अब तुम किसी प्रकार से उनकी अस्थियों की याचना करो। वे निस्सन्देह अस्थियाँ दे देंगे। उनसे दण्ड वज्र की रचना कर वृत्रासुर का बिना किसी सन्देह के वध करो ।८। नन्दीश्वर ने कहा–ब्रह्माजी के इन वचनों को सुनकर गुरु के सहित तथा समस्त देवों के सहित इन्द्र ने मुनि के आश्रम के लिए प्रस्थान कर दिया ।६। वहाँ अपनी पत्नी सुवर्चा के साथ विराजमान दधीचि मुनि को देखकर सबने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर प्रणाम किया ।१०। उस वक्त विद्वद्वर दधीचि ने उनके हार्दिक अभिप्राय को जान लिया और सुवर्चाको आश्रम के अन्दर भेज दिया ।११। उस समय परम स्वामी देवस्वामी इन्द्र अर्थशास्त्र में परायण होकर मुनि से प्रार्थना करने लगा ।१२। देवराज इन्द्र ने कहा–हम सब देवगण तथा ऋषि वृन्द त्वष्टा के द्वारा सताये हुए परम दुःखित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर अति दानशील महाशिवभक्त और शरण में आये हुओं पर दया करने वाले आपकी शरण में प्राप्त हुए हैं।१३। हे विप्रवर! आप अपनी वज्र तुल्य अस्थियाँ हमको प्रदान करें जिनसे हम वज्र दण्ड निर्माण कर देव शत्रु इस वृत्रासुर का वध कर सकें।१४।

इत्युक्तस्तेन स मुनिः परोपकरणे रतः।
ध्यात्वा शिवं स्वनाथं हि विवसर्ज कलेवरम्।१५
ब्रह्मलोकं गतस्सद्यस्स मुनिर्ध्वस्तवन्धनः।
पुष्पवृष्टिरभूत्तत्र सर्वे विस्मयमागता।१६
अथ गां सुरभिं शक्र आहूयाशु ह्यलेहयत्।
अस्त्रनिर्मितये त्वाष्ट्रं निदिदेश तदस्थिभिः।१७
विश्वकर्मा तदाज्ञप्तश्चक्लृपेऽस्त्राणि कृत्स्नशः।
तदस्थिभिर्वज्रमयैस्सुदृढैश्शिववर्चसा।१८
तस्य वंशोद्भवं वज्रं शरो ब्रह्मशिरस्तथा।
अन्यास्थिभिर्बहूनि स्वपराण्यस्त्राणिनिर्ममे।१९
तमिन्द्रो वज्रमुद्यम्य वर्द्धितः शिववर्चसा।
वृत्रमभ्यद्रवक्क्रुद्धो मुने रुद्र इवान्तकम्।२०
ततः शक्रस्सुसन्नद्धस्तेन वज्रेण स द्रुतम्।
उच्चकर्त शिरो वात्रं गिरिशृङ्गमिवौजसा।२१
तदासमुत्सवस्तात बभूव त्रिदिवौकसाम्।
तुष्टुवुर्निर्जराश्शक्रम्पेतुः कुसुमवृष्टयः।२२

देवों की इस प्रार्थना को सुनते ही परोपकार में तत्पर दधीचि मुनि ने भगवान शङ्कर के चरणों का ध्यान करके तुरन्त ही अपने शरीर का त्याग कर दिया।१५। दधीचि मुनि समस्त वन्धनों से विमुक्त होकर शीघ्र ही ब्रह्मलोक में गये। उस समय आकाश से पुष्प वर्षा होने लगी और सबको बहुत अधिक आश्चर्य हुआ।१६। उसी समय महेन्द्र ने कामधेनु को आज्ञा देकर ऋषि की सब अस्थियाँ निकलवायीं और इनसे वज्रदण्ड का निर्माण करने के लिए त्वष्टा को आदेश दे दिया।१७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विश्वकर्मा ने आज्ञा प्राप्त होते ही शिव के तेज से परिपूर्ण परम पुष्ट वज्रमय अस्त्र उन अस्थियों से बना दिया ।१८। उसके अंश से समुत्पन्न हुआ वज्र तथा ब्रह्मा के सिर का श्रोत्र हुआ और उन अस्थियोंसे अपने और पराये अस्त्र बनाये गये ।१९। हे मुने! तब फिर इन्द्रदेव ने शिव के तेज से सुसम्पन्न होकर उस वज्र को उठाते हुए क्रोध में भरकर शिव के ही समान वृत्रासुर के मस्तक को पर्वत शिखर के तुल्य काटकर फेंक दिया ।२०-२१। हे तात ! वृत्रासुर का वध हो जाने पर देवगण अत्यन्त सन्तुष्ट होकर महा आनन्दोत्सव मनाने लगे और इन्द्रदेव के ऊपर अन्त-रिक्ष से पुष्पों की वर्षा हुई ।२२।

पिप्पलाद का विश्राप और शनि पीड़ा निवारण

एवं लीलावतारो हि शंकरस्य महाप्रभोः ।
पिप्पलादो मुनिवरो नानालीलाकरः प्रभुः ।१
येन दत्तो वरः प्रीत्या लोकेभ्यो हि दयालुना ।
दृष्ट्वा लोके शनेः पीडां सर्वेषामनिवारिणीम् ।२
षोडशाब्दावधि नृणां जन्मतो न भवेच्च सा ।
तथा च शिवभक्तानां सत्यमेतद्धि मे वचः ।३
अथानादृत्य मद्वाक्यं कुर्यात्पीडां शनिः क्वचित् ।
तेषां नृणां तदा स स्याद्भस्मसान्न हि संशयः ।४
इति तद्भयतस्तात विकृतोऽपि शनैश्चरा ।
तेषां न कुरुते पीडां कदाचिद्ग्रहसत्तमः ।५
इति लीलामनुष्यस्य पिप्पलादस्य सन्मुने ।
कथितं सुचरित्रन्ते सर्वकामफलप्रदम् ।६
गाधिश्च कौशिकश्चैव पिप्पलादो महामुनिः ।
शनैश्चरकृतां पीडां नाशयन्ति स्मृतास्त्रयः ।७

यह महाप्रभु महेश्वर का पिप्पलाद के स्वरूप में लीलावतार हुआ क्योंकि वह नाना प्रकार की लीलाओं के करने वाले थे ।१। दयालु पिप्पलाद ने संसार में किसी से भी निवारण न करने के योग्य शनि की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीड़ा को देखते हुए परम प्रीति के साथ मनुष्य को वरदान दिया था ।२ पिप्पलाद ने वर यह दिया कि जन्म से आरम्भ कर सोलह वर्ष की अवस्था तक शिव की भक्ति करने वालों को शनैश्चर की कोईभी पीड़ा नहीं सतायेगी, ऐसा मेरा वचन है सत्य है ।३। यदि मेरे वचन को न मानकर शनि किसी को भी पीड़ा देगा तो वह स्वयं भस्म हो जायगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है ।४। हे तात ! इस तरह इनके भयसे विकृत होकर शनिग्रह उनको कभी भी भूलकर कोई पीड़ा नहीं दिया करता है ।५। हे मुनिवर ! मैंने यह पिप्पलाद भगवान की परम सुन्दर मानव लीला एवं रमणीय चरित तुमको सुना दिया है । यह समस्त कामनाओं के फल को प्रदान करने वाला है ।६। गाधि कौशिक और पिप्पलाद ये तीनों महामुनि हैं और शनि से उत्पन्न पीड़ा का उन्मूलन करने वाले हैं ।७।

शिव का ब्रह्मचारी रूप में अवतार

सनत्कुमार सुप्रीत्या शिवस्य परमात्मनः ।
अवतारं श्रृणु विभोर्जटिलाह्वं सुपावनम् ।१
पुरा सती दक्षकन्या त्यक्त्वा देहं पितुर्मखे ।
स्वपित्राऽनादृता जज्ञे मेनायां हिमभूधरात् ।२
सा गत्वा गहनेऽरण्ये तेपे सुविमलं तपः ।
शंकरम्पतिमिच्छन्ती सखीभ्यां संयुता शिवा ।३
तत्तपः सुपरीक्षार्थं सप्तर्षीन्प्रैषयच्छिवः ।
तपः स्थानं तु पार्वत्या नानालीलाविशारदः ।४
ते गत्वा तत्र मुनयः परीक्षां चक्रुरादरात् ।
ते स्याः सुयत्नतो नैव समर्था ह्यभवंश्च ते ।५
तत्रागत्य शिवं नत्वा वृत्तान्तं च निवेद्य तत् ।
तदाज्ञां समनुप्राप्य स्वर्लोकं जग्मुरादरात् ।६
गतेषु तेषु मुनिषु स्वस्थानं शंकरः स्वयम् ।
परीक्षितुं शिवावृत्तमैच्छत्सूतिकरः प्रभुः ।७

नन्दीश्वर ने कहा--हे सनत्कुमार ! अब आप सर्वत्र व्यापक रहने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले परमात्मा शिव के जटिल नाम वाले परम पवित्र अवतार की कथा प्रीतिपूर्वक श्रवण करें ।१। पहिले सती नाम वाली दश प्रजापति की पुत्री ने अपने ही पिताके द्वारा अनादर प्राप्त करने पर पिताके यहाँ पर ही यज्ञस्थली में अपने शरीर का त्याग कर दिया और पुनः हिमवान् पर्वतराज के द्वारा उनकी पत्नी मेना की कुक्षि से उत्पन्न हुई थीं ।२। वह पार्वती अपने स्वामी शंकर को प्राप्त करने की इच्छा से सहेलियों के सहित घोर निर्जन एवं परम सघन वन में जाकर बहुत ही निर्मल तथा उग्र तपस्या करने में परायण हो गईं।३। उस समय विविध प्रकार की लीला करने में प्रवीण भगवान् शिव ने पार्वती की तपश्चर्या का परीक्षण करने के लिए उस तपोवन में सप्त ऋषियों को भेजा था ।४। वे ऋषि शिवाज्ञा को स्वीकार कर वहाँ पहुँचे और बहुत ही यत्नों द्वारा पार्वती की परीक्षा करने लगे किन्तु वास्तविक रूप से उस कार्य में वे समर्थ एवं सफल नहीं हो सके ।५। इसके अनन्तर वे सप्त-ऋषि वापिस शिव के पास लौट आये और प्रणाम पूर्वक समस्त वृत्तान्त शिव को सुना दिया तथा शंकर की आज्ञा प्राप्त कर अपने-अपने स्थानों को चले गये ।६। उत्पत्तिकर्त्ता प्रभु शिव ने उन ऋषियों के यथास्थान चले जाने के अनन्तर स्वयंही पार्वती के मनोभाव की जाँच करने की इच्छा की।७

सुप्रसन्नस्तपस्वीच्छाशमनादयमीश्वरः ।
ब्रह्मचर्य्यस्वरूपोऽभूत्तदाद्भुततः प्रभुः ।८
अतीव स्थविरो विप्रदेहधारी स्वतेजसा ।
प्रज्वलन्मनसा हृष्टो दण्डी क्षत्री महोज्ज्वलः ।९
धृत्वैवं जटिलं रूपं जगाम गिरिजावनम् ।
अतिप्रीतियुतः शम्भुश्शंकरो भक्तवत्सलः ।१०
तत्रापश्यत्स्थितान्देवीं सखीभिः परिवारितम् ।
वेदिकोपरि शुद्धान्तां शिवमिव विधोः कलाम् ।११
शंभुर्निरीक्ष्य तान्देवीं ब्रह्मचारिस्वरूपवान् ।
उपकण्ठं ययौ प्रीत्या चोत्सुकी भक्तवत्सलः ।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगतं सा तदा दृष्ट्वा ब्राह्मणंतेजसाद्भुतम् ।
अंगेषु लोमशं शान्तं दण्डचर्मसमन्वितम् ।१३
ब्रह्मचर्य्यधरं वृद्धं जटिलं सकमण्डलुम् ।
अपूजयत्परप्रीत्या सर्वंपूजोपहारकैः ।१४

तब परम प्रसन्नचित्त तपस्वी प्रभु शंकर ने अपनी इच्छा के अनुसार शान्तिमय एवं अति अद्भुत ब्रह्मचारी का स्वरूप धारण किया।८। बहुत वृद्ध ब्राह्मण का शरीर धारण करते हुए अपने तेज के प्रकार से प्रज्वलित तथा मन से प्रसन्न दण्ड तथा छत्र धारण कर बहुत ही उज्ज्वल वेशधारी हुए ।६। ऐसे जटिल स्वरूप को धारण कर भक्त-वत्सल कल्याण करने वाले शम्भु प्रीतिपूर्वक पार्वती के निकट तपोवन में गये।१०। उस तपोवन में तपस्विनी पार्वती को वेदोंके ऊपर विराजमान सखियों से घिरी हुई परम शुद्ध चन्द्रमा की कला के तुल्य संस्थित भगवान् शिव ने देखा ।११। एक ब्रह्मचारी का स्वरूप धारण करने वाले भक्तों पर प्रेम करने वाले भगवान् महेश्वर अत्यन्त उत्कण्टा रखते हुए यहाँ पार्वती को देखकर उसके समीप में पहुँच गये ।१२। उस समय जगदम्बा पार्वती ने अद्भुत तेजस्वी, रोमयुक्त अङ्गों वाले परम शान्त रूपधारी, मृग-चर्म और दण्ड से युक्त वहाँ आगमन करते हुए ब्राह्मण का दर्शन किया ।१३। पार्वती ने उस ब्राह्मण को ब्रह्मचर्य से युक्त-वृद्ध और जटा एवं कमण्डलु धारण किए हुए देखकर अत्यन्त प्रीति पूर्वक अर्चना की और समस्त सामग्री के द्वारा उनका समुचित सत्कार किया ।१४।

ततस्सा पार्वती देवीं पूजितं परया मुदा ।
कुशलं पर्यपृच्छत्तं ब्रह्मचारिणमादरात् ।१५
ब्रह्मचारिस्वरूपेण कस्त्वं हि कुत आगतः ।
इदं वनं भासयसि वद वेदविदां वर ।१६
इति पृष्टस्तु पार्वत्या ब्रह्मचारी स वै द्विजः ।
प्रत्युवाच द्रुतम्प्रीत्या शिवाभावपरीक्षया ।१७
अहमिच्छाभिगामी च ब्रह्मचारी द्विजोस्मि वै ।
तपस्वी सुखदोऽन्येषामुपकारी न संशयः ।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्त्वा ब्रह्मचारी स शंकरो भक्तवत्सल: ।
तस्थिवानुपकण्ठं स गोपायन्नुपमात्मन: ।१९
किम्ब्रवीमि महादेवि कथनीयन्न विद्यते ।
महानर्थंकरं वृत्तं दृश्यते विकृतं महत् ।२०
नवे वयसि सद्‌भोगसाधने सुखकारणे ।
महोपचारसद्‌भोगेवृथैव त्वं तपस्यसि ।२१
का त्वं कस्यासि तनया किमर्थं विजनेवने ।
तपश्चरसि दुर्धर्षे मुनिभि: प्रयतात्मभि: ।२२

इसके अनन्तर पूजा में परायण होते हुए पार्वती ने आदरपूर्वक सादर उन समागत ब्रह्मचारी से कुशल प्रश्न किया ।१५। पार्वती ने कहा--हे वेदज्ञाताओं में परम श्रेष्ठ ! आप इस ब्रह्मचारी के स्वरूप में कौन हैं और इस समय कहाँ से पदार्पण किया है जो इस वन को प्रकाशवाला कर रहे हो ?।१६। नन्दीश्वर ने कहा इस रीति से पार्वती के द्वारा प्रश्न किये जाने पर उस ब्रह्मचारी ब्राह्मण ने पार्वती की परीक्षा करने के कारण से शीघ्र ही उत्तर किया ।१७। ब्रह्मचारी ने कहा--मैं स्वेच्छा से विचरण करने वाला तपस्वी तथा ब्रह्मचारी ब्राह्मण हूँ और दूसरों को सुखी बनाकर उनका उपकार किया करता हूँ ।१८। नन्दीश्वर ने कहा-इस तरह से भगवान शंकर ने भक्तवत्सल ब्रह्मचारी के स्वरूप में अपने सही रूप को छिपाकर पार्वती के समीप में स्थिति की थी ।१९। उस समय ब्रह्मचारी ने पार्वती से कहा--हे देवि ! क्या बतलाऊँ ? कहने योग्य बात नहीं है । मुझे यहाँ पर बहुत ही अनर्थपूर्ण महान् विकृत वृत्तान्त दिखाई दे रहा हैं ।२०। आप इस अपनी नई अवस्था में अत्यन्त सुन्दर एवं सुकोमल इस सुखोपभोगों के योग्य शरीर से महान् सुखोपचारों का त्यागकर व्यर्थ ही तपस्या कर रही हैं ।२१। क्या आप यह बता सकेंगी, आप कौन है और किस उद्देश्य को लेकर इस भयावह निर्जन वन में जितेन्द्रियों के तुल्य कठिन तप कर रही हो ? ।२२।

इति तद्वचनं श्रुत्वा प्रहस्य परमेश्वरी ।
उवाच वचनं प्रीत्या ब्रह्मचारिणमुत्तमम् ।२३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रणु विप्र ब्रह्मचारिन्मद्वृत्तमखिलंमुने ।
जन्म मे भारते वर्षं साम्प्रतं हिमवद्गृहे ।२४
पूर्वं दक्षगृहे जन्म सती शंकरकामिनी ।
योगेन त्यक्तदेहाहं तातेन पतिनिन्दिना ।२५
मत्र जन्मनि संप्राप्त सुपुण्येन शिवो द्विज ।
मां त्यक्त्वा भस्मसात्कृत्वा मन्मथं सजगामह ।२६
प्रयाते शंकरे तापाद्व्रीडिताहं पितुर्गृहाहे ।
आगच्छमत्र तपसे गुरुवाक्येन संयुता ।२७
मनसा वचसा साक्षात्कर्मणा पतिभावतः ।
सत्यम्ब्रबीमि नोऽसत्यं संवृता शंकरो मया ।२८

नन्दीश्वर ने कहा—इस प्रकार से ब्रह्मचारी के वेषधारी शंकर के इन वचनों को सुनकर पार्वती ने मुस्कराते हुए बड़े ही प्रेम के साथ ब्रह्मचारी को उत्तर देते हुए श्रेष्ठ वचन कहे ।२३। पार्वती ने कहा—हे ब्रह्मचारिन ! हे मुनिवर ! आप जब सभी जानना चाहते हैं तो मैं अपना सभी पूरा हाल बताती हूँ । इस समय तो मेरे इस शरीर का जन्म गिरिराज हिमवान् के घर में हुआ है ।२४। इसके पूर्व मैं प्रजापति दक्ष की आत्मजा थी, और भगवान् शंकर की पत्नी हुई थी । मेरे पतिदेव शिव की बुराई करने वाले पिता के यहाँ पर ही योग द्वारा अपने शरीर का त्याग मैंने कर दिया ।२५। अब हे विप्रवर ! इस जन्म में परम महान् पुण्य से प्राप्त भगवान् शिव मुझे त्यागकर और कामदेवको भस्म करके चले गये हैं ।२६। शिव के त्याग से अति लज्जित होकर बहुत ही दुःखित मैं अपने पिता के घर को छोड़कर गुरु के वचनों के उपदेश से नियम लेकर इस वन में शिव प्राप्ति के लिए यह तप कर रही हूँ ।२७। यह मेरी तपस्या मन वचन और कर्म के द्वारा साक्षात् शिव स्वरूप पतिदेव को पाने के लिए ही हैं । मेरा यह कथन अक्षरशः सत्य है । इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है । इसके लिए मेरे साक्षी साक्षात् शिव ही हैं ।२८।

जानामि दुर्लभं वस्तु कथम्प्राप्यं मया भवेत् ।
तथापि मनसोत्सुक्यात्तप्यते मे तपोऽधुना ।२९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हित्वेन्द्रप्रमुखान्दवान्विष्णुम्ब्रह्माणमप्याहम् ।
पतिम्पिनाकपाणि वै प्राप्तुमिच्छामि सत्यतः ।३०
इत्येवं वचनं श्रुत्वा पार्वत्या हि सुनिश्चितम् ।
मुने स जटिलो रुद्रो विहसन्वाक्यमब्रवीत् ।३१
हिमाचल सुते देवि का बुद्धिः स्वीकृता त्वया ।
रुद्रार्थं विबुधान्हित्वा करोषि विपुलंतपः ।३२
आनाम्यहं च तं रुद्रं श्रृणु त्वम्प्रवदामि ते ।
वृषध्वजस्स रुद्रो हि विकृतात्मा जटाधरः ।३३
एकाकी च सवा नित्यं विरागी च विशेषतः ।
तस्मात्वं तेन रुद्रेण मनो योक्तु न प्राहंसि ।३४
सर्वं विरुद्धं रूदाति तव देवि हरस्य च ।
नह्यं नरोचते ह्येतद्यदीच्छसि तथा कुरु ।३५

मैं खूब अच्छी तरह समझती हूँ कि वह परम दुर्लभ वस्तु मुझे कैसे प्राप्त हो सकेगी, तो भी मेरे मन में उत्कण्ठा है और मैं उसी के लिए तपश्चर्या कर रही हूँ ।२९। मैं इन्द्र आदि समस्त देव, ब्रह्मा और विष्णु सबको त्यागकर केवल पिनाकधारी शिवको ही अपना पूज्य पति प्राप्त करने की उत्कट इच्छा रखती हूँ ।३०। नन्दीश्वर ने कहा--हे मुने ! उस समय पार्वती के परम निश्चय से परिपूर्ण इन वचनो को सुनकर जटिल रूपधारी रुद्रदेव हँसकर कहने लगे ।३१। जटिल ने कहा--हे हिमवान् की पुत्रि ! हे देवि ! तूने यह क्या अपनी बुद्धि बनाई है कि समस्त ऐश्वर्य वाले देवों को छोड़कर केवल एक शिव को ही अपना पति बनाने के लिए ऐसी कठोर तपश्या कर रही हो ? ।३२। हे देवि ! मैं भली भाँति उस रुद्र को जानता हूँ । यह रुद्र बैल पर तो सदासवारी किया करता है और बहुत विकृत आत्मा वाला तथा जटा-जूट धारण करके रहा करता हैं ।३३। वह तो हमेशा अकेला ही रहताहै और परम विरक्त है । इसलिए तुझको ऐसे वैरागी में अपना मन लगाना उचित नहीं जान पड़ता है ३४। हे भगवति ! शिव का स्वरूप आदि सभी कुछ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे रूप सौन्दर्य के बहुत विपरीत है मुझे तो बिल्कुल भी अच्छा नहीं प्रतीत होता है। आगे तुम्हारी जो भी इच्छा हो वही करो।३५।

इत्युक्त्वा च पुना रुद्रो ब्रह्मचारिस्वरूपवान् ।
निनिन्द बहुधात्मानं तदग्रोतां परीक्षितुम् ।३६
तच्छ्रुत्वा पार्वती देवी विप्रवाक्यं दुरासहम् ।
प्रत्युवाच महाक्रुद्धा शिवनिन्दापरं च तम् ।३७
एतावद्धि मया ज्ञातं कश्चिद्धन्यो भविष्यति ।
परन्तु सकलं ज्ञातमवध्यो दृश्यतेऽधुना ।३८
ब्रह्मचारिस्वरूपेण कश्चित्वं धूर्त आगतः ।
शिवनिन्दा कृता मूढ त्वया मन्युरभून्मम ।३९
शिवं त्वं च न जानासि शिवात्त्वं हि बहिर्मुखः ।
त्वत्पूजा च कृता यन्मे तस्मात्तापयुताऽभवम् ।४०

नन्दीश्वर ने कहा--इतना कहने के बाद भी ब्रह्मचारी के वेष में उपस्थित शिव ने पार्वती की और अधिक परीक्षा करने की इच्छा से अनेक प्रकार से अपनी खूब निन्दा से भरी बातें कहीं।३६। तब तो सर्वथा न सहन करने के योग्य निन्दापूर्ण ब्राह्मण के वचनों को सुनकर पार्वतीको बड़ा भारी क्रोध आ गया। अपने अभीष्ट देव शिवकी निन्दा में तत्पर ब्राह्मणसे पार्वती कहने लगी।३७। हे ब्राह्मण! मैं तेरी इन बातों से इस निर्णय पर पहुँच गई हूँ कि तू मार देने के योग्य है किन्तु अब मैं बहुत कुछ विचार करके यह भी समझ गई हूँ कि इस समय तू अवध्य है।३८। हे मूर्ख! ऐसा मालूम होता है कि तू कोई बड़ा धूर्त और ब्रह्मचारी बनकर यहाँ आ गया है। इस समय तूने भगवान शिव की निन्दा की है अतएव इससे मुझे महान् क्रोध उत्पन्न होगया है।३९ तू शिव के सच्चे स्वरूप को बिल्कुल नहीं जानता है और शंकर से सर्वथा बहिर्मुख है। मैंने इस समय तेरी अर्चना एक ब्राह्मण समझकर की, इसका भी मेरे मन में बहुत ही सन्ताप हो रहा है।४०।

रे रे दुष्ट त्वया प्रोक्तमहं जानामि शंकरम् ।
निश्चयेन विज्ञातः शिव एव परः प्रभुः ।४१

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
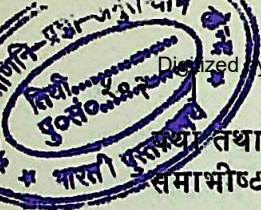
1247

यथा तथा भवेद्रुद्रो मायया बहुरूपवान् ।
समाभीष्टप्रदोऽत्यन्तं निर्विकारः सताम्प्रियः ।४२
इत्युक्त्वा तं शिवा देवी शिवतत्वं जगाद सा ।
यत्र ब्रह्मतया रुद्रः कथ्यते निर्गुणोऽव्ययः ।४३
तदाकर्ण्य वचो देव्य ब्रह्मचारी स वै द्विजः ।
पुनर्वचनमादातुं यावदेव प्रचक्रमे ।४४
प्रोवाच गिरिजा तावत्स्वसखीं विजयान्द्रुतम् ।
शिवासक्तमनोवृति शिवनिन्दा पराङ्मुखी ।४५
वारणीयः प्रयत्नेन सख्ययं हि द्विजाधमः ।
पुनर्वक्तुमनाश्चायं शिवनिन्दां करिष्यामि ।४६
न केवलं भवेत्पाप निन्दाकर्तुः शिवस्य हि ।
यो वै श्रृणोति तन्निन्दां पापभाक्स भवेदिहं ।४७

अरे दुष्ट ! तूने यह बिल्कुल असत्य ही कहा था कि मैं शिव को जानता हूँ । मैं कहती हूँ कि तू शिवको नहीं जानता है । शिव तो सर्वोपरि सबसे बड़े स्वामी हैं ।४१। जैसे-तैसे कुछ भी हो-रुद्रदेव अपनी माता से बहुत से रूप वाले हैं । मैं सब समझती हूँ कि वे मनोरथों को पूर्ण करने वाले विकारों से रहित और सत्पुरुषों के परम प्रिय हैं ।४२। नन्दीश्वर ने कहा-यह कहकर फिर पार्वती ने शिव के उस तत्व का वर्णन करना आरम्भ किया जिसमें ब्रह्मरूप से रुद्रदेव निर्गुण और अविनाशी कहे जाते हैं ।३३। यह पार्वतीके वचन सुनकर वह ब्रह्मचारी वेषधारी ब्राह्मण जैसे ही कुछ कहने को प्रस्तुत हुआ वैसे ही उस समय शिव के चरणों में आसक्त मन वाली शिवकी निन्दा से रहित होकर अपनी सखी विजया से पार्वती शीघ्रता से कहने लगीं ।४४-४५।पार्वती ने कहा-हे सखी यह नीच ब्राह्मण यहाँ से हटा देने के योग्य है । यह फिर भी कुछ कहना चाहता है । मैं चाहती हूँ कि आगे और कुछ शिव की निन्दा करने का अवसर इसे नहीं देना चाहिएं ।४६। भगवान् शिव की निन्दा करने वाला तो महापापी होता ही है, जो उस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निन्दा को केवल कानों से सुनता है उसे भी पाप का भागी होना पड़ता है ।४७।

शिवनिन्दकाकरो वध्यस्सर्वथा शिवकिंकरैः ।
ब्राह्मणश्चेत्सं वै त्याज्यो गन्तव्यथलाद्द्रुतम् ।४८
अयन्दुष्टः पुनर्निन्दां करिष्यति शिवस्य हि ।
ब्राह्मणत्वादवध्यश्च त्याज्योऽदृश्यश्च सर्वथा ।४९
स्थलमेतद्द्रुतं हित्वा यास्यामोऽन्यत्र मा चिरम् ।
यथा संभाषणं न स्यादनेनाविदुषा पुनः ।५०
इत्युक्त्वा चोमया यावत्पदमुत्क्षिप्ते मुने ।
असौ तावच्छिवः साक्षादाललम्बे पटं स्वयम् ।५१
कृत्वा स्वरूपं दिव्यं शिवाध्याने यथा तथा ।
दर्शयित्वा शिवायै तामुवाच वाङ्मुखी शिवः ।५२
कुत्र त्वं यासि मां हित्वा न त्वन्त्याज्या मया शिवे ।
मया परीक्षितासि त्वं दृढभक्तासि मेऽनघे ।५३
ब्रह्मचारिस्वरूपेण भावमिच्छुस्त्वदीयकम् ।
तवोपकण्ठभागत्य प्रोवाचं विविधं वचः ।५४

जो शिव के सेवक हैं उनके द्वारा शिव की निन्दा करने वाले का वध कर देना चाहिए । हाँ, यदि दुर्भाग्य से ब्राह्मण जाति का हो तो उसे छोड़कर उस स्थान से, जहाँ शिव की निन्दा होती हो अन्यत्र ही स्वयं शीघ्र चले जाना चाहिए ।४८। यह दुरात्मा फिर शिव की निन्दा करेगा क्योंकि यह विप्र है इसलिए वध करने योग्य नहीं है । यह त्याग देने के योग्य है ।४९। मैं अब इस स्थान को त्यागकर शीघ्र ही किसी अन्य स्थान पर जाना चाहती हूँ । जिससे फिर इस मूर्ख के साथ भाषण करने का कोई अवसर ही न आवे ।५०।नन्दीश्वर ने कहा-हे मुने! इतना कहकर पार्वती ने ज्यों ही स्थिति का त्याग करना चाहा वैसे ही भगवान् शिव ने उसके वस्त्र को धारण कर लिया।५१। पार्वती जिस स्वरूप का ध्यान किया करती थी शिवजी ने उसी स्वरूपको धारणकर पार्वती को दर्शन दिया और भूमि की ओर नीचे देखते हुए पार्वती से बोले--

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
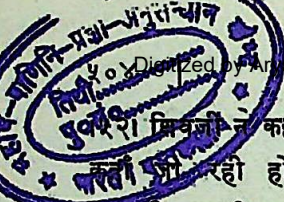
५२। शिवजी ने कहा--हे शिवे ! हे अनघे ! अब तुम मुझे छोड़कर कहाँ जा रही हो ? तुम अव मेरे त्याग करने योग्य नहीं हो। मैंने तुम्हारी अच्छी तरह परीक्षा कर ली है कि तुम्हारी मुझ में बहुत ही दृढ़ भक्ति है।५३। मैं इसलिए यह एक ब्रह्मचारी का रूप धारण कर तुम्हारे समीप में आया और अनेक वचन भी कहे।५४।

प्रसन्नोस्मि दृठं भक्त्या शिवे तव विशेषत: ।
चित्तेप्सितं वरं ब्रूहि नादेयं विद्यते तव ।५५
तत: प्रहृष्टा स दृष्ट्वा दिव्यरूप शिवस्य तत् ।
प्रत्युवाच प्रभुं प्रीत्या लज्जयाधोमुखी शिवा ।५६
यदि प्रसन्नो देवेश करोषि च कृपां मयि ।
प्रतिर्मे भव देवेश इत्युक्तश्शिवया शिव: ।५७
गृहीत्वा विधिवत्पाणि कैलाशं च तया ययौ ।
पतिं तं गिरिजा प्राप्य देवकार्य्यंचकार सा ।५८
इति प्रोक्तस्तु ते तात ब्रह्मचारिस्वरूपक: ।
शिवावतारो हि मया शिवाभावपरीक्षक: ।५९

हे पार्वती ! मैं तेरी अनुपम दृढ़ भक्ति से विशेष रूप से प्रसन्न हुआ हूँ। अब तू अपने मन चाहे वर को माँग ले। तुझे अब कोई भी अदेय वस्तु नहीं है।५५। परम प्रसन्न पार्वती शिव के दिव्य स्वरूप का दर्शन कर लज्जा से नीचे की ओर अपना मुख करती हुई प्रेमपूर्वक शिव से प्रार्थना करने लगी।५६। पार्वती ने कहा-हे देवेश ! यदि परम प्रसन्न होकर मुझ पर कृपा करना चाहते हैं तो आप मुझको अङ्गीकार कीजिए।५७। उस समय शिवजी विधि-विधान के साथ पार्वती का पाणिग्रहण कर उन्हें अपने साथ कैलाश पर्वत पर ले गये। पार्वती ने अपने अभीष्ट पति को पाकर देवों के कार्य सम्पन्न किये।५८। हे तात ! ब्रह्मचारी का स्वरूप धारण कर पार्वती की परीक्षा करने वाले शिवजी के जटिल अवतार का वर्णन मैंने किया है।५९।

॥ शिवपुराण प्रथम खण्ड समाप्त ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

श्रेष्ठतम धार्मिक साहित्य Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद
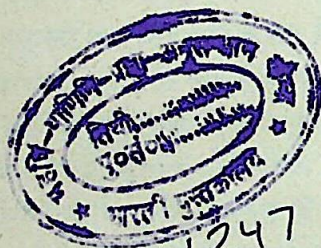
वेद ४खण्ड-सम्पूर्ण (भा.टी.)
र्ववेद २खण्ड-सम्पूर्ण (भा.टी.)
र्वेद-सम्पूर्ण (भा.टी.)
मवेद-सम्पूर्ण (भा.टी.)

उपनिषद्

८ उपनिषद् ३ खण्ड (भा.टी.)
दारण्यकोपनिषद् (भा.टी.)
दोग्योपनिषद् (भा.टी.)

गीता

श्वरी भगवद्गीता (भा.टी.)
वक्र गीता (भा.टी.)

दर्शन

शिक दर्शन (भा.टी.)
 दर्शन (भा.टी.)
मदर्शन (भा.टी.)
दर्शन (भा.टी.)
त दर्शन (भा.टी.)
सा दर्शन (भा.टी.)

रामायण व धर्मशास्त्र

द रामायण (भा.टी.)
त्र (भा.टी.)
वासिष्ठ २ खण्ड (भा.टी.)
र सागर (भा.टी.)
मृतियाँ २ खण्ड (भा.टी.)
ति (भा.टी.)

पुराण साहित्य

शिव पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
विष्णु पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
मार्कण्डेय पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
गरुड़ पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
देवी भागवत पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
हरिवंश पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
ब्रह्माण्ड पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
भविष्य पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
पद्म पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
वामन पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
कालिका पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
कूर्म पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
वाराह पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
मत्स्य पुराण २ खण्ड (भा. टी.)
गणेश पुराण (भाषा)
सूर्य पुराण (भा. टी.)
आत्म पुराण (भाषा)
कल्कि पुराण (भा. टी.)
देवी भागवत पुराण (भाषा)
गायत्री पुराण (भाषा)
विश्वकर्मा पुराण (भाषा)
श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा (भाषा)
महाभारत साइज १८"x२२" /८ भाषा
महाभारत साइज २०"x३०" /१६ भाषा
रामचरित मानस मूल गुटका
अद्भुत रामायण (भा. टी.)

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, (वेदनगर) बरेली-२४३ ००३ (उ. प्र.)

फोन : (0581) 474242

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.